স্থাচপত্র।

বিষয়	,	2	81	विवश	- ,c. 1 1, 4	সূঠা	
चिकांग भक्तन	9*,506			বাগালার জন্ম	•••		ેર હ
		90		বাঙ্গালা ইতিহাস সম্ব			
আনন মঠ	•••	• • •		বাঙ্গানির উৎপত্তি ৪		865,0	17 A,
আমাৰ প্ৰাণ	***	•••	612	বাঙ্গালাৰ পাঠক পড়া	ন ব্ৰহ	•••	800
উপাসনাবিষয়ক তুলন	स 1	•••	72.2	বাখালা সাহিত্য	++-		8५१
কালেদি। শিন্ত	7 * *	•••	२३३	শান্মীকির ভয়	828	,850,	6.67
थाधना क्न पिरे	•		65	বিশাহ দিতীয়বার	• • •	3	b-91
্হ সরাসি	•••	٠.	aub	ভবিষাৎ ছিল্পশ্ৰ	-44	•••	·
ठसा ७८ श्चर मः किला स	विनी	•••	૦૧૬ ે	ভূতের স্বাতি		•••	
চাকুরীর প্রীকা	• • •		৩৯৯ .	डोडार्ग विमाय व्य ना	नी		
ভাগ	•••		848	भांकतीलाजा ५७२,३१	8,22		
ब्बारमक् माष्ट्रिसि			৩৩৭				
ठाका । अ शुक्रवात्रामा	•••	• • •	249	ग[लाहकान			
তক্রবানী			42	भित्रका ও कथानकू छः			
দিভীয়বার বিবাহ			F-9	মুচি গ্ৰাম গুড়ের শীব			
नत्यम वा कथा अस्त्रव	डे स्मा	•••	३७	भ्रद्भारतम् 🦠			
ন্তন খাজনার আইন	সমধ্যে ক	लिक्	াতা	বার কাজ সেই ক			
রিবিউর মত				রত্বত্ত			
নৈষধ স্মালোচন	***	•••		র ুরহ্ শ্য			
পশ্চিম দেশে বাঙ্গালা	ब इंदे		२७ १	भक्षद्राठाटगा व			
পানামৌ		825	e (3,	म मस्य			
वार बाइव मःकिस	সমালোচ	न	a 6,	শিক্ষা			
A .		<i>५</i> ८८	, 490 }	শ্বতি কি			
नम देवकानिक		494	3+0	म म र क			
বদীর শক্ষাচার্য্যের ন	ा निम	114	, e6	,आयोः			
TOWN	2 4 1 1 1 1 1	196	,064				

বঙ্গদৰ্শন।

মাসিক পত্ৰ ও সমালোচন।

ভবিষ্যৎ হিন্দুধর্ম।

গুনম পরিচ্ছেদ। পুদ্দ সূত্র।

ट्य अति शिक्षतात छात्र प्रश्वाच गांकात ५ नियाकाव उर्वे छुटे विकारण विकास হ্টয়াছে, সেই অব্ধি এক নুজন যুগোং পতি हरेशहरू । भेषद्वत देव हरान चांदर, নপুষোৰত ভাষা ঘটিয়াছে। এই লৈচ াদীরা বলেন, ''তুমি আমি প্রতেরতকর ভিতৰ, আৰু একট কৰিয়া ভ্ৰিভাগি গাছে। দেটা দেগা যায়, সেটা সাকার মন্ত্রা,আবার ভাতার ভিতর যেটা আছে. পেটা নিরাকার মন্ত্রা। কেহ দেটীকে দেখিতে পায় মা, সেটাও কোন কার্য্য करव ना, अथह भित्री आहि विश्वा विश्वाम कविष्ठ इट्टेंब।" भाजकारवता. थर्षवाम्रदकता मकरलई वाकवादका निन-ভেছেন, মহুষোর ভিতর মনুষা আছে। ত্ৰি সামিতেছ না, তুমি বুঝিতেছ না,

তোমার ভিতর আর **একখন আছে,** ভাহ্যে নাম আয়া।

দৈ গ্ৰাদীয়া আরও বলেন যে, সুতার ার নিরাকার মহুয়া আকাশ পায়: সেই विकारत व्यवसाय **सूथ इ:श नकनरे** ুণ কৰিতে হয়। আমি যদি মুতার भार पार गाहे, **উछम यहा भतित, छन्मन** সংখিব, পুষ্পহার গলায় দিব, সিংছাদনে ব'গ্ৰ, অপাৰাৰ গীতি শুনিব, আহাৰ নিদ্বে ভ কথাই নাই। ভথন শ্রীর नाहे शक्त, ध मठन भाजीतिक स्वर-ভোগের কোন ব্যাঘাতই ঘটবে না। আৰু যদি নরকে ঘাই--এই লেখার পর তाश्हे मधन-जाश हरेल गाना वर्णत অনপ্ত অগ্নি জামার নিরাকার দেহকে দথ কবিৰে, আমি আলাল যত্ৰণার 5ীৎকার করিব, ডাক্তার শাইব না, खेवध शहेब मा. क्यांका शामिएक ध्रम है काशीय अ शाहेय ना। यन चर्म सहित्य

ना शहे, कांत्र नंतरक शान ना इत,—
हेमांगी अनिट्डिं, नेतरक नाकि झानाकांच हरेशांक, कांगि उत्तर नाकि झानाकांच हरेशांक, कांगि उत्तर कर्मा कलम स्तिशांकि—यम कर्म राहेर्ड ना
शाहे, नंतरक अन ना इश्र, जांदा
हरेल मृङ्ग्त भन्न कांगि अनेशांनरे
शांकिय, उसन (मृह् शांकिरत ना, कांद्रिके
स्टामना कांगांत्र (निश्रिक एक्ट विना
कर्म शाहेरत।

এইরাপ আবার বন্ধ, চন্দন, পূলা, সকলের আয়া আছে, নতুবা জাছারা चर्म यात्र किकारण । यनि सम्बादम কাঁতিবা গিয়া ভাঁত বোলে, মালিরা গিয়া মালঞ্চ করে, ভাষা সইলে সেখানে अकारेधूरि, द्वनात्रति छिलि स्वचिद्व कविटा पादत: किंग्र 'दमशास यमि কাঁতি, নালি প্রান্তি ইতর্লাভিয়া गाई८७ मा लाब, या याहेबा यनि एहत्वन কৰিছে লা পাল, ভাচা হছলৈ বস্ত क्लाभा इटेट चाटिम ? कांक्ट बीकाव कतिएक इटेटव (भ. आमार्ट्सव छाडे পুরতিন বল্পের আত্মারা স্থর্গে গিয়া ব্যবস্থা । অভএব আয়া যে কেবল সামাদের আছে, এমত নংছ। কড়ি-গুলির আত্মা আছে, বৈতরণী পার হটবার নিমিত্ত যে কলেক ক্ডা কড়ি ष्मामता शाहेत्रा थाकि, यनि उहारानत আত্মা না থাকে, ভাষা কটলে এরেপ कि प्रामात्मत भटक निवात कल कि 🕈 ক্রীট্ট সরার পড়িয়া থাকে, এ অবছার ব্ৰিতে হইবে কড়ির আখারা মৃত

ব্যক্তির সঙ্গে যায়, অন্ততঃ পার্যাটা পর্যান্ত।

রহত্ত একণে এই পর্যান্ত। আম্বরা विविद्याम (य, (य व्यवि मञ्ज्याव मयस्क देवडवान तांचे इडेग्राट्ड. (भडे व्यवस्थि नृङ्ग कहा आह्र अहेशाएए। स्मार्ट ष्यविध श्रथम भएषात लाग शक्ति है। इहेबाइह । ভাছার পুর্জাবধি ধর্ম গঠিবার কিছু কিছুমার উদ্যোগ ছিল। ভর মহুষোর त्र छात्र । स्थान - (महे फार हहेर हुई এক দেবতার কঞ্চনা আব্ত হট্যাছিল। অমি দেবলা, কেন না হাত পুড়ায়, वायु (नवडां, दक्त ना भव खादक, वक्त (सरडा, (कन ना सत्त छ।तात्र, देशास्त्र शृक्षा करा डेहिङ। डाङ्। इट्टा ब भःमात्रवाजा निर्विदय हिन्दि । ध्वेत्रदश गामामा मह धर्ष छेडानिह इहे छिहिन। খণ, নবক, আঝা, প্রমায়া, এ স্কল कर्षात अष्ठि ख्या इस माहे। कार्यह मर्फा (कदस क्षेत्रिकी क्रिज्ञ) (नांटक द हविज्ञ उभन देशमाहिकत्र छिल् --বাজের নাায় ছবিম, ভলুকের স্থায় পর-त्रक्थिय, मग्रा, माकिना धारकवाद्य नित्र-হিত; এরণ প্রকৃতি অমি বাৰু দেবভার দারা উদীপ্ত বাতীত দমিত হইবার मछावन। इस नाहे।

তাহার পর মহযোর ভিতর মহযা
আছে, এই অফুতব ভারতবর্ধে প্রথমে
উত্থাপন হইল। উপাপিত হইবামাত্রই
ন্তন এক ধর্ম সতঃ উপস্থিত হইল।
মৃত্যুর পর আলা দীবিভ পাকে এই

PRINCE TO THE LAND OF a, simple man, within attack that h naville firm mitigates simple त्यात्वमः किंग विशे दशस्याः वाकावशा रासग्रियात्रम् गक्तर्क् छक्न स्वित्रा CHERNICE ! দ্যাদলগতি তথ্নত ভাষাদের থাবিতে बनिद्यस्, अदक हा-क्षम डाहाइक मन बाह्या नुद्ध है बाह रवेगारक, छोटाव क्या छाहादा ,८कन अनिद्य, छाराबा आब्रक दक्तिमा छेठिल । जयमः नगर्गकः बाह्यस्य जाहाप्तिग्रादकः मगत्रविष्णुक कतिशा पिट्यम । किस वारिट्स गियारे धोराता यत्रम हाम्ह अ वामध्यत्र महिष्ठः मिलिष्ठः इहेश्राः जीमनत्राकृत्य প্রাশিবির আক্রমণ করিল। মলপতি कटहे. निवित्रमध्य जानितन्त, जानित्री. वांश (मिरिटनन, काश्राद्ध हमरक्छ इह-त्यन। त्यनित्तन तानीकि वीशाहरछः ''ভाই ভাই'' शहर उट्टम, मुस्छ प्रशासन छनिया क्वल कॅमिल्डाइ,-वि:म्क महत्व (याचा केंब्रिएडह् । महहें जा बाहा-रमय यातमात, कीतिका, छ।हादा मकटलहे नैंमिटल्ट्स-अवद्यान क्रियाट्स । नम् त्वकः श्राक्तमाहिः द्वाः शाक्तम् । कहिः cots, स्विक्टिक प्रकृतिका नाहे। अन्यत्वा होनाशंकाम चाकरन क विना हापीनिय भाग पांचक पेक परेन, THE THE WARRING THE RESTRICT TIN THE STATE CHIEF APPLICATION THE RESIDENCE OF THE SECOND

end as not replied, who THE STREET CAS SECRETARIES (* *111, In 1310, fo 1141, fe नत्र सन्दर्शक्षित्र, पत्रा मचन सरस्य अप ररेना जीरन रचनन विलामाह "क त्व यो करविष्म, करविष्म, स्थात कतिकः त्न, त्त्रभ दम्भि दकात यणि अमनि इस, के कि किन्। तकत्वरे माएव त्वा ? त्वाव भवीव व्यवस्थानमञ्जूषाः नमञ्जूषा विश्व मटन कत्र, यति एकत्रि लाटन, क्छ प्रवत रम, किन्न जाशनाह बक्टे लानिहा चहित रम्,चात चरमात मध्यक छत्रवाति আঘাত করিস। वाशन शतिबाद्यव প্রতি বসর দিলে সইছে পারিদ্না; কিন্তু পরের পরিবারের আছি ক্ত অত্যা-**छात्र क्षिम्। आहा। अक्सात्र महन**े अस्य कदे दस्य दर छाद्यत खश्चन वि পরের ছেলের মাথা অনারানেই कार्षिम्, किञ्च अकर्तत् मत्न क्रम देवस्थि त रकात्र, निरमत एएलत ७ त्रक्य एत् कि इत । अध्योष्ट्रान प्रकृतिया केश्विमा केटिन, केविया राष्ट्रीया राष्ट्रिम, " बका कत कट्या । छतात्र नित्रा (त्र व ।" चाः भाग गाम हिला भार छाहे छाहे राम नवारे आधिका लेड टकर मारे । यम हाड़ा मक बाद साहे, नवारे बाहर, ोरं दर्शना दश्यन, नराहरे द्रव्यक्ति। कीत्म दर्वामा इस एक, नरावहे व्यक्ति। THE SECTION OF THE COURSE THE REPORT OF THE PARTY.

अभिक्षां अंक शांत हैं के साहि देश से अपित की अपित की

লানের কল এই চইগ, সকল মুদ্ধা বেশতাগা করিয়া বাল্লীকির পারে জড়া-ইয়া পড়িল। বহুগদলপতি গুংক্তুলি পারে জড়াইয়া কাঁদিতে লাগিল। বা-আঁকি ভাষাদিগাকে পাছু ইছে নিষেদ করিয়া কহিলেন, "আমি দেবতাই নহি, ক্রেহারও নহি, বাজাও নহি, ভোমবাও গাঁহা, আমি প ভাষাই।" আমার পারে লাজাকি ভাষাই। জন্ম করিয়াভ, ভার করিওলা। ভীবন পরিবর্তন করিয়াভ বাংগগে দ্বীবন কটোও স্থা ছইবে।"

এই বলিয়া গকলকে নিবৃত্ত করিছৈ:
চ্ছল, এমন সম্মান নগানবাদীদিগের কর্মা
বলিষ্ট্রাণ কেছ গঞ্জগদ, কেছ চক্ষালা,
কাহণকথ অন্তিতে গাল্লদ্দ হইমাছে,
কেই গ্লুছ বিভাগিক কাৰে ক্রিয়া, কেছ
অন্তাগাতে বুজনার লিভা গভাল ব্যঞ্জ করিয়া হালাজ্যক চলিয়া বাইতেন্তে,
ক্রিয়াত লাইল রাজ্যলা বাজনে কাইল ক্রিয়াত ক্রিয়াল্লাক্রাক্রা বাল ক্রিয়াত ক্রিয়াল বাজনে কাইল ক্রিয়াত ক্রিয়াল বাজন কর্মা

THEFT CHAIRM SHEAT, YOUR CSINITES BIR CAM ... MINES IN रिवारक करणा बादम सुका का मिशा दर्गण ह मनरमर राजिक त्यारक क्रम हाटन मानी Cबार्टन नियंश्व मृड्याम करेगा भाष्ट्रल । वाली के विश्वतम, नवां के कारण क्या-डेमा बहेना अन्। मक्टम डिसाटमब निक्षे एतेन, याहेशाया अनुवर्गिन्द व्यापात व्यार्कमान कतिहा श्रेतार्रकश्रेतांत्रम ডাকাইভেৱা भातिम, इंडेरंगार्क मंछा कथा वनिस्म छ লোকে বিশ্বাস 本でか वाद्योकिक किन्नारेमा व्यामिवाद जना श्रद्धांत कविष ; वाश्रीकि एए **मञ्**य सम **डाहा छेहाता कानिटर कि अकारत ?**

যাহা হউক ৰাত্ৰীকি উন্নাদিগতে ফিয়াইলেন, এবাৰও জাপনগানে থান্ত্ৰীক
এমনি নিই ভান ধৰিয়া উহাদেন নিকট
এমনি কমণজাকে অমা প্রার্থনা করিছে
লাগিলেন যে উছাদের চিত্ত দ্যার্ক হইল;
উহারা বাজ্রীকির কথার নগরে কির্মান্ত্রালার জিলা বাজ্যীকিকে
বাজা হউতে জন্মবাধ করিল। বাজ্যীকিকে
নাজা হউতে জন্মবাধ করিল। বাজ্যীকিক
নাজা হউতে জন্মবাধ করিল। বাজ্যীকিক
নাজা হউতে জন্মবাধ করিল। বাজ্যীকিক
নাজা হউতে জন্মবাধ করিল।
নাজা করিলা
নাজা বাজা বাজা করিলা
নাজা বাজা বাজা করিলা
নাজা বাজা বাজা বাজা করিলা
নাজা বাজা বাজা বাজা বাজাকিক
নাজা বাজা বাজা বাজা বাজাকিক
নাজা বাজাকিক
নাজা বাজাকিক বাজাকিকে
নাজা বাজাকিক
নাজা বাজাকিক
নাজাকিক বাজাকিক
নাজাকিক বাজাকিক
নাজাকিক
নাজাকিক বাজাকিক
নাজাকিক বাজাকিক
নাজাকিক
না

पाष्ट्रकरदत्र गरण; देककान, भवनान, पर्ग, मतक, भारा, भूता व गकन बाक्रविक क्या आक्तकार्व हिन, जरक जरक छाही সর্গায় অমূভব হুইয়া নৃতন ধর্মেছ উৎপত্তি হইল। যে বাজি আনুবাদ चीकात कतिमा, छाहारकष्टे त्यहे नृष्ठन ধর্মা গ্রহণ করিতে হইল। ুপুথিবীর বাব-**छीत्र विहक्षत बाक्रि क्यात्र मैक्टनहे क्या**न ক্রমে আত্মার অন্তিম্ স্বীকার করিয়া **একে একে সকলেই এই সান্ধামূলক** न्छन धर्मा शहर कतिन। হইতে মিসররাজ্যে এই ধর্ম প্রথম প্রচার इय, जथा इरेड यूनानीरम्रभ गृशेख इत। पूरा धरे धर्म मिनतरन्थ इटेर्ड ष्मानन (तर्भ लहेश यान। भूषा इटेरक **शत्रम्मता यीखश्रीहे" এই धर्म भवनस्त** করেন। ভাহার পর মহত্মদ এই ধর্ম গ্রহণ করেন। এক্ষণে কাজেই তাঁহাদের উপাসকগণ, देश्दबंब, क्वानिम, विना-মার, ওলনাজ, আরবী, পারসীক প্রভৃতি नकरनरे अरे धर्मावनशे हरेग्नाहन।

ধর্মটী অভি সহজ। আছা সীকার করিলেই আপনা আপনি উত্তর প্রভাৱের দারা ইহার অস্তবে হইরা নাম। নিম্ন-নিখিত করেকটি উত্তর প্রভাৱের শইরা এই ধর্ম।

প্রনা মৃত্যুর পর আত্মাকি করে।

উত্তর। ঐতিকে বে কার্য্য করিনাছে, ভাহার ফলভ্যের করে।

আ। ক্লি ফল ? কোনাল পারিবা তালা ক্ষোবা করে ?

छ । वार्षः शक्तिः प्रशस्त्राणं करते. सन्दर्भ शक्तिः प्रश्राह्मणं करते।

 श्री । देकान कार्यात्र कन प्रथ, दक्कान कार्यात्र कम कृश्य १

উ। विচারকর্তা বে কার্য ভাগ বলেন সেই কর্মের ফল হংখ। विচার-কর্ডা বে কার্য মন্দ বলেন, সেই কর্মের ফল চুঃখ।

প্র। বিচারকর্তা কে 😷

উ। ভাষার নাম স্বান্ধর, তিনিই পৃথিবী ক্ষান করিয়াছেন।

প্র। কোন কার্য্য তিনি ভাল বলেন; কোন কার্য্য তিনি মন্দ্র বলেন ?-

উ। তিনি ভাহা বলিয়া দিরাছেন। প্রা: কাহার নিকট কি প্রকারে-বলিয়া দিয়াছেন।

এই শেষ প্রানের উত্তর দুইরা তর্ক আরম্ভ হইরাছে। হিন্দু, মুরলমান, প্রীয়র প্রভৃতি সকল ধর্মেরই মূল এক, কেবল এই স্থান হইতে পার্থকা অবল-কন করিরাছে। এই পার্থকা সামানা। মূলধর্ম সক্ষতে ইহাবারা কোন বৈলক্ষণা হর নাই। স্চরাচর লোকেরা ধে শুক্তর বৈষ্যা দেখে, জাহা প্রথমতঃ উপদেশ্র শ্বকে, বিভীয়তঃ প্রক্রিরাক্ষিক বিশ্বন সম্প্রেক, ভূতীয়তঃ আচারসম্বান্ধার

[&]quot; सहतरक बर्शन र वीकवीडे जाया चीका कविरक्त ना। किय दिक्या अमृतक बन्निया रेवाय वह । Gospel of St. Matthew Chapter X. P. 28 रहन

 त्यः कार्यः केष्टततः औष्टिकतः, जाहा किनि कांदाव निक्षे विनदा विवादकन ं और गरेशा अथम छर्छ। रिण्मणास्यादत वेशव व्याकाणसंखी माता] भाग पूरा द-লিয়া দিয়াছেন । প্রীষ্টানমতামুগারে মুয়ং আংশিক অবভারত্বরূপ মনুবামধ্যে আ-বিরা বলিয়া..., দিয়াছেন। মুসলমান সভাত্সারে মহাবদের নিকট ঈশ্বর দৃত ৰারা বলিয়া পাঠাইয়াছেন। বেদব্যাস वा बीकृष. महत्रम वा यो खबी है विनिष् দ্বীপারবাকা প্রচার করিবার ভারপ্রহণ করিয়া থাকুন, কেহই মূলধর্মে হস্তক্ষেপ करतन नारे। दक्हरे वरणन नारे त्य, আত্মা নাই, মৃত্যুর পর সকল ফুরার। द्क्रहे बृद्धन नाहे द्य, चर्ग मिथा, नवक बिथा। क्टरे वर्णन नार्द्र, भाभ পুণ্য নাই, কেছই বলেন নাই যে, পা্প शुर्वात विठातकर्छ। क्षेत्रत नारे। यनि क्ट छाटा ना विनदा थाकन, छरव मृत-कॅथात शार्सका करे रहेन ? तमएकतं वा ज्ञमद्रास्टरम् च्टड् উপদেষ্টা সম্ভব, উপাস-কের শ্রদ্ধা আরুষ্ট করিবার নিমিত্ত উপ-দেষ্টার অমাত্রিক পরিচয়ও সম্ব। উপদেশ্য কে বা কিলপে তিনি নিৰে केशिक्षे इंदेशिन, क्विन वहे कथा হাইরা বে উপাসকদের ধর্মজান, ভাষা-বের প্রকে এই বৈষ্ম্য অতি ভক্তর नामक नार्वे ावाचावा मुनेवर्य कितन मारे, छांद्रांत्र (क्यून फ्रेशरपडे। किनि-बोद्ध । कारबंदे छेशास्त्रेश गरेवा छात्रात्र

थर्ष गरेश मर्द, कर्ष गरेश मर्द, रक्ष्म দলপতি লইবা।

खेलिशामिक विवत महेता विजीव कर्त । विकानभाक ना थाकात एष्टिवियद्वन लिथि-বার ভার ধর্মশাল্প স্বরং গ্রহণ করিয়া-हिल। एडि (कह (मध्य नाहे: किंद्र मक्न (एट्गरे व मस्त वक्रा मा একটা धौरांन ध्यक्तिक इहेबा जानिया-ছিল। সেই সকল ভিন্ন ভিন্ন প্রবাদ ভিন্ন ভেন্ন ধর্মগ্রছে সংগৃহীত হ্যু, নৃতন ধৰ্মের সহিত সক্ষতি করিবার निभिन्न दम छ त्मरे मकन धावात्मन কোন কোন অংশ পরিবর্ত্তিত হটয়া থাকিবে; কিন্তু এই সকল সংগৃহীত ध्यवारमञ्ज मह्म मृत्यर्ग्यत मस्य क्रि আর। যদি বল একটি প্রকাপ্ত অপ্ত বা ডিম্ব এক সময় প্রমেশ্বর প্রস্ব করিয়াছিলেন; সেই ডিম তিনখণ্ড ক-রিরা অর্গ, মর্ত্ত, পাতাল হইয়াছিল: এবং দেই ব্ৰহাও হইতে জড়লক্ষ স্কল विनिर्गं इरेग्नाहिन, फारा विनास "আত্মা পরকালে ফলভোগী" এ কথার धनाथा कि इटेन ? अथवा यति वन श्रुष्टित शृंदर्स 'गकनरे अधकात्रमम हिन, সেই অধকারে জ্যোতির্ময় ভাসিতে हिर्तिन, अथवा यति वत रहित भूर्वा गक्नरे क्रम्यत् हिन, त्रहे क्रत्नत्र खेलत् क्षेत्रत शतिप्रवसाटक हिटलन ; छाहा इंडेटल षाद्या गंदरगरम कनस्याती व क्याक क्तिर्भ व्यनाथा बहेल ? त्य नक्त क्रमोप्रति स्टब । कार्यादम्ब अविक्षः नामाना लाटक्या वर्षावाद्यत दक्षणवास

প্রস্থ চিনিরাছে, ধর্ম চিনে নাই, ভাষা-রাই এই সকল প্রবাদপার্থক্যকে ধর্ম-পার্থক্য মনে করে।

আচার লইরা তৃতীর বৈষমা। এই পার্থক্য সম্পূর্ণ সৃস্তব। দেশভেদে খতর আচার, খডত্র ব্যবহার প্রচলিত হইরা পডে। উত্তপ্তদেশে নিভা অবগাহন कुशिवनक: नामाधामान नाम भीक-প্রধানদেশে তাহা অতি কটকর: কাজেই উত্তপ্তরেশে নিতামান আচারস্বরূপ হইয়া পড়ে; শীতপ্রধানদেশে তাহা হয় না। এই স্থলে উত্তরেদেশের ধর্মগ্রন্থে यनि निकाशास्त्र वावशा थाएक, कांब শীতপ্রধানদেশের ধর্মগ্রন্থে তাহা না थात्क, जाहा इहेल नामाना लात्कता हैश श्वक्रजब देवक्या विद्यवंता करता কিছ ৰাজবিক ইহা ধর্মগত বৈষ্ম্য নতে। সান আহার ধর্মান্তর্গত হইতে পারে না। यनि (कान धर्माभरमञ्जा विद्यान करवन (य. ज्ञारमव द्याच ७० পরকাল পর্যান্ত পৌছে, তাঁহার উপদেশ কেবল অতি সামান্য লোকেরা গ্রহণ এরপ অবিবেচক ধর্মবেতা ष्यत्व हिल्ता। (कान् काँगा श्रेषदत्रत গ্রীতিকর ভাহার উপদেশ দিতে গিরা घृष्टे **धकसन**े वा निर्खात मात्र कथा विन-बार्डन, नजुदा अधिकांश्म जेशरमहाता क्रमध्यातांद्रक चरमानागीतमत्र मन तका कतिबारहंग। व्यवस्था आहात्रशंख देव-यमा भाकिमा निवादकः। त्कक् विवर्शन द्वन माकि त्वित्व वेषत् थेए और

ं इन । ्रिक्ट विश्वाद्यम, आहात महेता . দ্বব্যক্ত বড় লিড়াপীড়ি বিভিক্ত বা था छत्रा ने बात ने ने वात ने व मारे। जैवटतत्र शातिरणाविक नहिता चात्रव महासत चारह; ८क्ट बर्टनन, তাঁহাকে পুশাচন্দন দিলে, তিনি ব্ৰু মিগ্র হন। কৈছ বলেন, তাঁহার প্রশংসা করিলে ভিনি বড় খুসী হন। কেহ वरनन, छाशास्त्र आकृत कतिशा छ।किर्ल বড় আপ্যায়িত হন; কেই বলেন, তাঁ-रात निक्षे नञ्जा श्रीकांत कतिता, তিনি চিরবাধিত হন। কেই কেছ আবার ভাহা স্বীকার করেন না। এই-क्रार्थ करनक मञ्रह्म कारह। किंद्र ध नक्न निम निम हैन्द्रायुवाची कथा ছাড়িয়া বধন ভাঁহারা মূলকথা বলিতে আরম্ভ করিয়াছেন, তখন সকলেই একমূত। মনুষ্যের পৈশাচিক প্রবৃদ্ধি गः भाषन कतिवात निश्चि नकरें कहे व्याचामात्रम धक्रवाद्का छेशाम् क्रि-ब्राष्ट्रम । नकत्नदे विद्याद्यं, चार्थ-পরতাশন্য হইরা পরোপকার कत्रिद्य । আত্মেশ স্বীকার করিয়া **শরহিত সাধুন করিবে। ইহাই ঈশ্বরের** প্ৰীতিকর কার্যা। মিথাকিথার পরের व्यनिष्टे मंखन, बहेबना मठावानी इहेंदर। रेक्षित्रशत्रकत रहेल, जातात जनिहे रह **बहेबना बिल्डिक्स इटेर्ट्स । मडावासी** बिएडिक इंदेर्ग पर्ग निक्य । अद्योग मुगनीडि नंबरक दगान अदेनका नारे। त्य मक्य काद्या वेषद्वती जीविमायन

इक विनद्या मृजधरर्या मक्न (मर्ग्ये विधि-**वक्ष हरेबाएक, छाक्ष ज्ञारता**कतिबा एमिरल, अहे जिलाकि इस (य, जेबरतक वीजिमाश्न व श्रामंत्र ये छेरमणा इंडेक না হউক, মহুৰামধ্যে প্ৰাতৃভাবসংবদ্ধ कता এই शर्मात्र विरमक উत्ममा, अथवा সমাজস্ত্র কৃঢ়ীভূত , করিরা যাহাতে সমাজের আভ্যস্তরিকশক্তি ক্রমে বিকাশ পায় ভাহার সহায়তা করা এই মূলধর্মের উদ্দেশ্য। প্রথমে ব্যক্তিগত দোষ সং-(भाषिक इहेरन, (भक् ममाज्ञभक स्मार्थक व्यथनवन रहेर्त। आयामृगक धर्यवाता करत्रक हाकात वश्मत्र व्यविध वास्क्रिशंक मार्थित नःर्भावन जान्न इरेनारकः वरे थर्षावंगधीनिरभक्त आक **श्र्व**मङ रेशभा-চিক প্রবৃত্তি নাই, সামান্য ব্যক্তিগত-দোব কোন কোন অংশে পৃৰ্ব্ব্যত शंकिल शंकित्ज शांत ; किन्द मार्थात-**৭ত: গৈশাচিকত্ব ঘুচিরা মনুবাত্ব আরম্ভ** আমরা ভাছাই বলিভে-स्रेवाट्स । ছিলাম, যে পর্যান্ত আত্মানুত্ব হইয়াছে, সেই পর্যান্ত মনুষ্যান্ত সহত্তে নৃত্র বুগোৎপত্তি আরম্ভ হইরাছে।

আত্মা অমুভব প্রথম কে করিল তাহা ছির করিবার উপার নাই, যিনিই করুন তিনিই মহুষ্যের মহাশুক ছিলেন। তিনি বে কীক্ষমন্ত দিরাছেন তাহার শক্তি অসীম। এই বীক উচ্চারণ মাত্রেই মন্যাছের প্রথম হার প্রিয়া গিরাছে। প্রার পাঁচ হালার বৎসরের অধিক কাল হইবে মানবালোভ এই হার দিরা

বহিতেছে। দিতীয় দারে পৌছিতে विनय चाट्ट। (य महा धक्र विजीय चारतत वीक्रमञ्ज निरवन जिनि अकरन वह म्रतः। अथम वीरकत कार्यात्रस स्टेबाह्य भार হয় নাই। সে কার্য্য পরপ্রিয়তাসাধন। তাহা সংসাধিত হইলে সমাজের আশুর্যা শক্তি পরিক্ট হইবে। পরপ্রিয়তা সংসিদ্ধ করিবায় নিমিক্তই এই নৃতন ধর্ম, এতদ্ভিন্ন ইহার স্বার কোন উদ্দেশ্ত नारे। এই धर्मा अक्राल पृथिवीत नर्सक। मूत्रनमान धर्म दल, औष्ठांन धर्म दल, ষে ধর্মাই বল কেবল নামভেদ মাত্র, সকল ধর্মই আত্মামূল্ক। আত্মা হেতু স্বৰ্গ নৱক, পাপ পুণ্য, ইহকাল প্রকা**ল** উত্থাপিত হইয়াছে; আত্মা হেতু ক্রিয়া কলাপের প্রয়োজন হইয়াছে। এই আস্মা হিন্দুর আবিষ্কৃত অতএব আত্মামূলক ধর্মা যে আকারে যেথানে প্রচলিত থাকুক म नकनरक है हिन्दूधर्य विनया नामक वन করিলে নিভান্ত অসকত হয় না।

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

সংস্থার স্তনা।

আখ্যামূলক ধর্মের আমরা যথেষ্ট প্রশংসা করিয়ছি। ইহকালের কার্যা-ফল পরকালে ভোগ করিতে হয় বলিয়া এ সংসারে অনেক সংকার্য হইয়া গিয়াছে, এবং অদ্যাপিও হইতেছে। কিন্তু প্রশংসা এই পর্যান্ত।

যিনিই যাহা বলুন, কোন ধর্ম সভা

সতাই পারত্রিক নহে। সমাজের মঙ্গ-माधनार्थ मकल धर्मारे थानीज रहेबादर, কেবল ভান্ত্ৰিক অভিধেয় পৈণাচিক ধর্ম্মের কথা স্বতন্ত্র। নতুবা সকল ধর্মের উদ্দেশ্য মহুষ্যের মধ্যে পরস্পর ভাতৃ-ভাব সম্বন্ধ করা ভিন্ন অন্য কিছুই নহে। তুমি কাহারও হিংসা করিবে না,কাহারও অনিষ্ট করিবে না, কেহ তোমার অনিষ্ট করিলে তুমি সাধ্যমত তাহার উপকার করিবে; তোমার বামগণ্ডে চড় মারিলে, তুমি দক্ষিণগণ্ড বাড়াইয়া দিবে, যাহার যাহা নাই, তাহাকে তাহা দিবে, সকৰ ধর্ম্মের এই একরূপ উপদেশ। ইহার . উদ্দেশ্য কেবল সামাজিক ভিন্ন পার-जिक नरह। चर्षनान, चन्नमान खड़ि সংকার্য্য এই সংসারের জন্য, দ্রা দা-কিণা এইখানেই উপকারক।

নীতিশাম্বের যে উদ্দেশ্য ধর্মশাম্বের ও সেই উদ্দেশ্য। উভর শাস্তের একই উপ-দেশ। কেবল এইমাত্র প্রভেদ যে, নীতিশাস্ত্র বিজ্ঞতা শিথার, ধর্মশাস্ত্র সে বিষয়ে বরং কিছু বিরোধী। নীতি-শাস্ত্রের উপদেশ যে অন্যের হিতসাধন কর, ভালই, কিন্তু তাহা বলিয়া আপ-নার হিত বিশ্বত হইও না। ধর্ম-শাস্ত্রের উপদেশ যে আপনার হিত বিশ্বত হইরা কেবল অন্যের হিতসাধন কর। ধর্মশাস্ত্র বলে মিথ্যাকথার বড় পাপ, কেন না অন্যের অনিষ্ট করে। নীতিশাস্ত্র বলে মিথ্যাকথা বড় লোব, কেন না আপনার অনিষ্ট ঘটাইতে

व्हेंबना नी डिणांब वक्षे পারে। স্বার্থণর, ধর্মণান্ত তাহা একেবারে নহে. ष्यञ् शर्माटकत छेश्राम (प्रथित्र) विठात कतित्व, धरेक्र शहे त्वांश रता। किंद कन विरवहना कत्रिक त्रात्न, তাহার বিপরীত বোধ হয়। স্বার্থপরতা ৰারা স্বার্থপরভা নিবারণ করিছে চেটা পাওরার এইরপ ঘটরাছে। লোকের ভাল করিলে ভোমার আপনার ভাল হুইবে, এই প্রলোভন বাক্য এই ধর্ম্মের প্রধান দোষ। কেবল আপনার প্রতি मृष्टि कत्र, जाननात्र मक्त (हरी कत्र, किरम তোমার আপনার পরকাল ভাল হইবে, কেবল তাহাই চিম্ভা কর, অনবরত এই পরামর্শ যে ধর্মের মূল সে ধর্ম আলোচ-নায় স্বার্থপরতা কালেই অভান্ত হইরা পড়ে। এক্ষণকার লোকেরা কিছু স্বার্থ-भन्न विनम्ना त्य श्रीवाम चारक, धर्माहे হয় ত তাহার হেড়। অনেকে বলেন যে, বরস হইলে আমরা স্বার্থপর হইরা থাকি, আবার ইহাও শুনা যার বে, বন্ধস হইলে মহুষ্যেরা কিছু ধর্মপ্রির হয়: উভয় কথাই সতা কি না জানিতে (शत्म, विकामा कत्रा आवभाक त्य, লোকে অত্যে স্বার্থপর হইরা পরে ধর্ম-প্রিয় হয়: কি অগ্রে ধর্মপ্রিয় হইয়া পরে স্বার্থপর হয় ? কেন না দেখা যার স্থার্থপরতা ও ধর্মনিষ্ঠা একাধারে সচরা-চর থাকে, যাহারা স্বভাবত: স্বার্থপর, ভাহাদের স্বার্থস্থহা যে এই श्रार्थ विरामय भतिष्ठश्च इरेरव, देश এक

প্রকার বৃদ্ধা যার। এইজন্য স্বার্থপর বাক্তিরা বড় ধর্মপরায়ণ হয়; অথবা বলুন ধার্মিকেরা বড় স্বার্থপর হয়। উভয় কথাই সম্ভব। প্রচলিত আত্মামূলক ধ-র্মের পছালোবে এই সম্ভাবনা ঘটিয়াতে।

এই স্বার্থপর ধর্মের আর এক নাম
সকাম ধর্ম। এক্ষণে সকল ধর্মই
আয়ামূলক এই জয় সকলধর্মই সকাম।
একসময় হিল্পর্ম নিয়াম হইয়াছিল।
দেই সময়ে ভারতবর্ষের বড় গৌবব।
অল্যাপিও আমরা সং কর্মের পর "এতং
কর্মফলং প্রীক্ষণার অর্পন মস্তু" বলিয়া
থাকি। কিছু তাহা কথায় মাত্র,মনে জানি
যে, প্রীকৃষ্ণ এমন অবিবেচক হইবেন না,
আমাদের সংকার্মের ফল অবশ্র তিনি
আমাদেরই দিবেন। এক্ষণে এই সকাম
ধর্মের বিদ্বেধী ভানেকে হইয়াছেন, তাঁলি
হারা মনে করেন আমাদের হিল্প্র্মের
সংস্কার আবশ্যক।

সচরাচর খেরপ সময়ে ধর্ম্মগংসার হইরা থাকে বাঙ্গালার যে সেরপ সময় উপস্থিত হইরাছে এমত নহে। সামাজিক অত্যাচার ধর্ম্মগংস্কারের এক প্রধান হেতু; বাঙ্গালার একবে সে মত্যাচারের বড় বাড়াবাড়ি নাই, অতএব সেদিকে আশাও নাই। চৈত্তাদেবের ধর্ম সামাজিক অত্যাচারে জন্মিয়াছিল। তাপ্তিক কালে বাঙ্গালা ভ্রানক নৃশংস হইরা উঠিয়াছিল, এইজ্ভ বৈষ্ণব ধর্মের প্রয়োজন হয়। আমরা এক্ষণে সকলেই চৈত্তাধ্বের ধর্ম স্থাই গ্রহণ করি বা না করি

किन्नु भाक्छ मक्टलई देवस्थ्व। बान्नता রাগ করিবেন নতুবা বলিতাম তাঁহারাও বৈষ্ণব অর্থাৎ প্রেমধর্ম্যের শাখাবলম্বী। এক্ষণে বাঙ্গালির যাহা কিছু আছে তাহা হৈত্ন।প্রসাদাং। চৈত্তের ঘারা সমাজ-বিপ্লব উপস্থিত হইয়া থাকুক, অথবা সনামবিলাৰ উপস্থিত হওয়ায় চৈত্ত উপস্থিত হইয়া থাকুন সে মীমাংসা একণে অনাবশ্বক। যে অবস্থায় চৈত্র-দেব ধর্মপ্রচার করেন একণে বাঙ্গা-লার সে অবস্থা নহে, অক্তান্ত দেশে যে অবভায় ধর্মসংস্থাব হইয়াছিল একণে সে অবস্থাও বাঙ্গালার নহে। অতএব সামাগ্রত দেখিতে গেলে একণে বাকা লায় ধর্মসংস্থারের সম্ভাবনা নাই অথ্ বিশেষ পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে বাঙ্গালায় ধর্ম্মংস্কারের আরম্ভ ইইয়াছে বলিয়া বোধ হইবে।

পূর্ব্বে সকল দেশে সকল সমাজে লোকে কেবল মাত্র একটি করিয়া ধর্মা দেখিতে পাইত বা একটা ধর্মােরই চুই চারিট শাখা প্রশাখা দেখিত। ইদানীং নানা ধর্মা একত্রিত হইতে আরম্ভ হইন্যাছে এই জন্য ধর্মাের প্রতি শ্রদ্ধা বা ভক্তি সকল দেশেই কিছু কিছু কমিয়া আসিতেছে। নানা ধর্মা একত্র দেখিনার ফল বাঙ্গালায় কিছু বিশেষ ফলিয়াছে। মনুষাের প্রকৃতি এক, তবে ধর্মা সভন্ত কেনঁ? এ কথা বাঙ্গালার প্রায় অনেকেই আপনা আপনি আলোচনা করিয়া পাকেন। এই কথার অন্তর্গত

আরও অনেক তর্ক মনে উপস্থিত হয়।

স্থা এক, তবে পাপপুণা সভস্ত কেন ?

মাংসভোলন এক ধর্মে পাশ, জাব ধর্মা

ভাহা মহে কেন ? জগতেব অন্তা এক,

কিছ ধর্মের অন্তা সকর দেশে সভস্ত

কেন ? এইকপ আ লানেনা যে করে

ভাহার মনে প্রচলিত ধর্মান্তকে সম্পেহ

উপস্থিত হও্যা সম্ভব। জনেক বালা
লির মনে সে সন্দেহ উপস্থিত হুইরাছে,

ভাহাই ধর্মান্ত্রাব আপনালাপনি আরম্ভ

ইইগাছে।

क्ष मन्द्रादव मन्द्रायक गाँठ, अवाद-काव एक देव जनारमन, मिकांगा कवितन কোন উত্তর নাই। কোন প্রামর্শ नाहे, युष्ट नाहे, खेल्यान नाहे, अवह भःकात कावल क्रेग्राटक । ধর্মবাজক नाडे, धर्य श्रहात्रक नाहे, दकान श्रह नाहे, अथा ठाविनिटक देवाव कार्या स्टेट्टए । वाह का कहे मःश्वाद अहन कदिएछ-(इन. ट्राइ एक्ट्र मध्यमास यक नाहे, काशास्त्र ज श्वाय कान इव गाँहे; किन बहे दल डीशामत डेल्बर कविटड क्वेटडरक् পুনঃপুনঃ विनवा, छाबारमव आर्थाक्टः वश्रमश्री माम (म अया य. हे (कद्य : डीहारमन का-शिंख थाटक, डीहांत्रा कानागाम अहन ******* 1

একংশ কি কি বিধরের সংস্থার আবৃত্ত হইয়াছে তাহা বলা কটিল নহে। মূল সংস্থায় কথায়ের প্রকৃতিন্তকে। প্রাতন ধর্মের বেরুপ্রাত সাঞ্চার প্রকৃতিক

ছিল, ডাছাতে উখন মহুব্যাক্ততি বলিয়া नाधावनकः विश्वान किनः शिक्षणीता বাদালার আদিয়া প্রতিমা দেখিরা কডই ऐश्वान क तिएकन; मञ्चादात काकात হইতে ঈশ্বরের আকার কল্পনা করা কং ই व्यात्रच विषया डीशाम्ब (वांश रहेक । ভাগার। তথন এক পৈঠা উঠিয়াছিলেন, व्याव अकृषि देशेंग छेठिएक छाशास्त्रव বাকি ছিল্ল ভাঁহারা আকৃতি ছাভিবা ছিংগন; কিছু প্রকৃতি গড়িতেন; অল্যাপি काशामत मर्गा तमरे बीकि हलिएडरह । মহুবোৰ মত ঈশার দরাময়; বরং কিছু বেশী। ভিনি মহুৰোর মত বাগান, কিছু হয় ত বাড়াবাভি। তিনি সমুষ্যের মত প্রশংসাপ্রিম,এই জন্য ভাষার স্তব পূজার এইরূপ তাঁহারা विश्मव कावभाक। जेचरत्र अङ्गिक कत्रमा कतिशा थारकन। বঙ্গাছী দিগের মত স্বভন্ত। মত্ৰাৰ আদৰ্শ হইতে ঈশবের প্রকৃতি अञ्चर करतम ना। अ मचरक कीशाता হয় ত লগানা মতাবলম্বী অপেকা किकिश छेत्रछ। औद्देशन राष्ट्रम, मूनगमान वन्न, हिन्नु बन्न नकन मछ्हे थाइ-िट के भेग महत्यात गरा। मट्डि क्षेत्र विश्वान, देकम मा जायता नशातान्।, मकन मरठहे क्षेत्र कमा-बान, (कम मा सामरा क्याबान्। नकम बट्डरे वेषद प्रश्रभाती, दक्त, ना आवता Ceil (कंद म @ क्ति।

আমন্ত আশংলাতির, ক্রি স্থাত বে দেইরূপ ্রশ্বংলাতির ইহা কোন মান্তই বসপহীরা নিবাস করেন না।

তুমি বড়, তুমি আজি বড়, তুমি বাই।

মনে কর, তাহাই করিতে পার, এই

বলিনে সম্বর বে আপনাকে বড় জান

করেন বা ভাহাতে বিশেষ পরিত্প হন

এ কথা বসপহীদিগের নিকট অতি

অগ্রাহা। এই জনা তাহাদের সন্ধা।

আহিক নাই, পূজা প্রেয়ার নাই।

তাহারা ঈশ্বরতে প্রশংসা করিবা প্রকাশ

হাত করিনাম মনে করিতে তাহেন না।

ক্ষারের যাহা ইচ্ছা লোকে তাহা করে না। তাহা ক্রাইবার নিমিত্ত তিনি আপনি আসিয়া ক্ষাগ্রহণ করেন, কিছা নায়েবস্থরণ আপনার প্রকে কি কোন দোতকে কখন কথন পাঠাইরা থাকেন, এ কথা বন্ধপন্থীর নিকট অতি অগ্রাহ্থ। বাহার নিম্নে সকল হই-রাছে, সকল চলিতেছে, তিনি এ সম্বন্ধে কোন নিম্ন বাঁধিতে অক্ষম এ কথা ভনিলে বন্ধপন্থীয়া হাসেন।

বে নির্মের বলে ক্স ক্স বীজ
মৃতিকা হইতে রসগ্রহণ করিতে পিথিল,
গে নির্ম্বারা মুম্বা কিছুই পিথিতে
পালিল না বলিরা আকাশ্বাণীর আবশাক্তা হইরাছে বা সেই জন্য তুলটে
স্বিরের আদেশ লেখার আবশ্যকতা হইযাছে জ ক্রার বলপছীর। উপহার
হরেন ভাষারা বেল, কোরাণ আ
ভৃতি গ্রহ ক্রির্মেরীত বা ইপর আরিট
বিলিরা বীকার করেন লা

शहा गरकरण नता देशहा क्रिकेट

RIVE OFFICE PROT HI SING **छै।शास्त्र पूर्ण एरखेत शतिहर्व शास्त्री** याहरकरहाँ व्यथनकः जाशांत्रा क्रमणार्वे অসীকরে করেন। বিতীরতঃ ভাঁচারা ८वन, बाइटेक्स, देकातान, भूतान किहुई यात्ननेना, धर्मश्रह व्यथक्तीभनीय क्लन्त क्रीयतः कर्मना वसना, छव अ পূলা প্রেয়ার তাহায়া সকলই র্ণ্ট্র वर्णन। छाहारमत्र कार्याचात्रा त्या याह-তেছে रा, একণে কেবল এই ভিনটি স্ত্র স্পতীক্ত হটরাছে, আর করেকটি সূত্র অস্পষ্টভাবে কিঞ্ছিৎ অন্তরে আছে। তাহার একটি এই বে, পরকালের দও-विधि चारेन मिथा। चर्थाए चर्ग नंत्रक मिथा। भाभ भूगं मिथा। आह अक्ष আর্থ অস্ট্র—আরও দ্রে আছে, সেটা বোধ হয় এই ; মহুবোর বাক্তিগত স্বত-স্ত্ৰতা আপনা হইজে ক্ৰমে ঘুচিবে। ধুমকণার পভত্রতা ঘূচিয়া সমুদ্র হই-য়াছে, মহুবোর ৰাজিগত শুভদ্ৰতা গেলে ব্যেইরূপ কি একটা হইবে ভাহার वास्त्रवंश वासानि दत्र मार्टे, कार्याटे नामकान्धं रह नारे।

भूके विचारमंत्र अहे देर मुक्त का कि सम् क्रम बहिनारक छाड़ा छान कि सम् भागता रम मगरक अम्मर्ग रक्ताम कर्षा विचारक अञ्चल महि। हैकारक वर्षामध्यान क्रम्म विचार माना का का का का का का का भागीक माहे, भागारमंत्र अहे समितान हैक्का रम, अहे कि अविचार दिस्त्यामान सम्बं महिनामान स्थान महिन का कि ार्ग, नवक, नान, नुबा अञ्चित्र मक्क नेकन खानिएक वसिवादह। গ্রিত হইবাছিল। একংগু, বালালার श्रदात जनाया जातक व्यवस्था जेव

हर्द सोस्रोव क्रेम्सल्वि मुक्त वर्ष केटा . (तत्र प्रकृषि मसूरवात मण नरर : अर्दे क्छ इहेबाहिन : दन्दे कन्नना इहेटछ क्यानान जूरी, ननक, गान, जूना ध वक्र शही के नश्या वाकानाव निर्वाष्ट्र बाह्य मरह।

সমাজ সংগঠনত

"नगांच काशांत्र कुछ नरह: किंद গ্ৰাপনা,আপনি বৃদ্ধিপ্ৰাপ্ত হই ছা-পাৰ্ছেন্?' যমন মহুব্যের শরীর বা অন্য কৌন ानीत मतीत व्यवदा कान फेडिल নিলে পর আপনাআপনি বৃদ্ধি ইইতে াকে, কোন ব্যক্তি তাহাদিগের বৃদ্ধি-স্পাদ্ন করে না; ডজপ স্মাজের र्धन जरः উद्विष्टि काहाज्ञ एउटे। ा रङ्गारशंक न्दर, किंद्ध आश्रना-।। भनि इहे श्री थाएक। यक्षात्रा (यमन् अवस्य कद्र, कश्चवा दकान निज्ञकर्या रत, एक्न दक्र नमार्कत वृक्तिभावन एत ना। वजापित क्रमा क्विम, श्रात्र कार्गाः व्यक्तः वर्ष्णानिक नरह । स्ड नगरिका बहुना चार्छादिक, घड:--कन जाकि विक्रियां होत्य व्यक्त करिया

धरेक्र चमुखाबाखिदित्रव मत्या ग्याब--वस्तित ज्यानाज नवास हत् माहै। ইহারা বহুদুংখাক ব্যক্তি নিলিত হইয়া, कान बार्य या नगरत कान निर्मिटे वान्यात हानु कृतिक जात्म मा, व्यर नकत्न नगरमञ्जू दरेहा कान कार्याः প্রবৃত্ত হইতে পারে না। কিন্তু সভ্য-षािजितिरात्र मस्य जित्रकार्यः मृष्टे द्व । সভাছাতিরা বহুসংখ্যক লোক একত মিলিত হইয়া অবস্থিতি করিতে ভাল্ড वारम। এই একল अवशास्त्रक नामः नमाभवक्ता (य नकल जानित् मर्था) म्माभवभागक स्वाभाक स्टेबार्स, काश-त्राहे व्यायाहित्यंत्र कारमानमात्र विवत्र। रा नमछ देवा विनिष्ठ रहेगा अकृष्टि । उत्त समुद्धां आयी नरहें। त्य नमाच टरेबाट्य, छांद्रानिशत्करे भागती Cमरे न्यारमञ्जू (लाक अवनिवा (नरे विज्ञान जाना नीनार्वन द्वारक निर्वाक नाम विकास वासनी जानानिर नाम है ि अब अवः ब्राह्मसम्बद्धाः अधि क्या विनासिक ब्रुवाञ हरेरव । अवन । नवदत्र द्वान विकित्र नामान्य माहे , त्या पाछके अध्यक्ष दे छ शूर्ट दे व स्कारी

क्ष्युक्र में छ। दे कादिक गरेश सरव सर्वादक्षत श्वामा इ इहेमादक, काश्रासन महेश कामारमन क्षांचा वह गरीक करम करम भविश्रहे ६ छेम्र इंहरेर । এই বৃদ্ধি ও উন্নতি কাহার বারা সম্পা विक इब ? देश कुळिब, दकान बास्कि-कर्जुक जन्मापिछ; ना हैश प्राश्चिक, আমরা বলি, সমাল च डः शबु छ ? काहात कुछ नरह, हेश' आशना जाननि गःशंक्रिक क्षेत्रा थाटक। वाक्रीता **उ**हे श्रद्धा श्रीकांत्र करतन ना, उंश्वाता दिन-र्दन (य, नगान कि कडन भगार्थ (य, काणवात वृक्षिणांथन काणनि कतिद्वा. न्यांच (करत कड़क श्री लारकं नम्छि-মাতা। স্তরাং ইহার বৃদ্ধি বা উন্নতি अञ्चाद इट्ड निहिड, मस्यात मन्नामा धरशक्षिम। अक्रभ आगद्ध कतित आमता बनिव त्य, आमामिरशत शकि-भाक्त्रा आमामिश्य क्षात अर्थ मनाक्-क्राल वृक्तिक शास्त्रम माहे। भाष वर आयदा आमानिरशत मंड आदेश विभव-कारन बुद्धाहेट उठ्डा कतिरहि ।

अभाक्षतकत्वत र्वशां हरेल, गमा-चार्डिक वालियर्ग चार्यनामित्र कर-नामनकर्षा वस कतिएक नार्त धनम द्यान लामनचिक मःशानान टिक्टा

चार्गरानि इहेर्स न्युक्तिम उनक्रिक इहेरवा शृह्विदान खेशकिक इहेरण आत मार्गारमक धकेल संविष्ठि कतिनात मछावना (काशाब, छाहा बहेँ ताहे आमा-(स्त मनाच विक्ति इटेगा याहेर्त। चाउन्रक गकरेलंब विश्वापत्थ्यन कतिएंड शास्त्र अवः मक्नंद्रक भगत्व हरेगा कार्या कतिए आदम्म मिट्ड ध्यम धक्यमारक चामारमत कर्छ। कन्ना উচিত। ইইার হতে আমরা আমাদের ममारका निवाधी भाकि मिव धवर देनि **८१** इंग्रेडा होत्रों आमामिशक आस्म-भावत्व विमुख (प्रविद्य डिहिड प्रश्वविभान शूक्क উচিত পথে আনিতে পারিবেন। धारे आकारत मभारवत उत्तिक मृत्रभवन वा क्रिटक इहेशा शास्त्र। (य চ:লাইবার ক্ষতা দেওয়া হয়, তাঁহাকে त्रमाद्भव (सार्कता वाका वरण । नमाय-वक्रानव लात्राहर दामात राज गर्न-नियुधी क्षत्रका श्रापः न कतिएक स्य, ना केत्रित ग्रमाय हरन सा धवर उन्निष्टिमाङ ক্রিভে পারে না। অভএব সমাজের लागम अवदाय जक्षन (मडा शका क्षा अपनाक। 🗢 हेर्ड दे ने बारमण ये गरेख विज्ञा कार्या मन्त्री विज क्ट्रेंद अवर काशांट रे गर्भाष्ट्र कार्रिक ere i wielen gen cu, minicus gera i fes nivila e Galo es शतकार्य होति किंव किंव किंवा के स्वात, कार्यिक इहें के थी किंदन, उन्नहें नसर्विक बाहारक अक्षेत्रक क्षेत्र करेटव, काश्रद कार्यात्रको समाव। अक्षाक क्षेत्र वहार TO WIT APPEAR THE METAL AND COME COME MANAGEMENT BARE THE MAN TOPPOST WINNESS SECTION TO THE WALL STREET WINN

बाबाउड श्रामीम्ट अविक स्वेटन। अमाज्यक्षणानीत प्रवाश हरेतन, গুৰাতা সাপনাদিগের প্রতিনিধি নির্মা-हम क्तिरवं अवर अ मक्त अञ्मिति উপরেই সমাজশাসনভার ন্যক্ত হইবে। वक्त तिविद्य इटेर्ड वर दि क्विक डेव्रिड, देश दक कतिम । देश कृषिय, कान विभिन्न वाकि बाता मन्यामिकः यमन्त्रामिक। ना हैश चलःखेत्रक, व्यामाणिशत श्राडिशक्तत्र विनिद्दन (य. ইহা অধ্যাবস্থায় রাজাকর্ত্ক স্পা-निक, शांत्र नवारकत्र लाकमाशांद्रनकर्क्क गण्यामिष्ठ এवः नर्वाण्य ध्रमामिर्गत **अ**ञ्जिमिथवर्गकर्कुक मन्नाप्ति ह। किञ्च त्राक्षा ८क १ द्राक्षा ८कवन नगारकत अञ्च-র্গত ব্যক্তিগণের সর্বসন্মতিতে সমাজ-খাসন ক্ষমতাবিশিষ্ট একজন মহুষ্যমাতা। बाबा जमाद्यत देव्हक्रिक, किनि नमा-(अत्र असीत। डिनि असन कान वावश क्तिए भारतम मा, यादा ममास्कत धानिहेकत, याशास्त्र नमारकत अभवन चिंदि धवः याहा नमार्जन अवर्गन (गाक्रमिर्शत हेज्हाञ्कृत नरह। (मज्जन ব্যবস্থা করিলে, শীল ভাঁহার লোপ क्षित्र इंदेर्व । नजूरी काहार कम्बा ा है हहेर्दा है शाया , क्षिण व कम्-अरक्त (व क्रिक्टिन क्रमा मूलम नामा शिक अवसा मरदालन कविरक कुछकुर्गी क्ट्रेट्ड नाराम साहै, जार नुसंदन भागवा अक्ष्य व आरोड कालांड अकाब अकाब करें कालां भागांत महत्र मह कतियां

कारात्र कायन अरे (व) नगरकत वृत् का उन्निकृतिय नार, (काम मस्या कालिक इंदेरक "नादत ना । नम चार्क हें एक किए तन त्य मकल ও हेव्हा बादक, उन्नयुनादबर नमाइक्ब वृक्ति व स्माडि हहेदन। खुक्ताः मुम् ভের অভার ও ইচ্ছা স্থাঞ্চের উর্তিক (नङ्गत्रा । वह अन्त भूतन व्या . uই हेब्बालूक्य कार्या कतिए म्यांच : षाश्निके हिन्दि; घटनात धावर्डनात कानभाकका दानित् ना। नमास 5-लिए विलाल वृत्तिर वृत्तिर वहरे दह, সনাৰের অন্তর্ত লোকগণ কার্থ্য তাবৃত্ত হইরে। অত এব ইহা প্রমাণিত इहेग (य, সমাজের উন্তি খত: अंतुन. স্বাভাবিক; পরসন্পাদিত বা কুতিম न(र। এইরপে সনাল প্রথম অবস্থা উত্তীৰ্ হইয়া প্রপর্বতী অবস্থাতে উপ-नी छ • इहेरवा यथन अवारमञ्ज लाक-সাধারণের ছত্তে সমাজশাসন, তর্থনা ग्राब निर्व हिल्डिए। आतात्र यथम ध्यबाठब्रव्यगानी व्यव्धित इहेक्कां व्यक्ति-নিধিবর্গের হতে সমাজরক্ষার ভার নাত हरेग्राटक्र ज्यम । नगाम चडः धर्ड, निक खुकार व देखान बस्माद हिन-Cote । (काम नमास्करे नमास स्मनह ্কোন মন্ত্ৰোর করায়ত নছে। অপর (कान बाक्किहे मनाक्रक निस्त्रत मक क्रिशा बिक्टि शाहित्वन मा। जानि PART AREA APPEARING MATERIAL TORS MITS, MAIL CA

🖚 জ দূর সভ্য। যে ভাভির মধো সবে সমাজের স্তাপাত হইয়াছে, ভাহাদের লইয়া আমাদের প্রস্তাব। এই সমাজ क्तरम क्रा भविशृष्टे ७ डेन्ड इडेरव। এই বৃদ্ধি ও উন্নতি কাহার দারা নক্ষা। षिष्ठ इय ? हेश क्विम, का न नासि-कर्जुक मन्नाषिठ; ना देश याञ्चिक, স্তঃপ্রবৃত্ত প্রের। বলি, সমাস কাহার ক্বত নহে, ইহ্' আগন। আগনি সংগঠিত इहेगा थाक्त। याहारा এहे মত্য স্বীকার করেন না, তঁহোর। বলি-(दन (य, मनाज कि (इडन भनार्थ (य, আপনার বৃদ্ধিদাধন আপনি করিবে। সমাজ কেবল কতকগুলি লোকের সম্ঞ্তী মাতা। স্তরাং ইহার বৃদ্ধি বা উন্তি মহুষোর হস্তে নিহিত, মনুদোর স্পাদ্য এবং কুতিম। এরপ আগ'ত করিলে আসরা বলিব যে, আনাদিনের প্রতি-शक्कता चामानिरगत कथात वर्ध मनाक-রূপে বুরিছে পারেন নাই। অতএব আমরা আমাদিগের মত আবও বিশদ-রূপে বুঝাইতে চেপ্তা করিতেছি।

সমালবদ্ধনের স্ত্রপাত হইলে, নমাভাস্তর্গত ব্যক্তিবর্গ আপনাদিগকে একশাসনস্ত্রে বৈদ্ধ করিতে পারে এনন
কোন শাসনশক্তি সংস্থাপনের চেই।
করে। ভাষারা বলে যে, আমাদের
পরস্পারের স্থার্থ ভিন্ন ভিন্ন প্রকার,
যাহাতে একজনের স্থাহইবে, ভাষাতে
হয় ত আর একজনের ছংথ ইইবে;
এবং পরস্পারের কার্যাহারা প্রস্পারের

স্বার্থহানি হইলে গৃহবিদাদ উপন্থিত হইবে। গৃহবিবাদ উপত্বিত হই**লে** আর আনাদের একতা অবস্থিতি ক্রিবার সম্ভাবনা কোণায়, তাহা হইবেট আমা-(मत भगात्र विक्ति इटेशा याहे(त। ঘত এব সকলের বিশাসভঞ্জন করিতে পারে এবং সকলকে সম্বেভ হ্ইয়া কার্যা কবিতে আদেশ গিতে পারে এমন একজনকৈ আমানের কর্তা করা উতিত। ইহাব হতে আনবা আমাদের সমাজের নিয়ন্ত্রী শক্তি দিব এবং ইনি (नरे क्या वाता जामामिश्क जारमण-পালনে বিমুখ দেখিলে উচিত দণ্ডবিধান পূর্বক উচিত পথে আনিতে পারিবেন। अकारत मभाराजव उँग्रेगित मृत्रपद्धन হইষা থাকে। যে ব্যক্তিকে সমাজ চ.লাইবার ক্ষতা দেওয়া হয়, চাঁছাকে मधारणव (बारिकवा वाका नरल । मधाक-वन्नरमत शान(६३ टाजात १८४ मर्स-निश्ची करुड। श्रान कतिर्द्ध इश्व, ना कवित्स नमाय हत्स ना अवर है। दिलाङ কবিতে পারে না। ভাত এব স্মাজের व्यापन अवडाय अवजन (गडा थाका একান্ত আনশাক। 🛎 ইহঁংরই ভাবেশ মত সমস্ত হিতকর কার্যা সম্পাদিত হইবে এবং ভাষাতেই সমাজের উন্নতি হইবে। কিন্তু সামাজিক উন্নতি যত ঞানিক হইতে থাকিনে, ভতই সমাজের मवानिमञ्जी कामका ताकात रूख इहेटक স্মাজের লোকসাধারণের হস্তে যা-ইবে, এবং সর্কাশেষে লগাভের শাসন

প্রাক্তন্ত্র প্রণালীমতে প্রবর্ত্তিত হটবে। প্রমাতন্ত্রপ্রণালীর স্ত্রপাত হইলে, গ্রন্থা আপনাদিগের প্রতিনিধি নির্বা-हन कतिरव ध्वर धे मकल श्राटिनिधित উপরেই সমাজশাসনভার নাস্ত হইবে। এক্ষণে দেখিতে হইবে এই বে ক্রমিক উन्निडि, हेहा (क कतिल। हेहा क्रजिन, (कान वित्निष वाक्ति चाता मन्नामिड; न। देश अठः अवृत्, अगम्मानि । जामापिरात अভिशक्तिता निस्तिन (य, हेहा धारमार हाय ताका कर्तृक मण्या-निত, পরে সমাজের লোকসাধারণকর্তৃক गम्भानिक এবং मर्कान्य अन्नानिरगत প্রতিনিধিবর্গকর্তৃক সম্পাদিত। কিন্তু রাজা কে গুরাজা কেবল সমাজের অস্ত-গৃত বাজিগণের স্প্রিম্মতিতে স্মাজ-শাসন ক্ষমতাবিশিষ্ট একজন মহুষামাতা। রাশা সমাজের ইছেক্টেড, তিনি সমা-জের অধীন। ভিনি এমন কোন বাবসা করিতে পারেন না, যাহা মমাজের षांबिष्टकत्रं, याशास्त्र गमास्त्रत व्यवभन ঘটিবে এবং যাহা সমাজের অন্তর্গত শোকদিগের ইচ্ছাতুকুল নহে। সেরুপ বাবসা করিলে, শীল তাঁহার লোপ করিতে হইবে; নতুবা তাঁছার ক্ষমতা মষ্ট হইবে। ইংগণ্ডে, অণিভার ক্রম্-अरवल रच विक्रमित्नत अना न्टन नामा থিক অবস্থা সংখাপন করিতে কুত্কার্য্য **रहेट्ड পाद्रिम माहे**; এবং পূर्वाटन ব্যবস্থা সকল যে আবার তাঁহার মৃত্যুর शद मगाद अधिशंवाच क्षित्राहिल,

ভাহার কারণ এই যে, সমাজের বৃদ্ধি ৰা উন্তি কৃতিম নহে, কোন মুম্যুকর্তৃক চালিত হুটতে পারে না। সমাঞ্জের অর্গত লোকদিগের যে সকল অভাব ও টাছ। থাকে, তদরুগারেই **সমাজের** বৃদ্ধি বা উন্নতি হইবে। স্থতরাং স্মা-জের অভাব ও ইচ্ছা সমাজের উর্তির নেতৃসক্রণ। এই অভাব পুরণ এবং এই ইচ্ছাত্রপু কার্য্য করিতে সমা**জ** षाथभिष्टे চলিবে; ष्रातात अवर्तनात আবশাকতা রাণিবে না। স্মাজ চ-लिय विलिश्च वृक्षित् इहेरव (य, স্মাজের অস্তর্ভ লোক্সণ কার্য্যে প্রস্তু হইবে। অত্রব্ ইহা প্রমাণিত **इहेल (य, मनारक्त डेन्निड खड: श्रृह,** স্বাভাবিক; প্রসম্পাদিত বা কুতিম নহে। এইরূপে মমাজ প্রথম অবস্থা উত্তঃৰ্ হইয়া প্রপর্বতী অবস্থাতে উপ-নীত-ছইবে। যখন সমাজের লোক-সাধারণের হস্তে সমাজশাসন, তথনও मन। इ निद्ध हिल्दि हर्ए। आवात यथन थाबाठब्रथानी थान्छित्र इरेशा थाति-নিধিবর্গের হত্তে সমাজরক্ষার ভার নাস্ত হইয়াছে, তখনও স্মাজ স্বত:প্রবৃত্ত, নিজ অভাব ও ইচ্ছার অনুসারে চলি-তেছে। কোন সমাজেই সমাজ অপর কোন মহুষোর করায়ত্ত নহে। অপর কোন বাক্তিই স্নাছকে নিজের মত করিয়া গড়িতে পারিবেন না। আমি এই দ্রবাট আমার মনের মত করিয়া গড়িতে পারি, এবং দেই রকম প্রস্তুত

कतिरम देश आधात कुछ वनिता निर्फ्न করিতে পারি। এই দ্রবোর রচনা মুভরাং কুত্রিম হইল, ইহা আমার কুভি, हैश्दब्रिक्ट विनव, हेहा आभाव "माकू काक्षत" (Manufacture) किन्न थानि-দেহ অথবা বৃক্তাদির বৃদ্ধি কাহাবও সাধারত নচে: উহা আপনাপনি বাজি-বেই বাড়িবে. ভূমি যত কেন উহার ব্যাঘাত কর না। এইকপ বৃদ্ধিকে इंबिंग बना यात्र ना, देश शांजविक. খতঃপ্রবৃত্ত। ইংরেজিতে ইহাকে "গ্রোপ" (Growth) বলিবে। এক্সণে Manufacture এবং growth এই मनवायत (य कि थालन जारी शाठक व्याहरून, যদি না বুঝিয়া থাকেন, তবে আর व्याहरू आमारनत माथा नाहे, आमना ভাঁহার নিক্ট হার মানকাম। আমাদের অর্থাহ ক' া পারিয়াছেন, जिनिहे प्रांगारमंत्र र'' शास्त्र । **प्रा**ंत यिनि कार्याप्तिशतक कात सामाहियां इन. তিনি যেন আমাদিগকে অনুসরণ করিয়া আবার লজ্জিত ন: করেন। আমরা याश विविश्वाहि, जाहा इटेट्टरे शाहिक বুঝিতে পারিবেন, কেন ইংরেজিতে বলে "Society is a growth and not a manufacture." এवः हेहाहे आ-मता शृद्ध " मभाज काहात क कुछ नरह, কিন্তু আপনাপনি বুদ্ধিপ্রাপ্ত হইয়া थारक" এই आकाशात्रा आकाम कर्त्र-याहि। नगानिकारनत्र ठाई। जामा-निश्चित्र मर्था चित्र कहा बनिहारे खामा-

দিগকে এত লিখিতে হইল,নত্বা আমরা ছই পংক্তিতেই আমাদিগের মনোগত ভাব বাক্ত করিতে পারিতাম, এবং পাঠকগণকে এত কই দিভাম না।

कारभाक वालन (य हैशतका वाहे मजा-**छात्र म**्लाक्रभिगदत आद्वार्ग कविद्राः **(छन। किन्छ এই ইংরেজদিগেব মধ্যে** এই উনবিংশ শতান্ধীর প্রারম্ভে বখন বিখাত বাজনীতিজ (Sir James Mackintosh) टक्स्म माकिण्डेन नारहत विवाहित्वन (य "constitution are not mane, but grow" অর্থাৎ কোন শাসনতম্বই অন্যের দারা ক্রত, বদ্ধিত এবং উন্নীত হইতে পারে না কিছ আপনা মাপনি বৃদ্ধি এবং উন্নতিলাভ করে, তথন সকলেই আশ্চর্য হইয়া তাঁহাকে ধনা ধনা করিয়াছিল। আবার এখন-কার ইংরেজেরা বলিবেন যে ইছাই অত্যম্ভ আল্চর্ণোর বিষয় যে মাকিণ্ট-**শের এই সতাপ্রচাবে দকলে বিশ্বিত** र्देश डीहाटक धना धना कतिशाहिल। हेश्लर खेत्र हेमानीसन व्यवसार करे সভ্যের চমৎকারিতা থাকুক বা না পাকুক ভতদূর উৎকর্ষ সাধিত হয় নাই যে তখন धरे मट्डा लाक्यन आकृष्ठे ना इहेटव। তথ্য সমাজে সাধারণ শিক্ষার অবস্থা যেরপ ছিল ভাহাতে উপরিউক্ত সভোর थाठात बाता त्लारक हमदक्क ना हहेगा थाकिट्ड शाद्र नाहे। दन नगरम नक-ें दबरे गर्जाज कृजिमश्रमार्थ दम्थिए शा-

ইত, কেহই স্বতঃপ্রবৃত্তি ও বৃদ্ধি স্বীকর্মি করিতে চাহিত না। অর্থাৎ সকলেই manufacture মত মানিত, কেইই growth মত মানিত না। তাহাদিগের মধ্যে ইহাই প্রচলিত মত ছিল যে ঈশ্বর গ্রহগণকে স্বহস্তে স্থ্যের চতুর্দিকে স্থাণিত করিয়াছেন এবং তাহাদিগকে এরপ বেগবিশিষ্ট করিয়াছেন যে তাহারা সুর্যোর আকর্ষণামুসারে মুখ ককে ভ্রমণ করিতে পারে। चामता (यमन रकान कार्या कतिशा आह इहेटल विआम কবিয়া থাকি, তজ্ঞপ ঈশ্বরত পৃথিবীর স্ট্রেল্ডলবিভাগ, জীবস্ট্ট প্রভৃতি কার্যা করিয়া প্রাপ্ত হইয়া বিপ্রাম করিয়া-ছিলেন। আমরা যেমন মাটর পুতুল গড়িয়া থাকি, ঈশব্রও তজ্ঞাপ মহুষ্যকে গড়িয়াছিলেন। যে সমাজে এই সকল মত প্রচলিত ও আদৃত ছিল, সে সমা-জের লোকে মাকিণ্টদের সভাপ্রচারে আশ্চর্যা হইবে তাহার বৈচিত্র কি? ভাহারা মনে করিত যে হয় ঈশ্ব শ্বঃং স্মাজকে উন্নতির পথে চালাইতেছেন, ना दश वावञ्चालकिष्ठित तामविधि चाता সমাজ চালিত হইতেছে, অথবা এতত্ৰ-ভবের বারাই সমাজ বর্দ্ধিত ও উগীত रहेए एह। गाकि ऐन नुजन कथा বলিলে ভাহারা কেন বিশ্বিত না হইবে **प्यार कैशिएक धनावाम अमान नाकविद्य ।** সমাল বে কুত্রিমরপে স্ভিত্ত ও ণিত নহে ভাহা এক্ষণে অনেকে বৃ-

তেছেন যে এতদিন এ সভা কেন ध्यकाम इत्र नारे। इहा बाता छेननिक হইতেছে যে, ইতিহাদ পাঠের অতি সামানা ফল ফলিয়াছে। আমরা হলি আমাদিগের চতুর্দিকে যে সকল পরি-বৰ্ত্তন হইতেছে তাহা দেখি, কিমা কি রূপে সমাজ নির্দ্মিত হইয়াছে তাহা विश्विक्रती चत्रुगकान कति, छाहा इहे-लिरे वृक्षिएक शाहित य कान चली-কিক শটনা অথবা কোন ব্যক্তিগত ইচ্ছা সমাজের বৃদ্ধি ও উন্নতিসাধন করিতে পারে না এবং ইহাই আমাদের প্রতীতি হইবে যে সামীনা স্বাভাবিক কারণ হইতেই সমাজের উন্নতি হইয়াছে। সমাজে পরিশ্রম বিভাগ এবং কার্যাবিভাগ (division of labour) প্র্যালোচনা করিলেই এই সত্য আমাদের জদয়সম সমাভে কতকতলি লোক স্বভাবত: কৃষির প্রতি মনোযোগ প্রদান করে এবং কতকগুলি লোক নানাবিধ कार्या नियुक्त रहेशा शाटक । देश कि हू রাজার আদেশে ঘটে না, তবে তাহারা নিজ নিজ অভাব ও প্রবৃত্তি অমুসারে ভিন্ন ভিন্ন কার্য্যে প্রবৃত্ত হয়। অসভ্যা-বস্থায় লোকে পরস্পর নিরপেক হইয়া कार्या करत्र। কেহ কাহার মুঝাপেকা করে না। প্রত্যেক ব্যক্তিই নিজের व्यावनाकम् के ममूनात्र कार्या कतित्रा शांटक স্থতরাং কেহ কোন কার্য্যে বিশেষ শনো-যোগ দিতে পারে না এবং কোন বিষয়ে-ए भातिकारक्त ध्वर चार्ति वह विन अहे छन्नि इक्ष ना। किन्न नेनामनकन

হইলে সমাজত লোকেরা পরস্পাবেব े भूषार्थका ना कहिया, शत्रण्थरिव माहाया না লইয়া কোন জ্লেই পাকিছে পাবে না। ইহাই মহুষোর সভাব এবং এই জনাই সমাজ আপনাআপনি উরত হয়। ভাহারা আপনাদিগের সধাে সমুদার কার্য্য বিভাগ করিয়া বয় এবং পরস্পরে পরস্পারের সাহাযা কবে। এইরূপে कार्या कतिता मकत्वच्चे উপকার হয় कर मगाञ्च क्रमनः उत्ति हित देनिशादन আরোহণ করিতে থাকে। অভি প্রাচীন कारन छात्र इवर्स । भिनदानरम अह कार्याविञ्चाग्रामानी সমাজেব বারা উন্তি সাধিত হইয়'ভিল। इंहाइ সমাজের প্রাকৃতি যে ইহাব অন্তর্গত লোকেরা নিজ নিজ অভাব ও পার্ডি অফুসারে ভিন্ন ভিন্ন কার্যা সম্পাদন পৃর্বক পরস্পারের সহায়তা কবিবে। ইহা কোন বাহা বল প্রয়োগ বারা করা-हैवात्र नरह। धहे कातरणहे हेश्मध দেশে সহস্র সহস্র বোক ব্যাদ্ধাসারে कार्भामवञ्च ध्यञ्च कतिरहरू, देवकंगारत भाभीत काभड़ टेडबाड कविटडर्ड, है।-क्षार्ड मारत मृखिकात ও कारहत वामन নির্মাণ করিতেতে, সেফিল্ডে ছুরি কাঁচি প্রস্তুত করিভেছে এবং বার্মিভহামে লৌতের জিনিদপত গড়িতেছে। ইহা किह्न को हात्र एक्रम छोशः त्रा कतिरछए না, তবে নিজের অভাব পুরণ র্থ খতঃ প্রবৃত্ত হইর। করিতেছে। वाक्तिरे निर्मत्र चित्रनाव नावरन यप्र- শীল, বেহই পরিশ্রমবিভাগ বা কার্য্য-বিভাগের জনা বাস্ত নহে, তথাপি সমাজে পরিশ্রমবিভাগ বা কার্যাবিভাগ প্রচলিত হুইতেছে এবং নিঃশ্বে ও অজ্ঞাতসারে ক্রমশঃ বৃদ্ধিত ইইতেছে। स्मान वीख इटेट कला निर्शेष इटेटन কেহ তাহা লক্ষ্য করে নাকিন্তু ঐ কলা নি:শাসে ও অলকিতভাবে ক্রমে * বুদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া বৃক্ষে পরিণত হইলে সকলের দৃষ্টিগোচর হয়, ভদ্রূপ কার্যা-বিভাগ যখন প্রথমে সমাজে প্রবেশ कित्राहिल उथन (कहरे रेश मानिट शादत नाहे, किन्तु अक्तान देश शूर्वातप्रव হইতেছে স্তরাং সকলের চৃষ্টিপথে পড়ি-য়াছে এবং মনোযোগ আকর্ষণ করি-তেছে। এই পরস্পরসাপেকতা যদি সমাজে না প্রবর্তিত হইত, তাহা হইলে কি সমাজ সুশুঝালভাবে চলিত? সমাজ এইরপে সমবেত হইয়া কার্যা করে বলিয়াই সকলের অভাবমোচন ও ইছে। পুৰণ হইয়াছে। আজ যে সমাজের मर्क्त युगयाञ्चल विशिषमान, डेन्नि পরিবর্দ্ধনানু; তাহার প্রধান কারণ এই যে কাল আমরা ছির করিয়াছি বে প্রস্পারের সহায়তা করিব এবং স্কলে হইয়া সমবেত मक (न द কি শ্ব যদি আজ আসরা माधिव। প্রতিজ্ঞা করি যে আর ভাহা করিব না, ্তবে এক সপ্তাহের মধ্যে সমালে খোর विमुख्यना घडित्व, अत्नक वास्क्रिक्टर भगन्छदन प्रिथिटक इहेर्द अदेश मगार्खन

সোণাব মৃত্তি কালী হইয়া যাইবে।
সমাজের এই সমস্ত অত্যাবশাক এবং
প্রকাশা বন্দোবস্ত যদি স্বাভাবিক কারণে
উৎপন্ন হয়, তবে ইহা অবশাই স্বীকার
করিতে হইবে যে, সমাভের গতি স্বাভাবিক, স্বতঃপ্রবৃত্ত, স্মনাভালি কদি
স্বভাবাগত ও স্বতঃউৎপাদিত হইল,
তবে অপ্রধান সামাজিক শৃঙ্খলাগুলিও
বে স্বাভাবিক হইবে তাহার স্মার বিভিতাতা কি প

এতলে পাঠক জিজাসা করিতে পা-त्वन (ग, ताक्तिथि अर्थाः अविनकाञ्चन ছারা যে সকল সামাজিক পরিবর্ত্তন সংঘটিত হয়, তৎসমুদার growth না manufacture ? পার্লেগেট মহানভা, স্থানি কৌন্দিল বা লেভিস্লেটিব ্কৌজিল কতক গুলি বিধি প্ৰবৃত্তিত করি-शालन कतिएक आरम्भ मिरलन। ইंश ছার। সমাজের অবস্থা পরিবর্ত্তি হইল, ध्वः मनाम উप्ति अप्ता भनार्थन कदिल। স্মাঞ্চের এ বুণ্ধ কুত্রিম কি স্বাভাবিক, manufacture कि growth? देशाव উত্তরে আমরা বলিব (ग, आगता (ग সভামত সিদ্ধান্ত পরিরাছি, ইহা তাহার প্রতিকৃণ তর্ক নছে, এই পরিবর্তনসমূহও ু আমাদের মতের সভাতা সপ্রমাণ করি-टिছে। यनि छेळ शतिनर्श्वन नकन চারি দিনের अना হর, তবে সে न পরিবর্তনই নহে, এবং সমাজের

ভাহাতে কোন ক্ষতি বৃদ্ধি নাই। কিন্তু-यनि के नकन शतिवर्तन वास्त्रिक बनः নিতা হয়, অর্থাৎ প্রকৃতরূপে এবং চিরদিনের নিমিত্ত ঘটিয়া থাকে, ভাহা हहेला बामारित कथा महा, य रहकू ঐ সকলও সমাজের স্বকৃতি, রাজবিধির কাৰ্যাকারিতা নামমাজ।বাবস্থাপকদিগের जारमन स्नारत के नकन शतिवर्तन इरे-য়াছে সভা, কিন্তু বাবস্থাপকদিগের উত্তমক্রপ আদেশ করিবার প্রাকৃত কারণ কি? ঠ হারা সমাজের যেক্সপ অভাব দেখিয়াছেন, তাহার প্রতিবিধান জনা ঐ সমন্ত আদেশ'করিয়াছেন। স্থতরাং মৃলে দেই সমাজের অভাব ও প্রবৃত্তি बहिवाटक, मनारकत डेशरगांशी ना क्हेरन কোন আইনকাত্ব প্রচলিত হইতে পারে না। সমাজস্ব লোক দিগের অভাব ও প্রবৃত্তি হইতেই দি পূর্ব্বোক্ত পরি-বর্ত্তনসমূহ উৎপাণিত হইয়া থাকে, তবে ग्रम! बहे উহাদের প্রকৃত প্রবর্তক কারণ, বাবস্থাপকগণ কেবল নাম্যাত্র প্রাবর্ত্ত। অতএব সমাজের বৃদ্ধি, পরি-বর্তন ও উরতি যে সমাবের আভাস্থরীণ শক্তি হইতে প্রবৃত্ত হয়, কোন বাহ্য কারণে পরিচালিত হয় না, সে পক্ষ व्यवाहर बहित এवः श्रुक्तिशका पृही-কুত হইল। স্মাজের গভি, বৃদ্ধি, উন্নতি, অবনতি প্রভৃতি যাহাই বল, সংশাজিক অভাব ও ইচ্ছা, সকলের মুলে। এই অভাব ও ইচ্ছা হইতেই नगारकत उपकातक वावचा मकल धाव-

স্মালের তুলনা করিলে **অ**ারও ভাল হইত। মুহুবোর শরীর বা মুহুষোর মনের সৃহিত · সমাজের অঙ্গত সাদৃশ্য স্বীকার করি-বার কোন প্রমাণ দৃষ্ট হয়না। এ বিষয়ের উপর অধিক লেখনীস্ফালন कतिया कान नाज गाउँ, कावन देश গতারুশোচনা। শ্রেণীবিভাগ সম্পর্কে এই পর্যান্ত। প্লেটো সমাজের গঠন ঘটকাবস্তের ন্যায় কুর্ত্তিন বলিয়াছেন। তাঁহার স্থারির সাধারণত প্রস্মালে ideal এই যে মহুষোরা জ্ঞাতদারে এই সমাজ নির্মাণ করে এবং ভাঁহার মতে অন্যান্য সমাজ্ঞ এইরূপ কুত্রিমভাবে সংগঠিত হর। এটাও ভ্রমাত্মক মত, তাহা আর পাঠকগণকে বুঝাইতে হটবে না, কারণ আমরা পূর্বে অনেককণ ধরিয়। সমাজের ম্বত:প্রবৃত্তি ও মাভাবিক উন্নতি প্রমা-পিত করিয়াছি। অক্ত এব চর্ফিত চর্কেণ **५४ त** निर्श्वराजन। প্লেটোর মত निर्द्धाय ना इडेक, जिनि य এই 6 छात স্রোভ প্রবাহিত করির। গিয়াছেন এবং िछानीन ऋषीवर्णत हिख এ पिरक আকর্ষণ করিয়াছেন, এই জনাই তিনি আমাদিগের আন্তরিক বিশেষ ধনাবাদের সমান্তবিজ্ঞানশান্তের স্ত্রপাত रा डाहात धरे हिसा हरेटड, डेहा क ना मूक्ककर्छ श्रीकात कतिरव ?

প্রেটোর মৃত ব্রাইতে এতক্ষণ গেল, এখন আর একজন দার্শনিক (Hobbes) এইবিবের কি বলিয়াছেন তাহার সমা-কোচনা করিতে প্রবৃত্ত হুইতেছি। ইনি

প্রেটোর মাায় মহুষ্যমনের সহিত সমা-জের তুলনা করেন নাই, মহুষাশরীরের সহিত সমাজশাধীরের তুলনা প্রদর্শন कतियाद्या मगाजमः गठेन मयत्त्र है।-কাৰ মত বাক্ত করিবার প্রাকালে তিনি বলিয়াছেন " যে সাধাৰণতন্ত্ৰ সমাক এবং মহুষোর শরীর একরাপ, সাধারণতন্ত্র সমাজকে একটা বৃহৎ কৃত্রিম মহুষা বলিলেও চলে। স্বাভাবিক মহুষ্যের অংরতন ও বল অতি অল, কিন্তু এই कुखिममञ्द्रशत वल ७ काग्रकम घरा छ অধিক, যে হেতু ইহা স্বাভাবিক মনুষোর রকার নিমিত্ত নির্দ্মিত হইয়াছে। সাধা-রণতর সমাজে আধিপতা অর্থাৎ শাসন ক্ষমতা প্রাণস্কুপ, কারণ ইহা ছার।ই সমস্ত সমাজের হিতিও গতি সুশৃত্যল-ভাবে চলিয়া থাকে। প্রাণহীন হইলে মনুষোর শবীব অপদার্গ ও অকর্মণ্য হইয়া পড়ে, সমাজেও শাসনশক্তির অভাব হইলে নানাবিধ গোলযোগ ঘটে। मासिष्ट्रिडे, विडातक এবং खन्यांना भाषन-কার্যানির্বাহকেরা সমাজশবীরেব গ্রন্থি পুরস্বার এবং দণ্ড সমাজের শিরাস্বরণ, কারণ সমাজের গ্রন্থি এবং व्यक्त मकल ইहारमत बाबा भागनभक्तित সহিত সম্বন্ধ হইয়া নিজ নিজ কাৰ্যা मम्भन करत। मधुषाभवीत भिना मक-লের যে উপযোগিতা এবং উপকারিতঃ. मबाद्ध ए छ अ भूवऋ। दित (महे डेशरवा-গিতা এবং উপকারিতা। धनिकतृरकत धनमण्यकि ममारकत वन-

স্বরূপ; সমাজান্তর্গ ব্যক্তিদিগের স্থা ও শান্তিবিধান সমাজশারীরের কার্যান্থরূপ; মন্ত্রিনর্গ (বাঁহারা সমাজের আবশাক কর্ত্তবা সকলের উপদেশ প্রদান করেন,) সমাজশারীবের স্থৃতিশক্তিস্বরূপ; ন্যায়-পরতা এবং আইনকান্থন, বিবেক ও ইচ্ছা স্বরূপ; সমাজবিপ্তাব, পীড়াস্বরূপ; এবং আভ্যন্তরিক বৃদ্ধবিগ্রহাদি সমাজ-শরীবের মৃত্যুস্বরূপ।" Hobbes এই বিষয়টী যেরূপ বিশদভাবে ব্যক্ত করিন্যাছন তাহা পাঠকগণ উপরি নিকৃষ্ট মর্ম্ম হইতে বৃষ্ধিতে পারিতেছেন। তথাপি আমরা original টি উক্ ভ

"For by art is created that great Leviathan called a Commonwealth or state; in Latin Civitus, which is but an artificial man; though of greater staure and strength than the natural, for whose protection and defence it was intended, and in which the sovereignty is an artificial soul, as giving life and motion to the whole body; the magistrates and other officers of judicature and execution, artificial joints; reward and punishment, by which, fastened to the seat of sovereignty, every joint and member is moved to perform his duty, are the nerves, that do the same in the natural body; the wealth and riches of all the particular members are the strength; salus populi, the peoples safety; its business; counsellors by whom all things needful for it to know are suggested unto it, are the memory; equity and laws, an artificial reason and will; concord, health; sedition, sickness; civil-war, death." The works of Thomas Hobbes. Edited by Sir. William Molesworth, London.

সমানরপ প্রকাণ্ড কৃতিম মহুষা, য:হার অঙ্গ প্রতাঞ্জ মনুষাসমূহভারা নি-ম্মিত, এবং প্রকৃত মনুষ্টোর ভলনা করিয়া গিয়া Hobbes সমাজশরীবের একটি সম্পূর্ণ ডিঅ অক্কিড করিয়াছেন. এবং উভয়ের সাদৃশ্য আহুপুর্বিকরূপে निर्द्भण कतियादिन । यहानि वह विक এবং প্লেটোর চিত্র ভিন্নপ্রকার ও পর-স্পরবিকৃদ্ধ, তথাপি আমরা হবসকেই অধিক প্রশংসা করিতে বাধা হইতেছি। কিন্তু উভয়টিই অসমতিপরিপূর্ণ এবং আত্মবিরোধবিশিষ্ট। ইছাদের অংশ-গুলির পরস্পর নিল নাই, এক অংশ चात्र এक चार्मत विद्राधी। यक्रि আধিপত্য বা শাসনশক্তি সমাছের প্রাণস্ত্রপ হইল; তাহা হইলে মাজি-



প্রেট প্রভৃতিয়া কিন্তপে প্রাপ্ত হইতে भारतम, कात्रण छैशिहा छ भागमकर्छु-. मिरात क्षिजिमि वाजी ज आत कि इह नट्न। यहि शक्दि शक्दि है । বেন, তথাপি পুরস্কার ও দও কিরুপে শিরা হইল। সমাজশরীরের গ্রন্থিকন बिन बाक्ति हय, उटद निता मकत कि অপৰাধ করিয়াছে যে, তাহারা ৰাক্তি क्टेट शांदिर बा। भिता मकत मना জের একশ্রেণীর লোক হওয়া উচিত। দও ও পুরস্কার প্রকৃতপ্রে কোন ব্যক্তির স্থানীয় হইতে পারে না, বরং সেই বাজির অবস্থা হইতে পাবে। শিরার সহিত তুলনা না করিয়া, শিরার অবস্থার সহিত তুলনা করিলেই ভাল इरेंछ। आत चुलिमंकि, निरनकमंकि, ইচ্ছাশক্তি এই ভিনটি মানসিক্শক্তির সহিত সমাজের মল্লিবর্গ নাায়প্রতঃ क्षर चारेनकायुरनत्र छेलमा (स्वया बुद्धित कार्या इस नाहै। अत्र तिला-ভীর উপমা হইতে কোন কলণ্ড নাই। মল্লিবর্গ একদল সাধারণ কর্ম-हाडी, धवर अंशव कुटेंही (कवल छाव-মাত্র। উপসাঞ্জি কেবল মান্সিক-मक्ति. कि इ छे भरम श्र नित्र धकि कर्मा हाती মহ্যা, এবং অপর ছুইটি বে কি বলিন, ভাষা বলিতে পারি না। অভএব এ উপনা স্মীচীন নছে। आगवा প্লেটের छिलगात (व छ्टे माब मिथारेग्राह, हब्लाव উপगाव तार क्रेडि दलाव

নহিন্নছে। Hobbes সমাজের ক্লজিন্
মতা অধিকতর স্পাইভাবে লিপিরাত্তন,
কারণ তিনি বলিরাতেন, "For by
artris created &c." এবং ইহারারা
সকলেট বৃঝিতে পাবেন যে,তিনি সমাজ
সংগঠন সহস্কে কোন্ মতাবলম্বী ভিলেন। তিনি, কেবল সমাজসংগঠন
কৃত্রিম বলিরা সস্তুট নহেন। তিনি
আরও বলেন যে, সমাজবন্ধন হইলে,
সামাজিক লোকেরা আপনাদিগের মধ্যে
যে একটা বলোবস্ত (social compact)
করে, তাহাও কৃত্রিম। তিনি এই
বলোবস্তকে মহ্যাস্টের সহিত তুলনা
ক্রিয়াতেন।

প্রেটোর মত সমালোচন করিতে चानका (य करतक है कथा विलश्न हि: হৰ্দেৰ মত সমালোচনাভলেও ভাহাই বলিব। সূতরংং পুনক্তির প্রয়োজন नःहै। भगांष्टक मसुरवात मन वा नहीं-রের স্থিত তুলনা করাতে বিশেষ কোন हत्र गारे। किन्द मनास्रक সামানা বর বা কলের মতন কুতিম वनाटि नित्भव कि डि इहेग्राइ : (ग्रह् এই ভ্ৰণাত্মক •মত ভনদাধারৰের মনো-যোগ আকর্ষণ কৰিয়া ভালাদিগকে खाउपार्थ हानाहेबाह्य। धडे मकन ভ্ৰান্ত চিম্বারও বিশেষ সার্থকত। আছে। देशदात्रा नकत्वहर रुष्यक्रम इरेबार्ड त्य, गमारकत धवःमागवभन्नीरतत मर्था मा-मृश वाष्ट्रः भूदर्शाक छ्रेखन मार्मित्क প্রিত এই সাদৃশ্য নির্ব করিতে ক্লত-

74

कार्य। इन मारे बिलता, आमता नातृभा অহীকার ক্রিতে পারি না। জীবতত্ত্ব (Biology) আলোক তগন প্রধাশ হয় नारे। अधूना विकारनत काछारव निक-পণ করা যাইতে পারে যে, সমালশরীর प्वतः व्याणिमतीरतत मानुभा कि । कान জীবের শরীর কিরাপে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত এবং উন্ত হয়, এবং সমাজ কিরণে বৃদ্ধি ও উन्नडिनाड करत, धरे छूरे विषयात्र প্রাংলোচনা আত্ম কাল অনায়াসে হইতে পারে: সে প্র্যালোচনা আছ করিতে গেলে, পাঠক আমাদিগের উপর

'वित्रक्त इष्टेरवन, अवः अक नीत्रन नवाक সংগঠনতবের উপর হুই কর্মা আটিকেন प्रित्न, इवं उ वक्नर्गानद शाहकानी **इहेट नाम जूनिया लंहें रेयन। असाम** সংগঠন বিষয়ে অনেক কথা বলিভে বাঁকি রহিল, এবং আর একদিন এ निषय भरेया जारनाहना क्रियात हेह्या রহিল। প্রবন্ধ অতি বিস্তুত হুইয়া পড়িবে বলিয়া আসরা আজিকার মতন লেখনীকে বিশ্রাম্ত করিলাম।

3 7 1

নভেল বা কথাগ্রন্থের উদ্দেশ্য।

धकर्ण देश्या यह श्रेष अवाभिक इत्र, छाशांत मासा (वास इत्र माउकदा ৭৫খানি কগাগ্রন্থ। কেহ বা ওছ गत्नात्रक्षात्र উष्ट्रामा (क्ट् वा गीडि সংশোধনের নিমিত, কেছ বা কোন निविदिक्त डेक्स्या मःगान्यात्र अनि थार्य, त्कृता देवछानिक ও मार्गनिकः ভত্মমূহ সাধারণের আয়ন্তী ক্তু কবিবার बना कथा अष्ट खन्यन किंदि उटिन। चामारमत रमरमत रमधारकता अ कर्मानी. क्मूमनी, देनविनी अञ्हे छित्र छित्र नाम मित्रा, नामाध्यकाददत क्षाश्रह वा-হিয় করিভেছেন। স্থতরাং এ সময়ে कथाश्रह नयस्य छ्हे छात्रिम कथा बना भगवण हरेटव ना।

উপাখ্যান লিখিবার তিন্টি প্রধান वानानी काहलिक बाह्द, यथा-नाठक, व्याथाधिका ও कथाश्रष्ट। नावेटक एक নাট্যোলিখিত ব্যক্তিগণ কথাবার্ত্ত। ত-(रन। ममछ ভाব, ममछ कार्या अह ব্যক্তিদের ছারা প্রকাশিত হর। গ্রন্থ-कात श्रञ्जात शाकिया, धरे नकत वाकि-मिग्राक পরিচালিত করেন। আখারিকার গ্রন্থকর ব্যাহ্য প্রাপ্ত বিষ্ট্রের ব্যাহ্যা গ্রছোলিখিত ব্যক্তিগণের সহিত আমাদের প্রায় সাক্ষাৎ হর না। कथाश्रम् এই উভয়ের মধাসলবর্তী। देशात कित्रमः (भ आर्शामिक वाकिशन कथावार्छ। कट्टन; किस भगा धना बर्दम बाइकडी चन्नः ब्यामानिशतक नमख

विषय माडे क्तिया वृत्राहेश (मन। নাট্র লেখা যত শক্ত হটক বা না 'ছউক; নাটক সমাক্পকারে বুঝিয়া উঠা অতি কঠিন। নাটোল্লিণিত বাকি-ग्रंग (क कि हितरज्ञ व लाक, किञ्चना ভিন্ন ভিন্ন সময়ে ইহারা ভিন্ন ভিন্ন প্রকারে कार्रा करतन; (म ममछ वृश्विवात कना चारतक खान, जारतक विश्वाद आया-खन। कथाश्रष्टायक এই छान छ **এই চিন্তার সম্বর্জে আমাদের অনেক** महिंचा करता। अष्ट्रत (य (य काःम আমরা ব্ঝিতে পারিব না বলিরা তাঁহার বোধ হয়, তিনি সেই সেই অংশগুলি আমাদের নিকট অতি পরিকাররূপে वृताहेश (पन। श्रुटहा: नावेक द्वा অপেকা কথাগ্ৰন্থ অধিকতর সহজ क्टेब्रा छे छै। यादा महाज बुबा यात्र, ভাহাতে অধিকতর আমোদ অনুভব করিতে পারা যায়। এই প্রনাই দেখিতে পাওয়া যার যে,সকল দেশেই কথাগ্রন্থের शृष्टि इहेटल आत नाठेक वा आशासिकात नम्बिक चामत्र शांक ना। आशाधिकात्र সমস্ত বস্তুই গ্রন্থকর্তা নিজের ভাষায় वर्गमा करवन । चु छत्राः नाउँ एक (यक्तभ নাটোলিখিত ক্রিয়ার বা বাক্রিব সাকাৎ অতিমৃতি দেখিতে পাওয়া বায়, আখা-দ্বিকার ভাহা পাইবার সন্থাবন। নাই। একম্য আ্থারিকা অংশকা নাটকে व्यविकत्र वार्मान वार्षः।

কণাগ্রন্থ নৃত্র স্টি। সংস্থতে অবি-কাংশ গ্রন্থ কবিভার লিখিত হট্ত।

যে কর্থানি গদ্য প্রস্থ আছে, তাহাদের অধিকাংশই আখায়িকা। कामचती. দশকুমার চরিত প্রভৃতি এই শ্রেণীভুক্ত। मःकृत्व नार्षेक्श भारतक दिला किइ, নাটক ও আখায়িকামিপ্রিত কোন কথা-গ্রন্থ করে জিল বলিয়া আমাদের বোধ হয় না। ইংলণ্ডেও কথাগ্রন্থের অতি व्यवित्रमाळ स्ट्रिटिशाहि। ইংলত্তের উপাথাান সমস্ত আথাারিকার প্রণালীতে লিখিত হইত। এই সকল আখায়িকায় বড় বড় রাজার ও বীর-शुक्रत्यत्र बीतकीर्छि गमछ वर्निछ इटेख। रे:नाए नाउँ के अ अरनक हिन । कि কেবল ডিফোর (De Foe) সময় হইতে বর্ত্তমান প্রকারের কথাগ্রন্থ প্রকাশিত इटेट जाइड इत। अत्निक मत्न करनन, (य गाउँक लिथियांत सना (यक्तभ প্রতিভা বা কমতার প্রয়োজন, একণে মনুষ্টের আর সেরপ কমতা বা প্রতিভা নাই। কথাগ্রন্থে প্রতিভার প্রয়োজন আছে বটে, किन्नु नार्वे नी य शिक्षा अ (भका, এই প্রতিভা অনেক অংশে নান। এইলনাই একণে আর নাটক লিখিত হয় না। মহুষোর প্রতিভা দিন দিন কমিতেছে, একণে ইহা কথাগ্ৰন্থ পৰ্যায় ঘাইতে পারে, নাটক পর্যান্ত ষাইবার ক্ষমতা আর ইহার নাই। এই মতটি আসার দত্য বলিয়া বোধ হয় মা, কারণ (मक्क भी बदरक हा ज़िया बिरन रव मकन नाठेककात चार्निहे थाटकन, छाहाता যে প্রতিভাগদার কিন্ডিং, ভিকেল,

शाकारत श्रञ्जि **अरशका दकान अः**रम উৎकृष्टे जाशा आगारमत द्यांध इत मा। ফলতঃ কথাগ্রন্থ নাটকের নাায় সমান षाटमान श्रीनान करत्र। नाउँटक (प (य উপদেশ পাওয়া সম্ব, क्षाश्रास्त मिरे 🛊 সেই উপদেশ পাওয়া যায়। তবে এক कथा এই या, नाउँक मकता महस्त ্ৰীকুৰিতে পাৰে না। কথাগ্ৰন্থ সকলে সহচ্ছে বুঝিতে পারে। এজনা লোকে নাটকের আদর না করিয়া কণাগ্রন্থের व्यानत कतिया थाटक। (य कावरणहे इडेक, टेश न्लंड मिरिटेड लाख्या गाई-**टिए, (ग वर्णन कथाश्रहत शकाण** ছিল না, ততদিন নাটকের অভি সমা-দর ভিল। কিন্তু কথাগ্রন্থের প্রাকাশ इल्या व्यवि नाउक उन्मनः इटापदरे इटेट्ड ।

আমাদের দেখে বহিষ বাবৃ হইতে
কথাগ্রন্থের প্রথম প্রকাশ আরম্ভ হইঘাছে। এই কথাগ্রন্থ ইংরেজ কথাগ্রন্থের সম্পূর্ণ অনুকরণ। ইহাতে অনেক
ভলে ইংরেজি চিরিত্র, ইংরেজি ভাব এমন কি ইংরেজি ভাষা পর্যান্ত অনুকরণ
করা হর্টরাছে। বলিম্বাবুর প্রতিভাগ্রেণ এই অনুকরণের মধ্যেও নানাপ্রকাবের সৌন্ধ্য অনুপ্রবিষ্ট হ্ইরাছে।
ভাহার পর হ্টতেই বাঞ্চালায় নভেলের
দংখ্যা দিন দিন বর্দ্ধিত হুইভেছে।

٣. .

কথাগ্রন্থ প্রধানত: ছুই প্রকারের।
প্রথাগ প্রকারের নাম ইংরেজিতে রোমার্লা।
ইহা বীরবাপ্রধান। ইহাতে বৃদ্ধ,বিপ্রস্থা,
রাজা, বীরপুক্রন, রাজকীর্ত্তি, বীরকীর্ত্তি
প্রভৃতি বর্ণিত হয়। বাঙ্গালার ছর্নেশনিজানী, বঙ্গাধিপপরাজয়, শতবর্ষ প্রভৃতি কথাগ্রন্থগুলি এই প্রেলীভূক্তা।
বিতীর প্রকারের কথাগ্রন্থে প্রাক্তর ঘটনা
সমত্ত বর্ণিত হয়। যে সকল ঘটনা
আমরা আমাদের মধ্যে নিভা দেখিতে
পাই, সেইঞ্জি এইরূপ কথাগ্রন্থে আমাদের নিকট স্থান্যরূপে প্রতিভাগিত
হয়। বিষর্ক্ত, কৃষ্ণকান্তের উইল, স্বধ্নতা প্রভৃতি গ্রন্থগুলি এই শ্রেণীভূক্তা।

পাঠকের মনোরঞ্জন করা এই মাজ
পূর্বে উপাধ্যান নিখিবার প্রধান উদ্দেশা
ভিল। ইউরোপীয়েরা পূর্বে অত্যস্ত
ক্ষপ্রির ছিলেন। এজন্য তাঁহাদের মনোরঞ্জনের নিমিস্ত যুদ্ধসম্বনীর ঘটনা সমস্ত
বিবৃহ হইত। এখনও ইউরোপে যুদ্ধপ্রিরহা কমে নাই। স্তরাং যুদ্ধবর্ণনা
ইউরোপীর কগাগ্রন্থের প্রধান উপাদান।
বাঙ্গানা কগাগ্রন্থের প্রধান উপাদান।
বাঙ্গানা কগাগ্রন্থের প্রধান কগাগ্রন্থের
অম্করেন। স্বতরাং বাঙ্গানা কগাগ্রন্থের
বৃহ্নাক্রের হার্নাক্রে। ইহাচ্নে
এই লাভ হইরাছে ব্রুপ্রান্তর মধ্যো
ভন্ কুইক্সটের প্রধানীর যুদ্ধপ্রিরভা
ভারে বিদ্ধিত ইইরাছে। শীর্ণবিশ্বার-

ত ছাৰ্মিন দিনী 'বিদি সেই সমরে মন্দির্মধা বক্সতন হইত, ভাষা হইলে তাহার। আধিক তর চমকিত হইছেন না।'' ইংরেলি আনক নডেলে ঠিক এই ভাষটি এই ভাষার বর্ণিত হইয়াছে।

মুবক আপনাকে তপং সিংহ বা হেমচন্তের অবস্থার উপস্থাপিত করে, এবং
এইরপে লোকের নিকট অতীব উপহাসাম্পদ হয়। "ভারত-উদ্ধার"
লেশক এ বিষয়ের সাক্ষী। পাঠকের
মনে পড়িতে পারে

'' वैद्रोहेश पिव व्यक्ति शावल हैश्टबटन्न'' किছ রোমান্স পাঠে যে এককালেই কিছুমাত্র লাভ নাই তাহা নয়। ইহাতে করনাশক্তির প্রচালনাবশতঃ একরপ অভুত আনন্দ জন্ম। যুবকেরা যে কি আনন্দের সহিত কটের "আই-ভান্হো" বা বিজমবাবুর "তর্গেশনিকনী" পাঠ করে, ভাহা মনে হইলে, বিশ্বয়া-বিত হইতে হয়। কিন্তু এ আনন্দ ক্ষণিক। ইহার ফ্লণ্ডা অতি অনুট আছে ৷ যাহা কিছু ফলবতা আছে, ভাহাও বোধ হয়, জনিষ্টের দিকে। कज्ञनामक्तित लाहूत शतिहालना इ ३३।८ ह বিবেচনাশক্তির কিঞ্ছিং ব্রাসতা হয়। এবং বস্তুর যথার্থ ব্যবহার না দেখিরা, কেবল ভাহার সৌন্ধা, মনোহারিছ প্রভৃতি (मिथिट इ छहा इत। সाংगातिक व्यानक কার্যোর প্রতি বীতপ্রদ্ধ হইতে হয়। সমুষা আপনাকে অত্যন্ত উন্নত করিতে हेक्का करता हेक्का करत माज, कि इ त्मरे পর্যান্ত ভাহার নিজের বা সংসারের কিছু সাজ উল্লভি হয় না, উপকারও হয় না, কেবল পদে পথে মনস্থাপ পায়।

কথাগ্রছের আলোচনার লাভালাভের হিচার দেখিরা হয় ভ অনেকে বলিয়া

উठिटवन, नटकन, शहात वहे। नदीव *ट्याट्डत यड हेर* एंड भड़ाहेबा घारेत। ইহাতে আবার লাভাণাভ দেখিব কি ? কুল ফুটিয়াছে দেশিয়া নয়নের ভৃপ্তি **হইবে, তাহাতে লাভালাভের প্রশ্ন** উথিত করিলে, ধান ভানিতে শিবের গীত कता इत्र। यक्ति अहे मटिष्टि नहा इत्र, তাহা হইলে নভেলের সংখ্যা যে এত विक्रिंग इहेरण्डल, हेश भृशितीत भक्त অনিষ্টকর বলিতে হটবে। নৃচা, গীত প্রভৃতি যে সকল কলায় শুদ্ধ আমোদামু-ভব হয়, সংসারে ভাহাদের নভেলের মত অংদর নাই। প্রধান প্রধান পণ্ডি-তেরা নৃত্য গীতে, অতি অল সময় वाशिष्ठ करत्रन। किन्तु नर्डिण (लशांग्र বা নভেল পড়ায় অনেক মহা মহা পশুত আপনাদিগকে নিযুক্ত রাখিয়াছেন। यिन नर्छन ७६ जः। यादिन देखे इस, ভাহা হইলে ইহার এত আদর কেন ? একণে "বাবছারোপযোগিতা" লইয়া हे:लेख अकलकात हमा इहेगारहर। (मर्थात खक्क व्याप्तारमन वस्त्र এड व्यामन (कन ? कन्छः, यपि ७ जानक नास्त्रन (कवन मरनातक्षरनत डेप्मरमा निशिष्ठ হয়, তথাপি ইহা অবশা স্বীকার করিতে इटेरन, (य माइवडा ना शाकिरन, नर्छन পাইত না। নভেল ফুলের নাায় স্থানর ৰটে, কিছ ফলই ইছার পরিণাম।

ইহাতে কেই হয় ত আপত্তি করিবেন, বে ''স্ত্য বর্ণনাই নভেলের উদ্দেশ্য।

भाकाशास विहात छात्रात छेटमणा गरह। এই পৃথিবীতে আমরা যে বস্তু বেরূপ দেখিতে পাই, সেই বস্তুটী যথায়গদ্প ধর্বিত করিলেই উপস্থাসলেখকের উদ্দেশ্র निक इत्र। किन्छिः এत हेम् एक वन ८३-क्रिश्नाच्या विष्टाच्या विष्टाच्या गथन । যে অবস্থায় পড়িরাছিলেন, গ্রায়করি৷ • অসমুচিত হাদয়ে তাছা বর্ণনা করিয়াভেন। माजन निथित् इडेतन, बहेक्स लाहे तिथा উচিত।'' কিন্তু সতা ছুই প্রকার, আংশিক সভা ও সম্পূর্মভা। কোন डिकीन (य कथन न्नाडे निथाकिश करहन, এমত নহে। তিনি যতদূব বলেন, তত-দুর সভা। কিন্তু তিনি সমস্ত কণা वालन ना। मान कक्रन, व्यापनि दिलानन, "रहात जिंध मिन, धवा शिष्ट्रन ना, वाड़ी किरिया कामिल, भरभ काम विशम ঘটল না, ৰাড়ীতে আসিয়া অপস্তত धन महेशा (म शाही, खाड़ा करतन, भकरनद निकृष्ठे मन्त्रानिक इडेल।" गृप **परे शर्याञ्च व लग्नारे जाशिन काछ इन,** ভাহা হটলে আপনি সভার আংশিক वर्गा कवित्वम । कारण हात अरगक भगस शृष्ठ इस, (अरल यास, वहाउन कहे পায় এবং কগন কথন দ্বীপাস্তরিত হয়। (यशास मरहात चाःभिक वर्गमा (मथारम नानाविश कानिष्टेत कामका। कारण नडा নিখ্যা নিৰ্বাচন করিয়া লওয়া অভীব ক্টিন। মিথা। বৰ্ণনা সকল সময়ে অবি-१५म । किन्छ मन्भून मिथा। स व्यास क्राइड ग्निष्ठे इव गां। कात्र प्रताहक व्यक्तरण

ভাষার মিথাতি বুঝিতে পাছে। প্রাণর न एड एन न न न न न न । को सन्दर्भ ধৰ্ণনা নভেলে নিয়কপে প্ৰকটিত হয়— 'বুৰক যুৰতী উভয়ে অতীৰ রূপৰ:ন্, অতীৰ গুণবান্। যুৰক পুরুষদিগের : मर्स्वा ९ कृष्टे, नाती यूव छी निरंशत मर्स्वा ९-कृष्टी। উভয়ের পরস্পার সাক্ষাৎ इटेन। যে কারণেই হউক উভরে উভয়কে ভাল বাসিল: তাহার পর উভয়ে সংসারের সমত বস্ত উপেকা করিতেছেন, পিত। মাতাব আজা অবহেলা করিতেছেন, হয় ত কোন সময়ে উভয়ে কোন কোন অসৎ কর্মাও করিয়া ফেলিভেছেন। তাহার পরে উভরের বিবাহ হুইল।" धभारत व्यानक नाज्यात ममाश्रि इस । যতদূর ইহাতে বলা হইয়াছে ভাহার মধ্যে একটি কথাও মিখ্যা নয়। কিছ ইহাতে সকল কথা বলা হয় নাই। বিবাহের পর যুবক যুবতী অনেক দিন वैक्तिया शास्क, मश्मादबब व्यक्तक श्रामा-जन ज्ञानक विद्य विश्व जाशास्त्र मञ्जूष উপস্থিত হয় এবং তাহারা আপন আপন शृंक ठित्रिय अञ्माति स्थी वा इःशी হইয়া জীবন অতিপাত করে। স্করাং বাহারা যুবক যুবভীর বিবাহ দিয়াই নভেলের সমাপ্তি করেন, তাঁহারা মহুষ্য-श्रुमरत्त्र अक्यात याः में डेब्ड्स वर्त तक्षित করিয়া অপর সম্ভ অংশের মনোহারিত क्यारेश (पन ।

আরু এক কড়া, কোনটা সত্য কোনটা মিগ্যা ভাষা কি কোগাও নির্বিগদে হিরীকৃত হইরাছে। তুমি যাহাকে সভা বল, আমি তাহাকে মিথাা বলি, ভুমি যাহা সাভাবিক বল, আমি তাহা কার-নিক বলি। ভবে তুমি য'হাকে সভা বলিয়া মনে কর, ওছ সেইরূপ অনি চিত্ত সভ্যের জন্য আমার স্থাবের আশা কেন হারাইব।

আর এক কথা, সভা বলিতে হইবে
কেন ? সভা বলার লাভ আছে, অসভা
বলার অনিষ্ট আছে। স্থভরাং সভ্যাসভ্যের বিচার প্রকারাস্তরে লাভালাভের
বিচার ভিন্ন অন্য কিছুই নর।

আর এক দল লোক আছেন, তাঁহারা বলেন, বে অভাববর্ণনাই নভেলের উ-দেশা। রশো এই অভাববর্ণনার প্রবর্ত্তক।
মুখ্যা অভাবত: বেরুপ, তাহাই বর্ণনা করিছে হইবে। কেন ং মুখ্যা অভাবত: অতি সুল্লর অভাবের বাহার করিলেও আনিষ্ঠ বই ইষ্ট হয় না। স্কতবাং এ স্থলেও লাভালাভের প্রশ্ন উথিত হই-ডেছে কিন্তু ইহাতে নানারপ আপত্তি আছে। আমরা অভাবত: সুল্লর অভাব কিনা তাহার সম্বন্ধে অনেক তর্ক কাছে। সেকল তর্কের এক্ষণে কোন প্রয়োজন নাই। এখানে এই পর্যান্তর বিচার কথাগ্রছে অপ্রাক্তিক নয়।

আমরা প্রের্ক দেখা ইরাছি,যে রোমান্স পাঠে অধিক লাভ হর না। ইহাতে কেবল কয়নাশক্তির সমাক্ পরিচালনা হয় মাজ। আমাদের চরিত্রসম্বন্ধে যে কিছু পরিবর্ত্তন অন্মে,তাহার অধিকাংশই অনিষ্টের দিকে। ৩ জনাই এক্ষণে আর রোমান্সের সহিত সাধারণতঃ মহ্ন-যোর সহাহত্তি দেখিতে পাওরা যার না।

এক্ষণে দেখিতে হইবে, বিতীয় প্রকারের কথাগ্রন্থ পাঠে কোনরূপ লাভ হয় কি না। আমাদের দেশের কথাগ্রন্থ প্রধানতঃ ইংরেজী কথাগ্রন্থের লাভালাভ বিচার করিতে হইলে ইংকেজী কথাগ্রন্থ লাভালাভ বিচার করিতে হইলে ইংকেজী কথাগ্রন্থ পর্যান্ত অনুসন্ধান করা কর্ত্তবা। বিতীয় প্রকারের কথাগ্রন্থ (আমরা ইছার নাম পার্ছিয়া কথাগ্রন্থ রাখিলান) পুর্ব্বোক্ত প্রধানীতে আলোচনা ক্রাই এই প্রস্তানের মুখ্য উদ্দেশ্য।

সমাজের অব্দা অঞ্সারে মহুষোব চিন্তাত্রোহও পরিপটিত হয়। যথন সমাজ ধর্মপরায়ণ, তখন মহুষোর রচ-নায় ধর্মের, আধিকা দেখিতে পাওয়। যায়। আবার যখন সমাজ অগঃপভিত হইতে আরম্ভ হয়, তখন মহুবোর রচনাতেও এই অধঃপাত্তের লক্ষণ দে-

শ লিগউইক্ লাভালাভ সম্বন্ধেও এই প্রশ্ন উথাপিত করিয়াছেন। তিনি বলেন তুমি যাহাকে লাভ বল, অ নি তাহ কে অলাভ বলি, আবার তুমি যাহাকে অলাভ বল, আমি ভাষাকে পরম লাভ বলিয়া মনে করি। কিছু সভ্যাসভা কুমিতে মুমুষোর মধ্যে যেরপ বিস্থাপিতা, লাভালাভ স্থতে, বোধ হয়, ভাষা অপেকা অনেক ক্ষ।

चिट्ड भाउता नात्र। हैं लक्ष वसम सर्प লইয়া উন্মন্ত তখন "মিণ্টন্" তাঁহার "भारताखाइन कष्टे" निरंभन । आवात যখন নীচপ্রকৃতি বিভীয় চার্লস ফান্সের উচ্ছ अन्ता देशाय आर्थिक करतन, তথন ড্ৰাইডেন তাঁহার "All for love" প্রভৃতি অঘন্য অপাঠা নাটক লিখেন। र्याहाता এই সমা जत्याटि शङ्गिता गान. তাঁছারা পরবংশীয়দিগের নিকট বিশেষ धनावाम व्याश्व इन ना। किन्तु गांशता সমাজের অবনতি দেখিয়া সমাক্রোতের বিপরীতে দ্ভার্মান হইয়া সমাজকে ত্মপথে পরিবর্তীত করিতে চেষ্টা করেন छ।इ।बाहे मर्स्त्राधात्रभत यथीर्थ धनावारमत शाब। यथन छाइएडन, छेहेहाविन, কন্রিভ প্রভৃতি জঘনা জঘর গ্রন্থ লি-थित्रा नमाबदक উৎসর দিতে ছিলেন, সেই সময়ে জেরিমি কলিয়ার এইরাপ मयाध-পরিবর্ত্তনের চেষ্টা করেন।

এক্ষণে ইংলণ্ডে অর্থোপার্জনই জীবনের মুগ্য উদ্দেশ্য ছইয়াছে। গাড়ী,
ঘোড়া, ঘর, বাড়ী, অলদ্ধার, পোষাক
প্রভৃতি ক্রোগবিশাস সকলের এক্ষাত্র
ধোর ছইরা উঠিয়াছে। •কিন্তু অর্থোপার্জ্জন করিতে ছইলে অনেকটা কঠোরহলর ভওয়া আবশাক। আমাদের দেশে
চলিত ক্রপায় বলে "চক্লুল্জ্জা বাঁর অর্থ
নাশ ভার।" ইংলণ্ড জনেক দিন ছইতে

वहे हकूणकात याथा बाहरण्डन। কর্তবাকার্যোর জনা (অর্থাৎ অর্থোপার্জ-(मत खना) रेश्यक मकल अकार हकू-ণক্ষা তাগা করিতে প্রস্তত। স্তরাং हे न 🖎 कर्छ। इन्मग्रहात चाडास स्रोह-र्जाव इत्रेवा छित्रिवारक। याद्याटक धारे क क्षीवक भाग होते होते हैं। विश्व है । बट्छ छ छेपन (प्रहे (**हर्ष) क्रिएल्डिन।** ডিকেন্দের প্রত্যেক নভেবে অন্তরঃ धक्षा कर्शित्ज्वम अर्थिभां चार्छ। देशवा मकत्व मामाक्रम करहे मिछ्या শেষৰশায় সভাস্ত যাতনা পাইয়া, সকল लाटकत निक्छे व्यवमानिक इहेबा, दक्ह বা সামহত্যা করিয়া, কেহু বা রাজসতে प्रश्चि इटेशा शावजाश कत्रियाटक । अह क्रिश हित्व दर्गनात छेट्यमा धरे (य, मण्या কঠোরলদরতার এই সকল ফল দেখিতে পাইয়া আরে কঠেবিহাদয় হইতে চাহিবে না। ডিকেন্সের প্রত্যেক নভেলে আর धकी हिन्न वर्षित चाहि।" देशामन ष्यर्थत প্রতি সম্পূর্ণ অনাদর। ইহারা স্বকীয় সহাৰমতার বলে নালারপ স্থ⁴-महाश क्रहः व्यवस्थार मकत्वत নিকট গ্লানিত হুট্যা প্রাণ্ডাাগ করি-शास्त्रत । अहे जान वर्गनात्र छे सम्मा अहे र्य मलूरहात क्षमरम किथिए পরিমাণে অর্থের প্রতি অনাদর হইবে এবং কঠোর-হৃদয়তার ছলে কিঞ্ছিংপরিমাণে সজ্

 [&]quot;নিকোণাস্ নিকল্বির" "র্যাল্ফ নিকল্বি" ও " নিকলাস সিক্পবির" ক্থা পাঠক বছাশরের মনে পজিতে পারে।

করতা আসিবে। ডিকেন্সের উপরেশ
এই—"অর্থের লোভে কঠোলসকর হইও
না, কারণ তালতে অনেক নই পাইতে
হয়। অর্থের লোভ কলে কবিরা সহদর হও কারণ হাহাতে পরিণামে জীনেক
ক্রম পাওরা যার।" ইংলতের একলে
যেরপ সমাজের অবসা, ভালতে ডিকে
ক্রেন নভেল যে সেপানকার পক্রেন

किछ तत्र-मगार्छत जतरा, है:लखीय সমাজের অবস্থা হটাত সম্পূর্যভন্ত। क्रकंताः हेश्नर्थ गाता गतीन उलकाती, **এখানেও** যে ভাগা উপকাৰী হউৰে এরপ আশা কব যদ ন। ই লও একবে লক্ষ্মীদেনী শ্বি দ্ভূমি । ইংলণ্ডে **অর্ণমূলার বি**নিমরক মা সম্পাদিত হয়। রাশি রাশি ধনে উপর বুসিয়া ইংলও ধনেৰ স্পৃহা একটু ভাগে ক'রতে পারেন। किश्व डे॰ला छत । मशामिन यमि छुनि আমি ধনম্পুল জ্ঞাল কৰি, ভালতে সং-मारबंब करिडे वह हें है है। मा। कटेठावेद्यानग्रहा, जामाद्वा , मान्य श्रीवन नम् । अर्थार्कन हे स्थात्त्व (म्हा वक् मारे। देवतात का नामव दम्रामात्र **टाधान भिका अ**च्छर ध्यापत (भरम শক্ষরতা কিছু কন বল: অৰ্জন চেই। किथिए विक्रिंक करों े उसा स्वार देश्ना एवं प्रत्य हिन्दा स्थान, व विषय জ্ঞাদের ঠিক ভাঙাুর বিপরীত পর্যেচনা উচিত। অৰ্থাৰ্জন-পৃহাও সহস্ৰতা

উছরেরই দোবগুণ আছে: সমাজের অবস্থা অসুসারে কাহারও বা-বৃদ্ধি কাহা-রও বা হ্রাস হওয়া উচিত।

পৃর্ব্বের দৃষ্টান্ত দেখিলে ব্রিতে পারা
যাইবে, যে ইংলতে যে প্রের্ডিটি পরিপুট হওয়া আবশাক, এদেশে সেই
প্রের্ডিটি দমিত হওয়া প্রের্ডিটী দমিত
লওয়া আবশাক, আমাদের এখানে
সেইটি পরিবর্দ্ধিত করা উচিত। স্করাং
ইংলতের অফুকরণে আমাদের ইট
হওয়ার সন্তাবনা অপেক্ষা অনিত হওয়ার
সন্তাবনা অধিক। আব একটি দৃষ্টান্ত
দিয়া আমরা এ বিষয়টি আরও ক্ষান্ত
করিয়া ব্রুলাইতে চেষ্টা করিব।

প্রাণ্য কবিমাত্রেবই বড় আদরের वस्र। किन्न व्यवस् गरेसारे मटला (संधक-দের বাবসা। কিন্তু এই প্রণয়ের ভাব ইংল্ডে একরূপ ও আমাদের দেশে ष्यनाज्ञथ। देश्यधीशास्त्र माउ श्राम्य श्रुपात्र कार्या। अन्त्र दलिल, अमुक्रक ভালবাস, অমনি তাহাকে ভালবাসিলাম। হদয় বলিল, অমুককে ভালবাসিওনা, অমনি আমারও ভালবাসা বন্ধ হইল। আমার একজন স্বামী আছেন। কিস্ত আমি তাঁহাকে ভালবাদিতে পারি না। (कन ? आमात क्षत्र आमारक व विष्य मचि (मत्र ना! इत्रदात कथा (य मकन ममरत सामारक खनिएंड इहेर्द তাহ। नम्र। क्रमम् आगादक आत्नक সময় অনেক অন্যায় কাৰ্য্য করিছে

वत्न। खरत्रत मगत्र क्षत्र, क्ल शहिएक वान, जाशास्त्र होकः शास्त्र नहेत्न श्रम्य আর ভাহা শোধ করিতে চায় না, हेडामि। ध मकल मगरत्र कानत्रक দ্মিত কৰিতে হইবে। কিন্তু প্ৰণয়ের (वना अमग्र यात्रा वनित्व, जाहाह भित्रा-धारा । देशविनीत श्रामी छेनात, महान् এবং সর্বান্থল। বিশ্বলিনী তাঁ-शांक अधिमाकी कतिया পरिष्ट वतन করিয়াছে। কিন্তু ভাহাতে কি ? শৈব-লিনীর খদ্য ভাষাকে ভালবাদিতে मध्यि मिन सा। देशविनी अरमक दुबाइल. जारनक मिन्छ कतिल, किन्न ংশয় রাজি হইল না। সুতরাং শৈব-নিনী প্রতাপকে বিশাহের পবেও পূর্বের নাায় ভালবাসিতে লাগিল। ইহাতে रेनविनीत (मांच इहेन वर्षे, किंद्ध (म (मार्घ अठि अग्न। (कन अत् ? रेशव· লিনীর হৃদয় ভাহাকে ভালবাদিতে বলে नारे। कुन्मरनहाराङ अनगरक व्यानक द्या हेन। ७४ कुन (कन ? कुन द्या-देन, कमल वृक्षाहेल, श्रांम्भी वृक्षाहेल। किञ्च कूरमात काम स वृतिल ना। * इहार ह যে কুনের দোষ হইল না, ভাহা নয়। किन्छ (म (मायरक यान जूमि (माय विनया মনে কর, ভাহা হটলে তুমি নিষ্ঠুরহৃদর শাষও। কেন কুনের হারয় ভাগতে ভালবাসিতে বলিয়াছিল!

পूर्व्सत्र कारश्रमि हैश्त्रबरमत्र। हैश-

(त्राक्षित (मार्थ हेव्। मञ्जयः। वालिकाकाल इहेर हे युवकी खानसम्बद्ध আপনকে স্বাধীন দেখিতে পায়। **टाहा**त याशास्क टेक्का (म **डाहा**दक বিবাহ করিতে প্র। ই**হাতে ভাহার** नवारक निका वर्गा। किन आयास्त्र **रिट्रण विवार्ध्य शत इटेंट्ड अन्द्रत** অনুব আবভ হয়। বিবাহের পুরে পাত্র কন্যা কেই কাহাকে দেখিতে পার না। আমানের দেশে প্রণর সমাজ প্রথার অধীন মাত্র। ভোমার হৃদয়কে ইছাতে সমাজেৰ বংশ চলিতে হটবে। বেমন खना बनाएल, जूमि क्षत्रक नमारकद বশবরী করিতে চেষ্টা কর, প্রণরের বেলাও ছোমাকে ভাহাই করিতে হ-🗝 (द। क्रमग्न ट्यामारक व्याहरनद्र वर्गः वर्की श्रेषा हिनाड निरंत्र करत, अन्त्र ভোগাকে অনোর উপার্জিত অর্থ বল-পুৰ্বাক লটভে বলে। ভুমি এ সকল एटल कार्यात व्यक्ता डेरनका कतिया ममार्किव डिलर्न्समर्ड हिना श्रीकः। প্রণায়েব বেলাও ভোমাকে ভাহাই ক-রিতে হটবে। পিতা, মাতা বাহাকে সামী কি জী বলিয়া আমার সন্মুখে উপনীত করিলেন, আমি তাঁহাকে বাব জীবন ভালবাদিব, হৃদরের হৃদরে তাঁহাকে যত্নের সহিত রক্ষা করিব। বদি হলয় ইহাতে কোনরপুঅসজোৰ व। विवक्ति धाकान करत, जानि त्यहे

"নগেজ নিজেই বলিয়াছিল, " আমি নিজের সহিত যুদ্ধ করিয়া ক্ষত বিক্ষত ব্রুমাছি, কিন্তু আমার হুদ্ধ বল হইল না।"

লাগির হানাকে পদতলে মন্দিত করিব, প্রারোজন কইলে বন্ধ থাও করিব। ছিড়িয়া কেনিব, কিছু আমার হান্যমন্দিরের দেব বা দেবীকে সিংহাসমত্যত করিব না। বোগে, শোকে, নিপদে, সম্পদে, হুংধে, স্থাও ছারার নাার উহার সজে সঙ্গে কিরিব। সন্থাও কি আছে দেখিব না, পার্শ্বে কি আছে দেখিব না। যদি আমী হই, স্তীকে বক্ষে করিরা যাব-জ্যীবন কাটাইব। যদি জী হই, স্বামী-পদে মন্তক রাগিয়া জীবন কাটাইব।

हेहारे दक्षरमध्येत श्रावत स्क्रिंग। বাঁছারা হৃদরের প্রলোভনে মেহিত इहेम्रा हेहात खनानाहतन करवन, छाहाता व्यागीत्मत्र (मृत्मे चुन्ता । हेश्तव्यत्मत मञ काहारमञ्जलमा मका इहेटल कर र शार्व, কিছ আমরা ইছাকে প্রাণ ন'বরা আমা-দের দেশে সভাবলিয়া স্বীশার করিতে পারি না। বৈজ্ঞানিকেরা সভীত্কে মনের ভ্ৰম বলিয়া বুঝাইতে পারেন,দার্শনিকেরা সভীত্তে কুসংস্থার বলিয়া উপহাস कंत्रिष्ठ भादिन, किन्तु गडीच अधारमत কলম্বিত মন্তকের একমাত্র উচ্ছেশ স্থি। देश्नाए कि बना शृत्सी क मत्त्रत जानव দিন দিন বাড়িতেছে,ভাহ। আমরা নিশ্চর করিরা বলিতে পারি না। আর্ক্ল ইলি-ষ্ট্ হইতে সামান্য নভেল লেখক প্রাপ্ত कि सम्भ्रात्मादक करे स्थानिक साकारत िखिंड करतम, छारा आमहा ठिक् করিয়া বলিতে পারি ল:। ইংরেজেরা স্বাধীনতাত্তির। বোধ হর আনরসম্ব

কেও সাধীনত। আনিতে ইহার। ইছা করেন। আসরা অন্য সকল বিষয়ে স্বাধীনতার এইছুক হইলে হইতে পারি, কিন্তু আমরা প্রণয়ের স্বাধীনতা চাই মা। ডুটেডেন বলিতে পারেন— "One to one was cursedly confined।" আমরা বলিব—"One to one was blessedly confined."

याश इडेक, अकरन (म्था (मन, (व हे: न और बता अनब एक एवं का कारत हि कि क करतन, आमारमत रमर्ग छ। हा मान्महा-एठक এवः अधीरं धुनामनक। मञ्जीदात বৃদ্ধিতে যে সমাজের স্থবৃদ্ধি হর ভাহা विनवात शासा जन नाहै। यहि शानु হটতে এই সতীওটুকু বাদ দেওয়া যায়, তাহা হটলে পঞ্ডাব ভিন মার কিছুই खरिमाहे थाटक ना। द्यामादमत्र विश्वाम अहे যে প্রণয়সময়ে ইংলও আছিও সভা-शमनीट आज़ इन नाहै। कातन त्य. (मण यक मछ। इहेदा, (म (मर्म मगा-(धन बाळा उटहे मचानाई वनिया गण इटेंदि। इटबार यनि देशन की ब धानब ভাব আমরা অবিকল অতুকরণ করি, ভাষতে আমাদের এই লাভ ছইবে যে আমরা খদেশীয় সভীত্বের প্রতি বীতশ্র रहेया धानग्रक (क्वन প्राचावर्ग विक्षा गरन कतिव।

गै। इति । अहे गमछ विट्वहमा कृतिहा, आमारणत दणराज्य अञ्चाद गमछ स्वतंत्रकः कर्त्रणः, दगहे गमछ अञ्चाद मृत्रीकत्रद्वार दहेशक मरका विभिन्नाम स्वतंत्रम् स्वर्धस्यम, কাহাকে আমরা আমাদের যথার্থ হিতৈষী বলির। সহস্র সহস্র ধন্যবাদ দিব। আর বাহারা শুদ্ধ মনোরঞ্জনের উদ্দেশ্যে ইংরেগী ভাব সমস্তের অবিকল ''তরজমা''
কবিয়া আমাদের সম্মুণে উপস্থাপিত

করিবেন, জাঁহারা প্রতিভাশালী হইতে পারেন,কিন্তু ভাঁহাদিগকে কথনই দেশের ধনাবাদার্হ বলিয়া মনে করিতে পারিব না।

-- ECI : \$30 EX 103--

श्राधीन वानिष्ण अ तकाकत।

প্রথম চাবস্থার লোকে ভাপন প্রয়ো-জ্নীয় সমস্ত পদার্থ আপনি নির্মাণ ক্রিয়া লইত। তখন পরস্পার দ্রব্য বিনিময়ে যে কভ শ্রমণাঘণ হয়, ভাহা লোকে ভানিত না। ক্রমে যাহারা নিতাম্ভ কাছাকাছি থাকিত, তাহারা আপন প্রতিবেশীর সহিত আপন দ্রব্য বদলাইয়া লইত। রাম তাঁত বোনে, শামি ধান রোয়, শামের ধানে রামের প্রিবার প্রতিপালন হয়, রামের কা-পড়ে শামের পরিবারের শীত নিবারণ হয়। হরি লোহাব কর্মা করে, কৃষ্ণ ৯ধের বাবসা করে, ব্রফ নাপিত। পরস্পর পরস্পরকে সাহাযা করে, পাঁচ-জনই জাপন আপন কার্যালারা আর চাব্লিজনকে সাহায্য করে, এবং ভাহা-দের সহায়তায় নিজেরও চলে। এই থান আরম্ভ। ক্রমে হরি যদি এত লোহার অস্ত্র তৈয়ার করিতে পারে যে নিল্গ্রামে ভাহার প্রয়োজন হয় না। হরি কি করিবে ? আপন গ্রামে যত প্রোজন ভাত্তি করিয়া বসিয়া পা-

थ।किरन, ना वाहित विकास कतिवात रहें। कतिर्दें।

যেমন এক সময়ে সকল লোকই আ-পন আপন দ্রব্য উৎপাদন করিত, তেমনি এক সময়ে সকল গ্রামই আপন আপন দরকারী জিনিস তৈয়ার করিয়া লইত। ক্রমে ভাহারা দেখিল যে, পরস্পরের সহায়তা পাইলে হুবিধা হয়। হরিপুর দেখিল যে বিষ্ণুপুরে একজন কর্মকার আছে, সে অল সময়ে অনেক লোহার অস্ত্র তৈয়াব করিতে পারে, তাহার নিজের গ্রামের যত দরকার ভাহা, অপেকা অনেক অধিক সে তৈ-য়ার করে। স্থতরাং হরিপুরের লোক বিষ্ণুরের হরির কাছ হইতে সস্তার লোহার কাজ লইতে বার্গিল। পুরের কর্মকার চাস করিতে লাগিল। এইরূপে একজ্ন নাপিতে ছুই গ্রামের চলিল। হর ভ হরিপুরের জমীতে कात्रहात्रत माम वर्ष हम दर्गा विकृश्दात लाक भत्रहत्तत मान हाम আর না করিয়া লোহার কাজ ও নাপিত দিরা অরহরের দাল পাইতে লাগিল। ছইদলেরই কিছু কিছু সংশ্রের হইল, শ্রম ও বার লাখব হইল।

करम धरे मकन कूछ कूछ शतकात শাহায়াকারী অনেকগুলি গ্রাম একতা स्रेम्ना এकी धामममनाम हहेन। धहे वामनमवास्त्रत ्नाम (जना विनाम, এই এক এক জেলার লোক আপন धारास्त्रीत ममछ वच्छे (सनात मार्था टैज्जात कतिया लग्न। (क्यांत्र मत्था (य कात्रशाव (य क्षिनिम्हि खान इहेट्ड পারে, দেখানকার লোক কেবল সেই बिनिगरीके टिड्यांत करत, चशत दञ्ज তাহাদের প্রতিবেশবাসীদিগের নিকট कार्यन किनिटमत वनटा शाय। महन কর. জেলার নাম বরিশাল। বরিশা-(नत्र (नाक मिचिन (य ठाउँन जाहारमत म्म वा छेरभन स्म (य, छाहाना हाडेन অনারাদে বাহিরে পাঠাইতে পারে। ঢাকার লোকও দেখিল যে তাহারা যত কাপড তৈয়ার করিতে পারে তত কাপড় **छाटाएमत्र मतकात हम ना: द्विट्याः** ভাছারাও কাপড় বিদেশে পাঠাইতে तासी इहेन। इहे मनहे तासी, बत्सावस इहेन, छाकार्त (गारकत हान दिविणान দিবে, বরিশালের কাপড় ঢাকা দিবে। चार्ल द्यमन ब्रांटम ७ भारिम व्यक्तिक रहेबाडिन, এখন ঢ়াকা ও বরিশালে ভা-हाहे जावात शहेंग। किंग्र व्यवात वित-খালে যাতারা কাপড় তৈরার করিত ভাহারা ও ঢাকার যাহারা চাউল তৈরার

করিত ভাষারা প্রায় ছুই ভিন হাজাং लाक। देशां काम शाहेन ना। देश लंब म्मांब कि हरेट्य। हेशालब विन-कछक थ्व किछ इहेरव। ভাতীদের মধ্যে যাহারা ভাল তাহারা **ঢাকার চলিয়া বাইবে, যাহারা ম**ন্দ ठांग कदिरव। कडक जना जना वावमात्र व्यवमध्य कत्रित्, क्छक धहे হেঁপার মরিরাও বাইবে। চাসারাও কতক তাঁতীর কাম শিথিবে, कडक अभा वावमारत्र बाहेर्द, कडक वित्रभारम हिना याहेरव । कुनैहस्तन না খাইয়াও মারা যাইবে। ঢাকা ও বরিশাল ত প্রথম হইতেই পরস্পরের কাণড় ও চাউল যত দরকার স্বই দিতে পারিত; আর ঢাকার ভাতী वाष्ट्रिन, वित्रभारत हामा वाष्ट्रित । हाकाव षांतक षाधिक काशफ इहेटड नाशिल, वित्रणाल अत्नक अधिक ठाउँ हरे। वाशिव। লোকের मक्त इत्राव বাচিত্রে লাগিল। তখন লোকে ভনিল मानपर डे९क्टे चांध रह,, रमर्भन चांध টক্ বিস্থাদ্। অসনি ঢাকাও বরিশাল ष्टे कात्रभात (लाक्टे मनम् कविन (ध, আমাদের বাড়তি কাপড় ও সাউল দিয়া আইস পুৰ করিয়া আত্র ভক্ষণ कता राष्ट्रक । मानम्टइत लाक् ८ र्मन् थिन मन नत्र, अनात्रात्म हाछैन कागफ मिलिट्य: मालमस्य हात्रा छ छाठी नवारे निम निम वादनाम छान कतिया भारमबरे वातान देकतात कविटक

तिन। छोको ও वित्रभारन योहारमञ्ज अप्तक नामन इहेन। छेरभेन अधिक যের বাগান ছিল, তাহারা নিজ নিজ গুগান বেডিয়া আবার কাপড় ও চাউল তৈয়ার করিতে লাগিল। মালদহওয়া-লারা দেখিল যে তাহারা ঢাকা, বরি-খাল ও মালদছের লোককে পেট ভরিয়া আম্র ভক্ষণ করাইয়াও প্রতিবৎসরে ১২।১৩ नक आम वाहाहेत्छ शाह्म, 'তথন তাহারা ভারিল আম বৎসরে ছই मान वहे भाउमा याम मा; नचरनंत्र आम থাওয়া যার ইহার কোন উপায় হয় না कि ? जारम वाहित इंडेन, य्य,यनि आस्मत तम खकारेगाँ ताथा यात्र, जारा हरेला সম্বংসর চলে। আর কাঁচা আম কাছা-काहि 81विं टिक्ना वहेल मृद्य भाष्टान यात्र ना क्षकारेत्रा दाशित्न आद्रा अपनक দেশে পাঠাইতে পারা যাইবে। ঢাকা ও বরিশাল হইতে চাউল কাপড়ের मःश्वान इटेरङ्क, ज्यमा काव्या इटेरङ षात्रश्व नाना बिनिम मिलिरव। छाका বরিশালের তাঁতী ও চাসা আবার বাড়ি-য়াছে, ভাহারা অন্য অন্য জেলায় আপন আপন কাপড় ও চাউল পাঠা-है एक नाशिन। मानम्बर्घ जाम. खका-हेवा जामक्ष करा এक है नुडन जावि-দ্রিরা হইরাছে; ইহাদের ভাষার আর थारमाञ्चन नाहे। वहेत्रारण याथीन वानिकासाता এই लाख इहेन (व, (व দেশের লোক যাহা স্থবিধানত প্রস্তুত করিছে পারে, সে ভাহাই প্রস্তুত দ্বিক্তে বাণিল ভাষতে প্রিপ্রমের

हरेल। अकृष्टि मुख्न आविक्ति हुस्त्राटक नष्टनत लाहक जात्मत यान अर्थक किरक লাগিব। আর এক জেলার কতক্র্মলি लाक, डिम स्मनाह मर्सना याजाहोछन् क्वात मन्न देशायन युद्धिकि हरेन।

আমরা এতক্ষণ মনে করিতেছিলাম-रि वावमास्त्रम बना वित्रभारत काम-ড়ের কারবার উঠিয়া গেল, ঢাকার: **ठाउँ तत्र ठाम উठिया श्रम ७ मानवर**. दरेट इरे डिग्रिंग (शन। वास्त्रिक जाहां इत्र ना, जीवनशात्राभाषाणी नि-তান্ত প্রয়োজনীয় বস্তু কখন একেবারে কোন বিভ্ৰুত ভূভাগ হইতে উঠিয়া যার ना। किছू नां किছू পরিমাণে থাকিরাই যার। কিন্তু সে কথার কোন আন্তা না করিয়া আমরা বেভাবে বলিয়া আসি-তেছি সেই ভাবেই বলিয়া যাই।

मानम्दर चाम डेवुड रहेन। वित-भारत थाना छेवुछं इहेन, छाकाम दक्क हेव छ रहेग। ज्यन धरे जिन स्नाम-গার লোক দেখিল এত জিনিস মিথাা **ज**পচ । कतिश ममूर व शास या शिमुशानित असाखत्रसार्ग. अ नकन **्थात्व कतिरम कार्यक किनिम शाल्या** वारेटन, यांशाटक जामारमन स्थनाक्ना বুদ্ধি হইবে। স্থতরাং ভাহারা আপন व्याशन विनित्र गरेवा जित्र जित्र दिए। वाहेट आवस्य कतिन। आवाकान वा উড़ियाम बाइएक इरेटन, वर्फ मिकान अर्यायन स्वतः वह नोका शहर

ছইল, আরাকান হইতে নানা প্রকাব শির্মান্ত করা আনিতে লাগিল। আবান্ত করিয়া চাউলাদির জুন্য কিয়ৎপরিমাণে বরিশালের উপর নির্ভর করিতে লাগিল আর নৃতন জিনিস আমস্বন্ধ পাইতে লাগিল। দিনকতক আমস্বন্ধ খাইয়া তাহাদের সক গেল যে আম খাইতে ছইবে। আনেক চেষ্টার পর আম pre serve করিবার উপায় উত্তাবন হইল, আরাকানের লোক ইচ্ছা করিলে এখন আম্প্র থাইতে পাইল।

এইরপে ক্রমশঃ বাণিজ্য বিস্তার

হইলে ক্রমে লোকেব স্থস্বাচ্ছলা বৃদ্ধি

হর, নিতান্ত প্রযোজনীয় বস্ত সন্তা হয়,
নূতন নূতন আবিদ্বিয়া হইয়। জড

ক্রপতের উপর সন্তুম্যেন আদিপত্য

বৃদ্ধি হয়, মন্তুম্যের প্রিশ্রম কম হয়,
বৃদ্ধিও কর্মাক্ষমতা বৃদ্ধি হয়,সমন্ত মানব

কাতির সহিত সহাস্তৃতি করিতে

শিথে, জগং শুদ্ধ তাই ভাই হইয়া

দাঁভায়।

যদি জগৎ শুদ্ধ লোক বরিশাল ঢাকা
ও মালদহের মত সোজা ব্যে, তবে
যে দেশে যাহা সহজে উৎপন্ন হইতে
পারে, সে দেশে তাহাই উৎপন্ন কবা
কর্তব্য। সকল লোকে সকল জিনিস
সন্তা পান। জগতের লোকসংখা বৃদ্ধি
হয় ও লোকের সাংসারিক হৃঃথ কমিরা
যায়। ইংলাণ্ডের টাকা অনেক,ইংলণ্ডেব
লোক পুন পরিশ্রম করিতে পারে, ইংলণ্ড

मं हेश्नए नानंदिध करनत छाथः স্ষ্টি। স্বরাং ইংলভের উচিত যে চাচ বাস একেবাবে ত্যাগ করিয়া কেবল नागविश भिरत्नत अञ्गीलन कता। कृष्टिम উৎकृष्टे जाका हत्या, छे९कृष्टे রেশম তৈয়ারি হয়, অতএব ফালেব উচিত পৃথিবীৰ শমস্ত দেশেৰ মদা ও রেশমেৰ কাপড় সরববাহ কবা। ইতালী ব লোক চিত্রকর্মে অভ্যন্তনিপুণ, ইতালীব জল ও বায় এবং ইতালীৰ নিৰ্দেশ্য পৰি-কাব গগনম ওল চিত্র কর্ণের অনেক স্থবিধা করিয়া দেশ, অত্তব ইতালীর উচিত (क त व विकास प्रमान क त । ভাৰতবৰ্ষ ও ইউনাইটেড স্টেটে অপ্র্যাপ্ত উर्जन। ভূমি আছে, अञ्जन हेहास्पन উচিত কেবল চাসবাস কৰা, কুশিয়ায় অণ্যাপ্ত অনুষ্ঠা ভূমি আছে দেখানে অনেক পশু পালিত হইতে পাবে, স্তরাং ভাগদেৰ উচিত পশুপালনবৃত্তি অবলয়ন **क**41)

কিন্ত লোকেব কেমন ছুবুদ্ধি, ভাহার।
মনে কবে ভাহাব। যতই বেশা থরচ
কবিয়া আপন আপন দেশে সকল দ্রবা
প্রস্তুত করিবে ভত্তই হাহাদেব বাহাছুরী
বেশী। ইংলণ্ডে অপর্যাপ্ত লবন পাওয়া
নায়, প্রস্তুত করিতে হয় না। ফ্রাম্স
ভব্ধ বহনের থবচ দিলে দেখান হইতে বল
অপর্যাপ্ত লবন পাইতে পারে। কিন্তু ছি!
ইংলণ্ডেব লবন ফ্রাম্স পাইবে! কথনই
হইতে পারে না। ফ্রাম্স প্রতি বৎসর
এক কোটী মৃদ্রা ব্যয়ে মরে লবন প্রস্তুত

করিয়া লইবে তথাপি নিতাস্ত অল্ল মূলো हैश्लाखन नवन नहेर्द मा। व्यानस्क किकामा कतिए भारतन है नए अत लाक গিয়া কেন ফাঙ্গে লবণ বেচিয়া আদে मा १ जाहा इरेवात (का नारे। रेश्न ७ হইতে লবণ গেলেই তাহার উপর এত ট্যাক্স দিতে হয় যে বেচিয়া লোকদান বই मां इत्र ना। मत्न कत क्रांक्न लवन তৈয়ারি করিতে মণ করা ছুই টাকা থরচ হয় ও ইংলও হইতে আনিতে চারি আনা ধর্চ হয়। তাহাতে ফুাল্সের গ্ৰণ্মেণ্ট আইন করিলেন, যে ইংলগু হইতে লবণ আসিলে শতকরা সাড়ে সাত শত টাকা ট্যাক্স দিতে হইবে। চারি আনার জিনিদে সাড়ে সাত সিকা ট্যাকা। ইংলণ্ডের লবণের দাম ফ্রান্সে গিয়া इहेल २० हेहात छेशत वावमात्रमात्रिन-গের মুনাফা আছে স্তরাং ফান্সে ইং-नएखंद नवर्गंद्र मांग कारक्षद नवर्गंद माग অপেকাবেশী হইল; আর কেহ ইংলওের नवन किनित ना। धरेत्र निकारमान मव প্রকার শিল্পকর্মা রক্ষার জন্য ট্যাক্স ক রার নাম নাম Protection অথবা রকা ইংলও ভিন্ন গৃথিবীর ভাবং দেশেই এইরপ রক্ষা-কর প্রচলিত। ष्यना (मर्भात क्रिनिम है:लए (शल **छे। का भिट्छ इय ना। किन्द हे: लट्छ** त बिनिम षश (मर्ग (भरत है है।। स मिर्ड रम । भूत्वरे वना इरेमार्ड रेश्न ७ व होका (वभी। এक (वभी य इंश्लख ध्यात्र श्राज्य रमत्र भन्न भन्न वारम

৯৭ कांगे हो हा विरम्भ इहेटल सम हेश्नरखत लाटकत পाইয়া থাকে। বাবদার বুদ্ধি অতি উৎকৃষ্ট, ইংলণ্ডের লোকের এমন ক্ষমতা আছে, যে তাহারা পৃথিবীর সর্বত ছুরী কাঁচি তুলার কাপড়, পাটের জিনিস, লোহার স্বর্ক্সের জি-নিস, গ্রম কাপড়, ইকিং কতক কতক কাঠের জিনিসও দিতে পারে। কিন্ত तका करतत जना व्यत्नक (मर्ग हे॰ मरखत ज्यामि याहेवात (का नाहे। इंडेनारे-**টেড ষ্টেট প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন,যে বিদেশ** হইতে কোন জিনিস আসিতে দিবেন না। এমন কি কুমারের জিনিদের উপর শতকরা ৪০ টাকা রাক্ষকর বসাইয়াছেন। দেডি ফদেট ইউনাইটেড ষ্টেটের কলা-কর সম্বন্ধীয় আহামুকির এক স্থল্য पृष्ठी**छ (प**शिष्ठेग्राह्म। তिनि दलन **हे**छे-नाइरिंड (हेरिंद्र लांक रय পांयाक পরে, ভাহার স্তার উপর ট্যাক্স, কাপ-**८** ज्व ज्ञे ने हे। ज्ञ , मञ्चाद्य व कामर ज्व উপর ট্যাকা, বোতামের উপর ট্যাকা; এইরপে সমস্ত জামাটির নির্মিত মূল্যের উপর শতকরা প্রায় ৫০ টাকা দিতে इम् । निद्म (लिख करमरहेव स्मेरे भारा-शाकि अञ्चामिक इनेन ।

"আমেরিকানের। যে পোষাক পরিরা থাকে ভাছার উপর ট্যাক্সের তালিকা। টুলি, টুপির রেশমে শতকরা ৬০ টাকা, ফিতার শতকরা ৬০ টাকা ধারে যে আলপাকা থাকে ভাছাতে শতকরা ৫০ অথবা ৩৫, ভিতরের চামড়া ৩৫, মস্পিন থক বুর্গ থকে ৭, আটা শতকরা ২০
টাকা; কোট—কাপড়ে শতকরা ৫৫
রেশ্যে ৬০, আলপাকা ৫০, বোতাম
এক পাউতে ২০ সেণ্টব্রেড এক পাউত
৫০, সেণ্ট, সলাবদে বে মক্মল থাকে
ভাছাতে শতকরা ৬০ টাকা। ইত্যাদি
ইত্যাদি।

এই রক্ষা করের জনা পৃথিবীর যে
কত জনিউ হইতেতে ভাহার সংখ্যা করা
বার না। প্রোক্ষেসর ফসেট হিসাব করিরা
কেথাইরাছেন যে শুরু লবণের রক্ষার জত্ত
ক্রাজনে প্রতি বৎসর ১ কোটা করিয়া
টাকা লোকসান দিতে হয়, অর্থাৎ ইংলণ্ডের লবণে ও ক্রান্সের লবণে দাম
এত ভকাৎ যে ফ্রান্সের লবণ কেনার ক্রেণ ঐ টাকা প্রজাদিগকে লবণের
দামে, বেশী দিতে হয়।

জনেকে মনে করিতে পারেন যে এই
টাকা গবর্ণমেণ্ট পান স্থতরাং রক্ষাকর
একটি ট্যাক্স, প্রজাদিগের পকেট হইতে
না আসিয়া বিদেশীর বিশিক্ষিণের পকেট
ইইতে আসে, বেশ ত। কিন্তু-তাহা
নহে। মনে কর ফান্সে কোটা মণ লবপের মরকার, কান্সে ৭৫ লক্ষ মণ
লবণ প্রস্তুত হর, প্রতি মণের পড়তা
বার আনা। ইংলও ইইতে আসে ২৫
লক্ষ্য মণ এই ২৫ লক্ষ্য মণের উপর
মনকরা ।। আটি আনা ট্যাল্ম বিদিন।
গবর্ণমেণ্টের সাত্তে বার লক্ষ্য টাকা আদায়
ইইল। কিন্তু প্রজাদের দিতে, হইল
ক্ষ্য ইংলতে কিন্তু লবণ এত স্তুত্তা

নয় যে আট আনা ট্যাক্স দিয়া বার-আনায় বিক্রম করিতে পারে স্থতরাং ইংলতের লবণ একুটাকা ছই আনায় विक्रम् इहेन। किञ्चलवर्णत्र वासारत कडक ১৯/• कछक ५० भागांत्र विक्रम हरेटछ পারে না সবই বিক্রয় হইল ১√•। স্থভ-त्राः सृ । न्राव वाकरक जाननारमत १६ लक माल मनकता इत्र काना माम व्यक्षिक मिट्ठ इंटेन। व्यावात यमि है। क्र না পাকিত তাহা হইলে হয় ত ইংলগু হইতেই কোটী মণ লবণ আসিয়া দশ আনায় বিক্রন্ন হইত। মণকরা আট আনা অর্থাৎ ৫০ লক্ষ টাকা প্রতি বৎসর ফাূন্সের লোককে লোকসান দিতে গবর্ণমেণ্টে সাড়ে বার লক व्यामार्य अञ्चारमत मिर्छ इहेम co नक লাভ হইল ফুান্দের জনকত বাৰসায় मात्रित्र, ममछ ख्यांत्र निक्रे हहेए ८० লক্ষ টাকা আদায় করিয়া কেন জন কভক বাবদাদারকে বক্দিয় দেওয়া इहेन।

আমাদের দেশে যে সকল কর আছে
তাহার মধ্যে কেহই রক্ষাকর নহে।
কারণ বিদেশীয় জবা আমাদের দেশে
না আত্মক, এ অভিপ্রায়ে কোন করই
হাপিত হয় নাই। কিন্তু এমন অনেক
জিনিস আছে বাহার কিয়দংশ দেশে
উৎপর হয় ও কিয়দংশ বিদেশ হইতে
আসে। এরপ অবস্থায় যে অংশ বিদেশ হইতে আসে ওছা তাহার উপরকর বসাইলে যে অংশ বেশে উৎপ্র

चत्रं जाहात चारनक स्विधा हत्र। विष-শীর ল্রবোর আমদানী ভারতে কিছু কম হইবার সম্ভাবনা। এক বাজাবে এक खिनिम इहे मत्त्र विक्रय हय ना। বিদেশীয় জিনিস ট্যাক্স দেয়. স্থতরাৎ তাহার দাম অধিক, দেশীয় जिनिम টাাক্স দেয় না. ভাহার দাম কম। বালারে ছই আসিরা পড়িল, দেশীয় ও विदल्लीय छ्टेट्यबरे मनान माम दरेन। (मभीय जिनित्म नाष्ठ दरेन (वभी, विष्मिशेष किनित्म लाख कम। দেশীয় সওদাগারেরা দাম শতকরা দশ টাকা क्यारेश पिटनन, छाशास्त्र किनिम विकार इहेन, विष्मी स किनिम কেহ লইল না। যদি কখন এমন इस, (य, दमभीस जिनिम् वाजादत नाहे, তবেই বিদেশীয় चिनिम विक्रम इहेरवः नटि विद्यानीय निगटक लाकगान निट्छ इटेर्द ।

তরপ অবস্থায় ওরপ কর রক্ষাকর
হইরা উঠে; এই জনাই ইংলতে ছুই
প্রকার বস্তর উপর সমান ট্যাক্স বসান,
ইংলভের মদ কতক দেশে,কতক বিদেশে
জন্মে। দেশীর মদের উপর একসাইস ও
বিদেশীর মদের উপর কইম ডিউট লওরা
হয়। অতএব ইংলতে রক্ষাকরের কোন
কথাই নাই। আমাদের দেশের কাপড়
শতক দেশে তৈরারি হয়,কতক মাঞ্চের
বিত্তে আহ্যে। মাঞ্চেররের কাপড়ের
আহ্যা শতকরা পাঁচ টাকা টেকা

नहै। धरेषि शाक्षेत्रः द्विमाकद्वत्रभ रुरेशा में ज़िता अजना मारकहेरत्रम विगटकत्रा शर्वरगरके कानात्र। (मणे के करतत किसमः म डेडाहेना (मन । অগ্রাৎ সর্বভিদ্ধ ১৭কোটা টাকার বিদে-শীয় কাপড় আমাদের দেশে আসে, তাহার কর হটতে পঁচাশি লক্ষ টাকা উৎপর হয়; ঐ টাকার বিশলক গ্রণ-(यन्छे छेर्डाइया (मन। भारक हेर इत विकितिशत कथात शव्दिरा वेत्र विकास কার্যো হস্তক্ষেপ করা কতদুর যুক্তিসিদ তাহা আমর। বলিতে চাহি না। कि এরপ কর উঠাইরা দেওরা বে উচিত **जाशां अ अस्त वाहे। धे कत (य** রক্ষাকর ভাষা ফদেট সাছেব ভাষার Free Trade and Protection নামক গ্ৰন্থে শেষ পারাগ্রাফে মুক্তকঠে স্বীকার कत्रियाद्यम । কিন্ত উহা রকাকর হইলেও তিনি উহা উঠাইয়া দেওরার विद्यारी, कावन जिनि वत्तन, शवर्न-त्मर्णेद नमम छान नम, छेठारेमा निरनरे कान न्डन कर नहें एक हहेर दि रही। বড অত্যাচার হইবে ৷ অতএব ভাঁহার कथात्र এই বুঝা यात्र ८य, গৰণ্মেণ্টের সময় হইলে শত কার্য্য ভ্যাগ করিয়া जार्श देश केंग्रोहेन्ना दम्बन्ना केहिक।

আমরা উক্ত টেক্স উঠাইরা দেওরার সম্পূর্ণ পক্ষপাতী; কারণ উহাতে দেশীর জিনিসের পর্যান্ত বর বাড়ান হয়। আর আমাদের মত এই যে, বে সকল এব্য আবাল, বৃদ্ধ, ভক্ত, দরিক্ত সকলেরই

নিতান্ত প্রয়েজনীয়, তাহার মূল্য যা-হাতে কমে, ভাহা গ্রব্মেণ্টের দেখা নিতান্ত প্রয়োজন। এমন অবস্থায় যে कान छेशारत के टिका डेर्राहेश (महत्रा নিতাম্ভ আবশাক। शकां माधात्र (वत হিত্তিস্তা গ্রথমেণ্টের কাজ। যেটি याद्यारक दब्द, शवर्गरायकेत त्महें किता সকলের আগে। ঐ টেক্স উঠাইয়া मित्न ৮৫ नक छाका महिल्याकारमञ ঘরে ছড়াইয়া পড়িত সন্দেহ নাই। কারণ ধনীলোকে আজিও দেশীয় সংগ্র বস্ত্র (বাহার মূল্য অত্যস্ত অধিক) ব্যবহার করিয়া থাকেন। ছড়াইরা পড়িলে যে চাসবাসের স্থবিধা হইত, ভাহার আর • मत्महनारे।

देश्दाकि मधामशक्ष अवामात। के दिका উঠাইয়া দিবার সময় বড়ই চীংকার करत्रन, छैं। हात्रा वर्णन धक्तभ कतिर्ल (वाशास स्य मकल जुनावन इहेग्रास्ट, তাহার ক্ষতি হইবে। এটি সম্পূর্ণ ভ্রম कांत्रण (वार्ष (य मकल कल चार्ड, ভাহারা ৮।১০ বৎসর কাল চালাইতেছে। মাঞ্চেপ্তর অপেকা তাহাদের অনেক ञ्चविधा। गारकष्टेत्रक अरम्भ इटेट তুলা কিনিয়া বহনি থরচ করিয়া লইয়া याहेटल इस ; व्यावात वहनियत्र कतिसा ফিরাইয়া দিয়া যাইতে হয়। ইংলতে मजूबि वर्षं अधिक, अथारन मङ्बि वर् ভারতবর্ষীয় বাজারে মাঞ্চেইর श्रात्रका (मण्ड (वार्षश्रानात्रद्र श्राप्त व्यक्षित । (वारय उग्रामा देशमञ्ज इहेरल

অল হৃদে টাকা লইয়া এইথানে বসিয়া তুইবারকার বছনি বাঢাইয়া, অল সজু-রিতে যদি মাঞ্চেরকে ডরান, তবে তাঁহাদের বাবসায় না করাই ভাল।

शिन वरनन (य. यथन विरम्रां अकरे। कांक चानक मिन हिना चानिराहर, **(मर्भ (मर्डे कांबर्ध) आवस्त्र क**तिएक इ. हैरव, जधन जाहारक बका ना कबिरल, विषम्भी प्रमिश्वत माम यूचिया উঠিতে পারিবে কেন ? এরপ করা ফদেট সাহেব যুক্তিসকত মনে করেন না; कात्र ि जिन वालन, याशिमिशाक धक-বার রক্ষা করা হয়, তাহারা চিরকাল "রক্ষাকর রক্ষাকর" বলিয়া চীৎকার করে, ভাহারা আত্মনির্ভর শিথে না। আমরা ফদেটের যুক্তির সম্পূর্ণ অনু-त्यापन कतिना; कातन तका कताना করা রক্ষিতদের কথানুসারে ত হইবে ना, जाहात बना अकठा भवर्रमन्छे चारक, गवर्गरमणे निष्य यथन वृक्षिरवन যে, রক্ষা আর উচিত নহে, তথন রক্ষা উঠाইয়া लहेरत। अङ्बद खाष्म अत-স্থায় মিলমতামুখায়ী হইয়া রক্ষা করা উচিত। এরূপ রক্ষা বোম্বেওয়ালারা bis वरमत भारेगाह्म, अथन गवर्गः মেণ্ট যেমন বুঝিবেন তেমনি করিবেন, তাহাদের আর রক্ষা চাওয়া অন্যায়।

আমাদের দেশীয় লোকেরও টেক্স উঠিয়া গেলে স্থবিধা বই অস্থবিধা নাই, স্তরাং দেশীয় সমাদপ্রশুরালারা ্য কেন উহাব বিবোধী হইয়। গাডাই তংহারা আজিও বোদহর গড্ডালিকা ্র্চিটেলন, ভুহো অংমরা জানি না। আহবাছং অগ্রীর প্রাত্মরণ করেন।

रिवयथ म्यार्लाहन।

। गुक्क शीयन भिन्छेन क्षाञ्जि कविष्ठीय कर्डुक निरमाण। दंग कांतरणहे इंडेक, ক্ৰিগ্ৰেৰ ক্ৰাৱে ইংবেলি সাহি সাভা গুৱে অগ্রাপিরতে প্রিপৃথি। এই সকল रङ्ग निक्रप्टे (अगीर गर्ड, अक अकड़े এক একখানি কহিন্ব। সামান্য সম্ভের क जुल्ला करा येखिला। सदरकारलंड নেশগ্রনের নকাত্রপুলের নিংবি রার চারি-দিকে ছড়নে রহিয়াছে। সংস্তুত সংহিত্য ভাঙাৰে বন্ধেৰ এত ছড়াছড়ি নাই বটে, কিছু কালিদাস ও ভবভূতির অহু-গ্রে কহিন্বের অভাব নাই, তাব• স্ংখ্যে অল। কিন্তু ইংবেজনিংগ্র ভাঙারে যেমন যে দরের রত্ন খুঞিবে, ভাচ ট মিলিবে, আন্মগ্রের ভাষারে ्रशम् इंटर्स मा; कश्मित्यत भीत्रहे একেবারে বুটিটা কালিদাস ভবসূতি এড়ভি তুই একছানের পর প্রকৃত কবি আর আমাদের মজবে ঠেকে না। ভবে कि आभारत्व संबंद कि के के हैं? उद्या नत्त्र, वास्त्रविक्ष कविनादमञ्ज योशा আ্যাক্রি অতি বির্লা কালিদাস প্রভূতি যে তুই একজন থাছেন, তাঁহা-দেরও গ্রন্থ সেক্ষপীরব ইত্যাদির নাায় সংখ্যার অধিক নতে। আনাদের বিবে-দ্বার ইহার ছুইটি কারণ আছে। থিম মুদ্রাযন্ত্রের অভাব, বিতীয় মেজ্ছ-

ফ্ৰে আ্যাগণ্ণৰ কৰি ও কাব্য অভি অলা কুনার, রঘু, শকুললা, নেঘদ্ত, किया रार्छ्नीय, निक्ष्णान्त्र, देनव्रठतिछ, রপ্রাবলী প্রভৃতি কয়খানি কাব্য সাধার-গুড়ে উংক্র কারামধ্যে পরিগণিত হইয়া থাকে। ইহাদিগের মধ্যে এই প্রস্তাবে देवयायव अवाद्याहमा व्याचीतम् ब किल्ला। পুকেই বলিয়া রাখা উচিত যে, বঙ্গীয় যুবকেরা বিশ্বনিদক বলিয়া থাতে; অ্নের্ অলাকার সমালোচনারারা অনেক আয়াদে উপার্জিত এই নামে কলক করিতে চাহি না।

বলদেশ বছকাল হইতে ন্যায়শাস্ত্রের চচ্চার জনা সম্ধিক বিখ্যাত। বার-ণদী, পুনা, তৈলস প্রভৃতি নানা স্থান इटेट वरमत वरमत मल मल छाज ভালিয়া ভাদ্যাপি নব্দীপো ন্যায়শাস্ত্র পঠ করিরা থাকে। ভিন্নদেশে বিশে यकः পশ্চিমাঞ্চল वश्रीय देनयाश्विकनिर्गत्र বিশেষ প্রতিপদ্ধি এবং স্বদেশেও নৈয়া-बिदकता गर्सार्यका अधिक मधान शाहेश থাকেন। ন্যায়শাস্ত্র যে সবিধ্যৈ গৌর-বের বস্তু তাহার এক প্রমাণ এই. **এटफ्रमीय याव**ीय উপाधिष्टे (विनाा-নিধি, শিরো ক্রি গ্রন্থতি করেকটি ব্য-

ভীত) ন্যারশাস্ত্রঘটিত কোন না কোন শক লইয়া রচিত; অর্থাং নাায়শাল না জানিলে কেছই পণ্ডিত নাম পাইবার (यांगा नरहम । अवः देनग्रविक्तिरात्रं अ এমন একট জৈভিমান আছে যে, তাঁহা-দের মত কৃত্মবৃদ্ধি অতি অল লোকের আছে। এ কথা কতদ্র সভা ভাহা **अञ्चल कामारमत** विरवहा नरह, सामता शकु घडेना वर्गन कतिर इशिया । বঙ্গদেশের মুণোজ্জলকারী এই পণ্ডিত-'निश्तं निकृ देनस्थतं वक् आपतः; देनचर्भत खामाना छाहारमत मूर्थ भरत না। বাস্তবিকও তাঁহাদের প্রশংসা कतितात मण्णूर्व अधिकात ज! एहं। देनमध একজন কুশাগ্রবৃদ্ধি নৈয়ায়িকের রচিত। चिनि (य विषयात ठळी करवन, डाँशांत (जरेरे हे जाल नारा। किंद्र अनामा শাল্পবাৰসায়ীরা যে কিজনা নৈষ্পকে উৎকृष्टे कावामरक्षा शनमा करतम, छाठा আমাদের কুদু বুদ্ধিতে ধরিল না। कत्रीहार्यामहत्त रेनस्थत এड जानत त्य. ইভার প্রশংসার জনা ছুই তিন্টা কবিতা **हिना शिशां एक । * अथवा छोडार्था** সহাশয়ের। যে এরপে বলিবেন, তাহা বিচিত্র নছে। কারণ তাঁহারা বলেন, "রত্বপি কাঝাং তদপি চ পাঠাং।" है बादा कारवात गक्कन कि, कि कि खन शाकिता , (कान शहरक कावा दना यात्र, कांका जार्यन नां। हैशास्त्र मटक

याशंटा न्डन न्डन छात । अरमोकिक वर्तना चाट्ड, डाहारे काना। यनि अरे कथा ठिक रम, जाहा हहेरन आत्रा छेल--मारमद बहिष्ठात छ। य छे ९ इन्हें लिशक कांन कांटल (कांन (क्टम क्या शहर करवे कांन नाई। (मीन्मर्ग्यष्टिके कार्तात श्राकृत रेनवधकांत्र कवि नरहन, একজন নৈয়ায়িক, স্তরাং এই উদ্দেশ্যে " ঠাহার দৃষ্টি নাই। কতকগুলি অসার ফাসম্ভব বিষয় বর্ণনা করিয়া গ্রন্থ পরিপূর্ণ করিয়াছেন। সামরা একাণে প্রতিপর क्रिट (ठहें। क्रिव (ग, रेनस्थ क्रिव) শক্তির কিছুমাত পরিচয় পাওয়া যায় না; তবে ইহাতে লেখকের অসাধারণ ক্মতা ও শক্তির পরিচয় পাওয়া যায় বটে।

এই গ্রন্থের উপাপ্যানভাগ মহাভারত
হইতে গৃহীত হইয়াছে। নলদময়তী,
সংবিত্রীসভাবান্ ও শকুস্তলা হ্মপ্তেব
প্রান্থ করিয়াছেন। কালিদাস ও শীহর্ষ উভযে একই পৃত্তক অবলম্বন করিয়া কাব্য
রচনা করিয়াছেন, স্তত্যাং উপাধ্যানভাগ লইয়া উভয়ের তুলনা করিলেই
বুঝা যাইবে কে কিরুপ কবি। চিত্তকর
আপন হইতে রঙ্কিনিয়া লইয়া সেইপ্রেলি নিশাইয়া নৃত্ন নৃত্ন রঙ্প্রেম্বত
করে, এবং ভাছাতে এরূপ স্কার ছবি
আঁকে যে দেখিলে দর্শকের নয়ন স্কুড়ার

^{* &}quot;डिमिट्ड टेनम्ट्य काट्या क भाषः क छ छात्रविः।"
"टेनम्ट्य भमनामिडाः।"

ও মন মুগ্ধ হইয়া যায়; সংক্ৰিও সেই-রূপ কোন পুস্তক হইতে উপাখ্যান লইয়া নিজ কলনোচিত ঘটনার সহিত মিশাইয়া এমন অপূর্ব কাব্য রচনা ক-(त्रन (य, व्यथायन कतित्व शांठिकत क्षप्र जानल्य नृष्ठा कतिएक शास्त्र। কালিদাস মহাভাবত হইতে শকুস্তলার ইতিহাস লইয়া আপনি বৃদ্ধিপ্রভাবে (य व्यश्च नाडेक लाग्रन कतियाहिन, আজি ছুই হাজার বৎসর পরেও লোকে ভাহা পাঠ করিয়া নিরূপম প্রীতি অনুভব করিতেছে। কিন্তু এই পেই মহাভারত হইতে শকুস্থলা অপেকা वदः अधिक मत्नादम উপाणान महेबा (य কাব্যপ্রশন্ত্র করিয়াছেন তাহাতে প্রীতি দুরে যাউক, প্রাক্তাত বিরক্তি জন্মে। মহাভারতের নলোপাখ্যান অতি মিষ্ট; নলদময়ন্তীর প্রাণয় অতি মধুর ও পবিত্র; সে প্রেমে শরীরের সংশ্রব নাই, কেবল क्षप्रहे छाहात विषयः यथन ननताका কলির প্রভাবে বৃদ্ধিলংশহেতু নির জা-য়াকে একাকিনী বনমধ্যে পরিত্যাগ করিছে উদ্যত হইলেন, তথন উ,হার মনের ভাববর্ণনা পাঠ কার্লে মহাভারত-कात्रक खेनीचिक्तमण्या विविद्या त्वां इश, আবার ভাষার কিঞ্ছিৎ পরে স্বামীকর্তৃক তাক্তা অসহায়া দময়ন্তীর বিলাপ পাঠ कतित्ल, त्कान शायावश्वमत्त्रत नम्रत्रहो ,रें ए अवित्र व अध्यक्षाता निर्गेष्ठ ना इस १ স্তর উভয়ের মিলন কি স্থের ৷ ফলত: ভারতের নলদময়ত্বী এক অপুর্ব

टेनवथकारतत चाइक नलम्म-মন্ত্রীচিত্র ইহার ঠিক বিপরীত। ভারত-চল্ডের বিদ্যাञ্বলবের ভার নলদময়ন্তীর धानम् भनोत्तरे (भव हरेगाहः सम्दन প্রবেশ করিতে পারে নাই। আমরা मःकृष्ठ भूखकामिटक हक्तुत्रारंशव वर्गनाहे-দেখিতে পাই কিন্তু নৈষ্ধে আনাব শ্ৰুবৰ वांग शाहेलाम; (लाटकत्रमूर्थ ई इंस-मृत्य भवन्मदाव काम उ खनवर्गना अवन कतिया नल ও प्रमञ्जूषी भवन्भदित श्रीक অনুবক্ত হইলেন। শুধু তাহাই নহে,হঠাৎ এমনি উৎকট বিরহ্ব্যাধি উপস্থিত হইল (य, उड्डाना हिकिৎमक आना आवनाक-इहेबाडिकिंग। व्यागारमन रमर्ग धाना चाह्य त्य, मिंद्रश्तरहात्र मिंद्रकाषी गड़ा-देवात बना धककूला किए ताबिएमध কানার শালে রাথিয়া আসে, প্রভাতে কামার তাহা দেখিয়া সঙ্কেৎ ব্রিয়া সিঁধ-কাটী গড়ে ও সন্ধ্যাকালে রাখিয়া চলিয়া যায়। সিঁধেলচোর আদিয়া ভাষা লইয়া, যায়। চোরে কামারে দেখা সাক্ষাৎ হয় লা, অথচ মধ্যে মধ্যে সিঁধকাটি टेड्याति इया आभारतत देन्यधकातवर्निङ व्यवग्रं ठिक (महेन्नभ। नायक नायिः काटड (पथा खना नाई अथह मध्य মধ্যে প্রেমবিরহ প্রভৃতি স্কলি হইয়া গেল। কবিত্বশক্তিরপ্রভাব! হে আধু-নিক বসীয়লেথকসমাম। কেন ভোময়া द्या गतीवरवहाता वांकालिमिशक विवादः প্রথার জন্য অন্যায় নিন্দা ক্র, কেন বল বরকন্যান্ধ বিবাহ না হইয়া আঞি

কালি বরকর্তা ও কন্যাকর্তার বিবাহ হয়। দেখ সেকালেও এরূপ চলিত ছিল। মোট কথা আমাদের বিবেচনায় নৈষধবর্ণিত প্রেম অপকৃষ্ট প্রেম। এদিকে (व कक्ष्यद्रम् चार्शाश्वात क्ष्मव्रक्काद्वत चात छेन्यां छिक कतियां (पत्र, याहा व्यार्गा-कवित्र अनिविधाहनकातिनी अञ्चलान विमा. देनघरभ देनहे कतन्तरमा अकान्य ष्यष्टात । (र ष्यारम धर्ने निक क्षाकाम कतिवात मन्भूर्ग जनकाश हिल, रेगगांत्रिक কৰি উপাখ্যান ভাগের সেই অংশ পরি-ভাগ করিয়াছেন। নলকত্ক দময়ন্ত্রী ভাবের বিষয় নৈষ্ধে বর্ণিত হয় নাই। বিবাহান্ত্র কন্যাব প্তিগ্রাগ্ন্ন পর্বাস্থ ইহাতে বণিত জাতে এবং **एडे कांद्र(बंदे एडावृभ छाताछ छा**ड ঘটনাসংখ্যা অল হট্রা ওডিয়াতে: স্মতরাং ইহা পাঠ করিতে নির্জ্তি জ্যার र य।

সময়ের গুণে সকলি হর । মহামহোপাধাার পণ্ডিতগণ নে সনত উৎক্ট
উৎক্ট বিষয় নিজ্ঞাতে বিবৃত ক্রিয়া
অশেষ থাতিলাভ করিয়া গিলাছেন, সে
সকলও সময়ের ফল। কয়েক বংসর
ধরিয়া ভিন্ন ভিন্ন মন্ত্রোর সদ্যে সেই
ভারগুলি আবিভূতি হইতেহিল, একজন
পণ্ডিত জনিয়া সেইগুলি পুত্তকাকারে
বা অনা প্রকারে প্রকাশ ক্রিলেন
মাত্র। ত্রাহ্মণগণের অভ্যাচারে প্রাতী-

ডিত হটয়া, লোকে তাহাদের হস্ত হইতে নিষ্ঠি পাইবার জন্য বহুকাল इहेट गत्न यान छेलाव हिन्दा कतिएक **डिल.** भाकानिःश सन्तिया छात्रा गाधन कतित्त्रम। एत् तक्षत, (वक्स, डिडें-ফিফ প্রভৃতিব ন্যায় চুট একল্ল মহাত্রা সময়গুণকেও অভিক্রন করিয়া উঠেন সভা; কিছু সেরূপ লোক জগদে काहरे ज्याशहर कतियादिन। यमि এहे কণা সতা হয়, তবে শীংৰ্ষ যে সন্ধে প্রাত্ভূতি হন, সেই সময়েব সমাজ নীতিসম্বাদ্ধে অতি শোচনীয়ে অবস্থায় পতিও হইয়াছিল বলিতে হইবে: নৈষ্ধে একপ বৰ্ণা আনেক আছে यादा छङ्गे जे दिकका छ। स्मार्टन छ। स्म श्री लाक मिर्गत डेल्डिए छ ध्वाश कमर्गा-ভাগ লিখিত ২ইয়াছে যে, তাহা ভদু-লোকের অপাঠা ৷ যোড়শ সর্গে দময় ভীৰ স্থীগণেৰ প্রিছাস বর্ণনা পাঠ कतित्व. जामारमत कथा मञ्जूष कि मा. পাঠক বুঝিতে পারিবেন। এই সকল दर्वना समाहक्ष भीनात्रकात शक्तिम দিতেছে। বস্ত্রিকও ইতিহাস্থাঠে অবগত হওয়া যায়, যে বজনেশে শা-কুলে ব্ৰহ্মণ পাওয়া যাইত না বলিয়া भागिन्त करनाज इंटेर राक्ष छा नश्चन करतन, खीइई डेइन्ट्राइ म्राट्स একজন। ত্রীহর্ষ যে বঙ্গায় কবি ভাগা উ:হার পুত্রক পাঠে বিলক্ষণ তাবগ্র १८ग्रायग[्]

^{*} চতুর্দ্ধশ সর্বো কবিত আছে যে দমস্তী নগকে পাতিতে বরণ করিলে পুর-জুন্দরীরা উত্তুদ্ধনি করিব

সাধারণতঃ কাব্য ছুই শ্রেণীতে বিভক্ত হুইয়া থাকে। প্রথম, বাহাতে হৃদয়ের ভাবগুলি স্পাষ্টরূপে বিবৃত হয়, ঘাত প্রতিঘাত প্রদর্শন যাহার উদ্দেশ্য। এই শ্রেণীব কাবাই উৎকৃষ্ট কাব্য। দ্বিতীয় শ্রেণীর কাব্যে সভাববর্ণনামঃর থাকে, ইহাতে কোন একটি নস্ত লইয়া ভাহার প্রকৃতি, কার্যা ও ভাহা হইতে নিকপ উপদেশ পাওয়া যার, এই সম্দার বর্ণিত হয়। ইহা সধ্যম শ্রেণীর
কাবা। অনেকে বলেন, নৈষ্ধকে এই
দিতীয় শ্রেণীভুক্ত করা যাইতে পাকে।
তাঁহাদের মতে নৈষ্ধ মধ্যমশ্রেণীর একখানি উৎকৃষ্ট কাব্য। ইহার বর্ণনাগুলি
অতি চমৎকাব: এরূপ নৃতন নৃতন
ভাব আর কুরাপি পাওয়া যার না।

'' সৈবে ননভোঃ প্ৰহালবাণাষ্ঠভিকলুলু র নিরাচচেতাৰ ।

বঙ্গদেশ ভিন্ন অনা কুজাপি বিবাহে উলু দিবাব প্রথা নাই। পশ্চিনাঞ্চলে উলুর পরিবর্ত্তে স্থীলোক যে মঙ্গল গান কবিষা থাকে ভাষাকে সংস্কৃতভাষার ধ্বল করে। পশ্চিমবাদী নৈবধেব টাকাকাব নারায়ন লিখিয়াছেন।—" বিবাহাছাৎসবে স্থীণাং ধললাদিমঙ্গলগীভিবিশেষা গৌড়দেশে উলুলুরিকাচান্তে।" নৈমধের অন্যানা ত্বন চইতেও প্রমান পাওয়া যায় যে ইহার লেথক বঙ্গদেশবাদী ছিলেন। এই বিষয়ে বঙ্গদর্শনে একটি প্রস্তাব বাহির হয় ভাষাদেশিলেই পাঠক জানিতে পারিবেন যে জীহর্ন বঙ্গনাদী বটেন।

শ্রীহর্ষের বৃদ্ধিব্যক একটি গল প্রচলিত আছে। তাঁচাকে অসাধারণ ধীশক্তিসম্পর দেশিয়া তদীয় সাতৃল সাহিতদেপ্রকার ময়ট তাঁহার অতি বুদ্ধি কিছু কমাইবার জনা ঠ'হাকে ম'সকলাই খাইতে উপদেশ দিলেন। ভাগিনেয় মাতুলের প্ৰামশে এই উংকট বাধি হঠতে নিষ্তি পাইবার ধনা নিয়ত মাধকলাই পাইতে লাগিলেন। কিড় দিন পাবে একদিন হিতৈমী মামা আমিয়। দেখিলেন ভাগনে নিবিটমনে মাকেলাই চিলাইতেছেন। দেখিয়া বলিলেন "বাপু ছে কি ই ১০০ জালিবের বলিলেন 'ভালেব শেষ্টীনাশাসায় সন্ধান্ত্রিশিং।' সামা বলিবেন ''টা চলা'ছে, আব তেখায় মাধকং টি ভাজন করিতে হইবে না।'' ভাগিনের তথ্য বুলি কুম্বা গিয়াইল, মামার ক্পাটা সমজে উঠ্তে পারিলেন না। মামা তুগন বুঝুটকা পিতেন, শংস্ট শোমর পূর্বের মত বুদ্ধির প্রথরতা থাকি ৬ ভাহ। হটলে ভূমি 'ষহ নিশং না বলিয়া 'ফ শ্ধদঃ' বলিয়া অনুপ্রাস করিতে পাৰিছে।" ভাগিনে কিছু নিজুদ্ধি ইইয়া লা গেলে বোধ করে মানাকে মাষ্কলাই থাইতে বলিতেন। সামা ভাগিনে সম্বন্ধে আর একটি গ্রা আছে। শ্রীহ্র্য নৈষ্ধ রতম। করিয়া কেমন হটয়াতে দেখিবার জন্ম মামাকে দিলেন। সামা আদান্ত পাঠ ক্রিয়া বলিলেন 'দেখ বাপু, যদ বইখানি কিছু জাগে লিখিতে তাহা চইলে আমার ৰিশেষ উপকরে হইত।' ভাগ্নে কহিলেন ''কিনে ?'' মামা কহিলেন '' তাহ। क्टेटल क्याभात त्माय পরিচেছদের উদাহরণ খুলিতে হইত না।'' সমালোচনটী মন্দ করা হয় নাই। এই ঘটনাটী পূর্বোক্ত ঘটনার পূর্বেক কি পরে হইয়াছিল তাহা সামরা বিশেষ কাব্যত নহি।

ততে। ধিক স্নোক রচনা করিয়া গিয়া-ভেন, এবং সেগুলি যে প্রক্ষিপ্ত নতে ভাষারপ্ত বিশিষ্ট প্রামান আছে। যে বাক্তি কবি বা যিনি কাবা ব্রোন, ভাষাদিগকে ব্রাটবার আবশাক নাই যে ইহা কবিত্পক্তি অভাবের অন্যতম প্রামাণ।

নৈষধকার হ্য এত বড় প্রকাপ্ত গ্রন্থ লিখিলেন, ভাহাতে কি ভাহার কোন खन्हे दिश्वित शाख्या यात्र ना ? मकन्हे কি অগার ? অগতে কোন বস্তুই অমি-শ্রিত নহে, কেবল দোষ বা क्ष्म (काशांख (मणा यात्र ना: देनयभ-কারের পক্ষেই কি কেবল এই কণাট বিপরীত হইল ? তাহা নহে। অবশাই কোন না কোন গুণ আছে। আমরা এতক্ষণ কেবল নিলা করি माहि, এकर्ष कि कि: श्राभः ना कहिया मधुरत्व ममाभरत्य कतिव। ষে নিন্দা করিয়াছি বলিয়া প্রাশংসা করিব তাহা নহে; নৈষ্ধকার যভটুকু প্রাশংসা পাইবার যোগা, তত্টুকু তাঁ-নৈষ্ণের ভাষা অতি शास्क मिव। हमरकात, मर्भागत नाम मञ्जू (काथां 9 क के प्रमुला नाहे। शांठ कदिला है মনে হর ইহার ভিতর কত ভাবই আছে। ভাষা কোন স্থানেই গ্রামাতা (मार्य मृषिठ इस नार्ड, मर्द्वाई डेतड ও मध्य। (मार्यत मर्था किছू कठिन, সহজে অর্থবাধ হয় না। আর যে পরিশ্রমে অর্থটুকু বাহির করিতে হয়, ভাষার সম্পূর্ণ পুরস্কার হয় না, কারণ পুরেই বলা গিয়াছে ভাব অতি অল আছে। দেলি প্রভৃতির লেখাও অবি-শদ, কিছু ভাহাতে বস্তু গাকাতে পরি-खरमत माफना इस, देनबर्ग (महेकू इस ना এहे उकार।

নলকর্ত্ত ধৃত হংস জীবনে নিরাপ ছটরা যে বিলাপ করিয়াছে ভাহা পাঠ করিলে বোধ হয় নৈমপকার চেট্টা ক-রিলে বর্ত্তমান এন্থ ছটতে উৎকৃষ্ট গ্রন্থ লিখিতে পারিতেন। বাস্তবিক তাহাতে কবিত্বের ক্রিতি আছে।

স্থাদ্ সর্গের মধাভাগে চার্বাক মত বর্বিত হইয়াছে। এই অংশটী সমস্ত পুত্তকের মধ্যে উৎকৃষ্ট অংশ। শ্রীহর্ষের ক্ষমতা প্রকাশের প্রকৃত বিষয় এবং ইহাতে তিনি সমাকু কুতকার্যা হই-য়াছেন। তিনি চার্কাক্দিগের মত এত বিশদরপে ও এরপ গাঢ়যুক্তির স্বাহা সমর্থন করিয়াছেন যে তাহা পণ্ডন করা অতি তুক্র। দেবতারা যেরূপে তাহা খণ্ডন করিতে চেষ্টা করিয়াছেন ভাহা পাঠ করিলে জানা যাইবে যে তাহা অপ্রমাণ করা অসাধা। এই মত পঠে করিলে আরও বুঝা যায় যে তদানীস্তন मगाक ७क हेक्तियरमनारक शतम स्रभ মহুষাজীবনের সার উদ্দেশ্য মনে করিত। Epicurean मंड (यक्तभ क्राय शैनम्भाय উপস্থিত হইয়াছিল, চাৰ্কাক্ মতও এই সময়ে সেইরূপ শোচনীয় দশা প্রাপ্ত र्टेशाङ्गि। এই कात्रान देनवभन्ति নলরাজা একজন বিলাসী ইক্সিয়াশক वाक्तिव श्राय इदेयारहन। উৎकृष्टे छम-বের গুণ তাঁহার কার্য্যে প্রকাশ পার নাই।

শ্রীহর্ণের আর একটা প্রশাসার বিষয়
এই যে তিনি অসুকরণ করেন নাই।
ভাণেই ছউক আর মন্দাই হউক সকল
ভাবই নিজের, অস্তের তাহাতে কোন
শ্বর নাই। করানার বলে নুতন ভাব
সৃষ্টি করিতে গিয়া, অস্বাভাবিক করিরা
ফোলিয়াছেন। মাঘু প্রভৃতির নাটা
ভাহার চুরি নাট।

रक्षम्भन।

সপ্তম বৎসর।

৭৪ সংখ্যা।

वरकाभयन।

চতুর্থ পরিচেছদ। বাদালার বায়।

বাঙ্গালিরা বে পঞ্চাবী, উত্তরপশ্চিমাকলবাসী ও অযোধ্যাবাসীদিগের অপেক্ষা তুর্বল এ কথা বোধ করি সকলেই
খীকার করিবেন। তাহাদের দৌর্বল্যের
কারণ কি ?

কেহ কেছ বলেন থে, ভাহাদের আহারের দোষে ভাহাদের পৃষ্টিবর্জন হয় না। কেছ কেছ বালাবিবাহ প্রভৃতি সামাজিক আচারের দোষ দিয়া থাকেন। তাঁহাদের সকলেব কথা যে আনকণ্র সক্ষত ইহা আসর। স্বীকার করি। কিছা তাঁহাদের এই ভ্রম যে, তাঁহারা অপ্রধান কারণকে প্রধান কারণ বলেন। বালা-লার বায়ুই বালালিদের দৌর্মল্যের প্রধান কারণ। বেহারের গো, অশ্ব, মেয় ও ছাগ যাহা ভক্ষণ করে, বালালার গবাদি তাহাই ভক্ষণ করে; তাহাদের মধ্যে বালাবিবাহের নিয়ম মাই; তবে কেন বালালার গবাদি বেহারের গবাদি জ-

[&]quot; বালালার ঘাসে জলতাগ অধিক আছে স্বীকার করিতে হইবে; কিন্তু তাহাও বায়র সোষে। বালালার প্রায় সমস্ত পশুই ছবল, কিন্তু শার্ক্ ল, গণ্ডার ও বন্য-মহিব অভিশান বলবান্। ইহার কারণ কি বলা অকটিন। অক্সরবনের অরজবায়তে কি ব্যাপ্তের কোন জনিই হয় না ? ভাক্তার কোরার বলেন বে, অক্সরবনের ব্যাপ্তের বল আক্রিকার সিংহের বল অপেকা। নান নহে; বয়ং কিঞিৎ অধিক হইবে; অভরাং ব্যাপ্তকে পশুরাল বলা ঘাইতে পারে। ১৮৫৭ সনে ইংলণ্ডে একটা পিঞ্জরবন্ধ সিংহের স্থিত একটা ব্যাপ্তের মৃত্ধ হয়, বিংহ হত হয়। (Darwin's Descent of man & Gemual selection, 2nd edition, P. 521.) রুই একটি দুইাত ক্রমন্ত্র বিশ্ব স্থান বলিয়া সিন্তু করা বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর আর্থন বলিয়া সিন্তু করা বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর আর্থন বলিয়া সিন্তু করা বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর আর্থন বলিয়া সিন্তু করা বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানির বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানির বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানির বাজিকাতর স্থানির বাজিকাতর স্থানের বাজিকাতর স্থানির স্থানির বাজিকাতর স্থানির স

বালালা গ্রীয়প্রধানকেশন গ্রীয়প্রধান
কেশবাসের শুভ ফল এই বে শুর্নোর
প্রসাদে আহারের জ্ব্যাদি অনারাসলক,
জার বর্জেই শরীররকা হইতে পারে,শীতনিবারণ জন্য মৃদলারাদির প্ররোজন
নাই বলিলেই হর; অশুভফল এই বে
সর্প ও খাপদক্ষর ভয় অধিক, এবং
ওলাউঠা ও জ্বরের অধিক প্রাত্তাব।
ভবে শীতপ্রধানদেশ অপেকা কাশাদি
ক্কুসের রোগ অনেক কম।

অনেকানেক ইউরোপীয় পশুত বাযুর উষ্ণতা মানবপ্রকৃতির তেলখিতাহ্রাসের যেমন কারণ বলেন, বস্ততঃ
তাহা তেমন প্রবল কারণ কি না সক্ষেত্ব। আরবস্থানের বারু যেমন উষ্ণ,
এমন উষ্ণবায়ু পার কোন দেশেই নাই,
অর্থচ আরবদের নায় তেলখী জাতি
বিরল। উইলিয়ম ওরেই গার্থ ও সামুরেল্ মস্মান্, বাহারা অস্ট্রেলিয়ার খর্ণ
খনির বিষয়ে উৎকৃই গ্রন্থ লিখিয়াছেন,
ভাহারা বলেন যে ঐ দেশে অদ্যাপি
ওলাউঠারোগ প্রবেশ করিতে শারে

নাই। অট্রেলিয়ার বায় অতিশয় স্বাস্থা-কর বলিয়া প্রসিদ্ধ; কিন্তু গ্রীমে তথা-কার উপক্লেও তাপাংশ একপতের অধিক হয়।

তাপের সহিত অধিকপরিমাণে জণীর পরমাণুর সংযোগ হইলে বেমন অনিষ্ট হয়, কেবল তাপে তেমন হয় না।

বালানার বাষু উত্তপ্ত বলিরা ছট নছে, .
প্রচুর বাশপূর্ণ বলিরা ছট। এরূপ বায় বৃক্ষাদির পক্ষে ভাল; কিন্ত জীবজ্বর পক্ষে ভাল নছে।

বাঙ্গালার ভূমি সাগরপৃষ্ঠ হইতে অত্যর উরত। নীচদেশ গ্রীয়প্রধান হইলে আর তাহার রক্ষা মাই। তথাকার বায় নিশ্চরই বাঙ্গাই এবং অবাস্থ্যকর হ-ইবে। হলগু শীতপ্রধানদেশ; এবং ওলন্দালগণ ভূমি শুক্ক করিতে অভিশর যত্রশীল; তথাপি দেশ নীচ বলিয়া, তথাকার বায়ু বিলক্ষণ বাঙ্গাময়, এবং তথায় পালাজর, কাশ ও বাতের বিলক্ষণ প্রোহর্জাব। বাঙ্গালার প্রায় সর্ক্বি

ছিল। তবে বিজ্ঞানবিৎ পণ্ডিতদের অনুসন্ধান করা কর্ত্তব্য যে, কিরূপে বাঙ্গালার প্রায় সকল জীব ভূর্মল, কেবল ব্যাদ্র, গণ্ডার ও বন্যমন্থি প্রবল।

† ভারবদের দিখিলয়ের কথা সকলেই কানেন; তবে তাহাদের অদেশরক্ষা বেমন প্রশংসনীয়, দিখিলয় তেমন প্রশংসনীয় নহে। ইংলও, ফাজ ও অর্থানি যে তিনদেশের দর্পে একলে পৃথিবী কম্পিতা, এই তিনদেশই শক্রেনাকর্ত্ক প্রাক্তাে ভিত্ত হইরাছিল; আরবস্থানের ভাগো তাহা ঘটে নাই—Arabia has been celebrated from time immemorial as the seat of in dependence and pastoral simplicity, and it is perhaps the only country in the world which until it was lately overrun by the troops Mahomed Ali was never profaned by foreign conquest. Account of Arabia by David Buchanan & William Platt.

লেখানে অনেক বিল, যেখানকার নদীর ভোত বন্ধ হইরা গিয়াছে, ও বেথানকার অলপ্রণালী ভাল নহে, সেখানে কিছু অধিক; আর যেখানকার ভূমি কল্পর্মনর বা বালুকামর ও শুদ্ধ ও যেখানকার জল-প্রণালী ভাল, সেখানে কিছু কম।

ভূতত্ববেজারা বলিরাছেন যে, যদিও
সাধারণতঃ বরুণের কার্য্যে ভূমির জব~
নতি এবং জায়ির কার্য্যে ভূমির উরতি
হর,তথাপি বেখানে জায়ির কার্য্য প্রতীয়মান হয় না, সেখানেও ভূমির উরতি
দেখা গিয়াছে। বর্থনিয়া উপসাগরের
তট ক্রমে ক্রমে উচ্চ হইয়াছে, তাহা
পবন বা জায়ির কার্যা নহে। যদি ঈশরপ্রসাদাৎ ঐ কারণে বঙ্গভূমি সমুজপৃষ্ঠ
হইতে জাধিকতর উরত হয়, তবেই
দেশের সহামশ্বল হইবে। সহযোৱ

আয়ালে অধিকদ্র ক্লতক্ষ্যি হইবার
সন্তাবনা নাই। তবে ক্লানিঃস্বংগর
উৎকৃত্র উপার অবলখন করিলে, বেখানে
লোতস্থতী নদী আছে, ওথাকার বিশের
ক্লা, খাল কাটিয়া নদীতে আনিতে
পারিলে, এবং অন্য উপায়ে ভূমির
আর্ত্রভার ক্লাস করিতে পারিলে ক্তক
দ্র কার্য্য হয়।

ত্গলী ভানকুনীর জলা হইতে থাল
কাটয়া গবর্ণমেণ্ট যেমন প্রজাবর্গের
উপকার করিয়াছেন, উপ্তর বাঙ্গালার
রেলওয়ে হারা তত উপকার হইতেছে
কি না সন্দেহ। যাত্বর্গের স্থবিধা ও
বাণিজ্যের স্থবিধা মঙ্গলময় বস্ত বটে;
কিন্তু স্বাস্থ্যের নিকটে তাহা কিছুই
নহে।

জনশঃ৷
জ্রীতা, প্রে, চা

ठर्क প्रभानी।

(THE SUBJECTIVE AND THE OBJECTIVE METHOD.)

দার্শনিক প্রবন্ধ দেখিলেই বঙ্গীর পাঠক ভাহাতে উপেক্ষা করিয়া থাকেন।
তিনি বলেন দর্শন টেকির কচ্কচি,
দর্শনপাঠে কিছুমাত্র লাভ নাই ইত্যাদি।
যদি দেখিতাম, যে বঙ্গীর পাঠক দর্শনে
উপেক্ষা করিয়া বিজ্ঞান, অর্থপাত্র ইত্যাদিতে মনঃসংযোগ করিতেছেন, ভাহা
ইইলে ভাহার এ উপেক্ষা সহু করিতে

পারিতাম। কিন্ত যিনি রামকান্তের
বিবাহ, শ্যামকান্তের আদ্ধ প্রভৃতি অবার
প্রেবন্ধ পড়িরা সমস্ত সময়বায় করেন,
তাঁহার মূথে দর্শনের অসারতাসম্বদ্ধে
কোন কথা সহ্য করিতে পারি না।
ফলতঃ বদীর পাঠক কিন্তুনা দর্শনে
উপেক্ষা করেন, তাহা আময়া জানি।
ভাঁহার অভিনিবেশ অভি অরা, তাহার

শরীর ছর্কাণ, মনও ছর্কাণ। যে সকল প্রবন্ধ কিঞ্চিন্নাত্র মন: সংযোগের প্রবাদিন কর, যে সকল প্রবন্ধ অর্জনিজিত অর্জনাত্রত অবস্থার পাঠ করিতে পারা যায় না, তিনি দে সমস্ত পড়িতে নিতাস্তই নারাজ। স্থতরাং দর্শন কেন, বিজ্ঞান, অর্থশান্ত্র, গণিত প্রভৃতি যাহা কিছু চিস্তাবন্ধার পরিচায়ক দে সমস্তই তাঁহার চক্ষু:শূল।

প্রাহক বেখানে যে প্রকারের, বিক্রের জবাও সেখানে সেই প্রকারের হইরা থাকে। ইংরেজপটিতে গোল্ড মটন ইত্যাদি বিজ্রর হয়, বাঙ্গালিগটিতে বি-জয় হয়, কচু, কলা, শাক,ম্লা ইত্যাদি। যে দেশে পাঠক মেপ্রকারের, লেখকও সেই প্রকারের হইয়! থাকেন। এই জন্যই বাঙ্গালালেথকদের মধ্যে অসার জথচ মনোরঞ্জন প্রবন্ধ অধিকাংশ দে-থিতে পাওয়া য়য়।

সারগর্ভ তত্ত্বসমূহকে মনোহর আনকারে উপস্থাপিত করিতে পারেন এরপ প্রতিভাশানী লেগকের সংখ্যা ক্ষের। স্থৃতরাং তব্শিক্ষা করিতে হইলে কি-ক্ষিৎ কইস্বীকার প্রয়োজনীয়। বাঙ্গা-লিরা যে আজিও এ কই স্বীকার করিতে প্রস্তুত হন নাই, ইহা আমার বলিতে ইচ্ছা হয় না। ইচ্ছা হয় না বলিয়াই বঙ্গীয় পাঠকের উপর নিম্নলিখিত প্রস্তাব পাঠকপ কন্তবিধান করিছে সাহসী হইলাম।

তথ্নির্বয়ের জনা প্রধানত: চ্ইটি
প্রণালী করিত হইয়াছে। একটির নাম
দার্শনিক বা আফুমানিক প্রণালী, তানাটির নাম বৈজ্ঞানিক বা প্রত্যক্ষপ্রণালী।
এই চ্ইটী প্রণালী কি, এই চ্ইটীর
পরক্ষারের সহিত কি সম্বন্ধ, ইহাদের
মধ্যে কোনটী ঠিক্, কোনটী ভূল প্রভৃতি
প্রশ্নগুলির যথাসাধ্য মীমাংসা করা এই
প্রস্তাবের উদ্দেশ্য। প্রথমে আমরা
চ্ইটি দৃষ্টান্ত দারা এই প্রণালীছয়ের অর্থ
ক্ষাঠ করিয়। বুঝাইতে চেষ্টা করিব।

মনে কর্মন একদিন চন্দ্রমণ্ডল হইতে ছইটি পুরুষ এই পৃথিবীতে অবতীর্থ হইলেন। তাঁহারা নানা বস্তু দেখিতে দেখিতে (পৃথিবীর সকল বস্তুই তাঁহাদের নিকট ন্তন) এক ঘড়িওয়ালার দোকানে উপন্তিত হইলেন। ঘড়ি তাঁহাদের নিকট এক ন্তন দ্রবা। যদি এই ছই পুরুষের মধ্যে একজন দার্শনিক ও আনো বৈজ্ঞানিকপ্রণালী অবলম্বন করেম তাহা হইলে তাঁহারা কিরূপ তর্ক করিবিন, নিয়ে তাহা দর্শিত হইতেছে।

Subjective method—আমুমানিক প্রণাণী
or
Metaphysical method—দার্শনিক প্রণাণী
Objective method—প্রত্যক্ষ প্রপাণী
or
Scientific method—বৈক্ষানিক প্রণাণী

দার্শনিকপ্রণালীর প্রযোক্তা (সংকেপ্রে कामता हैशंदक व विनन्ना छेदत्थं कितिव) वित्वन चिष्ठि , धक्शकांत्र कीव। उहात इरों कांगे डाहात निकं इरे-থানি ছাত বলিয়া প্রতীয়সান হইবে। ঘড়ির অভাস্তরস্থ যন্ত্রটি তিনি উহার ज एकां विशासित कतित्व। एडि-হইতে যে অনবরত টুকটাক্ শব্দ নিঃস্ত হয় তাহাকে তিনি উহার খাদপ্রকেপের भक बिला निर्फिण कतिर्दन। मरशा मार्था (य चिक्त है: है: मक इस मिडे তিনি ইহার জন্দনধ্বনি বলিয়া মনে **এरेक्रा**ल. शीव विनात कतिर्दन। चार्गात्मत्र मत्न (य नकन जात्वत जेमग्र হয়, ঘড়িতে ভাহাদের কতকগুলির সাদৃশ্য দেখিয়া তিনি উহাকে এক জীব বলিয়া অভিহিত করিবেন।

কিন্ত যিনি বৈজ্ঞানিকপ্রণালীর প্র-যোক্তা (আময়া ইহাকে সংক্ষেপে ব বলিয়া ডাকিব,) তিনি বলিবেন ''হাঁ ইহাজীব বলিয়াই অমুমান হইতেছে। সাৰ্ধানে খুলিয়া ইহার অক প্রতাল, কল, দড়িইত্যাদি সমন্ত তর তর করিয়া দেখিবেন। এএই সমন্ত দেখিয়া শুনিয়া তাহার বোধ হইবে যে ঘড়ি জীব নছে। উহা এক প্রকার কলমাত্র।

দ এবং ব এই উভরের মধ্যে কাহার
মীমাংসা নির্ভূল ? আসরা সকলেই জানি
ছড়ি একপ্রকার কল। ূু স্থতরাং] এতকে
পূর্ব্বোক্ত প্রশ্নের উত্তর দেওয়া 'কঠিন
নহে। কিন্তু অনেক স্থলে এইরূপ
মীমাংসা করা অভীব ত্রহু চইয়া উঠে।
দৃষ্টান্তস্বরূপ আমরানিয়ে একটা উদাহরণ
বিবৃত করিভেছি।

প্রায় ৬।৭ বংসর পূর্ব্বে কলিকাতার
প্রাক্টে লইরা বড় ধুমধাম হইরাছিল।
অনেকে বিশ্বাস করিতেন, এবং এথনও
করেন, যে প্লাঞ্চেট ভূতের কাও। প্লাক্লেটে ভূত ভবিষ্যৎ জানা যায়। কাহার
প্রপিতামহের নাম কি, কাহার অভিবৃদ্ধ
প্রপিতামহ কোন সালে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন প্রভৃতি প্রশ্ন প্লাঞ্চেকে জিজ্ঞাসা

[†] একজন চাসা ছড়ির মধ্যে একপ্রকার কীটের অবস্থিতি আশহা করিছা ঘড়িট মুচড়াইরা ভালিয়া ফেলিয়াছিল। ভাছাতেও কীটের শব্দ থামিল না দৈথিয়া বিরক্ত হুইয়া পুলাছাতে উহা চুরমার করিয়া কেলে।

े शांतिरण्डः ; चलंताः शांको ज्ञ विद्या बहरमहे कर बिछ हरेछ।

किन्द्र गं:हाजा देवळानिकव्यंगांनी व्यव-শম্ম করিয়া ভর্ক করিতেন, তাহার: যাহাই বলুন না কেন, প্লাঞ্চের অঙ্গ প্রভাজ বিশেষরূপে পর্যাবেক্ষণ না ক-রিয়া তাঁহারা কোনক্রপ মীমাংসা করি-তেন না। তাঁছারা দেখিতেন, বে প্লাঞ্চেট এইরূপে নির্দ্মিত যে ইহার উপর অল্প চাপ পড়িলেই ইহার চাকা খুরিতে थाटक: उथन वाहाता शास्त्रहे सतित्रा शांदकन, डाँशामित्र म्रानत छात ममछ ভাঁছাদের অজ্ঞাতে উহা হইতে বাহির ছইরা পাকে। ব্রাক্ষ প্লাঞ্চেট ধরিলে ব্রাহ্মধর্মাই সর্কোৎকৃষ্ট ধর্ম বলিয়া লেখা বাহির হয়। আবার হিন্তে প্লাঞ্টে श्रतित हिन्तूशर्या गर्वा १ कुछ भर्या वित्रा লেখা বাহির হয়। আবার নিরক্ষর वाकि शास्त्रिष्ठे धतिरत कान वाकारतत ৰেখাই বাহির হয় না। এই সকল मिश्रा देवळानिक खनानीत खरगळात्रा बीमाश्मा करतन, य शास्त्र होत निर्मान **कोभन चार्**छ वर्छ, किन्न हेश ज्ञ नेरह। अञ्चल म ७ व देशामत माथा काशत মীমাংসা নিভুল ঠিক করিয়া বলা যায় चाष्ट्रकः ध वियद्य माश्राद्रत्वत्र क्षेत्रम्छ। नारे। चात्नक कुछविमा वाकि আজিও প্রেডতবে বিশ্বাস করিয়া থা-

ু পে বাহা হউক, একণে বোধ ছবু वृतिएक भारा याहेरव (व, देवळानिक अ

কেন।

मार्थनिक खगांभी एक खरका कि। मार्थ-নিক প্রণালীতে কোন এক,বন্ধ দেখিয়া ভবিষয়ে অসুমান করিয়া লওয়া হয়, যাহাতে সেই অনুমানটা সর্বাদস্কর इत, ভविষয়ে চেষ্টা করা হয়, কিন্ত অমুমানটা অমুমের বস্তুর সহিত মিলিল কি না ভিছিবয়ে কোন অনুসন্ধান করা इत्र ना। किन्तु देवळानिक व्यनानीटड বস্তু দেখিয়া যে অনুমানটি করা হয়, সেইটর সহিত বস্তুটা সম্পূর্ণরূপে মিলিল কি না, তাহা দেখা নিতান্ত প্রয়োলনীয়। যদি অহুমানটি বস্তুর সহিত সম্পূর্ণরূপে না মিলে, তাহা হইলে ঐ অমুমানটি ছাডিয়া দিয়া অন্য একটি অনুমান প্রস্তুত করা হয়। এইরূপে যতক্ষণ না অহু-মানটি বস্তর সহিত সম্পূর্ণরূপে মিলে ততকণ কোনরপ সিদ্ধান্তই স্থিরীক্ষত ट्य ना ।

कान এक वस पिथा छिबराय অমুসান করা মনুষোর শ্বভাবসিদ্ধ ধর্ম। मार्गनिक अवानी धरे असूमानि भर्गा अ যাইয়াই ক্ষান্ত হয়েন; তিনি ঐ অমু-মানের অঙ্গপারিপাটা সম্পাদন করেন। তিনি কখনই অমুমানের বাছিরে যান ना। किंद्र रेनळानिकथाना अवूगान-টীকে বস্তুর সহিত বিশেষরূপে মিলাইয়। দেখেন। গণিতের আ্কারে প্রকাশ क्रिल, धरे थानीक क्रेंग्डिनिय-লিখিতরূপে সজ্জিত করা যাইতে পারে।

मार्गिक्थेश्यो - वस्त्र मर्मन + अश्-ग्न

देवळामिक थानानी - दस्त मर्मन + प्यश्-মান + বস্তর, সহিত অনুমান মিলিল কি না তৰিবয়ক পরীকা।

পুথিবীর আদিকাল হইতে মহুষ্য অফুয়ানের প্রতি নির্ভর করিয়া আদি-তেছে। কি অসভা অবস্থায়, কি সভা च्यवश्राय मकन ममरबरे मञ्या मकन ্কার্যোই অনুমানের আশ্রর লইয়া আসি-তেছে। যখন মুখ্য অতি অসভা ছিল তখন পৃথিবীতে কর্মক্ষমতার অধিকতর প্রয়োজন ছিল। চতুর্দিকে প্রকাত-শরীর, বিপ্লতেজ্ঞ , সিংহ, ব্যাছ প্র-ভৃতি অন্তর সহিত অমুক্ষণ যুদ্ধ করিতে হইতেছে। পৃথিবীর অভ্যপ্তরে, পর্বাত-গুহায়, বৃক্ষকোটরে আশ্রয় খুঁজিয়া गरेरा इरेरल इ। श्राविमिन श्रावि-দিনে আহারের সমস্ত সামগ্রী আহরণ করিতে হইতেছে। যথন জীবিতচেটা (struggle for existence) এত প্রবন, তথন অমুমান অতি অপরিপক্রপ হ-रेज। दमच जारक दकन, दमरचत्र मरधा এক হাতী আছে সেই হুকার করিতেছে। क्ल क्रिं टकन, वरन अक वनामि আছেন, ভিনি সমস্ত কলিকাগুলিকে প্রস্কৃটিত করিরা দেন। মহুব্যের বিপদ হয় কেন, এক দেবতা আছেন, তিনি धरे गकन विशरण मञ्चारक कानिया থাকেন; এইরূপে সকল প্রশ্নের সমস্যা এক এক কথার পাওয়া যাইত। যে স্কল প্রশের অমুমান খাড়া করিতে **पक् पक् महा**निख्डित नगढ बीरन

वाष्ट्रिक इहेन्री गाँहे (छ एक, जन्म जन कथात्र (म ममछ अत्मत मीमाःमा इहेत्रा যাইত। অমুক জিনিস কেন ওরপ हरेंग ; এक्कन (एवड) डेश उज्जा क-त्रिया मियारक्न ।

বথস মহুষোর জীবিতচেষ্টা কিছু ক-भिन, यथन वनाङ्ख नग्छ मञ्दरात्रं বশবর্তী হইল, যখন অসভ্য অবস্থার অনিশ্চিত জীবনের পরিবর্তে মহুবোর জীবন অপেকাত্বত নিশ্চিততর হইল, তখন অমুমানের প্রকৃতিরও পরিবর্ত্ত हहेत। शृद्ध **वक वक कथात्र मकन** প্রশের মীমাংসা হইত। এখনও তাহাই हरेट नागिन ; किंद ज्थन असूगारनत्र সঙ্গে সঙ্গে অলে আল প্রমাণের যোগ (मथा य। हेट नातिन। এই नकन প্রমাণ অনেক সময়ে অতি বিচিত্র প্রশা-লীর হইত। একজন দার্শনিক বলি-लान, मःशाहे ममछ वज्जन वानिकांत्रण, मकल वस्तरे इब এक वा जनभिक मःशांत অন্তর্ত। কেই বলিলেন, অগ্নিই সমস্ত বস্তর, আদি, কেন না অ্যার নিজের দাহিকাশক্তি আছে। এইরূপে বাহার (य हेव्हा इहेड, तम तमहेक्षण धामान शासान कतिक। देशांक धरे कन रहेन, **व्याप्त अकुमारमद्र मरक मरक अमान** खार्वाश व्यावभाकीय विका त्याव हरेट नाशिन।

"অন্কারে ডেলা ফেলার" মত এই স্কল প্রমাণের মধ্যে কোন কোনটা কখনও সভাও হইয়া পড়িত।

ইহাদের মধ্যে অধিকাংশই অসার ও অযৌক্তিক হইত। এইরপে অনেক দিন কাটিয়া গেল; যেমন পথ পরিষ্কার লা থাকিলে, নগরের মধ্যে প্রবেশ করিতে পারা যার না, ঠিকপথে গে-লেও ভাছা ঠিকপথ বলিয়া বোধ হয় না, দেইরূপ ভর্কপ্রণালী অবিদিত থাকাতে ভত্নির্ণয় স্থান্বপরাহত হইয়া পড়িল।

এই সময়ের মধ্যে কত প্রকারের কত মত যে আধিষ্কত হইল তাহা কে বৰ্ণনা করিতে পারে। যেমন বর্ষাকালে প্রাক্ত-ণোপরি একটির পর আর একটি ব্দুদ উचित्र इस, প্রত্যেক বৃদ্ধটি ইহার পূর্ব বুৰুদ অপেকা বৃহৎ ও উজ্জ্বল, কিন্তু मकन छनिरे कित्र कारनत मर्या जन-রাশির সহিত মিশিয়া যায়, সেইরূপ একজন দার্শনিকের পর অন্য দার্শনিক चाविर्च उरहे जागितन। ব্ৰাউন সমস্ত অগৎকে স্বীয় মতে আন-য়ন করিবার জন্য পূর্ব পূর্বে সমস্ত দর্শনের ভ্রম প্রতিপর করিলেন। কালি हां गिन्छेन आतिया विनातन, बांछेन याहा কিছু বলিয়াছেন সমস্তই ভ্রাপ্ত। পর্য মিল আসিয়া প্রতিপল্ল করিলেন, হামি-न्देरनंत्र ममञ्ज कथारे जास । এरेक्स्प वरत्रदत्र वरत्रद्व यादत्र यादत्र न्छन न्डन দর্শন বাহির হইতে লাগিল। জ্যাকালে मकल पर्ने हे मर्का खर्क विनशा (वाध ্ছইত। । কৈন্তু কিছুদিন পরেই আর এক জন দার্শনিক আদিয়া প্রমাণ ক্রিয়া দিতেন, যে পুর্বের দর্শন সম্পূর্ণ জমমূলক। স্কুতরাং সহজেই লোকের মনে
বিশ্বাস হইত যে দর্শন অপ্রয়োজনীয়ু।
যাহাতে কোন বিষয়েরই মীমাংসা হয়
না, তাহাতে লোকে কেন আদর করিবে?

মহুষা যতই সভাতার সোপানে আ-রাঢ় হইতে লাগিল, ততই তাহাদের চিম্বাঞান্দী পরিবর্তিত ও পরিশুদ্ধ হ-ইতে नागिन। তখন আবি যে সে প্রমাণ মহযোর গ্রাহ্ত হুইত না। পুর্বে প্রমাণ প্রয়োগ করিতে পারিলেই তাহা অতি আদরের সহিত গৃহীত হইত। किन्द अकरन क्षेत्रारात्र साम धन विरव-চিত হইতে লাগিল। কোন প্রমাণ্ট ভাল, কেন ভাল, অন্য অন্য প্রমাণের দোষ কি প্রভৃতি প্রশ্ন উত্থিত হইতে লাগিল। পরে যখন মুদ্রাযন্ত্র আবিক্ত হটল, যথন বিদ্যাশিক্ষা শুদ্ধ জনকতক লোকের মধ্যে শৃঙ্গলিত হইয়া রহিল ना, यथन व्याभागत माधातरणहे विमात রসাস্বাদ ও আলোচনা করিবার অধিকার প্রাপ্ত হইল, তখন প্রামাণ প্রয়োগের প্রণালীও উন্নততর হইতে লাগিল। এই সগয়ে ইংলতে বেকন ও ফুান্সে ডেকার্ট (Des Cartes) জন্মগ্রহণ করি-(मन।

ডেকার্ট প্রমাণের জাবশ্যকতা বুঝি-লেন। তাঁহার নিকটে সকল বস্তরই প্রমাণের আবশাকতা আছে ইহা প্রতীর-মান হইল। জগদীশার আছেন, মন াছে, আমি আছি প্রভৃতি যে সকল
াশ্লের তুমি আমি কোনই প্রমাণ দেথিতে পাই না, ডেকার্ট সেইগুলি নিয়মমত, রেপাগণিতের প্রতিজ্ঞার নাায়
প্রমাণ করিয়া দিলেন। ডেকার্টেব
অ্বাদীশ্বরের অস্তির্সম্বন্ধে প্রমাণটি নিমে
প্রদর্শিত হইতেছে।

। जगनीयत्र चार्छन।

কারণ—অগদীখনসম্বন্ধে যে ভাবটি আমাদের মনে আছে, সেইটি অগদীখনই তথায় সেই প্রকারে রাণিয়াছেন।

যদি বৃল-এ ভাবটি আমি নিজেই আমার মনে রাখিয়াছি, তাহা হইলে ইছো করিয়া উহা বিনষ্ট করিতে পারি নাকেন? যে ভাবটি আমি নিজে প্রস্তুত করিতে পারি সেই ভাবটি আমি নিজেই বিনষ্ট করিতে পারি।

স্তরাং—প্রমাণ হইল যে জগদীশ্বরের তাবটি জগদীশ্বই আমাদের মনে রাথি-রাছেন। কারণ পুর্ব্বে প্রমাণ করা হইল, যে ঐ ভাবটী নিজে প্রস্তুত করি নাই।

সুতরাং—জগদীশ্বর আছেন।

এইরপ প্রমাণ ঠিক হইল কি না আমরা সে বিষয়ের তর্ক করিতেছি না।
আমরা শুদ্ধ দেখাইছেছি যে, ডেকার্ট
প্রমাণের প্রয়োজনীয়তা অভিস্কলবরূপে
হলম্বন্দ করাইয়াছেন। পূর্ব্বে অগদীশ্বর
আছেন বলিলেই প্র্যাপ্ত হইর। ঘাইত;
কিন্তু এক্ষণে আর তার্হা হইত না। এাণে রেখাগণিতের ন্যান্থ প্রমাণপ্রয়োগ
ইতে আরম্ভ হইল। প্রমাণ প্রযুক্ত

ছইতে আরম্ভ ছইল বটে, কিছু মনই
প্রমাণের সভাসতাভার বিষয়ে একমাত্র
বিচাবকর্তা রহিল। লক্ষত্রসকল বৃত্তাকারে ব্রিয়া থাকে। কেন ॰ আমরা
মনে মনে জানিতে পারি যে বৃত্তই সম্পূর্ণ
ক্ষেত্র। মন আরও বলে, যে জগদীশ্বরের কোন ক্রিয়া অসম্পূর্ণ হইতে পারে
না। স্নতরাং নক্ষত্র বৃত্তাকারে ঘ্রিয়া
থাকে।

এইরপে ডেকার্ট অন্য অন্য অনেক বিষয় প্রমাণ করিলেন। আমি আছি. कारण आगाद मन वत्त त्य याहा किছ চিম্বা করিতে পারে তাহাই আছে: আমি চিন্তা করিতে পারি, স্কুতরাং আমি पाछि। शास्त्र याहाई इडेक ना (कन. বাহুলগতের কথাই হউক বা অন্তর্জগ-তের কথাই হউক সকলম্বলেই মন একমাত্র বিচারকর্তা। যে প্রশ্নই উথিত হউক না কেন. মন তথিষয়ে বিচার করিয়া স্থির করিয়া দিবে। ডেকার্ট এই মত প্রচার করিলেন। তাহার পর ইউরোপের অন্য অন্য দেশে তাঁহার এই মত প্রচলিত হইতে লাগিল। एकार्ड, गानवाक, न्यानाका, नारत्रर-निक् किकी, कााफे, मिलिः, दिशिन প্রভৃতি মহা মহা পণ্ডিতেরা ডেকার্টের এই মত সম্প্রদারণ করিতে লাগিলেন। কিছুদিন পূৰ্বে লগানিতে এই মত অভি প্রবলরূপে প্রচলিত ছিল; এক্ষণে ইহা ফ্রান্সে অত্যম্ভ আনরের সহিত গৃহীত इहेट्डिश वह मर्डि श्रीतिक

আসরা দার্শনিক প্রণালী বলিয়া উলেধ করিয়াতি।

यथन एकार्डे कृष्टि शूर्वमञ अनात करत्रन, जथन (वकत (Bacon) देशनरथ সম্পূর্ণ বিপরীত আর একটি মত প্রচার (वक्न विलामन করিতে লাগিলেন। मानव विচাत कांन कांक्त नग्र। वश्च (स्थिया श्रेष मान मान विहास करिता ৰস্তুর ভত্তনির্ণয় করিতে পারা যায় না। ভত্নির্বের জন্য বস্তুটি বিশেষরূপে পর্যালোচনা করা আবশাক। বস্তুটী चिट्ट पिथिया, छेरात महिल के धाका-(द्रद अना भारती वस मिनारेया उप-নির্ণয় করিতে হইবে। যখন তত্ত্ব নির্ণীত হইয়াছে বলিয়া বোধ ফটবে, তখন আবার উহার সহিত এস্তব সম্বন্ধ মিলা-ইয়া দেখিতে হইবে। তত্ত্বনিণ্যকালে যাহা যাহা স্থির হয়,যদি বস্তুতে ঠিক সেই-শুলি দেখিতে পাওয়া যায়, তবেই তবের উপর নিঃসন্দিগ্ধরূপে বিশ্বাস করিতে श्रीवा याहेरव। मत्न कक्रन, रशन श्रिव ক্রিতে ছইবে যে ম্যালেরিয়ার কারণ कि ? दिकन डेशामन किरवन, त्य, त्य সকল স্থানে ম্যালেরিয়া হই রাছে সেখান-कांत्र क्षथान थामगगरक, कननानी-मयस्त, वृक्तंमग्रहत अवस्थानमयस्त, গৃহনিশ্বাণের কৌশলসম্বন্ধে প্রভৃতি নানা-विध विवत्रम्यकः मविष्णव । अस्मकान করিতে হইবে। এই অমুসন্ধানের পর .. ्त्री विरमंद विरमंद विषद् नकन म्यात्मविवाधानी फिल त्यान दिनामान,

সেই কয়টার সহিত লবের কোনরপ সম্বন্ধ আছে কি না তাহা দেখিতে তাহার পর দেখিতে হইকে हहेद्व । के मकन विषयगाद्य अभागतिया दय नारे ध्यन दकान सम चाह्य कि ना। धरे রূপ নানাবিধ অসুসন্ধানের পর জানিতে পারা ঘাইবে মাালেরিমার প্রকৃত কারণ कि। एकार्षे इटेल इम्र छ निकास, করিয়া দিতেন যে, যে দেশে পাপীর मःशा अधिक, त्मरे दम्दार मातिवा इडेम्रा शांटक। माहित्रमा कशमी चंद्रत क्कारधत नैत्रिहात्रक। य स्मर्म भागी অধিক, সেই দেশেই মালেরিয়া বারা छशतीयत्र भाशीत्मत्र मखिवधान करत्न। বেকন যে প্রণালীটা প্রচলিত করি-(नन, इवम्, नक्, हिडेम्, मिन्, कम्हि, স্পেন্সার প্রভৃতি পণ্ডিতেরা সেই মতের সম্প্রদারণ করিয়া আসিতেছেন। বণা বাছল্য যে, সকল বৈজ্ঞানিক পণ্ডিভেরাই **এहे अनानीय अयूग्यन करदन।**

যতদিন দার্শনিকপ্রণালী প্রচলিত ছিল, ততদিন লোকে আপনার ক্ষমতা বৃঝিতে পারিত না। তাহারা সকল তর্বই আপ-নাদের আয়ত্ত বলিয়া মনে করিত। পৃথিবী আদিতে কি ছিল, শেষেই বা কি হইবে, পরকাল কি প্রকার, পাণ পুণোর বিচার কি প্রকার, পরমেশ্বর কি প্রকার, তাহার শাসনপ্রণালী কির্মিণ প্রভৃতি সকল তত্ত্বই মন্থ্যের হারা নির্গাত হইত। মন্থ্যের ক্রনার গতি অপ্রতি-হত। "উচ্চে, নীচে, গভীরে, অব্বের, গতেঁ, আকাশে" সর্ব্বেই কর্মনার

নকট স্থামা। এবং যেখানে কর্মনা

তথাকার তত্ত্বনির্গ্গ করিতে বসিত।

আমরা পূর্ব্বে বলিয়াছি, যে দার্শনিক
প্রণালীতে মনই একমাত্র বিচারকর্তা।

যেখানে মন বিচারক সেখানে সকল
বিষয়ের মীমাংসা সহজেই হইতে,পারে।

কারণ মনের উপর কাহারও আপীল

নাই। মন যাহা বলিয়া দিলেন, তাহাই শিরোধার্যা করিতে হইবে। মন

যাহা স্থির করিয়া দিলেন তাহাই চূড়ান্ত

নিশন্তি বলিয়া গ্রহণ করিতে হইবে।

কিন্তু যথন বৈজ্ঞানিকপ্রণালী প্রচলিত হইল, তখন মনের আর ওরপ ক্ষমতা রহিল না। মনের সীমাংদা কার্য্যের সহিত, ঘটনার সহিত মিলাইয়া দেখিতে हहेल। ञ्चाः शृद्ध (य नकल विषद মানববুদ্ধির স্থগম্য ছিল বলিয়া বোধ হইত, এক্ষণে তাহাদের অনেকগুলি মানববৃদ্ধির অনগম্য বলিয়া ভিরীকৃত পর্যেশ্র কি, পর্কাল কি; সেখানে পাপপুণোর বিচার কিরূপ প্রভৃতি প্রশ্ন একেবারেই মান্বের অমু-সন্ধেয় বিষয় হইতে দুরীক্বত করা হইল। যাহা কখন কোন ইব্রিয়ের গ্রাহ্ম হর नारे वा हरेट भारत नी, বিষয়সমত্তের উপর মহুবা আপনাকে নিয়োজিত করিতে চাহিল না। এই मकन कांद्रान दिकरानद भव र्ष्ट्रिड विकानहर्छ। वङ्गक्रात्र व्यवनिष्ठ शरेक

লাগিল। অন্য , অন্য শাস্ত্রেরও লিখনপ্রধালী একেবারে পরিবর্ত্তিত হইরা
গেল। দর্শন হইতে অবিজ্ঞের বস্তুসকলের মীমাংসা একেবারে উঠিয়া গেল।
ইতিহাস ভিরপ্রধালীতে লিখিত হইতে
আরম্ভ হইতে লাগিল। অর্থশাল্প, সমাজশাল্প প্রভৃতি করেকটি ন্তন অথচ
হাত্যাবশ্যক শাস্ত্রের স্টে হইল। নীতিস্বন্ধীর প্রশ্নসকল ন্তন প্রকারে আলোচিত হইতে লাগিল। মনুষা অবিজ্ঞের
বস্তু পরিত্যাগ করিরা শুদ্ধ জ্ঞের বস্তুর
প্রতি মনঃসংযোগ করিতে লাগিল।

বাফ্লগতের পদার্থসমূহসম্মে বৈজ্ঞা-ি ' 'লী প্রয়োগ করা সহন্ত। ঘেঁটু-৮:> বর্পদংশনের ঔষধ কি না জানিতে **रहेल आमता जब्दक मर्भमंडे क**तारेगा ভাহাকে ঘেঁটুপাতা দেবন করাইতে পারি। চল্লের সহিত জোয়ার ভাঁটার কোন সম্বন্ধ আছে কি না জানিবার জন্ত পূর্ণিমার দিন.নদী বা সমুদ্রের জলবৃদ্ধির পরিমাণ স্থির করিতে পারি। কিন্তু অন্তর্জগতে কিরূপে বৈজ্ঞানিকপ্রণাদী প্রয়োগ করিতে হয়, ভাহা বুঝিতে পারা অপেকারত কঠিন। অন্তর্জগতের কোন ष्ठेनारे हेलिय्रश्राष्ट्र नट्ट। किक्रार देवळानिक श्रेनानी श्री शांग करा যাইতে পারে ? আমরা এতৎসম্বন্ধে হুই চারিট. দৃষ্টাস্ত দেখাইয়া এই প্রস্তাবের উপসংহার করিব।:

বেমন বাহৰগতের সকলব্তরই

বিজ্ঞানের দারা মীমাংসা হয়, সেইরূপ অন্তর্সকলপ্রমই দর্শনখান্ত দারা মীমাংসিত হইয়া থাকে। মন কি প্লার্থ ? ইহা দর্শনশাস্ত্রের প্রথম প্রশ্ন। যত দিন দার্শনিক প্রণালী প্রচলিত ছিল, ততদিন লোকে বলিত, মন একপ্রকার অদৃশা বস্তা জীবাত্মা, পরমাত্মা, দীখর পাভৃতি भवार्थ (यमकन छेशानारन निर्मिंड, त्नारक মনকেও সেই সেই উপাদানে নির্ণাত বলিয়া বোধ করিত। তথন মনের সম্বন্ধে অতি আশ্চর্য্য আশ্চর্য্য প্রশ্ন উত্থা-পিত হইত। কেহ বলিতেন মন মস্তি-ক্ষের মধ্যে অবস্থিত, কেহ বলিতেন মন ক্ংকোষে ভুঅবস্থিত, কেহ বলিতেন মন শরীরের সর্ববংশেই আছে, কেহ বলি-তেন, মন শরীরের প্রত্যেক অংশে অব-স্থিত ইত্যাদি। গুফলত: মন্যে শরীর হইতে এক স্বতন্ত্র পদার্থ, ভাহাতে সক-লেই বিশ্বাস করিতেন।

কিন্তু যথন বৈজ্ঞানিক প্রণাণী প্রচলিত হইল , তথন স্থার পূর্বোজ প্রশ্নসমূহেব স্থল রহিল না। মহুদা মনকে এক স্বতম্ন পদার্থ বলিয়া গণা করিতে স্থীকৃত কইল না। মনের মত কোন পদার্থই পৃথিবীতে দেখিতে পাওয়া যায় না। স্ক্তরাং স্থিরীকৃত হইল যে মন মন্তিকের ক্রিয়া মাত্র। এই ক্রিয়াগুলি শাবীরিক অভ্যা ক্রিয়া হইতে স্বতম্ভ্রা। কিন্তু যেমন খাসপ্রক্রেপ, রক্তসঞ্চালন প্রভৃতি শারীকি ক্রিয়া ইন্দ্রিরিক ক্রিয়া ভিন্ন ক্রিয়া ভিন্ন ক্রিয়া ভিন্ন ক্রিয়া ভিন্ন ক্রিয়া ইন্দ্রিরিক ক্রিয়া ভিন্ন ক্রিয়া ভিন্ন ক্রিয়া ইন্দ্রিরিক ক্রেয়া ভিন্ন

রিক ক্রিয়াবিশেষ বলিয়া গণ্য হইতে আনুষ্ঠ ছইয়াছে।

কি কি উপায়ে আমাদের জ্ঞানলাভ হয় ইহাও দর্শনশাস্ত্রের এক অতি নিগুঢ়া मकल्वे श्रीकांत करत्न, य আমরা ইক্রিয়হইতে আমাদের জ্ঞানের উপাদান প্রাপ্ত হই। যতদিন দার্শনিক প্রথা প্রবল ছিল, ততদিন ইক্সিয়ত জ্ঞান ভিন্ন আর একপ্রকার জ্ঞানে মনুষা বিখাস করিত। ভাছারা বলিত যে মনের এক স্বাভাবিক জ্ঞানপ্রদায়িনী শক্তি আছে। आমাদের ইন্দিয়ঙ্গ জ্ঞান, সকল বিষয়ের সমস্যা স্থির করিতে পারে नां। সময় कि, ञ्चान कि, श्रेश्वत कि, আ্মা কি. প্রভৃতি কতকণ্ডলি প্রশ্ন আছে যাহাতে ইক্রিয়ল জ্ঞানের কোন রূপ প্রয়োগ করা যায়না। ঐ সকল প্রশ্নের নির্দ্ধারণ কালে আমরা মনের স্বাভাবিকী শক্তিব নিকট হইতে সাহায্য लाश्च इंडेग्रा शाकि।

কিন্তু যথন বৈজ্ঞানিকপ্রণালী প্রচলিত হইল, তথন আর মনেব পূর্ব্রিপ শক্তির প্রতি মহুষ্টোর আছা রহিল না। তথন ক্রিীকৃত হইল, যে আনাদের স্কল প্রকার জ্ঞানই ইক্রিয়ত্ত।

নীতিসম্বন্ধেও ঐক্নপ মতের পরিবর্ত্তন
দৃষ্ট হইবে। যথন দার্শনিক প্রণালী
প্রবল ছিল, তথন লোকে বিশ্বাদ করিত
যে জগদীশ্বর জামাদের মনে আমাদের
জন্মকাল হইতেই হিতাহিত বিবেচনার
ক্ষমতার সৃষ্টি করিয়া দিয়াছেন। কোন

দেখিবামাত্রই, উহা হিত কি হিত, আমরা ঐ ক্ষমতাবলে বলিয়া কতে পারি।

কিন্ত যথন বৈজ্ঞানিকপ্রণালী প্রচলিত হইল, তথন আর পূর্বের মত ঈশ্বরদত্ত ক্রমতায় লোকের বিখাস রহিল না। তথন হিতাহিত বিবেচনার সম্বন্ধে অন্য অন্য কারণ নির্দিষ্ট হইতে লাগিল।

' এইরূপে এক্ষণে ইউরোপের অধিকাংশ

শ্বলে সকল শাসেই নৈজ্ঞানিকপ্রণালী প্রাযুক্ত হইছেছে। ইতিহাস, অর্থশাস্ত্র, সমাজতত্ত্ব প্রভৃতি শাস্ত্রেও বৈজ্ঞানিক প্রণালী বহুলপরিমানে সন্নিবেশিত হই-ভেছে। আমরা সকল বিষয়েই ইউ-রোপের অন্করণ করিয়া থাকি। ইউ-রোপের বৈজ্ঞানিকপ্রণালী কথন অনুকর্ম করিতে শিখিব কি ?

~~~~~

খাজনা কেন দিই ?

বহুকালাবধি 'লোকে থাজনা দিয়া আদিতেছে। শতপুরুষ ধরিয়া লোকের সংস্কার এই যে জমী লইলেই থাজনা দিতে হয়। বাল্যকাল হইতেই দেখিয়া আদিতেছি যে থাজনা ছাড়া জমী পাওয়া যায়না। ত্রক্ষোত্তর বা দেবোত্তর আদি যে সকল জমীর থাজনা দিতে হয় না তাহা আগে মালের জমী ছিল, কোন ভ্যাধিকারী দয়া করিয়া তাহার থাজনা দেওয়া রহিত করিয়া দিয়াছেন, অথবা খাজনা লন না এই পর্যান্ত। থাজনা ন বা এই পর্যান্ত। থাজনা ন বিরুষ্ণ তাহার থাজনা ন বা এই পর্যান্ত। থাজনা ন বিরুষ্ণ আদিন পুরুষ ধরিয়া দেখিয়া আসাতে সংস্কার এরূপ দাঁড়াই-

মাছে, যে থাজনা লওয়া যেন প্রাকৃতিক
নিয়ম। যেমন এক বস্ত আর এক
বস্তকে আকর্ষণ করে এটা একটা প্রাকৃতিক
নিয়ম, জমী লইলেই থাজনা দেওয়াও
সেইরূপ। যথন থাজনা দেওয়া প্রাকৃতিক
নিয়ম বলিরা সংস্কার দাঁড়াইয়াছে,
তথন পাজনা কেন দিই, এরূপ প্রশ্ন
লোকের মনে উদয় না হওয়াই সন্তব।
জমী লইব, যাহার জমী তাহাকে থাজনা
দিব, ইহাতে আবার কেন কি ! যেমন
টাকা লইলে প্রদ দিতে হয়, বাড়ী লইলে
ভাড়া দৈতে হয়, জমী লইলেও সেইরূপ
থাজনা দিতে হয়। এর আবার কারণ
জিজ্ঞাসা কেন ?

* বৈজ্ঞানিক প্রণালীর কথার সময় আমরা "লোকের" এই কথাটি "অধি-কাংশ লোকের" স্থলের ব্যবহার করিয়াছি। দার্শনিক প্রণালীতে বিশ্বাস করেন, এখনও এরূপ লোক অনেক আছেন।

কারণ জিজ্ঞাসা করার হেতু আছে। कुत्रि টोको (डाङशांत कतिब्रांह, छै।कां ভোমার টাকা আমি লইতে পেলে ভোমার কিছু লাভ না থাকিলে তুমি দিবে কেন ? তোমার বাড়ী তোমার নিজয়ত্বে প্রস্তুত, নিজে তাহার জন্য কত টাকা খরচ করিয়াছ, আমি তাহা ব্যবহার করিব, ভোমার নিজের লাভ না थ। किरन जुन्नि क्रिय (कन ? जुनि विनाद জাসার জনী আমি তোমাকে দিব আ্যার लांड ना थाकिल पिर किन ? किन्न कथा এই তোমার জমী হইল কিরপে। তুমি बिलाद आमि किनियां हि। किछ अभी কার যে তুমি কিনিবে। তোমার জিনিস ডুমি ইচ্ছামত নষ্ট করিতে পার, তোমার ৰাড়ী ভূমি ভাঙ্গিয়া ফেলিতে পার, ভো-মার টাকা তুমি সমুদ্রের অগাধ জলে ফেলিয়া দিতে পার তোমার অল তুমি नाकृत्वत पिटक विलियान पिटल शांत, কিছ ভোমার জমী ভুমি নষ্ট করিতে পার না। বাত্তবিকও ভু'ন জমী কেন নাই, कृति रिनियात्र क्यीतानशास्त्र परः কিন্তু এই কথাট বৃঝিতে গেলে ত পূর্বে অনেক কথা বলা চাই। অে श्वित व्यक्तित भीमात्मा हाहि। व्या ভাৰি এই প্রস্তাবে চারিটি প্রশ্নের উত্তর मण्ड (हरे। कविब।

- (১) खभी कात ?
- (২) কিরপে জমীর উপর লোকের থয় দাঁড়াইয়াছে ?
 - (७) थाङ्गा (कन मिट्ड इय ?

- .(৪) [,] খাজনা কত হওয়া উচিত **?** ভা*হার পর প্রসক্তনে*
- (a) যত হওয়া উচিত তাহা অপেকা অধিক বা অন্ন হয় কেন । এ প্রশ্নেরও নীসাংসা করিতে চেষ্টা করিব।

১। अभी कांत्र?

व्यामना त्य शहरत शृष्टित्र न वान कति " তাহার পরিধি ১১০০০ ক্রোশ ও বাাদ' প্রায় ৩৫০০ ক্রোশ। এই ভূপৃষ্ঠের হুই ভাগ অল ও এক ভাগ ত্ব। ত্বভাগের কোথাও মকুভূমি, কোণাও পর্বাত, কো-थां वन, दर्गाथां वन। अवनिष्ठे छैर्कत्र ভূমি এই উর্বরভূমিখণ্ড হইতে আমা-मित्र खानशांत्रानाभागी भनार्थत छेर-পত্তি হয়। যে কেহ ভূমগুলে জন্মগ্রহণ कतिशाष्ट्र जाशात्रे कीवनशात्र लाया-कन युज्राः की वनधा वत्वाशरयात्री श्रमार्थ যাহাতে উৎপত্তি হয় তাহাতে সকলেরই गमान व्यक्षिता । शीवन वनिष्ठ (य ७० नकुरमाबरे जीवन वृक्षारेटव अधन া প্ৰথা পড়া নাই। যাহার প্রাণ হারই প্রাণধারণ করিতে হয় ই ,পৃথিবীর জমীতে অধিকার। . পশু, পক্ষী, সরীস্থপ, কীট,পতঙ্গ, কীটায় প্রভৃতি সকলের পৃথিবীর জমীতে যে অধিকার, আমার তোমার ও মহারালা (भाभान नश्रत्वत (मर्डे किश्वता । धार्ग-धांतरनागरमात्री भमार्थ ७ दे भृथिवी इहेटड উৎপদ इहेर्त्। श्रान्छ मकलरक धावन করিতে হইবে, অতএব একলনকে ভূমি

রিতে বলাও ঠিক তাই।

ঈশ্বর তাঁহার প্রিয় পুত্রদিগের জন্য বেমন আকাশ হইতে ম্যানা বর্ষণ করি-য়াছিলেন, এখন আর তাহা করেন না, এখন আমাদিগকে নিজপরিশ্রমে স্বহন্তে এই পৃথিবীর উপরিভাগ হইতে আমাদের আহারসংগ্রহ করিতে হয়। बगी ভिन्न आंगारमन हरन ना, अक्यव क्रमी काशावल नरह, উहार खानी हरे-तिहे युष करमा।

এই সাধারণনিয়মের অনেক বাতায় **पृष्टे ह्या। अराक हिः अबद्ध अभन्न बद्धत** মাংস আহার করিয়া জীবনধারণ করে। অনেক মহুষাও অর্দ্ধেক উদ্ভিজ্ঞ ও অদ্ধেক প্রাণিক আহারে দেহপুষ্টি ক-রেন। অনেক জাতি আছে তাহাদের মৎসাই প্রধান আহার। মংসোর সঙ্গে জ্মীর সঙ্গে কোন সম্পর্কই নাই। সকল বিষয়ের তর্ক তুলিতে গেলে পুঁথি বাডিয়া যায়। তবে এই পর্যান্ত বলা যায় য়ে, পশুমাহার ঘাঁহারা করেন, তাহারা অন্যার করেন; তাহারা যে আর একজনের স্বত্তনাশ করেন, শুদ্ধ তাহাই নহে; তাহাদের জীবন পর্যান্ত নাশ করেন। তাঁহাদের মত যাহাই হউক, তাঁহারা যে জন্তর মাংস্ভক্ষণ করেন, দেও ত এই পৃথিবীর উপরিভাগ হইতে আপনার দেহপোষক জব্য সংগ্রহ করে। তবে ফলে একই দাড়াইল। সাক্ষাৎ-मध्य ना इहेगा शतकातामध्य गाः-

হইতে বঞ্চিত করাও যাহা তাহাকে সাশীরাও এই পৃথিবীর উপবিভাগ হইতে আহার্য্য সংগ্রহ করেন স্থতরাং জমীতে তাঁহারও প্রয়োজন। এখন बार्ट्ड কথা। যাহারা মাছ খাইরা বাঁচে তাহারা ত জ্মীর ধার ধারে না. কিন্ত জ্মীতে যেমন জলেও তেমনি সকলেরই সমান স্ব। জমীরও যে জন্য থাজনা দিতে रम, मर्गाक्कवमम्दर् (मर्रे थकात थानना मिटा इस । त्यहे कात्रत्व छ त्यहे পরিমাণে। প্রাচীনদেশসমূহেও এই নিয়ম हिन (य सभी नवात, धकस्त्त नरह। रेह्मीरमत मर्था निषम हिल रय, ४२ বৎসর অন্তর তাহাদের সমস্ত জমী অধি-वामीमिश्व छाश कतिया (मध्या हरेछ। সকলে সমান ভাগ পাইত কি না বলিতে পারা যায় না; কিন্তু ভাগ হইত নিশ্চয়। উशामत्र मःश्वात हिल (य, कानानरमण ঈশ্বর ইম্রেলের বংশকে শ্বন্থত্যাগ করিয়া দান করিয়াছেন স্থতরাং যে কেই ইস্রে-লের বংশ, কানানের অমীতে তাহার षः । पाइ। शाहीन द्वारम द्वारमद অধিরাগী প্রেট্রসিয়ানরা জমীর ভাগ পাইতেন, কারণ প্রথম অবস্থায় জাঁহা-রাই রোনের অধিবাদী ছিলেন। তাহার পর প্লিবিয়ানেরা যথন রোমের অধিবাসী বলিয়া গণ্য হইল, তখন ভাহারাও জমীর ভাগ পাইতে লাগিল। कर्पानित गम्छ सभी folkland अथवा কাতীয় সম্পত্তি বলিয়া পরিগণিত হ-ইত। রাজা জাতির কর্তা স্বতরাং তিনি কাতীর ভূমিরও কর্তা। জাতীয় ভূমির

বন্দোণভের ভার রাজা ও মহাসভার উপর স্থাপিত। আমাদের নিম্নদেশে রাজা সমস্ত দেশের কর্ত্ত। জনী তাঁছার. অর্থাৎ প্রাজারা জাহার নিকট হইতে बगी नहरत, (कवन डे॰ भरात इत्र डाराव এক ভাগ তাঁহাকে দিতে হইবে। এ নিয়ম অতি স্থলর, ইহাতে রাজ্য জ্মী र्टेटिट यानात रहेड, याख्य कत बना-नत व्यादाजन रहे जन। जमी काल अवागांधात्र (१वरे हिल : अवागाधात्र १ क সাধারণকার্যোর জন্য স্বোপার্জিত শস্তোর ষষ্ঠাংশ দিতে হইত। এখনও উত্তব পঞ্চিম অঞ্ল ও অন্যান্য স্থানে এই नियमरे চनिया आंत्रिटाइ। (यथारन গ্রবর্ণমেণ্টের সঙ্গে সাক্ষাৎসম্বন্ধে বন্দো-वस्त्र (मथारमञ्जूष विश्व ।

ভ্নীতে যে কোন এক ব্যক্তির স্বত্ব
ছইবে না তাহার কারণ, কি ? অর্জ্জনই
স্বত্বের একমাত্র কারণ, যে অর্জ্জন না
করিল তাহার স্বত্ব কিলে ? কিন্তু ভূমি
অর্জ্জন করা যায় না, কারণ ভূমির ভূমি
মালিক পাক আর নাই থাক, জ্বনী যে
ভ্নমী সেই থাকিবে। জ্বনী কেহ উৎপর
করিতে পারে না, কেহ উহা নাশও
করিতে পারে না। ভ্নমী ঈশরদত্ত
স্থত্তরাং উহা অর্জ্জিত নহে উহাতে
কাহারও স্বত্ব নাই। প্রাক্তর প্রত্তাবে
ভ্নমী ব্যক্তিবিশেষের হইতে পারে না।

কিরপে জমীর উপর লোকের স্বন্ধ দাঁড়াইয়াছে? ক্মী কার, এ প্রশ্নের উত্তর হইল क्यी कांशत व नरह, উहार कीवमात्व-तरे यह जाएक। उत्य समीमाद्रत सभी আমার জ্মী, তোমার জ্মী কেমন করিয়া হইল ? জমীতে যদিও অর্জনস্বত্ব না হইতে পারে, কিন্তু উহাতে ব্যবহারিক স্বত্ব উৎপন্ন হইতে কাহারও আপত্তি নাই। মনে কর আমি এক অঙ্গলের মধ্যে একথণ্ড ভূমি পরিস্কার করিয়া তাহাতে চাদ করিতে লাগিলাম। আমার উহাতে কোন স্বন্ধ নাই, তুমি আমা অ-পেক্ষা বলবান্, কালি তুমি আমার গালে চড় মারিরা আমার জমীথানি কাডিয়া नहेता। (ग अभित्व (महे विवाद विष् অত্যাচার হইল। কেন ? জমী আমার নয় সত্য কিন্তু আমি যে সেটি ব্যবহারের উপবোগী করিয়াছি সেটুকুতে আমার স্বত্ব আছে, আনি পরিশ্রম করিয়া সে बगीत जनन आवान कविशाहि, जाशारक সার দিয়াছি ছই তিনবার চাস দিয়া তাহার উর্বরতা বৃদ্ধি করিয়াছি। अभी षागात ना इहेरलख षामि (य छेहात উন্তিসাধন করিয়াছি সেটিত আমার, তাহাতে ত কোন সন্দেহ নাই। সেটুকু আমি ছাড়িব কেন ? ছাড়িতে গেলে তাহার ক্ষতিপূরণ চাই। ভানেক জমীতে লোকের স্বত্ত জুরিয়াছে। যত উপনিবেশ সর্বতি এই কারণে স্বন্ধ। আনাদের দেশে যে গ্রামিকবৃন্দ আছেন उांशामत्र वहेताल स्मीट यह रहे-য়াছে। বাবহারিক স্বত্ব পুরুষামুক্রমে চলা উচিত কি না সে বিষয়ে আমরা

किছू विवाश हाहि ना। आत्मक अभरव ুরাজা বা রাজসভা কোন বিশিষ্ট উপকার করার জন্য কোন সেনাপতি, পণ্ডিত, **क्रिकि**९मकरक जुगिनान करतन, हैश-লভের বক্লাও, আমাদের জারগীর ব্রুলোত্তর জমীতে এইরপে খব জ্মি-शाहा थात्र व्यक्षिकाःभ एत इर्वन-•লাতি কোন পরাক্রান্ত **লা**তিকর্ত্ব পরা-দিত হইলে শেষোক্ত জাতি পূৰ্বোক্ত छाठित সমস্ত अभी पथल कतिया गर। বোমধ্বংদের পর ইউরোপে দর্বত এই-करण वर्षतकाणिशन जाननामिरशद था-ধান্য স্থাপন করিয়া আসে। এরপে ভূমিতে স্বস্থাপন যে যোরতর স্ত্যাচার ভাহা কে অন্বীকার করিবে। বাঙ্গালায় य सभीपादात सभी इरेग्राट रेश क्विन रमकारणत देश्द्रबामिरगत वृत्रिवात्र ভূলে। যেরপেই হউক যদিও জনীতে গকণ প্রাণীর সমান অধিকার, আজি কালি পৃথিবীর প্রায় তাবং জমীই মহুষা-নামক জাতির কতিপয়মাত্র লোকের হত্তে অর্পিত হইয়াছে। তাঁহারা কিছু क्कृत आत्र नाष्ट्र क्कृत क्यी डाहात्मत । উহা লইয়া তাঁহারা যাহা ইচ্ছা করিতে পারেন। যে সকল লোক বা জীবজন্ত णंशामत सभी दहेट छेनत्रभृष्टिं करत, ভাহারা তাঁহার অধীন, তাহাদের উপর তাঁহার ক্ষমতা অদীম। এরপ অন্যায় খুনিত ক্ষযভাপ্ৰকাশকে অভ্যাচারই বল র আকৃতিক নিয়নই বল আর সমা-नियमहै वन ।

অতএব জ্মীর উপর লোকের যে স্বস্থ । দীড়াইয়াছে তাহা ব্যবহারে উপনিবেশ স্থাপনে ও প্রায় অধিকাংশ স্থলেই অত্যাচারে।

৩। থাজনা দিতে হয় কেন ? আবার সেই কথা, জমী যথন আর একজনের তথন তাহার জমী গ্রয়া ব্যবহার করিলেই খাজনা দিতে হইবে। এটি মোট কথা। যদি সকল জমী সমান উৰ্বিয়া হইড তাহা হইলে থাজনা হইত কি? তাহা হইলে জোর করিয়া জ্মী দ্র্ণল করিবার কোন কারণ থাকিত না. ভাহা হইলে যে যে জনী পাইত, সে সেই জমী লইয়া সম্ভূত থাকিত। তুমি না হয় গসার ধারে জমী লইয়াছ, আমি না হয় দশহাত ভফাতে লইব, এইমাত্র প্রভেদ। লাভ ভোমারও যে রক্ম আমারও ঠিক দেই রকম, তবে তোমার উপর আমার অত্যাচার করার প্রয়োদন কি? কিন্তু বাস্তবিক ত তাহা নহে, অমীর গুণে অনেক প্রভেদ। আমার থানি খুঁব উর্বরা, তোমার থানি পতিত বা কয়ঃনয়; তোমার স্তরাং ইছো इटेर्टर (ग जूनि जामात ज्ञीशानि शाउ। তোনার অমীর দর কম হইবে আয়ার

অন্যান্য ব্যবসায়ে নেমন জিনিসের খরচাধরিয়া দাম হয় জনীর উৎপক্ষে তেমন
হয় না। মনে কর কাপড় বুনিতে হইবে,
তুলা ছয় আনা, মেহলং ছয় আনা, কোর
দেওরা তুপয়দাও অন্যান্য ধরচ ১০।

श्राधक इटेरव।

কাপড় খানার খরচা হুইল তের আনা তাহার ব্যবসায়ের মুনাফা আট প্রদা मिलाम, कार्यट्युत्ते हरेल भनत्र व्याना। এই দরে অধিকাংশ কাপড় বিক্রয় হইবে। শসাদির ত ঠিক এরপে সুলানির্বয় হয় ন!। তোমার ভ্রমী আসার অমী পাশা-পাশি, তুমিও যে খরচ করিলে আমিও সেই ধরচ করিলাম; তুমিও দেমন খা-টিলে আমিও তেমনি থাটলাম; তোমার উৎপর হুইল দশ সলি ধান আমার হইল श् गिन । देवह बना जानन जिल तरनन त्य बनामा भित्त उर्शन किंडूरे रह ना, পৃথিবীর ধনবৃদ্ধি হয় না, কেবল কৃষি-কর্মেই ধনবৃদ্ধি হয়। কৃষিকর্মে যে খুরচ তাহার অপেকা অনেক বেশী লাভ হয়। দেবার আ্যাদর্শনে ইকু নামক श्रवदक्त श्रवक्रदम्थक (मगारेमा मिमाएकन যে, ইকুর চাসে প্রায় দিওণ লাভ হয়। **ध्ये लाट्डित अधिकाती (क इट्रेट्स १ एम** ভূমাধিকারী সেই লাভেরও অধিকারী ट्टेर्द। (य नगाल क्भी नात ज्ञाभि-काती (म मगारक क्रिमीपारतत नाज, त्य मगाल दाका ज्याधिकाडी मिथान डा-জার লাভ,ুবে সমাজে প্রজা ভূমাধিকারী সে সমাজে প্রান্ত লাভ। এই যে উৎ-পরের ক্সী বেশী এইই খাজনার কারণ। যদি সব জমী সমান হইত ভাহা হইলে থালনা হইত্না (ট্রেদি সব লমী এমন * হইত বে প্রকার শ্র**ন ও খর**চা মাত্র উঠিত ভাহা হইলে কেইই খালনা দিতে পারিত না। ্যদি সব অমীতেই বিভগ

লাভ হইত, তবে কাহার নিকট খাজনা আদার হইত। যাহার নিব আদার করিতে যাইত, সেই ভাবি: ﴿

ইইতেছে। সমাজের বন্দোর
ইইত। অতএব খাজনার ।

ওণতারতমা।

খাজনা কত হওয়া উচিত? शृद्ध रे तना इरेगाइ त सभी ममान इरे**ल था**जना इरेज ना। (कहरे थं:-खना पिछ ना। এখন প্রশ্ন এই গে যাহাবা খাজনা দিবে ভাহার৷ কভ'দিবে ৽ যখন কতকগুলি লোক একটি গ্রামপত্তন করিল যে কয়খানি উর্ববভূমি ছিল স্ব ক্রথানি ভাহারা দপল করিয়া লইল। কিন্তু সৰ উৰ্ব্যকৃষি ত স্থান নয়। মনে কর দশখানি উর্বর জমী আছে এক. থানিতে দশ সলি ছুইথানিতে সাড়ে নয় স্লি'তিন খানিতে নয় স্লিও চারি থানিতে আট সলি আৰু একখানিতে মাড়ে মাত মলি উৎপল্ভয়। ইয়াব নীচের জমী আবাদ হয় না। যাহাব জমীতে সাড়ে সাত সলি জ্বো তাহার যদি ভাহাতে শ্রম ও পরচা না পোষ্টত তবে দে কথন আবাদ করিত না। স্তরাং বুঝা গেল যে সাড়ে সাত সনি উঠিলেই চাদার খরচা উঠে। অতএব শাড়ে সাত সলির উপর যে জ্মীতে যত উৎপন্ন হয় সমুদর্ষ সে জ্মীর খা-बना इटेटर । याहात उँ० शत मण मलि যে আডাই সলি দিলে তাহার লোকগান যাহার সাড়ে নরস্বি তা-इटेटव ना।

ত্ব সলি দিলে লোকসান হইবে
। অতএব যে সকল জমী চাস হয়
চাহাদের মধ্যে যে জমী সর্ব্বাপেক্ষা
খারাপ কাহার উৎপন্ন উৎকৃত্ব জমীর উৎ
গন্ন হইতে বাদ দিলে বাকি যা কিছু
থাকে তাহার নাম খাজনা। বলিবে
যে দেশে প্রজা ভ্রমাধিকারী সে দেশে
ত গাজনা দিতে হয় না। আমরা বলি
সেখানে প্রজা খাজনা ও মুনাফা তুই
পার, অন্য জায়গার মুনাফা পার প্রজা,
থাজনা পার রাজা বা জমীদার।

এত হল শ্সাহ্যায়ী থাজনা। যেথানে থাজনা টাকার দিতে হয় সেথানে ইহা অপেকা একটু জটিলতা অধিক। মনে কর পূর্ব্বোক্ত গ্রামে আর দশ ঘর লোক বাড়িল, পাঁচ যর চাসা আর পাঁচ ঘর गडेन किनिया थाय । शृंदर्त हे वना हहे-য়াছে সে ভাল জমী আর নাই। চাসা যাহারা আসিল ভাহারা যে জণী পাইল ভাহাতে তিন খানিভে ছয়প্লি ও ঘুই খানিতে পাঁচ সলি মাত্র। একে বারে সকল জনীর থাজনা বাজিয়া গেল। নাহাতে দশসলি উৎপর হইত তাহার খালনা আগে ছিল আড়াই পলি, এখন रहेल शांठ मिल, गांशांत मारफ नग्न मिल° তাহার থাজনা আগে ছিল জুই সলি এখন হইল সাড়ে চার সলি, কেবল খাঁ-্ষার উৎপন্ন পাচ সলি সেই কোনমতে রচা পোষায় বলিয়া ভাহাকে থাজনা ত হয় না। এইরপে পাঁচজর লোক হওবাম থালনা প্রার বিওপ হইয়া

গেল। সর্বাপেকা নিক্সন্ত জমীই খাজনা দিবে না। তাহা অপেকা বে ভূমির উংপর যত অধিক ততই তাহার খাজনা। আগে ছিল সাড়েসাতসনিওয়ালা জমী নিক্স্ত। এখন পাঁচসলিওয়ালা জমী সর্বাপেকা নিক্স্ত হইাছে স্তরাং ভাল জমীর থাজনা বাড়িয়া গিয়াছে।

আবার দেখ উর্বর জনীতে গ্রচা ক্ম। मत्न कत नभ मनि उत्रांना ख्रमीट व থরচা হয় সাড়ে সাত সলি ওয়ালাতেও সেই খরচা হয়। মনে কর ছই জারগারই ৭৫ টাকা খরচ হয়। কিন্তু এ কের উৎপন কম অপরের উৎপন্ন বেশী। পলিকরা ভাল ভমির খরচা কম, মন্দ জমীর থরচা বেশী। ভাল, জমীওয়ালা সন্তা দরে ৰিক্রয় করিতে পারে মন্দ জমীওয়ালা তত সন্তাদিতে পারে না। কিন্তু এক বাজারে এক সময়ে এক জিনি-সের তুই দর হইতে পারে না [খুজরা জিনিদের যদিও হয় কিন্তু বড় কারবারে হর না ϳ স্কুতরাং সাড়ে সাত সলিওয়ালা रय मद्भा विकास कतिरव मण मलिख्या-লাকে সেই দরে বিক্রম করিতে হইবে। দশস্বিওয়ালা একে ভ উৎপন্ন বেশী পায় তাহার উপর তাহার জিনিদের দাম ও তাহার থরচা অপেকা অনেক অধিক। মনে কর সাত্সলিওয়ালার সলিকরা দশ টাকা খরচা হইয়াছে, দশসলিওয়ালার সলিকরা সাড়ে সাভটাকামাত্রী খরচা. পড़िशाष्ट ; किन्छ इटेंबन दक्टे विक्रम क-রিতে হইল পনর টাকা সলি। একের

ছইল ৭॥ × ১৫ = ১১২॥ অপবে হইল
১৫ × ১০ = ১৫০ খনচা হলনেরই এক।
বাহার ভূমি অধিকতর উর্বরা ভাহার
উৎপন্ন বেশী খনচা কম, মুনাকা স্থতরাং
খুব বেশী।

এখন মনে কর পাঁচজন চাসা ও পাঁচ জন অপর লোক আসিয়া জুটিল। চাদারা আরও নিক্ট জনী চাদ করিতে नाशिन। मान कत त्मरे १६ छाकारे থরচ হইতে লাগিল, উংপর হইল পাচ निमाज निकता थत्रा शनत छाका হইল। নৃতন লোক আসায় চাউলের দর বাড়িয়া গিয়াছে, প্রতি সলি এখন মনে কর বিশ টাকার বিক্রয় হইল। পাচ-मनिख्योगांत १६ টाका थत्र ६×२६= ১২৫ টাকা আর পিঞাশ টাকা মুনাফা। সাড়েসাভসলিওয়ার ৭৫ টাকা খরচ १॥×२৫=১৮१॥ खात्र, मूनाका ১১२॥ होका। मनमनि छत्रानात थतहा १६ होका आय > 0 × २८ = २८० मूनाका > १८ हाका। আগে ছিল ৭৫ টাকা এখন হঠল ১৭৫ টাকা অথচ তিনি নিমে ইহার किছू करत्रन नाहे। हेशत मस्म नीह-ज्लिशानात (व ১২৫ उत्राप्त ममूनग्रे খালানা যাওয়া উচিত। অর্থাৎ চাসা আপনার খরচা নেহয়ত নার মুনাফা छे हो है इं। नहेल भन या कि इ वैकि থাকিবে ভাছাই থাজানা।. স্তরাং यक औं कमध्या दृष्टि हहेरव, निकडे क्रमी हाम इहेट आवत्र हहेरन, उडहे सभीत थायानाह्वाजिता बाहरत । बरुहे

টাকা দেশে বাজিবে লোকে অন্ন মুনাকা ক্ষিয়া আগিবে জমীর খাজানা বাজিয়া যাইবে। এই যে খাজানা ইহার নাম হৈতে তালাই মুনাকা ক্ষিয়া আগিবে। এই যে খাজানা ইহার নাম হৈতে তালাই মুনাক ক্ষিয়া যে খাজানা দিয়া থাকি, তাহা ইহা অপেকা অনেক ভাষগায় কম ও অনেক ভাষগায় বেশী। ইহা অপেকা অধিক বা অন্ধ খাজানা কেন হয়?

আমরা থাজানাস্থন্ধে এ পর্যান্ত যত क्था वित्रा वांत्रिलाग, डाहा व्यक्षिकाः गरे तिकार्छ। नामक अभिक्त व्यर्थभाजनितनत মত। তাঁহার মত যে প্রমাণ সে বিষয়ে আমাদের সম্পূর্ণ বিশ্বাস। কিন্তু তাঁহার মত ইংলও ভির অপর দেশে গৃহীত হয় না। ইংলও অর্থধানদেশ ভূমি-প্রধান নহে; ইংলণ্ডের লোক বেশ বুঝিতে পারেন যে, চাসা যে খরচ ও বে পরিশ্রম করিল ভাষার উদ্ধার ও ভাষার মুনাফায় ভাষার স্বর, এ সমুদ্রের অধিক যা কিছু ভাহাতে ভাহার স্বন্ধ নাই। আমাদের দেশ ভূমিপ্রধান। कात्न ভाराता हान कतिया गिरमत अर्थ-तान कतिया यनि छेषु छ इय, छटन अभी দার পাইবে। অতএব রিকার্ডোর মত যে সভ্য ভাহা আমাদের দেশীয় লোক-দিপকে বিখাদ করান অত্যস্ত কঠিনু। व्यागातित (तरभव ७ कशारे नार ; का-ব্দের লোকও রিকার্ডোর কথায় বিখাদ क्ता ना। विकार्णात्र कथा जूनित्न

বিশ্বাদের দেশীয় লোক ননে করিবেন
থক জমীদারের অপবা গবর্ণনেন্টের
পিকতা করিয়া শুলাবুন্দের অনিষ্টের
বুল করিতেছেন। কিছু আমরা তাহার
কিছুই করিতেছি না যাহা সতা বলিয়া
বিশ্বাস তাহাই লিখিতেছি।

लात्क जिल्लामा कतित्वन यनि तिका-র্ভোর মতই সত্য হয়, তবে খাজান। কোন দেশেই রিকার্ডোর নতাত্ত্বায়ী হয় না কেন ? তাহার উত্তর এই ইং-नएउव शाकाना आशहे विकार्छाव गरठ शृशीक इस । देश्लाटखन अभीमान कान-মারকে জমী দিলেন। কারমার দেখিল ভাহার টাকা উঠিবে মুনাফাও উঠিবে म अभी नहेन। हेश्न खंत काइमात धनी, तम यनि छात्र ना कतिङ, उदव ব্যবসায় করিত, ইংলত্তে সাধারণ লো-কের জমী নাই ভাহারা ফার্মারের মজুরদার। ইংলতে জ্বনীর সম্পূর্ণ সাহ घगीमारतत, शवर्गामध्येत वा धामारमव গাহাতে কোন সত্ব।ই। অন্য কোন দেশেই প্রায় সেরপে নাই। আমাদের দেশের জনীতে (বাসালা ভিন্ন) গবর্ণ-मिणे समीमात ७ थाना नकत्नहरे यह णाष्ट्र इंडा व्यत्नतक चीकांत्र करतम। মতরাং ভারতবর্ষে ঠিক রিকার্ডোর কথা-गठ थालामा इटेटल शास्त्र मा। सभीपात উৎপরের অংশ পাইবেন গ্রব্মেণ্ট অংশ ¹ चैहेरवन श्रञा ज्ञा जान शहरव। श्राजा জৈর থরচ ভূলিয়া লইয়া বাঁকি যেটা कित्व खाद्दांत्र अश्म शाहेत्। वक्र-

(क्टम शनर्द्यण निज कश्म बनीका वहक अञ्चार क्रिया नियाद्य न-गणन निया-ভিলেন তথন প্রভার স্বতের দিকেও বড विभाग गरनारयां गंड करतन नारे। सुक ताः এहे मगरा समीपारतता श्राकात छेपत জনেক অভ্যাচার করিয়াছেন এখন चानात थाबांत चन्नावारखत बना वह-তর চেষ্টা হইতেছে, স্তরাং জমীদার প্রজার নিকট সমস্ত বাড়তি উৎপন্ন গ্রহণ করিতে পারেন না। কারণ জমীতে এবং জনীর খাজানার প্রজারও সত্ত এরপ জনস্বায় ভারতবর্ষে জনীর খাজানা অর্থাৎ জনীদারের প্রাপ্য विकार्खात्र थाञाना जारभका जानक कम হইবে, কারণ ভাহার এক অংশ প্রজার निष्ठत ।

ইতানীতে জ্বমী জ্বমীদার ও প্রজার ভাগে বিলি। আনাদের অল্প ব্রহ্মেন্তরের. ভোগীরা বেমন ভাগে বিলি করেন, সেও ঠিক সেইরুপ, তবে জানাদের ব্রহ্মেন্তরভোগীরা মিয়াদি বন্দোবস্ত ক-রেনু, স্থতরাং জ্বমীতে প্রভার স্বত্ব জ্বমাইতে না দিয়া অনেক সমরে বিকার্ডোর নতান্ত্যায়ী খাজানা আদায় করিয়া লন। ইতালীতে ভাহা হয় না; ইতালীতে ভাহা হয় না; ইতালীতে ভাহা হয় না; ইতালীতে ভাহা হয় না; ইতালীতে জাহা হয় না; ইতালীতে জাহার সময় স্থাভাতির সময় হইতে বঙ্ক্মণ হইয়া জাসিতেছে। এক এক জায়গায় সেই জ্বমীদার ও সেই প্রজা তিলার ভাসিতেছে প্রজাতে ক্রমার ধরিয়া চলিয়া আসিতেছে প্রজাকেরও জ্বমীতে স্বর্থ ক্রমার পিয়াছেন কোন

জারগার, লমীদারের জৈর্কে কোন
ভারগায় জমীদারে তুই তৃতীরাংশ। কিন্ত
ইতালীর জমী এত ভাল যে তথাপি
প্রজা আপনার খরচা ও মুনাফা পোষাইয়া থাজানার কিছু জংশ আজ্মাৎ
করে। পূর্কেই উক্ত হইরাছে ফুল্স ও
জর্মনি প্রভৃতি স্থানে জমীই প্রজার
স্থারা।

যে সকল দৃষ্টান্ত দেওয়া গেল সর্ব্বে থাজনা রিকার্ডোর মতানুষায়ী থাজানা অপেক্ষা কম। কিন্তু আয়ার্লভের এমনি ফুর্ডাগা বে, সেথানে ইহা অপেক্ষা আনেক বেশী থাজানা। প্রভার দিতে
পারে না, কিন্তু জমীদারের খাতার তাহার নামে পাওনা লেখা থাকে। তাহার
কারণ এই যে সেখানে প্রজার স্বত্ব
লোপ হইরাছে; জমীদার সর্ব্বে সর্বা।
লোক অনেক। জমী একথানি বলেছে এ
বস্ত হইবার সময় হাজার হাজার লোক
দরখান্ত করে, যে সকলের অপেকা।
অধিক দিতে পারিবে সেই সমী পাইবে।
গরীবলোক ক্ষমতার অতিরিক্ত দিব
বলিয়া স্বীকার করিয়া জনী লয়, দিতে
পারে না, পুরুবাক্ষক্রমে ক্রমশঃ বর্দ্ধনশীল
ঝণভার বহন করে।

2000 B Com

অভিজ্ঞান শকুন্তল।

১। ইহার নাটকর।

ত্বংসার শাপ শক্ষণার উপনাসের
প্রধান ঘটনা। এই ঘটনা আছে বলিয়া
শক্ষলার উপনাসে নাটক বলিয়া পরিগণিত হইতেছে। নচেৎ উপন্যাস মাত্র
হইত। বলা অনাবশ্যক যে উপন্যাস
হইলেই নাটক হয় না। আরবাউপন্যাসনামক গ্রন্থে সহস্রাধিক উপন্যাস
আছে; কিন্তু আরবা উপন্যাস নাটক
নহে। যে উপন্যাসের প্রধান উদ্দেশ্য
ন্ত্রাচরিক্রের আভান্তিরিক ন্ল প্রদর্শন
করান ভাহাকেই নাটকের উপন্যাস
বলে। মত্যাচরিত্র তুই প্রকার। বাহ্য-

জগতেরহানা অনুশাসিত হওরা এক প্রকার চরিত্রের লক্ষণ; এবং ৰাহ্যজগৎকে
শাসন করা জার এক প্রকার চরিত্রের
লক্ষণ। ছুইটি দবিদ্র বাক্তি হঠাও
প্রভুত ধনরাশি প্রাপ্ত ছুইল, পাইয়া এক
জন পূর্বের নাায় বিনয়নম রহিল।
দেখা যাইতেছে বে, বহির্জগতের ঘটনা
একজনকে বিচলিত করিতে পারিল,
জার একজনকে পারিল না; একজনের
মন শক্তি এবং দৃঢ্ভাসম্পর, আর এক
জনের মন ভারা নয়। একজন ধনের

िनागिठ हरेस, धन चांत्र धक्षारनत শাসিত হইল। বাছ্জগৎ একজনের ক রঞ্জিত করিল, আর একজনের বাহাজগৎকে রঞ্জিত করিল। এক র মন বাহুজগতের শক্তির বশীভূত; |হৃশক্তির শাসনে ভিন্ন ভিন্ন প্রাকৃতি াবুণ করিতেছে। আর একজনের মন নিল্পক্তির দারা বাহালগতের শক্তিকে হতবল এবং বশীভূত করিতেছে। হিরাজউদ্দোলা পলাশীর যুদ্ধে পরাজিত :ইয়া প্রাণভয়ে পলায়ন করিল। প্রথম ্নপোলিয়ান সমবেত ইউরোপকর্তৃক এবাদ্বীপে ভাড়িত হইয়া পুনরায় সমবেত ইউরোপকে পরাজয় করিবার নিমিত্ত এবাদীপ পরিভাগে করিয়া সমরানল এলালিত করিল। দিরাজ এবং নেপো-नेगान উভয়েই আফালনকারী। কিন্ত গরাজের আকালন শেষে ফকিরীতে পবিণত হটল। আবার মনে কর সেই কুককেত্রের মহাসমর চলিতেছে। আজ নায়ক। পাগুবদিগের আর শ্রেয় নাই। বুঝি আজিকার যুদ্ধেই পাওবপক বিনাশ-প্রাপ্রয়। জনরব উঠিল থৈ, অখথামা हठ इहेबाट्ड। त्जानाहार्यात्र क्षत्र वा-थेठ इहेग्रा छेठिल। जिनि मरन कति-লেন আর যুদ্ধের প্রয়োজন নাই। কিছ ক্থাটা ঠিক্ কি না? তিনি সত্যপ্রিয় ्मं পুত युधि छैत्रक बिकामा कतिरतन। ধনীবৈত্র ধর্মনিঠা 'ইভি—গলবে' শরিণত হইলা। শস্তাচার্য্য শস্ত্র পরি-

ত্যাগ করিয়া দাঁড়াইলেন। তার পর याहा इहेन ভात्रज्यामी এवः ভाद्यजाञ्च রাগী মাত্রেই জানেন। কি ভয়ানক আত্মহতা। যে মহাত্মা কখনও প্রবঞ্চনার কণা কহেন নাই, যিনি সভারাজাের অধীশ্ব বলিয়া পরিচিত, যিনি সত্য এবং धैयर्गात मर्गा मठारक है अक्षत्रनिधि বলিয়া আদর করিয়া আসিয়াছেন,ভিনিই কি না , আজ চিরসংস্কার দূবে নিকেপ করিয়া ঐশ্বর্গোর লোভে সত্য-সংহার করিলেন! একেই বলে প্রকৃত আয়-হত্যা,—আত্মহত্যা দ্রোণের নহে যুধি-ষ্ঠিরের—একেই বলে বাহুশক্তিরদারা অহুশাসিত হওয়া—বাহাশক্তির্বারা নি-ধন প্রাপ্তি। নাটককার এই প্রকার আত্মহত্যা নিবারণ করেন। এমনস্থল আত্মহত্যা না দেখাইয়া নাটককার আত্ম-रगीतव (मथारेवा थारकन: आजात भता-अग्र ना (प्याइता विजय (प्यान। आवात নেই ভীষণ সমরক্ষেত্র মনে কর। ভার-তের দামাজ্য লইয়া ঘোর যুদ্ধ হইতেছে। यिनि• त्मरे यूत्क खती श्रेतन, जिनि ভারতে রাজচক্রবন্তী হইবেন; যিনি সেই युक्त विकिञ इहेटनन जिनि यनि वैकिश থাকেন ভ পথের ভিথারী হইযা থাকি-বেন। ব্যাপার বড় সহজ নয়; উদ্দেশ্যও বড় কুদ্র নয়—হয় রাজ্যভোগ, না্হয় মৃষ্টিভিকা। ভরানক সমসা। এই সমস্যায় পড়িয়া কার মন ফাবিচলিত থাকে ? একটি অক্ষর উচ্চারণ করিলে রাজ্যভোগ হয়: বারবৎসর বনবাস

নিশ্বত হওয়া যায়; বংসরবাণী অজ্ঞাত-বাসেকী যন্ত্ৰণভোগ সাৰ্থক হয়; সতী-সাধবী কুললক্ষীর অপমানের প্রতি-শোধ হয়। 🖁 কিন্ত সেই অক্ষরটি উচ্চারণ করিলে সভ্যের বিপর্যায় ঘটে। আধুর একটি অকর উচ্চারণ করিলে রাজালাভ ना इहेना भरवत छिथाती इहेर इत: বারবৎসর বনবাদ টুচরবনবাসে পরিণত इम: वरमतवांशिनी यञ्चण खीवनवाा-भिनी यञ्जन। इहेन्रा माजातः, अर्थान्त्रभागात অসহ অথমান কুলের কলভ হইরা थाक। किन्न धरे व्यक्त हो डेका तन করিলে সভাের জায় হয়, এবং সভা-নিষ্ঠার পরাকাষ্ঠা দেখান হয়। সভাপ্রিয় ধর্মপুত্র যুধিষ্ঠির কি করিলেন ? না না ব্লিয়া হাঁ ব্লিলেন ৷ আর অমনি সম্ভ অগতের লোক ক্ষুত্ত্বহুদয়ে বলিয়া উঠিল -- ना. ७ । धर्माशुख युधिष्ठितत नााय वना হইল না, এবার যুধিষ্ঠিরের যুণিষ্ঠিরত্ব विनहे इहेल। किन्ह यूधिष्ठित यमि त्राचा-লোভ ভাগে করিয়া, বনবাস বিশ্বত হ্ইয়া, অজ্ঞাতবাসের যন্ত্রণায় দৃক্পাত না করিয়া, ভক্তিমতী সহধর্মিণীর অপ-मान इत्रां छाञ्चत नुकारेश दाथिया, কেবল সভা এবং গর্মের মুখ চাহিয়া 'না' বলিভেন, ভাছা হইলেই বা কি হইত ? তাহা হইলে কি সমস্ত অগৎ সহজমুখে ঠাছার প্রশংসা করিত না, রত দেখিয়া অগতের অভিতায় ধর্মবীর বলিয়া ভাষার পূজা করিছেন না ? ভাষা

হটলে আমরা কি সমন্ত মহাভারতের क्षपत्रहातिनी व्याधाप्तिका जुल्हरवार्य पृरव নিকেপ করিয়া শুধু এই বীরত্বপূর্ণ দা' শক্টী লইয়া মাতিয়া থাকিতাম না ? তাহা ছইলে কি এই একাকরনির্দিত 'না' শব্দে আমহা সহস্র আগায়িকার" ননোহারিত অমুভব করিতাম না ? কিন্ত কেনই বা করিভাম ? করিভাম, ভাহার কারণ এই। যুধিষ্ঠিরকে সভানিষ্ঠ ধর্মপুত্র वित्रा स्नानि, धावः मिशा स्नामिश्राहि; এবং তাই বলিয়াই তাঁহাকে পূলা করিয়া আসিয়াছি। এখন দেখি সেই সভানিষ্ঠা ঘোর বিপদগ্ত। এখন দেখি সেই সভানিষ্ঠার ভয়ানক পরীকা উপস্থিত। এখন দেখি 'একদিকে সভানিষ্ঠা এবং गर्लगान, जात अकतिरक अकिंगाञ নিথাকণা, কিন্তু স্যাগরা পৃথিবীর আধি-পত্য, এবং হৃদয়ভেদী অপমানের প্রতি-শোধ। কি ভয়ানক পরীকা। কি ভয়ানক জ্বরযুদ্ধ! মনে করিলে ভড়িত হইতে হয়, ভাবিয়া দিশাহারা হইতে হয়। এ পরীকায় কয়জন উত্তীর্ণ হইতে शाद्र, व यूष्क क्यब्रानत बत्रगां इत्र ? কিন্ত যদি দেখি ধর্মপুত্র যুখিটির সমাগরা পুলিবীর আধিপত্য ভুচ্ছ জ্ঞান করিয়া, একেবারে ধর্ম এবং সর্বানাশকে আলিগন मिटिए हन, ज्यन कि मान इस मा (य मार्छा है वर्गदाका छेडानिक इटेबाट ? তখন কি উন্নতমন আরো উন্নত হয়-রা? তগন কি মতুবাপ্তকৃতিকে দেবপ্রকৃতি-(बार्ष क्षत्र जास्यादन डेमाड बहेता डेटर्ड

অবং সে আহলাদই বা কিরকম াদ ? গভীর, নির্মাল, উৎসাহপূর্ণ, माशी, भक्तिमकाती, जाजात टगोतन হিমাবুদ্ধিকারী। সহস্র আরব্যো-র্ণীস পড়িলে যে আহলাদ হয় দে बाह्नाम ध बाह्नारमत मिरक खयात्र मा, এ আহলাদের শতাংশের একাংশ-পরি-াণ্ড হয় না। এত আহলাদ কেন ा १ ना धर्म निभम् श्रेष्ठ इहेग्रा व्यापन [হিমা রকা করিল বলিয়া। মহাকবি ্সকাপীরবের একটি চরিত্র ব্ঝিয়া দেখ। श्रावस्त वामानियत উপकातार्थ উদার-চতা এণ্টোনিয় সাইলকের নিকট টাকা চর্ছ করিয়া একখানি খত লিখিয়া রলেন। ভাহাতে এইরপ অস্থীকার बिटनन (य. यपि छिनमारमत मरभा ामगहिक **है। क**ंदरभाव कतिरक सा াারেন তবে স্থিলক তাঁহার শারীর वेटक कर्मामय गाःम कावियां लहेदन । ণ্টোনির জানিতেন যে, সেই সময়ের ধ্যে তাঁহার বাণিজাপোতগুলি ধনপূর্ণ ইয়া ফিরিয়া আসিবে গং তিনি ক্লেশে টাকা পরিশোধ করিয়া প্রাণ-কা করিতে পারিবেন। কিন্ত ঘটিল ১ নিরপিত সময়ের মধ্যে বালিজা-শত ফিরিল না। এবং নিষ্ঠুর সাইলক দীকত মাংস্থপ্ত পাইবার প্রার্থনায় জ্বারে অভিযোগ করিল। , इहें न। তথন উন্নতমনা উদার-পরছ: थका छत्र, भटताभकाती कि कतिरानन? ठिनि उपन

বে অবস্থায় পড়িয়াছেন ভাইবতে মহোঁরত মনও অবনত হইয়া পড়ে; উদার চিন্তু সক্ষ্রিত হইয়া থায়; পরতঃপকাতরতা নিজহুঃপকাতরতায় বিলুপ্ত হয়; হৃদয় ফাটিয়া যায়; মন কেলুবর্জ্জিত গ্রহের আয় অপরিচিত পথে ছুটিয়া বেড়ায়া তাহার সেই বিপদসহুল অবস্থা দেথিয়া শয়ং বিচারপতিই শোকসংক্ষ্ হইয়া উঠিলেন। তাহার বন্ধ্গণ, যাহাদের উপকারার্থ তিনি আজ মৃত্যুমুপে আদিয়া দাড়াইয়াছেন, তাহারা তাহার নিঠুব প্রণদাতাব চরণ ধবিয়া করুণা ভিক্ষা করিতেছেন। কিন্তু তিনি কি করিলেন পূতিনি স্থিরচিত্তে দৃঢ়ভাপূর্ণ অন্তঃকরণে বিচারণতিকে বলিলেন—

"I have heard,
Your grace hath ta'en great pains
to qualify

His rigorous course: but since he stands obdurate,

And that no lawful means can carry mo

Out of his envy's reach, I do oppose

My patience to his fury; and am arm'd To suffer with a quietness of spirit, The very tyranny and rage of his."

এই কি সেই এখন্যালানী, স্থান্যালানী, প্রিয়বদ্ধ্বেটিত, সন্মিতম্প, প্রোন্পূর্ব এটোনিয় ? তাঁহার কথা তনিয়া

ত ভাহাই বোধ হয়। কিন্তু বাস্তবিক আজ তিনি কি ? বাস্তবিক আজ তিনি পথের ভিখারী: আল তাঁহার चकुन धैर्यम् चक्त पृष्टे धैर्याम् नाम भूरना विलीन इहेशा शिशारह; आंख डिनि তাঁহার প্রফুলভাময়, করণাজ্যোভিবিভৃ-যিত, জীতিপূর্ণ, হাসাময় গৃহ হইতে তা-ড়িত হইয়া বিচারালয়ে দাড়াইয়া মৃত্যুর আজা প্রতীকা করিতেছেন ! তবুও ওঁ।হার এই तक्य कथा ? পাঠक ! कुलि गांशारे मान कत, आमि धरे (म्वजूना, उत्राज्याना বণিক্রাজকে মহুধা মনে করিতে পারি না-আমি তাঁহাকে দেবতা মনে করি! गामाना मसूबा इटेल व्यक्तिकांत विशरम কি তাঁহাকে পরোপকারত্রতে দুঢ়ত্রতী इहेब्रा कीवनवित्रक्कन कतिवात निभिन्छ বন্ধপরিকর দেখিতাম, না আপনাকে আপনি ভুলিয়া, জন্মাবচ্ছিয় সংস্থার হারা-ইয়া, উন্তম্ন কুঞ্চি করিয়া,জীবনলাল-সায় ধুলাবলুঞ্জিত হইতে দেখিতাম? পাঠক! ইতাকেট প্রকৃত নাটকরহ্যা বলে। প্রকৃত নাউক্কার ধর্মের অব-তারণা করেন; তাহার শক্তি, সৌন্দর্যা, মহত্ত সকলই পাঠককে মনোহারিণী जुलिका पित्रा जाँकिया जाँकिया (प्रधान; সেই বিমুগ্ধকর চিত্তেরদারা পাঠকের মন মাভাইয়া তুলেন; তুলিয়া আবার त्महे विक्रीित जीवनासकात नित्मन करत्रन ; देश अक्षकाद्यत अगनि खन दय ভাহার মধ্যে ধর্মের মুগ স্বভাবতই মলিন इरेग्ना यारेवात मञ्जावना, माकि विनष्ठे

হইবার মন্তাবনা, মহত্তীনত্তে পরিণ্ড হইবার সম্ভারনা। এই ছোর অবস্থা-বিশর্ষা দেখিয়া পাঠকের মন আকুলিত হইয়। উঠে ; গ্রিয়বস্তর শোচনীয় অবস্থা দেভিয়া পাঠকের মন যন্ত্রাময় হইরা উঠে; ধর্ম নিজ মহত্ত রকা করিতে বুঝি বা অথারগ হয় এই আশস্বায় পাঠকের হাদ্য বিলোড়িত হইতে থাকে। ক্রেমে অস্ক্রকাব স্থিতে থাকে: দেখা যায় (य धर्मा जाि : मिलन दम्र नाहे, यमन উজ্জ্বল ছিল তেমনি উজ্জ্বল আছে: বাহুত্রগৎ অন্তর্জগতে চিহ্নাত অধিত করিতে পারে নাই; স্বার্থজ্ঞান তুলিতে পারে নাই , নিঃস্বার্থ তেজোম্ম ধর্ম নিঃস্বার্থ তেল্লোনয়ই রহিয়াছে। তখন পাঠকের মন মহুয়োর মহুয়াহ वृत्तिशा विक्षिञ्चल इस धवः निर्माल, शविता, স্বৰ্গীয় আনন্দজ্যোতিতে ভাগিতে থাকে এবং হাসিতে থাকে। একেই আমি वि नांठेरकत नांठेक । गक्न नांठे-কের কথা বলিতেছি না। নাটকের শ্রেণীবিশেষের কথা বলিতেছি। সেক্র-শীয়রের Merchant of Venice এবং কালিদাসের অভিজ্ঞানশকুত্বল এই শ্রেণীর অন্তৰ্গত। এখন অভিজ্ঞানশকুস্তলের নাটকত কোথার দেখা যাউক।

নাটকখানির নাম সত্ত্বেও আমার মতে
অভিজ্ঞানশকুত্তল একখানি নায়কপ্রধান
নাটক। শকুত্তলা বড় কম নন; কিন্ত কুমস্তুই অভিজ্ঞানশকুত্তলের প্রধান
চরিত্র। দেখা যাটক এই কুমন্ত কে। कान अकि मक्ट्यात गन अवः श्रमश খুঝিতে হইলে অগ্রে তাহার শরীরথানি वृत्तित्रा (पिथिटिङ इत्रा भन अवः गंतीत, ত্র তুইয়ে অতি নিকটসম্বন্ধ। চিত্র শরীরে আঁকা থাকে। गाहात एग तकम मानमिक ভाব এবং ক্তি ভাহার শারীরিক কার্যাসকলও एनसूनायी इटेबा थाटक। নির্জনচিম্বাপ্রিয়, তাহার দেহেব স্থির, কিষ্ট, এবং সঙ্কৃতিত ভাব হইয়া থাকে। य वाकि উनामशृर्व धवः कारीक्षित्र তাহার দেহের সজীব, চঞ্চল, ঈষত্রা, এবং বলিষ্ঠ ভাব হইয়া পাকে। ৰাক্তি বিলাসপ্রিয় এবং ইন্তিয়সেবাছ-রক্ত তাহার দেহের কোমল, অসহিফু এবং আলুলায়িত ভাব হটয়। থাকে। कालिमान एपाछरक टेक्सियमाराभीन क রিয়া দেখাইয়াছেন। কিন্তু সেই isconব माम गाम छाञाह भारीतिय अवः भारी-রিক কার্যামুরাগেরও একখনি চিতা আমাদিগকে দিয়াছেন। দ্বিভীয় অক্ষে ছ্মস্তকে দেখিয়া তাঁহার সেনাপতি মনে মনে ভাবিতেছেন-

অনবরত ধমুর্জ্জাক্ষালনজুরকর্মা রবিকিরণসহিষ্ণু: স্বেদলেশৈরভিয়:। অপচিতমপি গাত্রং ব্যায়ক্তবাদলক্ষ্যং গিরিচর ইব নাগঃ প্রাণসারং বিভর্তি॥

হয়ত রাজা—ভারতের অতুলমহিনা-প্র চক্তবংশীয় রাজাগণেব মধ্যে এক বি প্রথাতেলামা রাজা। তিনি রজগর্ভা দ্রেতভূমির অতুল ঐপর্গের অ্ধীশ্র।

वैधर्गाञ्चल विवागतानि मान कतिरवह তাঁহার হইতে পারে; কিন্তু তিনি বিলাস-বিষেধী। তিনি বীবোচিতকর্গ্নিরত। তিনি শারীরিক স্থকে তুচ্ছ জ্ঞান ক-রিয়া জ্যাসম্পর ধমুকহন্তে প্রচণ্ড রবি-কিরণে বীরের নাায় বিচরণ করিয়া থাকেন। বিলাস্মগ্রের নাায় তাঁহার দেছ জীবনপ্রভাহীন শিথিলগ্রন্থি নয়। গিরি-চর হন্তীর ন্যায় পে দেহ কেবলমাত্র वनवाश्चक। এই ছবিখানি দেখিয়া কে বলিতে পারে থে, চিত্রিত ব্যক্তি অসার বিলাসপ্রিয় বা ইন্তিয়পরতর। এ কি একজন জিতেন্দ্রি পুরুষকারপূর্ণ পুরুষের ছবি নর পূজাবার ভাধুুতা নর। যথন সেনাপতি হয়স্তকে দেখিয়া মনে মনে তাঁহার শারীরিক বীরভাবের প্রশংসা করিতেছেন, তথন মানসিক অবস্থা কি ! শকুন্তলারত্ন দেশিয়া তথন তাঁহার মন বাাকুল হইয়া উঠি-ग्राष्ट्र। डिनि गर्यनारे ভाविटिएन. (मरे भवित तक डाँहात हहेर्य कि ना। विष्यक आभाषिशक विनशा पिटनन (य, ভিনি পূর্বরাত্তে নিমেয্যাত্ত নিম্রালাভ করেন নাই। এবং আম্বার ভাঁছাকে মুহুর্তারে শ্রনগৃহ ভাগি করিয়া আদি-বার সময় দেখিয়াছি, তিনি মনে মনে তোলাপাড়া করিতেছেন—এবং ভাসিয়া थिय विष्यदकत नागिमारि अनियां अ खनिटिएन ना। जारात (मह मूहार्ख हे ত দেনাপতি আসিলেন; কিন্তু ভিনি ত এই বিষম अनग्रताथात हिल्म छ । जुण-

ভের শ্রীরে বা মুগাবয়বে দেখিতে পাইলেন না। জবে ত চ্মন্ত খু কর্মা বীর নন। তবে ত তিনি কর্মবীর এবং চিত্তবীর ছুইই ৷ তিনি শে শুধু প্রচণ্ড রবিকিরণ সহ্ করিতে পারেন তা নর; চিত্রশংয্মও তাঁহার তেমনি ভাভাস্ত এবং স্বেচ্ছাধীন। ফলফ: कालिमाम এই অন্তুত চিত্তদংযদের চিত্র অতিশয় জাজ্জলামান করিয়া তুলিয়াছেন। পাঠক! 'আইস, একবার মহর্বি কণের সাশ্রমে প্রবেশ করিয়া দেখি। শকুস্তলা, প্রিয় মদা এবং অনস্যা আশ্রের তরুলতায় জলদেচন করিয়া বেড়াইতেছেন এবং কত কি কথা কহিতেছেন। তু স্বা স্ত বুক্ষাস্তবালে থাকিয়া দেখিতেছেন এবং মুগ্ধ হইতেছেন। সর্বলোকপ্রিয় ভ্রমবটী শকুন্তলাকে বাতিব্যস্ত করিয়া তুলিয়াছে (पिथिया, ज्याख गत्न गत्न ভावि जिल्लाम-

মতোষতঃ ষট্চরণে'হছিবর্ত্তে তত্ততঃ প্রেবিত্বাসলোচনা। বিবর্ত্তিক্ররিয়সদা শিক্ষতে ভয়াদকামাহপি হি দৃষ্টিবিভ্রমম্। চলাপাকাং দৃষ্টিং স্পৃশ্যি বহুংশ। বেপথু-

মতীং রহস্তাপ্যায়ীব স্থনসি মৃত কর্ণাস্তিকচরঃ। করং বাধুষ্ট্যাঃ পিবসি রতিসর্বস্থে মধরং নয়ং তত্তাব্যেষামধুকর হতাত্তং থলু কৃতী॥

এ বড় সহল ভাব নয়। যে ভাবে ভোর হইটো সামুষ-চিত্তসংগদে প্রায়ই বিফ্ল্যত্ব হয়, এ সেই ভাব। ছয়স্ত এখন সেই ভাবে ভোর। কিন্তু এখনি ভাত্তাকে সেই স্থীত্তারের স্থাপীন হইতে হইল, শুধু তাও নয়। তাঁদের স্থা-সিক্ত সন্বোধে তাঁহাদের কাছে ৰসিভে হইল'। এমন অবভার পড়িলে দে রক্ম ভাব, ভরিয়া উঠে, না কমিয়া যায় ? প্রিয়স্থদা বলুক ত্মান্ডের কি হইয়াছে—

"হলা অনস্এ কোণু ক্থু এলো ভ্রব-গাহগন্তীর।কিদী মহরং আলবস্থো প্তত্দাকিপঞ্চ বিতথা-রেদি।

ই জির্মস্থ বাজির কি এই রক্ম প্রভাময় গান্ধীবাঁপরিপূর্ণ মুগ-ভাব হইয়া थार्क ? धना इच्चरञ्ज हिन्दुमःयम, धना তাঁহার আত্মজয় ৷ এখনও কিন্তু দেখি-বার বাঁকি আছে। পাঠক। অভিজান শকুন্তলের ভৃতীয় অঙ্কটি মনে কর। শকুন্তলা অসহ জালায় জলিয়া ষাইতে-ছেন। তিনি বলিতেছেন যে সেই মহাপুরুষকে না পাইলে আমি জীবনান্ত क्वित। इषा उ व्यनम्थ्नि मान এই मकन (मिशिएएस्स व्यवस अनिष्डाह्म, व्यव याउनात भत्र भिलन इहेल। कि छ भिल-त्नत ऋशायाम कतिवात छमःग्रमात्व গুক্লনসমাধ্যাশকায় শকুস্থলাকে স্থানা-স্থারিত হইতে হইল। তথন গুলাস্থের কি অবস্থা! তপন ডিনি প্রাক্ষলিতান্তঃ-ক্রণে প্রতিনিঃখাসে অনল খাসিয়া ফেলিতেছেন। সহসা রাক্ষদণীড়িত তাপসগণের ভয়ার্দ্তরেব শ্রবণ করিলেন। শ্রবণ করিয়াই—"ভো√ভা ভূপন্বিনো गारेड्ड गारेड्ड अवगश्गांगड ज्व-" এই আখাসবাক্য ভিরগন্তীরত্বরে উচ্চারণ

করিতে করিতে রাক্ষসবধে নিজ্ঞান্ত হই-লেন। যেন শকুন্তলার নামও গুনেন নাই! যেন জাঁহার কিছুই হয় নাই! আশ্চর্যা পুরুষ!

এই অদ্ভূত ঘটনাটি কিঞ্চিং বিবেচনা করিয়া দেখিলে তুমস্তচরিত্রের প্রশস্ত-ভিত্তি, অনন্ত বিস্তার এবং অনুস্ত গভী-রতা বুঝিতে পারা যায়। তখন বৃঝিতে পারা যায় যে ধর্মাতুরাগ এবং কর্তবা-জানই সেই অলৌকিক চরিত্রের মূল-ভিত্তি এবং প্রাধান উপাদান। ব্বিতে পারা যায় যে ধর্মপালন এবং কর্ত্তবাসাধনের কাছে হুম্বস্তের বিবেচনায় আব কিছুই কিছু নয়—তিনি নিজেও কিছু নয়, তাঁহার শক্সলাও কিছু নয়, তাঁহার নিজের কিছুই কিছু নয়। তাঁহার ধর্ম-ভাব তাঁহার প্রতিনি:খাসে স্থমিষ্ট মৃত্যক মলয়বায়ুর ন্যায় নির্গত হয়। ৠষিগণের সন্তোষার্থ মৃগান্তুসরণে নিবুত্ত হইয়া তুল্লন্ত নহর্ষি কণের পবিত্র আ**শ্রমে অবেশ** করি-তেচেন, এমন সময়ে তাঁহার দক্ষিণবাহ শন্তি হইল। তিনি বলিয়া উঠিলেন—

"লরে শাস্ত্রিদমাশ্রমপদং কুরঁতি চ বাছঃ কুতঃ ফলমিহামাকং।° অণবা ভবিত্রানাং ভবস্থি দারাবি

অয়ে শান্ত মিদমাশ্রমপদং—তিনটি কি
চারিটি বই কথা নয়; কিন্ত শুনিলে
প্রাণটি জ্ডাইরা যায়। মনে হয় যেন
সরাই সেই শান্তিরাজো প্রবেশ করি
। মনে হয় যেন দেই পরিত্র শান্তিময়

তপসাধ্যম এবং ত্মছের প্রশন্ত মন একই
পদার্থ । আশ্রম প্রবেশ করিরাই স্থীক্রমকে দেখিলেন— ঠাছারা তাপদোপমোগী-বন্ধল-পরিধানা— মণিমুক্তা-বিহীনা
— মহাম্লাবস্ত্র এবং অজ্বরাগবর্জিতা।
তম্মস্ত রাজা; ভারতের মণিমাণিকা সকলই তাঁহার; তাঁহার অন্তঃপুর মণিমাণিকার জ্যোতিতে জ্যোতির্ম্ম। তিনি
একবার মনে করিলেন, এ ঠিক্ হয়
নাই। মনে করিয়াই আবার ভাবি-

সরসিজমনুবিদ্ধং শৈবলেনাপি রমাং
মলিনমপি হিমাংশোর্লক্ষ লক্ষ্মীংভনোতি।
ইয়মধিকমনোজ্ঞা বক্তলেনাপি তথী
কিমিব হি মধুবাণাং ম ওনং নাক্তনাং॥
কঠিনমপি মৃগাক্ষ্যা বক্তলং কান্তর্কপং
ন মনসি কচিভঙ্গং অলমপাদেধাতি।
বিক্রমবসিদ্ধারাঃ স্তোকনিশ্বুক্তকণ্ঠং
নিজমিব কমলিন্যাঃ কর্কশং বৃস্তজালং॥

কি মনোহর ভাব ! কিবা ক্সচিসঙ্গত কলনা ! কি ন্যায়পরায়ণ হৃদয় ! সৌল্বর্যা নিজেই ক্লের—তাহার আবার পরিচ্ছল পারিপাট্য কি ? এ কথা কয়জনের মুথে শুনা যায় ? এ কথা যে না বলে, সে সৌল্বর্যার অবমাননা করে। এ কথা যে বলে মে সৌল্বর্যার মাহা প্রাপা তাহা সৌল্ব্যাকে দেয়; ভাহারই ক্রচি যথার্থ ধর্ম্মূলক; সেই সৌল্ব্যার স্থলর রূপ বাবহার করিতে সক্ষম হয়্ম ছয়য়য় একজন হিল্রালা; হিল্পারে তাহার অগাধ ভক্তি। আশ্রমপ্রবেশকালে তাঁহার দক্ষিণবাহ্ কিন্তু হইল এবং

চিনি হিন্দু বলিয়া ভাহাতে ভৰিতবা-खाव कथा भएन कतिस्ति। **शतका**रि য'হ। দেশিলেন তাহাতে তাঁহার মতন শাসভাকের মনে সহচেট এমন ভাষ জ্মিতে পাৰে যে বৃঝি সেই ভবিতবা-তার স্ত্রণাত হইতেতে। আবার ভুধু (मथा नया याहा अनित्नन छोडां उपहे ভবিতবাতার প্রতিপোষক। যাহা শুনি-লেন ভাষাতে বুঝিলেন বে শকুন্তলা छशित्रीव गांश काल काष्ठे। टेरवन ना। তখন মনোধর্ম তাহার ধর্মদংস্কারকে দৃঢ়ীভূত কবিয়া তুলিল এবং ধর্মানংস্কার মনোধর্মকে প্রশ্রম দৈতে বাগিল। তথন তাঁহার স্পৃহা জন্মিয়া ক্রমে বলবভী रहेट गांशिन। किंद्ध रेम म्लुरा এখনও মিলনস্পৃহারূপে পরিক্ট হয় নাই। কে-वल भोनाग्र (वाद्यह निहिछ बहिशादछ। হুম্মন্ত ভাবিকেছেন---

''অবিতথ মাহ প্রিয়ন্ধনা। তথাস্থস্যাঃ— অধ্বঃ কি সলম্ব।গঃ কোমলবিটপারু কারিণে: বাহু।

কুস্থমমিৰ লোভনীয়ং যৌবনমঙ্গের্ সরদ্ধন্।।

ভার গরেই গুনিবেন শকুন্তলা চুত-বুক্ষাপ্রিতা কুস্থমিতা সহকারগতাটীকে দেখিয়া বলিতেছেন—

হলা র্মণীও কৃথু কালো ইমস্ম পাদ-বমিছ্নখন রদিঅবোসফ্তো জেণ ণব কৃষ্ঠমজোবলা ণোমালিমা অসংপি বছ

क्षमदा क्षमदा भिनियां श्री क्षिति কচিতে মিলিয়া গেল; ভাবে ভাবে মিলিয়া গেল। কিন্তু একটি বিষয়ে মিল হইল না। শকুন্তলা সহকারণভাটীর আশ্রমলাভের কথা বলিয়াছিলেন; হুমুস্ত मक्छलात महत्यः (मति এখনও বলেন, প্রিয়ন্ত্রদা সেই আভাবটি পুরাইরা দিল। হ্মন্ত ব্ঝিলেন যে শকুন্তলা অভিলাধ বতী হইয়াছেন। কিন্তু তিনি আহলানে আটখানা না হইয়া চিস্কিত হইয়া পড়ি-লেন। ভাবিতে লাগিলেন বুঝি শকুন্তলা কণ্ত্হিত।—ত্রাস্থী, ভাঁহার সহিত শকু-স্তলার মিলন হইতে পারিবেক না। বেমন অভিলাষ বলবতী হইয়া উঠিল অমনি ধার্মিকের ধর্মচিস্থা উদয় হইল। এইথানে স্থচতুর মহাকবি জগদিখ্যাত खगद-ठाइना घरेनाने मःयाखना कतिः লেন। সে ঘটনাটীর অর্থ-শারীরিক মিলন, শারীরিক সম্ভোগ। অভিলাষীর মনকে মাতাইয়া তুলিতে হইলে ইহার चार्थका द्वेकितमञ् चर्या वत्र को भन अवनम्बन कर्ता यात्र कि ना मर्टन्स्ह। ত্মান্তের বিচলিত মন জারো বিচলিত किछ (महे महत्र महत्र क्रेश दितिन।

শকুস্তবার জাতি এবং উৎপত্তিবিষয়ক

. मत्कह व्यादा वनवर इंडेग्रा উঠিতেছে।

বোধ হয় তৃত্মত্তের ধর্মাতুরাগ -

ফলদাএ উভাভোত্রকুপুমো সহলারে।।

^{*} অস্রাগোৎপীদক বস্তু দেখিয়া মনে অসুরাগের সঞ্রে হওয়া অর্থে মনোধ্য শব্দ ব্যবহার কবিলাম।

াসংযম শক্তি কম হইলে সেই দণ্ডেই

শিবিত্র তপসাপ্রেম কলুমিত হইরা যাইত।
তার পার সকলের একত্রে বসিরা কথোপকথন। তথন হয়ত শকুস্তলার বৃত্তান্ত ভনিরা সম্পূর্ণ স্বাধীনতা লাভ করিয়াছেন। প্রিয়ম্বন। তাঁহাকে কণ্বের অভিপ্রায় জানাইরাছেন। জানিরা তাঁহার
স্বায়ের ভার মোচন হইরা গিরাছে।
তিনি তপন সাহস পাইরাছেন; তাঁহার
ক্রয়ের ব্রিয়াছে যে—

আশদ্ধনে যদ্যিং তদিদং স্পৃশক্ষমং রক্ষ্।

এমন সময় প্রিয়দ্দার কথায় শকুন্তলা
রাগ করিয়া, 'সব বলিয়া দিন' বলিয়া
গৌতমীর কাছে যাইতে উদ্যুত হইলেম।
ছমপ্তের হৃদয় আকুলিত হইয়া শকুন্তলাকে প্রতিনির্থ করিবে বলিয়া যেন
কিঞ্জিং অগ্রসর হইয়াই তথনি আবার
সক্ষিত হইয়া গোল। তিনি মনে মনে
ভাবিলেন—

অংগ চেষ্ট:মুরূপিণী কানিঘনচিত্তবৃত্তি:।

জহং হি-।

অজ্যান্যসূনিতনয়াং সহনা বিনয়েন বারিত প্রসর:।

ষয়ানাদচলরপি গজেব পুনঃ প্রতি-

নিবৃত্তঃ।

ছমন্ত শকুন্তলার মন ব্রিয়া থাকুন আর নাই থাকুন, শকুন্তলার উপর এ পর্মান্ত তাহার কোন অধিকার জন্মে নাই। তিনি গমনোদাতা শকুন্তলাকে নিবৃত্ত করিবার কে? যে রক্ষ ার্ভা ইইয় পিয়াছে, তাহাতে শকু- স্থলাকে চল্চের আড়াল করিতে ইচ্ছা হয় না বটে, কেন না দেখিয়া শুনিয়া হলয় ভয়ানক আবেগবান্ হইয়া উঠি-য়াছে। কিন্তু সে হালয় উাহায়; শকুস্ত-লায় ত নয়। ছয়য়ৢ সৃব্বিগুণসম্পাল— ছয়য় প্রকৃত উয়তননা—ছয়য়ৢ ধর্মবীয়। তাহায় হালয়েয় বয়া তাহায়ই হাতে। সেই হালয়েয় আশাস্তু উলাম সেই হালয়েয় নিঃশেষিত হইয়া গেল! পানপেকে চ্ণ-চ্কুও থদিল না। ধনা ছয়য়ৢ! ধন্য কালিদাস!

ভার পর বিদ্যকের সহিত কথা।
সেকালের বিদ্যক সেকালের রাজাদের
'ইয়ার'। রাজাদিগকে সর্বাদাই রাজঠাটে থাকিতে হইত; মনের কথা সকলের কাছে বলিতে পারিভেন না। কিছু
বিদ্যকের কাছে ঠাটভাট থাকিত না;
প্রাণের কথা প্রাণ ভরিয়া বলিতেন।
মাধবা চ্মন্তকে যেন কিঞ্ছিৎ জ্ঞান দিবার
উদ্দেশ্যে বলিলেন—

ভো জ্বাসা তবন্মিকপ্লধা অণ্যত্থণীয়া

তা কিং তাঞ দিত্ত যাএ। অমনি ছম্মস্ত যেন বিষণরদংশিতের নায়ে সম্পৌড়িত হইয়া বলিয়া উঠি-

धियुर्ग !

(लन--

নিবারিত নিমেষাভি নেঁএপংক্তিভিক্ষুণ:।
নবামিদুকলাং লোক: কৈন ভারিন পশাতি॥

ন চ পরিহার্যো বৈস্তানি জ্লাস্ত্সা মনঃ প্রবর্ততে।। তার পর রাজা পূর্ক্ষিনের দকল কথা সাধবাকে বলিলেন। বলিয়া জিজাসা করিলেন—বল দেখি, মাধবা, কি অছিলা করিয়া দেই আশ্রেম ঘাই। মাধবা বলিলেন কেন, আসার প্রাণাষ্ঠাংশ চাই, এই বলিয়া যাও। ছম্মন্ত ক্ষেত্র রবৈরে বলিয়া উঠিলেন—
মুর্থ! অন্যমেব ভাগধেয়মেতে ভপবিনো
মে নির্ক্ষপত্তি যো রম্বরাশীনপি বিহায়া-

হতিনন্দতে। পশ্য—
যত্তিষ্ঠতি বৰ্ণেভ্যান্পাণাং ক্ষয়ি তন্ধনন্।
তপঃ বড়্ভাগনক্ষযাং দদত্যারণ্যকা

হি নঃ॥

কি গভীর, কি তৃষ্ঠ্র ধর্মভাব! কি
মনোহর ধর্মাহ্রাগ! যে শকুস্তনার
নিমিত্ত স্থান্ত এই ধর্মাহ্রাগের কাছে
কিছুই নয়! শকুস্তলা যতই কেন প্রিয়
ইউন না, তা বলিয়া কি তাঁহার জনা
প্রির ধর্মের অবনাননা করিতে হইবেক ? তা বলিয়া কি ধর্মকে প্রেমের
কুটলকৌশলে পরিণত করিয়া ত্বাস্পাদ
করিতে হইবেক ? বিদুষ্কের কাছেও এ
কথা বলিতে ত্মান্তের ত্বা। হয়!

তার পর কয়েকজন তপদী আসিদা কুমান্তকে রাজসকর্ত্ক আশ্রমণী ভার স-স্থাদ দিলেন। কুমান্ত তাঁহাদিগকে অভ্যা দান করিনা রথসজ্জা করিবার আজ্ঞা দিলেন; রপসজ্জিত হইল। এসন সময়ে রাজধানী হইতে সাতৃ আজ্ঞা আসিয়া উপন্থিত হইল। তাঁহারই কল্যাণ্থি রাজ্যাত। ত্রত করিবেন, অতএব তাঁছ হাকে যাইতে হইবেক। হ্লস্ত সকটে পড়িলেন। শ্বিগণও যেমন মাননীর, রাজ্যাতাও তেমনি মাননীয়। ''ইত উপস্থিমাং কার্যামিতো গুরুজনাজ্ঞা উভয় মনভিক্রমণীয়ং।'' তিনি জানিতেন মে রাজ্যাতা মাধবাকে বরাবর পুজবং. ভালবাসেন। অতএব স্নেহ এবং ভক্তিপ্র মনে মাধবাকে রাজ্যাতার নিকট পাঠাইয়া দিলেন। কবি একটি কৌশলে তাঁহার আগ্যায়িকার একটি প্রধান উল্লেশ্য সাধন করিলেন এবং তাঁহার হ্মস্ত যে কাহারও প্রতি কর্তব্যবিমুগ নন, তাহাও স্থলবর্ত্রপি দেখাইয়া দিলেন।

হুম্মন্ত রাজা। কিন্তু কালিদাস কি তাঁহার রাজকার্য্যের কথা কিছুই বলেন माहे। तम कथा है ना बानित्न छ कि हूरे काना इरेन ना। ठिनि मूनिश्रिविदक সম্রম করিয়া থাকেন: পিতামাতার ভাষ श्वक्रकारक छालवारम्म अवः मन्नान कः त्त्रन : তिनि **চिखनः**यरम श्रमिष्ठवन ; धर्म-त्मवात्र এकाछाहिन्छ ; खानदत्र विश्वक्रमना ; मक्तनात्म धानीमविक्तमः भानीत्रशानत কষ্টসহিকু। কিন্তু তিনি রাজকার্গ্যে কিরূপ ? কালিদাস তাহাত আমাদিগকে বলিয়া দিয়াছেন। কিন্তু যে প্রণালীতে विवाहिन त्मी कि हमरकात ! क्ष्री পার্বভারন,অক্ষরনামা মিবারমন্ত্রী ভাষাই भात गात्र, ताकगतकादा थाकिया हुक इहें ब्राइन । (य यष्टि (यो ब्राइन (क वन ভাঁহার উচ্চ পদণীর চিহ্নস্বরূপ

যৃষ্টি এখন তাঁহার অন্ধের নড়ী য়া দাড়াইয়াছে। সে যৃষ্টির সাহায্য বাতিরেকে এখন তিনি পদশ্চালনে তিনি যে শুধু হু श अरक मि তেছেন এমত নয়া ছল্লান্তের পিতা, পিতানহ হয় ত প্রপিতানহকেও দেখি য়াছেন। হুমান্ত তাঁহার কাছে 'কালিকার ্ছেলে' বই নয়। শাস[্]রব প্রভৃতি রাজ-প্রাসাদে আদিয়া রাজদর্শনের প্রার্থনা कानाइयारहन छनिया तुझ वहमनी कः কুকী ভাবিতেছেন:--যে প্রজাবৎসল নর-পতি রাজকার্যাকরত পরিশান্ত ২ইয়া **दर्गाव अवकामगाञ कतिराग, आ**नि কেনন করিয়া তাহাকে এখনি ঋষি-কুণারদিগের আগমনসম্বাদ দিব। কি মেহ ! পিতাও সন্তানের ক্লেশে এত দূব কাতরতা প্রকাশ করেন কি না স-লেই। 'ছুমুটের প্রভাপালনকার্যার शागब देशाब अप्यक्ता स्वत्रशाशी व्यवान পাওয়া যাইতে পারে না। বক্ত কবি देशात व्यापका । अन्य शाही अभाग विशा (छन। दृष्क कक्ष्की धक्यादमाञ स्मरा-কট হইয়া পরকণেই স্পূচ্চিতে বলিতে-ছেন—

''ষথবা কুতো বিশ্রামো লোকপালা-নাং।''

তিনি কি রকম রাজা বাঁহার কর্মানারীর

তে কর্তবানিষ্ঠা— এত রাজনীতিপ্রিয়তা

তে সাহস ও দৃঢ়তাপূর্ণ মন ? কঞ্কী,

ব্যাধই অফুপন রাজার অহুপন

! বৃদ্ধর ! তুমি হুম্মতকে 'ক্চি

ছেলে' বলিয়া 'নাপ' করিবার লোক নহ।
তুমি যথন ত্মস্তকে এত ভালবাস, তথন
ত্মস্ত যথার্থই সমস্ত অগতের ভালবাসার
পাত্র এবং পৃথিবীর রাজাদিগের আদর্শস্থল।

হয় স্থ নাজধানীতে প্রেলাগনন করিয়াতেন। শক্তলা হর্মানাকর্ক শাপপ্রস্থ ইউলেন। অবশিষ্ট আখ্যারিকাকে হুই ভাগে বিভক্ত করিতে ইইবেক। শাপো-চোরন ইউতে অঙ্গুরীয়ক পুন:প্রাপ্তি পর্যান্ত একভাগ; অঙ্গুরীয়ক পুন:প্রাপ্তি ইইতে হ্রন্ত-শক্তলার প্নার্মালন পর্যান্ত ভার একভাগ। কি জন্য এইরাপ ভাগ করিতে হুইন, বুঝাইতেছি।

ছর্বানা বলিয়াছিলেন যে, ছত্মগুপ্রদত্ত নিদর্শনটি দেখিলে তাঁহার শকুতলাকে মনে পড়িবে, মতুবা মনে পড়িবে না। শকুওলা মেই নিদ্ধিনাসুরীয়ক হারা-देश (क्लियान, शिक्ष जारनन ना त्य হারাইয়াছেন। এ ঘটনার যে কি চমৎকার অর্থ তাহা পরে বলিব, এখন নয়। , অঙ্গুরীয়ক হারটেয়া শকুন্তলা তাহার পবিত্র বিশ্বমনোমুগ্ধকারী রূপরাশি লইয়া গ্রুতের সমূবে দাড়াইলেন। भाठिक ! ट्यांमारक धहेथारन धक्यांत्र त्मरे वद्याशतिशाना, कूर्याव्योवना, পরিত্রনারনা, লভামুগামুরাগিণী, আএম-বাসিনী তাপদ্বালার ক্লপ্রাশি মনে করিতে হইবেক। যে রপরাশি দৈখিয়া ধর্মনীর ত্মত সেদিন ত্রিবারশরবিদ্ধ হ্ইয়াছিলেন, সেই ক্লপরাশি একবার

মনে করিতে হইবেক। সেই রূপরাশি এখনও সেই ছ্মান্তের নয়ন মন বিমুগ্ধ করিতেছে। "সায়ে অজ।

কেয়মব**শু**ঠনবতী নাতিপরিকুট্শরীর-লবেণা।

মধ্যে তপোধনানাং কিসল্যমিব পাঞ্-পত্ৰাণাম।।"

তবে কেন তিনি এখন সেই রূপরাশি-मन्भन्ना भक्छनारक जन्भनीया वनिया প্রত্যাখ্যান করিতেছেন ? শাপপ্রভাবে তিনি শুকুত্তলাকে ভূলিয়া গিয়াছেন वरि ; कि इ रय हकू मिनि भकु छला क দেখিয়া তাঁহার মনকে উন্মত্ত করিয়া-ছিল, আজও ত তাঁহার সেই চকু, সেই মন রহিয়াছে। তবে কেন আজ শকু-তাহার কাছে কৌশলকুটিলা অস্পর্শনীয়া কলক্কিনী হইয়া দাঁডাই-श्रोष्ट्रम ? देक, दम्रशास्त्र आह আছে তাহারা ত অবিচলিত্তিত্ত নয়। প্রতীহারী শকুস্তলার অবগুঠনমুক্ত রূপ-রাশি দেখিয়া ভাবিতেছে-ष्याया ध्यादिक्थिता ভढिता नेनिमः নাম স্থহোবণদং ইত্থি আর্ষণং

পেক্থিঅ কো অলো বিআরেদি।
ত্যুস্তও সেই রূপরাশি দেখিয়া মুগ্ধ—
ইদমুপনতমেবংটুরূপমারিইকাস্থি
প্রথমপরিগৃহীতং স্যারবেত্যধ্যবস্থান্।
ভাষর ইক্নিশাস্তে কুল্মস্তস্ত্যারং
ন ধলু সপদি ভোকুং নাপি শক্ষোমি
মোকুম্

जिनि गरम गरम जरमक जाविशा रमध-लन: किन्द डीहात मत्न हरेल ना त्य শকুন্তবা তাঁহার। তিনি শকুন্তলাকে গ্রহণ করিতে অস্বীকার করিলেন। তথন কোমলভাময়ী শকুন্তলা চরণদলিত ফ্লি-নীর ন্যায় বিষময় বাক্যে তাঁহাকে দংশন করিতে লাগিলেন; তখন অগ্নিফুলিসবৎ ঋষিকুমারদম তাঁহার উপর শাপাগ্নি বর্ষণ कतिएक गागित्वन । श्विरकाशानन (य কি ভয়ানক পদার্থ তুম্মস্ত তাহা বিলক্ষণ कारनन। जिनि निष्कृष्टे रमिनि गांध-ব্যকে বলিয়াছেন-শমপ্রধানেষু তপোবনেষু গূঢ়ং হি দাহাত্মক মস্তি তেজঃ। স্পূৰ্শাত্মকুলা অপি সূৰ্য্যকান্তা-স্থে হান্য তেৰোইভিভবাদ্যম্ভি।।

আন্ধ সেই গৃঢ়নিহিতানল প্রজ্জনিত হইয়া তাঁহাকেই দয় করিতে আসিতেছে।
কিন্তু আন্ধ তিনি সে কোপানলকে ভয়
করিতেছেন না। কেন, তিনি কি আর
সে হয়ন্ত ননং তাঁহার চিরাভান্ত গুরুজনগভভীতিসম্রম সকলই কি বিলুপু হইয়া
গিয়াছে। তা নয়। সে সকলই তাঁহার
আছে; কিন্তু গুরুজন আন্ধ তাঁহাকে
খর্মের বিপর্যায় করিতে বলিতেছেন।
গুরুজন আন্ধ তাঁহাকে পরস্ত্রী গ্রহণ ক
রিতে অমুরোধ করিতেছেন। তিনি
ধর্মারীর; তিনি ভাবিতেছেন, যেখানে
ধর্মের বিপর্যায় সেধানে ভ্রনমোহিনী
রমনীও ভুছে, অন্তিপ্রভ মহা ঋষিও ভুছে।
কি ধর্মামুরাগ। কি চিত্তসংয্ম। অতুল

রপরাশি তাঁহার অন্থাহাকাজনী। লইলে, কেহই তাঁহার কিছু করিতে পারে না, কেহই তাঁহাকৈ কিছু বলিতে পারে না। দ্যিতচিত্ত হইলে তিনিও লইতেন। প্রতীহারী যথার্থই বলিয়াছিল— ক্ষোধস্মাবেক্থিণো ভট্টিণো ঈদিসং নাম স্ক্রোপনদং

ইত্থিআর মণং পেক্থিঅ কো অশ্লো বিমারেদি।

হন্মন্তের প্রথম পরীক্ষা শেষ হইল।

সে পরীক্ষায় তিনি জয়ী হইলেন।

সেই জয়ে কালিদাসেরও জয়। কালিদাস ভারতের ব্রাহ্মণ। ভারতের ব্রাহ্মণ

ইয়া তিনি দেখাইলেন যে ধর্মের কাছে
ভারতের ঋষিতপস্থীও কিছু নয়! কালিদাস, তুমি ভারতের ব্রাহ্মণ নও—তুমি

জগতের ব্রাহ্মণ!

ত্মন্ত পুনরায় নিদর্শনাঙ্গুরীয়কটা দে-থিলেন। দেখিয়া তাঁহার সকল কথা মনে পড়িল। তথন আর একপ্রকার পরীক্ষা আরম্ভ হইল; কিন্তু এ পরীক্ষাও বড় সহজ পরীক্ষা নয়। শকুন্তলার কথা মনে হইরা তাঁহার মন অফ্তাপে দয় হইতে লাগিল। যে রক্ষা নিষ্ঠুরভাবে তিনি শকুন্তলাকে প্রত্যাখ্যান করিয়াছন, ভাহা মনে করিয়া, তাঁহার জীবন যত্রণামর হইয়া উঠিল। দিবারাত্রির নধ্যে এক মুহুর্ভের জন্তও তাঁহার শান্তি লাই। তিনি সর্বাদাই প্রজ্বলিত চুলীর স্থায় অম্বতাপানলে সন্তপ্ত। তাঁহার

স্বাভাবিক আমোদ আহলাদ আর তাঁহাকে ভাল লাগে না। তিনি বসস্তোৎসব
বন্ধ করিয়া দিয়াছেন। রাজভক্ত রাজমঙ্গলাকাজ্জী কঞ্কীর ভায় রাজকর্মাচারীদিগের প্রতিও যেন ভ্রমাবান্হইয়া
উঠিয়াছেন। এই সব দেখিয়া শুনিয়া
বৃদ্ধ কঞ্কী যার তার কাছে বলিয়া
বেড়াইতেছেন—

রমাং দেটি যথাপুরা প্রকৃতিভিন্ প্রত্যহং দেব্যতে

শ্যোপাস্তবিবর্ত্তনৈর্বিগময়ত্যুরিজ এব ক্ষপা:।

দাক্ষিণ্যেন দদাতি বাচমুচিতামন্তঃপুরে-ভাো যদা

গোত্রের্ ঋলিত স্তদা ভবতি চ ব্রীড়া-বন্মশিচরম্॥

ভাবিয়া ভাবিয়া হ্মজের শবীর ক্রশ
হইয়া পড়িয়াছে; তাঁহার গস্তীর প্রভাময় মৃথ শুকাইয়া গিয়াছে; তাঁহার
তীক্ষেজ্বল চক্ষু নিপ্রভ হইয়া পড়িয়াছে।
দেখিলে মনে হয় হ্মজ আর সে হ্মজ
নাই৽! সেই পবিত্র আশ্রমে হ্মজ যেমন
তাঁহার শক্তলার যন্ত্রণাদ্ধ দেহথানি
দেখিয়া বলিয়াছিলেন, আল বৃদ্ধ কঞ্কী
হ্মজের অন্তর্গপদগ্ধ দেহস্ত দেখিতে
দেখিতে প্রবংশল পিতার আয় কাতর
মনে ঠিক তেমনি বলিতেছেন—
প্রত্যাদিষ্ট বিশেষমণ্ডনবিধি বাুমপ্রকোঠে

भवः

विवरकाक्षनस्मकस्मव वनग्रः श्राह्मा-

পরক্তাধর: 1

চিন্তাভাগবন প্রতান্ত্রনার্নতেভোগ্ডনৈরা
জ্বনঃ

সংস্থাব্যবিধিয়ের সম্মান্তিবে জ্বীনোচ্পি

সংস্থারোলিখিতো মহামনিবিব ক্ষীণোহপি নালক্যতে গ

এই শোলনীয় অবস্থায় আ**ল** ছুমস্ত রাজোদানে গভীর চিতানিনা। বুক कक्ती प्रकार छात्रम, प्रकार दृत्वम। কিন্তু আল পুরুবংশের চুর্জিন দেণিয়া. खमःथा ভারতবাদীর ছফিন দেখিয়া. ভয়াকুলিভ-বাৎসলাপুৰ্ব মনে তিনি ভাবি তেছেন —বুঝি একটু 'পেল'ছুলা' কৰিলে তুল্লন্ত কিছু 'আনমন' ছইবেন। এই মনে করিয়া কিঞিং অগ্রস্ব হট্য়া ঠা-হাকে বিলাসভূমিতে ঘটিবাৰ নিমিত্ত আহ্বান কবিলেন। অশীরিবর্ষীর পলিত-কেশ কুলকর্মানির মুখে এ রক্ষ কথা ় শুনিলে, বিরহকাতর যুবা পুরুষের কি-কিং লজ্জিত তইবার কথা। বে:শুহর সেই অন্ত বুদ্ধ কঞ্কীকে কিছু না বলিয়া. बुबुबु (नद्भविक्टीरक मास्र'पर कतिश्रो कृष्टि-লেন-

বেত্রবৃত্তি । সন্বত্রনাল্যালাপিপুলং জুহি অদা চিত্রপ্রাবাধার সম্থাবিত মুক্তা-ভিধর্মাসন মধাসিতৃ বং প্রভাবেকিত মার্যোল পৌৰকার্যাণ তৎপ্রমাবোপা প্রাধাপ্রামিতি।

এত যাতনায়, এত সম্থাপেও ছ্মত বাজকার্যা ভ্রেন নাই। এত ক্লিপ্ট ননেও কাহার বিচারকার্যা পর্যালোচনা করিবার ইচ্ছা কৃত বলবতী! এত অনল-দগ্ম হইরাও ছ্মস্ক অসাবাবশেষ হন নাই!

্তার পর সেই মন প্রাণহানী চিতা দর্শন। চিত্র দেশিতে দেশিতে ছয়ম্ব উন্মত্ হটয়া উঠিলেন। চিত্রিত শক্তলাকে ভাঁহার জীবনম্য়ী শকুস্থলা বলিয়া বােণ হটতে লাগিল। চিত্রিত সমর্টীকে মেই আশ্ৰন্থ ভ্ৰমৰ বলিয়া বোধ চইতে লাশিল। তিনি আপনাকে আপনি ভূলিয়া, গেলেন। তিনি সানজানশ্র হইয়া পড়িলেন: তিনি কালজ্ঞানশুৱা হুইয়া পতিবেন। এমন সময়ে বেরবেডী অংসিলা ভাঁহাকে বাজকার্যের সমাদ লিলেন। অম্নি, যেন ভাঁহার কিছুই হর নাই, এইরূপ ভিবগন্ধীৰ ভাবে হিনি কার্লণত্রগুলি পাঠ কবিষা প্রধানানা তোৰ ভ্ৰম্ণংশোধন করিয়া ধর্মনলত বিচার কৰিয়া দিলেন। তথুতানয रमटे चथुलक गृह दशिरकत सम्अदिर উত্তরধিকাবিত্ব নিরূপণোপলকে তিনি সমস্ত প্রভাগাণের মঞ্লার্গে সেহ্রান পিতার তায় এই মেহপূর্ণ আজ্ঞ। প্রচাব क्रिंद्रका---

বেন বেন বিন্তাতে প্রাং লিজেন বজ্ন।
স স্পাপাদতে তাবাং ত্রান্ত ইতি বুলাবান্
তাল লই লং বেনবানী চলিয়া গোলেন।
তালত লত লাভের অপুন্ত বাব্তা অবণ হইল।
আবণ কবিলা তাঁহাব মন পূর্বাণেকা
সম্বান্ত হইলা উঠিল। ত্রান্ত করিলা
নিঠ এবং ধর্মভীক। তাঁহার পিতৃপুক্ষ
্দিগের কথা মনে পড়িল। তাঁহাদের
পবিত্রায়ার শোচনীয় পরিণাম মনে
হইল। তিনি বল্পাবিহ্বল হইয়া মৃচিটিন

তেব ভার ভূতবাশায়ী হইবেন : অসহ শক্তবাচিস্তাও সেই গিরিচরগ্রুবং বল-সাব দেহস্ততকে ভূতবাশায়ী করিতে গাবে নাই! এই পতনেই ভ্যাস্তের ভূমস্ত্র দেদীপামান!

ন্জিভিলার পড়িরা আছেন, এমন
সময় বিপরেব ভরাত্তিব শ্রুত হইবা।
ভাষনি কর্মবীর ছাম্প্র শশবান্ত হইবা
উট্টিলেন। আব তাঁহার শকুস্তলাচিম্যালাই। আব তাঁহার শকুস্তলাচিম্যালাই। আব তাঁহার শকুস্তলাচিম্যালাই। আব তাঁহার শকুস্তলাচিম্যালাইনিত
শাবীরিক ভূর্বলিতাও নাই। এখন ভিনি মে ছম্ম সেই ছম্মস্থা বিপরীক বিক্রম
সহকাবে তিনি ধনুর্বীণ সাপটিয়া লাইলেন।
নিম্মেন্থা সকল কথা অবগত হইবা
দেবভাদিগের সাহায্যার্থ পুস্কেব্যে আরোহণ ব্রিয়া অম্ব্রনাশে শৃত্রপ্থে উঠিবেন।

পাঠক। একবাৰ ভাবিষা দেখা এখন ছয়ত্বেব কি ভয়ানক অবস্থা। ধিনি লাষপ্ৰায়ণ এবং ধর্মানিষ্ঠ। ভিনি পবিধীতা ভাগাকে প্রত্যাপান কবিষা কি অবিচাব, কি অধ্যাচিবণ কবিষাছেন, বাহা তিনিই বুবিতেছেন। তাহাতে আবাৰ আনেন যে সেই নিরপ্রাধা এপন মর্ত্তালোকে নাই। আর যে কখন ভাহাকে পাইবেন, সে আখাও এখন ভাহার ক্লয়ে ভান পায় না, এবং সেই জ্লুই তিনি পিতৃপুক্ষদিগের পরিধান ভাবিয়া এত ব্যাকুল হইয়াছেন। এখন তিনি শুধু অন্ত্তাপ্ৰদ্ধা নন। যে আশার বলে লোকে ছঃসহ ব্যাণা সহ্

করিয়া থাকে, সে আশার তাঁহাকে । একেবারে পরিত্যাগ করিয়াছে মৈহাকবি মিণ্টন নিরকবর্ণন করিতে করিতে বলি-হাছেন যে সেখানে—

" Hope never comes that comes to all,

But torture without end."

তথ্য ত্মত্তের ক্ষয়ও আশাশুরু অন্তর্থগোর। কিন্তু অন্তর্বদে অভ্যত্ত হট্না মার্ক্র তিনি গেল সে সক্ষাই ভূলিয়া গোলেন। ভূলিয়া গিরা আগ্রেহাতিশ্ব-স্থকারে মুক্ষসভা করিলেন। করিয়া বিদ্যক্ষে ব্লিপেন—

''বরত অনতিক্রমণীয়া দিবস্পাতেবাজা তলগতে প্রিগতার্থং

কলা মদ্চনাদ্মাতাপিশুনং জভি। দ্মতিঃ কেবলা ভাবং প্রতিপালয়ত্

প্রের্গঃ ।

কাৰিজানিদমনা আনি কাজনি ব্যাপুকং ধয়ঃ॥"

' বলিয়া নিজ্বান্ত হইলেন। ত্র্মান্ত
নিজের হেণ তংগ সকলই ভ্লিতে পাবেন
কিন্তু গে কোটি কোটি হৃদয়ের হংপত্থে
অনহিক্রমণীয় নিয়তির বলে তাঁহার
হতে ক্রন্ত, তাহাদের হংগতংগ ভ্লিতে
তিনি নিভান্তই অক্রম। মহাকবি ত্র্মান্ত প্রায় মহাপরীকায় প্রায়িত করিয়া অতুলজ্মাতিং দেবতার ভায় উন্তীর্ণ করাইলেন! টুইহাকেই
বলে নাটকের নাটকতা। এই একরকন্ন
দেখা রহিল।

এত কাঁদি তবু কেন না জড়ায় প্রাণ রে?

এত কালি তবু কেন না জ্ডার প্রাণ রে ই
সেই মন সেই আশা,
আজো বুকে সে পিপাসা,
এ বাতনা তবে কিরে ফুরাবে না জীবনে?
জীবধর্ম পরিহরি,
ভাপসের ভাব ধরি,
ভাপসের ভাব ধরি,
বুণা বায়ু-অভিবাত,
নিবিড় কানন-ভাত,
বিশুষ প্রস্ন-সল ঝরার রে বিজনে,
সাধের সঞ্জিত আশা,
বুক্তরা ভালবাসা,
এ শুক্ জীবনে মোর ঝরিবে কি তেমনে?

কেলে যেন উঠে প্রাণ থাকিয়া থাকিয়া, জীবনের হুই তীর গেছে যেন ভালিয়া; ধুধু করে চারিধার,

শৃত্য হেন এ সংসার,
হাসি,খেলি সে বাতনা তবু উঠে জাসিয়া,
আশা নাই,তবু সে যে প্রাণে আছে মিশিয়া

এ কি প্রবের মন—ব্বার জ্বর!
এ কি জীবনের প্রত—জীবের জাশর!
, হেল্লি কুহকের ছারা,
পারি অপনের মারা,
শিশুর বাসনা-সম্মাশা উপবঙ্গ,
এতই হর্মণ কিবে সাম্ব-স্থার!

সকলি ব্ৰেছি—তবু পারি না যে ভূলিতে,
জ্ঞান যাজনা চিতে নাহি পারি খুলিতে,
ক্রমের সে ছবি আঁকা,
নরনে সে রূপ যাথা,
শয়নে, খপন সে যে—ভাবনা, সে খুভিতে;
এপরাবে ভার আশা পারি না যে ভাজিতে

ছ্থ পাই—পাব ছ্থ, তবু তারে ভাবিব, আঁথি পোড়ে—পুড়ে যাক্,ভবু তারে হেরিব এই বিবাদের রাশি, আমি বড় ভালবাসি, এ জীবনে চিরদিন তারি হুথে কাঁদিব। অন্তিমে তাহারি হুথে হু নরন মৃদিব।

এভাবে সংসারে থাকি হবে না সে সাধনা,
মারা-মোছ-স্বেহডোরে ভূলে বাব বাতনা;
উদাসীন-বেশ ধরি,
ভারি ছবি বুকে করি,
পথে বাটে হাটে মাঠে গাহিব এ বেদনা
গৃহ-কারাগারে পাকি সব না রে গঞ্জনা।

পাপের সংসার হেথা সকলি সে ছলনা,
আক্সপর ভালবাসা সবি স্বার্থ গণনা;
আমি ভাসি, অঞ্জনে,
লোচেডে পাগল বলে,
ব্যাইলে নাছি বুবো মন্ত্রের বাতনা;
মন্দত্ত স্বস্থাইলে বাছি বুবো মন্ত্রের বাতনা;

म धन शावान नग-तम् व्यामान करन मा, o हुन नवाद मझ-- अ सीवरमा तरंद मा, (य किमन (वैटि बरे, তারি ছথে কেঁদে गरे, मतित्व व कामा कुका किहूरे छ त्रात ना, এ उन्न जीवत्न आद अस मार्श इत्त ना।

कि स्कर्ण मुद्धानात्व (क्टनहिस् छारांदा, कि कुकर्ण ভानवामा निम ना तम आमारत।

राय (ला 'वजतमधी, त्रमणी कि मदामकी ! वक्री वाशामवागी वक्षी वाशास, এত যাতনায় নাহি ফুটিল অধরে !

গেত নাহি দিল আশা--আমি কি ভা ছাড়ি**ব** সে বাসনা চিরদিন বুকভরে রাশিব।

করিব ভাহারি ধান, গাহিব ভাহায়ি গান, 👾 मियोकि भन्नां कार्टन-जाति जत्ते त्राभिवः জনান্তরে দেখা হলে তারি হাতে সঁপিব।

- বিধাত: রে ৷ এত রূপ কেন দিলি ভাহারে 🕈 **এछ स्था (कन विदश् श्रद्धां अवराह्य श्राम्याद्य श्र** े (म ना त्रभीत मिन ? त्मना भी मृत्यत अनि ? (তবে) दकन दम अभित्र-मत्र भाषादभत्र आकादत वक्षमत्र वक्ष (कन हक्षमात्र काकादत ?

আর মিছে ভার আশে রহি পাপ ভূবনে, ध छरवत (थना-धूना क्त्रान ध सीवरन। अनरत्रत श्रकात, थारक यमि अञागांत, এ রোদন পশে যদি বিধাতার প্রবলে, ? জন্মান্তরে পাইব রে সে রমণী-রতনে।

দিতীয়বার বিবাহ।

व्यागात्मत परे खाउावी इरेजात विভক্ত कदा याहेट आदि। বিধবার বিবাহ, দিভীর মুক্তপদ্মীকবাক্তির দারাম্বরপরিপ্রাছ। পদী দীবিভাসদেও श्करमत अनाजी बाह्न कहा द्य वृक्ति-गत्रठ नरह छाहा कांच कांच आह नक-

क्रम माहे। मर्का अधिम आयता विधवा-विवाहमध्य इरे अकृषि कथा विनव। আলু কাল পাশ্চাত্য পণ্ডিভগণের व्यक्षिकाः (भत्रहे यु एक एक एक कार्य) छाल, (कान् कार्या मृत्म निर्साहन कतिएड रहेटन "वंत्रवहाटबाशरमाशिकात", असूनतन मिटे पीकात करतन। श्रकताः अवान् कत् कर्वता वर्षाः जातात जनारकत ⁽⁾ विनरत्र क्ला क्ला क्ला क्ला बाद्या कल्लात क्ला जलकात हर्व खाडाँके

रमशा উচিত। বে নিয়ম স্মাল্ড অধিকাংশ লোকের অধিক डेशकादब व्याष्ट्रेरम, वाहादक माधाद्रापद स्थममृद्धि . ব্ৰদিত হয় ভাহাই সমাক্ষ্যো আচলিত করা উচিত; ইহার বিপরীত হইলে ভাষা: প্রচলিত করা উচিত নহে এবং আচলিত থাকিলেও ভাষা রহিছু করা कर्चरा । अङ्भव विश्वाविवाह क्रिक्क कि ना श्वित कतिए इटेटन दिशा फैंडिड ইহাতে সমাজের উপকার কিয়া অপকার दश, देश 'वावशातानर्याताजात' अक्टू-जाती कि ना ?

षाधि कालि वश्रमर्गागत कुशाव माल-थरगत नाम त्वाध कति कान भांत्रकत অবিদিত নাই এবং মোটের উপর তাহার মতটা কি ভাহাও অনেকের জানা আছে। তিনি বলেন লোকসংখ্যার व्याधिकारे सभारकत मातिरावत मृतः यनि দারিন্তা দুর করিতে চাও, যদি সমাঞ উत्तक कतिएक देव्हा शांक, यनि मिट्नद इंडिकनिवाद्रश्व मानम थार्क छर्व गा-शाट जिल्ला अधिवानिशालत मःथा करन অর্থে ভাহার চেষ্টা কর। প্রাণিগণের ट्यकृष्टि धरे; य श्रीत्रमान चारात छारा-**(मत नर्याध इव डाहां(मत मःशा) क्रमण: ७५८भका वर्षिछ इहेट्ड शाद्य । फाउना**ब कु इनिम बरनम यशि भीव वा छेड़िम्-গণ যথেক অন্বিতে পাইত তাহা হইলে क्ष्मिक्ष वर्षमध्य वक्षाडीय आगी या छेडिल पाता भुके माठ जगर चाम्ह्य হইয়া বাইত। কেব্ল প্রাকৃতিক বুল

नियम अक्रम रहेट द्वार ना। य प्राप्त रमारकत् वावशात विकन्न, स्य चारन थामाजवा अচूत्रविद्यात आश्व रहता यात्र, त्य त्मर्भ वानाविवास्त्र रकान व्याञ्चलक नारे, य शास क्रवरहातित षाता मञ्चाकाछित । व्यकारन विनाम ना হয়, অথবা যেখানে অনিয়ত পরিশ্রম বা অস্বাস্থ্যকর কার্য্যের ছারা অকাল্যুকুর ना घटि रमधानकात्र लाकमःथा वृक् এত শীঘ্র ও অধিক পরিমাণে হয় যে শুনিলে আশ্চর্যা হইতে হয়। গত ১৫০ শত বংগর ধরিয়া আমেরিকার উত্তর लापाल खाउाक २६ वरमात लाक. সংখ্যা দিগুণ হইতেছে। কোন কোন शास ३৫ वरमत मधा विश्व इटेट দেখা যাইতেছে। সার উইলিয়ম পেট वर्णन (य मणवरमत्रमधाञ्च व्यक्षिवामिः সংখ্যা দ্বিগুণ হইতেপারে।

বেমন মহুষাসংখ্যাও ক্রমশ: বর্দ্ধিত হয় त्मरेक्षण (मामत छेरभन्न कार्म कार्म वृद्ध भारेबा भारक। किस्नुधिनी ब डें९-পাদিকা শক্তি যেরূপ, তাহাতে কৃষি-कार्यात উপকরণ যেমনই উৎকৃষ্ট হউক না কেন, সার খেননই উত্তম হউক না **(कन, थामामामशीद दृष्ट्रिक्थनहे** लाक-भःशातुषित समान इहेट्ड भातित्व ना। मानिथम् दिव कवित्रारहन (य, मशूया-मरथा। यमि ১, २, ८, ४, ३७ हेडापि चादकत পतिभारत तृष्टि इस धना योत्र, छाडा इहेरन चाहात्रस्य >, २, ७, ६, ६ वह व्यक्ति शतिगाल विश्विष्ठ हरेटव। यथन লোকবৃদ্ধি ৮ গুণ থাদ্যবৃদ্ধি ৪ গুণ, ষথন লোকবৃদ্ধি ১৬ গুণ থাদ্য বৃদ্ধি ৫ গুণ। ইহাতে সহজেই উপলব্ধি হইতেছে যে ভল্লিটের্সর মধ্যেই লোকসংখ্যা আহার-দ্রব্যের অপেকা অধিক হইয়া পড়ে, কাজেই দেশে দারিন্তা উপস্থিত হয়।

क्ष्मण लाक मः था। वृद्धि इहेवात्र य करत्रकी श्राञ्चिक्सक चार्ट्स छात्र। हे श्राम-र्भित इहेटल्ड । ३म, छेभयूक बतालात তুর্ভিক উপস্থিত হইয়া সহস্র সহস্র মহু-ষ্যের মৃত্যু হইয়া. থাকে অথবা উপযুক্ত আহারাভাবে পীড়া বারা বহুলোকে প্রাণভাগে করে। ২য়, মুদ্ধ প্রভৃতি হারা जातक नद्रहा। इहेमा थाटक। विरम्राम जेनित्वम दाता रम्रामत त्नाकः সংখ্যা কমিতে পারে। অনেকে মনে করিতে পারেন যেমন মন্থা জানাতেছে আবার তেমনি মরিছেছে তবে সংখ্যা कितार वाष्ट्रित ? वाष्ट्रिक क्या व्यरणका मृञ्रा कम ; हेला ७ । य तरमत मृञ्रामः था। অতাস্ত অধিক, সে বংসরেই জনামৃত্যুর षर्भाड >२:১० वदः का ष >> े:>०। जमा जारभक्ता अवह कम इडवाय कारक काष्ट्र शकी भए ।

মহ্বাসংখ্যা যত বর্দ্ধিত ছইবে ততই দেশের দারিজ্য বাড়িবে এবং কাঞ্চেই আহ্বজিক ছুর্জিকালি আসিরা কতক লোকের প্রাণ্ডার করিয়া আবার খাদোর পরিমাণ ও লোকসংখ্যা সমান করিয়া দিয়া বাইবে। পুনশ্চ বেমন লোকসংখ্যা বৃদ্ধিত হুইয়া লোকের করিকই

इकेर अभि मकालबर्ट शुरखां भागत े म्पृहा कित्रशा याहेरव । हेश्टक्हे देश्टब-লিতে (Reaction) কছে। এদিকে गानश्रमत विभागता वर्तन (य रलाक: সংখ্যা যেমন বৃদ্ধি হইবে তেমনি তাহারা পেটের দায়ে নৃতন নৃতন জমি আবাদ कतिष्ठा आहात्रज्ञ वा वाष्ट्राहेटव ; काट्य हे माकप्रशा वृद्धि बाबा कान कठि इटेरव ना। (कान এको विरमय द्वान नहेशा विरंवहना कतिरन এই कथा यथार्थ इहेर्ड পারে কিন্তু মোট ধরিলে ইহা মিথ্যা বলিয়া প্রতিপন্ন হইবে; কারণ পূর্বেই वला इहेब्राइं थानावृद्धि कथनहे लाक-বুদ্ধির সমান হইতে পারে না। মুত মহায়া জন টুয়াট মিলও ম্যাল্থসের মতের পোষ্কভা করেন। তংপ্রদর্শিত যুক্তির প্নক্ষতি এ খনে প্রয়েছন করে

ইতিপুর্বে লোকসংখ্যাবৃদ্ধির যে করেকটি প্রতিবদ্ধক উল্লেখ করা গিয়াছে
তল্মধা ২য় ও ৩য় টী আমাদের দেশে
নাই, এবং শীঘ্র যে হইবে, তাহারও
আশা নাই। তবে ১মটী অর্থাৎ তর্ভিক্ষ
ও উপযুক্ত আহারভোবে অকালমূত্য
আছে এবং আল কাল প্রারই ঘটতেছে।
যে ক্ষেকটি কারণ লোকর্দ্ধির অমুকূল,
আমাদের দেশে তাহার অনেক গুলি
আছে। এক্ষণে লিজ্ঞান্য এই, কি উপার
অবলম্বন ক্রিলে লোকসংখ্যা বৃদ্ধি না
হয়। নানা ব্যক্তি ইহার্জনানা উপার
প্রদর্শন ক্রিয়াছেন। তম্মধ্যে ক্ষাভ্রের

वियाह वक कहा नक्षारभक्षा यूकियुक्त । অরাভাবে প্রাণ্যম পুরের মৃত্যু স্বচকে पर्भम कड़ा करणका शूख ना बचान (व অনেক স্থবের, গোকবৃদ্ধিনিত ছার্ডিকে পত পত ব্যক্তির বিনাশ অপেকা লোক-সংখ্যা বৃদ্ধি না হইতে পার এমত উপার অবলম্বন করা যে উত্তম ভাহা বোধ করি কোন বৃদ্ধিশান্ লোককে বৃন্ধাইবার व्यादाक्रन माहे। ভবে অনেকে বলেন र्य चावकरकोमात्रज्ञ चरनवन कतिरन শরীর হুত্থাকে না,কিন্ত এক্টন বলেন - (य क्यांत्रीशनक आबीवन ऋत्रमंत्रीदत चाकिट्ड (मचा शिदारङ्। हित्रकान व्यदि-বাহিত থাকিলে যে কোন পীড়া কল্মে **তাহা কোন কাৰের কথা নহে। বাহারা** चामारमञ्ज (मर्भेज विश्वांशंवरक स्मर्थ-রাছেন, ভাঁছারা খীকার করিবেন এক্-টনের বভ সহা। হুতরাং দেশের मातिका पृत्र कतिए इहेटन प्राप्त नहन পরিমাণে বিবাদ বাহাতে হইতে না পাবে ভাহার উপার করা উচিত। णांभारतत रमभीत चारतक कुछवित्रा লোকের (কার্যো না হউক মুখে) আল काल এই मछ निष्ठिताह । छीराता প্রারই পুরুষের অকাভরে বিবাছের প্রতিবাদ করিয়া গাকেন। তগাপি তাঁ-हाता त्य किन्नार विश्वविवाहत शाव-কভা করেন ভাষা আমরা ব্বিতে পারি ना। शूक्रदंत्र विवाह स्टेश कांच नारे क्षि श्लीलाएकत्र विवाद वक्ष कता. हरेटव मा व रकार्न् वृक्तिनारश्चम कहनाविनी !

व्यत्नदक वरमन वक्षविश्वात्रम वित्रहः-খিনী। ভাছাদের কোন কার্যোই সুখ नारे, कानश्रकात्र आत्मारम जाराता मिनिटक शास्त्र नां, मरनत क्रश्रं काहाता गर्सनारे इ:चिड । जाशनिशत्क चावन এইরূপ কটে রাখা অভিনৃশংসের কার্যা, योहात पक्षा नाहे, मात्रा नाहे, य दिह ममका काशादक वाल जारन ना, शरदत ছ: ए यादात्र यन शनित्रा ना योत, त्महे এইরণ নিষ্ঠুরভাচরণ করিতে সমর্থ। किह विधवासिरानेत इः भ रव व्यवहा अमड आयारमञ त्वाब इत्र ना। त्रमि वांखविक অসহা হয় অথচ তাহাতে সমাজের উপ-কাব থাকে, তবে ভাছা মোচন করিবার व्यावभाक कि ? शिष्ठकन विश्वांत बना বাঁহার প্রাণ কাঁচে, সমাস্তম্ব সহস্র लाटकत कना छोडांत क्षत्र काणियां या बदा डेिडि, दिनि धक्यानित कार्य স্চ ফোটা দেখিতে পারেন না, তিনি শত শত লোকের বলিদান কির্পো (मिरिदन ? यमि शीवसन विश्वात इःव মোচন না করিলে নিষ্ঠুরতা হর, তবে विधवाविवाद हानाहेबा मधारकत नरव वाकित व्यवस्था क्या हथान्या ; गाक मारत क्छा जान वर्ष नरहा विश्वा यनि , इन्छतिया ब्रेंदाव 'सामका बाटक विवाह

निरम् (म आनद्या अरक्तारह नियून इत्र ना । अदनक मध्यां छ क्किबा इत्र। আমরা সরম প্রকৃতির লোক, এইজনা (करल मत्रा कदिएक निधिवाद्यि, नावशव-তার উপ্রমৃত্তি আমরা সহু করিতে পারি ना। क्ष्णबार नारबन्न मिटक मृष्टि ना नाथिया শুদ্ধ অমুভবশক্তির প্রতি লক্ষ্য করিরা 'আমরা মতামত প্রকাশ করিয়া থাকি। हेहारक्षे त्नीनगात नात्स्व Emotional Bias অৰ্থাৎ মানুভাবিক পক্ষপাভ বলি-ग्राट्डन ।

মমু প্রভৃতির পর বোধ হয় মিতাক্ষরার यह आयादनद दम्दन टाइनिङ हिला। তংপরে জীমৃতবাহন জন্মগ্রহণ করিয়া মিতাক্ষরাকে আমাদের দেশ হইতে বিদার দেন। মিতাকরামতে পিতা প্ত্রোংপত্তির পর নিব ভূদশান্তি অন্যকে বিক্ৰয় করিতে পারেন না। ভাহাতে বাহার কৌলিক কিঞিৎ ছিল ভাহার কতকটা খাবার সংস্থান থাকিত। দারভাগকার জন্মিরা দারিন্ত্র বাড়াইলেন। ভিনি বলিলেন পিতা ইচ্ছা দ্রিলে সম্পত্তি বিক্রেরালি করিছে পারেন। চৎপরে ইংরেজবাহাত্ত্ব আবার গত্তোপরি विष्कृष्टिक समादेश विरन्त । छाहात्रा न् उरेला र एडि कतिहा मातितात नव ात्र पुक कत्रिक्षा विश्वन । देशात्र नत यपि भूमताब सामता सम्बद्धाः

(मर्म विशेष करम छोडाई अवस्था करें। উচিত।

একপ্রেণীর লোক আমাদের ভারে কিছুই ভাগ দেখিতে পান না; যত কেন खेरकुड नित्रमायमी छारामिरभन मनुर्य धन ना, डाहोत्रो अक्टा ना अक्टा (शाव অমুত্র করিবেনই করিবেন। জন টুরার্ট মিলের 'পিতা এই ধাতুর লোক ছিলেন। चात्र এक अनीत लाक देशिक ठिक् বিশরীত। ভাঁছারা অভিসামান্য বিষ-বেও ঋষিদিগের বৃদ্ধিশ্রভাব দেখিতে পান, সামান্য কথা হইতে নিগুঢ় তত্ত্ব हेिनियां वाहित करवन। পুষ্ঠকরপের নাম শুনিয়া তাঁহারা বলেন আমাদের (वन्न हिन; अरथरपांका " जानफ विषा छवनी:" कथा शांठ कतिया छ। हाता वरनम आमारमञ रमाम हाहेरजारभि हिन। वना वाङ्ना (य এই উভय খে-गीत लाकरे छाछ। **(मर्याक (अंगीय लाक्का बनिर्छ** शाद्यन (य, विश्वविवाह शूट्स व्यामारमद (मर्म यथन हलिल हिल ल्यन हेश অবশা সমাজের উপকারী। আমরাও • ইহাদের কথার অফুমোদন করি। स्टेट भारत य विश्वविवाह आहीत-কালে প্রয়েশনীর বোধ হওয়াতে চলিত श्रेत्रोहिन, किंद्र शहत दन आहायनहेकू आंश्र ना थांकारक कार्कर देश हरिक राह थएडि क्तिए बाकि कर्ड क्य- क्या छेटिछ इहेंबा छेडिबाटह। हासब छ न अरक्तात कार्यक हरें में रावेदन अन्तर्भाष्ट्रम क्लाम अकें। नित्रम करेंटक क्रिकार जनवा जनकार बहुरक नारत ।

रक्षणीं।

যথন আর্যাগণ মধ্য এদিয়া হউতে আদিয়া পঞ্জাব অধিকার করিলেন, তপন তাঁছা-দিগের সংখ্যা অপেকারত অনেক কম ছিল। অধিকৃত জাতির উপর আদি-পতা বছায় রাখিবার জনা তাঁহাদের भः थावि केव शास्त्र करेन। अधुना-তন ইউরোপে গমনাগ্যনেব যেরূপ স্বিধা হ্ইয়াছে, তখন মধাএসিয়ায় সেরপ ছিল না বলিয়া আর্যাগণের নিজ দেশ হইতে আমদানী করিবার কোন স্থবিধা হয় নাই। এই জনা ভাঁহারা मखाटनारभागनवादा मःभावृद्धित ८० है। क्रिटि नागित्नम ; এই कार्रावरे असू-লোম প্রতিলোম উভয়বিধ বিবাহই প্রচলিত হটল এবং তাহার উপর যাহার य औरक छेशटांश कतितात देखा इंडेड डिनि डांशांक (अतात जी इहे-লেও) লইতে পারিবেন এইরপ্রনিয়া ম'ও হইল। মহাভারতের আদিপর্কে খেতকেতুর গল বাঁছাবা পাঠ করিয়াছেন ভাঁহারা আমাদের মতের যাপার্থা বুঝিতে অনেকে বলিতে পারেন भावित्वन । যে, সে কেবল গ্রমাত্র বাস্তবিক ঘটনা নছে। আমবাও ঐটিকে যে প্রাকৃত घरेना विगटिकि डाहा नहर, उरत थे क्षाकात घरेनात छेत्राथ थाकारक म्लाहेरे বোগ হয় যে তৎকালে এরপ প্রণা खाइति इ किन। एक आमारंगत (मर्म কেন পুণিবীর অন্যানাত্ত্বেও ঐরপ घडेना घडेंबाटक । न्लाडिंदम भन (helots) হেণ্ট্লিগের বুস্তাস্থ পাঠ করিবে জানা

যাইবে যে সেখানেও ত্রিকপ নিয়ম এককালে চলিয়াছিল। যথন আর্যাগণ (मशित्नन (य, डै।इ।एमत मःथा। भर्गाश्च হটয়াছে, তখন তাঁহারা ঐ কদর্যা নিয়ম एं ठे। देश मितन। किंद्र अस्ताम वि-বাহ এবং বিধবাবিবাছ আরও কিছুকাল চলিল। ক্রমেই খাদা অপেকা ভোক্তার সংখ্যা অভিরিক্ত হইতে লাগিল দেখিয়া, উভয়বিধ প্রাপাই উঠাইরা তাহারা দিলেন। এবং সেই অবধি তাহাই চ-निया जामिएडए । विभवनिवाह कान সময়ে আমাদের দেশে রহিত হর তাহা একবে নির্বন্ধ করা কঠিন। ভবে ইচা নিশ্চয় বলা যায় যে, দায়ভাগ ও মিতা-ক্ষরা প্রণীত হই বার পুর্বেই বিধবাবিবাহ আমাদের দেশ হইতে উঠিয়া গিয়াছে। मात्रज्ञाशकातीत मट्ड वन्ना विश्ववाकना। পিতার বিষয়ভোগে অন্ধিকারিণী, কা-রণ তিনি নিজপুত্রেরদাবা পিতার শ্রা-দ্ধাদিকরণে অসমর্থা। মিতাকরার মতে **শদিও তিনি পিতৃসম্পত্তিতে বঞ্চিত** না হটন, তথাপি পূল্ৰবন্তী কনাাসহে छौहात अधिकात नाहै। यकि विभवा-विवाह औठलिङ शांकिङ छाहा इरेल নিশ্চয়ই এরাপ নিয়ম বিধিবছ ছইত না। বোধ হয় পরাশরের আবিভাবসময়ে विधवाविवाइ त्रिक्तं कि कि बात है कि। त्वा-क्त गरन উषि इब धवः (मह बनाहे তিনি নিজস্হিতার লিখিয়াছেন ^{ব্য} "क्निकारम (अर्थार आवाउ कि प्र्^{मिन} भारत) विश्वविवाह कत्रिय मा।" जी

চার এরপ লিখিবার অভিপাম বে আর किছ्निम পরে বিধবাবিবাহ आक्रिका शाकियात खारबायन मृष्टे इहेरव ना। (माम लाकमःशा वृद्धि वा द्वाम सना যে আইন করিতে হয়, তাহা আধুনিক ফান্সের ঘটনাশ্বারা প্রতিপন্ন হইতেছে। ज्ञातथम् जन अभूत्तमन् ७ मार्ड कृषे ্অব ফ্লিসফি নামক ছইণানি পুস্তক পাঠ করিয়া ফাজদেশীয় লোক সন্তান ইংপাদনে এত শিপিলপ্রায়ত্ব হটল এবং কাজে কাভেই অপিবাসীর সংখ্যা এত কমিয়া গেল যে ইহাতে গ্ৰণ্মেণ্টের নুজুব পড়িল। ক্রমেই লোকসংখা। ক্মিতেভে দেখিয়া প্রায় একবংসর গঙ इहेन, गरर्गटमण्डे, गाहाटक ट्लाटक र मखान উৎপাদনে পুনরায় যত্ন হয় তারিষয়ে উৎসাহ निवाब जना करबकाँ ऋविधा कतियां नियाटकन। व्यामादनत दनत्भ ঠিক ইহার বিপরীত। এলফিনটোনকুত ভারতবর্ষের ইতিহাসে উল্লিখিত লোক-সংখ্যা গতবর্ষের সেক্সমের সহিত মিলা-हेशा (मशिरत प्लेष्ट (नाध इटेरव (म श्विवित्राभा मिन मिन विक्रिक इहे-ভেছে এবং বৎসর বৎসর যে ছভিক ट्टेट्टक डाहाटडेट (मट्यंत्र मातिट्यात পরিচয় দিতেতে। স্থতরাং লোকসংখ্যা गोर्शाङ करम धक्रण (कांग हेशांव कति-বার মুখা সময় উপস্থিত হটয়াছে। ध नगरत यनि आयदा नेमाचनः स्वातकान विधवानिवाह निया लाकमःथा विक्रिष्ठ श्रेनात श्रुविधा कतिया निष्टे काहा श्रेटल

ছঙিক বংশয়াস্তর না হইয়া মাসে মাসে

ছইবে। আনেকে বলিতে পারেন যে,

যেমন ফুরু গবর্ণমেণ্ট লোকসংখাার্দ্ধির
প্রতি হস্তক্ষেপ করিয়াছেন, সেইরূপ
আমাদের দেশেও হওয়া উচিত। আন্
মরা বলি আমাদের সামাজিক বিষয়ে
গবর্ণমেণ্টের হস্তক্ষেপ কোন মতে উচিত
নহে; আমরা নিজে আমাদের সমাজন্দর সমাজন্দর করিব, ইহাতে অনাের মুখাপেকাা
করিব কেন ? ইচ্ছা করিয়া কেন নিজের
যেটুকু স্বতম্বতা আছে তাহা ধােয়াইব?

धकर्ष जातिक विनिष्ठ भारत्न (य. হিন্দুগণ প্রাচীন নিয়মের একাস্ত ভক্ত, প্রাণান্তেও জাঁহারা প্রাচীন নিয়মের পরি-বর্ত্তন করিতে চাহেন না। মরু প্রভৃতি कडकाल शृत्क (य नियम कतिया शिया-ছেন আজিও তাহা সকলে মানা করি-তেছে। 'বেখামাত্র মণি কুলাদামনো বমুনিঃ পরং, ন বাতীয়ুঃ প্রজা স্তস্য নিষয় নেমিবৃত্তর:" এই কথা কি আধু-निक कि लाधीन मक्त हिन्दू एडरे ममान-রুপেুখাটে। হিন্সনাল ভিতিশীল, ইহা চিরকালই একভাবে এক নিয়মে চলিতেছে। তবে বিধবাবিবাহ পূর্বের ছিল একণে বন্ধ হইয়াছে, প্রতিলোম অমুলোম বিবাহ ছিল এক্ষণে নাই, এ কিরাপ কথা ? আমরা বলি শুদ্ধ হিন্দু-गमाज (कन कशट्ड कान गमाजरे व्यक्तारत किकिमील इकेट शास मा। ভবে যে সমাল ভালে অলু পরিবর্ত্তিত इहेटड इंडाइटन है लाटक विकिमीन

कहिना बारक मकुका अदक्षीतक द्वारक ममाच हरेए जारक ना । चात चतुना-छन चारम केकी वा बाशारमंत्र नाव बाहार অতি শীক্ষ শীত্র পরিবর্তন ঘটভেক্ষে ডা-बादक शक्तिमीन गमात्र करहा अवाब-श्रीवर्षन इरेटनरे विवर्दक शतिवर्षन कता आत्राकन रहा। शिनुभारत्रक त्व अविवर्तन नारे जारा नटर ! - ' यहि-@ व्यमाणि मञ्च প্রভৃতিকে সকলে মানা करंत्र रहि उपाणि छै।हात्र नक्न कृथाः चाय काल हरन ना। अक्रमन हीकाकात े धक्ममदत्र चाविकु छ इहेता निम मम-রের সমাজের অবস্থাসুসারে মতু প্রাকৃ **जित्र वर्ष कदिश्यम ध्वर छरकाल** कांश्व मक आहितक देवेत। अनस्य श्रमा धक्यम स्त्रित्रा गंगास्त्र भद्रि-বর্ত্তিত অবস্থার বেক্সপ নির্মের আবশ্য-কভা বোধু করিলেন, মহুবাকা হইভে সেরপ অর্থ বাহির করিলেন। এইরূপে মুল এক থাকিলেও বিভিন্নপ্রকার টাকা धाता नगारकत विकित नगरबत विकित প্ৰকার অভাৰ মোচন হইতেছে। প্ৰত-बार हिन्दुनिरगंत निवम एव हिन्नकालहे **এक 'बार्ट डाहा** नरह। **(मर्भित ना।त देशांत्रक जवशारकाम शति-**वर्षन स्टेर्फाइ : इटन शतिवर्कानक प्रत्रभ जनाना राम श्रदेश विकित। जन्माना रमरण मुसरे बहुनाडेंटडटड, ध्राशीटन मृत এक चारा किंद्र काहात वर्ष शक् वर्षिक दरेरकुर । जूनतार मरन बार्ड

আবিগালের স্কৃতি বলিরা আসরা লো কের নিকট বঁড়াই করি, বে আর্যা আর্যা করিরা আমরা প্রভাক সভার চীৎকার করি, সেই আর্যাগণ সমাজরক্ষার জনা যথম বেরূপ নিরম আব্দাক বোধ করিতেন ডথর সেই নিরম চালাইডেন। তবে আমরা কেন এই অত্যাবশাক বিষয়ে তাঁলাদের অক্ষরণ না করি? তে বিদেশীয়্লিগের নিকট সন্মান পাই-বার জন্য আর্যাগল্পান বলিয়া পরিচয় দিব কিন্তু কার্যো কোনরূপে তাঁলাদের সমকক্ষ হইতে চেট্টা ক্রিব না, এ অতি লজ্জার কথা। তদ্ধ পিতার নামে কেহ্

" অনলে অনম বলে ভক্ত মান্য নয়। তেই নয় গুক্তিকাপ্রভব মুক্তাচয়।।"

কার্যো পিতার উপযুক্ত হওরা চাই
নতুবা সন্মানের বদলে এরূপ উপযুক্ত
পিতার এমন অযোগা সন্তান এইরূপ
নিশা রটবে।

আমর। অধুনিক নবা সমাজসংখ্যারকদিগকে একটি কথা বলিতে ভাহি।
ভীহারা মনে করেন আমাদের বাহা কিছু
আছে সব উন্টাইরা দিতে পারিলেই
স্থাত্মসংস্থার হটবে। কিন্তু বাত্তবিক ভাহা
নহে। আমাদের মধ্যেও ক্ষুক্তবিলি
অন্তঃ ভাল আছে যে ওলি বন্ধার
রাখিয়া যেওলি মন্দ্র আছে ভাহা বদলাইতে চেটা করা উচিত।

avan tikina ausige se art ntu on see annige ava m वृष्ट कता वाहरण्डा বিগ্ৰাবিবাহ वहित इंडमान व्यथ्म व्यक्तिमानी नामा-वामिश्रम । छीशांबा वर्णम, "अवासमस्या পুরুষের পক্ষে এক নিয়ম দ্রীর পক্ষে আৰ এক, কিন্ধণ বুজি। প্রাকৃতিক নিয়নে ত্রীপুরুষ একই সভাবসম্পর। कि कमडा, कि वृद्धि स्क्रांन विषयिहे बीलांक्या श्रम्रक्य मृत्य महर । जत क्षांशां 'शूक्यदेव महिल म्यान व्यक्षिकाव বেন না পাইৰে ? যে সমাল জীপুরুষকে वक हरक मा (पशिद (म मनास नक-গাতী, তাহার উন্নতি এখনও সম্পূর্ণ হর महि। "अनियु नक निष्कर नह वसः" हर्णन ना इहेर्द फर्फिन कान नमा-লের ভরুত্তা নাই।" আমবা সামা-वानी निरंगत मरा मा निरंग धारा निरं गिलाक व वृद्धि व क्षत्रकाटक श्रूकरवत्र । । । विश्व विष्य विश्व গাৰৰ যদি ভাৰাই হইত ভাহা হইলে म्हर् शृथिवीत दकान ना कान द्रांत ोलात्कव नुकृत्वत नहिङ नमाम व्यक्षि-াব দেখা যাইত এবং পশুপক্ষিগণের ধাও যৌনভারতমা পাকিত না। তবে শ্লাক ও পুরুষের অনুভবশক্তি বে हुल छाहाटक चामारम्ब मङ्ख्य । कुराब उक्टबरे काकत रत्र महित रेटन डेक्टबर्ड आनिक इत । इःर्व ति जित्रमान एवं धावः सूर्य छेष-विक्तिकि इस । विवासीमि कविटक रतत रेक्श सर्वात । फटव औरना-। गठिविरमाना स्विदेश प्रश्लेष विकास

श्रदेश मा अवः श्रेक्ष विका मृक्तम नृक्त विवाह कड़िश्व क चित्र वमात्र ७ चित-চার। এ অবিচার বাহাতে না হইতে পারে ভাহা সাম্যবাদিগণের বেমন ইব্সিত भागारमञ्ज (महेन्नभा निवास विषय चामदाञ जीभूकरवद করিতে ইচ্ছা করি। 'रायन श्रुक्टबन " विठीय वात विवाह धाठनिक चांदह त्मरे-क्रम श्रीलाटकत्र विशिवनात निनाष আরম্ভ ভউক' একথা আমরা বলি না। আমরা বলি 'বেষন বিধবার বিবাহ. क्षात्र नाहे त्रहेज्ञ शुक्रस्वत्र विठीत-ৰার বিবাহ বন্ধ হউক।' ইহাতে স্ত্রীপুরু-(वत नामा व्यविक्र कहिन, मध्या मध्या नमारकत गर्थके जैनकात इरेन এवः देश **(स**णाहादवर विकक्ष ना रुखांत स्वा-দলিরও ভর রহিল না।

পুক্ষের দিতীয়বার বিবাহ বন্ধ করিলে আযুবলিক আর একটা এই লাভ হইবে বে মনেক কুভবিদা বাক্তি দিতীয়পক্ষের সংসার করিয়া দ্বৈপতাদোৰে কাজের বাহির হইরা বাল তাহা আরুর হইতে পারিবে না।

পতি মরিলে দ্বী ছইবেলা আহারে
বঞ্চিত, অলভারে বঞ্চিত, সংসারে বঞ্চিত,
অতএব পতিকে স্কৃত্ব রাধিবার অক্ত হিন্দুদ্রীর যেমন বিশেষ বন্ধ হর অক্ত আতির
এতটা পাকে না বরং অকর্মাণ্য পতি মরিলে
মনের মত পতি গ্রহণ করিতে পরিব সে
দিন করে হবে এরপ বাসনা বিধ্বারিবাইপ্রচলিত সমাধ্যে দ্বীরন্ধনের মধ্যে ক্ষান

ক্ষণন সম্ভব কিন্তু মামাদের সামাজ সমাজে ভাষার সম্ভব নাই এই জ্ঞা হিন্দুপত্নী এড শতিভক্ত এত সংগাবী। যদি পুরুষের

ষিতীয়বার বিবাহ বন্ধ করিলে আমবা আরও পদ্দীকক হই সংসারডোর কার্ টানিয়া বাঁনু ভাছাতে ক্ষতি কি?

-- ESI : 672-ESI : 193--

প্রাপ্তরভের সংক্ষিপ্ত সমালোচন।

शिन्मी वाक्तित्। শাস্ত্রী প্রণীঠ। কলিকাডা, বিডন যন্ত্র। धाषकात कृतिकात लिखिवाटकन, "वि-ছার হইতে গোলিমান পর্বতপ্রেণীর উপ তাকা পর্যান্ত এবং বিদ্যাচণ ২ইতে তেরাই পর্যান্ত এই ভাষা (হিন্দী) প্রচ-লিত। ভদ্তির কোহিস্থান হইতে আ সাম এবং বাশ্মীৰ ছইতে কুমারিকা অন্তরীপ পর্যন্ত বিস্তুত ভাবত-ভূমিতে যত প্রকার মহুবা বাস কবে, ভাহাবা मक्टलरे व्यक्षिक वा व्यत श्रित्रार्ग हिनी ভাষা ব্ঝিতে সক্ষম। ইউবোপে (ফুঞ্ ভাষা यেक्रण, ভाরতবর্ষে হিন্দীও সেই-ঈদুশ ভাষা শিক্ষা করা मकरमदर कर्छ गा--विरम्स सामानीत । আমাদিগের বাঙ্গালা ভাষায় eসেহের कथा, ভक्तित्र कथा, ভালবাসার कथा, একরপ পরিদ্বাহরণে চলে: কিছ জোধের কণা হিন্দীতে হয়। বাঙ্গালীর ক্রোধ ছিল ना, काष्मिरे क्लास्त्र छावा रव गाहे ; अंकरन अक्ट्रे त्काथ वाङ्गाहर, গরম মেলাইজ বাবুরা আতাভ্তরে পড়ি-शास्त्र। हिनी वाडी उ डाहारम् मूर-कात, ही ्रीका शाकाम कतिवात्र आहे अञ्च উপায় নাই। " (गकारमाण-वासीवा

শ্ৰীষ্ষীকেশ যদি একটু হিন্দী শিশিষা তেড়া মেজাইল দেখান, তাহা হইলে ভাল হয়। আমবঃ व शक्त नगालाइना করিতেড়ি. डाका शाठ कतित्व त्वाभ क्य छीकातः অনেক পরিমাণে গুরু হিন্দীতে গালি मिट्ड मिशिद्यम । वन्नीय यूवकगरवव हिन्ही निश्चितात्र ऋविधासमा धाइ धार নির্ভিত হইয়াছে। बेशत थावत 'হিনীভাষার সংক্ষিপ্ত ইতিহাস'' নামক একটি ভূমিকা আছে। পুতকগানি অধুনা প্রচলিত সংস্কৃত ব্যাকরণের অন্ন করণে বাঙ্গালার লিখিত। প্রেথম শিক্ষার্থীদিগের অনশ্য জ্ঞাত্র देवदाकद्रशिक विषय धार्मा यशाह्याशाहात मतिर्विणिष्ठ कतिबार्कन। व्यामापिर्वि पृष्विषाम, **পৃস্তকশানি यে** উদ্দেশ্যে लिथिक इंदेबाटक छोड़ा मन्नामरन विर^{अप} क्रिश कुड़ दोशी हहेर्यः यहि क्थन वशी विषाद्वारत हिमी शूछक श्राम व्यावय रत, এই এছ পাঠाপুত क्षक्र निसा िछ इ**दशा छै**ठिक। बानानात विशा नवनमृह् देश्टरिक, नःइक व्यक्ति (वर्तर्ग भिका (क्शत्रों इत्र, एळान हिन्दी उ^{भिका} (मुख्या कर्हेंचा।

वक्रमन्न।

সম্বয় বৎসর।

१८ मध्या।

--- ESI 193 -- ESI 193---

বন্ধীয় শক্ষরাচার্য্যের নালিশ।

ধনীর আর একটি নাম "বড়মাছব।" रखानि राक्रांभ रखनाता शतिमिक रत्र, দেইরূপে মহুব্যও টাকার বারা পরিমিত **इरेगा थाटक** । **এर वज्रथानि हाटा जज्ञ**, অতএব ইহা কুদ্ৰ; এই সমুঘ্য টাকার অন্ন, অতএব এই ব্যক্তি ছোটলোক; चात धरे मरहामत्र हाकात्र चिक, चठ-पर रक्षाक्ष--- आकात अठि कृत हरे-ণেও বড়মাত্র। আমার আকার বড়, উদরও বড়, আমি আনিভাম আমি "व्याष्ट्रयः" किस रुगा, वना, क्रिक् णामात्र "वक्षाक्ष" वदल ना । आवि णाशास्त्र क्खरे युवादेश बाकि, दक्रहे वृत्यं ना । व्याचात्र दश्यां वात्र त्यं सव करत छाष्ट्राटक स्थादक कथन कथन " वक-गाष्ट्रव" वटन ; आवात्र एव अन टक्त, इत्र क जाशरक क्लारक "वक्रमास्व" वरम मा। जटव द्याव दंत्र दक्ष्यम हासाध

"বড়মাহ্র" হয় না, বুঝি ব্যয় করিলে "বড়মাহ্র" হয়।

আর যদি বল বাহার ভূমিসম্পত্তি আছে কেবল সেই বড়মান্ত্র; তবে আমি নিশ্চিম্ভ হইতে পারি, কেন না আমার টাকা না থাকুক, আমার ভূমিসম্পত্তি আছে; কেবল এই বালালায় নহে, নানাছেশে আছে। ভূমি হাসিতেছ, তোমার বিশাস হর না। ভাল; তদত্ত করিরা দেশ।

আমি এইমাত্র যে পাত্রপূর্ণ দেবছর্ন ও
সন্থত খেতার আহার-মজ্ঞে আহতি দিরা
আসিরাহি, আমার যদি ভূমি নাই, তবে
তাহা আমি কোণার পাইলাম। বে
মৎসামুও আমার অঙ্গুলিস্পর্নপ্রান্থ ভব
আকাজ্ঞার এইমাত্র সমিন্লোচনে
আমার প্রতি হৃষ্টিপাত করিভৈছিল, যদি
আমার প্রতি হৃষ্টিপাত করিভৈছিল, যদি
আমার প্রতি হৃষ্টিপাত করিভৈছিল, যদি

মংসা কোপার পাইলাম ? এই যে কদনীতড়া প্রোচার মসুবির নাার পরি পূর্বতা প্রাপ্ত হইরা প্রতিপলকে আমার ইলিত করিছেছে, আমার যদি রক্ষ নাই, তবে এই মক্টমনোহর আমি কোথার পাইলাম? এই সে পবিছদ সাগরের নাার আমার উদর-স্থােকতে বেইন করিয়া রহিলাড়ে, এবং তরঙ্গ তুলিয়া বায়ুর সহিত ক্রীড়া কবিতেছে, আবার মধ্যে মধ্যে তাহার ছিলভাগের শোভা দ্বীপ উপবীপ্রেব নাার দেখাইতেছে, যদি আমার ভ্রিনাই, ভবে এই বঙ্গের কাপ্যি কোথা হইতে আসিব ?

छूमि विलाद कार्शाम, वञ्च, दसली, নংসা, ততুল, এ সকল আদি ক্রয় সভ্য কথা, আনি খুল্য করিয়াছি। निशकि, किञ्ज किरमत मूला ? मञ्जित म्ला निशाहि, ভाष्टा मः ननामीय (वडनव्याप)। বিশ্ব তপুল কি কার্পাদেব স্লা দিই नाहै। क्वन्त्रन (क्ना वृशिक्षन, नीध-यथन, बनरमहन शहु उ कार्या क देशा থাকে এবং তাহাব পনিশ্রমের মুলীস্করণ किছु विছু शहित्रा थाटक। চলিত कथात्र त्महे मृतादक धारमात्र म्ला नरल। य ভোমাকে প্রভাহ ললবিক্রয় করে, সে पाकि स्वात शृष्टि करत नाहे, सन ভाइाइ गट्ड; त्र वाङ्गि (करन नही कि कृंग इंडेटड अल व्यानिश (मृड्ड, कृमि ভাহার পরিপ্রদেশ মুলামরণ কিঞ্ছি किकिर विता शाक। अवह तम बाद्धि गरन करत्, "कानि करनत मूना পा हैनाग"

ভূমিও বল, "কামি জালের মূলা দিলাম।"
সেইরূপ ক্রকেরা গনে করে, "আমি
ধান্যের মূলা পাইলাম," ভূমিও বল,
"আমি ধান্যের মূলা দিলাম," বস্ততঃ
তাহা দহে।

श्वा क्रवरकत्र गरह। एम वाक्ति श्विश्रम्बाता धारनाम डे०्शानन कतिबारक, . অভ এব যে পৰ্য্যন্ত ক্লম্বক পেই পরিপ্রমের 🛚 মূলা না পাষ, সেই পর্যান্ত ধান্য ভাহার निक्रे बानीनयक्रम आवद्य थारक। ধানা মহাজনেরও নহৈ ু সে বাজি कुस्टक् व मञ्जूदि काशिम दिवा शाना चालाग করিয়া অানিয়াছে এবং ধানা হয় ত তপুল করিয়াছে অভএব যে প্রান্ত মহাজন ভাহার মূল্য না পার, সে পর্যাত धाना द्याभीनयक्षण व्याणनात निक्षे ष्यावक वारम। भिष, या वास्कि पहे সকল সজুবিৰ মূলা দিয়া তপুল খালাস करिया काशन करतं, उक्ष वाहात, ভাষাৰ নিমিত্ত উৎপাদিত ইইনাছি। ত পুল বাহার, ভূমি**ও ভাহার**।

যাহার আহার প্রয়োজন, তাহার ত্রি
রও প্রয়োজন। ঈশ্বর যাহাকে উদর
দিয়াহেন, ঈশ্বর তাহাকে ত্রিও রবা
তেন। যে কৌশলে জানিতেছি এই
শরীরে আমার উদর আছে,সেই কৌশলে
আনিতেছি এই পূলিবীতে জাদার ত্রি
আছে। পূলিবীর জোন্ জংশে আছে
ভাষা আমি জানি না, কোন "বর্ড
লোকে"ও ভাষা জামেন লা। রাজার
বাজস্কিন্ধে ব্লিয়া জাশন আপন ত্রিব

कत शाहिया शादकन, आमिल इंग्रेमिनर्त বা প্রমন্দিরে বসিয়া আপনভূমির উপ-चल शहिया शकि। दोक्षांत कथन का পন ভূমি দেখেন নাই, আমিও ক্থন कामात्र जुनि (पि नाई। (पि नाई, তাহার আর এক কারণ আছে; আমার ভূমির অংশ কখন চিহ্নিত হয় নাই। একারবর্তী পরিবারের ন্যায় পৃথিবীর যাবতীয় উদরপরায়ণ ব্যক্তির সহিত णामि अकरक अहे शृथिवीत ममूमत जुमि रेभक्क विवश अञ्चर्गानिए एटा ग कति-মার্কিন দেশের ভূমিতে যে কাপাস উৎপার হইতেছে প্রয়োজনমত আমি তাহার ভাগ পাইতেছি। কাবুল দেশের ভূমিতে যে আঙ্গুর, পেন্তা, বেদানা প্র'ডভি ক্সন্মিতেছে, এখানে বসিয়া আমি ভাছার ভাগ পাইভেছি। नर्तरात्मत ज्यिटक जामात अः जारह, धरे जना मर्तरमामत डेर्शासत अश्म शारेया थाकि। ह्यू छ कान कान जक्रान के देशन जामि नहें ना, जनवा गरेरा भारत ना, व्यर्थाए मञ्जूतित मृला निट्छ शांत्र ना। म्नायनि अ ना निट्छ भाति, धदः (मरे सना चाभन चःभ यनि छ না শইতে পারি, তথাপি আমার ক্ষ यात्र नारे। . अ ऋष्मत्र जामानि इत ना। সমাজকর্ত্ক যে সক্ল স্বস্থ সৃষ্টি বা धनछ इहेब्राइ, दक्रम छाहाबरे छात्रामि . जारह ।

वहे पृथिवीरक सामात संदर्भ कि शितमान स्थि सारक, स्राह्म साहित तिन्द्रत

্অনুভৰ ক্রিতে পারি না । অনুভব कतिएं स्टेटन अध्याजः आमात्र छात्रीत ग्रा, वर्षाद मञ्जात मर्गा कांगा আবশার্ক; কিন্তু তাহা আমি ভানি না। বলিতে কি १-কালাশেচ লইতে হইবে, धरे ज्या काजित वार्ता नहे ना। निद्धा ক।দিতে হইবে বলিয়া মনুষামধ্যে থাকি না। পাছে জাতিবিরোধ হয়, এই ভয়ে रिश्कृकिहिमा। कथन ठाई ना। वा काहात्र काटह. दक्वा आगात मानी শুনিতে কর্ণাত করিবে ! ক্ষের রা-बारक यमि वनि, "ভाই जात्नकसमात्र, আনি ভোমার জ্ঞাতি, পৈতকসম্পত্তিতে আমি তোমার তুল্যাংশী, তুমি কেন আমায় বঞ্চনা করিয়া আমার সর্বস্থ লইতেছ • " ভাষার উত্তর ভয়ানক হইয়া পভিবে। वकिक हिमानिद्वता छाहात উপর নালিশ করে এমন আদালত এ প্রায় হয় নাই। আদালতভাপন না इहेट इहेट वे वे वात क्षांकारमध्य ভণ্টেরার আর্মী লিখিয়াছিলেন। তাহা: তেই हिमापिद्वा याणिया छेठियाहिन। বাদপার হিস্যাদার ফকির। মুগলমানের। তাহাই উভয়কে সা বলেন। সেই জ্ঞাতিবাচক উপাধিতে দাবি রাখি। তোমরা আমায় তুচ্ছ কর, আমার कृषि नारे वल। क्यीमात्रक कृषार्थि-काती बल। किन्द्र विठात कतिरल ८ए-थित सभीनां कर्यांती माख। जुमि (क. कर्वव कतिरव, कछनिरमत्र क्रिमिख कर्वव कतित्त, करे दिव कर्ता समीनात्वक महिः

कातः प्रति दशम नगतः कविकारके करतः, प्रति वाद्यातः आळलेत स्थान धरे हित क्या क्रवरकत काविकाता क्यारनाक तरक वार्थि विकासकाची । व्यभिगंद्रक निर्माणिक त्रामाकृतक पृथि-कर्रन केंग्नक, अथवा नामाक्वकरे खुवि-कर्रन क्षणक किया प्रामाप्त निर्देशिक वरत दन्द्र, ख्रवा भाषात विद्यानिङ भागन बनव गांकन दश्ने करूक, छोड्डिङ ভূমির স্থামির ক্ষে না। যে পক্তভোগ

ভাষাতে কোৰ্ পৰ্য বোণিভ বিজ্ঞা কাৰ্যন্ত হৈ কোন পোৰে সামায विवास सा कर, कावि चार ट्याराहर वाकानात्र वाकिव नां। त्लामना वृक्तिक ब्रक्त येन, कोनटक दक्त यन, व्यक्तिकक ना बद्धमाञ्च वन १ 😁

্স্মৃতি কিম্বা হৃদ্পিও কর্ উৎপাটন।

धारांग।

त्रमनी !--व्यनत्र !-- चरहा कि त्यात्र-चनन ! ভাবনা!--ৰন্ধা!--ৰিক্ মূৰ্বতা কেৱন! (कन हिन्छा !--कात हिन्छा |--किरमत पत्रना ? কি সে নারী १—কেন ভার এতই ভাবন। १ ভৃথি।—ছ्व!—ছ्क्ला, भ्यूत्र वातान, जूबात्र गांख कि त्मरे चुनिछ विमान ? मत्मन माहाचा Cकाथा—Cकाथा मृह्दैशन ? স্থৃতি কিছা জন্পিও কর উৎপাটন।

लाबान हालियां यन बटक्य छेलट्स, প্ৰেম্পূৰ্বি চূৰ্ণ হোক্ নিভ্ত-অভয়ে। ভালবাসা ?-ভালবাসা —ছার ভাল্ঞানা ! च्य (काछ-च्या क्रम-विद्वेमां निर्मेता; धिराम गार्वि कार्य-जनस्-वाकनां, . पूत्र कत-वीरम ध्याय करवी ना काम्मी।

भीनवाना त्रमनीत छनता, निक्त। कोक!-मूर्थ!--नत्रित थड कि इस्त ?

পাণ-পুৰ্য-নীতি-সেত সুমুদ্ধ বিচার, **(करव रमय केक वात्र रशोत्रव काञ्चात !** অবিগ-একাও, আর আত্মার সন্ধান, তুলাদণ্ডে সমভারে কর পরিমার; त्म भोत्रव-कीवरमञ्ज दम काबूना धम--त्रमंगी পृक्षिरक जाब कत्र विक्रत्रण ? विक् व्यात-मान नीय ठीक-इत्रवात ? षमात्र-प्रनिष्ठ-हिन्त कत्रव विश्वात ।

"वृषा टक्रम ८कम गाव, श्रुताबंद टकायात्र।" কোৰ। ছিল লে সময় তীক্ষ্ণভাষণ্য ? त्यन ना कविष्ट शीर्य समझ कांगात ? " प्रतिक य दीक्षत्रीयं न्यायः।

ক্ষু কর বিধাতঃ ৷ এ শতীত শ্বৰ, त्र गूर्वज्-त्र जीस्रज्-मास् असत। 🖓 भे सम्रदे दशक्तरे ऋषन दक्त्य কি গাণে, কি ভাগে—হার কোন প্রলোচনে, गाल्टनत्व निष्कृष्टिक् नातीत्र प्रतास ?

' ख्यानि चनुक करे प्रत्नद चनग,

व्यापान ।

निका, मीका, धन, मान, अम्ला, बीवन कृष्ट छावि (यह (काम कविष्ट नायम, •जडूत-डेमारन, त्यन-वाहि-विना पान-७र-जामायशै-मका संगद प्राव, मानत विश्व-वनं, शंकीत-वाषान, भावित विमन-(क्यांकि-किटलंब केंब्राम, উপেক্ষিত্र अवदृष्टल वाशंत्र कांत्रन, (म त्रम्बी-(म ब्राक्टमी-भाषांनी अवन !

विद्राय।

क नरह मरनत शर्म, क नरह व्यवस्, প্রেমিকের চিত্ত এড স্বার্থপর নর; ना विशाहक, नारे विन त्यम-श्रविवान ? ত্যি সদা বাস ভাল, ভোষারি সন্ধান। विनाति नरह सूथ-सूथ जाननात्र, एथिए यत्नत्र क्या निरंबर्थ क्त्रात्र; बन्क व प्रांतन श्रम्बक्यात्रं, गावशास बाब दबन निया ना कुन्नहत्त्र ।

ছ্ৰি ত ডিখারি—ভৰ কোণা অধিকার গু **्डामात के ब्लाड-धन ब्लाइटड छाहात।** ভিক্কের কেন জোধ—কেন ক্ষিমান ? ভিক্ত কুলের পুঞ্জ ভূপের স্বাস, किंगा नरर-क मिन्नामा प्रमाना देवानान, न्य ग्राह्म — । कीनदान सहस्य महार्थाह्य ।

মূৰ্বভূমি! কেনজোধ? কেন মডিয়ান? ंधधाना ब्रावरङ उच्च-- हिति रमध व्याप। কৈ দিয়াছি ! কি চেন্তেছি ! কি জিকা আমার! काशा वार्थ, त्य कि वार्थ, वार्थनाम कात्र ? क्रवन सब्देश बद्ध बुलाब शिक्सा,. কি ভিকা চাহিরাছিত্র কাতরে কাঁদিরা— ''দৰ্শন, স্পৰ্শন ভৰ চাহিৰ না আর, ভাগৰাসি বল ছবু সুথে একবার।"

সহল-বৃশ্চিক-দন্ত অন্তরে তথন, भिटन भिटन, त्याम त्याम, कतिरक् मःभन; बाक्रमी कि উভরিল, অহো হো! निर्धानि, ধিক্ যোরে, প্রভার ক্রিছ বিজ্ঞাসি— "रहरत्र रमय-कि हरत्र इ-निक्रे अत्रव, कानवामि वन ऋषु-वाहित्व कीवंन।" **উভরিয়া "না" পার্ণী কহিল আবার,** "हैं(थे दक्षि मन जरन कि कतिन जान।"

विषय-छक्तिप-६ एक भारतक अस्त्रा, यानवी कि दश्वी छावि दश्विक हा देश, डेक्क नदेश होते मा तक मा नित्र, शृंद्धम्-विवन-कांत्रा का एक ना फीछ, द्यांव-त्यांक-विश्वा-द्रमम्, कक्रगांत क्यां, नारे डाटर विष्यु माळ-दिन चनायनाः व्यानित नवनवत्र केविया क्लिक् भागनी कि दनवी जात वृक्तिक मात्रिष्ट ।

55

मृडियां नक्षक भूनः (पशिष्ट् यथनः, स्मानः) हिन्न भागां स्मानः, हिन्न भागां हिन्न स्मानः, हिन्न भागां हिन्न स्मानः, हिन

३२

দেখি নাই, শুনি নাই, তদবধি আর;
দেখিব না, শুনিব না—জীবনে আমার,
তবুও পরাণ কাঁদে কথন কথন,
লজ্জার স্থণার ছথে কিপ্ত হয় মন,
ফুরারে গিরাছে সবি আমার জীবনে,
হুথের বাসনা আর নাহিক এ মনে,
দেখিতে বাসনা শুধু অন্তর তাহার,
কাঁদে কি না কাঁদে মোর ছথে একবার।

বিরাম।

20

সে কাঁদিবে কোন হুখে? কি হুগ ভাহার?
মর কিখা বাঁচ ত্মি, তার কিবা ত্যার ?
তুমিই বাসিলে ভাল, সে কেন বাসিবে?
তুমিই দহিলে হুখে—সে কেন সহিবে?
তুমি বল মন-প্রাণ দিরাছ তাহার,
কেন দেও? কারে দেও? সে ত নাহি চার!
কি খুগা! কি লজ্জা! চিছি, এই কি জোমার,
মনের মাহান্দ্রা আর গৌরব আন্ধার?

ন ও তুমি জগৎসিংছ— সে আগেবা নয়, করিত-প্রণয়ে তবে কেন তৃষা হয় ? মন তার, প্রাণ তার, প্রণয়ো তাহার, তাহার ভদরে তব কোন অধিকার ? তব-চুপে কভু তার কাঁদিবে না মন, ছুদ্দা নির্থি তব হাসিবে সে জন।

প্রয়োগ।

١e

সে কাদিবে কোন গুণে? এই কি সংসার!
দরা-মারা-সাম্পৃতি সবি কি মিছার?
সে নাহি কাদিবে যদি কৈ কাদিবে আর?
কার গুণে, কার তরে, এ দশা আমার?
কারে অরি দিবানিশি ঝরে এ নয়ন ?
কার গুণে প্রতিপল আরাধি মরণ ?
বজাহত-তর্ম-প্রায় বিশুক্ক-জীবন—
কার তরে আজো আছি করিয়া ধারণ?

36

সে কাঁদিবে কোন ছখে? অংহা ছো সংগার!
নরনারী-পূর্ণ ভূমি—তব এ আচার?
ভীবন-যৌবন-স্থা, অঞ্চলি পুরিয়া—
নিত্য যে চরণে তার দিয়াছি ঢালিয়া।
ভূষিত-চাতক হতে হইয়া কাভর,
দেখিতেছি মুখ ভার এ দীর্ঘ-বংসয়!
ক্ষতদাস হতে তার হয়ে অস্থগত,
ভূষিতে ভাহার মন—সদাই নিরত।

এ প্ৰায় কিছুই কি নাহি প্রভাব ? মনেও মেহের বিক্তিগনা ভাৰাৰ? এ হ'তে সুধিক ভুৱা ছিল মান্দানাৰ, কথাৰো কুকুৰা নাছি ক্ষিণ ভাৰাৰ ? ताका गत्र—धनं नय् — नर्हक की वन, हिर्द्रिक क्रमांत्र धक्षी वहना। विश्पृत् छात्र भिष्टे धक्षि वहना, खनाहिङ मन्माकिनी ध मल-की वस्म।

্র তপদ্যা—এ যন্ত্রণা—এত অধুরাগ, , পাষ্ণ-ক্লয়ে ভার করিল না দাব। कि द्रा नाजी ?— िष्ठ छात्र मानविक नत्तरी था कि शावाबम्ब नाजीत छात्र ?

(सरी नत्र—शावानी त्रा— धारत्वत्ता मन, छनगात्र— माधनात्र— इत छेठाछेन।

शावानी शृक्षित्र इत्तर এত हिन बदती थाई छूथ ठित्रकिन त्रिट्ट खाउटा ।

ecco MO DESTIN

. বঙ্গ বৈজ্ঞানিক।

আল কাল বাঙ্গালার পশ্চিমবিভাগে ছাত্রবৃত্তি পরীকার্থী দিগের স্বন্য যে সকল বিজ্ঞানবিষয়ক পুস্তক নিদ্ধারিত হইয়াছে ভাহ। বালকগণের শিক্ষার পকে কোন जारम डिनर्याशी नरह। (य य जारम व्याहेट का शृक्षी लाता तमरे तमरे তংশ এক পারপ্রাদে লিখিত হইয়াতে। यानकशन अहे जनन विषय कि हुहे तु-থিতে না পারিয়া পরীক্ষার উত্তীর্ণ হইবার गानाम अक्रमकीत नाम (करत कडक धना अञ्चाम किंद्रिज बांधा इत्र। जातिक विनिद्देन (व वे बकार्स्डवित्र भद्द वानकः গণের উপকারে আসিতে পারে কিন্ত वानक्षन ध्रहे मकन शुक्क इहैट घ:हा अ**उ**ध्न कदा छोडात अधिकाश्म है यनि ^{ज्य रव} राहा स्ट्रेटन भटत छेभकात रखना र्ति थाक्क क्रमभारत्ते रकावना । अह धना भागता नान महद्देशमाथ क्षेत्राहार्थाः এম এ প্রণীত পদার্থবিদ্যার স্মালোচনা করা আবেশ্যক বোধ করিয়াছি।

মহেল বাবু বিস্তর পড়িরা শুনিয়া তাঁহার পুত্তকখানি ভাগ করিতে অনেক **(हेंडे) क्रियाइन, किंद्ध जिनि य निष्ठे-**টনের আকর্ষণবিষয়ক নিয়ম বুঝিতে পারেন নাই ইহা দেশিয়া আমরা আশ্চর্য্য হইলাম। তিনি তাঁহার পদার্থবিদার (অষ্ট্রমান্ধ ২৭ এর প্রায়) বিধিয়াছেন य " তावर बंखरे निकिश इरेल ज्रात পতিত হয় ইহা দেখিয়া আপাততঃ এরূপ বেধি হয় যে পৃথিনীই ভাহাদিগকে आकर्षन करतं, किन्द्र जाहाता शृथिवीरक कि পরস্পারকে আকর্ষণ করিতে সমর্থ নছে। किन विद्यास्त्री किना किना प्रिविद्य द्याप इटेटव देश मिडाय झाँखिमूनक; स्नुड: नृषियी जाशंक्षित्रहरू संज्ञान चाक्र्यकृत्व द्याशास भूमिनीटक अवः नैतानात्क

रगरेत्रण बाकर्वन करत किंद्र शृक्षितीत সামগ্রী পরিমাণ অধিক হওয়াতে ভারার व्याकर्षण व्यापकाकृष्ठ व्यापक दोवन।" चामत्रा चाम्ठर्ग इहेलाम (व निष्ठिन कड माथा ध्वारेवा आकर्षन मः जान दा নির্ম বাহির করিলেন তাহার কি শেষে **এই नाशा।** निडें देशत आकर्षन मक्कीत निषम विषय जामता এই क्रथ মানি যে একটি অতৃপদার্থ অন্য জড়-পদার্থের প্রতি বেরূপ আকর্ষণশক্তি ध्यकाम करत (मरवांक भनार्व ध्रथम-টাকেও ঠিক সেই সমান বলে আকর্ষণ করে। ছুইটি দ্রব্য পরস্পরের প্রতি বে चाकर्रनमस्ति श्रकाम करत (महे चाकर्रन-भक्ति नमान, निश्व नमान, जाशादनत পরিমাণ কথনও অসমান নহে। অর্থাৎ পৃথিবী একটি ফলকে যে বলে ভাহার मिरक चाकर्षन करत्र करावि छिक रनहे वरन भृषिवीरक ভाषांत्र निरक आकर्षन করে। খোড়া যে বলে গাড়িকে টানে গাড়িও সেই বলে ঘোডাকে টানে। गटरका वाव व नियम बारान किंद निय-. মের কার্য্য ভালরূপ বুঝিতে পারেন নাই। ভাহাই বলিয়াছেন "একের আকর্ষণ चार्थकाकृष्ठ चार्यक व्यवन" माह्य बांब् रंग विषय ना वृक्षिया वानकश्रन छून শিকা দিতেছেন আমরা সেই বিষয় निम्निविजक्रां युवारेए रेव्हां क्रि। আপনি একখানি মোচার বোলা জ-

লের উপর দিয়া টানিয়া লইয়া যাইতে (य वन क्षाम कतिर्वम मह वर्ण वि धक्यानि तोका चाकर्यं करतन छत्व আকর্ষণের ক্রিয়া পূর্ব্য-অপেকা অনেক मान इहेरव अवर तमहे वरन यमि अक वृह्माकांत्र आहां को हातन छत्व काकर्त. लित्र कित्रा এड अह रहेरव य कि इहे इम्र छ (मथा वाहेरव ना। अर्था९ विष इरेडि वद्धत छेभन्न ममान व्याकर्यनमिक প্রকাশ করা যায় তবে ঘেটির পদার্থ সমষ্টি* অপেকাকৃত অধিক ভাহার উপর वाकर्रविका वाशकाक्य नान हहेता। এত্বল আকর্ষণের ক্রিয়ার ন্যুনাভিরের रत्र आकर्षां न्त्र नाना जित्रक रह ना।

পৃথিবীর পদার্থসমষ্টির সহিত কোন ক্রব্যের পদার্থসমষ্টির তুলনা হর না, স্থত-রাং পৃথিবী ও বৃক্ষচাত ফল যখন ঠিক जिन्नि निर्मान वाल आकृष्ठे हत्र ज्थन কুত্র ফলের উপর পৃথিবীর আকর্ষণক্রিয়া ध्यः पृथिवीत छेभत कत्नत्र चाकर्वत्तः ক্রিয়ার সহিত তুলনা হইবে না অর্থাং আমরা দেখিব যে ফল ভূপতিত হইন किन भृथियी करनत पिरक छेठिन ना।

मरहस्वांत् यनि कान देश्तिक श्वक না পড়িয়া কেবলমাত্র বাবু অকরতু^{মার} प्रस्थाने नार्धिकाशानि जान कतिहा পড়িতেন, তাহা হইলে বোধ হয় এরপ महास्या सांच हरेटिन मा। ज्यास्यवीय निचित्रारक्त, " रवंत्रन शृथियी निक्ष्य

[&]quot; वामता इरदेश Mass भरतत जर्द मामती ना निश्चिम भमार्थममेड भन यावरात कतिलाम।

সমন্ত বস্তকে আকর্ষণ করে, সেইশ্বণ ভাহারাও যত ক্ষুত্র ছউক না কেন গৃথিনীর উপব আপন আপন আকর্ষণ-লক্তি প্রকাশ করে। ভবে পৃথিবীর নিকটবর্ডী সম্লায় দ্রব্য পৃথিবী অপেক্ষা ক্ষুত্র, এ নিমিত্ত ভাহারের আকর্ষণগুণের ক্রিয়া আযাদের প্রত্যক্ষ হয় না। '

काकर्वनिवया मदहळातातु यांका यादा লিখিয়াছেন, তাহা সমস্তই ভূল। ৩৫ शृशीय, निर्द्शां उष्टल कि श्रम कि लयु मकन वश्वहे अकशाब हरेटड अक नगरत कृत-ठिउ इत्र, देशत कात्रण लिथियार्डम (व "मुक्न आकात जनारक है भूभिनी ममान वल जाकर्षन करता" हेशांट जामता दहे ব্ৰিতে পাৰি যে একখণ্ড লোহ ও সেই প্ৰিমিত সোলাকে পুপিৰী সমান বলে चाकर्षन करत व्यर्थाए উভয়েরই সমান। আশ্চধ্য কথা বটে। প্নশ্চ "মর্ণের পরমাণু সকলকেও পৃথিবী সেবলে चाकर्मन करत भागक अ नागरका भत-गानु मकलरक व किंक (महे वरन काकर्रन कात्र" अर्थाए मकन भारमञ अर्थ यम সমষ্টি না হয়, ভবে স্বৰ্ণের (molecular weight) আপ্ৰিক ভার কাগত্ৰেৰ আণ तिक ভारतद महिल समान। छरव छा। ऐन যাহা বলিয়াছেন ভাছা বোধ হয় ভুল।

ক্রিয়া ও প্রতিক্রিয়াসক্ষে মহেক বাবু কি ব্রিয়াছেল গেখা যাউক। তিনি বলেন বে ক্রিয়া প্রতিক্রিয়া চাপ ও প্রতিচাপ মনু সমান স্মান। ক্রিছ কোন কোন বাবে আন ক্রিয়া বলি টেবিলের প্রতিচাপ হইতে জবোব ছাপ ক্ষিক হয় তাহা হইকে টেবিল ভগ ও চুর্ব হইরা ঘাইবে।" কিন্তু চাপ বে ক্ষণমন্ত প্রতিচাপ হইতে বেশী হয় ইহা নিউটন বলেন না। ক্রিয়া ও প্রতি-ক্রিয়া বিষয়ে আমাদের যালা বক্তব্য আছে ভাহা আমরা স্বায়মস্পারে বল্পর্নন্ত্র প্রকাশ করিব।

আকর্ষণয়ঽক্রান্ত নিরম বিনি ব্বি:ত
পারেন নাই তিনি ছিতিবিজ্ঞান ও গতি
বিজ্ঞানের বিষয় বাহা ব্রিয়োছেন, ও
ব্রাইয়াছেন তাহা বলা বাছলা। আমি
প্রতিপরিচ্ছেদ লইয়া সমালোচনা কবিতে পারিতান, কিন্ত প্রভাবের কলেবর
বাড়িয়া যায় এই ভয়ে ক্ষান্ত হইলাম।

वाश्विकान ७ वादिविकारम धार्या हाथ काहारक बत्न अहें है छान कतिया বুৰিতে হয়। **ठांश काशांक वरल देश** বিনি ভাল কবিয়া বুঝেন নাই,ভিনি বারি-विकान छ वाय्विकारनत किहूरे व्विटक পারেন নাই। बर्द्यातातु वाशुमानगरञ्जव বিষয় যাহা বলিয়াছেন ভাহাতে তিনি বাষুর ভার ও বায়ুৰ চাপ একই কণা विषया निर्देश कतियारहरा। (১৪ পृष्ठा) কিছ তাহার আনা উচিত ছিল চাপ, কেবল চাপ বাডীত ভার নহে এবং ভার क्ष का वह हान नरह। (presure is presure and weight is weight) কোন পাত্রস্থিত বাতাদের ওক্ল কর্য क्रक कृष्णवत शावमधाय बाहादमस क्रमारनस क्षि नेवान बहेरक नाटर, क्षिक करनेन हाथ

चारनात हार्भित महिङ मनानं मह । विक् মান্যত্রে বে পার্দ উঠে বাবুর ভার তাহার কারণ নম, বায়ুর চাপই ভাহার কারৰ; **একটি মুখবন্ধ কাচপাত্রের অভ্যন্তরে য**দি वायुगोनयञ्ज जाया वाय, जाश इटेटन **(महे यटाब भावत्मत्र छेभत्र किছू উপ**बिष्ठ সমস্ত বাতাদের ভার পড়ে না, তথাপি পারদপাত্তের মুখ খোলা থাকিলে বতদ্র উঠিত বন্ধ করিলেও ততদ্র উঠিবে। যদি পাতের মধাক বারু ঘনীভূত করা বার ভবে বার্মানবজের মধো পারদ আরও অধিক উঠিবে। কাবন বাযুর চাপ বায়ুর খনত্বের উপর নির্ভন্ন করে, ভারের উপর নির্ভর করে না। এইরূপ ভার ও চাপের একই অর্থ মনে করিয়া অনেকে व्यानक शीनरयोगं करत्रन । (यमन महिन् वावू विविद्याद्यन त्य " व्यामता त्याव्र.७१६ यन ভात्र आकास विश्वहि, आन्हर्सात विषय ७३ (य आमामिशटक कानज्ञभ ভার সহা করিতে ২ইতেছে ইহা আমর: धकवात्र खरमछ मरन कत्रिना।" मरदञ्ज .বাৰুর পকে ইহা অতি আক্রেয়ার বিষয় वर्षे, काँत्रग जिनि ভाর ও চাপের বিভি-त्राज! कथनल गर्न जादन नाहे, किन्द যিনি ভার ও চাপের বিভিন্নতা স্পষ্ট ব্ৰিয়াছেন ভিনি এই বার্দাগরে মগ্র रुहेबाও (कन स्व किছू छात्र मर् करबन न। छाहां, दिरमंब वृद्धिशास्त्र । नाञ्चतिक আমরা মৃণন মোট মাঝার করিয়া না বেড়াই তখন লিজের শরীরের ভার ভির किहूरे परम कति ना । वाष्ट्रभागात कृत

বিশ্ব বেশী ভার বছন করা দুরে থাকুক বহং কম ভার বছন করি, কারণ বায়ুমধ্যে থাকিলে শরীরের যে ভার ও শরীরের আর্তনপরিমিত বায়ুর ভার গোগ করিলে নির্মাত্রকে শরীরের ভারের সমান হয়।

ভরল পদার্থের কোন বিশ্বর উপর চপে, presure at a point), চাপসমষ্টি (total presure) সংঘাত চাপ (resultant presure) প্রভৃতি ইহাদের প্রভেদ স্পাই করিয়া না বুঝাইয়া দেওয়াতে এক চাপ কথা লইয়া প্রভেমধ্যে অনেক ভ্রম ঘটিয়াছে।

মহেন্দ্র বাবু ৭৪ পৃষ্ঠায় লিখিয়াছেন
"তরল বন্ধর পৃষ্ঠদেশ সর্ব্যাতই সমান
উচ্চ।" ইহা পড়িয়া আমরা এই বৃন্ধিতে
পারি যে গলোত্তী ও সাগরসক্ষমের অলপৃষ্ঠ সমান উচ্চে অবস্থিত। কলিকাতার
গলার জলপৃষ্ঠ সাগরসক্ষমের জলপৃষ্ঠ হইতে
উচ্চ এই কথা কোন বালককে বলাতে
পে উত্তর করে বে, তাও কি হর, আমরা
পদার্থবিদাসে পড়িয়াছি "লল উচ্ নিচ্
ইইতে পারে না।" "তরল বস্তর পৃষ্ঠদেশ সর্বাত্তর সমান" ইহা লিখিবার সময়
মহেন্দ্র বাবুর সন্দের ভাব এই যে তরল
বস্তব। ব্যাব সমান্তা। পাকে তথ্য

১২২ পৃঠ। " স্বাকিলণ বাল্যালির ক্ষা বিরা আদিরা পৃথিবীপৃঠে পতিত ক্ষা কিন্তু তদ্বারা রাল্বালির উষ্ণভার ভালুশ বৃদ্ধি হয় না। পৃথিবীর পৃঠ হইবত ক্ষেম ক্ষেক্ষিত পরিচারিক কাশ্রিক্তিত

क्रेबा देशांटक क्रेक करवा आहे निश्चित वाश्वाणित अध्यारमभ्याज उक किन्द উর্নেশ হিম।" পূর্বপৃঠার পরিবাহন काहारक वरण वृत्तांन चारह। यकि धक কড়া লগ চুলীজে গরম করিতে বসাই, **ज्द निरम्न जन अथरम शहम स्टेर्ट ।** नवय जन नच् इखबाट छेन्द्र छेडिद এবং উপরের অল নীচে আসিয়া পুনরার शवम रहेरव धवः উপরে উঠিবে। धहे-ৰূপে তাপ প্ৰবাহিত হওয়ার নাম পরি-বাহন। স্থতরাং পরিবাছনধারা যেরপ এक कड़ा धन ममछ ममान डेक इब সেইরূপ সমস্ত বারু সমাস উষ্ণ হইবারই কথা। অতএব উপরের বাতাদ কেন भीजन दमरे विषया या कावन शारीर्भंड হইরাছে ভাহার যুক্তি এই-স্থাকিরণ दाता भृषिवी भृष्ठ উত্তপ্ত হয় পরে পরি-বাহন ছারা বায় উক্ত হয় কিন্তু পরিবাচন वण्ठः नमछ वायु नमान छैक स्टेवात कथा এইজনা वार्वेत्राणित অংখাদেশ উষ্ণ ও উর্দেশ হিম। यथ्डे বুরিরাছি। উপবের বায়ু কি কারণে শীতল ভাহা वामता अरेष्ट्रम मःटक्टल वनिटक हेव्हा क्ति।

প্রথমে কোন বার্নির্বাভনযঞ্জের জাকরণমধ্যত্ব বায়ুর চাপ ক্যাইরা দিরা
যদি পরে বার্হিরের বার্ প্রবেশ করান
মার, ভাষে বার্হু প্রবেশকালে শীতল
ইবরা পড়েঃ এইন কি কোন কোন
সময় বারু মধ্যবিত ক্যাইর বাপ কুজ্ব-

विकाब चाकांत्र शांत्रण कट्रा। कातन वाहे एव वाहिरतत वाह्न शृटकी य हांश दिन चांत्रन-चलासद्द क्राद्यभ कारण दगरे छाट्रांड द्वाम र व्याटक छेवांत আর্তন বৃদ্ধি হয়। এই আর্ডনবৃদ্ধির সময় বায়ু চতুঃপার্যন্তিত বায়ুর চাপের विक्रांच्य (य कार्य) कतिन (कान मंचिक দারা সেই কার্য সমাধা হইল। পশুতের। ত্বির করিরাছেন যে আভ্যন্তরিক তেন্দের কিয়দংশ ক্ষাত্ত হইয়া উক্ত কাৰ্য্য সমাধা হটল স্বতরাং বায়ু শীতল হইরা পড়িল। আমরা জানি যে যত উপরে উঠা যায় ৰাযুব চাপ ভত কমিতে থাকে, স্ভরাং **कृ**उनमिक्षेष वायु यथन **উत्तश** इहेशा উপরে উঠে, যত উপরে উঠে তত তা-হার চাপ কমিতে থাকে; স্থভরাং ভাহার আরতন বৃদ্ধি হয় ও শীতল হইয়া পড়ে; কিন্ত এইকণে শীতল হওরাতে উহার ঘনত্বের বৃদ্ধি হয় না স্বভরাং পুনরার नामित्रा जानित्रा जावात उस इत्र ना ।*

মহেক্স বাবু কতকগুলি শক্ষ ব্যবহার
করিয়াছেন, ভাহা কি অর্থে ব্যবহার করিয়াছেন বালকদিগকে ব্যান উচিত ছিল।
বথা সামগ্রী (Mass) লম্ব (Vertical)
সম্তল (Level) ইত্যাদি। তিনি যথন
ভ্রার অর্থ ব্যাইয়া দিয়াছেন (১২৩ পৃষ্ঠা
ভ্রার অর্থ ব্যাইয়া দিলে অসকত হইত না।
কায়ণ আয়য়া লম্ব অর্থে perpendicular

श्रेक्ट व्यरणं काका मुक्तक प्रमानीत्न शक्कित ज्ञात शिवितार्व आज्ञन प्रदिन ।

সমতল অর্থে (plane superfices) ব্রিয়া ব্রি। অড়ের অনুষ্ঠ মধ্যে অতের অবি-নথমতা গুলটির উল্লেখ করিলে বেণি হয় রেশি ক্ষতি হইজ না।

অবিক আর কি বলিব ইহাতে নাই

এমন কিছুই নাই। ইহাতে অফুপ্রাস্
আহে, অলম্বার আছে, শ্বুবিন্যাস আছে,
কবিম্ব আছে, যথা (৯০ পৃষ্ঠা) 'বারু না
থাকিলে পর্বতনন্দিনী শুখাহ বলিল্যালিনী প্রবাহিনী লোভন্থিনীগণ কলকল
রবে প্রবাহিত হইত না। বায়ু না
থাকিলে কাদম্বিনীর ললাউদেশ সৌদামিনীরূপ সিঁথিতে সমুজ্জ্লিত হইত না।
ইহাতে ক্লু আছে, কপিকল আছে, দড়ি
আছে, অলপাত্রও আছে। মোট "হিঁরা
মলিসুচ হ্যার,প্রাড্বিবেক হ্যার,প্রভ্যায়বি

হারে সাব শেবে প্রশংসাপত বি হার।
মহেন্দ্র বাবু বিজ্ঞাপনে লিখিরাছেন
বাজালার বিজ্ঞানবিষয়ক সহল বিষয়
লইয়া কোন ভাল বই নাই বলিয়া তিনি
এই ভাল বই লিখিতে প্রবুত্ত হন।"
কিন্তু অক্ষর বাবু যেরূপ পরিকাররূপে
বিজ্ঞানবিষয়ক প্রভাব লিখিরাছেন তাহার
পর মহেন্দ্রবাব্র ভাল বই একটু পরিকার
হইলে স্থী হওয়া বাইত। যে যে বিষয়
তিনি ভালরূপ ব্রিয়াছেন তাহাই লিথিলে ভাল হইত।

বিনি এই সমালোচনার বিপক্ষে কিছু বলিতে ইচ্ছা করেন ভিনি এই বঙ্গদর্শনে প্রতিবাদ লিখিয়া সকলকে জানাইলে সম্বর্ট হইব।

चित्र, त्था,

- wife Fall Billion

অভিজ্ঞান শকুন্তল।

২। তুদ্বস্ত – নাটকের চরিত্র।

অনেক প্রথম শ্রেণীর নাটকে ছই রকম
নাটকত্ব থাকে। একরকম নাটকত্ব
দৃশুমান—নাটকের আধ্যারিকা পড়িরা
গোলেই দেখিতে পাওরা যার এবং বৃথিতে
পারা যার। আর একরকম নাটকত্ব
অনুশ্যমান—নাটক পড়িরা গেলেই
দেখিতে পাওয়া যার না এবং বৃথিতে
পারা যার সাত্বিধিতে হইলে ভিতত্তে
পারা যার সাত্বিধিতে হইলে ভিতত্তে
প্রবেশ করিতে হয়। একরক্য নাটকত্ব

নাটকের কারাতে আঁকো থাকে—দেথিতে ইচ্ছা কর আর নাই কর, নাটক
পাড়িতে গোলে দেখিতেই হইবেক। আর
একরকম নাটকত নাটকের গায়ে আঁকা
থাকে না—ইচ্ছা না করিলে দেখিতে
পাওয়া যায় না—ইচ্ছা কয়িয়া য়ুক্তিবারা
টানিয়া বাহির করিছে, হয়। ৢ কেয়পীয়য়ের হ্যাম্লেট নামক নাটক পাড়িলেই
, দেখিতে পাওয়া বায় নে মুবরাক্ য়্যাম-

লেটেব মল তাঁহার ছ্রা্ছা পিতৃবোর মন্ত্রে রোষপূর্ব, মুণাপূর্ব, পিতৃহত্যার প্রতিশোধবাসনাপূর্ব, কিন্তু প্রতিশোধ সাবনে অদৃত্সকল-পিতৃবাঞাণসংহাবে অনিশ্চিত্তত। দেখিতে পাওয়া যায়, নাটকগানি প্রথম ছইতে শেষ প্রাস্থ এই हिलावाकि । सिथिएक शास्त्रा यात्र त्य প্রথম হইতে শেষ পর্যাত যুধরার হাাস न्हे भिक्तात्र श्रीनमःशाय कतिवाद सना ह्यानक आंदिशवान, किंद श्रागमः शंत हरवन करवन कतियां छ कदिए अध्यान ।। এইটি হ্যামলেট নাটকের দুশামান ।।हेक्ड-नांष्ठेकथानि शिख्या शिवारे দ্বিতে পাওয়া যায়—পভিয়া গেলেই কিন্তু এই দুশামান চাকে পড়ে। हित्य मृत्य अकृष्टि शृह वा अनुश्रमान किंद चाड - এই विভাবের মলে হিভাবে পাদক মানব প্রকৃতি एइ। य विद्रमध्यानमध्यक्रिव वरन. ं विरमेश महनाश्रम्भ क्षानी व स्वरण कार्या-हिंख हैका अवः मद्भाष्ट्र ग्रांसा एडेक्न রোধ উপস্থিত হয়, ভাছাই ছাামলেট हेटकर शृंह वा अनुभागान नाहेकछ। ' গুচ বা অদুশামান নাটক ছ দুশামান विषय कार्यस्थान । पुनामान गाउ-वत नाव देशटक माउँटकत शादत ভারকণে অভিত দেখিতে পাওয়া বার

না— গৃঢ় নি ইন্ত বিণয়া ইহাকে ধু কিবা পাতিয়া লইন্ডে হয়। অভিজ্ঞান শক্তল নাটকেও ঠিক্ ভাই। পূর্বপ্রভাবে বে নাটকছের কথা বলিয়াছি তাহা দৃশামান নাটকছ। এই দৃশ্যমান নাটকছেব মৃশে যে গৃঢ় অদৃশামান নাটকছ আছে এপন ভাহাই দেখাইবার ভেঠা কবিভেছি।

পর্বপ্রভাবে আমবা গ্রন্থ সম্বন্ধে যাতা বলিয়াছি ভাতাব সার্মর্থ্য वृक्षियां एमिएड इंडेटडर्ड । इच्च करनद **डिलायरन खनम कतिएड यिम्साइन—** कि क्रियामां क्ष्मावनाम्लना वानि-কার সভিত প্রণয় কবিতে বসিয়াছেন। এই প্রাণয় কবিতে বদিয়া ছুল্লব্রেব মহা-शरीका उठेवा राजा। ध किरमद श-রীকা গ এ কি চন্মস্তেব প্রণারের পরীকা গ (वाध इम्र व्यानाक विनादन-है। छ।है। (वाथ इय कारनरक विनादन (य क्रमुख बनम्ना ज्राभावत्म এक्टि बह्मवह्मा. সৰ্শমনা, বাজমাহাত্মামুগ্ধা ভাপস্বালাকে দেখিয়া প্রণ্য করিয়াছেন বলিয়া পাছে क्रिक प्राप्त करत (गरेसना महाकवि भशेकांबाता (तथाहरता (य तम अवय পৰিবা প্ৰণয়। এ কথাৰ একটি উত্তৰ धरे दा कानिमारमत्र नाथि खलमत्मगीन কবিগণ দৃষিত প্ৰণয় দইয়া কখনও कावा वा नाहेक लिएक ना । किडीए

^{*} स्थानिक कर्षाण मसारमाहक Dr. Ulrich त्यस्त्रीतरतत्र त्यामिश्र धनः कृतिहरू । क नावेकमध्य अवे कथा वितिष्ठास्थाः :--

That the leading interest of this drama is centered in the loves someo and Juliet, is clear even to a child. Still I cannot persuade

खेखत धारे (य सन्दर्भकारीनिक्रका भक्षलाक बाद्याकारा मरने कतिया চক্ষত্র কেরণ উভার পাণিগ্রহণসম্বন্ধে স্কেহদংক্ৰ হন, ভাষাতেই স্প্ৰমাণ ষে কুম্মত দ্বিভাতঃকরণে শক্তলার সহিত প্রাণয় করিতে বসেন নাই। ড়ভীয় উত্তর এই যে ছয়ম্র শক্ষলাকে গান্ধ-विशास विवाद कविद्या विवाद्यत निमर्भन-খরপ ভাঁহার নামান্ধিত একটি অঙ্গরীয়ক चक्छनाटक विज्ञा सन। ठड्थ छेखत এই যে উপনাদের প্রারম্ভেই কবি চন্নতকে যেরূপ শাস্ত এবং পবিল মৃত্তিতে দেখাইয়াভেন, ভাহাতে ভাঁহার প্রবরের পবিত্রতা সমর্থন করা নিপ্রায়েক। তবে আসরা এইটুকু স্বীকার করি যে এই পরীক্ষার গাচ পবিত্র প্রথবের প্রকৃতি অভি शविद्वादकर्भ शकोम शांहेबाह्य । मनुषा-প্রধারের প্রকৃতিপ্রকটন করা নাটক্যাত্তে-बढे डिक्मा वरते। किन छाडे विवश আমরা এমন কথা বলিতে পারি না বে শুদ্ধ পৰিত্ৰ প্ৰশংসৰ প্ৰাকৃতি বৃঝাইবাৰ ভনা মহাকবি ছয়ন্তকে মহাপরীকার নিকিপ্ত করিয়াছেন। সে প্রকৃতি ব্রাইতে इंद्रेश नांक निविद्य के इंद्रेशक, ध्रमन কোন কথা সাই। স্থানিক আমেরিকা কবি লংকেলোর Evangeline নাম ঔপনাসিক কাবা এট কথার এক প্রামাণ। আমরা আনি যে ছম্মস্তের মা পরীক্ষা ভয়ানক যম্বনাম্য— আমরা আ যে সেট পরীক্ষার পড়িরা ছম্মস্ত অধ্য মন্ত্রীকা ভর্মানক বিয়াছেন। কিন্তু পরি ভাবে প্রবন্ধ করিয়া কোন্ নৈতিক নিয় যন্ত্রণাভোগ করিছে ছয়? অভএব পরি প্রাম্যর প্রকৃতি দেখাইবার জন্য যার সময় পরীক্ষা ছটল, এ কথা মনে ই সম্যন্ত নীতিশান্তের, সমস্ত ধর্মাণে বিক্রম।

তবে এ প্রীকা কিসের প্রীক প্রান্ধী বড় গুরুতর। অতএব কি বাহুলাবাাখা প্রয়োজন। প্রথম প্রব চন্মজের প্রণরোপাখান যে রকম দি করিয়াছি, তাহাতে স্পান্ত বুঝা যার ক্ষাজের প্রণরের ক্রপাত হট তাহার পরীক্ষার মারস্ক। আম্রা দে পাই যে তাহার ক্ষারে প্রেমসঞ্চ সঙ্গে সংক্ষেতি তাহার স্ক্ষার যরণ আম্রা দেখিতে পাই ক্ষার প্রেমসঞ্চ বিত হইবামাত্তই প্রোম্করবের

Dr. Ulrici cieles Shakspeare's Dramatic Art alas dias >14

myself that the meaning of the whole piece is exhausted in deification and entombment of love, and that this idea constitute the groundwork of the play. On the contrary, Shakspeare accreely have designed to deify love merely as an inexpressionly feeling—an intoxicating passion. That were, indeed, an idolate which art could never be guilty, even though, like the African his Fetish, it should destroy its idol with its own hand.

क्षामत्त जन्मम । , ज्यामता (मिनिट ज भाहे, नाए ज्यारकत क्षेत्र त्थ्रमविक्तनं, रमहे ভেই ছন্নতের মন ধর্মভন্নে ভীত। বুম কি ? না শারীরিক বিকারযুক্ত হার-ার ভাববিশেষ। প্রেম একটি passion। इंड्य छानम्नक। नकत्नई कारनम छान ध्वर छाव आग्रहे भन्नान রোধী। • ইউরোপীয় দার্শনিকেরা नन (न sensation and perception ar an inverse ratio to each other ! ामि अ जूनियारित (व्यास मूख रहेगा প্রেমের পথে যে সকল কণ্টক ছে তাহা দেখিতে পান না। ত্রুয় ন্তলার প্রেমে মুগ্ম হইয়া সেই প্রেমের যে সকল কণ্টক থাকিতে পারে বুঝিয়া দেখেন। ইহাতেই এক व्या यात्र (म दमञ्जली बृद्द व नात्र क वत भागत्न कानजहे; कालिनारमत क ভাবের শাসনেও জ্ঞানের শাসনা-। ইহাতেই বুঝা যার যে সেকা-রের নায়কের মনে ভাঁহার ভাবের ॥भी किছूरे नारे; कालिमारमत नाय-भरन छ। हात्र छ। दित्र विद्रामी छ।न ^{। জানমূলক ধর্মাভর আছে। ভাই} व्हिनाम त्य, इन्नरस्त्र व्यनत्त्रव स्व-रहेएडरे **डाहात भनीकात आतस**। ान जात अक्टि कथा वना जाव-म्बिनीयद्वत मात्ररकत दक्षरमत वाश्वसम्ब-मान्त्रिक धवर वः भवरत्रत हित्रभक्त शास्त्रिक। रिगत नाष्ट्रक द्वार्य सम्बद्ध नक्छ वित्र किहूँहै नाहै। इब्रेड (मबिट्ड-**एक, मक्छलात जनगास्**लिशा स्वर्धन-ভाগिনী शिव्यका এবং অনস্থা, শকু छना दे विवाद्य चढेकानीटक नियुक्त। বু জ্বিমান্—বুঝিতেছেন্ রেয় আশ্রমের অধি-মায়িকা গৌত্ৰী, সব জানিয়াও ভান कतिराष्ट्रहर रथन किছूहे आदमन मा। তিনি অনুসন্ধান করিয়া অবগত হইয়াছেন र्य अक्षः अर्थान् कृष् क्वित छेनश्रुख পাত্রের অপেকায় বসিয়া আছেন। বস্তুত্ত ত্মস্তের প্রেমের একমাত্র বিদ্ন ত্মতের অহর্জগতের জ্ঞানমূলক ধর্মভাব। **जात भन्न जामना मिलिएज भारे यथनरे** হ্মত শকুস্বলাভাবে ভোর তথনই মহা-কবি তাঁহাকে সেই ভাবের প্রতিশ্বদী অবস্থায় নিকেপ করিতেছেন। আমরা দেখিতে পাট, যখন ছম্মন্ত মোহাভিভূত, তৰ্নই মহাক্বি তাঁহাকে পৃথিবীর কর্ম-ক্ষেত্রে প্রবেশ করিবার নিমিত্ত আহ্বান कतिष्डिष्ट्रम । मकला विकासन रम्भारन মোহাধিকা সেইখানেই কার্যাশক্তির নাশ — (महेशात्महे यसूषा आत्र উनामहीन। একবারমাত্র শকুস্তলাকে দেখিরা পুনরার **डाँदा**क मिरात समा क्ष्म श्रामा न र्रेश्नार्कम । र्रेश्ना अमिनिरगत व्यास्तारन भूगर्मनामाध उरमाहिङ इहेमा उक्रिया-(७म। এमन म्यत्र दाक्षमाकाद निक्षे इहेट गृह প्रद्यागमरंगत्र चाळा चागित्रा উপস্থিত হইল। अर्थाৎ आञ्चार क्यर चार्याङ्ग्रहारको मृश्यूषं छेन्द्रिक शहरात

कार्यम् कि ? यहाँ भनायमा क दय रुखे

সাধবাকে স্থানাম্বরিত করিবার জনা कृषि अवेक्न पहेनादकोमल प्रात्मा करवन नाहै। किंद्र अपि वना आवशाक रव दहे बाबजाव जनः बारबज्यकारनत भः च र्व कार्याच्याचार्यत्रे स्वयं इकेंग। চুমুদ্ধের প্রোম্মাক্রির প্রাণাড়া প্রতিপর ना इहेमा छोहाव माक्टमरहत्र अनः कर्खनाळादनव धावन हो खाडिनत इहेन। ভবে কেমন কবিয়া বলিব যে চন্মত্তেব পারীকা তাঁহার প্রোনশক্তিব পাবীকা ? আবার বগন ছন্নত্ত শকুত্তলাকে পাই-ষাও না পাইরা প্রক্ষনিতচুরীর ন্যায় (अयानन खेलाात कतिरहरून, छभनहे মহাকৰি তাঁহাকে বিপান্নৰ ভরার্তরৰ শ্রবণ করাইলেন। আবার সেই আত্ম ভাব এবং আত্মেত্রবভাবের সংঘর্ষ। এবং আবাব সেই বক্ম আয়ুভাবের লয় হইরা আত্মেতরভাবেব ঘোরতর উদ্রেক। আবাব সেই রক্ম প্রেমশক্তির প্রবশ্চা চিত্রিত না হটরা সামালিক (ম্চেব ध्वरः कर्छवाङ्यास्मव ध्वानाचा চিত্রিত र्रेन।

আর বলিবাব আবশাক নাই। পূর্ম-প্রস্তাবটী শ্বরণ কবিলেই অবলিই এব্ছিণ ঘটনাগুলিব অর্থভক্তক এবং ভাবগান্তীর্য্য অনুভূত হইবেক।

এপন বোধ হর বলা মাইতে পারে
যে হ্মপ্রের পরীকা টাহার প্রেমশক্তির
পদীকা নর, টাহার জ্ঞান এবং সংপ্রবৃত্তিমূলক ধর্মজাব এবং আনাত্মপরভার
পরীকা। নিনা পরীকার নিনা সংঘর্ষে

ভেল উংপর হয় না। কিছ কে না জা त्य दश्हे विषय हिज्जमर्गरगत श्रेष छुशह विद्वनश्मन दिद्वनकाम इग्नड ग विशरतत आर्डनांन अनिया बीत्रदिक ध्यूक्श नहेश डेडिया में ड्राइटलन उ (नाम इटेन (मन धक्षी खकाश्व म শিখা দিগত উদ্ভাসিত করিয়া উঠিল। ? **इत्राद्ध**य गरनद मः धर्म किरमद मः इटेटक लारत ? आगारमव त्वांश इर श्चर्य (प्रष्टे मानव आञ्चलादिक । व्याद्याउत सादवत मः वर्ष। (नाम इय अ मः चर्च (महे मानव च পরতাব এবং সমাজপারতাব সং भागामित ताथ इय क मध्यर्व तारे व একঅ'শেব সন্থিত আর একঅং সংঘর্ষ। সেক্সপীয়রের সর্ব্বপ্রধান (ভব্জাপক নাটক, রোমিও এবং (ब्रेडे. क ब्रक्टमब्र नवा (ब्रामिश्व সংগর্ষের কারণ ছুইটি বংশের চিবা — বাহ্যভগৎমূলক। রোমিওতে, मिट्ड এकটि तिशृशास मन, जात अव বাহ্য বা অভ্লগৎ। হুমতে, মনে बिट्यू अकि दिशुमारण वात वा वैकि সমস্ত মনটা। ছুইটি প ल्यांनी इहे तकम। कान् ध छेरहडे, भरत विनय।

আমরা দেখিলাম যে ত্মন্ত আত্মেতরভাব বা সামাজিকভাব-চরিত্র। আমরা দেখিলাম ^{বে} ভূমভের মনের আক্ষাবের এব ভূমভাবের বংকর সেইখানেই আত্মেতরভাব বিজয়ী। আমরা দেখিলার,
যেথানেই আত্মনস্তোগ এবং সামাজিক
ধর্মের বিরোধ সেইখানেই ছ্মাস্তের
সামাজিকধর্ম প্রবলতর। এগ্ন কেন
হয় ? এ প্রান্ধের উত্তর পাইতে হইলে,
সেই সামাজিক ধর্মভাবের প্রকৃতিটী

• জগতের ইডিগান প্রালেচিনা ক-রিলে বুঝা যার যে, মহুবোর সামাজিক लाकृति प्रेथीकात-- अविषे ভावमृतक, আব একটি জ্ঞান বা যুক্তিমূলক। সামা-ভিক ধর্মাধর্ম-সামাজিক কর্তবাকর্তবা নিণ্য করিতে হইলে জগতের কতক গুলি লোক নিজের যুক্তিশক্তিপ্রয়োগ না ক-রিয়া পরের মতাবলদী হইরা চলেন: আর কতকগুলি লোক পারের মতাস্থ-সরণ না করিয়া নিজের যুক্তিশক্তিপ্রযৌগ कतिया भारकन। পরের মতাতুদরণ বরিরা দংসারধর্ম করা মোতের কার্যা। দে মোহ শ্রদ্ধাতিশয়মূলক। ভারতে এ প্রান্ত এই মোহমূলক সমাজ প্রণাণী প্রচলিত রহিয়াছে। আমরা সকলেই জানি যে এই প্রাণিসঙ্কুল লোক দাগর ত্লা ভারতভূমিতে অতি পূর্বকীৰ হইতে বান্দাবাকাই সামাজিক ধর্মাধর্মের এক গাত্র স্ত্র-একগাত্র নিয়ামক। এখানে भर्माहार्ग याहाटक धर्म विलग्ना मिर्ट्सन कति-बाएन, काछि काछि मानव छाहाटकहे কার্যাক্ষেত্রে ধর্ম বলিয়া অমুসরণ করিয়া ভাসিয়াছে। **এখানে ধর্মাচার্য্য যাহাকে** -শংশ বলিয়া নির্দ্ধেশ করিয়াছেন কোট

কোটি মানব ভাহাকেই কার্যাকেত্রে অধর্ম বলিয়া মুণাপূর্মক পরিড্যাগ 'করিয়া আসিয়াছে।' উন্নতিশীল ইউ-রোপেও এই দৃশ্য দৃষ্ঠ হইয়াছে। ছই কি তিনশত বংসর পূর্বে সমস্ত ইউ-রোপবাসী ভারতের প্রণালীতে সংসার-ধর্ম কবিছ—রোমানক্যাথলিক পুরে: চিত্ৰগৰের বাকাই সম্ভ ইন্যাধেৰ একমাত্র ধর্মাত্র, একমাত্র ধ্যানিয়াম্ক এখনও অद्याधिक हेडेद्राल-বাঁদীর মধো এই নিরম প্রচলিত। এই মানবপ্রকৃতি রহস্যের মূল কি ? আমাদের বোধ হয় ইহার একটি মূল মনুষামনের স্বাভাবিক অনসপ্রিয়তা— অমুসন্ধান করিবার শ্রমকাভরভাজনিত हेळ्। भक्ति वा will power जैत 'अर्ला । আর একটি মূল, চিরদৃষ্ট উৎকৃষ্টভার সম্বন্ধ্য সমূৰ। মান্ত্র শ্রেদার ভাব। ভাল জিনিস প্রাচীন হইলে অনেকে স্বভাবতই তাহাতে সম্ভমের সহিত আগফ হয়। म् भागिक जिल्ला कि स्थारिक प्रकार स्टेमा मै। इ। इ। १ विश्व विश्व क्षि । দে মোহ খণ্ডন করা একর্কন অসাধ্য विनित्ति इस । आत कडक छनि त्नांक যু ক্তি স্বারা धर्षाधर्ष निक्रशन ক রিয়া তাঁহার৷ পূর্বোক্ত মোহে थारकन । मृश्व नन! छै। होता आठीम मछ, आठीन পদ্ধতি, প্রাচীম বস্তকে দ্বণা করিয়া তাঁহারা নিজ বুদ্ধিমভার ্ भारकन । সম্পূর্ণ পক্ষপাতী। एष्डि मॅक्सम्मामरमञ् একটি স্বাভাবিক প্রকৃতি। এই প্রকৃত্

তির বলে ইউরোপে প্রটেষ্টাণ্ট বিপ্লব; ভারতে বুদ্ধান্বের সমাজসংস্থার। ছুইটি মানবপ্রকৃতির কোন্টিই পরি-কিন্তু হুইটি একত্ৰীভূত ভাঙ্গা নয়। न। इटेरल সমাজের বিষয় অমঙ্গল घটে। সমাজ হয় ভারতের ন্যায় জ্মাট বাধিয়া উন্নভিসাধনে এককালে অক্ষম হইয়া উঠে, नय बडीनम में जाकीत कुाल्यत नाम অনস্তবিপ্লবাবর্তে ঘুরিতে থাকে। মহুষা-লাতির এই হুইটি প্রকৃতিরই আবশাকু। এবং মহুষালাতির ইতিহাসেও দেখা যার যে মনুষাকাতি সততই এই ছুইটি व्यक्तित मात्रक्षमामाध्यात्र मिटक धार-मान। इंडेटब्राट्श व्यवः विभीयाय मध्य মধ্যে যে স্কল ভয়ানক স্মান্তবিপ্লব এবং ধর্মবিপ্লব হইয়া গিয়াছে, সেই মকল বিপ্লর সমুষ্যলাতির এই স্বাভাবিক সামঞ্জাসাধনস্পৃহার বলবৎ সাকী। कानिनारमञ्ज इत्रष्ठ এই সামঞ্জ সাধন-স্পৃহারপ মানবপ্রকৃতির প্রতিকৃতি। इच्चत्छ এই मामञ्जना मःमाधिक इहेगा গিয়াছে। সেইটি বুঝাইতেছি।

হিন্শাস্ত্রে ছয়স্তের অগাণ ভ'কে। ভাঁহার দক্ষিণবাহ স্পন্তি হইণ, তিনি ভাবিশেন—

''করে শাস্তমিদমাশ্রমণদং কৃবতি চ বাহঃ কুতঃ ফলমিহাম্মাকং। অপবা ভবিতব্যানাং ভবস্তি হায়ানি

সর্বাত্ত।"

এ ভক্তি বড় কম ভক্তি নয়। আমরা এ রক্য ভক্তিকে কুসংস্থার বলি। আমরা এইরপ বৃঝি যে পৌরোহিছের মোহে মৃগ্প হইয়া জ্ঞানস্ত না হইলে এরকম ভক্তি মনে স্থান পায় নান

হুমন্ত এমন বিশ্বাস করেন যে অন্যে যাগ্যক্ত করিলে, তিনি তাহার ফল-ভাগী হইতে পারিবেন। তিনি বলেন— ''অনানেব ভাগধেয় মেতে তপন্ধিনো হে নির্ম্বপন্তি।''

হন্মন্ত প্রচিলিত প্রথার পক্ষপাতী। বৃদ্ কঞ্কীর কাছে শাঙ্গরিব প্রভৃতির আগ মনবার্ত্তা পাইয়া তিনি বলিতেছেন—

তেন হি বিজ্ঞাপাতাং মন্ধনাত্পাধারং
গোমরাতঃ, অম্নাশ্রমবাদিনঃ শ্রৌতেন
বিধিনা সংকৃত্য স্বয়মেব প্রবেশরিত্
মইতীতি। অহমপি এতান্ তপস্বিদর্শনাচিতপ্রদেশে প্রতিপালয়ামি।

তুমন্ত হিলুধর্মান্তর্গত কর্মকাণ্ড মানিরা থাকেন। তাঁহার গৃহে পবিত্র আহবনী-যাগ্রি সহত্রে রক্ষিত—

রাজা। উত্থায়। বেতাবতি ৷ অংগ শ্রণমার্গনাদেশর।

ছ্মান্ত ননে করেন যে ভারতের মূনি
ঋষিগণ দেবতুলা। তিনি মুনিঋষিকে
দেবতানির্কিশেষে ভর করেন, ভালবাসেন এবং সম্ভ্রম করেন। তিনি জানেন
যে—

শম এখানেষু তপোবদেষু গৃঢ়ং হি দাহা-ত্মক মন্তি তেজঃ।

ম্পূৰ্ণ অ**গি স্থাকান্তা তে হ**ন্য তেলোংভিডবাদং^{ন্তি}

भाठक (वाष इस महत्वहे चीका^त

কবিবেন যে, যে ব্যক্তির মনের বিশাস
এইরূপ, সে ব্যক্তি পৌরোহিত্যকুহকে
অভিভূত। পাঠক বোধ হয় বলিবেন,
যে ব্যক্তির মনের ভাব এই রকম, সে
বাক্তি ইউরোপের মধাযুগের নাায়
পৌবোহিত্যপ্রধান যুগের লোক বই উনবিংশশতাকীর নাায় জ্ঞানপ্রধান যুগেব
লোক হইতে পারে না।

দুখান্তের কাছে মৃনিৠষির আজ্ঞা দেবাজ্ঞার ন্যায় মাননীয় এবং পালনীয়।
তিনি মৃগ্যার শ্বর্তর ঔংস্ক্রের প্রধাবিত
হুইয়া ভয়কুঞ্জিত পলায়নপর মৃগোপরি
অব্যর্থ শর নিক্ষেপ করেন করেন, এমন
সময় ঋষিদিগের নিষেধাজ্ঞা শ্রবণ করিলেন। অসনি মন্ত্রমুদ্ধের ন্যায় তাঁহার
সেই আজ্ঞান্তাশ্বিত উষ্প্রশোণিতোভ্রেন্তিত
বলসারবাত্ গুটাইয়া লইয়া তিনি সেই
বীরহজ্ঞাপযোগী শাণিত শর তৃণীরের
মধ্যে নিক্ষেপ করিলেন।

ভো ভো রাজন্ আশ্রমমূগোংয়ং ন হস্তব্যোন হস্তব্যঃ। ন থলুন ন খলু বাণঃ স্লিপাত্যোহয়

মিমন্
যুহনি নৃগশরীবে ত্লরাশারিবায়ি:।
ক বত হরিণকানাং জীবিভঞ্চাতি লোল:
ক চ নিশিতনিপাতা বক্সদারা: শরা তে।।
তদাশু কৃতসন্ধানং প্রতিসংহর সায়কম্।
আর্ত্রাণায় ব: শঙ্গং ন প্রহর্মনাগদি।।
রাজা। সপ্রণামম্। এষ প্রতিসংক্ত এব। ইতি যথোক্তং করোতি।

"স্প্রণামম্। এষ প্রতিসংক্ত এব।"

বলিতে পেলে, ত্মন্ত প্রায় প্রণাম করিতে করিতেই সেই ত্র্পমনীয় শর
শরাধারে ফেলিয়া দিলেন। মৃগয়োক্মন্ত
বীরুচ্ডামণি যেন একটা কঠরানলকিপ্ত
কেশরীর নাার কোন একটা বৈত্যতিক
শক্তিদারা আহত হইয়া নিমেষমধ্যে
বিনষ্ট হইয়া পড়িয়া গেল। শক্তলা
নাটকেব প্রতিশক্তে ত্মন্তচরিক্রের
যেট প্রধান লক্ষণ, অর্থাং বিরোধিভাবের
অবিরোধে অবস্থান, সেট প্রতিপর।
এমন নাটক কি আর হয়!

আর বিস্তার না করিয়া এক ক্থায় বলিতে গেলে বলা যাইতে পারে যে পৃথিবীর ১২০ কোটি মানবের মধ্যে এখ-নও ৭০ কোটি মানব যেমন পুরাতন প্রথার কাছে এবং পুরাতন প্রপার যাজক-দিগেব কাছে মন্ত্রমুগ্রের ন্যায় মোহাভি-ভূত, কালিদাসের হুময়ও ঠিক্ ভাই। কিন্তু ভাই বলিয়া হুন্নস্ত কি সেই ৭০ কোটি মানবের ন্যায় অন্তদৃষ্টিহীন ? তাই বলিয়া ছম্মন্ত কি সেই ৭০ কোট मानत्वत्र नाष्ट्र निष्ठ छाल मन्द्र विहातः করিতে অক্ষম এবং অনিচ্ছক—ধর্মা-চার্যোরা যা ভাল বলেন ভাই ভাল মনে करतन, धर्माहार्राता या मन्त তारे मन गरन करवन ? ना, इच्च छ (म প্রকৃতির লোক নন। শার্মরব তাঁ-হাকে বলিলেন যে পূজাপাদ মহা ঋষি কণু তাঁহার সহিত শকুন্তলার পরিণয়-কার্য্যের অন্থগোদন করিয়া শকুন্তলাকে তাহার নিকট পাঠাইরা দিবাছেন, অজ-

এব তাঁহাকে শকুস্তলাকৈ গ্রহণ করিতে হইবে। এ কথা শুনিরা তিনি কি বলিলেন ? তিনি বলিলেন—

णरमः। किमिनम्भनासम्।

এ কি! মহর্ষি কণু বলিয়াছেন যে তিনি শকুন্তলার পাণিগ্রহণ করিয়াছেন। তাহাতে তাপসকুলসম্রমকারী, তাপসকুলপক্ষপাতী, তাপসকুলভীত, তাপসকুলরক্ষক দমন্তের কি এই উত্তর ? আবার শুধু তাই ? এই অসমত উত্তরটী শুনিয়া শাস্ত্রিব ঈষং রোযান্বিত হইয়া বলিলেন—

কিং নাম কিমিদত্পন্যন্তমিতি। নমু
ভবস্তএব স্থতরাং লোকবৃত্তাস্ত নিফাতাঃ।
সতীমপি জ্ঞাতিকুলৈকসংশ্রাং
জনোহন্যথা ভর্ত্মতীং বিশঙ্কতে।
জ্ঞতঃ সমীপে পরিণেত্রিষ্যতে
প্রিয়াইপ্রিয়া বা প্রমদা স্বক্তিঃ।
এ কথা শুনিয়া হ্মস্ত কি বলিলেন—
তিনি বলিলেন.

. কিমত্র ভবতী ময়া পরিণীতপূর্বা।

এ ত সেই অগ্নিপ্রভ সনাতনধর্মনিরত
ঋষিক্মারকে এক রকম মিণ্যাবাদী বলা।
শার্করিব ভারতের একজন তেজলী ঋবিকুমার। মর্মাহেত হইয়া ভিনি সমাগরা
পৃথিবীর রাজা হল্লছকে স্লেষপূর্বাক্যে
জিজ্ঞানা করিলেন—

কিং ক্লুক্তকার্যান্থেবাদ্ধর্মাং প্রতি বিমুখতো-চিতা রাজ্ঞ: ?

ত্মস্ক উত্তর করিলেন— কুডেং২মসংক্রনাপ্রস: ?

ভারতের ঋষিতপদী প্রবঞ্ক? আজ ত্মন্ত ভাও মনে করিতে সক্ষম ৷ ইহার कर्ष कि ? हेशत कर्श कहे— यशात ভারতের ঋষিতপন্দী সত্যের বিরোধী, কুনীতিশিক্ষক, ধর্মের বিপর্যায় করিতে উদাত, সেথানে ঋষিকুলপক্ষপাতী, ঋষি-क्लमञ्चमकांत्री इञ्चल श्रीयवादका ३ इड-अक। इंड्रांत वर्ष करें - रियान शिवक ঋষির বাকা সনাতনসত্যের, অপরিবর্ত্ত नीय अन्यनाथा नीजि धवः धर्माटाउत विताधी, त्मशात्न क्षारखन काष्ट्र श्वि-প্রদত্ত বাবস্থা অপরিগ্রহণীয়, নিজ্যুক্তি-সঙ্গত নীভিতত্বই অসুসর্ণীয়। ত্মত ঋষিবাকা অসতা বৃঝিয়াও ঋষি-দিগেব প্রতি কোপাবিষ্ট নন-ঋষ-দিগের প্রতি অশ্রহাবান নন। শাঙ্গরিব মিপ্যা কথা কহিতেছেন বুঝিয়াও হ্লম্ব বলিতেছেন—

ভো তপমিন্চিভয়েয়পি ন থলু স্থীকরণ মত্রভবভ্যাঃ স্বরামিঃ

তংকগমিনা তিনাক্তসন্ত্ৰকাণাং প্ৰতাআনং ক্লেৱিব্যাশক্ষমানঃ প্ৰতিপংনা।
অধির মূথে অশ্রন্ধের কথা শুনিরাও
চ্মন্ত অবিচরিত্রের পবিত্রতা মনে করিয়া
এখনও অধির প্রতি আন্থাবান্—এখনও
ভাবিয়া চিন্তিয়া দেখিতেছেন, কথাটা
সতা কি না। মহুবার ইভিহাসে প্রার্থী
দেখা যায়, যেখানে স্থানীনচিন্তা সেই
খানে প্রাচীন প্রথাহুরানী আচার্যাকুলের
প্রতি সম্পূর্ণ অনান্থা—সেইখানে পূর্বা
পর-প্রচলিতপ্রথার প্রতি সম্পূর্ণ ম্বাপুর্ণ

এवः প্রতিবন্দী ভাব। প্রটেষ্টাট ধর্মা-वलशीमिश्तत काट्ड (भारभन्न नाम Anti-Christ এবং রোমান ক্যাথলিক ধর্ম খয়তানের ষড়যন্ত্র। বৃদ্ধের কাছে ব্রাহ্মণ हलान धवर दमन-भूतानम्लक धर्म (भीटना-হিতাদ্ধিত কুসংস্থারকুও। ছুম্মস্তে জগ-. তের ঘুইটি সামাজিক মানবপ্রকৃতি •একত্রীভুত; কিন্তু তাহাদের সংঘর্ষে কর্কশতা নাই—সমাজদগ্ধকারী অগ্নিশা উঠে ना। এরপ সংঘর্ষ ভাসন্থব নয়। ইংলপ্রের ১৬৮৮ সালের রাজবিপ্লবে ইহার সম্ভবতা প্রাক্তিপর হট্মাছে। এবং আধনিক মনুষাসমাজও বিনাবিরোধে এই তুইটি প্রতিদ্দিভাবাপর মানব-প্রকৃতির সামঞ্জস্য সাধনের দিকে ধাবমান দেখা যাইতেছে। কোমতের সমাত্র-দর্শনেব আবিভাব এই স্পৃহার- প্রধান নিদর্শন। হল্মন্ত এই গুঢ় ঐতিহাদিক নিয়মের চিতা ৷ হয়স্ত এই অস্তত ঐতি-হাদিক মানবপ্রকৃতির প্রতিমূর্তি। তুম্মস্ত সমগ্র ঐতিহাসিক মনুষাসমাজেব গুঢ়ার্থ-বোধক চরিতা। হয়স্ত ভূতকাল এবং ভবিষাৎকাল—উভয়কালের সমষ্টি। চন্মায় সমত মতুষালাতির ইতিহাসলকিত নিয়তির কবিকল্লিত প্রতিমা।" এত विष् हित्र विश्व विश्व कांत्र कांत्र कांत्र कांग्रेस

আছে কি না সন্দেহ। কালিদাস বোধ
হয় এত ভাবিয়া লেখেন নাই। কিন্তু
কবির প্রতিভায় ভবিষাইতিহাসও নিহিত
থাকে। কবি ভাবের চক্ষে সানবপ্রকৃতির অনস্তত্ত্ব দেখিয়া থাকেন
এবং প্রতিভার গুণে মনুষাচরিত্রের সর্বাকীণ সৌন্দর্যা অনুভব করেন। তবে
কলিদাসের সম্বন্ধে একটা কথা বলা
যাইতে পারে। তিনি বৌদ্ধবিপ্লবের পর
অন্যত্ত্ব করেন।

হয়ত্ব প্রচলিত্যত এবং প্রচলিতপ্রথার অমুরাগী অথচ স্বাধীনচিস্তাশীল। ইহার অর্থ কি ? আমরা দেখাইয়াছি যে প্রচ-লিতপ্রথার প্রতি অনুরাগ মনুষাহৃদয়ের একটি মোহের স্বরূপ। মোহ স্বন্ধ-যাহাকে অধিকার করে তাহাকে কিছুই (मिश्टल (मय ना। **प्रश्नस्थ (मेरे स्माट्ड**क বশবর্ত্তী হইয়াও স্বাধীন। ইহার অর্থ-ত্মন্ত অন্ধ হইয়াও অন্ধ নন। অর্থাৎ व्यावभाक क्रेटिक जुबाब खानित्रवाता মোহের প্রকৃতি বুঝিতে পারেন—দৃষ্টি-নাশকারিতা দেখিতে পান। কিন্তু শুধু তা হইলেই কি হয় ? এমন লোক আ-ছেন, যাহারা ছ্প্রাবৃত্তির প্রকৃতি বুঝিতে পারেন কিন্তু ৰ্ঝিয়াও ছপ্রবৃত্তি পরিত্যাগ ক্রিছে পারেন না। না পারিবার

^{*} বোধ হয় প্রাচীনভারতে ঐতিহাসিক প্রাণাণীতে মানবপ্রকৃতি নিরুপণ করিবার রীতি ছিল না। কিন্তু তাহাতে কিছু আইসে বার না। বৈ ব্যক্তি বিশেষ সম্বন্ধে সামাজিক চরিত্রের গৃড় তত্ত্ব ব্রিতে পারেন, তিনি যে, ইতিহাস গাইলে সেই তত্ত্ব ঐতিহাসিক প্রাণাণীতেও ব্রিতে পাবেন, তাহাতে সন্দেহ নাই। এমন স্থলে স্বোক্তর মৃত ঐতিহাসিক প্রাণাণীতে ব্রাইলে কোন দোব পড়ে না।

কারণ কি ? একটি কারণ তাঁহাদের সংপ্রার্ত্তির শক্তিহীনতা; আর একটি কারণ অভিত্তাবস্থা হইতে উপানশক্তিব অভাব। মনের এক অবস্থা হইতে অবস্থাস্তবে বাইতে হইলে চেটা বা উদ্যমের (effort) আবশ্যক। যে অবস্থা পরিত্যাগ করা বায় সে অবস্থা বৃত্তই অভিভাবকারী হয়, তাহা অভিক্রম করিবার চেটা তত্তই বলবং করা চাই। এই চেটার মূল—ইছাশক্তি বা will power।

হন্নস্তের মুনিশ্ববির প্রতি প্রেম এবং শ্ৰদা যে রকম প্রবল দেখিয়াছি ভাহাতে তাহাকে মোহ বলিয়া নির্দেশ করা याहेटक शाद्धः। किन्द्रः मुनिश्चिष व्यरशका ভাল জিনিদেব প্রয়োজন হইলে, গুরুস্ত সহজেই সেট নোহ কাটিয়া ফেলিয়া সেই উৎকৃষ্টভর বস্তুটি লাভ করিবার (हिंडी करतन। हेहात वर्ष এहे य इम्रस সংপ্রবৃত্তির আধার। তাহাতে ভাঁহার विद्वाल अथव वित्रा जिनि महरष्टे মোহের অনিষ্টকারিতা বুঝিতে পারেন। বুঝিতে পারিলেই সংপ্রবৃক্তি তাঁহার-মনকে অধিকার করে। অধিকার করিলে পর তাঁহার আক্র্যা ইচ্চাশক্তির সাহায়ে আয়াদে মোহমুগ্ধাবস্থা হইতে অভিগ্ৰিত উৎকৃষ্ট অবস্থায় গমন করিতে পারেন। এখন বিজ্ঞাসা এই — হুমুম্ভ এই আশ্চর্যা ইচ্ছাশক্তি কোথার পাইলেন ? এ প্রশ্নের প্রথম উত্তর এই त्य, नर्कन ल्लाटक त्यमन आंत्र आंत्र-মানসিক গুলগুলি সমান পরিমাণে পায়

না, তেমনি ভাছারা ইচ্ছাশক্তিও সমান পরিমাণে পার না। দিতীয় উত্তর এই যে মানসিকশক্তির মূলপরিমাণ যভই হউক না কেন, সে শক্তি যভই প্রয়োগ করা যায় তত্ত বৃদ্ধিপাপ্ত হয়। তৃম্ব রাভা। পৃথিবীর কর্মকেল রাভাদিগের নাট্যশালা: সেইখানেই তাঁহাদিগকে অভিনয় করিতে হয়। নানাপ্রকৃতির লোকের সহিত, নানামতাবলম্বী সম্প্র माद्यत महिछ, अमःशा शत्रात्रातिद्यांशी সমস্যার স্কিত, অসংগ্য অভাবনীয় সহসাসভূত বিপদের সহিত তাঁহাদের সংশ্রব। এই সকল পোলমালের মধ্যে थाकिया. এই नकल शालमारलंद मीमाश्रा করিয়া, ভডিংবং কার্যা করিতে হয়। দীর্ঘস্ট ভারত কার্যক্রে অনর্থের मृत। अन्नक्त निस्त्र स्थ्रः ११३ প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে চলে না, অপ্রথ वृक्ति इटेल हल ना। मीर्च ख्वी इटेल চলে না। পাঠক এখন সৃহত্তেই বুৰি বেন যে এইরপ কর্মকতেই ইচ্ছাশ্ভি প্রয়োগের বেশী প্রয়োজন এবং সেইজ্ ইচ্ছাশক্তি বেশী আয়ত্ত এবং অভা হইয়া থাকে। নেপোলিয়ন, তালেরান পাম। हेन, ডিস্বেলি, विস্মার্ক-এই সকল রাজা এবং রাজমন্ত্রিগণের অসী ইচ্ছাশক্তির কথা কে না ভানে ? কণ্ট পর্বভায়নের মুখে আমরা শুনিয়াছি ত্মন্ত আসমুত্ত ভারতবর্ষের সমস্ত রাল कार्या चयः कत्रिया थाक्न। (म व् इत्रद्धत देखां कि यक्ति वनी वन वन

অনারাসপ্রযোজ্য না হইবে তবে হইবে
কার ? প্রথম প্রস্তাবে আমরা ত্মন্তের
ষে আশ্চর্যা চিত্তসংযমের চিত্র ত্লিবার
প্রয়াস পাইয়াছি, পাঠক বোধ হয় এখন
সেই আশ্চর্যা চিত্তসংযমের গুঢ় তত্ত্ব
ব্রিতে পারিলেন। ত্মন্তের চিত্তসংযম
শক্তি এত প্রবলকেন? না ত্মন্ত পুরুষপ্রোনের নাায় জগতের প্রতি সন্তাবপূর্ণ
হইয়া, প্রেখরবৃদ্ধির ক্ষমিকারী হইয়া পৃথিবীর কর্মান্টেন বিচরণ করত ইচ্ছাশক্তি
সম্পূর্ণরূপে অভাস্ত করিয়াত্নে বলিয়া।

এইটা ত্মন্তের মনোগঠনপ্রশালীর সূচ্ তত্ত্ব—গৃঢ় নাটকত্ব।

শক্ষলা গাটকের পঞ্যাহ্বর্ণিত প্রতিতাথান-দৃশাটা দেখিয়াই আমরা ছন্মস্ক চরিত্রের গৃত্তত্ব নিরুপণ করিছে সক্ষম। সে দৃশাটা হন্মস্কের সামাজিক জীবনপ্রণালীর উদাহরণত্বরূপ। কিন্তু সে দৃশোর হেতু হর্কাশার শাপ। তাই আমরা প্রেণ-মেই বলিরাছি যে হর্কাশার শাপ শক্সলার উপন্যাস অধান ঘটনা এবং সেই ঘটনা আছে বলিরাই শক্ষলার উপন্যাস নাটক বলিয়া পরিগণিত হইতেছে।

--EOI 1834 163--

निका।

নহয় জীবনের উদ্দেশ্যনামক ুপ্রস্তাবে দেখান হইরাছিল, যে ভ্সিষ্ঠ ইইবার পর মন্থ্য সাভাইশ বংসর বয়স পর্যান্ত সনাজের ধার করিয়া খায়, ভাহার পর এই ধার শোধ দেওয়া মন্থ্যের অবশ্য কর্ত্তবাকর্দ্ম সম্পোদন করিয়া যদি সমাজের আরো কিছু উপকার করা যায়, ভাহা ইউলে মন্থাজীবনের উদ্দেশ্ত সিদ্ধ হয়। অর্থাং ধার করিয়া যাহা খাইয়াছ, ভাহা ভ শোধ দিবেই; শোধ দেওয়ার উপর আরো কিছু বাড়তি করা চাই।

যে সাতাইশ বংসর আমরা ধার করিয়া থাই, সেই আমাদের শিক্ষার সময়ও দেহপৃষ্টির সময় আমরা প্রতিভা-

শালী লোকের পক্ষে এ কথা বলিতেছি না। প্রতিভাশালী বাজিনিয়স ব্লিয়া এক একজন লোক আছেন আমরা चीकात कति। देहारमत भन्नीत शृष्टे ना श्रेटक ेशारत, ইशामत मकल गरनावृति স্মাক্ পরিচালিত না হইতে পারে, ত-থাপি ইহারা জগতের অনেক কাজ করিয়া য:ইতে পারেন। শরীর অহুত্ব, মেলাল খিট্থিটে, কুক্রিয়াসক্ত, মথচ उँ। शांश . शृथिवी एक अरमक वर्ष वर्ष का अ করিয়া অক্ষয়কীর্তি স্থাপন করিয়া গিয়া-] আমরা এ প্রস্তাবে তাঁহাদের कथा विवादि । লোকদিগকে আমরা ভক্তি করি ভয়ও করি। তাহাদের কার্যাদারা

সমাক্ষের উপকার হয় বলিয়া ভক্তি করি।
তাঁহারা নিজে নানা কেশ স্বীকার কবিয়াও বড় বড় কাজ করিতে পারেন বলিয়া
বিস্মিত হই; কিন্তু তাঁহাদের দৃষ্টাস্তে
জগতে অনেক অনিষ্ট হয় বলিয়া আমরা
তাঁহাদিগকে বড় ভয় করি। জিনিয়স
দূব হইতে ভাল, কিয়ু নিকটে অভি
ভয় নক, তাঁহাদের দৃষ্টাস্তে অনেকের
ক্ষতি হয়। অতএব আমরা এ প্রভাবে
জিনিয়সের নামও করিব না, যাহা মন্স্যাসাধারণের পাক্ষে খাটে এইরূপ কথাই
কহিব।

সাধারণমসুবোর পক্ষে শরীরটি সবল দর্কাণ্ডে প্রয়োজন। তাহার পর মনোবৃত্তি-গুলিরও পৃষ্টিসাধন প্রয়োজন। মনুষ্যের यानावृक्ति किन श्रकादवत--वृक्तिमक्ति, হৃদয়বুত্তি ও ইচ্ছাশক্তিবা কর্মকমতা। এই তিনেরই সাতাইশ বংসরের মধ্যে পরিচালনা চাহি। মহুষা পৃথিবীতে পড়িয়া আপনার শিকাবস্থা অতিক্রম করিয়া বাহাতে সকল দিকে চকুরাখিতে পারে, সকল জিনিস বুঝিতে পারে, সকল প্রকার লোকের সুগ ছ:খ অমুভব করিতে পারে ও সকলপ্রকার কার্যা করিতে পারে, তাহার শিক্ষা এই সাতা-ইশ বংসর বন্ধার মধ্যে হওয়া চাই। শिका এकमूथी इत्रश किছू न(इ, উहा বিশ্বভোমুখী হওয়া চাই। ভাষাদের দেশে প্রাচীনকালে ব্রাক্ষণেরা বাসনাই শিকা পाইত,क्षिष्यता ताबाई ও गड़ाई निका পাইত, ছুতোর ছুতোরি শিখিত। এক

সময়ে ইউরোপেও ঠিক এইরূপ ছিল। এরপ এক মুখী শিক্ষার নিশ্চয় ফল অধী-নতা, নিৰ্ক্তিকা। একমুখীশিকায় মাহুদ তৈয়ারি হয় নাকল তৈয়ারি হয়। যে कांग लाक्तित हातिनिक मझत शाक একমুখগণ সকলেই ভাহার অধীন আপনা হইতেই হইয়া পড়ে। অতএব যাহাতে সকল দিকে নম্বর জ্ঞা, ভাহার চেটা " करा निजाञ्च जावभाक। স্বীকার করি (ग, नाक्षत भटक मकल विषय झाना নিতান্ত অসাধা, সকল কাজ করিবার ক্ষমতা কাহারও নাই। স্কল বিষয়ে মুক্চি থাকা ও সকলের সহিত সন-त्वमना शाका धकाष्ठ व्यमञ्जव । श्रीकाव করি, মাহুষের জ্ঞান ইচ্ছা ও স্থামুর্ভি मकल हादिनिक भौगावस। श्रकृतिव नियममृह लोहमय (वड़ा निया मञ्चारक বলিতেছে ভূমি এই পর্যান্ত যাইও ইহাব অধিক যাইবার ক্ষমতা ভোমার নাই। এ সকল স্বীকার করি, তথাপি ষভটুড় মহুব্যে জানিতে পারে ভত্টুকু জানা ত প্রয়োজন। ততটুকু জানিতে যে কয়টি मतावृद्धि मरङ्ख ও मन्त थाका श्रीरा खन (म द्यांकिक उ मराज्य अमनन 'রাপা চাই। এইটি শিক্ষার কার্য্য এই^{টি} শিক্ষকের ভার, এইটির ছন্য স্মাজ नाग्री।

শরীর ও মদের যেরপ নিক্টসম্বত্ত তাহাতে শরীরের উত্ততির প্রতি সর্বাত্তি লক্ষ্য রাখা উচিত। সন্ধ্যোর শরীরও কলের মত। অধিক দিন শরীর না

চলিলে ইহাতেও মরিচা ধরে, এবং श्रीक वरल श्रीक शाहाहरल हैदातंत्र कल विशिष्ट्रिया यांग्र, ठिक नगरत्र मम मिटन (यमन घड़ी अप्तक जिन हत्न (महेजुन নিয়মিত প্রমেও মহুষাশরীর অনেক দিন টিকে। যে কয়েক বৎসর পুদ্রের ভরণ-পোষণ করিতে হয়, সেই কয়েক বংসরে যাহাতে পুত্রের সর্বাঙ্গ অ্ন্দররূপে পরি-ీ পুষ্ট হয় তিৰিষয়ে পিতামাতার বিশেষ যত্ন থাকে অন্তঃ সে বিষয়ে ইচ্ছা থাকে। কিন্তু অনভিজ্ঞতা প্রযুক্ত অথবা উদ্যোগ অভাবে অনেকে সম্ভানের দেহপুষ্টিসম্বরে বাখাত ঘটান। কেহ কেহ কেবল স্লেহ-প্রবশ হইয়া তৎপক্ষে অনিষ্ঠ ঘটান। मोड़ि उना शिक्षा यात्व, अम कति अना क्रांष्ठ रूर्व, व्य मकल द्वर्गका कडमुद অনিষ্টকারী হইয়া পড়ে তাহার সমা-একণে আমরা করিব না। ম্লকথা শরীর পুষ্ট করা যে আবশাক তাহাতে কাহারও দ্বিমত নাই। এই পুষ্টি-শকে যে শুভ হত্তের বা শুদ্ধ পদের পৃষ্টতা নয় সে বিষয়েও বোধ হয় কাহার অনত নাই। যে সকল লক্ষীছাড়া লোক পুত্রের ভরণপোষণ ও পুষ্টিবর্দ্ধনবিষয়ে मम्पूर्व डेमामीन इहेबा मालपरमत आकृ করেন, তাঁহারা ভিন্ন সকলেই পুত্রের भंदीद्रशृष्टिविषदम् मत्नारवाशी चारहन।

কিন্ত মানসিক পৃষ্টিবিষয়ে এরূপ একমত নাই। কোন জাতি ধর্মশিকাদানই পিতা-মাতার কর্ত্তব্য মনে করেন। কোন জাতি পূল্ যাহাতে জার ক্রিয়া খাইর। শীজ

পিতাকে অবাাহতি দিতে পারে, তদ্বি-যরে শিক্ষা দেওয়াই পিতার কর্ত্তবা মনে কিন্ত আমরা বলি যেমন भतीदद नर्काशीन भृष्टि खाद्याजन भरन-विश्व (महेक्राम नर्काक्रीन भूष्टि वाङ्नीय । শরীরের পৃক্ষে যেমন যাহার সর্ক্ষরীর भवन नाह रम छान दिशां हरेरिङ পারে না, ভাল মুটিয়া হইতে পারে ना, ভान मांड़ी इहेट পादि ना, ভान ৰাকী হইতে পারে না, মনের পক্ষেও দেইরূপ; যাহার মনোর্ভিসমূহ সম্যক্ পूरे नरह, मि कथन जान छेकीन हहेरड পারে না, ভাল ডাক্রার হইতে পারে না, ভাল কবি হইতে পারে না, খুব উত্তম কণে কোন কাজই করিতে পারে না। কিন্তু তাই বলিয়া যাহার দেহ थ्व পूछे नव मिकि वाकी मांड़ी शहेरछ भारत ना ? अवनारे भारत, किंद তাহার ভাল হইবার সম্ভাবনা বড় অল্ল থাকে। সেইরূপ যাহার মন সমাক্ পৃষ্ট नरह मिकि छैकील, छाउनांत्र, कवि हहेरड পারে না ? অবশা পারে, কিন্তু ভাল হইবার সম্ভাবনা অল। একজন জোয়ান लाक जान राकी इहेबां व यिन मत्रकांत পড়ে সে অতি অলদিনের মধ্যে দাঁড়ীর কাজ, বেহারার কাজ বা যোগাড়ের কাজ অবায়াদে শিখিয়া লইতে পারে। কিন্তু এক জন রোগা বাঁকী তাহা কথনই পারে না। তাহার বাকী হইবার মত শ্রীর বনিয়া গিয়াছে; তাহার আর কিছু হইবার (या नारे। आत किছू इटेटड (शहन

যে পদার্থ টুকু থাকা চাই দেটুকু ভাহার জন্মে নাই। বহির্জগতে যেরপ অস্ত-ৰ্জ্জগতেও ঠিক সেইরূপ। যাহার শিক্ষা বিশ্বতোমুখী তাহার কোন একটি বিষয়ে ক্ষমতা অধিক হইলেও সে সকল কাজই মোটাসুট করিতে পারে। করিতে গেলে দকল কাজই যে মোটামুট कता ठाइ दा बाना ठाइ, टाश (वास इत (क्र्इ खन्नीकात कतिर्वत ना। न्यारमधन উন্নতির মূল। ইহাতে কাহারও সন্দেহ माहे। नकल काज गाउँ।मृष्टि कति एउ শিখিলে স্বাবলম্বনপ্রবৃত্তির প্রকৃত উন্নতি করা হয়। আর এক কথা এই, অতি প্রাচীনকালে পণ্ডিত হইলেই লোকে তাহাকে সর্বপ্ত বলিত। সর্বজ্ঞ ও অ-ভ্রাস্ত এক কথা মহে, কিন্তু সর্বজেশদের অর্থতদূর বাড়ান য ইতে পারে অধুনা-রুন ভট্টাচার্যোরা বাড়াইয়া উহাকে এল'স্তসমপর্য্যায়ক করিয়া তুলিয়াছেন। ঋষিরাবা পণ্ডিতেরা যে সর্বজ্ঞ বলিয়া প্রথিত হইতেন ইহার কারণ কি ? শুদ্ধ ঋষিরাই বা কেন! আবিষ্টটল প্রভৃতিও স্ক্তি ব্লিয়া গ্লা হইয়াছেন ! ইহার কারণ তাঁহাটা যে সমাজে বাস করিতেন সে সমাজে সাধারণংলাকের মন অপুষ্ট ছিল আর তাঁহাদের মন শ্মাক্ পুষ্ট ছিল অর্থাৎ মোটামুটি অনেক নিষয়ে তাঁহাদের জ্ঞান ছিল, স্বতরাং সামান্য লোকে আপনার সঙ্গে তুলনা করিয়। '(তুলনার অমন সামগ্রী আরে নাই) উঁহাদের ় সর্বজ্ঞ ঈশ্বীয়ুগৃহীত বলিয়া মনে করিত।

বান্তবিকও যথন সমাজের অভাব অল্ল থাকে, সমাজের সেই প্রথম অবস্থায় তুই পাঁচজনলোক পুতুমনা থাকেন, তাঁহা-দের দ্বারাই সামান্য সামান্ত সমস্ত অভাব পুরণ হয়, স্বভরাং সামান্ত অভাব প্রণের জন্য মোটাষ্ট জ্ঞানে চলিত। এখনও সেইকপ গৃহস্থের সামান্য সামান্ত অভা-বের জন্য গৃহপতির নিজের মোটাষ্টি স্ব জিনিস জানা চাই।

আর এক কথা। পৃষ্টমনা বাক্তিগণের
মধ্যে একম্থী শিক্ষা আরম্ভ হলৈ সমাজের শ্রীরুদ্ধি হয় কিন্তু প্রথম নানা বিষয়ের
শিক্ষা আবস্তক: তাহার উপর একম্থী
শিক্ষা হলৈ উপকার হয় নতুবা এক
ম্থী শিক্ষা অনিষ্টকারী। তাঁতির একম্থী শিক্ষা, এই জন্য তাহারা সংসারযাত্রায় এত অপটু য়ে তাহারা উপহাসের
স্থল হইয়া পড়িয়াছে।

অতএব আগে মোটামুটি শিক্ষা, তার
পর একবিষয় শিক্ষার প্রায়োজন। আগে
পর একবিষয় শিক্ষার প্রায়োজন। আগে
পর জিনিসের কিছু কিছু, তাহার পর
এক বিষ্যের স্বটা। এ বিষ্য়ে আর
একটা কথা আছে। মানুষ জ্বায়া
উকীল হয়, উকীল হইয়া কেহজয়ে
না। প্রতরাং আগে মানুষের শিক্ষা
তাহার পর উকীলের প্রালা। মানুষের
শিক্ষা অর্থে শরীর ও মনের স্মাক্ পৃষ্টি,
সকল বিষ্য়ে চিন্তা করিবার, ও হাত
দিবার শক্তি। তাহার পর কোন একটা
জিনিস সম্পূর্বরূপে আয়েন্ত করা।

माश्रवत मनरक यनि अकृषि भागतात.

ঘরের সঙ্গে তুলনা করা যায়, তবে সর্বতোমুখীশিক্ষায় উহার সকল দার মুক্ত করিয়া রাখে। এই অসীম বিখ বকাণ্ডে চক্ষ-উন্মীলন করিলেই কত বিষয় দেখিতে পাওয়া যায় ভাহা হইতে অনেক জ্ঞানলাভ করা যায়; কিন্তু শাহার মনের সকল হারগুলি খোলা নাই, যা-ভাব মনোবুভিসমূহ সমাক পুষ্ট নহে, ভাহাব পক্ষে সমস্তই অন্ধকার। পরস্ত गाहाव तमहे बाब छनि त्थाना तम त्य **मितानि** छोनमक्ष्य कतिए भार ভাহাই নহে সে উহার বাবহারও করিছে পারে। মনে কব খোপগুলি পোলা। একটির নাম ব্যাকরণ, একটির নাম সাহিত্য, একটির নাম অলম্বাব, একটির नाम विकान, এक्षित नाम शैष्ठे, এक्षित নাম লাইট ইত্যাদি। যখন যে জিনিস্ট দেখিল সে ভাছাকে ভাছার আপন খোপে রাধিয়া দিল স্তরাং দরকার তইলে ভারাকে আর হাতডাইতে হইল না। সে যেমন জনেক অধিক জিনিস দেখিতে পায়, তেমনি সেগুলিকে পবি-ফার করিয়া সাঞ্চাইতে পারে এবং দরকারমত বাবহার করিতে পারে।

অনেকে আপত্তি করিতে পারেন,
সর্কতোমুখী শিক্ষা থাকিলে প্রায়ই লোক
চিন্থাই করিতে পারে; ভাবিতেই পারে,
কাজ করিতে পাবে না। তাহারই
জনা আমরা বলিতেছি সর্কতোমুখী ও
একমুখী তৃইপ্রকার শিক্ষারই প্রয়োজন।
জ্ঞান চারিদিক্ হইতে আসিবে এক বা

ছইদিক্ দিয়া বাহির হইবে। নচেৎ
সে জ্ঞানে জ্ঞানবানের লাভ হইতে পারে
সমাদ্রের লাভ নাই। উভয়প্রকার
শিক্ষা হইলে মনকে লাটমের সভিত
তুলনা করা যায়। লাটমের কাঠময়ভাগ
সর্কভোম্থীবিদ্যা ও লোহময়ভাগ একমুখীবিদ্যা। সেই লোহময়ভাগের উপব
লাটম বেমন ঘোরে আমাদেব মতে
উভয়প্রকারে শিক্ষিত লোকও মেইরূপ
কাল কবিতে পাবে।

যদি বিশ্বতোমুখীশিকার সঙ্গে সঙ্গে একম্থীশিকা থাকে ভাহা হইলে যে বিষয়ে শিকা তাহার অনেক উপকার হয়। যদি একজন প্রকৃষ্ট্রপে শিকিত লোক কোন এক বিষয়ে লাগিয়া থাকেন, তাহা হটলে তিনি যে বিষয়ে লাগিষা थारकन रम विषयात्र अत्नक छैन्निक हम. নহিলে সে বিষয়েব উন্নতির উপায় নাই। শুদ্ধ মোটামটি জ্ঞান থাকিলে কোন বিষয়েব উন্নতি হইবার সস্তাবনা অল্ল। কিন্তু ভাই বলিয়া শুদ্ধ একসুখীবিদ্যায় বিষয়েব উলতি হয় না। মনে কব একজন দস্তচিকিৎসায় যাবজ্জীবন অভি-বাহিত করিল। त्म चात्वक (मिथन अनिल, किन्दु मि यूपि भंतीरतत अना त्तांगमश्रदक किছू ना मिथिया थारक, তাহা হইলে সে ব্যক্তি ভাল চিকিৎসক হইতে পারিবে না। মনে কর, দত উঠে নাই এমত কোন পঞ্চমবৎস্তবর বাল-কের চিকিৎসা কবিতে গেলে, বালকের চুলের প্রতি সে কখনই দৃষ্টিপাত করিবে-

ना, त्कदन मरखदे हिकिएमा आदछ করিবে। যদি কেহ তাহাকে দেখাইয়া **८**मग्र (य वालरकत চ्लख উঠে नारे, চিকিৎসক তৎপ্রতি দৃষ্টিপাতও করিবে ना। (य कांत्रत्व क्य डेटर्र नार्हे, टम्हे কারণে যে দম্ভও উঠে নাই ইহা তাহার একেবারে অত্তবই হইবে না, কেশের সহিত দত্তের বে এরূপ সম্বন্ধ আছে, তাহা সে কোন মতে ব্ঝিতে পারিবে ন!। যদি আর একজন বছদশী দল্ভ-চিকিৎসকের লিখিবার ক্ষমতা না থাকে **ও**বে তাহার দন্তচিকিৎসাগনিত অভি-জ্ঞতা তাহারই জীবনাবধি শেষ হইয়া গেল। লিখিতে জানিতে হইলে স্করাং অন্য অনেক বিষয়ে শিক্ষা আছে অবশ্য স্বীকার করিতে হইবে।

ভদ্ধ এক স্থী শিক্ষার আর এক দোন
দেখাইব। আমাদের প্রাচীনকালে বৈদ্য
বিলয়া স্বতন্ত্র জাতি ছিল না, কি স্বতন্ত্র
প্রোফেশন ছিল না, ঋষিদিগের হতে
যতদিন বৈদ্যাশান্ত্র ছিল, ততদিন শান্তের
উন্নতি হইতেছিল। তাহার পর শুদ্ধ
চিকিৎসা বৈদ্যাদিগের বাবসায় হইল।
বৈদ্যেরা প্রুকে শুদ্ধ বৈদ্যক পড়াই
তেন। ক্রমে শিক্ষা সংকীর্ণভাপ্রাপ্ত
হতে লাগিল। কাজেই এই সময়ে
সংগ্রহগ্রন্থ আরম্ভ হইল। অধিকাংশ
লোকই সংগ্রহ গ্রন্থ পড়িয়াই বৈদ্য হইতে

टेवनाभारसव शैनावसावछ আগিল। স্ত্রপাত আরম্ভ হইতে লাগিল। প্রায়ই সংস্কৃত সংগ্রহগ্রন্থে দেখিতে পাওয়া যায় যে, অমুক বাক্তি দেখিলেনলোকের শক্তির হ্রাস হইয়া আসিতেছে, ছাত্তেরা আর শান্তের সকল গ্রন্থ পড়িয়া উঠিতে পারে না এই জন্য তিনি তাহার সার- • সংগ্রহ করিয়া প্রচার করিলেন। বেলাকের শক্তির হ্রাস শব্দের অর্থ আর কিছুই নহে, সাধারণশিক্ষার সর্বতোমুখীশিক্ষার অভাব। বিদ্যা সংগ্রহগ্রন্থমাত্রে যথন দাড়াইল, তখন সে বিদ্যার উন্নতি আর इहेन ना। (म विष्याचान् लाक मझीर्गमना হইতে লাগিল। সংগ্রহগ্রহকার সর্বজ হইলেন তাঁহার গ্রন্থের উপর সরুকাটা कावछ रहेन, काकि कांत्रछ रहेन। विषय विमात शोहब देशिन ना, अष्ट विमात গোরব হটল। পাঠ লাগানই বাছাত্রী इडेशा लाङ्गादेल ।

অত এব শিক্ষার জনা ও শরীর পুটির জনা যে ২৭ বংসর আছে তাহার মধ্যে এই চ্ইপ্রকার শিক্ষাই দেওয়া প্রয়েজন, প্রথম সর্কাতোন্থীশিক্ষা ২২।২৩ বংসর পর্যান্ত, তাহার পর ৪।৫ বংসর একমুখীশিক্ষা। একপ শিক্ষিতলোক অনন্তশক্তির আধার হন, তাহাদের সংখ্যার যত বৃদ্ধি হয়, সমাজের শক্তির ততই উত্রোজ্বর বৃদ্ধি হয়।

বাঙ্গালার জ্ব।

বালালা যে তুর্দশাপর দেশ ইহা श्वित। (मभवरम् वाझानिता धवर पा-भार मामनकर्डुशन धटे इक्मात कारन সর্বদা আলোচনা করিয়া •কেহ বলেন, বাঙ্গালার চিরপরাধীনতাই **এই फूर्फ्मांत्र कांत्र**ा ट्रक्श वरलन, বাঙ্গালার লোকসংখাবিদ্ধি ইহার হেতু। (कह वलन, वालांनिमिश्त भाती तक **এवः মানসিক দৌর্বলা জনাই বাঙ্গালা** ছুদ্দাপর। কেহ বলেন, বাঙ্গালার कप्रशा अनवाशूरे मकन अनर्थत मृन। करल এ দেশে यত अभिष्ठ लाकंममृहरक পীড়িত করে, তাহা গণিয়া সংখ্যা করা ভার। একে বছপ্রভা-সহরে উৎপর ধনে খাইতে কুলায়না; তাহাতে বিদেশে धन हिनमा गाहेट एह, मिद्माशकी वीरन ব্যবদা মারা যাইতেছে, ভাষার উপর স্থাসনে আরও প্রজাবৃদ্ধি হইতেছে। विष्मी निकाय लाटकत धर्मलाभ ণাইতেছে, অথচ ধর্মান্সনিত সামাজিক কুসংস্থার সকল লোপ পাইতেছে না, ন্তন শিক্ষায় রাজনৈতিক আকাজ্ফা সকল পরিক্ট হইতেছে, কিন্তু রাজ-নৈতিক কাৰ্য্যক্ষেত্ৰ বিস্তৃত হইতেছে না। জাইনে হাত পা বাঁধা—মনোবৃত্তিসকলের

ক্রি নাই, পেটে থাইতে ক্লায় না তব্ টেক্স দিতে হইতেছে। তাহার উপর সময়ে সময়ে ছর্ভিক্, সময়ে সময়ে জল-প্রাবন, বাত্যাবিপ্লব, প্রাদেশে প্রাদেশে সংক্রামক জ্বর। বাঙ্গালি হঃথী, তাহার উপর রোগগ্রস্থা।

অন্যান্য সকল ছংখের অপেক্ষা এই রোগছংখই বোধ হয় সর্ব্বাপেক্ষা গুরুতর—আর সকল ছংখের মূল। রোগের
জন্যই শারীরিক ও মানসিক দৌর্বলাল্লন্যই
শারীরিক ও মানসিক দৌর্বলাল্লন্যই
চিরপরাধীনতা। তিন কারণেই দারিদ্রা। আধুনিক দেশবংসল বান্ধালিরা
কেহ সামাজিক, কেহ রাজনৈতিক সংক্ষরণে উৎসাহশীল। কিন্তু রাজনৈতিক
ও সামাজিক অনর্থের মূল যে রোগ,
ভাহা হইতে উদ্ধারের জন্য কাহাকে
কোন কথা কহিতে শুনা যায় না।

ইহার কারণও আছে। রোগ জলবায়্জনিত। দেশের জলবায়্পরিবর্ত্তন
করিবে কে ? বাঙ্গালা নিয়ভূমি; ইহার
মাটী ভিজে, অথচ রৌদ্র অভিশয় প্রথব।
ভিজে মাটীতে প্রথব রৌদ্র লাগিলে
মালেরিয়ানামে বিষময় বাস্থের সমৃত্তব
হয়। মালেরিয়া হইতেই বাঙ্গালায়

^{*} সরল জরচিকিৎসা। প্রথম ভাগ। গৃহত্ব আর, পাড়াগাঁরের ডুক্তোরদের জ্বাত্তার জীয়হ্বনাথ মুখোপাধ্যায় প্রণীত। কলিক্তা ১৬০ নং বছবালার বীট। মূল্য ২০ টাকা।

সর্বভূক্ জর। জতএব বাঙ্গালার মাটী আরও উঁচু করিয়া না তুলিতে পারিলে, সুর্যোর তেজ অপ্রথর করিতে না পারিলে, বাঙ্গালার জর নিবারণ হইবার সম্ভাবনা নাই। বিদ্যাসাগর বা কেশব সেন, সুরেক্স বন্দ্যোপাধ্যায় বা রুষ্ণদাস পাল সকলে মিলিয়া ধরাধরি টানাটানি করিলেও বাঙ্গালার মাটী এক ইঞ্চ উঁচু হইবে না। আর সুর্যোর তেজ কমান জেতাবুগে: যা হইরাছিল, তা হইয়াছিল, আর বড় হইবার আশা নাই। স্কুতরাং প্রোটুরটের দল, সেদিকে বড় ঘেঁসেন না।

দেশের নৈদর্গিক প্রকৃতির পরিবর্তন कत्रा यात्र ना वर्षे, किन्न त्यथारन मारल-বিয়া উৎপত্তির কারণসকল বিশেষরূপে সমবেত সেখানে অলবাযুব উৎকর্ষদাধন করা মহুষোর নিতান্ত অসাধা নহে। गांगे डेंड्र कता यात्र ना नाह, किन्न ভাহার জলনিকাদেব স্থপ্রণাণী করা यारेट भारतः जनिकारयव स्थानी হইলেই ভূমিৰ আৰ্দ্ৰতা কমিৰে। আৰ্দ্ৰতা কমিলেই ম্যালেরিয়া কমিবে। স্থানীয় জলবায়ুর উৎকর্ষসাধনের এইরূপ অনেক উপায় আছে। कग्रजन (मगर्गन लाक, পেদিকে যত্র করিয়া থাকেন। ভাছার कना कन्ने वार्मामिरमान, कन्ने मना হইয়াছে? কয়টা জ্রোবক্তায় হাত-তালির ঘটা পড়িয়াছে ? কয়খানা জরম পান্ফুট ছাপা হইয়াছে ? এ কথা बहेग्रा কালেজের ছেলে কগুবার

খাইয়াছে ? খোড়লেড্রে টালার কণা আনেক শুনা বার, এ বিষয়ে কয়টাকা টালা উঠিয়াছে ? বরং এ বিষয়ে রাজ্য পুরুষদিগকে কিছু প্রশংসা করিতে হয়। তাহারা কথন কথন জাের করিয়া এ সকল কাজ করাইয়া থাকেন। দেশ-হিতৈষীলা ভাহাতে সাহায়্য কলা দ্রে 'থাকুক, ববং রাজপুরুষদিগকে গালি' দিয়া থাকেন। গ্রণ্নেণ্ট জাের করিয়া ভানকুনীর জলা সাফ করিলেন, আজ পর্যান্ত দেশহিতৈষীর দল সেজনা গবর্ণ-দেণ্টকে গালি দিতেছেন।

একা জরই বাঙ্গালার পরমশক্ত। ত্ভিঁক্ল, বাত্যা, জলপ্লাবন কালেভদ্রে
কখন কোন প্রদেশকে পীড়িত করে।
কিন্তু জর প্রভাহ প্রতি গৃহে গৃহে লোকধ্বংল করিতেছে। যাহাকে না মারিতেছে, তাহাকে নিস্তেজ, জাকর্মণা,
আমামুদ, জীবনভারবহনে অসমর্থ করিয়া
তুলিতেছে। এই পরমংক্রর হাত হ
ইতে নিঙ্কৃতি পাইবার কি কোন উপায়
নাই ?

নিক্ষতির জনা বিবিধ উপায়। প্রথম যাহাতে জর না হয়, অর্থাৎ নিবারণোপায়। বিতীয় জর হইলে যাহাতে আরোগালাত হয়, অর্থাৎ চিকিৎসা নিবারণের সম্বন্ধে উপায় কিছু বল গিয়াছে; যাহাতে ভানীয় জলবায়ু স্বাস্থ্য কর হয়, তাহা করিতে হয়। এক চিকিৎসাসম্বন্ধে কিছু বলিব।

नता (मभवरमल वाकालिका देशदक्ष

দিগকে যতই পালি দিন না কেন, ইংরেজ হইতে এ দেশের যে কয়ট মহৎ
উপকার সাধিত হইয়াছে তাছা অবশ্য
ত্বীকার করিব। ইংরেজ হইতে পাশ্চাত্যবিদ্যা এ দেশে আসিয়াছে। ইংরেজ
হইতে মুদ্রাযন্ত্র এ দেশে আসিয়াছে।
ত্বাধীনতা দেশবাংসল্য প্রভৃতি মোহমন্ত্র
ইংরেজ হইতেই আমরা শিথিয়াছি।
আর ইংরেজ হইতেই আমরা শিথিয়াছি।
আসিয়াছে। বাঙ্গালার জ্রুচিকিংসায়
কুইনাইন একমাত্র উমধ। বাঙ্গালির
গর্মশক্রনিধনে কুইনাইন আমাদের
একমাত্র সহায়।

পঠক বলিবেন কুইনাইন যে অবের উষধ ইং। ত আবাল-বুদ্দ-কনিতা সক-लिहे जात्म, हेश विनिवाद समा এठ वड़ **५क**हे। खावम (कन १ खात्र छेडात अगरम এই विनटि इस, य कथा।। **५४७: आवालपुष्पत्रिका मक्सवामिमध्यक** ग्रह। कुरेनारेन मध्य अधिकाः भ ला কের অনেক কুসংস্কার আছে। অনেকে वालन कुरेनारेन थारेटलरे खत्र आहेका-देश यात्र। उंश्हादमत विश्राम आह्न, व क्रेनारेन ना शाहेलारे भी घरे छत ছাড়িত; এত ভুগিতে হইত্না। এ क्षा मंडा बढ़े (य, कूडेनाईन ना बाईएन এত ভূগিতে হয় না। কেন না রোগ ও রোগী শীঘই একত্রে নিকাষ পায়। জাবার অনেকের বিশ্বাস আছে, যে এ ^{দেখে} এত কুইনাইন আদিয়াছে বলিয়া ^{५१न} ७७ खत रहा। यथन क्रेनारेन ছিল না তথন পোকের এত জর ছইত
না। তাঁহাদের বিখাদের স্থলমর্থ এই,
যে কুইনাইন থাইলেই জ্বের ধাত হইরা
যার। অতএব কুইনাইন থাওরা ভাল
নয়। অনেকে এই সকল বিখাদের
বশীভূত হইরা, ষ্থাসময়ে কুইনাইন
বাবহার করেন না, নিতাপ্ত বিপল্ল না
ছইলে কুইনাইনে রাজি হন না। তার
পর কুইনাইন বাবহার করিয়া আশু
উপকার পাইলেই, কুইনাইন ছাড়িয়া
দেন। স্থতরাং কুইনাইন তাঁহাদিগের
পাকে বিশেষ উপকারী হয় না।

ইহা অবশ্য খীকার করিতে হইবে,

শে, বছতর লোক বাঙ্গালার দেখা যার

যে কুইনাইন খার আর অরে ভোগে।

ইহার এক কারণ অনেকে নির্দেশ ক
বেন যে, বাজারে যে কুইনাইন বিক্রয়

হয়, সাধারণ লোক যাহা কিনিয়া খায়

শে কুইনাইন ভাল নহে তাহারই দোষ।

শে কথা কিয়ংপরিমাণে সত্য হইলেও

হইতে পারে। কিয় সে কথা এখন

আমরা ছাড়িয়া দিই। প্রধান কারণ

চিকিংসার দোষ, উপযুক্ত সময়ে উপযুক্ত

মাত্রায় এবং উপযুক্ত প্রণালীতে কুই

নাইন সেবন না করিলে, উপযুক্ত ফণ

কেন ফলিবে?

চিকিৎসার দে: ষ তুই কাবণে হয়।
এক, চিকিৎসক স্থচিকিংসা না জানিলে,
কাজে ঝুজেই চিকিৎসার দোষ ঘটবে।
বিতীয় রোগী চিকিৎসকের ব্যবস্থাসুসারে
কার্যা না করিলে চিকিৎসার দোষ ঘ

টিবে। সর্বত্র স্থৃতি কিৎসক পাওয়া যায় ना। यांशाता हिक्श्माभारत स्मिकिङ ध्वर छन्क वड़ वड़ नगरबरे छ।हा-निगरक शांख्या यात्र। (म नकन हान न हेटल छाशामित्रत छे श्वक श्वस्तात इस मा। दुर्गम पत्नी थाः मनकल, दर मकल प्राप्त बदात अधिक श्राञ्छाव, मिरे मकल ভানে স্থাশিকত চিকিৎসক মিলে না। দে সকল স্থানে জরের চিকিৎসা ছাতুড়ে-দিগের হাতে। ভাষারা কেবল ছই এক বংগর কম্পাউপ্তারি করিয়া কেহ তাহা भाउ कतित्रा, (कवल कीविकानिकार्टित উপারাম্বর অভাবে ডাক্রার হইরা বসে। তাহাদিগের হইতে, স্কৃচিকিৎসা কথনই হইতে পারে না। দ্বিতীয় স্থচিকিৎসক गिलिद्रलंख गृहस् निष्म किंद्र हिकिएमा मा व्बारम, চिकिৎमात्र मम्भूर्व कनवाशि হইতে পারে না। চিকিৎসক কিছু, দর্বকেণ দকল রোগীর শিওরে বদিয়া পাকিতে পারেন মা। ত্রিনি কেবল উপদেশ निम्ना शिवा थाक्तम, शृहस्मृत यत्या कांशद छिकि दमामच्यक किंडू বোধ भाष ना शाकित्न तम छेशाहणमञ् मम्भूर्व कांधा इत्र ना। खाउनात वित्रा গেলেন গায়ের ভাত কম পড়িতে আরম্ভ. रहेल कुरेनारेन पित, जिनि हिनत्रा গেলে গারের ভাত কম পড়িতে আরম্ভ इहेल-किंद्ध गृहञ्च ভाविल य এक्वार्य धा ना क्षारेल क्रेनारेन दिन छा। रहेत मा; अत्र चाहिकारेमा माहेत्व। अनिटक রোগীর গা আর मा खुड़ाইशा

चारात कर चामिन, कूरेनारेन था ७ शा इरेन ना. 6िकिৎসাও निक्न इरेन। কোন রোগীর অজীর্ উপস্থিত হইলে. ডাক্তার ব্যবস্থা করিলেন, তুমি শীতল करण मिभारेबा अरे छेवशी माशा माशा দেবন করিবে। ডাক্তার কিরিয়া আ-नित्रा ध्विशितन, द्राभी वर्षाकात्वत कर्षमगग्र कटल मिनार्टेबा अस्थरमयन कति তেছে। এবং তাহার পেটের পীড়াও বাডিয়াছে। আর একরোগী শিরঃ-পীড়ায় পীড়িত হটুলে চিকিৎসক উপ-(मन कतिवाहित्वन त्य माशात कलभी: দিয়া সর্বদা শীতল জলে ভিজাইতে থাকিবে, রোগী মাথার স্থাতপুরু মোট। নেক্ড়া জড়াইয়া তাহাতে জল থাব-ড়াইতে লাগিল। স্থতরাং সাথার যন্ত্রণা মা কমিয়া বাডিয়া উঠিল।

অতএব বাঙ্গালায় অবের মহৌষধ
আমাদের হাতে থাকিতেও ছুইট অভাবের
অনা বাঙ্গালাদেশ অবে ধ্বংশ পাইতেছে।
প্রাণম অভাব অধিকাংশ স্থানের চিকিৎসকেরা অবের চিকিৎশা জানে না।
বিতীয় অভাব যেখানে স্থাচিকিৎসক
আছে, সেখানে গৃহত্তেরা চিকিৎসকের
উপদেশপালন করিতে জানে না। বিনি
এই ছুই অভাব দূর করিবেন, যিনি পন্নীপ্রান্মের হাতুড়েদিগকে অর্চিকিৎসা শিখাইবেন আর গৃহস্থাদিগকে মেই চিকিৎসার
মর্ম্ম বুঝাইতে শিখাইবেন তিনিই বাঙ্গালাদেশধ্বংসকারী অরক্ষপরাক্ষসকে পরান্ত ও
নিহত করিবেন। তাঁছাকে দেশহিতেবী

মধ্যে সংক্রাচ্চস্থান বিতে আমরা প্রস্তুত । এই পুণাময় সংগ্রীমে আমরা কেবল একজন বাঙ্গালিকে বুডাল্ল দেখিডে शाहे। आमता विविद्यां एवं, वाक्रानात खंद इहेट एम्मरक दक्षा कतियात दिविध উপায়। এক স্বাস্থ্যরক্ষা—বিজ্ঞানের ্নিয়মপালন। দ্বিতীয় স্থচিকিৎসা। ,স্বাস্থ্যরক্ষার বিধি স্বদেশীয়দিগকে শিপাই-বার অন্য ডাক্তার শ্রীযুক্ত রাবু যহন।খ মুগোপাধার করেক বৎসর ছইল भाরীর-পালন নামে একথানি গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। তাহা এ দেশে উত্তমরূপে প্রচলিত হইরা দেশের বিভার মঙ্গলসাধন করিয়াছে। দিভীয় উপায় স্থাচিকিৎদা। প্রামে গ্রামে গৃহে গৃহে অবের স্কৃচিকিৎদা প্রচলিত করিবার জন্ম তিনি সম্প্রতি জরচিকিৎসা নামে একথানি উৎকৃষ্ট গ্রন্থ প্রচাব করি-য়াছেন। আমরা শে ছুইটি অভাবের কণা বলিয়াছি এই ছুইটি মভাবই এই গ্রাংহর দারা পরিপুরিত হইতে পারিবে। এমন खत्रमा कथन्डे कता गाइटिंड शाद ना, গে একগানি ক্ষুদ্র গ্রন্থের প্রভাবে বা-भागारमम इरेटक अब अदकवादबरे जिल्ला-हिछ इहैरत। किन्न देश वना याहेर ड পারে ষে এই গ্রন্থানি কিয়া এইরপ' (कांन अंध, वाक्षानाव आदम आरम थाठाविक धवर शृद्ध गृद्ध मधीक इहेरन দেশে যে জারাক্রাক্ত বোগীর সংখ্যা किंगित, ध्वयनकार व्यापका व्यापका লোক অনে মরিবে, তাহাতে আর কোন मत्मव्हे नाहे।

এইরপ এছ বলিতেছি ভাহার কারণ **थहे. (व थहे शहरानित कुरत्रकी विरम्व** खन चाहि। धक्रेश खन ना धाकिएं क ट्यनीत डाइडबंदा है है ना इहेगा অনিষ্ট হইবারই সম্ভাবনা। প্রথম গুর এই যে ইহার রচনা অতিপর সরল-্যে ইচ্ছা সে পড়ুক না কেন, বৃঝিবার কোন কটু নাই। ইহার ভাষা ধাত্রী-শিক্ষার ভাষার নাায় সহজ কথাবার্ত্তার ভাষা। কিন্তু ইহা ধাত্রীশিক্ষার নারে কথোপকখনছেলৈ লিখিত হয় নাই। (क्वन ভाষা সরল इहेटनहें व बहना मत्रन इहेन अगन नहा | 6िकिৎमा-শাস্তান্তর্ক ত্রহ তত্মকশ কঠিন ও কালবাাপী শিক্ষার আয়ত্ত, দেগুলি অশি-कि उत्त भिशाहेर्ड (शत्त, क्वन महन ভাষার লিখিলে হইবে না। বুঝাইবার को नल अ आना हाहै। यहं वातू व्य तम मकत को नहत अमाधादन शह धाळी-শিক্ষার তাহার পরিচয় আছে। ধাতী-শিকা অপেকাও কোন কোন বিষয়ে জরচিকিৎসা আরও পরিষার। নিষে চিকিৎসা করিতে করিতে লেখক যাহা (पिशार्यन ध्यम अरमक डेपाइतन দিয়া সীম উপদেশগুলি স্পন্তীকৃত করি-बार्छन ।

গ্রাছের বিতীয় গুণ এই, যে, যে গৃহছের যেমন কাবছা তাহার প্রতি তেমনি বাবহার আছে। কানেক সময়ে ডাক্তা-বেরা দরিকের প্রতি এমন বাবছা করিয়া থাকেন, যে তাহা বড়মাছবেরই সাধা। এবং পলীগ্রামে যে সকল সামগ্রীর, হকুম করেন, তাহা নগর নহিলে পাওয়া যায় না। সে সকল স্থানে যত্বাবু অম্-কলগুলি বলিয়া দিয়াছেন।

তৃতীয়ও প্রধান গুণ এই,যে এখনকার প্রচলিত জরচিকিৎসাব মধ্যে মেটি সর্ক্ষোৎকৃষ্টপ্রণালী তাহাই ইহাতে লিখিত হইয়াছে, কিন্তু গ্রন্থ যথন যত্নাব্র ন্যায় উৎকৃষ্ট চিকিৎসকের লিখিত, তথন সে কথা আমাদের বলাই বাছলা। অনা চিকিৎসা অপেকাকৃত যশসী হইলে হইতে পারেন, কিন্তু এক্নপ স্থদক্ষ, স্থবিজ্ঞ এবং কৃত্কর্মা চিকিৎসক অতি বিরল।

চতুর্থ। গ্রন্থানি সম্পূর্ণ। জ্বণীজ্ব বাক্তির এমন কোন অবস্থা নাই—
জ্বের এমন কোন উপসর্গ বা উপজব
লাই যে এই গ্রন্থে তাহার চিকিংসার
বাবস্থা নাই বা বাবস্থা করিবার সকল
নাই। প্রথম ভাগে সকলগুলি শেষ
হয় নাই।

এই প্রবন্ধ লিখনে আমাদিগের তিনটা উদ্দেশ্য। প্রথম বাঙ্গালাব জুর, বাঙ্গালার প্রথম শক্র হইতে দেশকে মুক্ত করার জন্য দেশহিতৈবিগণ, চেষ্টিত নহেন। তাঁহারা চেষ্টিত হউন তাঁহাদিগের কাছে এই প্রার্থনা করা। বিভীয় কিবিধ উপায়ে এই শক্র পরাস্ত হইতে পারে, তাহার কিঞ্ছিৎ উল্লেশ করা। সৃতীয় বঁজুলাবুর এই গ্রন্থ থানি, সে মাক্ষ্ণোদ্দেশে নিক্ষিপ্ত প্রথম শর বিদ্যা, সাধারণের নিক্ট পরিচিত করা।

গ্রন্থানি কিরপ প্রাঞ্জল, ও ইহা দে
সাধারণের ব্যবহার্গা, এই পরিচয় আরও
ক্রম্পত্তি করিবার জনা, আমরা উহা হইতে
ছই পাত উদ্ধৃত করিলাম। যেটুকু
উদ্ধৃত করিলাম সেটুকু যিনি পড়িবেন
ভাষারই উপকার হইবে । এইরূপ গ্রন্থের
স্কল স্থানে।

''এখন কুইনাইন খাওয়ার কথা বলিু। এর আগেই বলিয়াছি যে, ঘাম হইতে षात्रष्ठ इहेटलहे द्वागीतक कुहैनाहेन নৈলে অনেক জায়গায় কুই-নাইন থাওয়াইবার সময় পাওয়া যায় ना। कूरेनारेन थाउग्रारेगात निव्रम अ-त्तरक खातक तकम तालन। कि**छ छ।**भि **দেখিতেছি, ঘাম হইতে আরম্ভ হইলে** ১॰ গ্রেন, আবার জর আদিনার ছুইঘণ্টা আক্রাজ আণে ১০ গ্রেণ, কার এর মধ্যে इंडेमणे। अञ्चत्र इटे द्वान कुटेनाहेन थाउ-माहेरल ১००व मरधा २० जात्रशास जव ष्याना तक इत्रा धातक सामित्रास कुरे नाइन थाउगाहरल कितिश्मक कानड আয়গায় অপ্রতিভ হট্রেন না। মনে কর, আজ বেলা ৮ টার সময় জ্বর আসিণ সেই জর রাত্রি ৮ টার সময় ছাড়িল क्य श्री (यमन माम इटेट कात्र इटेन. অমনি ১০ তোণ কুটনাইন খাওয়াইয়া দিলে। তার পর চইঘন্টা অম্বর, মর্থাৎ वाजि > होत मगम अकवान, >२ हेवि मगग अक्तांत, २ हे। व मगग अक्तांत, 8 টার সময় একবার, ছই গ্রেণ করিয়া কুই-नारेन भाजपारेलां ट्यांत ७ हात्र गम्ब

জ্পতি আবার জ্বর আসিবার ২ ঘণী। জ্বর আসিল না। তথন নিশ্চিত হইলে। আগে ১০ গ্রেণ কুইনাইন থাওয়াইয়া जिला '(वना ৮ টाর সময় জর আসি-বার কথা, কিন্তু জর আদিল না। রোগীর কান ভোঁ ভোঁ ক্রিতে লাগিল। তিন एकी द्राशीतक कृष्टेगारेन नित्न ना। (बना ১) है। ज मगर २ (छ। क्रेनारेन दिता (तना २ हात मगर आत इह গ্রেণ দিলে। তার পর ৬ টার সময় একে-वारत >० (श्रंग क्रेगारेन था अप्रारेगा पिटन । यपि वन, **७ होत म**रश आवात ১০ গ্রেণ কুইনাইন দিবার দরকার কি পু আমি অনেক ভারপার দেখি-য়াছি, যে সময় জর আসিবার কথা, कृष्टेनाहेन थां अवाष्ट्रेया यनि तम मनत्त्र ज्वत আসিতে না দেও, ভবে ভার ১২ ঘণ্টা शत व्यावात व्यत व्याटम । दवला ৮ हात সময় জার আদিবার কপা, কুইনাইন খাওয়ান হইরাছিল বলিয়া, সে সময় জর আমিল না। রোগী মনে করিব আছ আর জর আসিবেনা। চিকিংসকও णारे विविद्या छिलाया (शत्नन । किन्ह दाखि ৮ টার সময় আবার জুর আংসিল। विकिৎमक्तित्र काट्ड मःवान श्रिम् विकिरः দক আদিয়া বলিলেন, তাই ত, জুর আসিবার ত কথা নয়, তবে কেন এ विकम हरेल ? (अरे करना वल्कि, य मगत जत जानिवाद कथा, तम मगत जत না আদিলে, ভার দশ ঘণ্টা পরে দশ ^{(श्र} क्रेनारेन चाउबारेबा (मखबा छाण। তার শর দেখিলে রাত্রি ৮ টার সময়ও

রাত্রে রোগীকে আর কুইনাইন না দিলেও চলে। কিন্তু ভোর ৬ টার সময় আবার > গ্রেপ কুইনাইন দেওয়া চাই। পর বেলা ৩ টা পর্যান্ত, হুই তিন ঘণ্টা অন্তর ২ গ্রেণ করিয়া কুইনাইন দিলে। ৬ টার সময় একবারে ৫ প্রেণ কুইনাইন था ७ शारेशा मिटन। ताळि ১० छात मगग्र-২ গ্রেণ দিলে। রাত্রে আর কুইনাইন · দিবার দরকার নাই। তার পর ভোর ७ हे। इ ६ त्रान क्रेनाहेन (मुख्या हारे।

गटन कत. त्रामवात किन दवला ৮ छोत्र সময় জর আসে, আর সেই জর রাতি ৮ টার সময় ছাডে। তার পর ঐ নিয়মে কুইনাইন খাওয়াইয়া, বৃহস্পতিবারের ভোর পর্যান্ত জুর আসিতে দিলে না। এখন কি করিবে ? কুইনাইন বন্ধ করিবে না, এখও জুর আসার আশকা করিয়া অল মাতায় দিনকতক কুইনাইন খাও-शाहेरत। धकरे जातिशा मिशलिहे जांत দিনকতক কুইনাইন থাওয়ানই উচিত विशा (बाध इटेरव) (कन ना, रा ज्व রোজ আদে কুইনাইন থাওয়াইয়া দৈ জুর বন্ধ করার পর, যদি আর কুইনাইন 'ना थाउग्राउ, उत्त आठे निरनतः निन আবার জর আদে। এতেই লোকে वरन क्रेनारेन थारेटन जुत चाह्कारेगा यात्र । भातीन तथरक छत এकवादत यात्र ना। क्न किन्ह ना नत्र। धत्रक्य ভावारे । (लारकत जून। **५**हे जूरनत • अरनाहे | माधात्रावत काष्ट्र, दिरमंद हेडत्र लाकः

(मव मर्या, क्रेनाहेर्टनत फड क्रांक्त गारे। जुरब जुरब रहीला कविवा क्लि-ट्डर्ड, जब् कृत काठिकारेबाइ स्टब्स, क्टे-नाहेरनद कारह्व गाहेरलह ना 1, हैलद (लाकरमद मृत्या मर्समार्गे धक्तभ घटि। **এর ফল এই যে, চারি আনার কুইনাইন** | व्यानिया चारेल (र कृत मातिङ, त्मरे कुरत कीवनहां गई नग्न। ध इ:स कि द्राधिवात्र कांत्रगा चाट्ছ! शांकार्गाटम (मारक छ अहे स्ताहे स्वत अड मता। **ज्यादे (५४, (४ जूद दिवास ज्याद्य, क्**टे-নাইন থাওয়াইয়া সে জুর বন্ধ করার পর, আট দিন পর্যান্ত কুইনাইন খাওয়ান রড় দরকার। **ज्र कृत यस हरशा**न

পর, হই জিন দিন ক্ষেণাধানি করিছা
কুইনাইন পাওয়াইতে হয়, তার পর
তেমন করিবার দরকার নাই। বাধানিধি
করিয়া কুইনাইন খাওয়াইবার কথা এই
মাত্র বলিয়াছি। রোজ স্কালে ৫ প্রেণ,
আর সন্ধার আগে তিন প্রেণ থাইলেই
হয়। আট দিন পর্যান্ত এই য়িয়্ম্যে কুইনাইন থাওয়া চাই।"

উপসংহারে ধিনি ধানীশিকা, শরীর পালন, এবং জুরচিকিৎসা প্রাণয়ন করিয়া সাধারণ লোকের অশ্বে হিতসাধন করি-য়াছেন, তাঁহাকে আমরা শত শত ধক্তবাদ্ধ প্রানা করি।

-- TOILS HESING ...

মাধবীলতা।

· ** >0

যে নির্জনমনিবে একচারী বাস
করিতেন, চক্রালোকে ভাহার গান্তীর্থা
বিশেষ বাড়িত। প্রকাশু প্রান্তরের
মধ্যে প্রকাণ্ড স্নির, সমুবে প্রকাণ্ড
মীর্ষিকা, পিতম পাগলা যবনই রাজে
দেখিত, তথ্রই বড় বিসর্ব হইত। এ
কর্গতে যে সে একা, ভাহার যে আর
কেহই নাই, এ ক্পা কেবল এই নির্জন
স্থানে ক্সাসিলেই ভাহার মনে হইত।
ইহা অসম্ভব নহে। স্কানমাহাস্কা ক্সাস্চ্যা, এই স্বানীই জীয়া। ত্য, ক্ষিত্ব,

বিশাস, বৈরাগ্য এ সকলই স্থানের ভবে আপনিই মনে উদর হয়। এই কন্য আনেকে বলে স্থানাগুবারী মহবোর প্রকৃতি। বালাশার পাহাড় পর্যাত কিছুই নাই, একথানি কঠিন প্রভারও নাই, বালাশার যাহা কিছু আছে সকলই কোমল, সুভিকা পর্যাত্ত হয়। আনরাভ ঠিক সেইস্ত কোমল; জার বলে প্রভার। তিক সেইস্ত কোমল; জারাত হয়। আনরাভ ঠিক সেইস্ত কোমল; জারাত স্থাত্ত হয়। আনরাভ ঠিক সেইস্ত কোমল; জারাত স্থাত্ত হয়। সাল্য বা

আৰম্ভা একণে বিশান্তি ক্তা পরিতেতি,

নত করিবা পা কেলিডেছি, ভিত্ত ভাহাই বলিয়া আমানের প্রকৃতিপরিবর্ত্তন

হয় নাই, আমরা বাহা ছিলাস তাহাই
আছি। অফুকুরণ-অফুরোধে মৃত্তিকার
কুতার পেরেক ফুটাইডেছি, কিন্তু পরে

হয় ত বাঙ্গালার অকে জুতার দাগ
দেখিরা চক্তের জল ফেলিব। জুতার
বা মোজার প্রকৃতির পরিবর্ত্তন হয় না,

যদি কথন বাঙ্গালায় পর্কৃত করে. মৃত্তিকা
কঠিন হর, আমরাও কঠিন হটব; নতুবা
যে আতিই আসিরা বাঙ্গালায় বাস ক
রিবে, সেই জাতিই ক্রমে আমানের ন্যায়
কোসলম্ভাবই হইবে।

একদিন গভীর রাত্তে কালীয়দহের কলে বিমর্বভাবে পিতম একা বসিয়া हिन। व्यत्नकक्षन हक्त छेठिशांदक । मृद्र প্রান্তরকৃলে ধুমরাশি মেঘবং অমিরাছে, পিত্ৰ তাহাই দেখিতেছিল, আর মধ্যে মধ্যে অক্টেখরে আপনা আপনি কি विष्टिहिन, अमन नमम उन्नारी धीरत वीदा कामिश विज्ञाना । পিত্ৰম জাঁ-शांक (काम क्यांत्र मञ्जायन कविन ना. श्रनामनाक यादा विविद्यक्ति, छाहारे (मिचिए नातिन। उक्ताता विकामा कतिरमा, निख्य दिवान आहे ? शिख्य म्य ना विकारेवा वनिन, जान चाहि। वक्रांत्री विकास कतित्सम, लिडम তোমার সদের অবস্থা কৈমন ? কোন **উত্তর লা দিয়া শিশুম আন্তর্কুলের ধু**ম-अभि काष्ट्रशित्रकोका शिक्ष्मिक कविन ।

ঁ প্রশ্ন। কিন্তু লোকের বৈধি ছব তোমার আর চিত্তবৈকলা নাই। তুমি একণে আপনাব অবস্থা ব্রিতে পারিয়াছ।

এই শেষ কথাম পিত্রম পাগলা ক্রমে ক্রমে ক্রিয়া বসিল, এক দীর্ঘ নিশ্বাস ভাগে করিরা ব্রহ্মচানীর মুখপ্রতি চাছিরা রছিল। সেই কাতর দৃষ্টি দেখিরা ব্রহ্মচারী বাথিত চইলেন। জিজ্ঞাসা করিলেন, 'পিতম কি জানা ভোষাব এ স্লানভা গ সংসাব সাজাম যাহার নাই,কাতর হইবাব ভাহাব ত কোন কারণই লাই, মায়াই ত্রুংধের তেতু।"

পিতম কোন উপ্তর করিল না দেখিরা ব্রহ্মচারী আবার বলিতে লাগিলেন "কি জন্য যে তোমার মনকট্ট তাহা আমি জানি না কিছ তোমাব মৃপ দেখিয়া বৃথিতেছি যে ভোমাব মনকট্ট অভি গুরুত্ব। এ কটু নুত্র নহে, অভি পুরাহন বলিয়া বোধ হইতেছে—"

পিতমেব শ্বীর চঞ্চল হইয়া উঠিল।
পিতম উঠিয়া দাঁড়াইল, অন্ধারীকে
কোন সৃত্তাষণ না করিয়া চলিয়া গেল।
অন্ধারী বিদয়া একদৃষ্টিতে পিতমের
দিকে চাহিয়া রহিলেন, পিতম দৃষ্টির
বাহির হইলে উক্ল হইতে উক্ল নামাইয়া
আপনা আপনি অস্ট্র্যুরে বলিতে লাগিলেম "চমংকার লোক নত হইয়া
গিয়াছে, এ বৃত্ত, অথচ স্বার মত ইহায়
স্থ হাথের অস্তেব রহিয়াছে, না শানি
ক্লের বয়্সেক কতই ছিল।"

এই সময় আবার শিক্ষা কিলিয়া

আদিন। ব্ৰন্ধচারীকে হিজাসা করিন "কুদ্রপক্ষীর হারা মনুষোর কোন অনিষ্ঠ হয় কি না?"

বন্ধা। কই তাকা আমি ত কিছু শুনিনাই।

পিত্য। তবে কেন অনেক দ্র হইতে একটি কুদ্র পক্ষী রাজবাটীতে আনী ক্ হইতেছে ?

্রন। সকলেই ত পাথী ভাল বাসে, রাজা ভাশ পাথী দৃর ১ইতে আনাইবেন ইহার আর আ!+১ম্য কি প

পিতম। রাজা আনাইতেছেন না।
রাজকুমারকে উপহার দিবাব নিমিত্ত
কোন বাক্তি বহু ব্যয় কবিয়া আনাইতেছে,তাহাই আমার সন্দেহ হইয়াছে।

পিতম। আছো, বলুন দেখি, লোকে ঘুঘুকে ভয় কবে কেন ? বাটীতে গুঘুচরা গালি কেন ?

ব্রন। এ সন্দেহ তোমার অনর্থক।

ব্রক্ষ। তাহা আমি বিশেষ জানি না। পিতন। কিন্তু আমি অনুভব করিতে পারি।

রেকা। কি অফুভব কর।

পিতম। কোন কোন পকী সময়ে সময়ে বিষাক্ত হয়। এক সময়ে বাঙ্গালায় হয় ত ঘূৰ্পকী বিষাক্ত হইয়াছিল;
যে. বাটাতে ঘূৰু বাস করিত সেই বাড়ীতেই মড়ক হইত, তাহাই হয় ত ঘূৰ্য অপবাদ বাঙ্গালায় অদ্যাপি আছে। যে পাথী আসিতেছে, সে পাথী বিষাক্ত নিশ্য়। আমি কলা পাথীয়ারা সাজিয়া

রাজস্বারে দাঁড়াইয়া থাকিব। কলা রাজকুমারের জন্মদিন, আমার নিমন্ত্র হইয়াছে। আপনার হইয়াছে ?

বৃদ্ধ। তোমার কে নিমন্ত্রণ করিল ?
পিত্ম। রাজাবাহাছ্র, খোদ। অনার নিমন্ত্রণ আমি গ্রহণ করি না,
বিশেষতঃ রাজবাটাতে—

ব্যা কেন ?

পিতম। কুট্ধবা^চতে অনোর নিম জণ্কগ্রাহা।

ভক্ষ। রাজাব সহিত তোমার কুটু ধিতা কিরণ ং

পিত্য। একচাবীর সহিত একাদৈতোর কুট্রিতা যেকপে, রালার সহিত দরি-দের কুট্রিতা সেইরূপ। অথাং ঘটনা-মূলক।

বৃদ্ধ। পাগলামি আরম্ভ করিলে ? কই পাগলামি করিতে গিয়া ভূমি ত কখন রুড় হও না, আজ রুড় কথা বলতে আরম্ভ করিলে কেন ?

পিত্য। অপরাধ লবেশ না, বড় গায়ের জ্বলা হইরাছে, ভাছাই বলিতেছিলাম যে আপনি বেমন শীঘ্র ব্রহ্মদৈতা হইবেন এই মূর্থ রাজা সেইরপ শীঘ্র আমার মন্ত দরিক্র হইবেন। কলা ভাষার বীজরোপন হইবে, আপনি একবার রাজবাটীতে যাবেন। রাজকুমারকে আশীর্কাদ করিতে যাবেন, আমি নিম্ত্রণ করিয়া গেলাম। আপনার দ্বারা রাজার কোন উপকার হবে না জানি, লোকের উপকার করা আপনাদের ধর্মান

বিক্ল, পরোপকার গৃছীর ধর্ম, আছা-উপ্কার উদাসীনের ধর্ম, তথাপি মন বুঝে না, কি জানি যদি কিছু হয়।

ব্রহ্ম। রাজার কি বিপদ?

পিত্য। রাদার অপেক। আমার বিপদ অধিক, কল্য বিস্তর আহার করিতে হইবে। অতথ্য একণে নিদ্রা যাই।

এই বলিয়া পিত্র কালীদহের একটি সোপান অবতরণ করিয়া শরন করিল। ব্দ্ধাচারী বলিলেন, আইস পিত্র মন্দিরে শয়ন করিবে চল্।

পিত। ঘরের ভিতর শবন বড় বি-পদ, ইট কাঠে আমার বড় ভর হয়। আছো ব্লচারীঠাকুর, বলুন দেখি মানুষের আক্রতি আব প্রকৃতি কিরুপে সংশোধন হয়, বিশেষতঃ উদ্বের ভাগটা।

ব্ৰহ্ম। কিছু আৰু বি কবিং † বোগ হয় আজ কিছু জুটে নাই।

পিতম। ঠিক বলেছেন। কিন্তু কলা পোষাইয়া লওয়া যাইবে, আন্দু আর কিছু নয়। কিন্তু গঠনের দেশে না গেলে—এই বলিয়া পিতম চুপ করিল।

অক্ষারী দেখিলেন যে পিত্য গুনা ইল, অতএব ধীরে ধীরে উঠিয়া নগরাং তিমুখে গেলেন।

>8

পরদিবস প্রাতে স্র্য্যোদয়ের পর পিত্য রাহ্যবাটীর দিকে চলিল। দুর

হইতে নহৰং শুনিয়া ভাবিল, আমার विनम्न बहेगार्ड, दम् उ उ ९ त्रव आत्रञ्ज হইয়া গিয়াছে। রাজপুরীর দিকে দৃষ্টি-পাত করিয়া দেখে সকল মন্দিরে রক্ত-পতাকা উড়িতেছে। ছাদেব উপর শত শত খেত কপোত বসিতেছে, উড়িতেছে, আবার বসিতেছে, আবার উড়িতেছে; হুৰ্ণাকিরণে যেন আকাশে হীরা ছড়াইয়া পড়িতেছে। পিতম কতকদূর অগ্রসর इटेग्रा (परिन, त्राजवादत विखत (नाक উপত্তিত হইয়াছে, নানাবিধ বাদ্যোদাম হটতেছে, নহবংখানার বিশেষ শোভা হইয়াছে, রৌণা নাগারার উপর স্থা-কিরণ পডিয়া নক্ষত্রের নাায় জ্লিতেছে। দশ বার্ট হস্তী স্থসজীভূত হইয়া माङ्गिता चारह। পিত্য আসিয়া মহান্দের ভাছাদের প্রদক্ষিণ করিতে করিতে কত কথা কহিতে লাগিল। একটর সম্থা দাড়াইয়া বলিল, ছি! মা! তুনি কেন সিঁপি পরিয়াছ ? তে।মার যে বয়স গিয়াছে। একটির পশ্চাতে গিয়া বলিল, কেন না, তোমার চক্রহার কই ? তৃতীয়কে तनिन, जुमि भनात्र (म माना भतियाह, काश कम्र नहीं भंग गाँडे कि ना। মালফারা যুবতীর লায় মাথা তুলিয়া, वुक क्लाहेबा कांडांख, পांहनती कि সাত্নরী ভাল করে (দ্যাও। পাড়াব মেরের কাছে তোমার মান शाकित्व गा। **এই भगन्न ८५ ७ मान भूख न रक्**मान

রাম্ববাটী প্রবৈশ করিছেছিলেন, লিভ-নের কথা গুনিরা হাসিতে হাসিছে মিজ্ঞাসা করিলেন, কি পিতম! পাড়ার সেয়ের কাছে হাতীর মান কিসে?

পিত্য। অলম্বারে—নচেৎ আর কিসে ? আছো। বলুন দেখি, ধনীরা হাতীকে জ্রীর ন্যায় সালায় কেন ? আর একই ঝাতীর অলকার পরায় কেন ? জ্রীর কপালে সিথি হাতীর মাথায়ও সিথি। জ্রীর পালে অলকা তিলকা, হাতীর গালেও তাহাই। শিকল, শিকলি, ঘন্টা আর কিছিণী এই প্রভেদ। আপ-দার চক্ষে হন্তিনী আর গৃহিণী কি এক রূপ বোধ হয় ?

নবকুমাব। বড় নয়, তবে গৃহিণী অন্তরের শোভা, আর হস্তিনী সদবের শোভা। বশ্তাপর উভরেই স্থান, উভয়েই বন্দিনী।

পিত্রম। ঠিক বলেছেন, শিকলের রপান্তর পারের মল। তাই ত তাই ত তাই ত । আমি চিরকাল মনে করিতাম এই অলফারের কর্থ কি ? এখন তাহা ব্রিলাম। কিন্তু এই মল ক্রমে ক্রমে সক্ষ হবে, তাহার পর ভাঙ্গিরা যাবে তভন্ধিনে হয় ত অনেক পৃশ্ব কেটে যাবে। কিন্তু মল ভাঙ্গিলে পৃক্ষের ক্র্পাশী ভূভাজিবে।

নব। এত দুরদর্শিতা যদি ভোমার আছে, তবে শোকে তোমার পাগল বলে কেন ? ैंं

लिडम। छाल, वल एमिंग, कृमि

এমত চমংকার সৃষ্টান, তথাপি লোকে তোমায় কুসস্তান, পিতৃপক্তর ধামাধরা বলে কেন ?

নৰক্ষার আর কোন উত্তর নাকরিয়া রাজবাটীতে প্রাৰেশ করিলেন।
পিত্য আবার ফিরিয়া হতীর নিকট গিয়া
মহা আহলাদে নানাকণা কহিতে লাগিল।
এমত সময় একবার চূড়াখন বাবু কর্মা-,
করে বাহিরে আমিয়া দাড়াইলেন।
পিত্যকে বিজ্ঞানা করিলেন, "হাতীর
সংস্থ কি মিষ্টালাপ হইতেছে ?"

পিত্য। দেখুন দেখি বিধাতার অবিচার, হন্তীর এই প্রকাণ্ড শরীর, এই শক্তি, কিন্তু দেখুন ইহার চক্ষু কত কুল। তাহাই বলিতেছিলাম ছি! মা! তোমার বড় ছোট নজর।

চুড়াধন। চকু ছোট হউক, হন্তী পূপিবীর দকল বস্তুই ত দেখিতে পার, কিছু ত আটক হয় না। বিশেষতঃ বেরূপ উহারা অভাবতঃ দতর্ক তাহাতে বড়চকুর আর বিশেষ প্রয়োজন নাই।

পিতম। হাজার বৃদ্ধিনান্ হউক বা সতর্ক হউক, পশ্চাতের বিপদ কিছুই ত দেখিতে পার না। তাহাই আমার 'বড় কট হয়।

্চ্ডাণন। ভা ভোমার এত কট হয় কেন্

পিতম। প্রের বিপদে আমার বড় কট হয়, নিজের বিপ্রে বরং সাহস হয়, পাগলের লক্ষণই এই,ইহা বুরিতে পারেন ত। (শেষ এক্ট ছন্তিনীকে নির্দেশ করিয়া) এই ভাত্মতীর বিপদে আমার যেমন কট, রাজার বিপদে সেইরূপ কট, আবার আপনার বিপদেও প্রায় সেই রূপ। কিন্তু এই তিনজনেরই দৃষ্টির দোব সমান। পশ্চাদৃষ্টি রাজার একেবাবে নাই, কেন না তিনি সকলকে বিশ্বাস করেন; আপনারও তাহা নাই, কেন না আপনি নিজের বুদ্ধিকে বিশ্বাস করেলে। স্নীকে বিশ্বাস করিলে যেনন বিপদ, নিজ বুদ্ধিকে বিশ্বাস করিলেও তাহাই ঘটিতে পারে। উভয়েই প্রলয়ক্ষরী, বিশেষতঃ ছ্শ্চরিত্রা হইলে। আপনার বুদ্ধি ছ্শ্চরিত্রা—ইতিপ্র্কে ছই একবাব ধরা পড়িয়াছে, আজ একেবারে সেরিয়া যাবে।

চুড়াধনবাবু অতি ভীত্রদৃষ্টিতে চাহিয়া রহিলেন, এমত সময় নবকুমাব আসিযা পশ্চাং হইতে বলিলেন, ''কে বেরিয়া যাবে হে?''

চ্ডাধন। পাগলের কথায় কান দিলে স্কল সময় কাজ চলে না, ফেব।

উভয়েই আবার পুনীপ্রবেশ করিলেন।
পিতম ছারে দাড়াইয়া ভিতরের কোলা।
হল জনতে লাগিল। পর্বতর দ্ধ ললকলোলের নারে ভাহা অতি মধুর বলিয়া
ভাহার বোধ হইতে লাগিল। পিতম
ছারে প্রবেশ করিলে, সেই কোলাহল
আরও ঘোরতর ও মনোহর হইয়া উৡিল।
কিছু প্রাঙ্গণে আর সেরুপ কোলাহল বোদ

হইল না। পিতম চমংকৃত হইয়াপরী-कार्थ आवात्र कितिल, बादत भक्त अधिक. প্রাঙ্গণে শব্দ অল, পিত্ম ইহার কারণ কিছুই বুঝিতে পারিল না। পিতমের ঘাতায়াত দেখিয়া ছারপালেরা নিষেধ করিল না। পাগলকে সকলেই শ্রহ্মা একজন পিত্যকে নিকটে ডাকিয়া আপন অদৃষ্ট গণনা করিতে পিত্ৰ মাথা নাড়িয়া বলিল. আমি বড় বাস্ত; শেষ একমৃষ্টি সিদ্ধি वाहित कदिया गकनाक किছू किছू निया **हिनिया (भन्। दात्रभात्मता (मिश्रन.** যে দেরপ উংক্ট দিদ্ধি তাহারা আব कशन हरक (मर्थ नारे। मकत्म चार्महर्गः ছইয়া পাগলাবাহাতুরের প্রশংসা করিতে লাগিল। যে অবধি পিতমের প্রতি বাজাব অনুগ্রহ হটয়াছিল, সেই অবধি পিতমেব প্রতি রাজভতাদের বড ভক্তি ক্রিয়াভিল। অনেকে পিত্মকে সাধক মনে করিত, সাধক না হইলে রাজার এত যত্ন কেন হইবে। ভক্তিছেতু দার-বানেরা পিতমকে "পাগলাবাহাছুর" निक, जना जाकर्गा निह्न शाहेशा त्म ভক্তি আরও বিশ্বিত হইল। অনেকে ভাবিল, যে কৈলাসপুরীতে যে সিদ্ধির বাবহার হয়,সিদ্ধপুরুষ কোনরপ যোগাড় করিয়া সেই সিন্ধি আনিয়াছেন।

এক বৃদ্ধ চৌবে বলিল, "ভাছা অসম্ভব নহে, যথন ভাল গিদ্ধি মহাদেবের নিমিত্ত আদে, তথন নন্দী তাহার কিছু। কিছু নিদ্ধপুরুষদের পাঠাইয়া দেন। বোধ

হয় পাগনাবাহাত্র হালফেল কিছু ন্ত-াগাদ পাইয়া থাকিবেন। একবার এক বড় আজব শটনাক্রমে আমার পিতামহ কিছু পাইয়াছিলেন। তিনি তখন ছোকরা ছिल्न--- त्रुम ट्यांत्र विभवरमत इंहेर्द, ভথন তাঁহার বিবাহ হয় নাই, বিরোধ क्रिवा वित्वकी इन । खार्थस इतिवाद किছूमिन थाकियां, शद्य किमायनाथ छा-ছিন হাত রাপিয়া একেবারে কৈলাসের -নীচে আসিয়া পৌছেন। তখন স্থা-(एव हिलग्रा शिक्त्राहित्तन। 'দুর হইতে কৈলাগ দেখিতে লাগিলেন; धकिंग्रिक क्रजांक्यन, छिनि कारन (महे अखाक्रवरनव প্ৰিতিছিলেন, এমত সমন্ন মহামানা · अर्थ अन्ति अन्ति अन्ति अन्ति विश्वा এক আশ্রুষ্টা সিংছের উপর আসওরার হয়ে বনহইতে বাহির হইলেন। সে সিংছের যে দেমাক্ তাহা আর কি বলিব। ভাহাতে আসওরার হয়ে ছোকরা -গ্ৰপতি কতই খুসি, মার গদি হইতে হেলিয়া পড়িয়া দিংহের জটা ধরিয়া होबियन , (हर्डे। कदिएड हम। সিংহ মাথা নামাইয়া চলিতেছে; মহামায়া विवादिक्त, "हि! वर्ग, मिःइरक পণ্পতি আরও ছেলিয়া লাগিবে।" পড়িরা মটা ধরিবার উদ্যোগ করিতেছেন, সিংহ ভর বেণাইবার নিষিত্ত হরার ছাভিন কৈলাসপর্বত অমনি কাঁপিয়া উঠিল: अनुशक्ति चास्नारम नाहियां উঠিলেন, কুত্র কুত্র পাছু ভিতে বাগি-

ल्म, नकन धनकात्र वाकित्रा उठिन्ध शर्वभवनी "त्रखारनद्र खँक धहिदा सूध-চুখন করিলেন। এদিকে কার্তিকের মার সঙ্গে সিংহ চড়িভে পারেন নাই বলিয়া ধ্নার গড়াগড়ি দিতেছিলেন'; ভূসী সিদ্ধি খুঁটিতেছিল উঠিতে পারিল না,আর এক-জন গিয়া মহাদেবকে ডাকিয়া আনিল 1. পিতাকে সমূৰে দেখিয়া কাৰ্তিকেয় আরও গড়াগড়ি দিতে লাগিলেন। মহাদেব পুরা চক্ষুতে চাহিতে চেপ্তা করিতে লাগি-লেন,তাহার পর ঈর্বৎ হাসিয়া বলিলেন, "बाहेन वरम, बामना इहेम्रान वृषवाहतन থাই। বুষ কেমন মণিমাণিক্যে দাজিয়া माफ़ारेबा चाहा সিংহের ত কোন चनकांत्र नारे।" এই বলিয়া বাঁড়ের শৃকের গায়ে তিশ্ল হেলাইয়া রাখিয়া আন্তরণ ঝাড়িতে লাগিলেন। ছোক্রা কাৰ্ত্তিকেয় মৃত্তিকা হইতে উঠিয়া বন্ধ-বেগে গিয়া বৃষকে এক ধান্ধা মারিলেন, ভাহার সকল কিছিণী ঝন্ঝন্ ক্রিয়া বাজিয়া উঠিল। বৃষ একটু ছেলিল না, কেবল মন্তক নত করিয়া দিল। कार्तिक्य बाँद्धित क्लान इटेट्ड होतात धूक्धूकी हिँ जिया नहेवा प्रत फिनिया দিলেন। ভাষার পর একে একে বুষের স্কল অল্ভার কেলিয়া বিতে লাগিলেন। আমার পিতামহ তাহা কুড়াইতে লাগি-অলভার ফুরাইলে কার্ত্তিকেয় দৌজিয়া গিয়া ভৃতীয় সৃত্তে বে সকল বিভিন্ন ছালা ছিল্_ন ভাছা<u>ও</u> কেলিয়া पिरनन, **পিভাবহ छारांश्व कूफा**रेवा नरे-

লেন। এই সময় হুইশভ চুয়াড় লোক গিয়া পড়িল; আমার লিভা-महित महिल महाई क्रिन। अक अक **छत्रवादित्र ८**५१रिछे शिष्ठाबर ज्ञान्तरक ভুটুক্রা করিয়া ফেলিতে লাগিলেন, भिष छे न इ इरेड महास्मर्वत्र जिन्त আসিরা মাথার পড়িল, কাছেই পিতা-मह मतिराना कार्डिरक्य खिन्त रकः লিয়া দিয়াছিলেন ভাহাই মরিলেন,নত্রা তাঁহাকে মারা কাহারও সাধ্য ना। চুরাড়েরা অবভারগুলি বইল: किन जिम्न बाद मिक्ति गाँठेती बाया-त्मत्र वांने त्रीकारेश मित्रा त्रम, अमार्भि आमारमत्र राष्ट्रिक के विभूग आहरू मिछा 'शुका इम्र। आत दामनीनात-সমর ঐ সৃত্তি আমরা ছটি ছটি খাই। त्रहे **अ**विध दक्ष आत आमारमन वाणित নিকট মোচ উচা করিয়া যাইতে পারে-ना। त्रहे अविध क शर्या क (मिर्वाडिक, (य, व्यामारणत्र श्रिष्ठीत (कह- नज़ारेक्स शंतिन नारे, (करन पूरे अकबनमाळः नज़ारेत्व मतिबारक्त । आब रनरे नमय-তিশ্লের যে খোসবু পাইয়াছিলাম, भगानि किंक रश्रेक्रभ बहिशाह ।"

धर ममम नवक्यांत ज्ञांत कृणांधनवात् अक्टक यादेरकहिरलनः; डेडरबरे गरतत क्ठकाश्म अनिवाहित्सम्, नवकुषात याथाः क्बादेश व्लिटलक् "कोहव ! बूठे वादः।" ट्रोटर जानाम, इतेवा उच्च कविन, "वामानि जाम सिन्द्रामी वहर मात्राच-। क्रिक्टर कामाह क्या की क्षेत्र, जाहार

কি পিতামহ ছিলেন না ৷ আমি তবে : কি আকাশ হইতে পড়িয়াছি ?"

औव। कृषिः धरेषां विताल छात्रातः পিভামহের বয়স তখন বিশবৎসর হইবে, আবার বলিলে, তুমি দে সময় উপস্থিত ছিলে, ত্রিশ্লের তৎকালিক সাগন্ধ তোমার সরণ আছে তাহা কিরূপে সম্ভব?

कीरव। शक्तिमाम जोश मस्त्रवा: व्यापनारमञ्ज (मर्म जाहा व्याम्हर्य) वरहे. किक वाशामित्र मिए कथा चल्छ। व्यामारणत रम्भ बीरतत्र रम्भः, रमशारमः नक्वरे मञ्जू ।

নবকুমার হাসিতে হাসিতে চলিয়া: পেলেন। চৌবে ঠাকুর তাহার অহুপ-স্থিতিতে নানা আফালন করিতে লাগি-লেন এবং বাঙ্গালির চরিত্রসম্বন্ধে নানা-थकां शामि मिट्ड मिशिस्त्रन। विमालन, आमारमत्र त्मर्म करह:--বি চাহে ত কর ছম্মণকে সাত দোস্তি। মগর না করে। কভু বারালা মে বস্তি।।।

30

রাজবাটীর প্রথমপ্রাঙ্গণে নিমন্ত্রিত বাকিরা সমবেত হইরাছেন। তাঁহাদের-মধ্যে অধিকাংশই বসিয়া কথাবাৰ্তা क्रिडिएहन, इसे वक्यन वशांत. रमधारन केल्लाहेका चारहन। षिठक अधाभरकता, यगित्रा भाषागांभः क्तिराज्यस्य ७९कारम दक्षम पुषि-गांवरे ध्वन दिन, गांवणांदवन सहामुख्यः

বড় জন্মে নাই; এই জনা শাস্ত্রালাপের
চীৎকার বড় অধিক গুনা যাইতেছিল না।
বিশেষতঃ রাজা তখন সভায় আইসেন
নাই।

আর একদিকে শতাধিক ভাট, সেরে-স্তাদার পেস্কারের ন্যায়, পাগড়ি মাথায়, বিদিয়া আপন আপন প্রাপ্তিব কথা কহিতেছিল, মধ্যে মধ্যে স্থ্র করিয়। একত্র রাজার গুণকীর্ত্তন করিতেছিল, আবার তৎক্ষণাং তাহা ছাড়িয়া আপন আপন ঘরের কথা কহিতেছিল।

রাজভৃত্যেরা নবাবী কায়দার পরিচ্ছদ
পরিয়া চারিদিকে বেড়াইভেছিল, সক
লেই নঅ, সকলেই যোড়হস্ত, সকলের
মুখেই সন্মানস্তকবাকা। এক্ষণকার
ভৃত্যেরা, স্বাধীন হইয়াছে, মাথার কার
তাহাদের পাগড়ি বাবিতে হয় না, ফোড়হস্তে আর কথা কহিতে হয় না।
তখন নাপিত পর্যান্ত পাগড়ি বাধিত,
দাড়ি ধরিবাব পূর্বে তাহারা প্রণাম
করিত।

একণে প্রভ্রাও স্বাধীন হট্যাছেন,
তাঁহারা অব্পনইচ্ছানত পরিচ্ছেদ প্রতি পারেন। অদা ধৃতি, কলা পায়জামা বা পেন্টুলন; আল বাকা দিথি,
কাল সোলা দিথি; তাহার নিমিত্ত
কাহাকেও একণে কৈফিয়ত দিতে হয়
না। আহারও ইচ্ছাত্রলপ, লোকের
ভয়ে কিছুই বর্জন করিতে হয় না।
বাবহারেও ভাহাই, লোকের ভয়ে কনাাকে স্পাত্রে দিতে হয় না। লোকের

ভয়ে দীনদশাপর হইয়া থাকিতে হয় না অথবা প্রথার ভয়ে পৈতৃক মূর্থতা। রক্ষা করিতে হয় না।

বাঙ্গালা একণে আছারে স্থাধীন, ব্যব-হারে স্থাধীন, শিক্ষায় স্থাধীন, ব্যবসায় স্থাধীন। বাঙ্গালা একণে যথার্থ স্থাধীন। এতদ্র স্থাধীনতা বিলাতের কোথাও আছে কি না তাহা সন্দেহ। ইংরেজ রাজা বলিয়া খাহারা বাঙ্গালীকে পরাধীন বলেন, তাঁহাদের স্থাধীনতাজ্ঞান আর একরপ।

পিত্য ধীরে ধীরে রাজ্পভার প্রবেশ করিল, অতি কৃষ্ঠিতভাবে একপ্রান্তে গিয়া বিসিল। অনেককল পর্যাস্ত নতশিরে থাকিয়া মস্তক তুলিল, তথম ঈষৎ হাসি হাসি মুখে ইতস্ততঃ চাহিয়া দেখিল কেহ তাহার প্রতি লক্ষ্য করে নাই। পিত্রম কতক নিশ্চিম্ভ ইইল।

কিন্তু পিত্যের মিলন বেশ, বিশেষতঃ
তাহার স্থানম্থ রাজভগিনী অনিমিক্লোচনে দেখিতেছিলেন। পিতম তাহা
কিছুই জানিতে পারে নাই। অন্তঃপুরবাগিনীরা অনেকে সভা দেখিবার নিমিত্ত
চীকের পার্ছে আসিয়া বসিয়াছিলেন,
সকলেই নিমন্ত্রিত বাক্তিদিগের দেখিতেছেন, তাহাদের কথাবার্ত্তা শুনিতেছেন
কেবল রাজভগিনী জ্যোৎস্থাবতী অনিমিক্লোচনে বৃদ্ধ পিতমের দিকে চাহিয়া
রহিয়াছেন। তাহারে একজন পরিচারিকা জিজ্ঞাসা করিল, "ঠাক্রাণি!
সমন করে কি দেখিতেছেন ই"

জ্যাৎসাবতী। স্থা দেখিতেছি।
পরি। সুম কই যে স্থা দেখিবেন ?
জ্যোৎ। স্থামি নিজিত কি স্থাগরিত
বুবিতে পারিতেছি না।

পরিচারিকা প্রশ্নের উপর প্রশ্ন করিতে লাগিল,কিন্ধ কোন উত্তর না পাইরা ক্ষান্ত • ইল; যেদিকে জ্যোৎসাবতী চাছিয়া দ্বিয়াছিলেন, পরিচারিকা তাহা অমুসরণ করিয়া দেখিল, রাজভগিনী পিতন পাগলাকে দেখিতেছেন। কোন হেতু নির্দ্দেশ করিতে না পারিয়া আরও আশ্চর্যা হইল। পিতমের রূপ আছে, না বয়্দ আছে, না অলৌকিক কিছু আছে যে তাহার প্রতি রাজভগিনীর দৃষ্টি পড়ে। জ্যোৎসাবতীর ও বয়দ হইয়াছে, বুদ্ধা বলিলেই হয়, তবে এ ব্যবহার কেন? পরিচারিকা আপনা আপনি অনেক ভাবিল, কিছুই বুরিতে পারিল না।

স্থোৎসাবতী অনেকক্ষণপরে দীর্ঘ-নিখাস ত্যাগ করিয়া পরিচারিকাকে জিজ্ঞানা করিলেন, ''মাতঙ্গিনি, তুই এই হঃখী, এই দরিজকে চিনিদ গু''

পরিচা। চিনিমা, ও পাগল। জ্যোৎস্বাবতী। এর উপর আবার পাগল হইয়াছেন ?

পরিচা। ও আঞ্চরপাগণ। পথে পথে বেড়ার, ভিক্ষা করে খায়, রাত্রে গাছতলায় পড়ে থাকে।

জ্যোৎস্বাবতী মূপে অঞ্চল দিয়া কাঁ-দিয়া উঠিলেন। আধার তৎক্ষণাং চকু মুছিয়া চারিদিকে চাহিলেন। কেহ তাহার জেলন গুনে নাই, দেখিয়া জিল্লাসা করিলেন, ''যদি তুই জানিস তবে বল দেখি, সকল কথা বল দেখি। গুনি।''

পরিচা। আমি মার ত কিছুই জানি না, ওর নাম পিতম পাগলা এই জানি। এইখানে ঘুরে বেড়ায় এই দেখেছি।

জোংসাবতী। এত স্থান পাকিতে এখানে কেন ? তাই বা কেন জিজাদা করি।

পরিচা। ও কে মা, তবে, ওরে কি চেন, ওর বাড়ী কোথায়?

জ্যোৎসা। পিতন। পিতম নাম কেন?
দাদা কি এ কাঙ্গালকে দেখেছেন,
কথন আলাপ করেছেন? তিনিও কি
পিতম বলে কথা কন?

এই সময় বালোদাম হইয়া উঠিল, রাজা আদিতেছেন বলিয়া সভাসদ্ স-কলে উঠিয়া দাড়াইল। পিতমও উঠিল। রাজা আদিয়া প্রধান প্রধান সকলের সহিত ছই একটি কপা কহিয়া আদনে উপবিষ্ট হইলেন। বিদ্বামাত্র ভাটেরা মনোহর স্বরে তবপাঠ করিতে লাগিল, এই অবকাশে রাজা ইতস্তত: অবলোকন কবিতে লাগিলেন। পিতমের প্রতি দৃষ্টি পড়িল, কিন্তু রাজা কোন সম্ভাষণ করিলেন না দেখিয়া জ্যোংলাবতী আপনা আপনি বলিতে লাগিলেন, "তবে কি আমার ভ্রান্তি? না ভা নয়; হয় ভ্রাদা চিনিতে পারেন নাই।"

পরিচারিকা বলিল, 'ঠাকুরাণি, কাপ-

করা হইলে রাছিরে ব্রাক্তবরা আশীর্বাদ করিবেন। রাজা সভার নিয়াছেন।"

बात इशानि शास्त्र १फि, त्य लिख्य दन्त

জ্যোৎয়া। ইনি: এথানে: ক্ডদিন: ্ এনেছেন ?

পরি। অনেককাল; আমাদের ও আকে-ভোর দেখিতেছি, তা আমাদের বরস ত অধিক নীয়, কিন্তু সকলেই বলে পিতম। অনেককাল অবধি এখানে আছে।

জ্যাৎ। তৃমি কখন এই কালানের সঙ্গে কথা করেছ ৪

পরি। না মা: আমার ভয় করে। ফি জানি পাগল যদি কিছু বলে।

বোং। এখানে অনেক দিন আ-ছেন ? অণ্ড আমি তাহা আনিতে পারি-নাই।

এই সময় আরু একজন পরিচারিকা আসিয়া বলিল, "রাজকুমারকে আশীর্কাদ-করিবার নিমিন্ত রাণীঠাকুরাণী আপ-নাকে ভাকিতেছেন।" জ্যোৎকারুতী ধীরে ধীরে উঠিয়া পেলেন।

রাণীমহলে এক বিকৃত শ্বাসুর রাণী
নানা অলক্ষারে সুসজ্জিত পুত্রকে নইরা
বিদ্য়া আহেন। চারিদিকে আত্মীর ক্ষানেরা বিদ্যা রাজকুষাফের গুণবাংগা করিতেছে, সন্মুখে এক স্বর্ণাত্রে ধানা দ্র্মা প্রভৃতি আশীর্মাদের উপক্রণ রহিরাছে। জ্যোৎসাইতী আদিবায়াত্র রাণী বলিলেন, "তুমি আশীর্মাদ করিতে পারিতেছেন না। সক্লের আশীর্মাদ এই সমন চ্ডাধন বাবুর স্থা নাজভাগনীকে জিলাসা করিলেন, "ও কি, আলিকার দিনে ভোমার চোধে জল পড়েছে
কেন।" রাণী একবার জ্যোৎসাবতীর
মুখপ্রতি চাহিরা দেখিলেন। রাজভাগনী
অপ্রতিভ হইরা স্বর্ণধালহন্তে ত্লিরা
রাজকুমারের দিকে অপ্রসর ইইলেন।
রাজকুমার তাহার অভিসন্ধি অম্ভব
করিরা মাধা নাড়িতে, লালিল। জ্যোৎসাবতী ধানাদ্র্র্কা হল্তে ত্লিবামাত্র শিশু
মাধা সরাইরা লইল। পুট্র মা একজনকে চুপি চুপি ব্লিলেন, ব্রের গারে
হরিন্তা দিতে গেলে বর বেমন করে,
রাজকুমার আলু ঠিক তাই করিতেছেন।

ক্ষোৎসাবতী আশীর্কাদ করিলে একে
একে সকলেই ফুল লইরা আসিলেন,
রাজকুমার তাহা দেখিরা কাঁদিতে
আরম্ভ করিলেন, কিন্তু কেহ তাঁহাকে
হাড়িল না, সকলেই মাথার ফুল দিতে
লাগিল। মাধবীলতা মার ক্রোড় হইতে
নামিয়া ক্রমে ক্রমে অপ্রসঁর হইরা রাণীর
নিক্টে আসিল,একবার অর্পাত্রের দিকে
চাহিল, আবার রাণীর মুখপ্রতি দেখিল।
তাহার পর একটা ফুল কুড়াইরা দাইরা
রাজকুমারের নিক্টাসরিয়া গেল। ক্রমে
কুল হত্তথালি তুলিয়া কুলাট ছাড়িয়া
দিল। কুলাট রাজকুমারের মাথা হি
অল স্পর্শ করিল না, শ্যারি পড়িয়া
বেল। মাধবী জাবার কেই ফুলাট

कूड़ाइना गहेना कूछ हाडसानि दूनिना রাঅকুমারের কানপর্যাত হাতথানি শৌ-हिन। त्यवात क्निष्ठ स्क्लिश निशा यांथवी कृत अञ्चलकाता प्रावकृतादवत्र চুল স্পর্শ করিল। স্পর্শ করিরা ফিরিরা দানীর মুব গ্রতি চাছিল। রাণী আর একটি ভাগ कृत शांछ निशा वनित्तन, "कत्र, ভূমিও আশীর্কার কর তোমারই আশী-कीम मंद्राब।" धरे कथाय बाक्किशिनी धक्वाद वानीव मिटक हाहित्नम, धवाम तानी किथिए अधिकिछ इटेरनन । माधवी-नठा क्नों छूनिया এक नृष्टे दम्बिट नानिन, वामहत्य इहे वकि छाहात्र পাণড়ি ছিঁড়িল, তাহার পর রাজকুমারের দিকে ভাত বাড়াইলা দিল। মাথা স্পূৰ্ণ इश्न ना विनया (महिमादक महिमा (शन। আবার হাত বাড়াইয়া দেখিল আবার मतियां भिना (भव माथां मून (मश्यां **इहेग। मार्थी आपनादक कुउँकार्या** पिथियां व्याख्यारम इतियां मात्र त्कारफ গিরা উঠিল। মাতা পুনঃ পুনঃ মুবচুখন ক্রিতে লাগিলেন।

এই সময় চূড়াধনবাবুর স্ত্রী বলিয়া উঠিলেন যে, কই রাজভগিদী এর মধ্যে আবার কোথার পেলেন। রাণী অমনি ভীত্রগৃষ্টিতে চারিদিক দেখিলেন, তাহার পর পরিচারিকাদিগকে বলিলেন ভোমরা কে, রাজকুমারকে রাজসভার লইরা বাইবে আইস। একজন তৎক্ষণাৎ আসিয়া রাজকুমারকে জোড়ে লইল, সকলে সঙ্গে সঙ্গে অস্কঃপুরের ধার পর্যান্ত চলিল, রাণী কতকদ্র গিয়া কিরিয়া আসিলেন। ক্রমে আর আর লকলেও ক্রিয়া আসিয়া য়াজসভা লেথিবার জন্য রাণীর পশ্চাৎ পশ্চাৎ সেলেন।

রাজকুমার শতান্ত হইবানাক আমণেরা
সকলেই উঠিয়া আশীর্কাদ করিতে
লাগিলেন। নহবৎ বাজিয়া উঠিল।
রাজা শ্বয়ং রোজকুমারকে ক্রোড়ে লইরা
বাহির হইলেন। য়াজহারে পিয়া দরিত দিগকে অর্থনান করিবার আদেশ করি-লেন। মহা কোলাহল হইরা উঠিল।
চারিদিকের বাল্যাদ্যম ছাড়াইয়া দরি-জের চীৎকার উঠিল।

রাজসভার প্রায় অধিকাংশ লোকেই কাশালিবিদার দেখিতে বাহির হই-लाग. (कर्ग मर्भ वांत्रजम अधार्भिक একত্রে বসিয়া কি পরামর্শ করিতে डाँशास्त्र किकिए पृद्य লাগিলেন। পিতম পাগলা একা বসিরা থাকিল। পূর্মণত প্লান ও অন্যমনর। একজন ভাট আসিয়া ভিজ্ঞাসা করিল, ভুমি त्य अधारम ? वाहित्व कोत्रानीविमात्र হইতেছে, এখানে বসিয়া কেন ঠকি-তেছ। পিতম তাহার প্রতি চাহিল. क्लान डेखन कतिम ना। क्रममानशहन नवकुमात्र आतिशा विकामा कतिरलन, " বল দেখি পিতম; বাদ্য অপেকা किरतत भक्त अधिक ?"

পিতম। ওনিতে ত পাইতেছেন।

नवक्षात । आक्रां, मतिद्वत ही एकात অপেকা কিদের শক অধিক ?

পিত্র। পুত্রশোকের।

धक्यन क्राधार्थक वलितन, "अनितन, পাগলা কি বলিতেছে। পাগলার যে জ্ঞান আছে আপনাদের তাহা নাই। আপনারা কোন বৃদ্ধিতে আমাকে গৈণ্য হুইতে বলিডেছেন। আমি অনেক সহ করিয়াছি। এখন সকল শুনিয়াছি আর কেন সহা করিব। এতকালের কষ্ট इहेट जाज मूक इहेव।"

এই সময় রাজা পুত্রকে ক্রোড়ে করিয়া ফিরিয়া আসিলেন, সঙ্গে সঙ্গে আর সক-লেও আদিল। রাজা আদিবামাত্র সেই च रेपर्या ज्यापिक ज्ञामत इरेग्रा विनन, "পুত্রকে আমায় সমর্পণ করুন, এ সন্থান আমার।"

রাজা। আপনি কি চান? व्यशायक। व्यामात्र भूछ हाई। রাজা। তোমার পুত্র কোথা?

অধ্যাপক। সে আপনার ক্রোড়ে। রামকোড়ে আমার সোনার চাঁদু,একবার দিন বুকে করি। বোধ হয় আমার কপা বুঝিতে পারিতেছেন না। আমায় পা-গল ভাবিতেছেন। আমি পাগল হই--याहिनाम मठा कथा, (कन इव ना? আমার খরে ছেলে ওয়ে। সে ছেলে আর কোগাও নাই। পীড়া

দিড়া নয়, মাজুক্রোড় হইতে ছেলে (शन। এडि (क ना भागन इस् (लाटक বলিল, ভৌতিক বাাপার; আবার কেছ বলিল, জাতহরণের কার্যা, আমি তখন द्यानि ना (य, त्रांकांत्र कार्या। এशन প্রমাণ পাইয়াছি যে আমাদের মৃতবৎদা রাণী মৃতকন্যা প্রাসব করিরা এ হতভাগার কপাল পোড়াইয়াছেন। ভাহা যাহা इहे नात इहेबा शिक्षाटक, आिंब निकल इ: न বিশ্বত হইলাম, একণে আমার হারাধন মনপ্ৰ কর্ম।

"এ কি ব্যাপার" বলিয়া রাজা পুত্রকে বুকের ভিতর করিয়া অন্দরে চলিয়া (शत्नम । अधार्शक माम माम याहेगांव উদ্যোগ করিলে, মুকলে তাঁহাকে নিরন্ত करिय्रः वृक्षाहेटङ ८० हो भारेतन । (कर ব্রাহ্মণ চীংকার করিয়া বলিতে লাগিলেন, "লকল অধর্ম অপেক্ষা পুত্রহরণ অতি গুরুতর,অতএব সাবধান সাবধান, রাজার भारभ दाका नहे।"

এই সময় দেওয়ান অগ্রসর হইয়া ব্ৰাহ্মণকে বলিলেন, "মহাশয়কে পুত্ৰ-শোকাকুর দেখিতেছি, আপনি আমার সঙ্গে আহ্বন, কে আপনার এই হর বহায় গত্ৰণা ৰাড়াইয়াছে তাহা শুনি। कित्रण खायात्व बादा आंभनात ध अग बनाह्या निवाह छाडा वनित्व हन्।"

रक्रमभंग।

সপ্তম বৎসর।

৭৭ সংখ্যা।

অভিজ্ঞানশকুন্তল।

৩। শকুন্তলা,—নাটকের চরিত্র।

আমবা দেখিয়াছি যে ছখাত অসীম नल्य अधिकारी। তাঁহার বাচ্বল দেবতাদিগের কাছেও পরিচিত। মমুসোৰ শত্ৰু, কি দেবতার শক্ৰ, তিনি भक्तारहे प्रमकाती-भक्तातहे वि-ছেতা। আমৰা আৰও দেখিবাছি, যে भ्यक व्यालमानित्यमी, अमिशिय, वह ম্চিফু। তিনি দিবারাত্রি রাজকার্যা ক্ৰিয়া ক্লান্তি অনুভব করেন না-নধ্যাক ব্বির বিশ্বদক্ষকারী কিরণবাশি ভাঁচাব কাছে তেলোহীন-অসীন'শ্ৰম্বাধ্য কাৰ্য্য হটলেও তিনি ভাষা সম্প্র কবিতে প্ৰামুপ নন-ভাঁহার অতুল দেহতত্ত গিরিচর হস্তীর দাার প্রাভূত বলবাঞ্চ । ज्याख शूक्तव श्वाम -- डीहाब (य कश्रो धानत खेलाथ कतिनाम, तम कत्री शुक्रव-জাতির শুণঃ त्रग्नीतञ्ज भक्षना (म বকমের নন। স্থীব্রের সহিত শকুভবা भिरे शिवजनिमा मानिनीनहीं जीवन গ্ৰমন্থনীয় শাভিবস্পরিগুড তপ্লা

শ্রমের তকলতায় জলসেচন কবিতে আসিতেছেন। তিনটিবালিকা দেখিতে প্রায় এক রকম—বয়সে প্রায় একরকম —এবত্রে প্রতিপালিতা—এক-মন, এক-প্রাণ, এক-সাম্মা। একটি স্থী শকুম্ভ-লাকে বলিতেছেন—

হলা শউস্তবে তত্তোবি ভাতকণত্ম ক্ষমনকব্থলা পিত্মদবা ভি তক্কেমি, জেণ ণে'মাণিকা-কৃত্ম-পবিপেলবাবি ভূমং এ-দাণং আলবাল পরিউর্বেন নিউল্লা।

নবপ্রকৃতিত মহিকাকুল আর নবপ্রকৃতিত শকুন্তলাকুল একই বন্ধ। এটিও ঘেদন স্থার ওটিও তেমনি স্থান । এটিও ঘেদন নরম, ওটিও কেননি নরম। এটিও ঘেদন নরম, ওটিও কেননি নরম। এটিও ঘেদন মধ্বতাময়, ওটিও তেমনি মধ্বতাময়। এটিও ঘেদন ক্র, ওটিও তেমনি ক্র, ক্রনিটি গোলাপ, ক্রেনিট টাপা, ক্রেনিট উপর, ক্রেনিট

खवा, कानाँ डायानरे, कानाँ शया, কোনটা কর্নিকার। এগুলির মধ্যে ক্যেনটি ভাল কোনটি মন্দ। কিন্তু সকলেরই একটি সাধারণ গুণ আছে — সকলেই পুষ্পত্রাতীয় কোমলভার অধিকাতী। সকলেই বে वृक्षकार्छ वा लडावड्ड् जननम् कविया थारक, मिटे कार्ड जनः रङ्क् अरभका কোমণ। নব প্রক্টিত মলিকাপুস্প দেই কোমলভার প্রাণ্যরূপ। (কন না ইঙা যেমৰ কোমল, তেমনি ক্ছু, তেমনি পাতলা এবং ভেম্নি ফুট্ফুটে। ভাই অনস্যা বলিভেচেন,যে মহর্ষি করু আঞা মেব তরলভাগুলিকে শক্ষণা অপেকা **छानदारमन। (कम गां, भक्छनाव ८४३**-পানি যে রকম কোমল, তাহাতে সেই फंक्नडांश्वलिट कन मिया (वकांडेटड হটলে, তাহা অনশাই শ্রমক্লিই হটয়া আর হটলও ভাট। পড়িবে। তিনটিনাতা বুকে कलमেइन क्रिय:ह শক্ষলা দেন একেবাবে ভালুগালু চইয়া পড়িলেন এবং হাঁপাইয়া উঠি:লন। শ্রস্তাংসা বভিমাত্রশেহিতভলৌ ব ছু

ঘটে ংকেপনা

দ্দাপি স্তনপেবেখুং জনগ্রতি খাসঃ প্রসাণাধিকঃ।

বঙ্কং কণ্শিরীয়রে থি বদনে ঘর্মান্ত্রা জলকং

বন্ধে অংসিনি চৈকহ্তখমিতাং পর্যাকুলা মুর্গ্ধশাঃ॥

কুদ্র কর্নসের ভাবে শকুস্তলার কুদ্র কার্কণতা এলাইয়া পড়িল; প্রমাধিকা

বশতঃ তাঁহার ধননীপ্রবাহিতশোণিত-লোড খরতর হইয়া তঃহার কুন্ত্র লোহিত-বর্ণ করপদাটীকে অধিকতর 👣।হিতবর্ণ করিয়া তুলিল; তাঁছার নিঃশ্বাস ঘনঘন পড়িতে वाशिन, এবং নবগৌবলোরত বক ঝাটকাবিক্ষিপ্তস্ৰে:ভিষিনীর ন্যায় ভরঙ্গিত হটয়া উঠিল; তাঁহার হৃকে।সল মুগণানি স্বেদনিন্তে পরিপূর্ণ ইইল, এবং সেই • সেদবিকুতে উ.হার কর্বের শিরীষ পূল্প-প্রতি হাতি হকোমলভাবে জড়াইয়া গেল; তাঁহার কেশগুচ্ছ পদিয়া পড়িল; তাহাব অলকাগুলি তাহার হত্তের আব-রোধ না মানিয়া ভাঙ্গিয়া ভাঙ্গিয়া প-ড়িতে লাগিল। সামান্য প্রমে শকুন্তলা-পুপাটী যেন বৃদ্যালিত হটয়া পড়িল। যেন কুদ্ৰ লজ্জাৰতী লভাটী অঙ্গুলি-স্পর্শাস্থ্র করিছে ন। করিছেই সন্ধূচিত इटेब्रा (शल! এই जनारे इञ्च द विदा-ছিলেন যে শক্সলাকে তপশ্চৰ্য য় নিযুক্ত করিয়া মহর্ষি কণু স্থকে:মল নীলোৎপণ-शर्द्धाद (कामल द्य शार्त्व दक्षा क्रिन द्य भगै वृक्त छ्वन द्वा वामाधानाधान अ-য়াস পাইতেছেন।

हेमः किलार्गाषप्रताहरः बशुः छशःक्रमः भागतिकृः य हेष्ट्ठि।

क्षतः म गीरनार्शनशक्षधारम। भर्मीनगर क्षेत्रकृष्मित्रतमा क ॥

আমরা সকলেই পদ্মের পাতা দেখি-রাছি—নীলজলে বড় বড় পল্পত্র ভাষিতে দেখিয়াছি। জল সে পাতার প্রাণ-সে পাতা যেন কি মুক্ষু পলীয়

শক্তিতে বাহির হই রা পড়িয়াছে। যেন कि तकरम जन धक है चन इडे हा भाडा इंडेब्रा शिवाडि । সে পাতা कि কোমল। কোমলভাষ্টী শকুস্থলা নগৰারা সেই পাতাতেই জকর কাটিয়াছিলেন। সে পাতার নধের আঘাত সহা হয় না। । নথম্পর্শে সে পাডা যেন গলিয়া যায়। আব্রার ৯নেই বড় পাডাটকে আন্তে তাত্তে মৃণাণ হইতে ছিড়িয়া তোল, পাতাটি অসনি যেন ভাঙ্গিয়া পড়িবে। সে পাতার আবার ধার কি গা ? যদি কোমণভার ধার থাকে তবে দে পাভার ধার সেই ধার। যদি কোমশতার কো-মলতা পাকে, তবে সে কোমলতার নাম 'নীবোৎপণপত্তের ধার।' শকুন্তলার কোমলভা সেই রকম কোনলভা। যদি সে কোমলভার অপেকা বেশী কোম-নতা অগতে থাকে, ভবে ভাহা সমুষ্টোর ৰনগভীত। এখন সেই কোমণতার সহিত ছ্মান্ডের বলিষ্ঠতার তুলনা করিয়া (भिर्म यथार्थ हे त्या इहरत त्य, इन्नरु ए कित मधीकुक खरा कामन नीरनार-প্ৰপত্তের কথা বলিয়াছেন, স্বয়ং গুম্ম उरे (मरे भरी तृक जवर हाहार मक् उलाहे সেই নীলোৎপলপত্ত। অগতে শারীরিক श्रेन এবং भाशीतिक वनमत्रक्ष शुक्रम प्ताः जीकाडिक म्रांश यणार्थे कड অভেদ। কর্মের মূল শারীরিক বল এবং (महे बना बगटबत कर्याटकवा भूतः वत — तम्गीत नत्। সামछ सन्दर्गन्यस् कांड्या भक्छनात्क (प्रतिमा (क विलंद

যে ইনি পৃথিবীর ভয়ন্বর কর্মকেত্রে ভার পাইবার যোগা ৮

किंद्र वलशैना इहेशाउ भक्ष्यला व-লিষ্ঠা ; কোমল হইয়াও শকুন্তলা কঠিনা.; শ্ৰমকাতর। হইরাও শকুওলা কঠসহিষ্ণু। আমর। দেখিয়াছি যে, একটি ক্ষুদ্র কল্স বহন করিতে হইলে শকুম্বলা ভারাক্রাম্ভা (वास करद्रम; आमता (मिश्राष्ट्रि (य এक छि कुन कनम इडेरड इडे छि कि हाति छि वृक्षमृत्व बनामहन कविशा (वड़ाहेलाई শকুস্থনা আলুগালু হইয়া পড়েন। কিন্তু कामनक्तरम वियम शः थं जात धात्र कति-য়াও শকুত্বা স্থীর্ণ পথ হাঁটতে প্রাশ্তি অমুভব করেন না। হিমালয় পর্বতের উপতাকান্বিত মহর্ষি করেব হইতে হস্তিত্রাপুর বড় কমদূর নয়। দেই **দৃরপণ অরণো পরিপূর্ণ। অরণাপণে** গ্ৰনাগ্ৰন করা বিষয় ক্ট্ৰসাধ্য। যে-भारत अद्रेश नाहे, त्रथारत शह छत्रवि। ভারতের উত্তর-পশ্চিমপ্রদেশে রবিকির্ন নিতামই অসহনীয়। আশ্রম হইতে যাত্রাকালৈ শকুন্তলার বিলম্ব দেখিরা শাঙ্গরিব কল্পে বলিতেছেন---

ভগবন্ দ্বমধিরতঃ সবিতা ভত্রয়াত্র-

ভৰতীম।

সেই প্রির আশ্রমণদ পরিত্যাগ করিয়া শোকবিহ্বলা শকুস্থলা সেই প্রচণ্ড রবি-কিরণে হণ্ডিনাপুরাভিমুখে যাত্রা করিলেন। পথিমধ্যে কতই কষ্ট গছ করিলেন; করিয়া মধ্যাক্তালো ত্মন্তের রাজভবনে উপস্থিত হুইলেন। উপস্থিত হুইয়াই ত্মুক্তের বাকাবাণ হৃদয়ে ধারণ করিতে লাগিলেন। কিন্তু তাঁহার দেহে ক্লান্তির চিহ্নমাত্র নাই—পথখনের প্রান্তিবিহ্রণতা
নাই—আতপতাপিতার আরক্তিমতা নাই
—দ্রপথগমনের স্বেদবিন্দ্মাত্র নাই।
ভখন তাঁহাকে দেখিয়া হৃদ্মন্ত কেবল
এই মাত্র বলিলেন—

কেয়মব গুঠনবতী নাতিপরি ফুট্শরীর-লাৰণা।

মধ্যে তপোধনানাং কিসলয়মিব পাঞ্

পত্রাণাম ॥

আবার শকুন্তলা তথন মাভূপদে আরোহণোদাতা ! রমণি ! তুমি কোমল-তমা হইয়াও কঠিনতমা; তুমি বলহীনা হইয়াও বলিষ্ঠা; তুমি শ্রমকাতরা হই-য়াও বিষম কটুস্হিফু! তুমিই স্ষ্টের প্রকৃত রহস্তা একদিন জনকনদিনীও এই অন্তত রহস্ত দেখাইয়াছিলেন। নির্বাসনাজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়া রাম সীতার निकडे निया दलितन-" अत्या अद्रत्। বিস্তর ক্লেশ সহা করিতে হয়। তথায় शिविक मात-विश्वी मि इ निवस् व गर्छन ক্রিতেছে, উহা নির্ব্ত কলের প্রনশন্দ মিশ্রিত হইয়া কর্ণকুহব ব্ধির করিয়া তুলে। হুদান্ত হিংঅগত্ত সকল উন্মত হইয়া নিভায়ে সর্বাত বিচরণ করিতেছে, তাহার। সেই कनगृना প্রদেশে আমা-निशंदक प्रिथिताष्ट्रे विगाम कतिए आ-निट्द। नदीमकन नक्रकृष्ठीवनश्कृत,

নিতাত পকিল, উত্মন্ত মাতকেরাও সহজে পার হইতে পারে না। গ্রন্থ অন-বরত কুরুটরব শতিপোচর হয় এবং উহা कर्षे काकीर्ग छ गठाकारन चाळ्य হইয়া আছে, পানীয় অনও সর্বত্ত স্বভ नट्ट। मम्छ पिन भर्याष्ट्रेत्व श्रद दा-ত্রিতে বুক্ষের গলিতপত্রে শ্যা প্রস্তুত করিয়া ক্লান্তদেহে শরন এবং মিতাহারী হইয়া ভোজনকালে স্বয়ং পতিত কলে ক্ষুধাশান্তি করিতে হয়। তথার বায় गडडरे अवनरवर्ग विरुद्ध, कूम ६ काम बाटमानिष्ठ धवः कणेक्यूरक्त माथा मकन कन्त्रिक इहेटकहा। त्रज्ञ-নীতে খোরতর অন্ধবার, কুধার উদ্রেক সর্কাশ হয়, আশকাও বিস্তর। তন্মধ্যে विविधाकांत वहमःशा महीस्थ जात्ह. তাহাবা পথে সদর্পে ভ্রমণ করিতেছে। স্রোতের নাায় বক্রগতি নদী-গর্ভত **छेद्रश्रिका अग्रनश्रम व्यवद्वाध कविया द्र**ि ষাছে। বুল্চিক কীট এবং পত্তপ ও দংশ মশকের যদ্রণা সর্কাদাই ভোগ ক-রিতে হয়, কায়কেশও বিস্তর, এই कातराष्ट्रे कहिएछि अत्रगा स्ररभत गरह। निवातन कति, जुनि छथात्र गारे 9 ना । বনবাদ ভোমায় সাজিবে না (১)।" किन्न वनदान छांशांक मानियाहिन कि ना छाडा मकलाहे सार्मन । है जिहारभव व्यागता এই तहमा मिथिया शांकि। विश्न-গ্রন্থ শিশুসম্ভানের প্রাণ বাঁচাইবার জন্য

⁽১) হেমচন্দ্র— অনোধ্যাকাও, ১৫৩--৫৪ পৃষ্ঠা। স্থানে স্থানে ত্ই এক পংক্তি ছাড়িয়া দিলাম।

कानी जातक ममत्य भर्त छानि जेनज्यन করিয়াছেন, অधির।শি তুচ্ছ করিয়াছেন, জলরাশি ভেদ করিয়াছেন। ভারতে व्यगीवीवच श्रवंगारे मिश्रिक शाख्या यात्र। अस्राम्भमा (कामनात्री वीत-प्रतर्भ भूकरमाख्य याहेरज्ञाह्य, भवा-कामी याहेट्ड एइन, कामज ११-देवनानाथ याहे-'তেছেন। এ রহস্যের অর্থ কি ? আমা-त्तृत त्वांश इश हैशत वर्थ धहे- भूक्स, मतीरतत वरन विनिष्ठं; तमनी, समरमत वरन পুরুষ স্কলিট কর্মাক্ষম; বলিষ্ঠা। त्रमणी (कवन क्रमरस्त्र (वर्ष (वर्षवरी इन्टेश क्यांक्य। भूक्ष मर्खकान्हे অগতের কর্মক্ষেত্রে বিচরণ করেন: রমণী কদাচিৎ কখন জগতের কর্মাকেতে দেখা দেন। কর্মালিতা পুরুষের স্বাভা-निक धर्मा, तमनीत कातकामारलक धर्म। কিন্তু রমণী যথন সেই অবভায় পতিত হন, তখন তাঁহাতে এবং পুরুষেতে কোন প্রভেদ থাকে না—তথন কোমলভ্য নীলোৎপলপত্ত কঠিনতম শ্মীবুক ছইয়া एं है। श्रीकां डि यह चाम्हर्ग देनभरी তোর আধার বলিয়া জগতের প্রধান वहमागरक्षा भारतिश्विक ।

যে হৃদয়ের গুণে শকুষ্ণলা বলিঠা,
আবার সেই হৃদয়ের গুণেই শকুষ্ণলা
বলহীনা। যে হৃদয়ের গুণে শকুষ্ণলা
কার্যা করিছে সক্ষম, আবার সেই হৃদ
য়ের গুণেই শকুষ্ণলা কার্যা করিছে
অক্ষম। রমণীহৃদয়ের এই আশ্চর্যা
রহন্য মহাক্রি কালিদাস যে প্রকারে

(क्याहेबाडिन कशरखत चात्र कान कति (म थकारत (क्थान नाहे। इश्रष्ठ ताक-थानौरक श्राह्माशमन कत्रियारहन। कत्रियाः তাঁহার স্বাভাবিক রীতানুসারে রাজকার্য্যে गरनानिरवणं कतिशां हिन्दे। किंद्र लेक्टला সকল কর্ম ভূলিয়া—প্রিয়তমা প্রিয়-ষদাকে ভূলিয়া-প্রিয়ত্মা অনপ্রাকে ভুলিয়া—আশ্রমের লতা বুগগুলিকে ভূলিয়া—কেবল হুমান্তকে ভাবিতেছেন। কুদ্র পর্ণকুটারের ভিতর বামকরতলে গও স্থাপন করিয়া প্রস্তরনির্দ্মিত প্রতিমৃতিব ন্যায় নিপ্সনভাবে চুত্মস্তকে ভাবিতেছেন। এমন সময়ে প্রজ্জনিত ছতাশনপ্রতিম মহর্ষি হ্বাসা আসিয়া ভয়ত্বর স্বরে 'অয়মহং ভো' বলিয়া দেই ক্ষুদ্র কুটার-স্থিত। কুল বালিকার সন্মুখে আভিথা-व्याची इहेशा नांडाहेलन। त्महे खरहत স্ববে সমস্ত আশ্রমারণা বেন কাপিয়া উঠিল। অদূরে প্রেয়দ্বদা এবং অনস্থা শক্ষণাৰ ইষ্টদেৰতার পূজার নিমিত্ত পুষ্ণাচয়ন করিতেছিলেন, তাঁহারা যেন সিহরিরা উঠিলেন। কিন্তু হুমন্থনিমগা প্রস্তিবং নিশালা শকুষ্ণা নিপাদ-ভাবেই রহিলেন। তথন তিনি তাঁহাতে নাই; তখন তাঁহার কাছে বাহাজগং शनस्मिश्वः; मानवाञ्चा (यगन शहमाञ्चास नीन इस, टब्मिन अपस्मर्यय मेक्छना তখন হু बंद्ध कामर ब भी ग। ज थन य मि এই পৃথিবী-গ্রহ-নক্ষত্রময় এক্ষাও ঘোররবৈ ছিন্নভিন্ন হইয়া মহাপ্রলমে নিমগ্ন হইত, তাহা इरेटन द्वास्त्रभी मकूखना मिरे

সঙ্গে সংগ্ন মহা প্রলক্ষে মিলাইরা ষাইভেন, জানিতেও পারিতেন না যে কি ছইল! বজ্ঞগন্তীর স্বরে জ্র্প্র:সা শাপ দিলেন— আঃ কণমতিথিং মাং পরিভবসি।
.বিচিন্তরন্তী য মননামানসা
ভপোনিধিং বেৎসি ন মা মুপন্থিতম্।
স্মরিষাতি তাং ন স বোধিতোহপি সন্
ক্থাং প্রেমতঃ প্রেগমং কুতামিব।।

এখনও সংজ্ঞা নাই ! জীবিতা শকুষ্কৰা এখনও জীবনহীন! ত:হার জীবন,জ্ঞান, (पर, देवहिकमंकि-- मकनरे अथन छै। हात चाउनच्यार्भ क्षारा विनुष्ठ। (म क्षमत्र यथार्थरे व्यउनम्भर्ग। প্রেমানলসন্তা-পিতা শকুম্বলা ম্পন প্রথম হৃত্যম্ভের কথা বলেন, তখন প্রিয়স্দা বলিয়াছি-লেন যে বেগবতী স্রোত্মিনী মহাসাগ-রাভিমুখেই ছুটিয়া পাচক—কুকোমল माधवीनजा हृ उत्करकरे बड़ारेया छे छै। ছ্মন্ত নানাগুণে গুলবান্— ঠাছার চরি-ত্তের বিস্তার অনস্ত সমুদ্রের নাায় অসীম चलिरलहे श्रा भक्षनाहित्राव विश्वात नारे। छांशांट इश्रास्त्र वाहवर्त नारे, भक्षदेनभूगा नाहे, मृत्रशामका नाहे, পাণ্ডিতা नाहे, डेक विठातमकि नाहे, অপরিমেয় কর্মশীলভা নাই, অপরিমেয় अम्भीनडा नारे, अमहित्मत्र कार्यानकडा नाहे। छाहात शाकिवात मर्शा अक काबत चाहि। किस मा जनस्त्रत गडीतका व्यव অনন্ত সমুদ্রের গভীরতা সমান। পুরুষ, **চরিত্রবিস্তারে সমুদ্রবৎ-রমণী, হাণর**-গভীরভার সমুদ্রবং। পুরুষ ভালবাসার

সামগ্রীকে রমণীর মত তত আত্মগত করিতে পারে না--তত আপনাতে মিশা-ইয়া লইভে পারে না—তত আছুবিশ্বত इरेबा, उड सगिवाड हरेबा छ।विट्ड পারে না। পুরুষ-হাদয়ের গভীরতা কম। সেই জন্ম পুরুষ বিরহে অন্তির হইয়া পড়ে। রমণীছদয়ের গভীরতা অপরি-(मझ। (महे अना त्रमी वित्र इत्य-कर्तक, क्रमग्रमश्री इटेशा थारक। इश्रस्टक ভাবিতে ভাবিতে শকুত্বলা একেবাংর बीवनहीन अञ्जरमृत्तिं नाात म्लनहीना। कि स अनुतीय ' পूनर्मर्नगायत भक् खनारक ভাবিতে ভাবিতে ত্মম্ব অধীর, অন্থির, व्यत्नको। शासीगांडहे, डेनाट्डन गौन প্রামন্ত। শকুস্থলার হাদর অনন্তাধার - यडहे (कब छू: श इडेक ना (म झनग्रहक ছाপारेबा উঠিबा (पर वा छानक मध्यूक করিতে পারে না, কারণ ছদয়ের তুলনায় अकुछनात (मह এवः कान नाहे विनातहे হয়। হ্মতের হানর পরিমিতাধার;---कारना अक्ट्रे (वभी इटेटनरे दम समग्रत ছাডাইয়া উঠিয়া শরীরকে অন্তির করিয়া जुहन, खानक विश्वन कतिया करन्। क्रमरबंद स्माटक त्रमणी चाक्रकगर जूनिया यान, शुक्रव जुलिया यान ना। भक्षना (महे खब्दद "अवगरः टा" क्विट नाहित्तन ना-त्यहे खब्दत्रभाग खनिए भारेतन ना। किस इश्वष्ठ विस्त्त-श्वष्ठ, विक्तन-सान, अवः मृद्धि छ शात्र इहेमां 8 विभावत छय। खंबव अवन्याळ वी विकारम केंद्रिया काकारेटलन। क्षत्रकटक (भाव-

বিহ্বল দেখিয়া তাঁহাকে উত্তেজিত করিবার নিমিত্ত মাতলি মাধবাকে ভরপ্রদর্শন
করিয়াছিলেন। ছল্লন্ত মাতলিকে জিজ্ঞানা করিলেন—'মাধবাং প্রতি ভবতা
কিমেশং প্রাযুক্তম্।' সাতলি উত্তর
করিলেন—

'ভদিপ কপাতে কিঞ্জিমিন্তাদিপি

গন্ধুসভালানায়্য়ান্ ময়া বিক্তো দৃষ্টঃ

পশ্চাং কোপয়িতুমায়য়য়ঃ তথা কতবা
মায়ি।'

মাতলি সিদ্ধকাম ২ইলেন। শোক-শিহ্বল গুলান্তের কাছে বাহাজগৎ প্রবল इहेत। निव्यवस्था इच्चरखन (भाक-বিহরণতা কর্মাশীলভায় পরিণত হইল। কিন্তু ক্রমমুগ্ধা শকুরলা ভয়কর তুর্বাসা-সত্ত্রেও জ্বরমুগ্ধাই রহিলেন। বাহাজগৎ বিলুপুট রহিল। হৃদয়মগ্রার িংশ্চেষ্টৰা নিশ্চেষ্টভাই রহিল। ल्मर्यंत राष्ट्र वमनी (हहानीला (महे अपराज खरवर दम्बी निरम्छे। इनग्रे ব্যণাচরিত্রের প্রাণান ভিত্তি এবং প্রধান সদয়ের গুণেই স্কীল,তি श्वमकाछि ३३८७ छित्र। कालिनः स्मत শকুম্বলা সেই রমণীহাদয়রছভের উজ্জ্ল-ত্য প্রতিমা। এবং সেই প্রতিমা পুরুষ চরিত্রের ভূলনার উজ্জলতম অংশেকা এমন জুলনামূলক নারীস্কার-প্রতিমা জগতের স্বার কে.স নাটকে ा है।

अग्न जिल्लामा अहे, खित्रनस्त नित्रह त्रमीकृत्य अड सारभ स्कन, भूक्तस्तरत এত লাগে না কেন ? চুখ্য ত পকুতঃ-লাকে রাখিয়া রাজধানীতে গিয়া রাজ-कार्या कदिए वाशित्वन । किन्दु कुन्नस्थरक ছাড়িয়া শকুন্তলা এমন হইলেন কেন। **অ:**মাদের বোধ হয় ইহার কারণ এই,— পুক্ষ প্রিরবস্তকে শুধু হাদয়ে রাখিয়াই অনেকপরিমারে সহট: রুমণী তা ময়। রমণী প্রিয়বস্তকে চোকে চোকে বাখিতে চায়। পুরুষ প্রিয়বস্তুর কল্লনতে সহটু: রস্ণী খোদ প্রিয়বস্ত বাভিরেকে সহটে নন। ১৮৭৯ সালের সেপ্টেম্বর মাসের Nineteenth Century তে অধাপক নেশক A Dialogue on Human Happiness নামক একটি প্রবন্ধ লেখেন। এक है शुक्र चात्र अक ही त्रानी करवान-কথন করিতেছেন। র্মণী সতেজে विषयाद्वन—" Heavens! do you know so little as to think that were a man in love really, he could endure to be absent, without necessity, a day from the woman he was in love with? No: he is never happy when away from সম্ভাবিত পুরুষ ইহার অর্থ বুঝিতে পারিলেন না, এবং বলিলেন বে हेशादक यनि अनम्र नदन उत्त (गन अन्यम সহিত আমার কোন সম্বর বা পাকে। রমণীহাদম শুধু হৃদয়ে ভার করিয়া পা-किट्ड शारत गा। तम्भी श्रमत्यत् वस्तरक সর্বাদ ই চোকের উপর রাখিতে চাছেন। ८म्डे निविष्ठ यथन अपरवंद वज्र कार्ट्य

অন্তরালে থাকে, তথন রমণী আপন হাদয়ের ভিতর লুকাইয়া কলনার বলে অপ্রভাককে প্রভাক করিয়া তুলেন, এবং সেই কল্পাসস্থত বস্তুতে প্রকৃত বস্তু বোধে মিশাইয়া গ'কেন। বমণী বাহা অব-লম্বন বাতিবেকে খাকিতে পারেন না। भुक्राव मन भारतक भारतमार्ग रमहे मन-সাপেকা; কিন্তু রমণীজদয় বাহাজগং-সাপেক। এবং সেই নিমিত্তই বাহা-জগতের অভাবে রমণী তাঁহার আশচ্যা ফদয়াভান্তরে আশ্র্যাত্ম বাহাত্রগতের সৃষ্টি করিয়া পাকেন। সে আশ্চর্যা বংহা-জগতের কাছে গ্রাকৃত বাহালগৎ অস্তিত্ব-থীন। পুরুষজাতির মধ্যে উচ্চশ্রেণীর কবি ভিন্ন আর কেহ সেরকম আশ্চর্যা বাহাজগৎ সৃষ্টি করিতে পারে না। রম্ণী-মণ্ডলে সকলেই উচ্চশ্রেণীর কবি। দার্শ-নিকেরা বলিয়া থাকেন এবং ইতিহাসেও एमथा यांग (ग (गंथारिन अन्द्रम **अ**ड)क জগং, দেখানে বাহাজগং বিলুপ্ত। যে বোগীর মনে পরমান্তা প্রত্যক্ষ, সে বোগীর নয়নে বংহতগং অপ্রতাক— অভিনহীন। যে শকুতলার চক্ষে সলু থস্ বাহাজগং অপ্রতাক, সেই শ্কুস্∘ু লার হৃদয়ে দূববর্তী হুমায় প্রতাক। রমণী প্রভাকপ্রিয়, প্রভাকার্বাগী, প্রভাকাপেকী এবং সেই জনা শেকে এবং বিরছে রমণী এত অন্তর্শীনভাপিয়। কালিদাস ভিন্ন আর কোন কবি এই নিগুড়তত্ব ব্ঝান নাই। পর্বকুটীরে ছুল্ল छ-निमधा भक्षना,--अपि छे देव कित

প্রতিভার অক্ষয়, অনম্ভমহিমাপূর্ণ, উৎকৃষ্টভম কীর্ত্তি। এ কবি যাহাদের,
ভাহারা যথার্থই জগতেঁ স্পদ্ধাক্ষ।

আমরা শকুন্তলার যে মূর্ত্তিটা দেখি-লাম সেটি স্ত্ৰীলাতির অন্তৰীন মৃতি। নে মূর্ত্তিতে স্ত্রীকাতির অন্তিত্ব সম্পূর্ণরূপে অন্তর্নিহিত। সেমূর্ত্তি দেখিলে ভণ্ডিত। হইতে হয়, বিশ্বিত হইতে হয়, ভ্ৰীত হইতে হয়। এই আশ্চাগ্য অন্তলীনতা ভাবপ্রহার ফল। **এত ভাবপ্র**থরতা (Intensity of feeling) আমরা ব্ঝিয়া উঠিতে পারি না। এত ভাবপ্রথা পূর্ণ অন্তিত্ব আমাদিগকে প্রহেণিকা বলিয়া বোধ হয়। আমাদের বোধ হয যে, যে মৃত্র্কাণের জন্য বাহাজগং দেখিয়াছে এবং বাহাজগতে বাস করি-য়াছে দে কখন এত অন্তর্নিম্ম হইতে পারে না, এত অন্তর্লীনতাপ্রাপ্ত হয় না। এই ভাবপ্রভাপূর্ণ অন্তলীমতা দেখিয়া আনরা ভীত হই। আনাদের বোধ হয় যে যাহার এত ভাবপ্রথরতা সে যদি শকুন্তলার ন্যায় ভাল হয়,তবে পৃথিবীতে তাহার অপেক। ভাল कि নিদ আর কিছুই इहेट भारत ना, किन्द्र यहि स्वाभी गत-চিত্রিত মেকবেপপত্নীর ন্যায় মন হয়, তবে পৃথিবীতে তাহার অংশেকা মন জিনিস আর কিছুই হইতে পারে না। এবং জগতের ইতিহাসেও দেখা গার যে, পুরুষ যতই ভাল হউক না, ভাল স্ত্রীর মতন ভাল হইতে পারে না—এবং गड्ड गम इडेक ना, मन जीत महन

মন হইতে পারে না। এই ভাবপ্রথ রভাপূর্ণ অন্তলীনতা দেশিয়া- আমরা বিক্সিত ও হই। আমাদের বেংধ হয় বেন একখানা প্রকাশু হিমশিলাগণ্ড অনস্থকাল গিরিকন্দরাব্দ হহিরাছে---কখন গলে নাই, কখন গলিতে পারি-(वड ना। किन्द तमनीकामग्र तक्षामग्र। • आवक्ष (हमिनाथक त्यमन भारत, आवक्ष বমণীসদয়ও তেমনি গলে। এবং হিম-শিলা গলিয়া যেমন তল, লতা, প্রস্তর मकल है खाना है या लहे या या या उमगी का प्र शनित्व ९ उमिन जी, शूक्स, वानक, तुषः. (कामलक्षत्रं, क्षित्रक्षत्रं मकल्क्ट्रे फातालेश लहेशायात्र। कथाहित्रका कि না, অভিজ্ঞানশকুম্বলের বিদায় দুশাটি পড়িলেই বুঝিতে পারা যায়। সেদুশোর श्रांध (कामन, अनशाशश्राजी, कनिष्ठामस, মানবপ্রকৃতিপ্রক,শক জিনিস আমবা कात काथा अ (मिथा म.हे। कियम भी षञ्चाम कतिया मिलाम:-

গৌভমী। বংগে! খাদনবং খেহপূর্ণ ওপোবনদেবতারা তোমার গমনে লফু-মতি কবিতেছেন। ইছ:নিগকে প্রথান কর।

শকুষ্ঠলা। (প্রণায় পূর্বক করেন গৈদ গিয়া জনাজিকে) সুখি প্রিয়ন্থদে, আমি যদিও আর্থ্যপুত্রকে দেখিবার নিমিত্র উৎকৃত্রিত ইইয়াভি, তথাপি আন্ত্রমপরিতারে আ্লার পা উঠিতেতে না। প্রিয়ন্থদা। তুমিই যে কেবল তথো-বন্পরিভাগে কাত্র ইইয়াছ তাহা

নছে, তপোবনও তোমার বিরহকাল উপস্থিত দেখিয়া কাতর হইতেছে। মুগদিগের মুখের কুশাগ্রাদ পড়িয়া ঘাই-তেচে, ময়ুরেয়া নৃত্য পরিত্যাগ ক্রি-য়াচ্ছ এবং লতাসকল পালুপত্ত মোচন-চহলে সেন অঞ্পাত ক্রিতেছে।

শকু। (শারণ করিরা) পিতঃ! লতা-ভগিনী বনজ্যোৎসাকে সম্ভাষণ করি।

বণু। জানি সেই লভাব উপর তোমাব মোদরমেহ আছে। এই দো দকিবপার্যে আছে।

শক্। বনজ্যোৎরে ! তুনি সহকারের সহিত সনাগত হইলেও দ্রপ্রারিত শাখাবাহ হারা আমাকে প্রতালিঙ্গন কর। আনি আজে অবধি তোমাকে হাড়িয়া যাইতেছি।

ক: আমি তোমার জন্য অর্থে নেরপ ইচ্ছা করিয়ছিলাম তুমি স্বপ্তবে সেই আয়ুনদৃশ সামী পাইয়াছ। আর এই নবস্থিকা সহকারবুক্কের সহিত্ত মিলয়াছে। এক্ষণে তোমার ও ইহার ডনা ,আমার ত্র্তাবনা দ্র হইয়াছে। এইজান দিয়া চল।

শকু। (সধীৰয়ের প্রতি) স্থি, জাসি এই লঙঃটিকে ভোনাদের জ্জনের হাজে সঁশিয়া দিবাস।

স্থী। আমাদিগকে কংহার হাতে মঁপিলে ১

ক। অনস্থায় কাঁপিও না, তোম-রাই ভ এখন শকুতালাকে প্রাণাধ দিবে। প্রকলেই সংই(তেচে) শকু। এই উটজচারিণী গর্ভগছবা মূগী মূণন ভালয় ভালর প্রান্ত ইংব ভণন ভোমরা আমার নিকট লোক পাঠাইও। সে গিরা আমাকে এই প্রিয়স্থাদ দিবে।

ক। না, আমবা ইছা ভূলিব না।
শকু। (গতিব্যাঘাত দেখিয়া) কে
আমাব বস্তু আটক ইতেছে १ (দেখিবার গিমিত্ত মুণ ফিবাইল)

ক। বংসে! বাহার মুখ কুশাগ্রারার।
বিদ্ধ হইলে তুমি কাতশোধক ইঙ্গুদীতৈলদেক কবিতে, তুমি যাহাকে শ্রামাক
ধানামুষ্ট দিয়া পোধন করিযাত,সেই তোমার কতকপুত্র মুগ তেসেবে অনুসংশ
করিতেতে।

শকু। বংস! আনি ভোমানিগকে
ভাজিয়া ঘাইতেচি, তুমি কেন আনার
অনুসবণ কব। ভোমাব জননী ভোমায়
প্রাসন করিয়াই মরিয়া যায়, তুমি সেই
জননীবাতীত আমাব যাত্রে এত বডট
ভইয়াছ। এখন আমি অবার চলিলাম।
এখন পিতাই ভোমার ভাবনা ভারিবেন।
যাহ ফের। (বোদন কবিতে করিতে
প্রাস্থন)

ক। বংশ তোমার উরত্পক্ষর্ক নেত্রেরের দর্শনবাংশাব নিরেধ করি-তেছে। এই ভূমিভাগ উরতানত। বাংশাবরোধ হেডুইহা সমাক্-লক্ষিত না হওয়াতে তে:মার পদস্থান ইইডেছে।

শার্পরিশ। ভগতন্তনা বার যে নদী বা সরোগর পর্যান্ত সিগ্রানাক্তিকে মহ গমন করা কর্ত্তনা। এই অদ্রে স্রো-বরতীব। যা বলিবার থাকে এখানে বলিয়া ফিকুন।

ক। ভাল, আইস^{*}আময়া এই ক্ষীর-বৃক্চছারীয় আশ্র লই।

(नकरनत डेशरवभग)

ক। বছসানাস্পদ ছগ্নভের নিকট, বলিতে পারা যায় এমন কি কথ্যু বলিয়া, দিব। (চিন্তা)

শকু। সখি, দেগ, চক্রবাক্ নলিমী-পত্তের অন্তবালে আছে। চক্রবাকী ত'হাকে দেগিতে মা পাইরা সকাতরে চীংকাব করিতেছে। কিন্তু আমি এতা-বংকাল আর্যাপুত্রকে না দেশিয়া আছি। আমি চক্রব কার্যা করিতেছি।

জনস্রা। স্থা, এমন কথা বলিও না। এই চক্রবাকীও প্রিয়নাভীত দীর্ঘ-তরা রজনীযাপন করিরা পাকে। অংশা অতি গুক্তর বিরহজ্ঃগও সহনীয় করিয়া দেয়।

ক। শাঙ্গরিব, তৃষি শক্সলাকে সন্মুখে রাশিরা আমার বাকাক্রমে সেই রাজাকে এইরূপ বলিবে।

শার্প । • মহাশর আন্তর। করুন।

 অধিক ছইবে, বধ্যস্থাণের তাহাবলা উচিত হয় না।

শার্স'। মহাশরের কথা গ্রহণ করি-লাম।

ক। বংমে। এখন ভোমাকে কিছু উপদেশ দেওয়া আবশাক। আমরা বনবাসী হউলেও লৌকিক ব্যাপার বৃ-ঝিয়া থাকি।

শার্স বৃদ্ধিমান্ বোকের কিছুই জনজাত থাকিতে গারেনা।

ক। ত্মি এ স্থান হইতে ভর্কুলে

গিয়া গুরুজনদিগেব গুজুষা করিও, সপত্নীগণের প্রতি শ্রিম্পথীবং বাবহার করিও,
অগমানিত হইলেও পতির প্রতিক্লচাবিণী হইও না, পরিচারকদিগের উপর
অধিক অফুকুল হইও, এবং সৌভাগাকালে গর্বিত হইও না। সুবতীরা এই
কপেই গৃহিণীপদ পায়। আর যাহাবা
ইহার বিপরীভাচরণ কবে, তাহার। পতিকুল্বে যাতনাস্ক্রপ হইয়া থাকে। এই
বিষয়ে গোতনাস্ক্রপ হইয়া থাকে। এই

গৌ। বধুর প্রতি এইই উপদেশ। ব্যচা, এই সকল মনে রাখিও।

ক। ২৭:স় ভূমি আমাকে ও স্বী-দিগকে আলিক্সন কর।

শকু। পিতঃ! প্রিশ্নদা প্রভৃতি স্থীবা কি এ স্থান হইতেই ফিরিয়া যাইবে ?

ক। বৎসে ! প্রিয়ম্বদা ও অনস্যারও বিবাহ দিতে হইবে। তথায় মাও্যা ইহাদের উচিত হয় না। গৌতনী তো-মার সহিত ঘাইবেন।

ক। বংদে! তুমি কেন এইরপণ কাতর হইতেছ। তুমি মহাকুলোংপরণ পতিব স্পৃহণীয় গৃহিণীপদে প্রতিষ্ঠিত হইয়া, তাহার ঐশ্বর্যাসভাবে হর্মাহ গৃহ্-কামো প্রতিক্ষণ বাস্ত থাকিব এবং পৃদ্দদিক্ যেমন স্থাকে প্রদান কবে সেই কপ অচিরাং এক প্রিত্র পুল্পাসন ক বিয়া জামার বিবহজনিত শোক অস্তবং করিতে প্রিবেনা।

শকু। (পিতৃচরণে প্রণাম করিলেন) ক। আমাৰ যথো সংকল তেমোৰ ওংহাই হউক।

শকু। (স্থী দিগের সনিহিত হইয়া) স্থি, ভোমরা জ্লনে এককালেই থামায়-আলিগন কর।

স্থীবিয়। (আলিজন করিয়া) স্থি, যদি সেই রাজা ভোনায় চিনিতে না পারেন, ভাহা হটলে ভুনি তাঁহাকে এই তাঁহারই নামান্ধিত অঙ্গুরীয়টি দেখাইও।

শকু। আমি তোমাদের এই কপায় • ভীত হইলাম।

স্থীদ্য । উত্তর পাইও না, দ্বেহ অনিষ্ট আশিক্ষা করে।

শার্ফ । . বেলা দিতীর প্রহর, তোমরা স্বর হও।

শকু। (আশ্রমাভিদ্ধী ইইয়া) পিতঃ করে আবার তথোবন দেখিকে ক্রক্ত ক। শুন, তুমি বছকাল যাবং এই
সদাগরা, পৃথিবীপতির মহিষী হটয়া,
পূত্রকে নিক্টেকে সিংহাসনে প্রতিষ্কৃতি
করিয়া পূত্রনাজ্পপ্রকারক্ষণভার ভর্তার
সহিত এই শাস্ত আশ্রমে প্নর্কার বাদ
করিবে।

গৌ। বাছা, গমনকাল অভীত হই-তেছে, পিভাকে ফিরাইয়া দাও। অথবা শকুস্তলা অনেককণ ধরিয়া পুন: পুন: এইরূপ বলিবে, তুমিই ফিবিয়া যাও।

ক। বংসে! তপোহুষ্ঠানের ব্যাঘাত হইতেছে।

শকু। (পুনরায় পিতাকে আলিঙ্গন করিয়া) তোমার শরীর তপশুর্যায় পী; ড়িত, অতএব আমার জন্য আর অতি-মাত্র উৎক্ষিত হইও না।

ক। (দীর্ঘনিখাসপুরিত্যাগপুর্বাক)
বংদে! তুমি পর্ণশালার ধারদেশে যে
পুঁড়িধানোর পুলোপহার দিয়াছিলে,
ভাহা হইতে এখন অস্কুর বাহির হইয়াছে। আমি যখন তা দেখ্ব তখন
কিরণে আমার শোকসম্বন হইবে!

(শকুন্তলা সহযাত্রিগণের সহিত নি-ছান্ত হইলেন)

আশ্রমপাণিত। আশ্রমপ্রিয়। তাপদবালা চিরকালের জন্য আশ্রমত্যাগ করিয়া ঘাইতেছেন। শক্ষলা দেই পবিত্র
আশ্রমের প্রাণস্থরপ। তাঁহাকে গমনোদ্যতা দেখিয়া শকুস্থলা-পালিতা আশ্রমটী
বেন শোক্রিহবল হইয়া উঠিল। "মুগদ্বের মুবের কুশগ্রাস পড়িয়া,মাইভেছে,

ম্যুরেরা নৃত্য পরিত্যাগ করিয়াছে এবং লতাস্কল পাঞ্পত্নোচনচ্ছলে অঞ্পাত করিতেছে।" যাহাকে বাস-ञान इहेट विनाव निष्ठ इहेटन, ममछ ৰাসভানটী বিরহকাতর বলিয়া অমুভব रत, तम यथार्थ हे तमहे वामकारमद ज्यान! আজ প্রিয়খদ। প্রভৃতির বোধ হইতেছে যে, পণ্ড পক্ষী প্রভৃতি নানাবিধ প্রাণীর শান্তিময় আশায়ত্বল সেই পবিত্ত আশা মটা প্রাণহীন হইরা পড়িতেছে। আশ্রম-প্রাণা শকুন্তলাও বেন প্রাণহীন হইয়া পড়িতেছেন। তিনি যেদিকে চাহিতে-एक, (गरेनिक्टे छार्।त **यश्य**शिक পালিত, তাঁহার স্মধুর স্বেছপরিপুষ্ট তক, লতা, মৃগ, মৃগীদকল বিমর্বভাব **धात्रण क**िया दक्षियाह्य। करंत्रक शक् গমন করিয়া তিনি আর থাকিতে পারিলেন না। বাাকুণিতাস্তঃকরণে ব-निया डेडिलन—' পिड:! नडाइशिनी বনজ্যাংসাকে সম্ভাষণ করি।' পিতা ভানিতেন যে তাঁহার আশ্রমের স্কল পদার্থ টাহার শক্তনার প্রাণ এবং তাঁহার শকুত্বলা তাঁহার আশ্রমের সকল পদার্থের প্রাণ। তিনি বলিলেন--'জানি সেই লভার উপর ভোমার (मामतरसर् चार्छ। এই म मक्निन्नार्स त्रहिष्ठारहा' अमिन मकुछना विशीर्थ-कप्राय विलास-- विनामा विलाप সহকারের সহিত সমাগত হুইলেও দূর-অসারিত শাখাবাহ্যারা আমাকে প্রত্যা-লিগন কর, আমি আৰু অব্ধি ভোমার

२ • €

ছাড়িয়া যাইতেছি! পাঠক ফানেন যে
নবমরিকাটীকে শকুন্তলা বড়ই ভালবাসিতেন! অলসেচনকালে নবমরিকাটীকে দেখিয়াই তিনি করনাপূর্ণ কেহোছেস্তিত হাদয়ে বলিয়াছিলেন—

इना त्रभगीत्या क्यू कात्ना देशचा शा-দ্বনিত্ৰত্ব বদিক্ষাে সমূত্ৰে৷ জেণ গৰ ুকুস্মৃত্যুক্রণা গোমালিখা অসং পি वर्ष्मिननां व डेवाडाच क्यत्या महवात्या॥ তাই আজ শকুত্তন। তাহাকে শুধু সম্ভাষণ করিয়া পাকিতে পারিলেন না। त्रम्बीत्रञ्ज तम्बीत्रद्भत नाम मधीवम्रदक বলিদেন—' দ্যি ! আমি 'এই লভা টিকে ভোমাদের ভূমনের হাতে সঁপিয়া मिलाम !' मथीबब आकृ निङ्गारित विनया ফেলিলেন—' আমাদিগকে কাহার হাতে সঁপিলে ?' আমরাও যদি তখন সেখানে থাকিতাম তাহা হইলে প্রিয়ম্বদা এবং অনস্মার নাায় বিগলিত হৃদয়ে অঞ্পূর্ণ নরনে ভাঁহাকে বলিয়া ফেলিভাম— ' আমাদিগকে কাহার হাতে দঁপিলে ?' তার পর সকলে অগ্র**সর হইতে** লাগি-लिन। भक्षनात्र शान चारता वाक्-লিত হইতে লাগিল। তাঁছার গর্ভমন্থরা मृगीवित्क त्विष्ठि भारेतन। भारेताः स्वरुषी विश्विष्ठवाश सम्मीत नाय विलित्न- ' এই উট बहातिनी गर्फमहता स्त्री यथन छ। नम् छ। नम् अन्त इहेर्द, उन्न তোমরা आমার নিকট লোক भागिरेख, त्म शिषा जागारक करे थिववन्याः मिट्या भारा ! क्युजनानिकाव

श्रमग्र कडरे छानवागिएड शास्त्र, कड ভাৰনাই ভাবিতে পারে! সে হৃদয় আ্ল কত যাতনাই সহা করিতেছে! পরক্ষণেই আবার কি যেন তাহার পশ্চাদ্রাগ হইতে গতিরোধ করিতে वाशित। मूच कित्राहेशा (मचिट्न ८य, যে মুগটীর মুণ কুশাগ্রহারা বিদ্ধ হইলে তিনি গ্ৰছে ক্তশোষক ইঙ্গুদীতৈলসেক क्रविट्न এवर याहारक मात्राक्षानामृष्टि मित्रा (পायन कतित्राष्ट्रिन (प्रदे भूजाधिकः প্রিয় মৃগটী মুণাগ্র স্বারা তাঁহার অঞ্চল ধরিয়া টানিতেছে। সেহময়ী কাদিয়া (फ.लिलन। उनभक्ष याहात द्वरह मुक्ष, য:হার বিরহে আকুলিতপ্রাণ, ভাহার क्रमन (मिश्टा সমস্ত विश्वज्ञमञ्ज कैं। मिश्रा উঠে—ফাটিয়া যায়—গলিয়া বেগবভী অোভিমিনীর ন্যায় প্রাথহিত হইতে थाटक ! कैं। निया कें। निया याहेबा छ या ७ त्र। इहे ८ छ ह ना दन्धिया भाक्ष्य व विश्तन- ' ভগবन, छन। यात्र य नही বা সরোবর পর্যাস্ত ল্লিগ্ধব্যক্তিকে অমু-গমন করা কর্তব্য। धरे जमूद मद्रावत्रकीत, या विश्वात थाएक अथारन वितिश फिक्रन।' उथन मकरल वरेतृक-क्षाभाष উপবেশন कतिरत्तन। উপবেশন कतिरल भन्न महर्षि कत् इन्नछरक याहा बनिवात काहा भाष त्रवरक वनिवा मिलन, भक्षनारक याहा बनिवाद छाहा भक्छ-नाक वनिरमन। र्याच्या भक्षनात्क विशासन-' वर्षा ! जूमि चात्रारक व्यवः म्बीमिश्रक जानिकन कत्र।' मक्खला

कानिट्डन (ग कन् डांशंत्र नभिंडवाहात्री इटेर्वन न)। किञ्च अनित्रश्रम। अवः व्यन-স্মাকে ফেলিয়া যাইতে হটবে, তাহা তিনি মনেও ভাবেন নাই। এখন সহসং বুঝিলেন যে তাও তাহাকে করিতে হইবে। বুঝিয়া কাতরতম অপেকা काङ्बद्धत बिकामा क्रिलन-शिडः প্রিয়ম্বদা প্রাভৃতি স্থীরা কি এম্বান इरेट कितिया यारेटान १ डेडव शकि-কৃণ হইল। কিন্তু স্থীনত্যা শক্তবা বর্ত্তিবস্থা চাপিয়া রাখিয়া দ্বিক্তিক না করিয়া বিহ্বণহাদ্যে পিতাকে আলি-জন করিলেন। করিয়া স্থীর্যের কাছে গিয়া বলিলেন, স্থি! তোনরা হুজনে এককালেই আমায় অংলিয়ন কর্ তিনহাদয়ে একহাদয়, একটির পার আর একটি ভাল লাগিবে কেন? ভিনটি मखश्रक्षत्र थक स्टेशं (गन् छ।हे (मिश्री भगन्छ विश्वज्ञम्ब (मेर्ड चान्ध्र्या श्वनग्रकुर् शनिशा পड़िल! मुमछ विश्व-মণ্ডল হাদয়ময় হট্যা সংক্রমহাসাগ-রের ন্যায় উদ্বেলিত হইতে লাগিল! खनसमि भक्छरल, यथारन उनि रम-थारन ऋषत्रं जित्र व्यात कि इरे थाकिएक পারে না। তোমার কাছে বিশ্বক্ষাণ্ড মলুমুগু যাওয়া ত আর হল না। শার্করৰ বলিয়া দিলেন যে প্রথররবি মধাগগনে উঠিয়াছেন। তণ্ন যেন **(5 जनाव्यात इहेगा, धका छहे गाहेर छ इहेर**व वृतिया, व्यायास्य मिरक शक्वात (भवन्षि-নিক্ষেপ করিয়া, সমস্ত পূর্বাস্থৃতিপরিনিত

যন্ত্রকাতরস্বরে শকুন্তলা জিজাদা করি-त्नन—'भिड: करव **आवा**त कर्णावन দেখিব !' काउन्नक्तरयत भ्य निभान--সংসারত্যাগীর শেষ সায়ার জ্রন্দন—জ্লা মগ্নপায় তুর্ভাগার শেষ চীৎকার—সংসারে ইহার অংপেক। যত্ত্বণা আরে নাই। এ यञ्जना दम्बिटन दूक कः दिया यात्र, की वाका **बिड्विया উঠে! कथां** कित्वुत श्वनदम् বালিল। ভিনি অনেক কথা কহিতৈ আরম্ করিলেন। তথন গৌতমী ব্যাঘাত वृथिया वितासन- वाहा! . शमनकान অতীত হইতেছে, পিতাকে ফিরাইয়া দেও। অথবা শকুন্তলা অনেককণ ধরিয়া পুন:পুন: এইরূপ বলিবে, তুমিই ফিরিয়া যাও।' জ্ঞানময় ভাপস্থাধান হতজান হইয়াছিলেন। সহসা যেন छानशाश रहेगा मकुष्ठनांक कहिरलक —-' বংগে ! তপোত্রভানের ব্যাঘাত হই· ভেছে।' ধর্ম:হুরাগিণী তাপদবালা পি-তার তপোহুঠানের বাাঘাত হইতেছে গুনিয়া আপনার সকল যন্ত্রণা ভূলিয়া গেলেন। তাঁহার কোমলহদ্য বলিষ্ঠ হইয়া উঠিল। তিনি পিডাকে পুনরায় আলিখন ক্রিয়া বলিলেন—'ভোমার দরীর তপ-চর্ঘায় পীড়িত; অতএব আমার জন্য আর অতিমাত উৎক্ষিত হইও না।' তাপস্থধান দীর্ঘনিখাস পরিত্যাগ করিয়া উত্তর করিলেন-' वर्षा कृषि भर्गालात बात्रप्राम (य भूँ ड़िभारनत भूरबाभ्यहात नियाहित्न जारा हरेट ज्यन बहुर वादित हहेत्राटहः

আমি যথন তা দেপ্ব, তখন কিরপে चागाव (भाकमध्यत्वं इठेटव ! विश्विक-इतियां कुछ्तालिका এशन मृह्मना इटेशां **ঁসাত্তনাবাকারীয়োগ করিতেভেন**; দুড়-मना পुरुषतर এशम विश्विङ्क्षम् । कुन वालिका इटेशा माछाटेशाइन। , वमनी अन्तः। स्म अन्तात काष्ट्र क्रशास्त्र .ইন্তুলঃ পুরুষও অবনত; জগতের লাপসকুল'চাৰ্যাও বিভিত্ত দে জ্বয় অতিমাত্র কোমল হইয়াও অতিমাত্র দৃঢ়া এ বহুসাকে ব্ঝাইবে । তাব পর সহ্যাতিগণের স্হিত শকুন্তলা নিজ্যন্ত হটলেন। কাশাপাল্য প্রাণহীন হটল। विश्ववशास्त्रकार वन-त्यारिया पुरिवा! দে কৌশলে মহাকবি এই চমংকার বিদায-দুশোর করণবংসাদীপকতা উত্ত-বোত্র বুদ্ধি করিয়াছেন, ভাষা মহাকবি এণ্টনীর বত্ত তা গেরাপীয়র প্রদর্শিত বচনা-কৌশুল অংগকা কোন অংশে क्म् नम्।

শক্ষলা ক্ষেত্ৰথী ! কিন্তু সে সেহেব এনটি প্ৰণালী আছে । পুক্ষেত্ৰ সেহ সে প্ৰণালীৰ অফ্গামী নয় । কণ্ আশ্ৰনেৰ তকলতা মৃগ প্ৰভৃতি সকল-কেই ভালবাদেন । আসৱা অনুস্থার বুপে শুনিয়াভি যে ভিনিই শকুস্থলাকে উল্লেখ্য নিয়ন্ত্ৰ করিয়াছেন । উমন্ত তাহার সমস্ত সাম্রাজ্যের প্রাভা নিগকে ভালবাদেন । হুত্বলিকের উল্ভ-বাদিকারিত্ব নির্দ্ধণাপ্রক্ষে ভিনি এই মাজ্য প্রচার করিলেন—

শেন মেন বিযুদ্ধান্তে প্ৰাক্তা: ক্লিকেন বন্ধুনা।

স স পাপাদৃতে তাসাং ছয়স্ত ইতি যুবাতাম ।।

কে কোণায় কবে বন্ধুহীন হইবে, ভাচার ठिकाना नाहे। किंदु (गरे गर्यन वसूरीन হইবে, হুপান্ত ভাছার বন্ধুখানীয় হইবেন। এ মেতের পাত্রবিশেষ নাই। व्यकारमत कमा शाक्तिरमय (मियतात व्यायाक्रम गारे, भावित्भव निकारे इ। थिताव शासाक्रम गारे। ध स्तर শ্রেণীগত, পাতাবিশেষনিহিত নয়। . ক**ষ্ট** না দেখিতে পাইলেও এ শ্লেচের বিকাশ আছে। ভার এ স্নেহ পরেরছারা কার্যা কবিয়াই পরিতৃষ্ট হয়। কিন্তু স্ত্রীকাতি-প্রতিন শকুস্তলরে সেহ এ জাতীয় নয়। সে ক্লে.ছর পাত্র কল্লনায় থাকে না নয়নপথেব বহিভুতি থাকে না। সে মেহের পাতা কে গু সে মেচের পাতা শক্ষণা বে আগ্রমে বাস করেন সেই আল্নের তরালতা, দেই আল্নের মুণ্-পকী, हमडे बाखराद छीलुक्व। तम ক্ষে'হৰ অবয়ৰ কিরুপ গুৰলিছে গেলে সে মেই সাক'ব। শকুন্তল'র কাছে আশ্রমের তরলতাগুলি ভাই ভগিনী, मृश मृशीखनि পूल्कना।, পूलाखनि हस স্থা। তিনি কোন লতাটীকে বন-জোংলা বলিয়া ডাকেন, কে'ন লতা-है (क ना जानि जान कि निता छात्कन। পুকাষর স্বেছ এ পদ্ধতির নয়। বলিতে গেলে সে মেছ নিরাকার। আর শকু- জলা যাহাকৈ স্নেছ কৰেন, ভাহাকে
কি রক্ষে বাহ কৰেন ? তাঁহার নিজের
মুপে ওনিয়ছি যে তাঁহাদের আশ্রমেব
একটি মৃগী একটি বংস প্রসাব করিয়াই
মবিয়া যায়। তিনি সেই মৃগপাবকটীর
জননীপর্প হইরা তাহাকে ক্ষ্পাতে
গানা খাওয়াইয়া, উফায় জলপান কবাইয়া, বোগে ওশ্রমা করিয়া বড় কবিয়াছিলেন। তিনি যথন জলসেচ্য করিতে
যাম, তখন তাঁহাবে বোধ হয় যে
আতপ্রাপিতা তর্মলতাগুলি উংহাকে
ভাহ্বান করিতেতে। মহর্ষি কবু বলেন—
পাতুং য প্রথমংব্যবস্যতি জলং যুশ্না-

সংসিজেযু গা

মাদত্তে প্রিয়মগুনাপি ভবতাং ক্লেকেন মা পল্লবম্।

জাদে) বঃ কুইনে প্রবৃত্তিসময়ে যদ্যা ভন্ত্যুৎসবঃ

সেয়॰ গাতি শকুভলা পতিগৃহং দকৈবিত্ন-

ভারতাম ।

ত্রপানে স্থীজাতির অ'র একরকম কটুণতিফুতা দেখা নাইতেতে। 'পুক্ষের শাবীরিক কেশ দেখিতে পাওয়া যায়; রমণীর শারীরিক কেশ দেখিতে পাওয়া যায় না। দ্বপথাগনন, বৌদ্রে অমণ, অবিশ্রান্ত হস্তপদশ্চালন প্রভৃতি উল্লির প্রত্যাক্ষ কার্যো পুর্যোর শাবীরিক কট-স্বিস্ক্রার প্রকাশ। শ্বনার উপনাস, উদ্যান পিপাগাক্ষেশভোগ প্রভৃতি উল্লি-যের অপ্রত্যক্ষ অবস্থায় রমণীর ক্রমহি-ফুতা। ভূইপ্রান ক্রম্বিফ্ডার মধ্যে

রমণীর কষ্টসহিফুতাই গুরুতর। উত্তম-क़र्प भागाशत कतियां कडेमाश कार्या कत्रा व्यापका भागांशत गा कतित्रा कहे-माशा कार्या कड़ा श्राप्तिक टक्नमकत । किन्नं প্রষাপেকা কর্মহিষ্ণু হট্যাও রমণীর কট অপ্রকাশ। যে কৃটে জগং রকিত कत्र, तम कहे क्रशंद (मिश्टिक भात्र गा। রমণীর প্রকৃত বীরজ, রমণীর, প্রকৃত, মহত্ব নিজুতে নিভ্রতে তেবে অগতের মহৎ কার্যাপ্রে নিয়ত নিযুক্ত। কিন্তু পুঁলিয়া পাতিয়া মা দেখিলৈ জগৎ সে বীরত্ব এবং সে মহত্ত দেখিতে পায় না। সে মহত্ত্ৰন অন্তকাল খুঁজিয়া প।তিয়াই নিভৃত্ট থাকে! সে বছ জগভের কর্ম-क्ताव जागित्न गिरंडच, निर्मंड, निक्त, '(न(ला' इडेबा शिक्टिन। सम्हेबार्डे शिरलत गरु ठावलक्षेत्र कविश्रा (कर (यन পৃথিনীকে মায়াশূনা, क्षत्राभूना, शखी-भृता, कामीभृता मा करते ।

একবার একটি মৃগশাবক তাহার জন-নীকে দেবিতে না পাইরা কাতরতাবে এমিক ওদিক করিয়া বেড়াইভেডিল। দেখিয়া শ্রিয়ম্বা অন্যায়াকে বলিলেন,

অণক্থ জহ এসো ইদোদিঅদিট্টী উন্মতো মিলপদতো মাদরং অত্যেসদি এহি সংকোএম গং।

এই বলিয়া সেট মুগশাবকটীকে তা হার মার কাছে দিতে পেলেম। শক্ লাও এইরপ করেন।

्रथम दुना महिर्छस्य (म, तम्मी^न

অন্তৰ্গীনতাও বেমন প্ৰগাঢ়: বাছবিলী-নতাও তেমনি প্রগাড়। রমণী যেমন বাহ্মগৎ ভূলিয়া আপনাতে মিশিতে পারেন, তেমনি আপনাকে ভূলিয়া ্বাছজগতেও মিশিতে পারেন। স্বেহ্মরী রমণী স্লেছের বস্তু পাইলে স্বরং ভাহার कुश्या करतन, चैत्रः डाहारक नानन-পালন ক্রেন, স্বয়ং তাহাতে মিশিয়া যান্তি পুক্ষের ক্ষেত্র বস্তবিশেষনান্ত নয়; পুরুষ রমণীর ন্যায় স্লেছের বস্তুকে ' (कारल शिर्छ' कविया बारथन ना : কেহের বস্তর জন্য নিজের কুণাভৃষণা जुनिया यान ना, त्राकित्क निवा करत्रन না, দিবাকে রাজি করেন না; স্লেছের বস্তুতে লীন হন না। পুরুষের স্বেছ মনে মনে পাকে; রমণীর ক্ষেত্ বস্ততে शारक। भूकरवद (अह abstract निहिछ: বনণীর ক্ষেহ concrete নিহিত। পুরুষের নেহ অন্তর্জগৎনিবছ; রম্ণীর স্বেহ বাছদ্গৎলিপ্ত। এই নিমিত্তই রম-গীকে লগদাতী বলে। वर्डे निभित्रहे রমণী শিশুর ধাত্রী, রোগীর চিকিৎসক, আভুরের বন্ধু, লগতের পালয়িত্রী। এই निधि उरे कृत्त्र नारेष्ठिलन (Florence Nightingale;) এই निमिखरे कुणामधी-ভগিনীসম্প্রদায় (sisters of mercy) ৷ श्र्वं (प्रशिवाहि धनन अ (प्रचिटिह, ^{রম্ণী}শ্বদর সাকারপ্রির, অভাসুরক্ত। महेबना बमनीमखरण श्लीविक्थमं म-र्लेख अवन । (महेनना ১१०७ मार्सनत कड़ामिविश्रद्ध कब्राभी बार्चिन्दकब्रा मापाम

রোলেনের শিষ্য হইরা বিপ্লবের পক্ষতি শিক্ষা করিরাছিলেন। হৃদ্যের
অতি উৎকৃষ্টভাব সকল ত্রীজাতির মনে
তথু ভাবরূপে থাকে না; বস্তবিশেষের
সহিত সংযুক্ত কইরা অবস্থান করে।
রম্ণীর আধ্য্যাত্মিকতা জড়জগংজড়িত
এবং জড়জগংসাপেক। এই নিমিত্ত
রম্ণীর স্নেহ সর্কাদাই কার্গ্যে পরিণত
হয়। জগতে 'সেণ্টিমেন্টাল' রম্ণী
নাই বলিলেই হয়।

कालिमारमत भकुछना समझशीयदात (शार्निया, त्रामालिक कि देशांद्यनात नाम अथवर्षि नन। छांशांक दम्भिल বোধ হয় তিনি সামান্ত হিসাবে বুদ্ধিমতী। जिनि পार्नियात नाम देनयात्रिक नन हे छा-বেলাৰ নাম নীতিশাস্থবেতাও নন। আনাদের বোধ হয় যে তাঁহার বয়সে এবং ভাহার অবস্থাতে সে রকম হইলে ভাণও হইত না। আমাদের আরও (नाध इम्र (य कालिनान भकुश्रनारक শাধারণ স্বীলাভির আদর্শরূপে চিত্রিত कतिनात अञ्चि शास्त्र डाहारक क्षत्र-প্রধান করিয়াছেন। স্তীকাতির মধ্যে क्टे ठाति है। खान श्राम थात्क वरहे। 'কিন্তু দে ছুই চারিটী স্ত্রীপ্রকৃতির নিয়ম-বহির্ত। জ্ঞানপ্রধান হইতে হইলে त्रमनीत्क धात्रहे त्रमनीशम अवर तमनी-ধর্ম পরিভাগে করিতে হয়। মিস মার্টিনো উ:হার স্বরচিত জীবনীতে বলিয়াছেন যে, হুমণী যদি পণ্ডিতা হইতে চান ভবে তিনি যেন সংসারাশ্রম প্রবেশ না করেন।

আর বেধানে রমণী সংসারাশ্রম প্রবেশ
না করিয়া পণ্ডিতা ছইবার উদ্দেশে যাবজ্জীবন শাস্ত্রচর্চা করেন, সেধানেও রমগীকে বড় একটা পূর্ণমনোরথ দেখা যায়
না*!

किन भक्छगात जीवरबाभरगाती वृक्त যাহা আছে তাহা ঠিক পুরুষের বৃদ্ধির मञ्ग नम्। श्रुक्षित वृद्धि विठात्र महिन-শকুম্বলার বৃদ্ধি সে রকসের भूलक। আশ্রমের নিভৃতপ্রদেশে ত্রায় য়খন ভাঁছার হস্ত ধরিবার উপক্রেম করেন তথন তিনি বারস্বার ভাঁহাকে এই বলিয়া निरम्ध कर्त्वन (य. अञ्चन এवः शुक्रज्ञानत সম্বতি বাতীত আমি আয়ুসমর্পণে অক্ষ। জ্ঞানপ্রধান ত্মস্ত বুক্তিপারা छ। हाटक वृक्षाहेबात ८५ छ। भारेदनन दग, শুকুজনকে না জানাইয়াও তিনি আত্ম-সমর্পণ করিতে পারেন। কুত্রবৃদ্ধি শকুন্তলা সে যুক্তি গওন করিতে পারি-स्मन मा, थछन कविवात हिष्ठां कति त्मन ना, उथालि धक्षकत्नत्र नाम क्रिया निरम् क्रिएंड वर्शिएवन्। युनि अङि জ্ঞানশকুন্তল পড়িয়াছেন তিনি জানেন त्य कान श्रभान वृद्य छ ठिक भी गाः म। करतन नारे: कृष्टद्वि भक्षना हिंक गीमाः मा कतिश्राहित्वत । ' व दहरमाद अर्थ कि ? ইহার অর্থ এই;—গুমায় বিচারশক্তি महकारत खेडिशामिक श्रेशा स्वित्रा भी-

মাংশা করিয়াছিলেন; শক্তলা উন্তমনা
ধর্মান্তরাগিনী রমনীরক্তের নৈস্থিক সংপ্রবৃত্তির বলে মীসাংসা করিয়াছিলেন।
ভ্যত্তের মীমাংসা তিরুত্তস্বত্তের অভিবাক্তি মাতা। অনেক প্রধান প্রধান
ইয়ুরোপীয় দার্শনিক অপন বলিয়াধাকেন
বে, প্রবেধর জ্ঞান বিচারমূলক; রমনীর
জ্ঞান রমণীহৃদ্রের অভিবাক্তি মাতা।
অন ইয়াট মিলের 'লিবটি' নামক
প্রবদ্ধের ভূমিকার এই কথা একরকম
স্পান্তালেরে লেগা আছে। কলিদাসের
শকুত্বলা এই কথার একটি প্রমাণ।

শকুস্থলাচরিত্তের সমালোচনার আমবা যাহ। যাহা পাইলাম ভাছার সংক্ষিপ্ত বিবরণ এই:—

- ১। পুরুষের শরীর বলিষ্ঠ; রমণীব শরীর কোমল—রমণীর শরীর নাই বলি-লেই হয়।
- ২। পুক্ষ শারীরিক বলে কট্টস্ইফু; রমণী হাদয়ের বৈশে কট্টস্ইফু। কট সহিফুডার রমণী পুক্ষের অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ।
- ত। কর্মাশীলতা পুক্ষের স্বাভাবিক ধর্ম, রমণীর হৃদ্ধের অবস্থানাপেক ধর্ম।
- ৪। পুরুষ ক্তানে এবং শারীরিক ববো রমণীর অপেকা শ্রেষ্ঠ; রমণী ক্তদমের ববো পুরুষের অপেকা শ্রেষ্ঠ। পুরুষচরিত্র বিস্তার গুণবিশিষ্ট; রমণীচরিত্র গভীরতা

[&]quot; অহিফেনগেবক শ্রীলন্তীযুক্ত কমণাকান্ত চক্রণন্তী নহাশয় অহিফেনের নেশার স্ত্রীক্ষাতির বৃদ্ধিকে নারিকেলের মানার সহিত ভূলনা করিয়া বলিয়াছেন শে তিনি সেমালা কথন আধ্বানার শেশী দেখেন নাই।

গুণবিশিষ্ট। পুরুষের অন্তর্গীনতা এবং বাহাবিলীনতা কম; রসনীর অন্তর্গীনতা এবং বাহাবিলীনতা অপরিমেয়।

ু ৫। রস্থীর আধ্যাত্মিকতা পুরুষের আধ্যাত্মিকতা অপেক্ষা অনেক অধিক। কিন্তু পুরুষের আধ্যাত্মিকতা অনেকটা স্থাধীন; রস্থীর আধ্যাত্মিকতা সম্পূর্ণ ক্লপে ভুক্তগংসাপেক।

উ। পুরুষের বৃদ্ধি বিচারশক্তির ফল; রমণীব বৃদ্ধি হৃদয়েব অভিবাক্তি মাত্ত।

৭। রমণী বৈপরীতোর আধার— কোমল হইয়াও কঠিন, হর্মণ হইয়াও বলিঠা, প্রমকাতর হইয়াও কঠসহিফু, নরম হইরাও দৃঢ়, ব্জিমতী হইরাও বিচারশক্তিহীন, আগাাল্মিক হইরাও জড়অগৎসাপেক। জগতে রম্নীর ন্যার রহসা আর নাই।

স্ত্রী প্রকৃতির এত উজ্জ্বল, প্রশস্ত এবং প্রাণাঢ় চিত্র কালিদাদের অভিজ্ঞানশকু-স্থল ভিন্ন আর কোন নাটকে নাই। একটি সামান্য ঘটনা অবলম্বন করিয়া এত বড় ছবিও অনা কোন কবি তুলিতে পারেন নাই। জগতের নাটককার দিগের মধ্যে কালিদাস অধিতীয় শিল্পী। শিল্প-প্রতিভার সেক্সপীয়রও তাঁহার সমকক্ষ নন।

--Felicz-Esise--

कारलङोभिका।

সামরা কালেকে যে শিক্ষা পাই সে
শিক্ষা কোন কাজেরই নহে। উহা না
একম্থীশিক্ষা না সর্কতোম্থী শিক্ষা।
উহা যে একম্থীশিক্ষা নহে তাহা প্রমাণ
করিবার প্রোলেন নাই। কারণ উহাতে
আমাদের কোন বিষয়েই সম্পূর্ণ শিক্ষা
দেয় না। উহা সর্কতোম্থী শিক্ষাও
নহে। কারণ উহাতে শারীরিক শিক্ষার
নামও নাই, যাহাতে শ্রদার্তির উরতি
হয় উহাতে তাহার কিছুই নাই, যাহাতে
ইচ্ছাশক্ষি বা কর্মক্ষমতা বৃদ্ধি হয় তাহাও উহাতে নাই। উহাতে আছে গুড
ক্ষেক্টি বৃদ্ধিবৃত্তির পরিচালনা তাহাও
উচ্চতর বৃত্তিবসমূহের নহে। প্রধানতঃ

কেবল আরণশক্তির উরতির দিকেই অধিক দৃষ্টি।

সতা বটে একলে সর্বত্ত জিয়াসিয়ম হইয়াছে কিন্তু তাহার উরতি নাই।
কর্তৃপক্ষের তাহাতে দৃষ্টি নাই। সত্য বটে স্কুল কাবাপাঠ হয় কিন্তু তাহা কদয়র্তিসমূহের পরিচালনার জন্ত নহে ওচ্চা বে ক্ষের্তুত্তর পরিচালনা সেও বিড্মনা মাত্র। ইচ্চা বা কর্মক্ষমতার মধ্যে আমাদের পাকে পাশকরা স্তরাং তাহা ভিন্ন জন্তবিধ্রে আমাদের কর্মক্ষমতা বড় একটা নাই।

याश अक्ट्रे जामना कात्नद्ध निश्वि

তাহাও শিখিবার উপায়ও ভাল নহে। আমরাসব শিখি বই পড়িয়া। বিধাতা (यन आगारमत ठक्नामक वक्माव জ্ঞানেক্সিয় প্রদান করিয়াছেন অপর-हेक्षित्र (यन (कान काट्यहे स्थारन ना। যে সকল জিনিস ঘরের দারে আছে তা-হাও আমরা কেতাব পড়িয়া শিখিতে याहै। दिश्वता ७ अनिया व्यापदा कि इरे निथि ना। य किनिम এক वात दिशाल তৎক্ষণাৎ শিখিব এবং ক্ষমে ভুলিতে भातिय ना, त्मरे खिनिम आमात्मत কেতাবে পড়িয়া তিনমাসে ব্ঝিতে হইবে ও মুখস্থ করিরা পরীকা পর্যান্ত মনে রাখিতে হইবে। শিথিতে আমোদ হয় এমন করিয়া কোন শাস্ত্র বা কোন বিষয়ই শিখান হয় না। তাহার উপর যদি আবার মাষ্টারে যত্ন করিয়া বুঝাইয়া (मन जाहा हहे(लंड इम्र। जाहा ना হইয়া মাষ্টারগণ (একে ত ডাওনিসি-মুদের বংশ) ভারতে আবার ইংরেজী পড়িয়া কক্ষমেভাজ হইয়াছে। প্রোফেসরদিগের ত কথাই অনেকে বলেন ভূমি বুঝ আৰু নাই বুঝ আমার নাম বাহির হইয়া গিয়াছে, আ-मात्र भागिक दिवन वाड़ित्व वहे कमिटव ना।

যদি নিজভাষার শিক্ষা দেওয়া হয়
তাহা হইবো অনেকটা সহজে হয়। ডাহা
না হইরা এক অভি কঠিন অভি দ্রবর্তী
আভিন ভাষার আমরা শিক্ষা পাই।
ভাষা সেই ভাষাটি মোটামুটী শিখিতে

রোজ চারি ঘণ্টা করিয়া অন্ততঃ আইদশ ৰৎসর বাগে। ভাষা শিক্ষারী অথচ किছूरे नरह, खावाभिका दक्वन धना ভাল शिनित्र निथिबात छेशाम-छेहाउं শিখিবার পথ পরিকার হয় মাত্র—সেই পথ পরিষার হইতে এত সময়বায় ও এত পরিশ্রম। তবুও কি সেঁভাষা বুঝা যাম 2 তাহার যে। কি! বাঙ্গালা ভুইলে এই কেতাবী জিনিসই আমরা কত অধিক পরিমাণে শিখিতাম। ইংরেজীতে আ-मत्रा कथन कथा कहि-ना। अथन आमत्रा ইংরেম্বীতে চিঠিপত্রও বড় লিখি না व्यथह व्यामादमद कान-डेभार्कत्नद वक माख वात रेश्टरकी। रेश्टरकी आमारमत যাহার। ইংরেজের সংসর্গে व्यानिद्वन छीहारमत हैश्द्रकी निकात व्यायाक्त। छाहे वनिया छत्र काति हबछि नक लाक देश्त्रकी পড़िया मतिरव (कन ? विलाद, देश्टबळ यथन बाळा, मक-लाहे कान ना कान ममरत्र हेश्वराजत मःगर्श व्यानित्व । श्रीकात । हेः ति भी ভাষা শিকা কর ভাল করিয়াই শিকা कत्र। हेश्टनकीटि अब कमिट्ड हहेर्त, ইতিহাস পড়িতে হইবে, বিজ্ঞান শিথিতে इटेटव टेरात अर्थ कि ? वाशाना पिया देश्द्रकी भिथ ना (कन ? देश्द्रकी निया শাস্ত্র শিখিতে যাও কেন ? আরও অধিক छः त्थत कथा धहे (य आमारमन मःकृष् निशिष्ठ इरेटन देरदि समूद्य निशिष्ड स्य ।

(यक्त कि किटिक है हार कान अब ह्य

ইংরেজি শিকা অর হয় আর পরিশ্রম
অনস্ত করিতে হয়। আর শিকিতদিগের
সহিত অশিক্ষিতের মনোমিল থাকে
না; শিক্ষিতগণ যেন একটি নৃত্য কাতি
হইয়া দাঁড়ান। অত্যস্ত অধিকপরিমাণে
শ্রম করিয়া অতি অর জ্ঞানলাভ হয়।

যাও বা শিখি তাহাও শিপিবার জন্য

শ্রিশিকা; জ্ঞান অর্জ্ঞানের জন্য শিথি
না। শিথি এক্জামিন পাশ করিবার
জন্য। আছে। করিয়া পড়ি; বেয়ন প্রশ্ন
দিক, ঠকাইতে পারিবে না এ জন্য
পড়ি না, কেমন প্রশ্ন দিবে বাছিয়া বাছিয়া তাহাই পড়ি, অনেক সমরে মাট্টার
মহাশবেরাও তাহাই পড়ান। ইহার এক
ফল এই বে যথন এক্জামিন নাই তথন
পড়ি না, এক্জামিনের সমন্ন রাত দিন
পড়ি। লাভ এই হয় কতকগুলা গুক্রপাক জিনিস উদরস্থ হয়, সব হজম
হয় না। রাতজেগে যাহা পাঠ করা
প্রেল, তাহা মাস্থানেকের মধ্যে ভূলিয়া
বাই।

অতএব লেখা পড়ার যে উদ্দেশ্ত

—মনোবৃত্তিনিচয়ের সমাক্ ফুর্তি—তাই।
একেবারেই হয় মা। যে চিস্তাশক্তিবলে
শিক্তিভিদিগের হারা সমাচেলর উপকার
ইইবে ভাহা হয় না। চিস্তা করিবার
শক্তি নাই অথচ জ্ঞান আমি বড় বৃঝি,
ইহার অনেক লোহ, কালেফী শিক্ষায়
সে দোহগুলি সমুদ্রই ঘটে। যদিও
চিস্তাশক্তি ভ্ইচারিজনের ক্লেড ভাহাও
শ্নোর উপরে। যদি এরপে হইত, তবে

এইরপ কল হইত। কিন্তু চিন্তা abstractএর উপর। যাহা আছে তাহার উপর নহে। যাহাই হউক, তবুও চিন্তাম্যোতঃ প্রবাহিত হইলেই সেটি বাছ্তীর। কিন্তু তাহা ত হয় না।

অতএব কালেজী শিক্ষায় চিন্তাশক্তি
উত্তেজিত হয় না, উহা শুদ্ধ পরীক্ষা উত্তীন হইবার জনা, এক্ষনা উহাতে জ্ঞানঅর্জন হয় না। জ্ঞান-মর্জন একটুআগটু হইলেও ইংরেজীমুখে অর্জন করিতে হয় বলিয়া সেই একটুকুতেই
অনেক শ্রম লাগে, যাহা শিনি ভাহাতে
বৃদ্ধিকৃত্তিও তুই পাঁচটার মাত্র চালনা হয়,
হাদমকৃত্তি ও ইক্যাশক্তিক্ম কিছুই হয় না।
কোন একটি বিষয়াও সম্পূর্ণক্রপ-শিক্ষা
হয় না; অতএব উহাদ্বারা পরিণামে
যে করিয়া খাইবে ভাহাও হয় না।
কালেজে না একমুনী শিক্ষা হয়, না
সর্ক্রেয়েখী শিক্ষা হয়।

 কিছুমাত্র ক্রিছিল না। গুদ্ধ যদি বাশ্

দা বা গুরুলনের চোকে, চোকে থাকিছ,
তাহা হইলেই এ সকল লাভ ওলি অবশ্রই

হইত। সংসারে প্রবেশ করিয়া ভাহাদিখকে অনেক কটে এই সকলগুলি
শিখিতে হয়। অনেকে হয় ত অনেক
জিনিস একেবারেই শিখিতে পারে না।
অশিক্ষিতের সহিত সমবেদনা প্রায়ই
থাকে না। ইত্যাদি ইত্যাদি।

অভএব কালেকীশিক্ষা সম্পূৰ্ণ বিকা मरह। श्राथम, कालास्त्र यात्रा भिका र ६ व। উচিত, তাহাই आমাদের কালেকে অল শিকা হয়। সকল শাস্ত্রের কিছু किছू পড़ान একেবারেই হয় ना। कश्चांत्र ইচ্ছা কর্ম হয়। একজন কর্ত্তার খেরাল इरेन, सतीशिवमा। शड़ान आवस इरेन, किन ज्रानिविमा डेठिया राम। ज्र-গোল পড়িলে দেশীয় কুসংস্কার যত শীঘ্র অপনীত হয় এত আর কিছুতেই হয় না। সেই ভূগোল উঠিয়া গেল। আর धक्कन विलित्न, इश विषय शतीका ছেলেরা পারিবে কেন ? পাঁচ কর । আর धक्यन विल्लान, भारत दानी इव তিন কর। স্থতরাং সমস্ত ৰুদ্ধিবৃত্তির পরিচালনা হয় না। শুদ্ধ কেতাব প-জিয়া শিখিতে इटेटन ছয়টা বিষয় শিখা कठिन इस वर्षे, किन्न यनि এक এक विषय छे एक इ अशाशक व निक्रे तिह গেই বিষয় শিকা হয় ও কতক দেখিয়া ভনিয়া শিখিতে পারে তবে অনেক बितिम काल भिका इहेटल भारत।

কালেন্দ্রী শিক্ষা সম্পূর্ণ করিতে হইলে, উহার সঙ্গে সঙ্গে গার্ম্ছা শিক্ষা চাই, সামানিক শিক্ষা চাই। প্রাকৃটিকল শিক্ষা চাই, হাতে হাতীরারে অনেক কাল করা চাই। ঠেকিয়া শিখা চাই, প্রো-ফেশন শিক্ষা চাই।

कामारमत रमर्भ हैश्द्रकी निका क्षत-र्त्तत शूर्व आ्मात्तत्र तम्भीत्र क्रज-সম্ভানগণ যে শিকা পাইত, সে শিক্ষা সম্পূর্ণ শিকা। কালেমী শিক্ষার সহিত তুলনা করিলে কেতাবী জিনিস ভাছারা किছूरे निथित ना। खांशाता ना कृत्रान শিথিত, ना ইতিহাস सानिত, ना विकान জানিত, না গণিত জানিত। কেতাবী বিষয়ে তাহাদের শিক্ষা অল থাকিলেও ভাহারা অন্যানা সকল বিষয়ে অল পরি-अर्म आमारित अर्थका अर्गक अधिक কেমন করিয়া নম্বিনীত रहेर्ड रह, श्रक्रम्बान अडि छक्ति क्तिष्ठ इष्, द्वमन क्तिश अत मंग्रू, अम ও व्यर्थशास कुनानत्राण मःभाव চালाইতে হয়, গৃৰস্থালী করিতে হয়, তাহা কুন্দরক্রপে শিখিত। পিতার সহিত त्म नर्वा कितिक, नकन विनिम् (पश्चित्र, र्गक्त नमारक कार्डेड, त्र रचन कविश व्यविष मायूब इहेवाद बना এश्रिण्डिन वा विकानवीन थाकिछ। এখনকার মত नःनात्र इटेट्ड, नमास इटेट्ड विव्हित रहेता व्यवनावाम कतिएक इहेक ना। যদিও কেতাবী শিক্ষা অল হইত, সর্ব-প্রকার শিক্ষিত লোকের সংগর্গে আসিয়া

त्म अदनक धारबाजनीय विषय जानना আপনি শিণিত। সোটামুটি সে অনেক विषय सानिछ। त्मकात्म स्वात्न छे-য়তি ছিল না। জ্ঞানগীয়া এত বৰ্দ্ধিত इय गांहे, शुक्रताः शाही गकात्व वर्शाद সমাজের প্রথম অবস্থায় যেমন মোট।মুট বিদ্যা ভিশ ভগনও ঠিক তেমনি ছিল; ष्यात त्रहे (याह्यामुहि क्रिनिम ष्यधिकाः भ উদ্রসন্তান আনিত ও পিথিত। এখনকার ছেলে यमि लिशा शक्रा कदिए जान ष्यगनि वाश मा विलया वरमन " बाम আমার সংসারের কোন কাজই করিবে गा, ध कर्या व्यामात त्रामरक कतिए हि न।, तारमत ममन्न महे इरव।" ताम ७% লেখা পড়া করিয়াই সময় কাটাইলেন। यथन कालक इटेट्ड वाहित इटेलन. একটা গাছবানর বাহির হইলেন। যদি ভাল চাকরী পাইলেন, कि मেन। টাকা রোলকার করিশেন এক রকম চলিয়া ्शन, निक्रन माँ फ़िर्म मर्कानान । ममास्त्र (शत्यन यति, (श्वाटन अन्यवन (लाक णाष्ट्र (मगान (ग्रंगन यिन, এक्रशार्म विषया ब्रह्मिन । कारनम ना कमन कतिया ल्यारकत मरश्र मिथिट इय. মিশিতে পারিলেন নার লোকে জানিল त्रागाहे। त्यथा शङ्ग निश्तित कि इत्र, वड षाइद्वारी नद्रत्नादकत माम कथाहे करहम ना। आश्रता तामरक (यण कानि, वारमत कहकारतत रममाज नाहे, ७६ শिकात (मार्य विषातात निमा इहेगा कारणको विकाय रम. यश्रममंग घरनक

कता (शव। कंटिकी निकात घेटनक उँ देश छ । आह विनियारे आमता **উशा**त (माय धनर्गतन এन्छ यञ्जनान इहे-व्यागात्मत (मणीय कात्मजी শিক্ষার প্রাধান গুণ এই যে উহাতে স্বাধীনচিস্তাশক্তি উদ্রেকের যেসন স্থবিধা এমন আর কিছুতেই নাই। সামাজিক অভাচারে, সাংসারিক (পিভূষাতৃক্ত) व्यक्ताहाद्य, विक्किकिंग्रिक व्यक्ताहाद्य চিম্বাশক্তির শ্রীবৃদ্ধি হইতে পারে না; आभारमत कारनरम এ जिर्मत এकि छ নাই। আমাদের কালেজের ছাত্রগণের কুগংস্থার যত অল এত আর বেংধ হয় কোগাও নাই। কিন্তু কালেজী শিক্ষার खनकीर्जन जामात्मत्र जानमाक मारे, छ-হার শত দোবসত্ত্বে আমরা উহাকে ভাল-বাসি ও আমরা এরণ স্থন্দর শিকা পাই-क्षां विका वाभनानिगदक कुछार्थ मन করি। এবং এইরূপ সলে করি বলিয়াই चमा छेहात (मायकी र्छटन अनुङ इहेग्राहि। যাহা হউক আমাদের সংস্কার এই যে আর ভুই সময়ে ভুই জাতিব অতি উৎকৃষ্ট শিকা হটয়াছিল, সেই তুইটির সমাক্ वर्गा क्रिया डाइएम्ब एमार्थ छन निर्दाहन পাঠकशन (मिथितिन कालिकी শিক্ষার কত উরতি হইলে উহা সম্পূর্ণ শিক্ষা বলিয়া গণা হইতে পারিবে। कालकी भिकात यनि (नारमकल अस-हिं इक्ष छत्व देशहे पृथिवीत मकन का श्रीमिका जालका উৎकृष्ट निका क লিয়া পরিগ্লিত হইতে পারিবে।

আমরা যে ছুইটি শিক্ষার কথা বলিতেছিলাস তাছার একটি ভারতবর্ধের
আব একটি গ্রীসের। একটি প্রাক্তন্ধর
আব একটি গ্রীসের। একটি প্রাক্তন্ধর
একটিতে প্রাক্তন হৈয়ারি হইত আর
একটিতে সিটিজেন হৈয়ারি হইত আর
একটির ফল সংস্কৃত সাহিত্য ও ভারতে
অক্ষণজাতির চিবপ্রাধান্য আর একটির
ফল গ্রীক্ আর্টস্, গ্রীকসাহিত্য, গ্রীকচিন্তাব চিরপ্রভ্র হিবপ্রাধান্য আর একটির
ফল গ্রীক্ আর্টস্, গ্রীকসাহিত্য, গ্রীকচিন্তাব চিরপ্রভ্র হিবপ্রান্ধনিক ক্উভরের
শিক্ষা হইতেই অমৃত্যার ফল উৎপর
ইরাচে।

बाक्रवशंग इब्न ১৮ ना इब्न २१ ना इब्न ৩৬ বৎসর পর্যাম্ভ গুরুকুলে বাস করি তেন। তৎকালপ্রচলিত ঘাবতীয় শাস্ত ভাগাবা অধায়ন করিতেন। বেদান্ত দর্শন সাহিত্য, ব্যাকরণ চিকিৎসা তাঁহারা এ সমস্তই কেতাব হইতে শিপি-গুরু তাঁহাদিগকে শিখাইতেন, ত্তক ও শিষ্যে পিতাপুত্র সম্বন্ধ। জন ভাল বাসিয়া শিখাইবাৰ জনা যত্ৰ করিত আব একজন ভক্তি করিয়া শিখি-বার জনা যত্ন করিত। শিকা উত্তম হইত। শিষা গৃহতালিতে ওকর সৃহা মতা করিভেন স্তবাং পিতামাতা হইতে বিচিছর ইইয়া পড়িলে যে শিক্ষা হওয়া অসম্ভব সে শিক্ষা অতি সহজেই হইত। ওক তাহাদিগকে লোকের সভিত কিবল বাবহার করিছে হয় কিরূপে সংসারের कार्या कविष्ठ इत्र छ। । (मथा है भा

बिट्डन। (बर्ग्यडा डीर्डा अक्टूर्ल चानक निश्चित। श्रम छै।शहिशदक ममारक वाहेटल भिवाहेटलन, खक्र त्यवादन याहेटजन भिया छीडात नरण शाकिएहे শিষ্যকে অনেক শারীরিক পরিশ্রম করিতে হটত। কিন্তু শিষ্টোর গৃহস্তীবনে যা किছু আবশাক হইত গুরু সমস্ত শিশাইতেন, কেমন করিয়া নিভা নৈমিত্তিক কার্ব্য করিতে হর্ম, যাগ यक कतिए क्य, विठात कतिए इस, মোকর্দমার নিষ্পত্তি করিতে হয়, বাবস্বা দিতে হয় এই ৩৬ বংসর মধো ভাহারা সব শিকিত। ভাহারা প্রাক্টিকেল ও থিয়ে। বেটিকেল ছুইরকমই শিবিত। বাহির হইয়া যখন এক্লপ একটি শিক্ষিতত্তাহ্মণ সংসারক্ষেত্রে অবতীর্ণ ইইলেন, তিনি সমাজের মৃটিমান্ শক্তিম্বরণ হইলেন। বড বড রাজার৷ ভাঁহাব ভোষামোদ করিতে লাগীলেন। যিনি তাঁহাকে আপন রাজাে তাপন করিতে পারিশেন তিনিই মনে করিলেন আমার রাজা ধনা ছইল। উ,হাকে সকলে অগ্নির সহিত তুলনা করিত, কারণ অগ্নির যেমন তেজঃ তাঁহা-রও তেমনি।, অমি যেমন সর্বাভুক্ তিনিও তেমনি মর্কব্যাপিনী বিদ্যার আধার, অনস্তশক্তির আধার ৷ আমরা এখানচইতে বেশ দেখিতে পাইতেছি काहात भिकात व्यत्नक (मात्र हिन। काहात बिका व्यत्वको (श्राक्त्रमाल, তিনি ব্রাহ্মণের যাহা দারকার ভাহাই শিশিতেন। সামুষের गाइ। प्रकार

ভাহা ত লিখিতেন না,ধর্ম দম্মীয় সনেক কুসংকার তাহার পাকিরাই বাইত। ভ্রাহ্মণের শিক্ষার মধ্যে পুরেছিতের শিক্ষা ' অনেক থাকিত। পুরোহিতশিকার কলাশিক্ষা একেবারে হইত না, স্ক্রচ (८ है) विनया (य बिनिम छाहार छाहारा मण्लूर्ग बिरताथी हिल्लम । खान्नण नृष्ठा . গীতাদি শিথিলে পতিত হইতেন। তাঁহার শিক্ষার এত দোষসত্ত্বেও তাঁহার ত্রাহ্মণের শিক্ষা সম্পূর্ণ ই হইত। আগে সর্কভোমুগী শিক্ষা ভাহার পর একমুখী শিক্ষা না হ-हेबा, এक मुशी निकांत छ ना यछ नृत श्राः জন, সর্বতোমুগী শিক্ষা ততদূর পাইত। গ্রীকেরা কেতাব পড়িয়া অতি অল শিখিত। কথাবার্তা নাটাশালা, সভা-গৃহ প্রভৃতি হইতে তাহাদের শিকা হইত। হাদয়বৃত্তির পরিচালনা তাহাদের সম্পূর্ণরূপ হইত। তাহাদের মৃত উৎ কুষ্ট ক্ষতি আর কোন জাতির কি আছে? তাহাদের নাটক, তাহাদের কাবা, ভাহাদের ভাক্ষরকার্যা, ভাহাদের রুচি-শিক্ষার উৎকৃষ্ট পরিচয় দিতেছে। শারী-রিক শিকা ভাছাদের মত আর কাহা-রও হইত না, ভাছাদের মেলায় পারি-তোষিক দেওয়া बहैं छ সেই পারিতোষিক পাইত বলিয়া সকলেই ব্যায়াম করিত, भंबीदात मर्काणीय शृष्टि औकिविरगत যেমন হইত এমন কি সার কথন কোন অতির হইরাছে ? ভাছাদের মধ্যে শারী-রিক দোষবিশিষ্ট আরু, কুজ, বঞ্চ অতি পর ছিল। সৌন্দর্য্য ভারাদের প্রায় সক

লেরই ছিল। বিশ্রীলোক কাণা খোঁড়া কুৎসিত ভাহাদের দেশে হইতেই পা-রিত না। ভাহারা সকলপ্রকার শিক্ষার बना शाहेब पिट; द्राडां छा हे हिं-হাস লিখিয়া পড়িলেন, পারিভোষিক পাইলেন, যে, যে কোন কাজই করুক ना, यनि ভাহাতে সাধারণ লোকের मरकाय इटेन अग्रति शाहेक। উৎসাহে গ্রীকদিগের যে সর্বাঙ্গীণস্থলর শিক্ষা হইবে আশচ্যা কি! বৃদ্ধিবৃদ্ধির পরিচালনা ত্রীদে যত হইয়াছিল, এত আর কোন জাতির হয় নাই: সাহিত্য বিজ্ঞান দর্শনের যে শুদ্ধ সূত্রপাত হইয়া-हिन এমন নহে, অনেক উন্নতিও গ্রীদে হইয়াছিল। কর্মকমতা গ্রীকদিগের মত আর কাহার ছিল ? হুই পাঁচজন লো-কের প্রতিজ্ঞায় যেখানে পারসারাজ্যের অক্ষেহিণী হুর্যাকরম্পৃষ্ট নীহারবং দ্রবী-ভূত হইয়া গেল, তাহাদের মত কার্য্য-ক্ষমতা দৃঢ়প্রতিজ্ঞা কাহার ? বাস্তবিক গ্রীকবিশেষ এথিনীয়দিগের মত সর্বা-সীণ শিক্ষা আর কোন ভাতির কখন হয় নাই। কিন্তু এত উংকৃষ্ট শিকা তাহার। বিনাপরিশ্রমে লাভ করিত। শুদ্ধ বিনাপরিশ্রমেই বলি কেন তাহারা আমোদ করিয়া শিথিত। ইম্চাইনিস সফোক্রিস তাহাদের শিক্ষা দিত। তাহারা শুদ্ধ আমোদের জনা থিয়েটারে আসিত অথচ কিছু না কিছু শিধিয়া যাইত। আবার নাগরিকদিগকৈ রাজ্যের গমন্ত কার্য্য করিতে হইত,তাহাতে তাহা-

দের প্রাক্তিকাল শিক্ষাও অনেক হইত।
নাগরিকগণ বিচার করিতে শিখিত, যুদ্ধ
করিতে শিখিত, মন্ত্রিসভার পরামর্শ
দিতে শিখিত অথচ কাজ করিতেছি
বলিয়া কাছারও গারে লাগিত না।

বাদ্দণিগের শিক্ষা ধর্মপ্রধান, গ্রীকদিগের সৌন্দর্যাপ্রধান। স্থতরাং গ্রীকদিগের শিক্ষা ক্রমে ছড়াইয়। সমস্ত
নাগরিকগণমধ্যে পরিবাপ্তি হইয়াছিল;
বাদ্ধণদিগের উচ্চতর শিক্ষা গুটাইয়া
ক্রমে অরসংখ্যকমাত্র লোকে ক্রম্ভ হইয়াছিল। গ্রীকেরা ইচ্ছা না থাকিলেও
আপনি শিখিতে বাধ্য হইত, ব্রাহ্মণেরা
অনেক যদ্ম ৪ শ্রম ক্রিয়া শিখিত।

আমাদের কালেনী শিক্ষা এ ছ্ইরের'
কোনচীরই মত নহে। কিন্তু দোষ
সংশোধন করিরা লইলে ইহা হইডে
গ্রীকদিপের অপেক্ষাও উচ্চতর শিক্ষা
হইতে পারে। কারণ আমাদের শিক্ষার
খাধীন চিন্তার বড় শ্রীবৃদ্ধি হইবার
সন্তাবনা। গ্রীকদিগের কুসংস্কারাপর
নাগরিকগণের দোবে তাহা কুথ্নই
হইতে পারিত না। বেখানে সক্রেতিস্কে
নাজিক ও দেবছেয়ী বলিয়া বধ করিল,
তাহাদের চিন্তাশক্তি আধুনিক বালালি
শিক্ষিত ব্বক্দিগের মত উর্ভক্ষণিণী
ছিল কেমন করিয়া বলিতে পারি।



শশ-ধর।

चान-गृश्-हूफ्; मगत्र-गणीत-निनि।

পার না কি শশ-ধর, ঢালিতে কিরণ-এই দগধ-পরাণে ?
অনস্ত-আকাশ-তল, অনস্ত এ ভূমিওল,
কর নিত্য আলোকিত কিরণ প্রদানে,
পার না কি এক বিশু ঢালিতে এ প্রাণে ?

5

নিরেট, নির্মান ওই প্রকৃতির ব্কে—
কেন এতৃই আদর ? '
ও কি আশা করেছিল,কিবা আশা না প্রিল?
পূর্ণানন্দে পরিপূর্ণ উহার অন্তর;
ও কি জানে চক্রালোক কত বিশ্ব-কর!

শশ-ধর,
প্রকৃতির শূন্য-বন্দ ভধুই দেখিলে—

এ অনস্কৃত্যাল ধরে !

দেখ দেখি একবার, জন্ম-বন্দ অভাগার,
কি আছে স্কান এই আণের ভিভরে,
কত স্থা ওক এই পঞ্জা পুঞ্জে!

ছবী-মানবের মন এই সিশ্বালোকে—

শশি দেখ একবার ;
গগনের কক্ষে কক্ষে, অনস্ক-সাগর-বক্ষে,
হেরিরাছ কি নক্ষত্র, কি রঙন ছার—

দেখ দেখি হভাশের হুদর-ভাঞার !

কত পৃথী, কত বিশ হরেছে বিনষ্ট—

এই প্রাণের ভিতরে !

কত তারা কক্ষ-চাত! কত রত্ন ভত্মারত !—

আধারে পড়িয়া আছে কন্সরে কন্সরে;

কতু নদী—কত সিন্ধু—ওক কণেবরে !

ক্ষু বক্ষ ছাজি ভবে কেন শশ-ধর—
শ্নো ঢালিছ কিরণ ?
বাহার বুকের মাঝে, নিরাশার বস্ত্র বাজে,
কর ভার বুক ভরি কৌষ্দী করণ;
সে বুঝিবে কি মধুর ভোমার কিরণ।

কি মধুর বেশে শশি কিরণে তোমার—
আৰু সজ্জিত ভ্বন !
উর্দ্ধে নীল-নভন্তন, নিম্নে পৃথী-বক্ষ:-হল,
ভাসিতেছে গুরুালোকে স্বপ্নের মতন।
পার না কি ও আলোকে ভাসাতে জীবন ?

.শ্ন্য মরুভূমি ওই স্থ-দ্র-প্রান্তর,
তাও—শেভিছে কেমন !—
বালুকার বালুকার, চন্ত্র-কর-প্রতিভার,
কি বর্ণ—কি স্থান ক্রি করেছে ধারণ!
পার না কি এই বর্ণ প্রান্ত কীবন ?

প্রাসাদের মৃলে গুই ''পল্ল'' সরোবর— আন্ধন্ধ মলোহর ! পূর্ব-বক্ষ জ্যোৎস্থা-মর, মক্ষত্রের সর-প্রার, শোভিতেছে শাস্ত-ভাবে—সলিল নিধর; ওই শাস্তি, হয়-চিন্তে কতই স্থক্ষর ! নিশা-নাথ,

এত শাস্তি, এত স্থা, কেন অকরেন—

ঢাল ওই সরোবরে ?

শীতল-হৃদয় তার, কেন নিশ্ব কর আর,

নাহিক বিবের জালা উহার অস্তরে,

রুধা জ্যোৎলা ঢাল তাহে এমন আদরে।

> 0

>>

আহো !

এই পূর্ণিরায় হেন প্রাসাদের চুড়ে—
আন্ধ কত শত নরে,
খুলিরা হৃদয়-বার, দেখিতেছে অনিবার,
কত স্থতি—কত স্বপ্প—উন্মন্ত-অস্করে,
উপ্লিয়া জীবনের নিক্দ্-সাগরে।

53

আর আমার মন,
সেই পূর্ণিমায় সেই প্রাসাদ-শিধরে—
আমি কি দেখি এখন!
নেত্রে করে অশ্রু-ধার,বুকে ঢাকা অন্ধকার,
দগ্ধ,আশা—দগ্ধ, স্থতি—তাপে দগ্ধ মন;
ন্তুপীকার-ভশ্ম-রাশি আমার জীবন!

20

শশধর,
কত দগ্ম-হর্ম্মা-পথ কর আলোকিত--তব মধুব-কিরণে;
বিনষ্ট-পশ্পের বিক্লে, দগ্ম-গৃহে কক্ষে,
চালিরাছ এই শান্তি পীযুব-ক্ষরণে,
কেন নাহি ঢাল তবে এ দক্ষ-জীবনে ?

^{*} Disinterred remains of the ancient city of Pompeii.

পাতিরা দিরাছি বক্ষ কিরণে তোমার—
চিত্তে ঢাল একবার;
ছড়ারে জ্যোছনা-রাশি, কর
আলোকিত—হাসি,
আঁধার, আঁধার-ময় জীবন আমার;
ভাঙ্গা-ঘরে চাঁদ-আলো দেখি একবার।

১৫ পারিবে না ? বুঝিয়াছি, জোৎসায়

কভু হাসিবে না আর;

তবে যদি মর্দ্ম-ছলে, সেই কীণ-শিখা জলে, জলে উঠে কোন মতে আলোক তাহার, তিদিব-পূর্ণিমা হলে হইবে সঞ্চার।

34

ছরাশা!—যে ক্ষীণালোক হয়ে ক্ষীণ-তর—
ক্রেমে হতেছে নির্বাণ,
আজ কোন্পুণা-বলে,সে শিথা উঠিবে জ্বলে,
কে করিবে তৈল-দেক—কার ছেন্ শুর্ধণ্ট্র বে করিবে—সে যে সেই কঠিন-পাষাণ!

विने:-



এ প্রাণ-

মাধবীলতা।

: 6

সারংকাল অতীত হইলে পর কিঞ্চিৎ
বিলম্বে রালা বহির্মানীতে পুনরাগমন
করিলেন। দেওয়ানের সমভিবাহারে
নানা কথার পর জিজ্ঞাসা করিলেন,
"কতকগুলি ভট্টাচার্য্য আমার কুমারকে
কাড়িয়া লইতে আসিয়াছিলেন কুন ?
আমি তাঁহাদের ভাব ঠিক ব্রিতে পাবি
নাই, বাপোর্থানা কি ? সতা সতাই
কি তাঁহারা আমার জ্রোড় হইতে আমার
সন্ধান কাড়িয়া লইতে গিয়াছিলেন ?"

দেও। একপ্রকার তাহাই বটে,
দশর্থ নামে একজন ভট্টাচার্যা মনে
করিয়াছেন যে, রাজকুমার তাহার সস্তান,
তাহাই তিনি মহারাজের নিকট স্তান
চাহিয়াছিলেন।

রাজা। বোধ হয় ভট্টাচার্য্যমহাশ-যের। দিবসেই চক্রে বসিয়াছিলেন। তাহার পব, তাহারা কিরুপে ক্যায় হই-লেন ?

দেও। কান্ত তাহারা এখনও সম্পূর্ণ কপে হন নাই, বোধ হয় তাঁহারা এই দাবি আবার মুধ্যে মধ্যে করিতে আসি-বেন; কিন্তু আমি তাহানিগকে বিশেষ করিয়া নিশেষ শুক্তিয়াছি

ারাজার তবে কি তাছালের সভা সভাই এই ধারণা শ

দেওয়ান এই সময় লংক্ষেপে ব্রহ্মণদের
সম্পয় কথার পরিচয় দিলেন। রাজা
ছই একবার সজোরে নস্য টানিলেন।
প্রকাশ্যে চিন্তা করা তাঁছার অভ্যাস
ছিল; তিনি মৃত্যুরে ব্লিতে লাগিলেন,

ব্ৰহ্মণ-অধ্যাপক-শাসব্যব্সায়ী-এক अन नत्र. प्रदेखन नत्र, व्यानकश्ची-मकलारे छ- भागन नरर--- यामात मरन ভাহাদের কাহার ত শক্তা নাই---उँ। हात्रा (कन मिथा। विलावन १ व्यवमा তাহাদের কথার কোন বিশেষ হেতৃ ्शंकिट शांत्र-डाहाता वित्रांहिन, ¥त्रानीक प्रदेशन स्थी এ कथा जात्न," স্থীরা ত আমার লোক, ব্রাহ্মণেরা যথন ভাহাদের কথার উপর নির্ভর করিয়াছেন, তথন বুঝা যাইতেছে যে, ইহার মূল কিছু আছে। যাহাই হউক, আগার ভগিনীও এ কথার অব্খ কিছু জানেন, আমার ভগিনী—রাজভগিনী, কখন তিনি মিথাা বলিবেন না, ভাঁহার স্বামী নীবিত থা কিলে, তিনিও আজ মহারাণী—একণে कान्नानिनी-किছूट इश्न नाहे-नकन नगरबरे शामिन्य, अथह এक हे झान-জ্যোৎসাবতী ঠিক নাম, গণ্ডীর অথচ আলোকসয়—কিন্তু একটু মান—ভাহার মানতা আর ঘুচিবে না। আৰু জোংসা वडी हरकत जल (कलाइन, इव उ मतन কি বাথা পাইয়াছেন <u>স্</u>বাণী বলেন জোৎসাবতী আৰু চোখের জন কৈনিয়া অনঙ্গল করিয়াছেন, জীজাতির মন। **এই विश्वा दाया मन्दर्य कोवाद नमा**न-গ্রহণ করিলেন। দে ভ্রান্মহাশর বলি-(লন:--

"আমি মনে করিয়াছিলাম, এ বিষয়ের কোন ভদন্ত আবশাক হইবে না। আমার স্পষ্ট বোধ হইবাছিল বে, কোন রাজশক্ত এই কথা রটাইরাছে। দশরথ ভটাচার্যা কতকটা সাদা লোক, রটনার কৌশল বুঝিতে না পারিয়া রাজসমক্ষে আসিতে সাহস করিয়াছেন।"

রাজা। তা বটে, কিন্তু কণাটা এই যে রাজভগিনী সাক্ষী, তিনি ত রাজ-শক্রর দলে নহেন। তাঁহার কথা আমি কথন অবিশাস করিতে পারি না।

দেও। রাজভগিনী ত সাকী নহেন, ব্রাক্ষণেরা তাঁহার নাম উল্লেখ করেন নাই। রাজভগিনী এ কথা অবশ্র জানেন এই অফুভব আপনিই করিতেছেন।

রাজা। তা সত্য, তাঁহাকে এ কথা অবশু জিজাসা করিতে হইবে। কিছ পরের সন্তান পিও দিলে আমার পিতৃ-পুরুষ গ্রহণ করিবেন লা; তবে এমন সন্তান বইরা কেবল অধর্মাচরণ করিবার ফল কি ?

দেওয়ান। এখনও ত স্থির হয় নাই
যে রাজকুমার দশরথ ভট্টাচার্য্যের পুত্র,
যদি তাহা মহারাজের প্রতীতি জন্মে,
তথন কর্ত্তব্য বিবেচনা করা যাইবে।
কিন্তু এই সময় রাজশক্ররা মহারাজের
অভিপ্রায় জানিতে পারিলে,নানা ব্যাঘাত
ঘটাইবে।

রাজা। না, আমি কোন কথাই এখন বলিতেছি না; রাজভগিনীকে জিজাসা না করিয়া কিছুই দির করিতে পারিতেছি না, ওাঁহাকেও কোন কথা এক্ষণে জি-জ্ঞাসা করিব না; তিনি বোধ হয়, কোন রূপ মনোব্যথা পাইরাছেন।

জ্যোৎদাৰতী ৰাজবৈক সে দিবস বড় यत्नत्र करहे हिरलन, छाहात्र थिछ तानीत মনোভঙ্গ হইরাছে বৃঝিতে পারিয়াছিলেন। উৎসবের দিনে জোৎসাবতী চক্ষের জল (क्लियां इन, विवा तानीत धार्यम विविक्त জবে; তাহার পর রাজকুমারকে আশী-র্বাদ করিবার সময় জ্যোৎসাবভীকে খুঁজিয়া আনিতে হইয়াছিল বলিয়া রাণীর চিত্তবিকার আরও অধিক হয়. শেষ রাণী যথন সভাদর্শনে গিয়াছিলেন. मकन जीलाकरे छेठिया मां एवरे बाहित. কেবল জ্যোৎস্বাৰতী উঠেন নাই: রাণীকে স্মান করা দুরে থাক, একবার ফিরিয়াও চাহেন নাই; এই তাজিলা রাণীর অসহা বোধ হইরাছিল, এমন কৈ জিনি আর সেখানে তিলার্ক অপেক্ষ্যীনা করিয়া भवनमन्दित चानिया भवन कविटनन ।

দশরথ দেবশর্মা গোপনে যে ছইজন
দাসীর নাম করিরাছিলেন, তাহারা রাণীর
সর্বাদাই সঙ্গে থাকিত, রাণীর মনের
গতি বিশেষ বৃবিত, অতএব রাণীর সঙ্গে
সঙ্গে শরনাগারে আসিরা ব্যলন্থতে ইচ্ছাপূর্বক জ্যোৎসারতীর আপকে ছই একটি
কথা বলিতে আরম্ভ করিয়া দেখিল, রাণীর
রাগ বরং তাহাতে বহ্নিত ছইতে লাগিল। কাজেই দাসীরা ক্রমে ক্রমে
ছর ক্রিরাইল, সাবধানে জ্যোৎসাবতীর
ছই একটি দিক্ষাবাদ আরম্ভ করিল;
এমন, সমর অপর একজন পরিচারিকা
অতি ব্যক্ত ছইরা শরনগৃহে প্রারেশ কবিরা বলিল, 'ঠাকুরাণী কোথার? বিষম

বিপদ্ উপস্থিত; অনকতক লোক রাজকুমারকে লইরা পলাইতেছিল ।'-- "রাজা
কোণা!" বলিরা রাণী বাছিনীবৎ সম্বর্গে
উঠিলেন। পরিচারিকা বলিল, " রাজকুমারকে বৃকে করিরা তিনি অন্তঃপুরে
আসিতেছেন।" রাণী শিখিলোদ্যম হইরা
আবার পর্যান্ধে বসিলেন। পরিচারিকাচলিরা গেল।

যে ছইজন দাসী রাণীকে বাজন করিতেছিল, একজন বলিল, "আমরা তা আগেই জানি, রাজভাগনীর মহলে রাম না হতে রামারণ হয়ে গিয়াছে। আজ ছেলে কাড়িয়া লইতে আসিবে পরামর্শ হয়েছিল, আমরা ভাহা পুর্কেই শুনিয়াছিলাম।"

রাণী। কি শুনেছিলি ? প্রথম দাসী। আমাদের সে সকল কথা বলিতে সাহস হয় না।

বিতীয় দাসী। আমাদের বলা ভালও হয় না, আমরা যেমন লোক সেইরূপ থাকাই ভাল, আমাদের কথায়
রাজঘরে মনান্তর হইলে আমাদের সে
কলঃ রাশিবার স্থান হবে না।

ৰাষ্ট্ৰী। আমি সকল কথা শুনিতে চাই, আমার লোক হলে, আমার বিক-শ্বের কথা বে গোপন করিবে, আমার বাটীতে তার স্থান, হবে না।

প্রথম দাসী। আমাদের উভর সকট, তা আর ভর করিলে কি হবে, রাগ করিবেন না; একদিন আমরা ছইজনে রাজভগিনীর মহলে গিয়া ভনিয়াছিলাম

य এडिमिरमत्र शत बांबवःराम शिखरनांश हता। -(य द्वरण कामना नाननशानन করিতেছি, সে ছেলে নাকি কোন্ বামুন-श्राद्य मगर यथन चार्यन (सन् । মুচ্ছা যান, তখন নাকি রাজভগিনী মরা (मरम ज्याकी (मर्थ, कैं।मिरक कैं।मिरक আপন মহলে চলে যান, ভাহার পর जामद्भाना कि कान शहरक मिरा तमह মরা মেয়ে কোন্ বামুনদের আঁতুড়ে রেখে, তাদের নাকি ছেলে আপনার আঁতুড়ে এনে দিই। স্বাবার নাকি টাকার লোভে আমরা এ কাল করে-ছিলাম; চোৰখাগিরা বলে কি, রাজপুত্র হলে वड़ घठा हरव, व्यत्नक मान शान হবে, তাই নাকি আমরা হলনে পরামর্শ करत (ছলে वमन करत्रिकाम।

রাণী। তোরা রাজভগিনীর মুখে এ কথা শুনেছিলি?

প্রা, দা। না, তার মুখে কেন ? আমাদের কি এত সাহস হয় যে আমরা সে
কথা বলিতে পারি। আর পাঁচলনে
এ কথা বলিভেছিল, তবে ভিনি সেখানে
বসে ছিলেন। তা তার বলা কাজেই
হল বই কি, ভিনি, ত বলিলের না যে
একথা মিখা।

রাণী তৎক্ষণাৎ সিংহীর স্তার কুলিরা উঠিলেন। মাথা বাঁকাইরা প্রেণম লা-সীর প্রতি চাহিরা রহিলেন। তুর্দম রাগহেতু কিরৎক্ষণ কথা কহিতে পারি-লেন না। তাহার পর কথকিৎ বৈর্ঘা অবলম্বন করিয়া ব্লিকেন, "তোমরা একখন বাও, জ্যোৎমাবভীকে বল গিয়া, যে যত দিন ভিনি আমার মললাকাজ্জী ছিলেন, তত দিন ভার এ বাটাতে থাকা ভাল দেখাইরাছিল।"

প্রথম দাসী চলিয়া গেল। করেক পদ গেলে আবার রাণী তাহাকে ফিরা-ইয়া বলিলেন,"ক্যোৎসাবতীকে ডাকিয়া ভাঁহার নিজের মহলে লইয়া গিয়া এই কথা বলিবে। আমার মহলে এ কথা বলিবে না।"

দাসী বিনীতভাবে জ্যোৎসাবতীকে
ডাকিয়া তাঁহার মহলে লইয়া গেল।
তাঁহার পাদমূলে বসিয়া ছই একবার
চক্ষের জল মুছিল, তাহার পর বলিল,
"রাণীঠাকুরাণীর কি হয়েছে, সকলকেই
কটুবাক্য মুলিতে আরম্ভ করিয়াছেন,
এমন দিন ব্যার না বে অনর্থক ছই
একবার আম্রা তির্কার না ধাই—"

জ্যোৎ। তাই বলে তোমরা কিছু
মনে কর না, তিনি স্বাভাবিকই একটু
রাগী, রাগটা পীড়ার মধ্যে, রাগ বার
আছে ভার উপর দরা হয়। যদি
স্তীলোকে রাগ করে কথা কর, তাহা
হইলে বড় কুৎসিত দেখার, স্তীলোকের
রাগ তনিলে আমার বড় লক্ষা হয়।
গর আছে বে, সত্যভামা একবার রাগ
করে একজনকে গালি দিতেছিলেন,
এমন সমর প্রকৃষ্ণ একখানি দর্শণ লইরা
তাহার সন্মুধে ধরিলেন, সত্যভামা আপনার রাগভরা মুধ দেখে বড় লক্ষিত
হলেন, আর সেই অবধি ক্থন তিনি

রাগ করে কথা কহেন নাই। রাগ হলে চুপু করে থাকিতেন।

দাসী। তা যাহাই হউক, আমাদের উপর রাগ করে যাহাই বলুন, আমরা সকলই সহা করি, কিন্তু এখন যে বাড়া-বাড়ি আরম্ভ করিলেন।

"কেন, আবার কার উপর বাগ করে কি বলেছেন ?" এই কথাট জোংসাংবা বতী কুন্তিভভাবে জিজ্ঞাসা করিলেন, সঙ্গে সজে তাঁহার মুখ মণিন হইয়া

দাসী। তা আপনি ত ব্ৰেছেন। জোং। তা হোক্, রাণী আমার উপর জন্ম জন্ম রাগ করুন।

দাসী। তিনি রাগ করে বলিলেন বে—

জ্যোৎ। যাহাই বলুন, লৈ কথা আমার আর গুনাইবার আবশাক কি?
দাসী। আবশাক আছে বই কি,
তিনি যে সে কথা গুনাইবার জন্ত আমার
পাঠালেন।

জােং। তুমি বল গে "বলেঁ এসেছি, তাহা গুনে অনাথিনী জােংসাবতী অনেক কেঁদেছেন," তাহা হইনেই ত রাণীর তৃপ্তি হবে ?

দাসী। না, তিনি বলেছেন আপ-নাকে এখান হতে চলে যেতে, না গেলে তাঁহার ভৃপ্তি ইবে না।

দাসী এই বলিয়া চলিয়া গেল, বাই-বার সময় জ্যোৎসাবভীর প্রতি আর ফিরিয়া চাইতে পারিল না। · >>

সেই দিবস রাত্রি ছুই প্রাহরের সময় জ্যোৎসাবতী ছাদের উপর শরন করিয়া চল্লের প্রতি চাহিয়া আছেন, নিকটে তাঁহার পরিচারিকা মাতদিনী বসিয়া আছে, মধ্যে মধ্যে বলিতেছে, "রাত্রি অধিক হয়েছে ঘরের ভিতর চলুন।" জ্যোৎসাবতী বাকাদারা কোন উত্বর না দিয়া দীর্ঘনিশাস ফেলিয়া বা অঞ্চলে মুধ মুছয়া উত্তর দিতেছেন। যথনই মাতদিরী কথা কহিতেছে, তথনই জ্যোৎসাবতী এইরূপ করিতেছেন; মুধে কথা নাই, চক্ষে জল নাই বর্ধণোলুধ মেদের নায়ে ভিরভাবে আছেন।

অনেককণ পরে জ্যোৎসাবতীর চকে জল আদিল। পূর্ণিমার রাত্রি মেঘা-वृष्ठ इहेरल ज्ञान ब्लाएका प्रथिया (यमन कथन कथन लाग कैरम, क्यां व्या-বভীর সানমূথে চক্ষের জল দেখিয়া সেইরূপ মাত্রিনী কাঁদিল। মাত্রিনী হয় ত ভাবিল, জ্যোৎসাবতীর মনো-বেদনা বাভিল। মাতঞ্জিনী অরবয়স্থা: वृक्षिण ना, य यथन विषय अफ़ वहिट्ड থাকে তখন এক ফোঁটাও জল পড়ে না-ৰড থামিলেই জল হয়। জ্যোৎমা-বতীর হৃদরে যতকণ ঝড় বহিতেছিল, ততকণ চকে জল আইগে নাই; ঝড় मनी जृत हरेन, जात हरक बन जानिन। गांडिन नीत चन चन निषान छनिया ন্যোৎলাবতী ভাহার মুধপ্রতি ফিরিয়া চাছিলেন, শেষ উঠিয়া তাহার চক্ষের

জল মৃছিয়া দিলেন। জোৎয়াবতী
নেহময়ী—সকলকেই ভালবাসিতেন,
সকলকেই লেহ করিতেন, বিশেষতঃ
ভাবার ছংখীদিগকে; যে নিজে ছংখী,
সেই কেবল অন্যের ছংখ ব্বিতে পারে।
মাতলিনী পিত্মাত্হীনা, আশ্রয়হীনা,
বিধবা,বিশেষতঃ সে মাত্সবোধন করিত
বলিয়ুা
জ্যাৎসাবতী তাহাকে বিশেষ
সেহ করিতেন।

মাতদিনীর চক্ষের জল মুছিয়া জ্যোৎ নাবতী জিজ্ঞাসা করিলেন, 'মাতি ি তুই কাদিস কেন ?''

মাতদিনী উত্তর করিল, "এখন আপনি তবে কোথায় যাবেন ?"

জোৎসা। আমার আর এ জগতে স্থান কোধা ?

মাত। কেন—আপনার খণ্ডরবাড়ী?
শুনিয়ছিলাম আপনার খণ্ডর রাজা
ছিলেন, আপনি কেন সেইখানে যান্
না.। আপনার সঙ্গে ত সম্বন্ধ ঘুচে
নাই।

জ্যোৎসা। বুচে গেছে বৈ কি; আর এখন কি সম্বন্ধ ! খণ্ডরবাড়ীর কথা মনে ক্রিতে বড় কছু হয়।

এই বলিরা জ্যোৎসাবতী অনেককণ পর্যন্ত নীরবে বদিয়া রহিলেন। মাত-দিনী আর কোন কথা বলিতে সাহস করিল না। শেষ জ্যোৎসাবতী দীর্ঘ-নিখাস ত্যাগ করিয়া বলিলেন, "সে খণ্ডরবাড়ীর কথা মনে করিব না কেনই বা বলি। দিবালিশি যে সেই কথাই আমার ৰূপ, সেই কথাই লরে আমার সুখ, সেই কথাই লয়ে আমার ছঃখ। আজ আবার বে আলাত্ত সে সকল কথাই মনে পড়িতেছে।"

মাত। আপনার খণ্ডরবাড়ীর কি ক্রা মা ? আমি কোন কথা কখন শুনি নাই।

জ্যোৎ। হল্দির জাঙ্গাল দেখেছ ?

যাত। দেখেছি—সেই জাঙ্গাল দিয়ে
আমার মামার বাড়ী গিয়াছিল।ম।

জ্যোৎ। তার ধারের গাছগুলি কত বড় হয়েছে ?

মাত। সে সব খুব বড় হয়েছে। বটগাছ থেকে ঝুরি নেমে অনেকদ্র অবধি অন্ধকার হয়ে আছে।

জ্যোৎ। সে জাঙ্গাল দিয়ে লোকজন চলে ?

মাত। বড় নয়—কখন কেহ যায়।
কেহ যায় না বলিয়া তাহার মাঝখানে
বড়জলল হয়েছে।

স্বোধার তবে ঠিক আমার অদ্টের মত হয়েছে।

মাত। কেন মা ?

জ্যোৎ। সেই জালাল আমার বিয়ের সময় হয়। সেই জালাল দিয়ে আমার শশুর বিয়ে দিতে এসেছিলেন।

মাত। বিয়ের পর আপনি খণ্ডর-বাড়ী গিয়েছিলেন ?

ল্যোং। তাত যেতে হয়। সেখানে গিয়ে বোল বংসর থাকি; তার পর চিরতঃথিনী হয়ে এখানে আবার ফিরে আসি -

জ্যোৎসাবতী এই বণিয়া চক্ষের জল মুছিলেন।

মাত। তা---এতদিনের মধ্যে এঁরা আপনাকে আর আনেন নাই কেন?

জ্যোৎ। এ সকল রাজকায়দা। আন্
নার তেমন বিপদের সময় বড় ইছে।
হয়েছিল, একবার এখানে এসে কাঁদি।
আমি তখন সতের বৎসরের। বিপদের
কি জানি। সংসারের কি জানি,কপালের
কথাই বা কি জানি।

মাত। কেন মা, কি হয়েছিল।

ছোৎ। কি হয়েছিল তার কোন-খানটা বলিব, যখন তাঁর বন্ধস ২২ বৎসর তখন সেই সর্কনাশ হয়, তার পূর্বে আমি কত স্থাপ ছিলাম; ভাবিতাম পৃথিবীর স্থই বুঝি এইরূপ, এ স্থ शांक कि यात्र, मकल्बत्र क्लाल घाउँ कि ना घटि, छाडा धकवातं मान ভাবিতাম না, আপনার স্থথে আপনি ডুবে থাকিতাম, তাঁর যত্নে অঙ্কু হয়ে থাকিতাম। এজগতে কাহারও যে কর আছে তাহা একেবারে জানিতাম না, তাঁরে আদর করিতাম তাতে স্থ, আবার তাঁর সঙ্গে ৰাগড়া করিতাম তাতেও স্থা। তাঁরও স্থাধের সীমা ছিল না। কিন্ত কি তার ছবুদ্ধি হয়েছিল আমার লেখা পড়া শিখাইতে আরম্ভ করিলেন। আমি শিধিতে কতে আপত্তি করিতাম, পাঙ্গে ধরে পর্যান্ত বলিভাম, বে "আমাদের লেধা

পড़ा निधिष्ठ नारे, निधित्त अनुष्टे मन इस ।" जिनि जारा किहूरे अनिर्जन না, আমার সকল কথা হাসিয়া কাটা-ইতেন, ৰলিতেন, "জী রামায়ণ পড়িলে यि श्वामी मात्र. ७ अमन श्वामी मत्राहे ভাল।" এ কথায় বভ বাথা পাইতাম। চোথের জল মুছিয়া পড়িতে বসিতাম। তিনি আমাকে পড়াইয়া পাথী প্ড়াইতে যাইতেন; হাসিয়া বলিতেন, "এটিও তোমার মতন-খাঁচায় থাকে, জানে না যে কেন এ খাঁচা, কেন আপনার এতরপ, কেন এত মিষ্টস্বর, কেন বা এ হাৰ্যা, কেন বা এ চক্ত্ৰ, কেন বা এ পৃথিবী, কেন বা এ জগং।" আমি হাসিয়া বলিতাম, "বল, এ ছটীর মধ্যে কারে ভালবাস।" এ কথা জিজ্ঞাসা ক্রিলেই হাসিয়া পলাইতেন, তাঁর হাসি কি আর ভূলিতে পারিব ? পাখীটও তার হাসি বুঝিত, তার হাসি ভানিলে স্থা সে কত কথাই কহিত, আমি ভাবি-তাম যে আমা অপেকা বুঝি পাৰী তাঁরে (वनी व्यानत कतिन। व्यामात मध्य মধ্যে হিংসা হইত, আমি তখন আর কার হিংসা করিব ? তিনি চলিয়া গেলে তার হাসি কি কথা না শুনিতে পাইলে পাথীট নীরবে থাকিত, আমি রাগ করে তার খাঁচা ধরে কত গালি দিতাম, পাথী একবার এ কাণ একবার ও কাণ ফিরাইয়া আমার গালি গুনিত, কোন উত্তর দিত ना, একবার একবার আফাইয়া আমার আছুল ঠোকরাইত, আমি আবার গালি

সাক্ষাতেও গালি দিতাম, বলিতাম, "ও আমার সভীন।" তিনি হানিয়া উঠি-় তেন, পোড়া পাখী সৈ হাসি শুনিবামাত্র আবার আপনার স্থুর ধরিত। কত কথা কহিত, তিনিও যেন তার সকল কথা বুঝিতেন, সেই মত ভাহার সঙ্গে আমোদ • করিতেন। আমি রাগ করিয়া বসিয়া থাকিতাম, তখন বুঝিতাম না যে তাঁরে পাথীটি পর্যাম্ভ সকলে ভালবাসে। উঠানে বাহির হইলে উাহাকে পাররায় আসিয়া ঘেরিত, যে তাঁর শরীরে বসিতে না পাইত, সে তাঁরে বেড়িয়া উড়িত, তিনি মুধ তুলিয়া তাহাদের সঙ্গে কণা কহি-তেন, উর্দ্যুথথানি কত স্থলর দেখাত। রাজবাটীতে যত হাতী ছিল, সকলে তাঁরে চিনিত, ভালবাসিত। তাঁর স্নানের সময় পুদ্ধিণীতে সকলগুলি আসিত: তারে লটয়া ভলে কত্ট খেলা করিত। ভ'ডে বসাইয়া কেছ ভাঁরে জলে নামা-ইত, আর সকলে সেই সময় ভূঁড় দিয়া তাঁর গায়ে ঘল ছিটাইত। এক একদিন প্দরিণীর ধারে যখন জলচৌকিতে বসিয়া তিনি তৈল মাথিতেন সেই সময় কোন रांशे इत्र ७ सन इंटेंड शीरत शीर्त ভাঁড়ের আগা বাডাইয়া তাঁর শরীর স্পর্শ করিত, তার অঙ্গস্পর্শ না করিলে

যেন সে আর থাকিতে পারে না। জলে

নামিতে দেরি হতেছে বলে কোন ত্রস্ত

হাতী হয় ত জল-চৌকি ধরিয়া টানিত, তিনি হাসিয়া গালি দিয়া জলে বাঁপোইয়া

তিনি ঘরে আসিলে তাঁর

পড়িতেন; জলের ভিতর লুকাইতেন, জার সকল হাতীরা তাঁরে খুঁজিয়া বেড়াইড, আমি ভয়ে আড়াই হয়ে জানেলায় বিসয়া থাকিতাম, তার পর তিনি একদিকে ভাসিয়া উঠিলে সকল হাতী সেই দিকে গিয়া পড়েত। শেষ তিনি সকল হাতীর উঁড়ে এক একবার করিয়া দাঁড়াইলে তাহাদের তৃপ্তি হইত। তাহার পর স্নান হইলে একটা হাতী ভঁড় দিয়া ছাতি ধরে বরাবর তাঁকে দরজা পর্যান্ত দিয়া যাইত।

মানের পর পূজা করিতে বসিতেন। তগৃন তাঁর কি আশ্চর্যা মূর্ত্তি হইত, মুধ দেখে বোধ হইত, যেন এ পৃথিবীতে আর তাঁর কোন সংস্পর্শ নাই। যথন চকু মৃদিয়া ধ্যান করিতেন, স্মুখের দেবতারা তাঁর মুথের দিকে একদৃষ্টিতে চাহিয়া थाकिटडन। लांक विनंड, দেবতারা তাঁর সঙ্গে কথা কহিতেন। তা হবে, আশ্চর্যা কি ! তাঁর সঙ্গে কথা कहिट्ड (मवडारमंत्र हेक्डा इट्ड भारत, মাহয়ের মধ্যে তাঁর মত পবিত্র আর কে ছिল? यांत्र निक्रे वरम खादांत कतिर्छन, কোন কোন দিন আহারের পর মার কোলে মাথা রাখিয়া একটু শরন করিতেন, তখন তাঁহার মুখখানি শিশুর মত কোমল হইত যেন আদর-ভরা।

তার পর বিষয়কার্যা দেখিতে যাই-তেন, যে পর্যান্ত তিনি কাছারিবাটীতে যাতায়াত আরম্ভ করিয়াঞ্চিলেন, দেই পর্যান্ত দেওয়ানের ভয় হইয়াছিল। তাঁকে সকলেই ভালবাসিত, কেবল দেওয়ান্ বিষ দেখিত; সেই দেওয়ানই আমার কাল হয়েছিল; কিছু ভিনি থাকিতে দেওয়ান্ কিছু করিতে পারে নাই।

' তাঁর সকলই গুণ ছিল, কেবল এক দোষের নিমিত্ত সকলেই তাঁর নিনা করিত; তিনি চেষ্টা করে বিপদ আনি-তেন। বিপদ না ঘটে এই সকলের (हड्डी, किन्छ उँ। द हिंही हिल किर्म विशेष আমি তাঁরে কত বলিতাম, তিনি কিছুই শুনিতেন না, হাসিয়া বলি-তেন, "অনেকে মধ্যে মধ্যে পা না টেপাইলে কণ্ট পায়, আমারও সেইরূপ गर्धा गर्धा विश्राम ना शिष्ट्रां वर्ष कहे হয়।" আমি অবাকু হয়ে শুনিতাম। একবার কোন্ দেশে কাছারী দেখিতে গিয়াছিলেন, বাটী আসিতে পথে ও ন-লেন যে, দূরে এক পুষরিণী ভীরে ভাকা-তেরা বড় দৌরাখ্য ক্রিতেছে, পূর্বদিন একল্পন ভদ্রলোকের কনাা পালী করে শভরবাড়ী যাইতেছিল, এমন সময় ভাকাতেরা তাহাদের সকলকে মেরে (क्लाइ। छान मनीता विनन, अभाष या अब्राह्ट ना, खरन डिनि वनिरनन, के পথেই যেতে হবে। এই বলে বৌ সেজে পান্তীতে উঠিয়া সঙ্গীদের ফেলে চলিয়া গেলেন, শাত আট জন ডাকাত-(क धरत वांनी चानिरनन, किन्न जाहारमत সঙ্গে লাঠালাঠি করিবার সময় একজন ডাকাত খুন হয়। সেই অবধি আমার কণাল ভালে, কেমন তাঁর ধারণা হয় বে তাঁর লাঠিতেই ডাকাড মরেছে, অথচ সে সময় তাঁর হাতে লাঠি একেবারে ছিল না। মার লাঠিতে মরিরাছিল সে আপনি স্বীকার করেছিল, বধসীসও পেয়েছিল তথাপি তাঁহার সন্দেহ ঘূচিল

প্রথমে তিনি পূজা ছাড়িলেন, কারণ জিজ্ঞাসা করিলে বলিতেন, আমি এখন অন্তচি—দেবতারা আর আমার পূজা नर्वन ना। তার পর ক্রমে ক্রমে ष्यनामनक इरेटि नागितन, धक धक-বার বলিতেন, প্রায়শ্চিত্ত করিব, অন্যের জন্য মরিলেই এ পাপের প্রায়শ্চিত্ত হবে। আমি কিছুই বুঝিতে পারিতাম না, কেবল বুঝিতাম সে মুখে আর হাসি নাই। শেষ একদিন বেড়াইতে গিয়া দেখিলেন যে পথে একটা ছবন্ত ছেলে ইট ছাতে করে একজন পাগলকে বলিতেছে, ''আমি তোরে মারিব ৷'' পাগল ভয়ে হা করিয়া কাঁদিতেছে, য়ত-বার বালক বলিতেছে, "এই মারি" ততবার পাগল কাদিয়া উঠিতেছে: এই (मर्थ ठिनि (कमन वांकून **इरलन,** इव ভ ভয় পেলেন, তিনিও যেন ভয়ে कांपिया छेर्छन, छात्र এहेक्सन त्वाथ हत्ना, কিন্ত বাড়ী এসে তাহা আর কিছুই विगाय भावित्व मा। आधि विनवाय. ''পাগলের কারা দেখে ভূমি ভর পেয়েছ কেন, তুমি কেপেছ নাকি 🖓 অসনি ভিনি আমার মুখ চাপিরা বলিলেন, "ও

কথা কেন বলিলে? আমার ভয় করিতেছে; তবে কি সতাই,—'' এই
বলিয়া আমার হাত ছিনিয়া পলাইলেন।
আমার নিকট হইতে পলাইয়া মার
নিকটে গেলেন, ছই হাতে মার পায়ের
খুলা সর্বাক্ষে মাখিতে মাখিতে বলিলেন
'' মা, আমার পীড়া হয়েছে, তোমার
চর্লুরেণু মাখিলেই আমি ভাল হব।''
মা এই কথায় কাঁদিয়া উঠিলেন, কারা
দেখিয়া আবার ভয় পেয়ে বলিলেন,
"তবে সতাই।'' অমনি সেইখান হইতে
পলাইলেন, একবার আসিয়া পিতাকে
প্রণাম করিলেন,পিতা ভাবিলেন,অসময়ে
এ প্রণাম কেন ? কিন্ত তিনি কোন কথা
না বলে চলে গেলেন।

রাত্রে আর তাঁকে কেছই খুঁজিয়া পাইল না। সেই দিন অবধি রাজবাড়ী শুনা হলো।

চারিদিন পরে একজন জেলে আসিরা
সম্বাদ দিল যে রাজপুত্রকে পাওরা
গিরাছে। শুনিবামাত্র রাজবাড়ীর সকলে
জেলের সঙ্গে ছুটল, গ্রামের লোকও
পালে পালে পেল। আমি একা বসে
মনে মনে করিতে লাগিলাম থ্যে, এবারে
তারে পেলে আর তিলার্দ্রের মন্য ছেড়ে
দিব না: একবার তারে দেখিতে পেলে
হয়। অনেকক্ষণ পরে আবার পালে
পালে লোক ক্ষিরে আসিতে লাগিল,
রাজবাটীরও লোক সক্স ক্ষিরে আসিল;
কিন্তু তাঁর আসার কথা ক্ষেহ বলে না।
আমি ছটকট ক্রিতে লাগিলাম, শেষ

রাজমহলে কারার গোল উঠিল, আমি তখনও কিছুই বুঝিতে পারিলাম না; কিন্তু কেমন একটা আতঙ্কা হলো, আমি शिश्रा नुकारत दक्षिणाम, आश्रीम नुकारन ত কুসম্বাদ লুকান থাকে না; ক্রমে শুনিলাম, নদীতীরে জার দেহের সং-কার আরম্ভ হয়েছে. জেলে জাল ফেলিতে গিয়ে তাঁর দেহ পাইয়াছিল. তাই রাজ্যাটীতে খবর দিতে এসেছিল. কেহ তার কথা প্রথম বুঝিতে পারে নাই শেষ নদীরধারে গিয়া ব্রিতে পারিল। তার পর আমার কি হলো আমি কিছুই বুঝিতে পারি নাই। যথন উঠে বসিতে পারিলাম, তথন একদিন শ্রাদ্ধের কথা আমার কাণে গেল, আমার যে কি সর্বনাশ হয়েছে তখন কিছু কিছু व्विट भारिलाम। मर्वनारभन कथा আমার আগে সকলেই বুরেছিল, পোড়া আমি কেবল বৃঝিতে পায়রা আর সেরূপ গোল-मान करत ना, कार्निसत्र नौरह हुल करत वरम श्रीक । একদিন স্নানের সময় জানেলায় বদে পুন্ধরিণীর ধারে তাঁর ছিলাম, এমন সময় একটি হাতী দৌড়িয়া সেইখানে আদিল, সঙ্গে সঙ্গে কত লোক ছিল, কিন্তু ছাতীর কাছে কেংই আসিল না। লোকৈ ভেবেছিল হাতী কেপেছে; কিন্তু হাতীটি ঘাটে আসিয়া দাঁডাইয়া রহিল: ভিনি এই হাতীটকে বড় ভাল বাসিতেন, এই হাতীটিই তাঁরে হাতী

धतिल, এই हाजी हिंदे अक अक्षिम खरव থাকিত, আর ভিনি ভার পেটে ঠেদ দিয়ে বসে বাঁশী বালাতেন। হাতীটি অনেক ক্ষৰ পৰ্যান্ত খাটে দাঁডায়ে এদিক ওদিক ফিরে ঘুরে দেখিতে লাগিল, আমি বেশ বুৰিতে পারিলাম তাঁরে খুঁজিতেছে, এক-বার তাঁরে চীৎকার করে ডাকিল, শেষ कल नामिन, मत्न कतिन, जिनि कलत ভিতর কোথাও লুকায়ে আছেন; কত-বার ডুব দিল, কতবার মাথা ভুলে চারিদিকে দেখিতে লাগিল। আবার অল হতে উঠে অলচৌকির নিকট माँछान, जनटिक नतारेता (प्रथिन। हां कि हांग, कि भूँ बिट उक्त, मां हु उ তা বৃঝিল, কাছে এদে গা চাপড়ে বলিল, "আর কেন খোঁজ ? সে ধন হারিয়ে গেছে।" হাতী সে কথা কিছুই গুনিল नां. में। जारत्र त्रहिन, এकस्रत्तत्र होटड একটি ছাতী ছিল ভঁড় দিয়া তাহা काड़िया नहेन, बन्दिक कित्र केश्र कर्वक ভাছা ধরিয়া রছিল, ভার পর যেন তাঁরে স্নান করাইয়া বাড়ী আনিতেছে এই ভাবে ছাতী ধরে দরকা পর্যান্ত আসিল; এই দেখে মাহত কেঁদে উঠিল। জানেলা থেকে আমার দাসীরা मकल खेठाहेबा निरंत्र शिला।

ভার পর প্রান্ধ। প্রান্ধ করিতে আমার লয়ে গেল, আরোজন দেখে তা ব্রিতে পারিলাম। আমি প্রথমে কাঁদিতে কাঁদিতে কিরে আসিলাম, আর কোন মতে গেলাম না। শেষ আগার

খণ্ডর নিজে এদে একবার কাঁদিতে লাগিলেন, একবার সাধিতে লাগিলেন। আমি তথন আর কি করি, মিছে করে বলিলাম যে, "তিনি ত মরেন নাই, তিনি আবার ফিরে আসিবেন। জেলের কথা ভনে যে দেহের সৎকার করা হয়েছে, সে দেহ ত তাঁর নহে। যারা দেখিতে গিয়েছিল তারা-কেবল কাণড় দেখে চিনেছিল; কিন্তু আন্যালোকে কেহ যদি তাঁর কাপড় পরে থাকে গ্"

এই কথা ভনে আমার খভর অবাক্ হয়ে দাঁড়াইরা রহিলেন। তার পর বলি-লেন, ''সভা কপা, আমি কেন এভক্ষণ ব্বিতে পারি নাই। আমার চাঁদ বেঁচে আছে। আবার আদিবে ঠিক কথা। আমি দেওরান্কে বলি গিয়ে।

কিন্ত পাষণ্ড দেওয়ান্ তাঁর সকল কথা উন্টাইয়া দিল। আবার খণ্ডর এনে জেদ করে ধরিলেন যে "শ্রাদ্ধ করিতে হবে, নতুবা তাঁর গতি হবে না, প্রেত অবস্থায় কত কট্ট পাবেন।" আমি আর কি করি; শ্রাদ্ধ করিলাম।

মাতদিনী। আপনার খাওড়ি কিছু বিনিলেন না, আপনি তাঁর কোন কথাই ত বলিতেছেন না।

জ্যোৎ। তিনি বুধা মামুষ ছিলেন, কথন কথন তাঁর জ্ঞান থাকিত না। আমার বিবাহের পুর বরাবর দেখেছি বেশ সহজ লোক ছিলেন; কিছু যথন ভনিবেন যে, তাঁর সর্কনাশ হয়ে গেছে তিনি কথাও কহিলেন না, একদিন কাঁদিলেনও না, আমি কাঁদিলে বলিতেন, আমার ছেলের অকল্যাণ হবে।
তিনি যতদিন বেঁচে ছিলেন, রোজ্ আমার কপালে সিন্দুর পরায়ে যেতেন।
কিন্তু অধিক দিন বাঁচিলেন না। আমার খণ্ডর দিনকতক শোক করিলেন,
তার পর ক্রমে ক্রমে পুল্রশোক পর্যন্ত ভূলৈ গোলেন; বুড়ালোকের শোক কত দিন থাকে?

মাতৃত্বিনী। শোক নাকি আবার বুড়া যুবার পূপক্!

জ্যোৎ। বিস্তর পৃথক্। তা আমার
শিল্পর হতে দেখেছি। একবংসর না
যাইতেই তিনি পোষ্যপুত্র লইলেন।
একদিনের জন্যও আপন পুত্রকে শ্বরণ
করিলেন না। তার পর আর এক
কাণ্ড হরে গেল, যার অদৃষ্ঠ মন্দ তার
যত্রণা পদে পদে, বিধাতা যেন তারে
এক্বার মেরে ভৃপ্তি হন না।

আমি বিধবা হবার দশবৎসরের পর একদিন বৈকালে পাঁচজনে একতে বসে আছি, এমন সময় আমার খাণ্ডড়ির একজন দাসী ছুটে এসে বলিল, "আবার যে কি শুনিতে পাই।" খাণ্ডড়ির শরণের পর অবধি দাসী আর রাজবাড়ীতে থাকিত না; কখন কখন আমার সঙ্গে দেখা করিতে আসিত। আমি তারে জিজ্ঞাসা করিলাম "কি কথা শুনিতে পাও ?" সে বলিল, "এবার সত্য সত্যই নাকি রাজকুমার ফিরে এসে-

ছেন, তিনি ফার্ব্তনবাগে বসে আছেন বাপকে খবর পাঠায়েছেন, রাজামহাশয় সেখানে এই গোলেন।"

এই সময় आत्र এक जन त्री ज़ाति कि এসে বলিল, ''আমি এই তারে স্বচক্ষে (मध्य धनाम, वफ़ कान इस् (शरहंन; প্রথমেই আমার সঙ্গে দেখা, আমি ফাল্পনবাগের পুকুরে জল আনিতে গিয়া मिथ घाटि अकबन मनामी वंदम আছে। কে আর বল সন্নাসীর দিকে ফিরে চায়, আমি কলসী হাতে জলে নামছি এমন সময় সর্যাসী আমার ডেকে বলিলেন 'কাদম্বিনি আমায় তোমরা চিনিতে পার ?' আমি অবাক্ হয়ে তার মুখ দেখিতে লাগিলাম, মনে হতে লাগিল ঠিক যেন আমাদের রাজ-কুমারের মত, কিন্ত তিনি ত নাই। তার পর তিনি আমার মনের কথা বুঝিতে পেরে হাসিমুখে বলিলেন, 'তবে আমায় আর বুঝি চেনা যায় না।' সে হাসি দেখিবামাত্র আর আমার मत्नह बहिन ना ; आमि काँनिया छेठि-नाम, शनाम कानफ निरम खनाम करत যোড় হাতে বলিলাম, আর এখানে (कन ? जिनि विलियन, 'आंगांत विनश আছে;' আমি বলিলাম যে, তবে धरे ममग्र (वी-जानीटक थवत्र निरे त्म, তিনি সে, কথার কোন উত্তর না দিয়ে বলিলেন, 'তিনি নাকি এখন বড় বিজ্ঞ হয়েছেন? বিজ্ঞবভীকে একবার দিজাসা क्ता वायणाक (य कान् विकाशांत्र मक्त

छिनि की देश पानी व थांक करवरहून।' তা আমি আর কোন কথার উত্তর মা করে ঘাটের উপর কলসী রেখে একে-बादा क्रूटि अमिह; वाड़ी व बारे नारे।" वंदे नवारमत भन्न आमान महत्न चाह्नात्मत्र ८०७ छेर्छ भाग, हातिविदक मकल कूठांकूछि करत वाड़ी शतिकात করিতে লাগিল। আমি নির্জ্জনে গিয়ে कॅमिए वाशिनांग, (कन कॅमिनांग ভাহা জানি না. অনেককণ ধরে কাঁদি-লাম। ভার পর দেখানে দাসীরা আমার চুল বাঁধিতে গেল, আমি বারণ করিলাম না, ভার পর ভাহারা যথন আমার অলঙ্কার পরায়, তখন আমি বলি-लाम, स्य এখন রাখ তিনি এসে আমার चार्थान भवारेबा पिटवन, मागीवा विनन, "সে কি কথা। তিনি কি এসে আপনার এই বিধবার বেশ দেখিবেন ?' আমি कान कथा विननाम ना। গহনা পরাইল। পরে তিনি এসে প্রথমে আমার কি বলিবেন আমি তাঁকে कि वनिव এই कथाई मान मान दक्वन छाविट नाशिनाम। क्रांग मुद्दा। इतना. उथन ७ जिन धालन ना, मान कतिनाम বাপের কাছে এই দশবংসরের কটের কথা পরিচয় দিতেছেন; তার পর রাত্রি **धक शहत हरन भामि धक्यमरक विन-**লাম যে,ভোমরা একজন রাজম্হলে যাও मचाम कि सानिया आहेग। (म दनिस यावात छेशात नारे, पत्रमा वक्त। ८४%-शांत्नत एक्ममण एव अवादनवा एवळाव

চাবি विश्वादक ; यांता तांव शूरकात नवांव এনেছিল, তারাও বাড়ী যাইতে পার मादे। आभाग वड़ भामक इला, किइ বুঝিতে পারিলাম না। সমস্ত রাভ; चामका नकरम वरम बहिनाम, रकान मधान श्रिनाम मा, नत्रबां उत्र श्रुत क्लिन। (म क्नि (मन, जात भन्न किन श्न, এইরপে आটमिन श्नि मत्रवात. চাবি কেহ খুলে দিল না। এই আদেন **এই** चार्मन मत्न करत्र माञ्च कत्रक्रिन বলে থাকিতে পারে! ক্রমে আমার শরীর অবদন্ন হয়ে পড়িল, আমি অজ্ঞান হলেম, অর্বিকার বলে আমার ठिकिश्ना चात्र इता, चामि कत्रमिन ष्यकान हिनाम छ। बानि ना, यथन আমার জান হলো, তথন আমার किছ्हे मान हिल नां, क्रांस क्रांस नक्त कथा मत्न इत्ना, जामि भयाम পড़ मक-লের মুখের দিকে চাহিয়া থাকিডাম, কে-হই আমায় কিছু বলিত না; জিলাসা করিতে আমার সাহসও হইত না; একদিন আমি সাহস করে विकामा ক্রিলাম, যাহা শুনিলাম, তাতে আর এ প্রাণ ত্রাখিতে ইচ্ছা হলো না। ঘুৰ্ভাগীৰ প্ৰাণ কি বাহিৰ হয় ? সেই वामि वाबर (रैंटि वाहि।

মাতদিনী। আপনি কি গুনিলেন ?
ক্যোং। যে দিন তিনি কিনে এদেন, কান্তনবাগ হতে পিডাকে একথানি পত্ৰ লিখিলেন, পত্ৰ পাইবামাত্ৰ
রাজা ফান্তনবাপে সুটলেন, সেখানে

शिवा श्वांक दूरक करत कछ कैं। पिरनन, ভার পর যথন আমার খাণ্ডভীর মরণের क्था इएडिल, उथन दम्ख्यान्यश्य काञ्चनवारा रालन: किञ्च जिनि ताब-পুত্রকে চিনিতে পারিলেন না। রাজা স্বরং চিনিয়াছেন,দেওয়ান্ চিনিতে পাক্ষন বা না পারুন, তাহাতে আর কি ক্ষতি ? রাজা বুলিলের, "এখন তবে বাড়ী চল;" রাজ-পুত্র রাজার সঙ্গে উঠিতেছিলেন, এমত সময় দেওয়ান্ বলিলেন, "একটা কথা चाहि, जमकारम आक कता वरेताह, कर्त वाठी याहेवांत्र शृद्ध छहां वांगापत निक्षे वावचा लख्या व्यावभाक: यि তাঁহারা প্রায়শ্চিত্তের ব্যবস্থা করেন, তাহা হইলে সেটা করা চাই।" दिनात, " এ कथा मञ्चल वर्ष, जामि এখনই বাটী গিয়া ভটাচার্যাদের ডাকাই-ভেছি।"

রাজা বাটী গেলে রাজপুত্রের সেবার
নিমিত্ত করেকজন চাকর ফাল্পনাগে
আসিল, তাহারা সকলেই নৃতন লোক,
রাজপুত্র তাহাদের কাহাকেও চেনেন না,
তাহারাও কেহ রাজপুত্রকে চেনেন না।
রাজপুত্র তাহাদিগকে পুরাতন চাকরদের
সমাদ একে একে জিজাসা করিলেন,
তাহারা বলিল, "পুরাতন চাকর আর
রাজসরকারে কেহই নাই।" রাজপুত্র
কিছু আশ্চর্যা হলেন, কিছুই হেডু অমুভব
করিতে পারিলেন সা।

পরদিবস প্রাতে পেন্ধার আসিয়া বাহুপুত্রকে বলিল,"বলি আপনাকে রাহু-

পুত্র বলিয়া গ্রহণ করা হয়, ভাষ্ট। ইইলে একটা প্রায়শ্চিত্ত করা আবশ্যক: ভট্টা-চার্যোরা এইরূপ ব্যবস্থ। দিয়াছেন; ভাহার উদ্যোগ করিতে হুই একদিন বিশ্ব হইবে, অতএব যে পর্যান্ত তাহা না হয়, সে পর্যান্ত আপনি এই ফাল্পনবাগে থাকিবেন। যাহাতে আপনার কোন কষ্ট শা হয়, তাহার নিমিত্ত রাজাবাহাত্রর আমাকে পাঠাইরাছেন।" এই কথায় রালপুত্র কিঞ্চিৎ বিরক্ত হলেন, জিজাগা করিলেন, "(যদি রাজপুত্র বলিয়া আপ-নাকে গ্রহণ করা হয়) এ কথা বলিতে কে তোমায় শিখাইয়া দিয়াছেন ?" পেস্কার বলিল, "রাজাবাহাত্র নিজে, ডিনি যেমন বলিতে বলিয়াছেন, আমি ঠিক (महेक्प निर्वाम कविशाहि।"

রাজপুত্র তৎক্ষণাৎ পিতাকে একখামি পত্র লিখিয়া একজন চাকরের হস্তে দিয়া বলিলেন, "এই মুহুর্তে রাজবাটী যাও, পত্রথানি রান্ধাবাহাছরের হাতে দিবে, অন্যথা না হয়।" চাকর "যে আজা" विनश्चा विनांत्र दहेन ; श्राह आत्मक বিলম্বে উত্তর আনিল। উত্তরথানি দেওয়ান্ মহাশয়ের স্বহন্তের লেখা; কিন্তু তাহার শিরোভাগে রাজার দন্তথত ছিল। রামপুত্র পত্রথানি ছই তিনবার পড়ি-লেন, তাহার প্রথমভাগে স্বেহপূর্ণ বাক্য, শেষভাগে বিপরীত কথা। রাজপুজের वड़ मत्मह इहेगै; किन्छ (म पिवम আর কিছু বলিলেন না। রাজে ভাঁহার মনে इहेन त्य, जिनि इहे निवन जानिया-

ছেন, থাৰবাসীরা এ সন্থাদ অবশ্য পাইরাছে; অবচ কেহ এপর্যান্ত উাহাকে ভাগ বাসিত। কি ? সকলেই ত ভাহাকে ভাল বাসিত। পরস্বিস একজন চাকরকে ভাকিরা কিজাসা করিলেন, "তুমি এ প্রামের প্রধান প্রধান লোকদের চেন।" সেউন্তর করিল, "আমি কাহাকেও চিনি না।" রাজপুত্র বলিলেন, "কোন প্ররাতন আমলাকে আমার নিকট ভাকিরা আন।" সেউন্তর করিল, "প্রাতন আমলাকে আমার নিকট ভাকিরা আন।" সেউন্তর করিল, "প্রাতন আমলাকেই আর রাজবাটীতে নাই।" রাজপুত্র আশ্রুর্যা হইলেন—সাবেক কোন চাকর নাই, দরওরান নাই, আমলাও নাই, তাৎপর্যা কি!

পরদিন প্রাতে রাজার নিজ হাতের এক পত্ৰ পৌছিল; তাহাতে লিখিড ছিল, " নগরবাসীদের মধ্যে রাষ্ট্র যে ভূমি वाक्यूज नह, कांशाकाव अक्यन देवक-বের সন্তান, আমার ছুর্ভাগ্য শুনিয়া আমার প্রতারণা করিতে আসিরাছ; ৰদি তাহা সত্য হয়, তাহা হুইলে ভোষার চেষ্টা বৃধা; ভোষার এথানে থাকাও বুথা। স্থার যদি তুমি সভাই व्यानात शुख इड, छाहा हरेल व्यनातात्मरे বৃদ্ধিতে পারিবে বে,এই অবস্থার তোমায় श्रह्ण कडिरण (लांटक व विश्वान कविरव, रय चामि देवकृदवत्र मखान धार्य कृतिवाहि। যৰি আমার পৌতা ইয়, লোকে ভাষাকে रेक्करवर श्रुष्ट वनिरव, ध कनक हरेरतः मानता (कहरे पूषी हद ना; अठवर

कृषि निरक्रे विरयमा कतिया আমার বিবেচনার উপর निर्धेत कतिल ना ; आमि तुष हरेशाहि, তাহাতে পুত্রশোকাকুন, এ সময় সক-লেই আমায় প্রতারণা করিতে পারে, তাহা না হইলে সে দিবস ভুমি 'পুত্ৰ' বলিয়া পরিচয় দিবামাত্র আমি ভোমায় (कन वृत्क कतिया कैं। विशास १ कि कूरे । प्रिथिगांभ मां, श्रीनगांभ मां, रकाम जन्छ है করিলাম না; আমি তখন একেবারে ভাবিলাম না যে, যে সম্ভান মরিয়াছে, याहात (पर पार कताहेबाहि, याहात आह कतारेग्राहि, त्म मखान चावात्र किक्राभ ফিরে আসিবে? অতএব ভূমি আর কোন চেষ্টা করিও না, এ পত্রের উত্তর व्यामि हाई ना, उछत्र मिल तम भव यामात्र निक्रे (शीहित्व ना; यामात সহিত সাক্ষাৎ করাও বুথা, ভাহার **८० डी कतिरम ७ माक्मार इटेरव मा; वतः** তঃহাতে তোমার ক্ষতি হইবে।"

রাজপুত্র পাত্র পাইয়া অনেককণ পর্যান্ত বসিয়া রহিলেন, ভাহার পর হঠাৎ উঠিয়৷ বৈঠকখানা হইতে বাহির হইলেন; পেয়ার আসিয়া জিজ্ঞাসা করিল, "কোথার বাইতেছেন?" রাজপুত্র বলি-লেন, "রাজবাটা।" পেয়ার বলিল, "ঘাইতে নিষেধ।" রাজপুত্র ভাহা গ্রাহ্ না করিয়া চলিয়া গেলেন। পেয়ার ভৎক্ষণাৎ একজন বোদ্ধসভয়ার- রাজ-বাদ্ধীতে পাঠাইয়া দিলেন; য়াজস্ত্র দেখানে ক্ষাসিয়া ভেকিলেন, রাজহারের

সমূৰে কয়েকজন বলিষ্ঠ সিপাছী যেন छाहात्रे निमिष्ठ मैं। प्रेशा चाह्य ; छाहा-(एव मर्था এक्जर्न ज्ञात्रत रहेवा क्रिकाना বৈরিল, "আপনি কি চান ?" রাজপুত্র वितासना "वाकनर्यन।" निभादी छेखत করিল,"নিষেধ আছে।" তথাপি রাজপুত্র • অগ্রদর इहेलन, मिलाही পথরোধ করিল, •রাজপুত্র,ভাহাকে দুরে নিক্ষেপ করিয়া ताबवांने आदम कतिएं हारे। भारतन, তখন আর সকল সিপাহী আসিরা তাঁ-হাকে শৃগাল কুরুরের মত ধরিল, তিনি প্রথমে রাগে চীৎকার করিয়া উঠিলেন: দিপাহীরা ভাঁহার হাত পা বাঁধিল, শেষ তिनि वनित्नन, "बात श्रास्त्रम नाहे, এখন আমি বুঝেছি।" সিপাহীরা ক্ষান্ত হইল। তিনি আপনার বাবে আপনার চাকরের হাতে বাধা পড়িলেন, সেইখানে পিতা বঙ্গে, ফিবেও চাহিলেন না। অণুষ্ঠ মনা হলে পিডাও শতা হয়।

সিপাহীরা ভাঁহাকে স্থানান্তরে লইরা গেল। পথে বিশুর লোক অমিল; সকলেই " লালরাজা" বলিয়া উপহাস করিতে লাগিল, কেছ কেছ গায়ে ধুলা দিতে লাগিল। রাজপুত্র আর মুখ তুলিলেন না।

আটদিনের পর আমার মহলের দর্যা গ্লে দিলে আমার দাসীরা গিরা স্থাদ আনিল; অথমেই সকল কথা আনিতে পারি নাই; ক্রমে আনিলাম। তথন আমি নিজে রাজস্থলে গিরা খণ্ডরের গারে কাদিরা পড়িলাম। ভিনি বলিলেন, "যাহা শুনিয়াছ সকল মিপ্যা। একজন
ছষ্টলোক জাল সেজে এসেছিল, জামি
ভাবে বাঁধিয়া দেশছাড়া করে দিয়াছি।"
জামি বলিলাম, "আপনি তাঁকে নিজে
চিনেছিলেন, তাঁরে পেয়ে কত কেঁদেছিলেন, তবে এরূপ কেন করিলেন?"
ভিনি উত্তর করিলেন, "আমি চিনিলে
কি হয়, জামি রয়, আমার ভ্রম হতে
পারে; কিয় দেওয়ান্ তাঁরে বাল্যকালাবধি দেখে আসিতেছে, দেওয়ানের ভ্ল
হবার ত কোন কথা নহে। যথন
দেওয়ান্ বলিল "এ ব্যক্তি রাজপুত্র নহে"
তখন অবশাই আমার সন্দেহ হইতে
পারে।"

আমি বলিলাম দেওয়ান্ তাঁকে নিশ্চয়ই
চিনেছিলেন, কেবল আপনাকে তাহা
বলেন নাই। আপনি কি তুলে পেছেন
যে দেওয়ানের প্রকে আপনি পোষাপ্র
লয়েছেন ? আপনার প্র ফিরে আসিলে
দেওয়ানের অবশ্য ক্ষতি আছে, কাঞ্চেই
দেওয়ান্ মহাশয় আপনার নিকট মিধা।
বলিয়াছিলেন ।

এই কথার খাল্ডরমহাশর অনামনর হইলেন; কশবিলম্বে বলিলেন, "এমন হবে না; এত অধর্ম আচরণ দেওরান্ কথনই করিবে না। আমি তারে চিরকাল প্রতিপালন করেছি, তার কত উপকার করেছি, আমার সে নিতান্ত অমুগত, সে কথন এমন অধর্মাচরণ করিতে পারে না।. যে ব্যক্তি এসেছিল, তার আকার অবরব কৃতকটা আমার ছেলের সঙ্গে

নিলেছিল বটে, কিছ বর্ণ সে নয়, মুখের সে হাসি নয়, শরীর ডেমন নয়ম নয়, আবার কডকওলা লাড়ি আছে। তবে এরে দেখিলে তারে মনে পড়ে বটে। কাছেই ছেওয়ানের কোন দোষ ছিল না।
—কিছ আমার এক কথা আছে, দেওয়ানের সঙ্গে কথা কহিতে কহিতে যখন প্রথম আমার সন্দেহ উপস্থিত হয়, তখন আমি তাহারে বলিয়াছিলাম 'আর একবার আমি নিজে গিয়া সন্দেহভঞ্জন করে আসি।' কিছ দেওয়ানই তাহার বাধা দিয়াছিল।"

আমি সময় পাইয়া বলিলাম, "প্রথম সন্দেহও বােধ হয় দেওয়ান্ মহাশমই উত্থাপন করে থাকিবেন।" রাজা ভাবিয়া বলিলেন, "তাও সত্য, কিন্তু গ্রাম-শুদ্ধ লােক তাহাকে ভালরাজা বলেছে, কেহই ত চিনিতে পারে নাই। সকলেই ত তারে দেখেছে।"

আমি উত্তর করিলাম, "প্রামের কেইই ত তাঁকে দেখে নাই। কান্তনবাগে কাহারও যাবার ছকুম ছিল না, দেও-রান্মহাশর নিজের লোক তথার রাখিরাছিলেন, কাহাকেও তথার যাইতে দেন নাই; যদি কেই যাইতে পাইত, তাহা হইলে সকলেই তাঁরে চিনিত। তিনি যথন এসে প্রকরণীর ধারে বসেছিলেন, ডখন কাদ্বিনী ভাঁহাকে দেখিবামাত্র চিনেছিল। তিনি ত তখন তার কাছে "রাজপুত্র" বলে পরিচর দেন নাই,তখন কাহারও কাছে নিজের পরিচর দেন

নাই, আপনাকেও তথন পত্ত লেখন নাই; কাদখিনী বেমন দেখিবা মাজ তাঁকে চিনেছিল, দেখিলে আর সকলেও সেইমত চিনিত। আর কেহই না/ চিহ্নক, আপনি ত তাঁকে চিনেছিলেন। তবে যে লোকে আলরাজা বলে গোল-যোগ করেছিল তাহা তাহাদের দোম নর; , দেওরান মহাশয় লোকের কাছে যেমন পরিচয় দিয়াছিলেন, লোকও তেমনি বলাবলি করেছিল। কেহ ত ফাল্পনবাগে প্রবেশ করিতে পায় নাই।"

রাজা অনেককণ অবধি নীরবে রহিলেন, তার পর দীর্ঘনিখাস ত্যাস করে
জিজাসা করিলেন, "এতদিন আমার এ
সকল কথা বল নাই কেন ?" আমি
বলিলাম, "দেওয়ান্মহাশয় আমার মহলে
আটদিন চাবি বন্ধ করে রাধিয়াছিলেন,
কাজেই আমি কোন কথা ৰলিয়া পাঠা
ইতে পারি নাই।"

আমার খণ্ডর বলিলেন, " এখন দেওরানের ষড়যন্ত্র বৃদ্ধিতে পারিলাম, আমার
বৃদ্ধ পাইরা আমার এই হুর্গতি করেছে,
আমার সোণার চাঁদকে তাড়াইরাছে।
যাবার বেলা ছেলে আমার কত ব্যথা
পেরে গেছে; আমার নাজানি কি ভাবিরা
গিরাছে! আমি কি নরাধম! আমি এখনই তারে খুঁজিতে চারিদিকে লোক
পাঠাইব।"

আমি বলিলাম, "এক্ষণে লোক পাঠান বুঁথা, তাঁকে অনুসন্থান করে এমন লোক অপিনার আর একটিভ নাই।

যাহারা আপনার লোক ছিল, তাহারা नकलारे धरक धरक ছেড়ে शिवाह ; এখন বাহারা আছে, তাহারা কি আমলা, क्षि हांकड़, कि निशाही, नकलाई (ए ख्यारनत लाक, ए ख्यारनत रेव्हा ना থাকিলে তারা কখনই অনুসন্ধান করিবে बना।" बाबा वनितन, "वर्षे, आभाव এমন অৰ্ছা করেছে! আমি এখনই (मृ अमानाक जाफ़ाईर ।" এই বলিয়া মহা রাগত হয়ে বাহিরে গেলেন, আমিও আমার মহলে 'আসিলাম। তখনই দেওয়ান্কে বরখান্ত করিয়া রাজবাটী হইতে চলিরা যাইতে অমুমতি পাঠাইলেন। দেওয়ান্রাজাক্তা শুনিয়া প্রথমে ঈষৎ হাসিল, তার পর মুথ ভার করে যোড়হাতে রাজসভায় গিয়া এক-পার্ছে দাঁড়াইরা জিজাসা করিল, "দাসের কি অপরাধ হয়েছে ?" তাহার নম্রতা (मर्थ दावांत्र किकि९ त्रांश क्यिल। दाजा ববিলেন, "তুমি ষড়যন্ত্র করে রাজপুত্রকে তাড়াইয়াছ, অতএব তুমি এই মূহর্তে षामात्र वाजी श्रेटिक या छ। यमि ताल-প্ত্রকে তল্লাস করে পুনরায় আনিতে পার, তবেই আমার এখানে মাঝর ভোমার স্থান হবে; নতুবা এই প্র্যান্ত।'' দেওয়ান্ त्राबात्र शा धरित्रा चित्रत, "क्रमा क्रमन, আমার কোন অপরাধ নাই; আমি कान यक्षत्र सानि ना, खादा इटेरल অনেক ক্লান অব্ঞাধরা পড়িতাম। আমি वानकनान भवति धरे बाजगबकादव थिविभा**निक रहेन्ना चानिक्कि**। चानि

্নিতাত অহুগত বলে সামায় মুক্রীর भेष हहेए जार्म जारम (मध्यानिय भेष পেরেছি, এতদিন কথন ত আমার কলছ ছিল না। বোধ হয় এতদিনের পর আমি नष्टेठळ एएए थाकिव, अथवा এछिएत्व शत आमात्र (कह मेळ जूरि शंकिर्व, নতুবা জানত আমি কোন অপরাধ করি নাই।" রাজা জিজাসা করিলেন, "তুমি আমার পুত্রবধূর দরভার চাবি দিয়াছিলে কেন?" দেওয়ান্ তখন ব্ঝিল,যে আমার দারা এই কাও হইয়াছে। দেওয়ান **७**थन (गांफ्टार विनन, "निर्मन हहेल সে সকল কথা নিবেদন করিতে পারি।" त्रामा निर्म्धत्न (शत्न (एएश्रान विनन, "সকল কথা আপনার সাক্ষাতে বলা উচিত নয়, কিন্তু কি করি বলিতে হই-তেছে। রাজবধুর চরিত্রসম্বন্ধে মহাশর অবশ্র এত দিন কিছু শুনিয়া থাকিবেন, সে সকল কথা আমার বলা ভাল হয় না। সম্প্রতি তিনি নিজে পত্র লিখিয়া এই জালরাজাকে আনাইয়াছিলেন; ভদ্র घरत ध्रे बनारे जीताकरक त्वशानजा निशात्र ना। आमि विद्युचना कतिनाम, যদি তুইজনে এই সময় চিঠি লেখালিখি চলে, তাহা হইলে শেষ ভয়ানক কলঙ্ক রটিবে; তাহাই আমি আপনাকে না জানাইয়া পত্রযাভায়াতের পথ বন্ধ করি-विष्मयञः कामश्रिकीनात्म রাছিলাম। একজন জीলোক মধ্যবর্তিনী ভ্টিয়া ছিল। জালরাজা আসিয়াই ভাষার ধারা প্রথম পত্র পাঠান, আমি সমরে সমাদ

পাইরা অল্বের দরকার চাবি দিরাছিলাম। কাদ্বিনী ফিরিরা বাইতে
পার নাই, কাজেই পত্রও চালাচালি হর
নাই। চাবি না দিলে বোধ হর জালরাজার সজে তিনি চলিরা যাইতেন,
কেন না শেষ যখন জালরাজা দেখিলেন
বে, তাঁহার পঠতা ধরা পড়েছে, তখন
পেন্ধারকে ডাকিরা চুপি চুপি বলেন,
"আষার ধনসম্পত্তি কিছুরই আর কাজ
নাই, আমার জীকে দিলেই আমি চলিরা
বাই। তিনি আমার সঙ্গে বাইতে সম্মত
আছেন।"

রাজা পেয়ারকে ডাকিয়া বিজ্ঞানা
করার পেয়ারও তাহাই বলিল। আমি
সেইদিন হইতে আর খণ্ডরবাটীতে স্থান
পাইলাম না; তৎক্ষণাৎ দরজার পাঝী
আসিল। বিদারের সময় খণ্ডরকে
প্রণাম করিব বলিয়া এত জানাইলাম,
খণ্ডর ভাতে একেবারে কাণ দিলেন
না, শেষ বলিয়া পাঠাইলেন, যে ভিনি

ছুশ্চরিকার মুখদর্শন করেম না; আমি কাঁদিতে কাঁদিতে পাকীতে উঠিণাম। সেই অবধি আমার খণ্ডরবাড়ীর সংক ঘুচিরা গিরাছে।

মাতলিনী। আপনার কি বরদান্ত।
জ্যোৎ। অভাগীর, বরদান্ত চিরকালই
আছে; যাহারা ভাগাবতী ক্ষেত্র কোলে
নিজা যার, ভারাই একটুড়ে কাতর
হয়। যাহার অদৃষ্ট মন্দ, ভাহার বরদান্ত
আপনিই হয়।

মাতরিনী। যিনি এসেছিলেন, তিনি সভাই কি রাজপুত্র ?

জ্যোৎ। আমি তাঁরে ত তথন দেখি নাই। কাদস্বিনী দেখেছিল; সে কেনই বা মিথাা করে বলিবে ?

মাতঙ্গিনী। তবে আপনি ত বিধ্বা নন ?

ক্ষ্যোৎ। তিনি বেঁচে **আছেন, আ**মি তাঁরে দেখেছি।

-- FOI 193-ESI 103--

यानाठकन।.

ইংরেজি কেতার সম্মান বালালিরা বড় বুবেন না, শীত্র বুঝিবেন এমনও বোধ হর না। ইংলও ও বালালা পরস্পর বেরপ কুর, পরস্পারের বাবহারও সেই-রূপ দুর। আমরা হাততালি বিরা উপহান করি, ইংরেজেরা হাততালি বিরা "বাহবা" দেন। বৈপরীত্য বড় সামাত নর। আমাদের চক্ষে নতশির, নিরদৃষ্টি
নত্রতার লক্ষণ, সাহেবদের চক্ষে তাহা
অপরাধের অকাট্য প্রমাণ; তাহারা
ভাবেন, 'ষধন এই ব্যক্তি মুধ তুলিরা
চাহিল না, তথন ইহার বিকল্ম আর
প্রমাণের বাফ্লি কি ?' উভর জাতির বনের
গতি শ্বতর, এই জনা ইংসেজেরা আমা

निगटक व शर्वास् व्विटङ शांविटनम ना, आमबाध देशदबलात वृत्तिमाम ना। शवर्न-त्मके आमारमञ्ज छेनकात धरः छेरनारहत নিমিত কভই কৌশল করিতেছেন, কিছ আমরা কেবল এই জনাই ভাহার অধি-কাংশ বৃঝিতে পারি না,তাহার অনেক গুলি গ্রহণ করি না। কেলারাম বিখাস '' টার चंक देखिया" हरेलन, छाहात लाजा (थलात्राम छाहा किहूरे वृक्षित ना। क्लाताम यनि निज्ञारम (शतनम, उथात কেহই ভাঁহার নৃতন সন্মান অফুভব করিতে পারিল না; ফেলারাম কান্দেই सूथी इहेरलम मा। "हात खत् हेखिया" হওয়া অপেক্ষা ফেলারাম যদি কোথায়ও मानाहत्त्व भारेरजन, छाहा हरेरन (वांध হয় তিনি অধিক সুখী হইতেন; কেননা সে সন্মান লোকে দেখিতে পায়. আত্মীয়স্থানে বুরিতে পারে। যে শ্রেষ্ঠ, व नर्क श्रधान, क्विन (मरे मानाहमन পায়; যখন শত শত লোক একত্ৰ সম-বেত হয়, তথন সর্বসন্থ্রে সর্বপ্রধানকে यानाहमान क्रिया जन्मान करा इस। किशक्नाभ डेभनरक त्नारक এই ऋभी गर्नाथ्यशानत्क मर्नामा मन्त्राम कतिवा থাকে। সেধানে ফেলারাম পর্যা—হার षर् देखिया-विश्वा थाकून, लाटक उँशिक विकामा क्षित्र मा ; माना-**ठलन विवाद अभव छोहांब विटक एकह** गरिता । विद्यालय मा । उटन नगरिक "होत जर् देखियात" नवान करे ?

धरे बना रति क्षेत्रसम्बद्धान कान कान

করিবার জন্য যে বিলাতী পদ্ধতি ভারতবর্ষে লানীত হাইরাছে, তাহা বোধ হর ভাল থাটভেছে না। নামের পরে নাইট কম্পানিরান প্রভৃতি সেকেল্লে কথা যুড়িয়া বেওরা হইতেছে, কিছু সে যোড়া দেওরা করটা লোক দেখিতে পাইতেছে কিছা লানিতে বা বুবিতে পারিতেছে ?

" होत जब ই ডিয়া" বা ভারতনক্ত্র

বাঁহার। ইইয়াছেন, ভাঁহাদের মধ্যে ছুই

একজন হর ড জানেন, বে তাঁহাদের

কিরণে ভারতের কোন অংশই আলোক
মর হর না, ভারতের অনেক লোকই

তাঁহাদের আলোক দেখিতে পার না।

তাহাই ভাঁহাদের মধ্যে কেহ কেহ বিবে
চনা করেন,যে লোকের উচিত, " होর অব

ইণ্ডিয়া" বলিয়া ভাঁহাদের মালাচক্ষন

দের, অন্ততঃ গ্রব্মেণ্ট সে সম্বন্ধে কোন

হকুম দেন। পূর্ক্কালের মালাচক্ষন

যে দেখিরাছে, সেই জানে বে ওবের

কিরপ সমাদর এ দেশে সর্ক্ষা করা

হইত; কাজেই ভারতনক্ষত্রের মনে

মালাচক্ষনের ক্ষন্য লোভ হইতে পারে।

কিন্তু মাণাচন্দ্ৰনের আর গৌরব নাই।
যে অবধি বালালির ছ্রদৃষ্ট আরম্ভ হইরাছে, সেই অবধি ভালমন্দ বিচার
করিবার আর আমাদের শক্তি নাই।
কাছাকে পূজা করি, কাছাকে সন্মান
করি, কাছাকে আদর্শ করি, এ শক্তোর
আর কিছুই ঠিকানা নাই। বোধ হয়
সন্মানোপবোগী লোক বালালার থাকিলে

and the state of t BIGITAR SIT MICE, MICHAEL SEPTEM eite etate entre relier THE MERITAL REPORT PROPERTY. en 4114 14 Fleit 164 - 111 चावन स्टेटन त्रांक करतरे चावन चान स्टेट बादक, मना नगरकं करियान : क्यांत मन बातक वरेरन किल रनरे अबरे संक्रिक बादक ; चलादक नियमरे थर । यथम अध्यक्ष मामाना मोकिया कुनाती तर्व नृता दरेन, उपन प्राचानात क्री क्रांतक वच करेटड मानिन; पाकि-शक चन सांव नवादय गया रहेन ना, উৎসাত পাইল না, বাজালাই আই টান कितिय मा

विकास वहें पूरान क्षित गृह गिष्टिक पानक देवेंगांद , देवर देवर गिर्टिक एक्त, देवरन क्षेत्रपूर्ण कहा एन। क्षेत्रादिव गिल्वांत कार्क्यां देव, देव गुरुष प्रणानांदिव गाक्तिश्रक्कद्वांत बना गानाहक्त पानक ना स्टेटन, देन गुरुष गानाहक्त पानक ना स्टेटन, देन गुरुष गानाहक्त पानक ना स्टेटन, देन गुरुष गानाहक्ता क्षेत्र कार्यांत कार्यं, देन गुरुष erick and i street in afficial Automic and few control of Prince on controlling and professors

क्रमांक्रक अध्यक अक्षांक विकीन क्रमांक्र तार्क तार्क क्रमांक्र विकान क्रमांक्र विकान क्रमांक्र विकान क्रमांक्र विकान क्रमांक्र कर्म क्रमांक्र कर्म क्रमांक्र कर्म क्रमांक्र कर्म क्रमांक्र कर्म क्रमांक्र कर्म कर्म क्रमांक्र कर्म कर्म क्रमांक्र कर क्रमांक्र कर्म क्रमांक्र कर्म क्रमांक्र कर्म क्रमांक्र कर्म क्रमांक्र कर क्रमांक्र कर क्रमांक्र क्रम क्रमांक्र क्रम क्रम क्रमांक्र कर क्रमांक्र कर क्रमांक्र कर क्रमांक्र क्रमांक्र कर क्रमांक्र कर क्रमांक्र कर क्रमांक्र कर क्रमांक्र क्रम क्रमांक्र क्रम क्रमांक्र क्रम क्रमांक्र क्रम क्रमांक्र क्रम क्रमांक्र क्रम क्रम क्रमांक्र क्रम क्रमांक्र क्रम क्रमांक्र क्रम क्रम क्रम क्र

े विभिन्ने शासके चनुन, त्यांत इव मीना क्यानव वीकि केविया जासकी जान गरह। वर्षि विकास केविया बाम्यक्रियन (एउन) वन, कोडा क्षेत्रक केवियो गुक्रम ।



वक्रमभंग।

সপ্তম বৎসর।

৭৮ সংখ্যা।

মুচিরামগুড়ের জীবনচরি

শীদর্পনারায়ণ পৃতিতৃও প্রণীত।

প্রথম পরিচেছ্দ।

মৃতিরাম গুড়মহাশয় এই জগৎ পবিত্র করিবার জনা, কোন্ শকে জন্মগ্রহণ করিষাছিলেন, ইতিহাসে তাহা লেখে না। ইতিহাস এরূপ অনেকপ্রকার বদমাইসি করিয়া থাকে। এ দেশে ইতিহাসের সাক্ষাৎ পাওয়া যায় না,নচেৎ উচ্তি বাবস্থা করা যাইত।

যশোদা দেবীর গর্ভে সাফলরাম গুড্রের ঔরসে তাঁহার জন্ম। ইহা ছঃখের
বিষয় সন্দেহ নাই; কেন না উচ্চবংশের
কথা কিছুই বলিতে পারা পগল না।
তবে ইহা বলা ঘাইতে পারে যে, তিনি
বাদ্যবন্দোস্তব। গুড় গুনিয়া কেহ
মনে না করেন যে তিনি মিইবিশেষ
হইতে জন্মিরাছিলেন।

সাফলরাম গুড় কৈবর্ত্তের ত্রাহ্মণ ছিলেন। ভাঁছার নিবাস সাধুভাবার মোহনপলী অপর ভাবার মোনাপাড়া।

মোহনপরী ওরফে মোনাপাডার কেবল ঘরকতক কৈবর্তের বাস। গুড়মহাশর এक बाक्सन-एयमन अक हन्द्र ब्रह्मनी व्यालाकमधी करत्रन, रयमन এक विकृष्ट পুরুষোত্তম, যেমন এক বার্তাকুদগ্ধ গুড় মহাশ্যের অন্তরাশির উপর শোভা করি-তেন,তেমনি সাফলরাম একা মোহনপল্লী উচ্ছল করিতেন। প্রাদ্ধশান্তিতে কাঁচা कमनी चांडल उखून এবং मिकना, बंधी माकाल्य श्वाय अम्थाननामिट नाति-কেল নাড়ু, ছোলা, কলা আদি তাঁহার লাভ হইত। স্থতরাং যাজনক্রিয়ায় তাঁহার বিশেষ মনোযোগ ছিল। তাঁহারই अंधर्यात উखताधिकाती हहेता मृहिताम গুভক্ষে জন্মগ্রহণ করিলেন।

জন্মগ্রহণের পর মৃতিরাম দিনে দিনে বাড়িতে লাগিলেন। দৈখিয়া যশোদা, সেটা বালকের অসাধারণ পোরুষের লক্ষণ বিবেচনা করিয়া, অভিশয় গর্কা- ষিতা হইলেন। যপাকালে মুচিরামের অরপ্রাশন হইল। নামকরণ হইল মুচিরাম, এত নগেক্স গজেক্স চক্রত্যণ বিধুত্বণ থাকিতে তাঁহার মুচিরাম নাম হইল কেন তাহা আমি স্বিশেষ জানি না, তবে ছষ্টলোকে বলিত যে, যশোদা দেবীর যৌবনকালে কোন কালো কোলো কোঁকড়া চুল নধরশরীর মুচিবাম দাসনামা কৈবর্ত্তপুত্র তাঁহার নয়নপথের পথিক হইয়াছিল, সেই অবধি মুচিরাম নামটি যশোদার কাণে হিষ্ট লাগিত।

যাহাই হউক যশোদা নাম রাখিলেন
মুচিরাম। নাম পাইয়া মুচিরামশর্মা
দিনে দিনে বাড়িতে লাগিলেন। ক্রমে
মা, "বাবা" "ছ্" "দে" ইত্যাদি শক্
উচ্চারণ করিতে শিখিলেন। তাঁহার
অসাধারণধীশক্তির বলে নিছাকারায় এক
বৎসর পার হইতে না হইতেই স্পণ্ডিত
হইলেন। তিনবৎসর ঘাইতে না ফাইতেই
তেই গুরুভোজনে দোষ উপস্থিত হইল
এবং পাঁচবৎসর যাইতে না ফাইতেই
মহামতি মুচিরাম মাকে পিতৃ উচ্চারণ
করিতে এবং বাপকে শালা বলিতে
শিখিলেন। যশোদা কাঁদিয়া বলিতেন,
এমন শুণের ছেলে বাঁচ্লে হয়।

পাঁচবৎসরে সাফলরাম গুড়মহাশয়
কিছু গোলে পড়িলেন। যশোদা ঠাকুরাণীর সাধ, পাঁচবংসরে পুত্রের হাতে
গঙ়ি হর্ম। সর্ব্ধনাশ! সাফলরামের
তিনপুক্ষের মধ্যে সে কাল হর নাই।

মাগী বলে কি ? যেদিন কথা পড়িল, সেদিন সাফলরামের নিজা ছইল না।

যম্নার জল উলান বহিতে পারে, তব গৃহিণীর বাক্য নজিতে পারে না। স্থতরাং সাফলরাম হাতে থড়ির উদ্যোগ দেখিতে লাগিলেন; কিন্ত তুর্ভাগাবশতঃ তিন ক্রোশের মধ্যে পাঠশালা বা গুরুমহাশয় नाहै। (क लिथा शङ्ग निथाहै(१) বিষয়বদনে বিনী ভভাবে यभामा (मरीत श्रीभामभाम এই সমাদ ञ्चित्रिक इरेटननः । यटमामा विनादननः "ভাল তুমি কেন আপনিই হাতে খড় দিয়াক, খ, শিখাও না।" সাফলরাম একটু স্নান হইয়া বলিলেন, "হাঁ তা আমি পারি, তবে কি জান শিষ্যদেবক यसमार्गत जालाय-जानि कि ताना হইল।'' শুনিবামাত যশোদা দেবীর মনে পড়িল আজি কৈবর্ত্তেরা পাতিলেবু मिया शियारह। विनातन, "अधः १९८७ भित्म-" ५ दे विद्या প्रिश्च थाना व-त्यामा त्मवी विषक्षयत्म मञ्ज्यमञ्जल शाहि-লেবুদিয়া পান্তা ভাত খাইতে ব্দিলেন। অগভ্যা মৃতিরাম অন্যান্ত বিদ্যা অভ্যাদে व्यनाश विमात माञ्चराग इटेलन। **ঁমধো—'' পরা অপরাচ''—গাছে ওঠা,** करन (डावा, जवः मरन्त्रम हृद्रि। देकवर्छ यज्ञगानिष्रात्र कलााल अष्ड्र चर्द मत्माभाव अञाव नाई। नावित्वमान्मभ এবং অন্যান্য যে সকল জাতীয় সন্দে-খের সঙ্গে ছানার সাক্ষাৎ বা অসাক্ষাৎ कान शकात महक नाहे, याहा मर्लगा

মৃচিরামের থাকে থাকিত, সে সকল
মৃচিরামের বিদ্যাভ্যাসের কারণ হইল।
কৈবর্ত্তের ছেলেদের সঙ্গে মৃচিরামের
প্রভাছ একটি নৃতন কোন্দল হইত—
ভানা গিয়াছে কৈবর্ত্তিগের ঘরেও খাবার
চুরি যাইত।

নবম বংসরে মুটিরামেব উপনয়ন ছইল। তার পর সাফলরাম এক বং-গঁর প্রেরতম পুত্রকে সন্ধাা আহ্নিক শিখাইলেন। একবংসবে মুটিরাম সন্ধাা আহ্নিক শিখিয়াছিলেন কি না আমরা জানি না। কেন না প্রমাণা-ভাব। তার পব মুটিরাম কথন সন্ধাা আহ্নিক করেন নাই।

তার পর একদিন সাফলরাম গুড় অকস্মাৎ ওলাউঠারোগে প্রাণত্যাগ ক-বিল।

বিতীয় পরিচ্ছেদ।

যশোদার আবে দিন যায় ন:। যজ
মানদিগাব পৌরোহিতা কে করে ? কৈব
রেতিবা আবে একছর বামন আনিল।

যশোদা অলকটে—ধ.ন ভানিতে আবেন্ত
করিলেন।

যথন মৃতিরামের বয়স দশবংসর,
কৈবর্ত্তেরা চাঁদা কবিয়া এপটা বারো
ইয়ারি পূজা করিল। যাত্রো দিবার জন্ত বারোইয়ারি; কৈবর্ত্তেরা শস্তা দরে হারাণ অধিকারীকে তিনদিনের জনা বায়না করিয়া আনিয়া, ক্লাগাছের উপর সরা জ্ঞালিয়া, তিনরাত্তি যাত্তা
শুনিল। মৃচিরাম এই প্রথম যাত্তা
শুনিল। যাত্তার গান, যাত্তার গল্প জ্ঞান্তা
নেক শুনিরাছিল—কিন্তু একটা আন্তযাত্তা, এই প্রথম শুনিল: চূড়া ধড়া
ঠেলা লাঠিদহিত সাক্ষাৎ ক্রফ এই
প্রথম দেখিল। আহলাদ উছলিয়া উঠিল। নিশ্চিত সম্বাদ বাখি, যে পরদিন
মৃচিরাম, গালাগালি মাবামারি বা চুরি
বা মাতাকে প্রহার, এ সকলের কিছুই
কবেনাই।

মৃতিরামের একটা গুণ ছিল, মুচিরাম छ कर्छ। প্রথম দিন যাতা ও নিয়া বছ-যত্নে একটা গানের মোহাডাটা শিথি-য়াছিল। প্রদিন প্রভাত হইতে মাঠে মাঠে সেই গান গাইয়া ফিরিতে লাগিল। टेमवार शतान अधिकावी लाहा शास्त्र, পুষ্বিনীতে হতমুখপ্রকালনাদির অনু-ঝোদে বঃইতেছিলেন—প্রভাতবাযুপরি-চাজিত হইয়া মুচিবাদের স্কন্ধর অধি-কারীমহাশয়ের কালেব ভিতর গেল। কাণে ্যাইতে যাইতে মনের ভিতর গেল-মনের ভিতৰ গিয়া, কল্পনার সাহাবো, টাকাব সিদ্ধুকের ভিতরও প্রবেশ করিল। অধিকারীমহাশয়েব নিকট গলার আওয়াল, টাকার আও-शास्त्र भरिन्छ इस। त्म (मार्स अधि-कातीमहाशृत এका (माधी नरहन-भिकामा कवित्न यानक **डेकीलमहा**-শয়ের৷ ইহাব কিছু নিগৃঢ় তুত্ব বলিয়া দিতে পারিবেন। **তাঁহাদের কাছেও**

গলার আওয়াজ টাকার আওয়াজে পরি-ণত -হয়। উকীলবাব্দেরই বা দোষ কি—Glorious British Constitution! —হায়! গলাবাজি সার!

অধিকারীমহাশর—মাসুবের সঙ্গে প্রেম করেন না—ব্রিটিষ পার্লিমেণ্টের মত এবঞ্চ কুরঙ্গিনীসদৃশ সম্বাকঠেই মুগ্ধ— অতএব তিনি হাত নাড়িয়া মুচিরামকে ডাকিলেন। মুচিরাম আসিল। তাহার পরিচর জিজ্ঞাসা করিরা বলিলেন,

"তুমি আমার যাত্রার দলে থাকিবে ?"
মুচিরাম আফ্লাদে আটখানা। মাকে
জিজ্ঞাসার অপেক্ষা রাখিল না—তখনই
সক্ষে যায়। কিন্তু অধিকারী মনে
করিল যে, পরের ছেলে না বলিয়া লইয়া
যাওরা কিছু নয়। অত এব মুচিরামকে
সক্ষে করিয়া তাহার মার নিকট গেল।

ভানিয়া যশোদা বড় কাঁদা কাট।
আরম্ভ করিল—সবে একটি ছেলে—আর
কেহ নাই—কি প্রকারে ছাড়িয়া দিবে ?
এদিকে আবার অর জুটে না—যদি
একটা থাবার উপার হইতেছে—কেমন
করিয়াই বা না বলেন ? বিধাতা কি
আর এমন স্থযোগ করিয়া দিবেন ?
আমি না দেখিতে পাই তবু ত মুচিরাম
ভাল পাইবে, ভাল পরিবে! যশোদা
যাত্রাগুলার হুঃথ জানিত না.। অগতাা
পাঁচটাকা মাসিক বেতন রফা করিয়া
যশোদা মুচিরামকে হারাণ অধিকারীর
হুত্তে সমর্পন করিল। তার পর আহা-

ড়িয়া পড়িয়া খামীর জন্য কাঁদিতে লাগিল।

তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

मुिताम का नित्न रे पिश्न (य याजा-अप्राणात कीवन ऋरभत नग्र। ওয়ালা কেবল কোকিলের মত গান कतिया जात्न जात्न मुकुन जाकन कतियां বেড়ায় ना। अज्ञलित मुहितारमत भंदीत व शाम ও शाम इतिइति भीर्व इहेन। করিতে করিতে সকল দিন আহার হয় না; রাত্রি জাগিয়া প্রাণ ওঠাগত: চুলের ভারে মাথায় উকুনে ছা করিল; গায়ে খড়ি উড়িতে লাগিল; অধিকারীর কাণমলায় কাণমলায় ছই কাণে ঘা रहेल। ७४ डाहे नम्न; व्यक्षिकां ने महा শয়েব পা টিপিতে হয়, তাঁকে বাতাস করিতে হয়, তামাক সালিতে হয়, আরও অনেক রকম দাসত্ব করিতে হয়। অল দিনেই মুচিরামের সোণার মেঘ বাপ-রাশিতে পরিণত হইল।

মৃতিরামের আরও ছর্ভাগ্য এই যে,
বৃদ্ধিটা বড় তীক্ষ নহে। গীতের
তাল দে, পৃক্ষরিণীতীরস্থ দীর্ঘক্ষ কলে
না, ইহা বৃথিতে তাঁহার বহুকাল গোল।
ফলে তালিমের সময়ে তালের কথা
পড়িলে, মৃতিরাম অন্যমনক্ষ হইত—
মনে পড়িত, মা কেমন তালের বড়া
করে!—মৃতিরামের চক্ষু দিয়া এবং রসনা
দিয়া অল বছিয়া যাইত।

আবার গান মুখন্থ করা আরও দার

ক্রিছতেই মুখন্থ হইত না—কাণমলার
কাণমলার কাণ রালা হইয়া গেল।
ক্তরাং আদরে গায়িবার সময়ে পিছন
হইতে তাঁহাকে বলিয়া দিতে হইত।
তাহাতে মধ্যে মধ্যে বড় গোল বাঁধিত

সকল সময়ে ঠিক শুনিতে বা ব্ঝিতে
পারিত না। একদিন পিছন হইতে
বলিয়া দিতেছে—

''নীরদকুস্তলা--লোচনচঞ্চলা দথতি স্থলর্মপং''

মৃচিরাম গায়িল—''নীরদ ক্স্তলা—'' থামিল—আবার পিছন হইতে বলিল, '' লোচনচঞ্চলা''—মৃচিরাম ভাবিরা চি-স্তিরা গায়িল '' লুচি চিনি ছোলা।'' পিছন হইতে বলিয়া দিল '' দধতি স্থানর কাং''—মুচিরাম না ব্বিয়া গায়িল '' দধিতে সন্দেশ ক্রপং।'' সেদিন আর গায়িতে পাইল না।

মৃতিরামকে ক্লফ সাজিতে হইত—
কিন্তু ক্লফের বক্লবা সকল তাহাকে
পিছন হইতে বলিয়া দিতে হইত—
কেবল "আ—বা—আ—বা ধবলী"
ট মৃথস্থ ছিল। একদিন মানজ্ঞান বাজা
হইতেছে—পিছন হইতে মৃতিরামকে
বক্তা শিধাইয়া দিতেছে। ক্লফুকে
বলিতে হইবে "মানমিয় রাধে! একবার বদন তুলে কথা কও।" মৃতিরাম
সবটা শুনিতে না পাইয়া কতকদ্র
বিলিল, "মানমিয় রাধে একবার বদন
ছুলে—" দেই সমুদ্ধে বেহালাওয়ালা

মৃদদীর হাতে তামাকের ককে দিয়া বলিতেছিল "গুড়ুক খাও—" শুনিয়া মৃচিরাম বলিল "রাধে—একবার বদন ডুলে—গুড়ুক খাও।" হাসির চোটে যাত্রা ভালিয়া গেল।

মৃচিরাম প্রথমে বৃঝিতে পারিল না—
হাসি কিদের,—যাত্রা ভাঙ্গিল কেন?
কিন্তু যথন দেখিল অধিকারী সাজ্পরে
আসিরা একগাছা বাঁক সাপটিয়া ধরিয়া,
তাহার দিকে ধাবমান হইলেন, তখন
মৃচিরাম হঠাৎ বৃঝিল, যে এই বাঁক
ভাঁহার পৃষ্ঠদেশে অবতীর্ণ হইবার কিছু
ওক্তর সম্ভাবনা—অভএব কথিত পৃষ্ঠদেশ স্থানাস্তরে লইয়া যাওয়া আভ প্রায়েলন। এই ভাবিয়া মৃচিরাম অকস্থাৎ নিজ্বান্ত হইয়া নৈশ অন্ধকারে
অন্তর্হিত হইল।

অধিকারীমহাশয় বাঁকহত্তে তৎপশ্চাৎ
নিজাত হইয়া, মৃচিরামকে না দেখিতে
পাইয়া, তাহার ও তাহার পিতা পিতামহ
মাতা ও ভগিনীর নানাবিধ অয়শ কীর্ত্তন করিতে লাগিলেন। মৃচিরামও
এক বৃক্ষান্তরালে থাকিয়া অক্ট্রেররে
অধিকারীমহাশয়ের পিতৃমাতৃসম্বন্ধে তক্তপ
অপবাদ রটনা করিতে লাগিল। অধিকারী মুচিরামের সন্ধান না পাইয়া
সাজ্যরে গিয়া, বেশত্যাগ করিয়া, ধার
ক্রন্ধ করিয়া শয়ন ক্রিয়া রহিলেন।
দেখিয়া মুচিরাম বৃক্ষজ্বায়া ত্যাগ করিয়া,
ক্রন্ধারসমীপে দাঁড়াইয়া অধিকারীকে
নানাবিধ অবক্তব্য ক্র্যা ভাষায় মনে মনে

সংখাধন করিতে লাগিল; এবং উভয় হ-তের অসূষ্ঠ উখিত করিরা তাহাকে-কদলী ভোজনের অসুমতি করিল। তৎপরে ক্ষকবাটকে, বা কবাটের অন্তরালম্ভিত অধিকারীর বদনচক্তকে একটি লাথি দেখাইয়া, মৃচিরাম ঠাকুরবাড়ীর মন্দিরের রোয়াকে গিয়া শর্মন করিয়া রহিল।

প্রভাতে উঠিবা অধিকারীমহাশর গ্রামা স্তবে যাইবার উদ্যোগ করিতে লাগি-**(लन। ७:निर्लन मु**ठिश्राम चार्टिश नार्टे —কেছ কেছ বলিল তাহাকে খুঁজিয়া व्यानित ? व्यक्षिकात्रीमशागत गालि पित्रा বলিলেন, "জুট্তে হয়, আপনি জুট্বে, এখন আমি খুঁছে বেড়াতে পারি त्न।" मम्रान्धि त्रहाना श्याना वनिन. "ছেলেমাতুষ—যদি নাই জুট্তে পারে —আমি খুঁলে আনিব।" অধিকারী धमकाइलान-मत्न मत्न हेळ्। मृहिः রামের হাত হইতে উদ্ধার পান, এবং সেই সঙ্গে তাহার পাওনা টাকাগুলি ফাকি দেন। বেহালা ওয়ালা ভাবিল-মুচিরাম কোনরূপে জুটিবে। স্বার কিছু विनिन्ना।

যাত্রার দল চলিয়া গেল—মৃচিরাম
জুটল না। রাত্রিজাগরন—দেবালয়বরতে সে অকাতরে নিদ্রা দিতেছিল।
উঠিয়া দল চলিয়া গিয়াছে শুনিয়া,
কাঁদিতে আরম্ভ করিল। এমন বৃদ্ধি
নাই যে অধিকারী কোন পথে গিয়াছে,
সন্ধান করিয়া সেই পথে যায়। কেবল
কাঁদিতে লাগিল। প্রারিবামন অমুগ্রহ

করিয়া বেলা তিনপ্রহরে ছুইটি ঠাকুরের প্রেসাদ খাইতে দিল। থাইয়া, মুচিরাম কায়ার থিতীয় অধ্যায় আরম্ভ করিল। যত রাত্রি নিকট ছুইতে লাগিল, তত ভাবিতে লাগিল—আমি কেন পলাইলাম! আমি কেন দাঁড়াইয়া মার থাইলাম না!

বিজ দর্পনারায়ণ বলে, এবার যখন, বাঁক উঠিতে দেখিবে, পিঠ পাতিয়া দিও। তোমার গোজীর বাপচৌদপুরুষ, বুড়া দেনরাজার আমল হইতে কেবল পিঠ পাতিয়া দিয়াই আসিতেছে। তুমি পলাইবে কোথায় ? এ স্থলভাজাতের অধিকাবীরা মুচিরাম দেখিলে বাঁক-পেটাই করিয়া থাকে—মুচিরামেরা পিঠ পাতিয়াই দেয়। কেহ পলায় না—রাখাল ছাড়া কি গোরু থাকিতে পাবে হে বাপু ? ঘাস জলের প্রায়োজন হই-লেই, তোমাব যখন রাখাল ভিল উপায় নাই তথন পাঁচনবাড়িকে প্রাত্তংগ্রাম কবিয়া গোজন সার্থক কর।

.চতুর্থ পরিচেছদ।

ফশানবাবৃ এক জন সংক্লোদূত কায়ত।
আতি ক্ষুদ্র লোক—কেন না বেতন এক
শত টাকা মাত্র—কোন জেলার ফৌজদারী আপিসের হেড কেরানী! বাঙ্গালাদেশে মন্ত্রাত্ব বেতনের ওজনে নির্ণীত
ত্র—কে কত বড় বাদর ভার লেজ
নাগিয়া ঠিক করিতে হয়। এমন অধঃ-

পতন আর কথন কোন দেশের হয় নাই। বন্দী, চরণশৃত্তলের দৈর্ঘ্য দেখা-ইয়া বড়াই করে।

ঈশানবাবু কুদ্র বাক্তি—ল্যাজ খাটো, বানরত্বে খাটো—কিন্তু মহুষাত্বে নহে। যে প্রামে হারাণ অধিকারী এই অপূর্ব্ব, মানভক্ষন যাত্রা করিয়াছিলেন, ঈশান বাবুর সেই প্রামে বাস। যাত্রাটা যে সময়ে ছইয়াছিল, সে সময়ে তিনি ছুটি লইয়া বাড়ীতে ছিলেন। যাত্রার ব্যাপার তিনি কিছু জানিতেন কি না বলিতে পারি না; যাত্রার পরদিন সন্ধ্যাকালে তিনি পথে বেড়াইতেছিলেন, দেখিলেন, একটি ছেলে—গুড়শরীর, দীর্ঘকেশ—অমুভবে যাত্রার দলের ছেলে—প্রেপ দাঁড়াইয়া কাঁদিতেছে!

ঈশানবাবুছেলেটির হাতধ্রিয়াজি-জ্ঞাসাকরিলেন,

"কাঁদ্ছিস কেন বাবা ?" ছেলে কথা কয় না। ঈশানবাব্জিজাসা করিলেন,

" তুমি কে 🖓

ছেলে विनन, "आमि मूडिताम।"

ঈশা। তুমি কাদের ছেলে ?

मृति। वामनामतः।

नेगा। (कान् वायन दत्र ?

म्हि। व्यामि खाएएतत (इटन।

ঈশা। তোমার বাড়ী কোথার ?

वृ⁵। आगारमत वाष्ट्री स्थानाभाषा।

ঈশা। সে কোপা ?

ण ज मृतिदास्मत्र विकादि मध्या नत्ह।

বাই হোক, ঈশানবাব অক্সসমত্ত্ব মুচিরামের হুর্ঘটনা বুঝিয়া লইলেন। "জোনাকে বাড়ী পাঠাইয়া দিব" এই বলিয়া মুচিরামকে আপনার বাড়ী লইয়া অর্গ পোইল। মুচিরাম হাত বাড়াইয়া অর্গ পাইল। ঈশানবাব ভাহার আহারাদি ও অবস্থিতির উত্তম ব্যবস্থা করিয়া দিলেন।

কিন্তু মোনাপাড়ার ত কোন ঠিকানা হইল না। স্থতরাং মুচিরাম ঈশান-বাবুর গৃহে বাস করিতে লাগিল। সে-খানে আহার পরিচ্ছদের ব্যবস্থা উত্তম, এবং কাণমলার অত্যস্তাভাব, দেখিয়া মুচিরামও বাড়ীর জন্য বিশেষ ব্যস্ত হইল না।

এদিকে ঈশানবাব্র ছুটী ফ্রাইল—
সপরিবারে কর্মস্থানে যাইবেন। অগত্যা
মৃতিরামও সঙ্গে চলিল। কর্মস্থানে
গিয়াও ঈশান মোনাপাড়ার অক্সন্ধান
করিলেন, কিন্তু কোন সন্ধান পাইলেন
না। অগত্যা মৃতিরাম তাঁহার গলায়
পড়িল। মৃতিরামও, যেখানে আহারের
বাবস্থা উত্তম, সেখানে গলায় পড়িতে
নারাজ নহে—তবে ঈশানবাব্র একটা
বাবস্থা মৃতিরামের বড় ভাল লাগিল না।
ঈশানবাব্ বলিলেন, 'বাপু, যদি গলায়
পড়িলে তবে একটু লেখা পড়া শিখিতে
হইবে।' ঈশানবাব্ তাহাকে পাঠশালায় পাঠাইয়া দিলেন।

এদিকে মুচিরামের মা অনেক দিন হইতে ছেলের কোন সম্বাদ না পাইয়া পাড়ার পাড়ার বিস্তর কাঁদাকাট করিরা বেড়াইরা শেষ আহার নিজা ত্যাগ করিল। আহার নিজা ত্যাগ করিরা রূপ হইল। রূপা হইয়া মরিয়া গেল।

পঞ্ম পরিচেছদ।

এদিকে, যশোদানক্ষন প্রীপ্রীমুচিরাম
শর্মা—ঈশানমন্দিরে স্থবিরাজমান—সস্পূর্ণরূপে মাতৃবিস্থত। যদি কথন
মাকে মনে পড়িত তবে সে আহারের
সমর—ঈশানবাব্র ছরের প্রক্রমারকাসন্নিভ সিদ্ধার, দানাদার গব্যন্নত, স্পন্ধি
ঝোলে নিমগ্র রোহিতমৎসা, পৃথিবীর
ন্যায় নিটোল গোলাকার সদ্যভর্জিত
পূচির রাশি—এই সকল পাতে পাইলে
মুচিরাম মনে করিতেন, "মা বেটী কি
ছাই-ই আমাকে খাওয়াইত!" সে সমরে মাকে মনে পড়িত—জন্য সমরে
নহে।

স্চিরামের পাঠশালার লেখা পড়া
সমাপ্ত হইল—অর্থাৎ গুরুমহাশর বলিল,
সমাপ্ত হইরাছে। মুচিরামের কোন
খুণ ছিল না এমত বলি না; তাহা
হইলে এ ইতিহাস লিখিতে আমি প্রবুত্ত
হইতাম না। মুচিরামের কঠস্বর ভাল
ছিল বলিরাছি—খুণ নম্বর এক। খুণ
নম্বর ছই, তাহার হস্তাক্ষর অতি স্কন্মর
হইল। আর কিছু হইল না। ঈশান
বাবু মুচিরামকে ইংরেজি কলে পাঠাইলেন।

মুচিরাম, খেড়ে ছেলে, ফুলে ঢুকিয়া বড় বিপদ্প্রস্ত ছইল। মাইরেরা তামাসা করে, ছোট ছোট ছেলেরা খিল্খিল্ করিয়া হাসে। মুচিরাম রাগ করে কিন্তু পড়ে না। স্থতরাং মাইরেরা হারাণ অধিকারীর পথে গেলেন। আবার কাণ্যলার কাণ্যলায় মুচিরামের কাণ্, রালা হইরা উঠিল। প্রথমে কাণ্যলা, তার পর বেক্রাঘাত মুট্টাঘাত, চপেটা-ঘাত, কীলাঘাত, এবং ঘুসাঘাত। ঈশান বাব্র ঘরের তপ্তাল্টির জোরে মুচিরাম নির্কিবাদে সব হলম করিল।

धरेक्राल मूहितांग, छश्चनूहि ख दवछ খাইয়া, ফুলে পাঁচ সাত বৎসর কাটা-हेल। किंडू इहेल ना। जेनानवातू তাহাকে সুল হইতে ছাড়াইয়া লইলেন। भेभानवातूत्र मग्रात (भव नाई--गानि-ট্রেট সাহেবের কাছে ভাঁছার বিশেষ প্রতিপত্তি—মূচিরামের হাতের লেখাও लान-क्रेमानवाव् मृहिबारमव এकि मम টাকার মুছরিগিরি করিয়া দিলেন। वित्रा पिरनन "पूत चान नहें ना वानू, जा रूल जाड़ाहेबा मिव।" मूहि-রাম শর্মা প্রথম দিনেই একটা ছকুমের চোরাও নকল দিয়া আটগণ্ডা প্রসা हांड कतिरमन, धवः मन्तांत्र अन्नकांन পরেই, ভাহা প্রতিবাসিনী কুলটাবিশে-(यत शामभारत छेरमर्ग कतितन।

এদিকে ঈশানবাবৃত্ত প্রাচীন হইয়া আদিরাছিলেন। তিনি ইহার পরেই পেজন কইয়া স্কর্ম হইতে জবসর হই লেন এবং মুচিরামকে পৃথক্ বাসা করিয়া
দিয়া, সপরিবারে অদেশে প্রস্থান করিলেন। মুচিরাম ঈশানবাব্কে একটু
ভন্ন করিত—এক্ষণে ভাহার পোয়া বারো
পড়িয়া গেল।

यर्छ পরিচেছদ।

পোয়া বারো—মুচিরাম জেলা লুঠিতে ताशित । श्रीश्रम लाटकत काटक ठाविता চিস্তিয়া হুইচারি আনা লইত। তার পর वं । विषा । एकन् त्माश्रव धान छनि অমীদার ভোর করিয়া কাটিয়া শইতে উদ্যত, সাহেব দয়া করিয়া পুলিষকে ত্কুম দিলেন, ফেলুর সম্পত্তি রক্ষা क्तिरव। नारहव छ्कूम निल्नन, किन्न পুলিবের নামে পরওয়ানাখানি লেখা আর হর না। পরওয়ানা লেখা মৃচিরামের হাত। পরওয়ানা যাইতে ঘাইতে ধান थारक ना ; रक्ष्यू मूहित्रामरक এक हाका, ছুই টাকা, ভিন্টাকা, চারিটাকা, ক্রমে পাঁচটাকা স্বীকার করিল—তৎক্ষণাৎ পরওয়ানা বাহির ছইল। তখন মাজিট্রে-টেরা স্বহস্তে জোবানবন্দী লইভেন না —এক এক কোনে বসিয়া এক এক-জন মৃহরি ফিস্ফিস্ করিয়া হিজাসা ক্রিত, আর যাহা ইচ্ছা ভাহা লিখিত। শাফীরা একরকম বলিত, সুচিরাম আর पदक्म (बारानरकी निविष्डन, माक-দ্যা বৃঝিরা ফি সাকপ্রতি চারিআনা, . षांठेषाना, अक्षेत्रका शाहेरकम । साक-

দমা বৃষিয়া মৃচি দাঁও মারিতেন; অধিক
টাকা পাইলে সব উল্টা লিখিতেন।
এইয়পে নানা প্রকার ফিকির ফন্দীতে
মৃচিরাম জনেক টাকা উপার্জ্জন করিতে
লাগিলেন—ভিনি একা নহে, সকলেই
করিত—ভবে মৃচি কিছু অধিক নির্লজ্জ
—কথন কথন লোকের টেঁক হইতে
টাকা কাড়িয়া লইত।

याहे (होक, मूहि भी बहे वड़मासूष হইয়া উঠিল—কোন্ মুচি না হয় ?— অচিরাৎ দেই অক্তনামী প্রতিবাদিনী বৰ্ণালকারে ভূষিতা হইল। মদ, গাঁজা, खनि, চরদ, আফিল-- याहात्र माম क-করিতে আছে, এবং যাহার নাম করিতে. नाई-मकलई मूहिवावुत शृह्दक ष्यहर्निन আলোক ও ধুমময় করিতে লাগিল। মুচিরামেরও চেহারা ফিরিতে লাগিল-গালে মাদ লাগিল-ছাড ঢাকিয়া আ-मिल--वर्व काशान विमात छाड़िया मिलीत नागताय (भी हिल। शतिष्ठ एतत देवि छ बचिए नाशिन-भाषा, काला, नीन, জরদা, রাঙ্গা, গোলাপী প্রভৃতি নানা বর্ণের বল্লে মুচিরাম সর্বাদা রঞ্জিত। রাত্রি দিন মাথায় ভেড়িকাটা, অধরে • তাত্বলের রাগ-এবং কঠে নিধুর টগা। স্থভরাং মুচিরামের পোরা বারো।

দোষের মধ্যে সাহেব বড় খিট্থিট্
করে। মুচিরাম একে খোরতর বোকা,
কোন কর্মাই ভাল করিরা করিতে
পারিত না, ভাহাতে আবার হুর্জ্য লোভ
—স্কুল ভাতে মুচিরাম প্লালি খাইড!

সাহেবটাও বড় বদরাগী—শনেক সমরে
মুচিরামকে কাগজ পআ ছুড়িরা মারিত।
কখন খাইতে খাইতে সাহেব ''রিপোর্ট''
শুনিতেছে—সে সমরে মুচিরামকে কটি
বিসকট ছুড়িরা নারিত। সাহেবের
ভিতরে ভিতরে হৃদরে দরা ছিল।—
নচেৎ মুচিরামের চাকরী অধিককাল
টিকিত না।

সৌভাগ্যক্রমে সে সাহেব বদলি হইয়া
গোল—ফার একজন আসিল। ইংলও
হইতে আসাদিগের রক্ষণাবেক্ষণজনা যে
সকল রাজপুরুষ প্রেরিত হয়েন অনেকেই সূবৃদ্ধি ও স্পাওিত বটে, কিন্তু
মধ্যে মধ্যে এক একজন অতি নির্কোধ
ব্যক্তি উচ্চবেতন পাইবার জনা প্রেরিত
হইয়া থাকেন। এই সাহেবটি তাহারই
একজন।

এই নৃতন সাহেবটির নাম Gronger ham—লিথিবার সময়ে লোকে লিথিত প্রশারহ্যাম—বলিবার সময়ে বলিত গলারাম সাহেব মোক দ্বাম করিতে গিরা, কেবল ডিষমিশ করিতেন। ইহাতে ছইট হ্ববিধা ছিল — এক, এক ছত্র রায় লিথিলেই হইত, ছিতীয় আপীল নাই। অন্যান্য সকল কর্ম্মের ভার সেরেস্তাদার এবং হেড ক্রোণীর উপর ছিল। যতদিন সাহেব ঐ জেলায় ছিলেন, এক্দিনের অন্যা একথানি চিঠি স্বহস্তে মুশাবিদা করেন নাই—হেড কেরাণী সব করিত।

সাহেব প্রথম আসিরা, মুর্চরামের

कालांकांला नश्व श्रृहिक्न भवीक्षे দেবিয়া, এবং তাহার আভূমিপ্রণত ডবল সেলাম দেখিয়া একেবারে সিদ্ধান্ত করি-লেন, যে আপিদের মধ্যে এই সর্কা-পেক্ষা উপযুক্ত লোক। সে বিশ্বাস তাঁহার কিছুতেই গেল না। যাইবারও कान कारन हिल ना-किन ना काज কর্ম্মের তিনি খবর রাখিতেন না। একদিন আপিদের মীর মুস্সী, মিরজ। গোলাম সফ দর খাঁ সাহেব, ছ নিয়াদারি নামাফিক মনে করিয়া ফৌত করি লেন। সাছেব, পর্দিনেই মুচিরামকে ডাকিয়া তৎপদে অভিধিক্ত করিলেন। মীর মুন্সীর বেতন কুড়িটাকা-কিন্তু **दिज्ञ कि करत ? श्रम्डि क्रिक्टर श**ित-প্র। অজবামরবৎপ্রাক্ত মুচিরাম শর্মা ক্ষধিরসঞ্চয় করিতে লাগিলেন।

দোষ কি ? অজরামরবং প্রাক্ত বিদ্যামর্থক চিন্তরেং। ছইটা একজনে পারে
না—দি প্রজিনিস্ হইতে দর্পনারারণ পৃতিতৃগু পর্যান্ত কেছ পারিল না। সুচিরাম
বিদ্যাচিন্তা করিতে সক্ষম নহেন—
কোন্তীকে লেখে নাই—অভএব বিষ্ণুশর্মার উপদেশাসুসারে মৃত্যুভয়রহিত
হইয়! অর্থচিন্তার প্রবৃত্ত। যদি সেই
"হিভোপদেশ" গুলি অধীত হইবার যোগা
হয়—যদি সে গ্রন্থ এই উনবিংশ শতাকীতেও প্রার বোগা হয়—ভবে মৃচিরামও প্রাক্ত। আর এ দেশের সকল
সকল মৃচিই প্রীক্ত।

বিকুশর্মা ভারতবর্ষে মাকিয়াবেলি-

চাণক্য ভারতের রোশকুকেল। যাহারা এইরপ গ্রন্থ বিদ্যালয়ে বালকদিগকে পড়াইবার নিয়ম করিয়াছে, দর্পনা-রায়ণ তাহাদিগকে পাইলে বেতাঘাত করিতে ইচ্চুক আছেন।

সপ্তম পরিচেছ্দ।

ু মুচিরাম ছুইতিন বংশর মীর মুস্পীগিরি করিল—তার পর কালেক্টরীর পেস্কারি থালি হইল। পেস্কারিতে বেতন পঞ্চাশ টাকা—আর উপার্জ্জনের ত কথাই নাই। মুচিরাম ভাবিল, কপাল ঠুকিরা একখানা দরগান্ত ক্রিব।

তথন কালেক্টর ও মাজিট্রেট পৃথক্
পৃথক্ বাক্তি হইত। সেখানে সে সময়ে
হোম নামা এক সাহেব কালেক্টর
ছিলেন। হোমসাহেবের মেজাজ মরজি
কিছু বেতর। মুচিরামের আর কোন
বৃদ্ধি ছিল না—কিন্তু সাহেবের মেজাজ
বুঝা বৃদ্ধিটা ছিল; প্রার বানরগোগ্রার
সে বৃদ্ধি থাকে।

দর্পনারারণ ভবে কে বানর ? যে মেজাজ বুঝে, না যাহার মেজাজ বুঝিতে হয় ? যে কলা খার, না যে কদণী প্রবোভন দেখার ?

মৃতিরাস একথানি ইংরেজী দরপান্ত লিথাইরা লইল—মৃতিরামের নিজবিদ্যা দরখান্ত পর্যান্ত কুলার না। যে দরখান্ত লিখিল, স্তিরাম তাহাকে বলিরা দিলেন, "দেখিও যেন ভাল ইংরেজি না হয়। শার যা ছৌক না ছৌক, দরখান্তের ভিতর যেন গোটা কুড়ি " মাই লার্ড" ष्मात्र " हे अत्र नार्फ भिन्न" शास्त्र । निनि-कात (महे तकम मत्रशांख निशिशा मिन। তখন, শ্রীমৃচিরাম বেশভূষায় প্রবৃত্ত হই-লেন। আপনার চারখানির ঢিলা পার-জামা পরিত্যাগ করিয়া, থানের ধৃতি ত্রীঅঙ্গে পরিধান করিলেন; চুড়িদার আন্তীন আল্লাকার চাপকান পরিত্যাগ পূর্বক, বুকফাক বন্ধক এয়ালা ঢিলে আন্তীন লাংক্লাথের চাপকান গ্রহণ করি-त्नन । नाष्ट्रमात्र भागिष् रक्तिश्रा मिश्रा, স্বহন্তে মাথায় বিঁড়া জড়াইলেন; এবং টাদনির আমদানি নৃতন চক্চকে জুভা ত্যাগ করিয়া চটিতে চাক্রচরণ্যয় মণ্ডন করিলেন। ইতিপূর্কে গঙ্গারাম সাহেবকে হরিয়েক রকম সেলাম করিয়া, ্কাঁদো कारिना मूथ कतिया, এकथान ऋभातिम চিঠি বাহির করিয়া লইয়াছিলেন। এই-রূপ চিঠি, দর্থান্ত ও বিহিত সজ্জাসহিত সেই শ্রীমৃতিরামচক্র, যথায় হোমসাহেব এললাবে বসিয়া ত্নিয়া জলুস করিতে-हिलन, जुथाय गिया नर्मन निल्नन।

উচ্চটকে, রেল দেওরা পিঁজরের ভিতর, হোমসাহেব এজলাষ করিতে'ছেন। চারিদিকে অনেক মাথার পাগড়ি
ও বিদিয়াছে—লোকে কথা কহিলেই চাপরাশী বাবাজিউরা দাড়ি ঘুরাইয়া গালি দিতেছেন—সাহেব নথ কামড়াইতেছেন এবং মধ্যে মধ্যে পার্শ্বন্থ কুকুরটিকে কোলে টানিয়া লইতেছেন । এক
কোঁটা গুড় পড়িলে যেমন সহত্র সহল্র

পিণীলিকা তাহা বেষ্ট্ৰন করে, খালি চাকরীটির মালিক ছোমসাছেবকে তেমনি উমেদওয়ার चেরিয়া দাঁড়াইয়াছে। **८ इत किराम अधार्ति । अधार्य किराम अधार्य किराम** তেছেন। অনেক বড় বড় ইংরেজিনবীশ चानिशाष्ट्रन-(मरकरन (कॅरना (कॅरना স্বলার্শিপ হোল্ডর। সাহেব তাহাদিগকে क क कथात्र विमात्र कतिरलन। "I dare say you are well up in Shakspeare and Milton and Bacon and so forth. Unfortunately we don't want quotations from Shakspeare and Milton and Bacon in the office. So you can go, Baboo." व्यत्न भागला मांशात्र मित्रां, ८५न ঝুলাইরা, পরিপাটী বেশ করিয়া আদি-ब्राष्ट्रितन ; সাহেব দৃষ্টিমাত্র তাহাদিগকে विकास मिटनन। "You are very rich I see; I want a poor man who will work for his bread. You can go." भागना (हरनद्र मन, অভিমন্ত্রাসল্পে কুরুবৈনোর নাায় বিমুগ इहेट नाशिल। वाकि बहिल मूहिबाम, **এবং তাঁহার সমকক্ষ জনক**র—বানর। সাহেব মৃচিরাসের দর্থান্ত পড়িলেন-हांत्रियां विलिध्म.

"Why do you call me, my Lord? I am not a Lord."

মুচিরাম যোজহাতে হিন্দীতে বলিল,

'' বিশা কো মালুম থা কি হজুর লার্ড

ববানা হেঁল।''

এখন হোমসাহেবের সঙ্গে একটা লার্ড হোমের দ্রসম্বন্ধ ছিল; সেই জন্য তাঁহার মনে বংশমর্যাদা সর্কদা জাগ-ক্রক ছিল। মুচিরামের উত্তর শুনিয়া আবার হাসিয়া বলিলেন.

"হো সকতা; লার্ড ঘরানা হো সক্তা; লার্ড ঘরনা হোনে সে হি লার্ড, হোতা নেহি।"

সকলেই বৃঝিল, যে মৃচিরাম কার্যা সিদ্ধ করিয়াছে। মৃচিরাম ঘোড়হাতে প্রভা তার করিল,

" বান্দা লোক কে ওরাতে হজুর লার্ড হেঁয়।"

সাহেব স্চিরামকে আর ছই চারিটা কথা জিল্ঞাসাবাদ করিয়া তাহাকেই পেঝারিতে বহাল করিলেন।

Struggle for existence! Survival of the Fittest! মুচির দলই এ পুপিবীতে চিরক্ষী।

व्यक्तेम পরিচ্ছেদ।

ষ্চিরাম বাব্—এখন তিনি একটা ভারি রক্ষ বাব্; এখন ভাঁহাকে শুধু ম্চিরাম বলা বাইতে পারে না—ম্চিরাম বাবু পেকারি পাইয়া বড় কাঁকরে পড়িলন। বিল্যাবৃদ্ধিতে পেকারি পর্যান্ত কুলার না—কাল চলে কি প্রকারে? "ভাগ্যবানের বোঝা ভগবানে বর"—মুচিরামবাব্র বোঝা বাহিত হইল। ভলগোৰিক্ষ চক্রবর্তী নালে একজন

कार्रेमनबीम (मर्ट कार्लक्रेडी भागित क्षाटक। खब्दशाविन्द्र वात्रवरमत्र छाहेन নবীশ আছে। সে বৃদ্ধিনান, কর্মাঠ কালেক্টরীর সকল কর্মা কাম বারবংসর श्रित्रा निविद्यारह । कि ख मुक्कि नारे-ভাগ্য নাই-এ পর্যান্ত কিছু হয় নাই। তাছার বাসাধরত চলে না। মুচিরাম তাহাকে অবলম্বন করিলেন। আপনার वामाय नहेबा शिवा बाबितन। छन-(शांविच मृतिवारमव वामात्र थारक, थांव পরে, গৃহকর্মের'সহায়তা করে, রাত্রি काटल वावृत्र घटत वाहिटत सामारहवी कृत्त এवः आशित्मत्र ममख कांच कर्म করিয়া দের। মুচিরাম ভাহাকে টাকাটা निकिटे! (मञ्जादेश (मन। छल्टाविस्मन সাহায্যে মুচিরামের কর্ম কাজ মাহেশের রণের মত গডগড করিয়া চলিল। ছোম সাহেব অনেক প্রশংসা করিতেন। বিশেষ মুচিরাম বিশুদ্ধপ্রণালীতে সেলাম क्तिङ, धवर "मारे नार्ड" धवर " देवत আনর" কিছুতেই ছাড়িত,না।

মৃচিরামবাবুর উপাক্ত নের আর সীমা রহিল না। হাতে অনেক টাকা জ-মিরা গেল। ভলগোবিন্দ নলিল, টাকা ফেলিরা রাখিবার প্রয়েজন নাই— ভালুক মূলুক কর্মন। মৃচিরাম সম্মত হইলেন, কিন্তু যে জেলার কর্ম্ম করে সে জেলার বিষয় খরিদ নিষেধ। ভজ-গোবিন্দ বলিল যে বেনামীতে কিন্তুন। কাহার বেনামীতে? ভলগোবিন্দের ইচ্ছা ভলগোবিন্দের নামেই বিষয় খরিদ হর,

किन माहम कतिया विलिट्ड शांतिन मा। এ দিকে মুচিরাম কাহারও বাসার গর ভনিয়া আসিলেন, যে খ্রীর অপেকা আত্মীয় কেহ নাই। কথাটায় ভাঁহার मण्पूर विचाम हरेग कि ना जानि ना-किंद मान मान कावित्वन य जीत नाम विषय कवार दिनागीत ट्यां । **এখানকার দেবোন্তর।** আগে লোকে করিত ঠাকুরের নামে-এখন বিষয় করিতে হর ঠাকুরুণের নামে। উভय ऋलारे विषयकर्छ। "(मवारे९" गाळ —পরম ভক্ত-পাদপদ্মে বিক্রীত। এই রূপ রাধাকান্ত জিউর স্থানে রাধামণি, मामञ्चल देव चारन मामाञ्चली (पवी মালিক হওয়ায় ভাল হইয়াছে কি মন্দ रहेबाह्य सानि ना-उदर अकृत कथा वुका यात्र। ज्यारा मिलादा रशलहे **নেবাইংকে থাইতে হইত চরণতুল্মী**— এখন, খাইতে হয় চরণ-পাণমুখে কি वनिव १

স্ত্রীর বেনামীতে বিষয় করা শ্রেয়ঃ
ইহা মুচিরাম বৃবিলেন কিন্তু এই সকলে
একটা সামান্য রকম বিদ্র উপস্থিত
হইল—সুচিরামের স্ত্রী নাই। এপর্যাস্ত তাহার বিবাহ করা হয় নাই—অসুকল্পের
অভাব ছিল না। কিন্তু এস্থলে অসুকল্প চলিবে কি না ভিষিয়ে পেকার মহাশল কিছু সন্ধিহান হইলেন। ভলগোবিশের সঙ্গে কিছু বিচার হইল—কিন্তু ভল-গোবিশ্য একপ্রকার ব্রাইয়া দিশ যে এ স্থলে অসুক্র চলিবে না। অতএব

মুচিরাম খারগ্রহণে কুতসকল হইলেন। কোন কুল পবিত্র করিবেন, ভাহার चार्ययं कदिएिहित्यम. এये नेमास खब्दशादिक बानाहेन य छाहात जक्रि অবিবাহিতা ভগিনী আছে—ভলগোবি-त्मत्र পिতৃकून উच्चन कत्रात्र क्रि नारे। অতএব মুচিরাম একদিন সন্ধার পর শুভলয়ে মাথায় টোপর দিয়া, হাতে স্তা বাঁধিয়া, এবং পট্টবন্ত পরিধান कतिया ভजकानी नामी, खबरगानित्मत সহোদরাকে সৌভাগ্যশালিনী করিলেন। তাহার পর হইতে ভদ্রকালীর নামে जातक जमीमांत्री পखनी अतिम इटेट मानिन। ভদ্ৰকালী হঠাৎ জেলার মধ্যে এক্ষন প্রধানা ভুমাধিকারিণী হইয়া मांडाहरनन ।

नवम পরিচ্ছেদ।

ভদ্রকালীর ঘাদশ বংসর বয়সে বিবাহ
হয়—মৃচিরামের এমনই অদৃষ্ট—বিবাহের পর ছই বংসরের মধ্যেই ভদ্রকালী
চৌদ্দ বংসরের হইল। চৌদ্দবংসরের
হইয়াই ভদ্রকালী ভলগোবিন্দের একটি
চাকরির জন্য মৃচিরামের উপর দৌরাত্ম্যা
আরম্ভ করিল স্কুতরাং মুচিরাম চেষ্টা
চরিত্র করিয়া ভলগোবিন্দের একটি
মুহরিগিরি করিয়া দিলেন।

ইহাতে মুচিরাম কিছু বিপন্ন হইলেন।

একণে ভ্রুগোবিন্দের নিজের কাজ

ইইল—সে মনোধোগ দিয়া নিখের কাজ

করে মৃচিরামের কাজ করিয়া দিবার তাহার তত অবকাশ থাকে না। ভক্ত-গোবিন স্থাত-শীঘুই হোম সাহেবের প্রেরপাতা হইল। মুচিরামের কাজের य नकन कृषि इहेट नानिन, द्याम সাহেব তাহা দেখিয়াও দেখিতেন না। আভূমিপ্রণত সেলাম এবং মাই লার্ড वृतित अर्ग (म मकरतत्र श्रीठ व्यक्त इहेश् রহিলেন। মুচিরামের প্রতি ভাঁহার मश्र कहना तहिन। कुर्डागावनकः এह मगर्य रहाममारहद वम्नि हहेशा शिलन. তাহার স্থানে ঋড সাহেব আসিলেন। ঋড অতি বিচক্ষণ ব্যক্তি। অতি অল मित्नरे वृत्रितन-मृहिताम धक्री वृक्तः ল্রষ্ট বানর—অকর্ম। অথচ ভারি রক্মের ঘুষথোর। মুচিরামকে আপিস হইতে বহিষ্ণুত করা মনে স্থির করিলেন। কিন্তু ঋড সাহেব যেমন বিচক্ষণ তেমনি দয়া-শীল ও ন্যারবান। মিছে ছুতাছলে কাহাকে অন্নহীন করিতে নিতান্ত অনি-ष्ट्रक; कांशांक धरकवांदा अप्रशेन कतिरा कानिक्क । मुहिताम रा विश्रम ভূদম্পত্তি করিয়াছে—ঋড সাহেব তাহা कानिए পार्त्रन नारे। अफ मार्ट्र মুচিরামকে ছইএকবার ইস্তেফা দিতে विवाहित्वन वर्षे, किन्न मूहिताम हार्थ वन जानिया इरे हातिवात "शतिव थाना বেগর মারা যারেগা" বলাতে তিনি নিরস্ত হইয়াছিলেন। তার পর, তাহাকে পেষ-कात्रित जूना द्वज्य आवकात्रित माद्रा-गारे पिट ठारियाहित्मन-अनाना

মফস্বলি চাকরি করিয়া দিতে চাহিয়া-हिल्म,-किस आवात मूहिताम टाएथ जन व्यानिया वर्तन, त्य व्यामात नतीत ভাল নহে মফস্বলে গেলে মরিয়া ঘাইব —হন্তুরের চরণের নিকট থাকিতে চাই। স্তরাং দয়াল্চিত ঋড সাহেব নিরত , হইলেন। কিছ তাহাকে লইয়া আর .কাজও চলে না। অগত্যা ঋড সাহেব মুচরামকে ডিপ্টি কালেক্টর করিবার सना शवर्याय विद्यार्थ क्त्रिश्नम । সাহেব বাঙ্গালি সেই সময়ে হোম আপিসে সেক্রেটরি ছিলেন—রিপোর্ট পৌছিবামাত্র মুচিরাম ডিপুটি বাহাছরিতে नियुक्त इहेरलन ।

मगम পরিচেছদ।

মুচিরামের মাথার বজাবাত হইল।
তিনি পেছারিতে ঘৃষ লইয়া অসংখ্য
টাকা রোজগার করেন—আড়াইশত
টাকার ডিপ্টিগিরিতে তাঁছার কি হইবে।
ম্চিরাম দিছাস্ত করিবেন—ডিপ্টিগিরি অখীকার করিবেন। কিন্তু ভজগোবিন্দু ব্রাইলেন—বে অখীকার করিলে
শুড সাহেব নিশ্চর বুঝিবে যে মুচিরাম
ঘ্ষের লোভে পেছারি ছাড়িতেছে না—
তাহা হইলে শীস্তই তাড়াইরা দিবে।
তখন ছইদিক্ ঘাইবে। অগত্যা মুচিরাম ডিপ্টিগিরি খীকার করিলেন।

মুচিরাম ডিপ্টি হ্ইরা প্রথম রূবকারী দত্তপতকাণীন পড়িরা দেখিলেন, লেখা

আছে প্রীযুক্ত বাবু মুচিরাম গুড় রার বাহাত্র ডিপোটি কালেক্টর। প্রথমটা वड़रे जाइलाम श्रेम-किन्त (भव किडू লজ্জাবোধ হইতে লাগিল। যে মৃত্রি রবকারী লিখিয়াছিল তাহাকে ডাকিয়া विनातन "ध (इ-- 'खड़' है। नाहे লিখিলে! শুধু মুচিরাম রায়বাহাত্র লেখায় ক্ষতি কি ? কি জান, আমরা গুড় বটে, কিছ আমাদের খেতাব রায়। ভবে যখন অবস্থা তেমন ছিল না, তথ্ন রায় খেতাব আমরা লিখিতাম না। তা, এখন গুড়েও কাজ নাই--রাম্বেও কাজ नारे, अधू मूर्तिश्राम त्राय्याशास्त्र निधि-लिहे इहेरत।" मृह्दि हेन्निछ वृद्धिन, हाकिरमत मन नवाहे त्राचिए हाइ। तम মুহরি দিতীয় ক্রবকারীতে লিখিল, "বাবু মুচিরাম রায়, রায়বাহাত্র।" মুচিরাম দেখিয়া কিছু বলিলেন না, দত্তথত ক-विद्या निल्ना। ८मरे व्यविध मुहितांम "রায়" চলিতে লাগিল; কেছ লিখিড ''মুচিরাম রায়, রায়বাহাত্র,'' কেহ লি-থিত "রার মুচিরাম রায়বাহাত্র।" মুচিরামের একটা यद्यना चूरिल- ७ए পদ্বীতে তিনি বড় নারাল ছিলেন, এখন দে काला शिल। তবে লোকে অসাকাতে বলিড "গুড়ের পো"— অথবা " খড়ে ডিপুটি।" আর ইস্থানর ছেলেরা কবিতা করিয়া গুনাইয়া গুনা-हेब्रा वनिष्ठ,

> ''গুড়ের কল্সীতে ডুবিরে' হাত বুঝ্তে নারি সার কি মাত ?''

(कह दनिङ, े । সরা মালসার খুসি নই। ও গুড় ভোর নাগরী কই 🕍

মুচিরাম তাহাদের তাড়াইরা মারিতে গেৰেন, তাহারা তাঁহাকে মুধ ভেঙ্গা-देशा, উভয় হতের অকৃষ্ঠ সমর্শন ধরা-ইয়া, উচ্চৈ:স্বরে কবিতা আওড়াইতে चाउडाहेट भनाहेन। नाटिं मरश মুচিরাম লখা কোঁচা বাঁধিয়া আছাড় খাই-লেন-ছেলেদের আনন্দের দীমা পাকিল না। শেব মুচিরাম স্থলের ছেলেদের मारम मारम किছू मरमम वत्राम कतिया षिया त्म विभव इहेट्ड छेकात्र भारेत्नन। किंद्र आत अक्षा नुउन शान इरेन। শীতকালে খেছুরেগুড়ের সন্দেশ উঠিন — মররারা তাহার নাম দিল ডিপুটি মণ্ডা।

वाकाटत याहा इडेक, नाटइवमहत्न মুচিরামের বড় ছখাতি হইল। বংসর বংসর রিপোর্ট হইতে লামিল, এরপ ত্মযোগ্য ডিপুটি আর নাই। অখ্যাতির কারণ--

প্রথম। মৃচিরাম গুড় মুর্থ,কালে কা-**८क्टे** जारहविष्ट्रगत थित्र।

ৰিভীয়। সুচিরাম অতি সামানা ইং-त्रिक कानिछ; याहाता छान देःतिक कानिज, जाहानिशटक थाटी कतिवात बना সাহেবেরা বলিভেন মুচিরাম ইংরেজিভে স্নিকিত; অধ্চ পাণ্ডিত্যাভিষানী নহে। তাহারা বলিতেন, মৃতিরাম তাহার খনেশ-वानीनित्तक पृष्टीखन्न ।

ভূতীয়। মুচিরাম নির্কিরোধী লোক

हिलनं; म्हंट्रवर्षा अन्यान कवित्वत সন্থান বোধ করিতেন। একবার ভিনি ক্ষিশানর সাহেবের সঙ্গে সাক্ষাৎ করিতে গিয়াছিলেন। সাহেব তথন মেমসাহে-বের সঙ্গে ঝগড়া করিয়া গ্রমমেজাজ हिल्म, এতেলা हरेवा माळ विल्मन. "निकान पाछ माना का।" वाहित्र হইতে মুচিরাম শুনিতে পাইয়া সেইথান इटेट क्टे हाट (मनाम कविया[ं] वनिन; "বহৎ পুব হঞ্র। হামারা বহিনকো (बामा बिजा द्वार्थ।""

(जाचिन।

চতুর্থ। ভোষামোদে মুচিরাম অবি-তীয়। তাহার পরিচয় অনেক পাওয়া গিয়াছে।

পঞ্ম। মৃচিরাম ডিপুটির ছাতে প্রায় হপ্তম পঞ্মের কাজ ছিল-অন্য কাজ वड हिल ना। इश्रम १ करा दाक-क्मांत्र এक महस्क्टे वर् विठांत्र कार्ता-রের প্রয়োজন হইত না—তাতে আবার मुक्तिताम विकाद व्याकारबद वर्ष थात्र श्रांति-তেন ৰা—চোপ বুলিয়া ডিক্রী দিতেন— নপির কাগমও বড পড়িতেন না। স্থতরাং মাস্বাবার দেখিরা সাহেবেরা ধন্য ধনা করিতে লাগিল। জনরব যে মুচি-दारमब अरकवारक क्रोंड मर्स्साक स्वेनीए भमत्रि इहेरव। कडक्थना हिन्छा होंड़ा छनिया विनन, "आयुष्ड भगवृद्धि ? इते। भा इरव ना कि भु"

वृक्तानाक्तान वहे मनत्त्र हरेशांमन কালেক্টরীতে কিছু গোলবোগ উপস্থিত इहेन। (शान मिहाहेबांत सना मिथान-

কার কমিশানর একজন ভারি বিচক্ষণ ডিপ্টি কালেন্টর পাইবার প্রার্থনা করিলেন। বোর্ড বলিলেন—বিচক্ষণ ডিপুটি? সে ত মুচিরাম ভিন্ন আর কাহাকে
লেখি না—তাহাকেই চট্টগ্রাম পাঠান
হোক। গবর্ণমেন্ট সেই কথা মঞ্জ্র
করিয়া মুচিরামকে চাটগা বদলি করিবলন।

গ্ৰাদ পাইয়া মুচিরাম বলিলেন, এই-বার চাকরি ছাড়িতে হইল। শোনা ছিল, চাটিগাঁ গেলেই লোকে জর প্রীহা হইয়ামরিকাযায়। আবেও শোনা ছিল যে চাটিগাঁ যাইতে সমুদ্র পার হইতে হয়—একদিন একরাত্তের পাতি। স্থতরাং চাটিগা যাওয়া কিপ্র-কারে হইতে পারে? বিশেষ ভদ্রকালী —ভদ্ৰকালী এখন পূৰ্বযৌবনা—দে বলিল, "আমি কোন মতেই চাটিগাঁ৷ যাইব না-কি ভোমায় যাইতে দিব না৷ ভূমি যদি যাও, তবে আমি বিষ থাইব।" এই বলিয়া ভদ্রকালী একটা বড় খোবা লইয়া তেতুঁল গুলিতে ৰসি-লেন। ভদ্ৰকালী তেঁতুল জাল বাসিতেন — মৃচিরাম বলিতেন "ওক্তেভারি অয় হয়—ও বিষ !" তাই ভদ্ৰকালী তেঁতুল खिलार्ज वितालन-मृतिदाम हैं। हैं। করিয়া নিষেধ করিতে লাগিলেন—ভদ্র-কালী তাহা না শুনিয়া "বিষ থাইব" বলিয়া সেই ভেঁতুলগোলায় লবণ ও मर्कता मः रवाश भृक्षक आधरमत हारनत অল মাথিয়া লইলেন। মুচিরাম অঞা-

পূর্ণ লোচনে শপথ করিলেন যে তিনি
কথনই চাটিগাঁ যাইবেন না। ভদ্রকালী
কিছুতেই শুনিল না—সম্দায় তেঁতুল
মাথা ভাতগুলি থাইয়া বিষপাণ কার্য্য
সমাধা করিল। মুচিরাম ভৎক্ষণাৎ
চাকরিতে ইন্ডেফা পাঠাইয়া দিলেন।

সূল কথা, মৃচিরামের জমীদারীর আর এত বৃদ্ধি হইয়াছিল, যে ডিপুটি গিরির সামান্য বেতন, তাঁছার ধর্তব্যের মধ্যে ছিল না। স্ক্রাং সহজে চাকরি ছাড়িয়া দিলেন।

একাদশ পরিচেছদ।

চাকরি ছাড়িয়া দিয়া মুচিরাম, ভত্তকালীকে বলিলেন, "প্রিয়ে!" (তিনি
সকের যাত্রার বাছা বাছা সংঘাধন পদগুলি ব্যবহার করিতেন) "প্রিয়ে! বিষয়
যেমন আছে—তেমনি একটা বাড়ী
নাই। একটা বাড়ীর মত বাড়ী করিলে
হয় না ?"

ভন্ত। দাদা বলে এখানে বড় বাড়ী করিচল, লোকে বল্বে ঘ্ষের টাকায় বড় মাহুষ হয়েছে।

মুচি। তা, এখানেই বা বাড়ী করায় কাল কি ? এখানে বুকপুরে বড়মানুষি করা যাবে না। চল, আর কোণাও গিয়া বাদ করি।

ভদ্রকালী সম্মত হইলেন, কিন্তু নিজ পিত্রাল্য যে গ্রামে সেই গ্রামেই বাস করাই বিধেয় বলিয়া পরামর্শ দিলেন। ফলে ভদ্ৰকালী আর কোন গ্রামের নাম বড় জানিতেন না।

মুচিরাম বিনীতভাবে ইহাতে কিছু আপত্তি করিলেন। তিনি শুনিয়াছিলেন যত বড় মামুষের বাড়ী কলিকাভায়--তি-নিও বড়মামুষ,স্তরাং কলিকাতাই তাঁহার বাসযোগ্য এইরূপ অভিপ্রায় প্রকাশ कतित्वन । এখন ভদ্রকাণীর এক মা-जून, এकमा कानीचाटि श्रृज्ञा मिटि ष्प्राविष्ठा, এक काटन कलिकांडा विष्ठाहेश গিয়াছিলেন, এবং বাটী গিয়া গল করিয়া ছিলেন, যে কলিকাতার কুলকামিনীগণ সজ্জিতা হইয়া য়ালপথ আলোকিত করে। ভদকালীর সেই অবধি কলি-কাতাকে ভূতলন্থ স্বৰ্গ বলিয়া বোধ ছিল। ত।হার অনেকগুলি অলফার হইয়াছে, পরিয়া সর্বজননয়নপথবর্ত্তিনী হইতে পারিলে অলফারের সার্থকতা হয়---ভদ্রকালী তৎক্ষণাৎ কলিকাতায় বাস করার প্রস্তাবে সম্মতা হইলেন।

তথন ভলগোবিল ছুট লইয়া, আগে
কলিকাতার বাড়ী কিনিতে লোদিল।
বাড়ীর দাম গুনিয়া,মুচিরা,মের বাব্গরির
নাধ কিছু কমিয়া আদিল—যাহা হউক,
টাকার অভাব ছিল না,—অট্টালিকা জীত
হইল। বথাকালে মুচিরাম ও ভদ্রকালী
কলিকাভায় আদিয়া, উপস্থিত হইয়া
নুতন গৃহে বিরাজমান হইলেন।

बानम शतिरुह्म।

ভদ্রকালী কলিকাতার আসিয়া দেখিলেন, তাঁহার মনস্কামনা পূর্ণ হইবার
কোন সন্থাবনা নাই। কলিকাতার
কুলকামিনী রাজপথ আলোকিত করা
দূরে থাকুক, পলীগ্রাম অপেকা কঠিনতর
কারাগারে নিবদ্ধ। যাহারা রাজপথ,
কলুষিত করিয়া দাঁড়ায়, তাহাদিগেঁর
শ্রেণীভূক্ত হইবার ইচ্ছাভদ্রকালী রাখেন
না—স্বতরাং তাঁহার কলিকাতার আসা
বুধা হইল। বিশেষ দেখিলেন তাঁহার
অক্সের অশহার দেখিয়া কলিকাতার
লীলোক হাসে। ভদ্রকালীর অলহারের গর্ম ঘুচিয়া গেল।

মুচিরামের কলিকাভায় আসা বুধা হইল না। তিনি প্রতাহ গাড়ি করিয়া वाकात गारेटलन, धवः यादा प्रचिटलन তাহাই কিনিতেন। বাবুটি নৃতন আম-मानि दमिया विद्यान्तृशन नीहिष्टोकाव बि-निम् (मज्भे होका दाकिक, धरः নিতান্তপক্ষে পঞ্চাশ টাকা না পাইলে ছাড়িত না। হঠাৎ মুচিরামের নাম वाकिया (शन-एय वावृष्टि मधुडकविटमव। পাড়ার যত বানর মধু দুটিতে ছুটিল। জুরাচোর, বদমাশ, মাভাল, শম্পট, নিকর্মা, ভাল ধুতি চাদর জুডা লাঠিতে অঙ্গণরিশোভিত করিয়া, চুল ফিরাইয়া, সন্তামণ ক্রিভে বাবুকে মুচিরাম ভাহাদিগকে কালিকাভার বড় वफ वावू मत्न कतिया छाहामित्क विरणव

আদর করিতে আরম্ভ করিলেন। তাহারাও আত্মীরতা করিয়া তাহার বৈঠক
খানার আড্ডা করিল—তামাক পোড়ার,
খবরের কাগল পড়ে, মদ খায়, তাস
পেটে, বালানা বালায়, গান করে,
পোলাও ধ্বংসায়, এবং বাব্ব প্রয়োলনীয়
এবং অপ্রয়োলনীয় দ্রবাসামগ্রী কিনিয়া
আনে। টাকাটায় আপনারা বার আনা
র্মুনাফা রাখে, বলে দাঁওয়ে যোভয়ের
প্রসমীমা রহিল-না।

যে গলিতে মুচিরাম বাড়ী লইয়াছি-লেন, সেই গলিতে একজন প্রথমশ্রেণীর বাটপাড বাদ করিতেন। তাঁছার নাম রামচক্র দত্ত। রামচক্র বাবু প্রথম শ্রেণীর বাটপাড়-একটু ব্রাপ্তি বা এক খানা কাটলেটের লোভে কাহারও অমুগতা করিবার লোক নহেন। তাঁহার ত্রিতল গৃহ, প্রস্তরমুকুর কাষ্ঠ কাচ কার্পেটাদিতে সকুত্রম উদ্যানতুলা রঞ্জিত; তাঁহরি मद अयोकां स्थान करने का वा वा वा ना ना हाला वैधिया निकि (चाँछि; व्याखावल অনেকগুলি অখের পদ্ধব্যি শুনা যায়---তিন্ধানা গাড়ি আছে, সোন্ধোধা তকা. शैवावाया शृहिनी. हाएउटनाटि वाया-ইংরেজ থাদক,'এবং তাড়াবাধা 'কাগল'' — मकन हे हिल। उथालि जिनि कृता চোর,—জুয়াচ্রিতেই এ সকল হইয়া-जिनि यथन अनित्नन, টाकांत বোঝা লইয়া একটা আমা গৰ্দভ পাড়ায় আসিয়া চরিয়া বেড়াইভেছে, তথন

ভাবিলেন, যে গর্দভের পৃষ্ঠহইতে টাকার বোঝাট নামাইরা লইরা তাহার উপকার করিতে হইবে। আহা! অবোধ পশু! এত ভারি বোঝা বহিবে কিপ্রকারে— বোঝাট নামাইরা লইরা তাহার উপকার করি।

প্রথম প্রব্যোজন, মৃচিরামের সঙ্গে আলাপ পবিচয়। রামচক্র বাবু বড় লোক—মৃচিরামের বাড়ী আগো ঘাইবেন না। ইঙ্গিত পাটরা একজন অফুচর মৃচিরামের কালে তুলিয়া দিল, রামচক্র বাবু কলিকাভার অভি প্রধান লোক, আর মৃচিরামের প্রতিবাদী—মৃচিরামের সঙ্গে আলাপ করিবার জন্য অভি ব্যস্ত। স্ত্তাং মৃচিরাম গিয়া উপস্থিত।

এইরপে উভয়ে উভয়ের নিকট পরিচিত হইলেন। উভয়ের উভয়ের বাড়ী
যাতায়াত কটতে লাগিল। ঘন ঘন
যাতায়াতে কমে সৌহার্দ বৃদ্ধি। রামচক্র
বাবুর সেই ইচ্ছা। তিনি চতুর, মুচিবাম নির্কোধ; মুচি গ্রামা, তিনি নাগরিক। অল্লকালেই মুচিরাম্মৎসা ফাঁদে
পড়িল--রামচক্রের সঙ্গে বন্ধুতা করিল।
রামচক্র ভাঁছাব মুক্তবি হইলেন—মুচিরামেব নাগরিক জীবন্যাজানির্কাতে
শিকাণ্ডক হইলেন।

ত্রাদশ পরিচেছদ।

তিনি নাগরিক জীবননির্বাহে মৃচিরা-মের শিক্ষাগুরু—কলিকাতারপ গোচারণ- ভূমে তাঁহার রাখাল—কালীঘাট হইতে
চিতপুর পর্যান্ত, যখন মৃতিরাম বলদ হুথের
গাড়ি টানিয়া যায়, রামবাব্ তথন তাহার গাড়য়ান; সথের ছেকড়ায় এই
থেঁড়া টাট্টি জুড়িয়া, রামচক্র পাকা
কোচমানের মত মিঠাকড়া চাবুক লাগাইতেন। তাহার হস্তে ক্রমে গ্রাম্য বানর
সহরে বানরে পরিণ্ত হইল। কি
গতিকের বানর,তাহা নিমোক্ত পত্রাংশ
পড়িলে বুঝা ঘাইতে পারে। এই সময়
তিনি ভলগোবিন্দকে যে পত্র লিখিয়াছিলেন, তাহা হইতে উদ্ভ করা গেল—

"তোমার পুত্রের বিবাহ ভূনিয়া আহলাদ হইল। টাকার তেমন আয় কুল্য করিতে পারিলাম না—মাপ করিও। ছইখানা গাড়ি কিনিয়াছি—একখানা বেরুষ-অকথানা ব্রোনবেরি। একটা আরবের যুড়িতে ২২০০ টাকা পড়িয়াছে। ছবিতে, আয়নাতে, কাবণেটে অনেক টাকা পড়িয়া গিয়াছে। কলিকাতার এত খরচ তাহ। জানিলে কথন সাসি তাম না—দেখানে সাত সিকায়, কাপড় ও মজুরিদমেত আমার একটা চাপকান ভৈয়ার হইত-এখানে একটা চাপ-कात्म ७० होका पड़िशाद्य। धकरमह রূপার বাসনে অনেক টাকা লাগিয়াছে। थान, वांछि, श्रिनात्र, त्म वात्रत्वत्र कथा वितिष्ठहि ना- व त्रिष्ठे दिद्वत सना। বরকনাকে আমার হইয়া আশীর্কাদ করিবে।"

এই হলো বানরামি নম্বর এক। তার

পর, মৃচিরাম, কলিকাতার যে কেছ্
একটু থাতিযুক্ত, তাহারই বাড়ীতে,
রামচক্র বাব্র পশ্চাতে পশ্চাতে যাইতে
আরম্ভ করিলেন। কোন নামজাদা
বাবু তাহার বাড়ীতে আসিলে জন্মসার্থক মনে করিতেন। কিসে আসে
সেই চেট্টায় ফিরিতেন। এইরূপ আচরণে, রামবাব্র সাহায্যে, কলিকাতার
সকল বৃদ্ধিকু লোকের সজে তাঁহার
আলাপ হইল। টাকার মান স্ক্রি;
মুচিরামের টাকা আছে; স্কুতরাং সকলেরই কাছে তাঁহার মান হইল।

ভার পর মুচিরাম কলিকাভার ইংরেজ
মহল আক্রমণ করিলেন। রামবাব্র
পরিচয়ে যত ছোট বড় ইংরেজের বাড়ী
যাভায়াত করিলেন। অনেক ধায়গাতেই ঝাটা লাখি থাইলেন। কোন
কোন স্থানে মিঠ কথা পাইলেন।
জনেক স্থানেই একজন মাতালো জমিদার
বলিয়া পরিচিত হইলেন।

তার পর ব্রিটব ইণ্ডিয়ান আসোদিরেশানে চুকিলেন। নাম লেখাইয়া
বংসর বংসর টাকা দিতে লাগিলেন।
রামচক্র বাবুর সঙ্গে প্রতি অধিবেশনে যাইতে আরম্ভ করিলেন। রামবাবু কথিত
মহামহিমমহাসভার "একটী বড় কামান।"
তিনি যুখনই বড় কামান দাগিতে যাইতেন এই ছোট মুচিপিন্তলটি ক্রমে মুখ
খুলিয়া পুটপার্ট করিতে আরম্ভ করিল।
মুচিরামও ব্রিটশ ইণ্ডিয়ান সভায় এক গন

বক্তা হইয়া দাঁড়াইলেন। তিনি বকিতেন মাথামুত্ত, কিন্ত ছাপার বিজ্ঞাপনীতে যাহা বাহির ছইড, সে আর একপ্রকার। মুচিরাম নিজে তাহার কিছুই বুঝিতে পারিতেন না। যাহারা বুঝে, তাহারা পড়িয়া নিন্দা করিত না। স্থতরাং • মুচিরাম ক্রমে একজন প্রসিদ্ধ বক্তা ুবলিয়া খ্যাতিলাভ করিতে লাগিলেন। (यंथात लाटक वफ्रलाक विवा गना হয়, মুচিরাম ভাহার কোন যায়গায় বাই-তেই ছাড়িত না। বৈলবিডীরে গেলে বড লোক বলিয়া গণ্য হয়, স্তরাং সে বেলবিজীরে যাইত। যাইতে যাইতে সে লেপ্টেনাণ্ট গ্রণরের নিকট স্থপরি-চিত হইল। লেপ্টেনাণ্ট গবর্ণর তাহাকে একজন নমু, নিরহঙ্কারী, নিরীহ লোক वित्रां खानित्वन। অমীদারী সভার একজন নায়ক বলিয়া পূর্ব্বেই রামচক্রের निकं े शतिहत्र शाहेत्रा हित्तन।

যুল্ডাতি বাঙ্গাল কৌন্সিলে একটি পদ খালি হইল। একজন জ্মীদারী সভার অধিনায়ককে তাহাতে প্রতিষ্ঠিত করিবেন, ইহাই লেপ্টেনেন্ট গ্রন্থর বাহাত্ত্র স্থির করিলেন। বাছনি করিতে মনে মনে ভাবিলেন, "মুচিরামের ন্যায় এ পদের যোগ্য কে ! নিরহজ্বারী নিরীহ—ইংরেজি কহিতে ভাল পারে না—অভূএব তাহা হইতে কার্য্যের কোন গোল্যোগ উপস্থিত ইইবে না। অভএব মুচিরামকে বাহাল করিব।"

णिवितां अन्दित्त वातू म्विताम तांग

বাঙ্গাল কে জিলে আসন গ্রহণ করি-লেন।

ठ फूर्म भितिरह्म ।

বড় বাড়াবাড়িতে অনরেবল মুচিরাম রায়ের রুধির শুকাইয়া আসিল। ভজ-গোবিন্দ ফিকিরফন্দিতে অল্ল দামে অধিক লাভের বিষয়গুলি কিনিয়া দিয়াছিলেন —তাহার কার্য্যদক্ষতায় ক্রীতসম্পত্তির আয় বাড়িয়াছিল-কিন্তু এখন তাহা-তেও অনাটন হইয়া আদিল। ছুই একখানি তালুক বাঁধা পড়িল--রামচক্র বাবুর কাছে। রামচন্দ্র বাবুর সকল এত দিনে সিদ্ধ হইয়া আসিতেছিল—এই জন্য তিনি আত্মীয়তা করিয়া মুচিরামকে এতবড় বাবু করিয়া তুলিয়াছিলেন। রামচক্র অর্দ্ধেক মূল্যে তালুকগুলি वैश्वा द्राचित्न-कात्नन य मृहिताम কখনও ভাধরাইতে পারিবে না—অর্দ্ধেক মুলো বিষয়গুলি তাঁহার হইবে। আরও তালুক রাঁধা পড়ে এমন গতিক হইয়া **७**हे मभाष जनातिक আসিয়া উপন্থিত হইল। সে শুনিয়াছিল যে গবর্ণর প্রভৃতি বড় বড় সাহেব তাহার ভগিনীপতির হাতধরা—এই স্থযোগে একটা বড় চাকরি যোটাইয়া লইতে **इहेरव— এই ভরসায় ছুটি লই**য়া কলি-কাতায় আসিলেন। আসিয়া শুনিলেন মুচিরামের গতিক ভাল নহে।° তাহার উদ্ধারের উপায় বলিয়া দিলেন।

বলিলেন, "মহাশর, আপনি কথন ভালুকে যান নাই। গেলেই কিছু পাওয়া যাইবে। ভালুকে যান।"

মুচিরাম আনন্দিত হইল, ভাবিল, তাই ত। এমন সোলা কথাটা আমার মনে আসিল না।" মুচিরাম খুশী হইরা, ভলগোবিন্দের কথার স্বীকৃত হইল।

চন্দনপুর নামে তালুক—সেইথানে वां द्र (शत्मन। अक्षानिश्वत व्यवशा वड़ সে বংসর নিকটবর্তী স্থান मकल पृक्षिक छैनश्चि — किन्ह (म महत्न किছ ना। कथन मृहिताम अवामिरशंत निक्र मात्रन माथ्ये लटबन नारे। मूर्छ-बाम निर्कित्वाधी लाक-जाहारमञ्ज छे नव কোন অভাচার করিভেন না। আছ खबरगाविद्यात भदामदर्भ यमतीदा छैल-श्विष्ठ इहेया विलितन, "आंशांत कनाांत বিবাহ উপস্থিত-বড় দারগ্রস্ত হইয়াছি, किছ ভিকা দাও।" প্ৰভাৱা দ্যা कतिन- थवा यूर्थ थाकित सभीमात्रक সকল সময়ে দয়া করিতে প্রস্তা स्त्रीमात व्यानिवादह नदाम शाहेया, भारत शाल अना, टिंक होका नहेश मुहिताम वर्गान वामिए वाद्य कदिन। मूहि-রামের চেষ্ট টাকায় পরিপূর্ণ হুইতে माशिन, किन्न देशाल बाब धकतिरक, একপ্রকার : সৌভাগ্যের তাঁহার আর छेमग्र ट्रेन।

প্রকারা দলে দলে মৃতিরাম্দর্শনে আসে—কোন দিন পঞ্চাল, কোন দিন यांहे, दकांन मिन बाभी, दकांन मिन একশত এইরূপ। याशास्त्र वाड़ी नि-कर्षे डाइ। ता मर्भन कतिया कितिया यात्र, যাহাদের বাড়ী দুর, তাহারা দোকান इटेटल थालामायशी किनिया अक्षे वाता-নের ভিতর রাঁধিয়া বাড়িয়া খায়। মহালটি একে খুব বড়-মুচিরামের এত, বড় জ্মীদারী আর নাই—ভাহাতে গ্রাম-श्वनित्र मर्था विन श्रांन व्यानक शाकांत्र. छ्टे ठाविष्य अञ्चादक आत्र वाधिया थाहेबा याहेटा इहेड'। এक मिन कारनक দুর হটতে প্রায় একশত প্রজা আদি য়াছে-ভাহাদের বাড়ী একটা ভারি बना शात: निकाम श्रकारम, जाशास्त्र বেলা গেল: ভাছারা বাড়ী ফিরিতে পারিল না। বাগানে রাঁধাবাড়া করিতে লাগিল। রাত্রি থাকিয়া প্রাতে যাত্রা করিবে। ভাহারা যথন খাইতে বসিল. **८**मेरे मगर्य निक्षेष्ट गार्ठभाव हरेया. ष्ययात्म, এकि मार्ट्य याहेरङ्हित्न। माद्यिवि नाम भीन अद्युल्। जिनि के क्लाव श्रधान बाक्यक्य-माकि (हैं) সাহেবটি ভাল লোক— नावितान्--हिटेडियी, धदः शतिल्यी। দোষের মধ্যে বৃদ্ধিটা একটু ভোঁতা। পূর্বেই বলিয়াছি সে বৎসর ঐ অঞ্লে **धक्रो। इंक्कि इहेशाहिल ; সাहित इ-**क्षिक जमात्रक वाहित हहेग्राहित्न। বিকটস্থ কোন গ্রামে তাঁহার তামু পড়ি-बाहिन-छिनि अभन अधारबाहरन छो ब्रा बाहेर जिल्लान। याहर वाहर व

দেখিতে পাইলেন, এঁকটা বাগানের ভিতর কতকগুলা লোক ভোজন করি-তেছে।

দেখিয়াই সিদ্ধান্ত করিলেন, ইহারা
সকলে ছর্জিকপীড়িত উপবাদী দরিদ্র
লোক, কোন বদান্য ব্যক্তি ইহাদের
ভাজন করাইতেছে। স্বিশেষ তত্ত্ব
জানিবার দ্বান্য, নিকটে একজন চাসাকে
দেখিয়া তাহাকে জিজ্ঞাসাবাদ আরম্ভ
করিলেন।

এখন সাহেবট, লোক বড় ভাল হই-লেও আত্মগরিমাবর্জিত নহেন। তাঁহার মনে মনে শ্লাঘা ছিল যে, জিনি বাঙ্গালা বড় ভাল জানেন। স্বতরাং চাসার সঙ্গে বাঙ্গালার কথোপকথন আরম্ভ করিলেন।

সাহেব চাসাকে ভিজ্ঞাসা করিলেন,

"টোমাডিগের গ্ডামে" ডুর্ভাথ্থা।
কেমন আছে !"

চাসা ত জানে না ডুর্ভাব্ণা কাহাকে
বলে। সে কাঁফরে পড়িল। ডুর্ভাব্ধা
কোন বাক্তিবিশেষের নাম হইবে, ইহা
একপ্রকার স্থির হইল। কিন্তু "কেমন
আছে ?" ইহার উত্তর কি দিবে ? যদি
বলে যে সে ব্যক্তিকে আমি চিনি না,
তাহা হইলে সাছেৰ হয় ত, এক ঘা
চাব্ক দিবে, যদি বলে যে ভাল আছে,
তাহা হইলে সাহেৰ হয় ত ডুর্ভাব্ধাকে
ডাকিয়া আনিতে বলিবে; ভাহা হইলে

কি করিবে ? চাস ভাবিয়া চিভিয়া উত্তর করিল, "বেমার আছে।";

"বেমার—Sick?" সাহেব ভাবিতে লাগিলেন, "Well, there may much sickness without their being any scarcity—the fellow doesnot understand perhaps; I am afraid these people don't understand their own language—I say ভূব্চাৰ্থা কেমন আছে—অটিক আছে কিয়া অৱ

এখন চাসা কিছু ভাব পাইল।
স্থির করিল যে এ যখন সাহেব, তবে
অবশা হাকিম (সে দেশে নীলকর নাই)
হাকিম যখন জিজ্ঞাসা করিতেছে যে
ডুর্ভাখ্থা অধিক আছে কি অল আছে—
তথন ডুর্ভাখ্থা একটা টেল্লের নাম না
হইয়া যায় না। ভাবিল কই আমরা ত
ডুর্ভাখ্থার টেক্ল দিই না; কিন্তু যদি
বলি যে আমাদের গ্রামে সে টেক্ল নাই—
তবে বেটা এখনই টেক্ল বসাইয়া যাইবে। ,অতএব মিছা কথা বলাই
ভাল। সাহেব পুনরপি জিজ্ঞাসা করিলেন,—

" টোমাডের গ্ড়ামে ডুৰ্ভাথ্বা অধিক কিমা অর আছে ?"

हाता छेखन कनिन,

" হজুর আনাদের গাঁহে ভারি ডুর্-ভাগ্ধা আছে।"

मारहव ভावित्तन, "Humph! I

'आरम्। । पृष्टिक

thought as much—" পরে বাগানে যে সকল লোক খাইতেছিল, তৎপ্ৰতি षत्र्वितिर्द्भं क्रिया जिल्लामा क्रितिनन, "কে বোজন করিল ?" (উদ্দেশ্য " क्द्राईन'')

চাসা। প্রকারা ভোজন কোছে। সাহেব, চটিয়া, " টাহা আমি আনেthey eat, that I see-but who pays ?-টাকা কাছাড় ?"

এখন সে চাসা জানে যে যত টাকা व्यामिट उट्ह, नकन हे सभी नारतत्र मिसूरक यारेट उट्ह ; त्र निष्य कि कू पिशा আদিয়াছিল-অতএব এবার বিনা বি-লম্বে উত্তর করিল.

" होका क्यीमादवव"

সাহেব। Ah! there it is; they do their duty-अभीमादतत्र नाम कि?" চাদা। মুচিরাম রায়।

সাহেব। কট ডিবস বোজন কডি-য়াছে ?

চাসা। তা ধর্মাবতার প্রকারা রোজ (तांख चारम, थां श्रा मां श्रा करते। সাহেব। এগ্ডামের নাম কি ?

চন্নপুর। চাসা।

হাতে পেন্সিলে লিখিলেন.

For Famine Report.

"Babu Muchiram Ray, Zemindar of Chinnapur-feeds every day alarge number of his ryots." সাহেব তথন ঘোড়ার চাবুক সারিয়া

টাপে চলিলেম। চাসা আসিয়া প্রামে রটাইল, একটা সাহেব টাকায় আট আনা हिमाद दिखा वमारेट आनिशाहिल, চাসামহাশয়ের বৃদ্ধিকৌশলে বিমুধ হই-याट्ड ।

এদিকে মীন্ওয়েল্ সাহেব যথাকালে ফেমিন রিপোট লিখিলেন। मूठिवामवायमच्या । পারাগ্রাফ শুধু ভাহাতে প্রতিপন্ন হইল, যে মুচিরাম क्रमीमात्रमिरभत्र व्यामर्मश्रम । এই इः मगर्य अञ्चलांन कदियां मकन अञा शिलद श्रीवदकां करियाम ।

রিপোর্ট কমিশানরীতে গেল। কমি-শানরের হস্ত হইতে কিছু উজ্জলতর বর্ণে রঞ্জিত হইয়া—ক্ষিশানর সাহেব লেখক खान-गवर्गमण्डे (शन। **गवर्गमण्डे**व এই বিবেচনা—যে যার প্রজা সেই যদি ছর্ভিক্ষের সময়ে তাহাদের আহার যোগায়, তাহা হইলেই "ছর্ভিক প্রশ্নের" উত্তম মীমাংসা হয়। অভএব মুচি-द्रारमद नाम वनामा समीनाद्रनिगरक স্মানিত ও উৎসাহিত করা নিতান্ত कर्त्वा। जब्बना वात्राम शवर्गमण ভারতবর্ষীর গ্রন্মেন্টের নিকট অমুরোধ সাহেব নোটবুক বাহির করিয়া তা- করিলেন যে, বাবু মৃচিরাম রারমহাশরকে —পাঠক একবার হার হার বল—রাজা-বাহাত্র উপাধি দেওয়া যায়।

> ইভিয়ান গ্ৰন্মেণ্ট বলিলেন তথান্ত। গেলেট হইল, রাজা মুচিরাম রায়বাহা ছুর। ভোষরা সুবাই আর একবার इति दल।

अভिक्रान-्भक्रुस्त ।

৪। তুম্বন্ত এবং শকুন্তলা।

य शुक्रम जवर य त्रमनीत देखिहान ল্ইয়া অভিজ্ঞানশকুত্তল নাটক, ৱাহা-দের অদৃষ্টপট অভিজ্ঞানশকুন্তলরচয়িতা ,কর্ত্তক চিত্রিত হইয়াছে, তাহাদিগকে **शृंगक् ভাবে দেখা হই श्राट्ट। সে পুরুব** পুরুষ্চরিত্রের আদর্শস্থরণ এবং সে রুমণী রুমণীকুলের উচ্চপ্রতিমা তাহা দেখা হইয়াছে। ছইটি ভিন্ন অগতের ভিন্ন প্রকৃতি ভিন্নভাবে পর্যালোচনা কিন্ত যে শক্তির গুণে সেই কবিয়াছি। ছুই ভিন্ন অগৎ ভিন্নভাসত্ত্বেও এক হইয়া গেল, ভিন্ন পথ ছাড়িয়া একপথে চলিতে লাগিল, সে শক্তির প্রকৃতি এবং পরিমাণ এখনও দেখা হয় নাই। সে শক্তির নাম প্রেম। এখন অভিজ্ঞানশকুস্তলের প্ৰেমতত্ব বুৰিয়া দেখিতে হইতেছে। আমরা পূর্বে বলিয়াছি যে, অভিজ্ঞান শকুন্তলের পরীক্ষা--- অভিজ্ঞানশকুন্তলের नांवरकत बरनत अक अश्लादकां वा भाव অংশের পরীকা। সে মনের এক অংশ দেখিয়াছি; এখন অপর অংশ দেখিতে रहेरव। तम मरमत्र ममख (मश) हहे-য়াছে, কেবল রিপুমান্তভা দেখা হয় নাই। এখন সেই রিপুশ্বততার প্রকৃতি **धवः भदिमान (संशोधक ।**

আশ্রমপ্রবেশকালে চ্যান্তের দক্ষিণ বাহ স্পাদিত হওয়াতে তিনি ভাবিলেন— শাস্তমিদমাশ্রমপদং ক্রতি চ বাহঃ কুতঃ ফলমিহাস্য।

অপবা ভবিতব্যানাম্ ধ্রাণি ভবস্তি

সর্বত ॥

ইহার অর্থ এই:-এই আশ্রমপদ শান্তিময়। এমন শান্তিময়ন্থানে আমার বাহু স্পন্দিত হইল, ইহার ফল কি হইতে পারে, এখানে ত স্তীলাভের সম্ভাবনা নাই। অথবা এমন হইতে পারে যে, ভবিতব্যের বলে সকলম্বানেই স্তীলাভ ছম্মন্ত ধার্মিক; হিন্দুশাল্লে তাঁহার অগাধ ভক্তি। শাস্ত্র স্মরণ করিয়া তিনি স্ত্রীলাভের কথা মনে করিয়া বিশ্বিত इहेलन। किन्द्र व विश्व दिव कांत्रन, कि ? এ বিশ্বয়ের কারণ-- পাস্তমিদমাশ্রম-পদং।' অর্থাৎ, স্থানটি শান্তিময় তপ-স্যাশ্রম বলিয়া তাঁহার বিশ্বয়। সংসারা শ্রমবাদী সংসারধর্মনিরত বাজিদিগের বাদস্থান হইলে তাঁছার এ বিমায় হইত না। এ সকলই সম্ভব। কিন্তু এ বিশ্ব-যের আরও একটু অর্থ আছে। তাহা "ভবিতব্যানাং দ্বারাণি ভবস্তি সর্ব্বঅ" এই কয়টি কথায় প্রকাশ। এ কথার व्यर्थ এই-जीनांड इटेरन इग्रस्त स्थी वह अञ्ची इन ना; जी मरबंध इश्रह পুনরায় স্ত্রীলাভ করিতে পারিলে আপ-नात्क छात्राचीन यान करतन। अध् হিন্দুধর্মে 'আছাবান্ বলিয়া যে তিনি এইরূপ ভাবিলেন তা নয়। কিছু বেশী জীপ্রিয় না হইলে তিনি বোধ হয় এইরূপ ভাবিতেন :—" এ কি! আমার পরিণয় কার্য্য সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে, তবে কেন আমার দক্ষিণবাছ স্পন্দিত হয়? ইহার কি আর কোন অর্থ থাকিতে পারে? জানি না দেবতাদিগের কি অভিপ্রায়।" কিন্তু তিনি এরূপ ভাবিলেন না। কেবল তপস্যাশ্রম বলিয়া তিনি বিশ্বিত হইলেন, বিবাহিত বলিয়া বিশ্বিত হইলেন না। তিনি কিছু বেশী জীপ্রিয়।

তার পর আশ্রমে প্রবেশ করিয়া
শক্ষালা এবং তাঁহার স্থীবয়কে দেথিবা
মাত্র তাঁহার মনে যে ভাবের উদয় হইল,
ভাহাও তাঁহার স্ত্রীপ্রিয়তার এবং রূপামুরাগের ফল। সে ভাব এই—
"ওদ্ধান্তর্লভমিদং বপুরাশ্রমবাসিনো
ঘদি জনসা।

म्बीक् छाः चन् खरेनक्नाननका वन-

লতাতিঃ ॥

যদি সামানা আশ্রমবাসিনীগণের

শারীরিক সৌন্দর্যা রাজান্তঃপ্রবাদিনীগণের মধ্যে হুর্লভ হইল, তবে যে দেখিতেছি উদ্যানসতা বনলতার কাছে

শরাজিতা। অলোকসামান্যরূপরাশি
দেখিলে লোকে চমৎক্রত হয়, মুগ্ধ হয়,
মন্ত্রাহতের ন্যার ভিত্তিত হয়, হলয় আ
মদ্দে পহিপ্লত হয়, মুধে বাঙ্নিশন্তি

হয় না, অথবা উচ্ছাসময় ভতিবাক্য

নির্গত হয়। ছম্মস্তের এ সকল কিছুই তিনি জাপসবালাদিগের क्रभवामि (पश्चिमा चाभनाव क्रभमेपिश्व নিলা করিলেন। আমরা এইরাপ বুঝি य, य भूक्ष वा य तमनी काना जी অথবা অন্য পুরুষ দেখিয়া আপনার পত্নীর অথবা আপনার পতির নিন্দা, করে, ভাহার ণালমা অভিশয় বলবতী। वक्नजनात्र ऋन्त्रतक (मश्रित्रा रिय नक्न কুলকামিনীরা আপন আপন পতির निका कतियाहित्वनः, ठाइामिशदक (कह কখন ভাল বলে নাই এবং ভাল মনে करत्र नाहे। যাহাদের ভোগলালসা একান্ত বলবতী, ভাহারাই উপডে:গ্য বস্তুর তুলনা করিতে ভালবাসে। হুম-স্তের ভোগলালসা যে বড়ই প্রবল এবং সে জন্য ভিনি যে একটিমাত্র ভোগ্যবস্তুতে পরিতুই নন, তাহা অভিজ্ঞানশকুস্তলে ম্পষ্টাক্ষরে লিখিত আছে। হইতে ফিরিয়া আদিয়া হ্র্কাদার শাপ-প্রভাবে শকুন্তলাকে ভূলিয়া গিয়া হুমন্ত একদিন মাধৰোর সহিত বসিয়া আছেন এমন সময় এই গীতিধ্বনি প্রবণ করি-লেন-

অহিণবসহলোলুবো তুমং
তহ পরিচ্ছিম চ্মমঞ্জিং।
কমলবসইমেন্তণিব্দুদো
মহত্যর বিস্থমবিদো সি ণং কহং॥
হে মধুকর! তুমি মধুর লোভে লালাদ্বিত হইরা চৃতমঞ্জীকে সেই ভাবে
চুম্ন করিলে, এপন কেবল ক্সলের

সহবাদে নির্ভ হইয়া বল দেখি কেমন কোরে সেটকে একেবাবে ভূলিলে ?

মাধবা জিজ্ঞাসা করিলেন, এ গানটির অর্থ কি ? ত্মস্ত বলিলেন— সক্তত্ত্বত প্রনয়ে হিমং জনঃ। তদুসাা দেবীং বস্তমতীমস্তবেন মহ

ত্বপালম্ভনং গতোহস্মি।
সেখে মাধ্বা মন্তনাত্তাভাং হংসপদিকা
নিপুনমুপালকোহস্মীতি।

শ্পষ্টই দেখা ঘাইতেছে যে হ্মস্ত উপভোগদম্বন্ধে কিঞ্চিৎ চঞ্চলচিত্ত। তিনি একটি ভোগাবস্ত লইয়া থাকিতে পারেন না। তিনি নৃতন ভোগাবস্তর পক্ষপাতী। এই নিমিস্তই মহাকবি তাঁহাকে অগাঢ়প্রনয়ী বলিয়া নিন্দা করিয়াছেন। শকুস্তলার চিত্রদর্শনকালে বস্মতীর ভয়ে তাঁহাকে সেই চিত্র লুকা-ইতে দেখিরা সাত্মতী ভাবিতেছেন— অল্ল সংক্ষন্তিয়ালো বি পঢ়মসংভাবনং

. সাহিল সোহদো দানিং এসো।
ইনি মনোর প্রেমে তলাতচিত্ত হইয়াও পূর্বপ্রান্ত্রের সম্মান রাখিতেচেন।
এক্ষণে বস্থমতীর প্রতি ইকার প্রাণয়
শিখিল হইয়াচে।

শক্তলাকে প্রথম দেখিয়া গিয়া ত্মন্ত মাধবোর কাছে তাঁছার প্রতি অন্ত্রাগ প্রকাশ করিলে পর মাধবা পরিহাস করিয়া বলিল, যে যথন আপনার অন্তঃ প্র জীরছে পরিপূর্ণ, তখন এই বালি-কার প্রতি আপনার অন্ত্রাগ কেমন ?— না, যে বাজির মিষ্ট পর্জ্ব থাইরা অক্ষচি

হর্রাছে, তাহার ঠেতুলের প্রতি অফুরাগ

যেমন। তাহাতে হ্মন্ত উত্তর করিলেন যে

তুমি যদি তাহাকে দেখিতে তাহা হইলে

এমন কথা বলিতে না। কিন্তু আমা
দিগকে বোধ হয় বলিয়া দিতে হইবে

না যে মাধ্বোর পরিহাদ বড় পরিহাদ

নয় এবং সে পরিহাদের অর্থপ্ত তাই।

ফলতঃ তুম্বস্থের রূপতৃষ্ণা এবং ভোগ-লাল্যা অভিশয় বলব্ডী। সে ভোগ-লাল্যার আধিকা দেখিলে তাঁহাকে নিন্দা করিতে ইচ্ছা হয়। তিনি শকুস্ত-লাকে পরিণীতা ভার্যা বলিয়া চিনিতে পারিতেছেন না। তাঁহাকে গ্রহণ ক-রিলে অধর্ম হইবে বৃথিতে পারিতেছেন। তাঁহাকে গ্রহণ করিবার জন্য অমুরোধ-পীড়িত হইয়াছেন বলিয়া ঋষিকুমার-দিগের অপমান করিভেছেন। তথাপি সেই শকুন্তলার অবগুঠনমুক্তরূপরাশি দেখিয়া মনে মনে ভাবিতেছেন--ইদম্পনুতমেবং রূপম্রিষ্টকান্তি প্রথম পরিগৃহীতং সাারবেতি ব্যবসান্। लगत हैन विভাতে कुन्नमञ्ज्यात्रः ন চ পলু পরিভোক্ত্ং নৈব শক্ষোমি

হাতুষ্॥

এই অক্ষত রূপরাশি আমার সম্পূর্থ আসিয়া উপস্থিত। আমি কি ইহাকে পূর্বের বরণ করিয়াছি ? কই মনে ত হয় না। অমর যেমন হিমাছেয় কুলপুস্টি ভয়ে ভোগু করিতেও পারে না, আবার ছাড়িতেও পারে না, তেমনি আমিও ফাঁপরে পড়িলাম।

আমরা প্রথম প্রস্তাবে বলিয়াছি যে
ছ্মন্তের অসাধারণ চিত্তসংযমশক্তি না
থাকিলে তিনি কণ্বের পবিত্র তপস্যাশ্রম
কলঙ্কিত করিয়া ফেলিতের। এখন
বোধ হয় কথাটি অভ্যুক্তি বলিয়া কাহারপ্ত সংশয় থাকিবে না। রূপবতী রমণী
দেখিলে হয়স্ত লালসায় অধীর ছইয়া
পড়েন। কেবল উয়তশিক্ষা, উয়ত
ধর্মক্তান এবং অসাধারণ চিত্তসংযমশক্তি
ভাহাকে ব্যভিচার ছইতে নির্ভ করে।

मक्खना ,ऋपरडी ; मकुखना - ऋप-বতীর মধ্যে রূপবতী। তাহাতে আবার छिनि योवतन भन्नार्थन कदिहाएइन। ভাঁহাকে দেখিবামাত্র হুমন্তের মনে এক ৰুতন ভাবের সঞ্চার হইল। যে ভাব व्यथरम व्यक्ति। "प्रीकृष्ठाः अन् छरेन क्रमानगठा यनगठा छिः," এই जूननाय সেই ভাবের প্রেগম অক্টুটক্রি। এ त्रकम जूनना न्डन প्रथमत श्र्मनकन । यांशंत चुन्तती त्रमंती चाटह (म चिन কোন নৃতন রমণী দেখিয়া উভয়ের তুলনা করিয়া নৃতন রম্বীকে প্রাধান্য (एव, छाहा हरेला (यह जूननारक न्डन প্রেমের পূর্বলক্ষণ বলিয়া ব্রিতে হয়। যেগানে নৃতন বস্তর ভূলনায় পুরাতন वञ्ज निक्छ विनम्ना (वाथ इम्, अहेथारमहे ন্তন বস্তুতে স্পৃহা জন্মিয়া থাকে। কিন্ত এ ভুলনায় স্পৃহাস্চক কিছুই নাই। এ তুণনা কেবল স্থার পূর্মগামী গান- নিক অবস্থাব্যঞ্জক। তার পর ছম্মন্ত শক্ষণাশহন্ধে যাহা ভাবিলেন, ভাষাও শৃত্যাস্থলক নম কিন্ত ভাষাতে শৃত্যার আভাস আছে।. তিনি ভাবিলেন—কথমিয়ং সা কণ্ত্যিভা। অসাধ্দশী খনু তত্তভবান কাশাপঃ য
ইমামাশ্রমধর্মে নিগৃত্তভাইদং কিলাব্যাল মনোহরং বপুত্তপঃ-

ক্ষমং সাধ্যিত্থ য ইচ্ছতি। ধ্রুবং স নীলোৎপল পত্র ধার্যা শ্মীলতাংচ্ছেন্ত্র্মৃধির্বাবস্যতি।।

ইহার মর্ম্ম এই যে এমন কোমলাঙ্গীকে কঠিন আশ্রমধর্মে নিযুক্ত করিয়া কণ্
অবিবেচনার কার্য্য করিয়াছেন। কোমল নীলোৎপল পত্রের ছারা কঠিন
শনীরক্ষ ছেদন করা গেমন অসম্ভব,
এই কোমলাঙ্গীর ছারা সেই কঠিন
আশ্রমধর্ম প্রতিপালিত হওয়াও তেমনি
অসম্ভব।

ভপদ্যাশ্রমে তপশ্বিকন্যাকে দেখিয়া
ছন্মস্কের ন্যায় চিত্তদংব্যক্ষম ধর্মবীরের
মনে একেবারে বলবতী স্পৃহার উদ্রেক
হওরা অসম্বন। কিন্ত ছন্মস্ক স্তীপ্রিয়।
'দ্রীকৃতাঃ ধলু গুলৈকদ্যানলতা বনলভাভিঃ' এই তুলনাভেই ভাঁহার স্ত্রী
প্রিয়তা প্রকাশ। তবে ঘখন তিনি
শক্ষলাকে তপশ্চগ্যার অযোগ্যা বলিয়া
ভাবিলেন, এবং কলুকে নিশা করিলেন,
তখন ভাঁহার নিশাবাদের মূলে কিঞিৎ
আয়ণ্টি নিহিত আছে। মানুষ বখন
ছল্ভ অথবা এক অবস্থাপর বস্তুকে

সুলত অথবা অন্য অবস্থাপন্ন করিতে हात छथन आत्रहे (मधा यात्र (य महे है-চ্ছার মূলে ষেই বস্তপ্রাপ্তির স্পৃহা নিহিত যাহার কোন পুরস্থিত বস্ত बारह। পাইবার স্পৃহা হয়, সেই বলিয়া থাকে य धरे रस्त्री निकारे थाकित जान हम् এবং ইহার নিকটে থাকাই উচিত। याहात दकान जिलानिष्ठ भूत्र नहेवात हैक्हा हम, त्महे विनम्ना थाटक य वक् মাতুষের বাগান সাধারণের জীড়াছল হওয়া উচিত। বাহার কোন অস্ত:-পুরস্থিত। স্থলরী বিধনারমণীকে গ্রহণ করিবার ইচ্ছা হয় সে সেই রমণীর वाशीयनिश्वत काट्ड जीवाधीन डात बाव-শ্যকতা প্রতিপন্ন করিতে যদ্ধান্ হয় **थवः 'क्वाना निम्दिएम**त्र' निमा করিয়া থাকে। **क्ष्मदञ्जन निन्नावादन**त व्यर्थ (पर बक्ता जाराव मान अधन ম্পৃহার উদ্রেক হইয়াছে। তার পর তিনি যাহা শুনিলেন, তাহাতে বুঝিলেন যে কলের অভিপ্রায় যাহাই হউক, শকু-खना धवर डाँहात मधीबत्त्रत्र मानिक ভাব ঠিক তপস্থিকনারে মতন নয়। তিনি এই কথোপকথন গুনিলেন—

শকু। সহি অনত্ত আদিপিবছেনী বকলেণ পি আংবদাত বিঅম্ভিদ্দি সিঢ়ি লেহি দাব বং।

थन। एक्।

প্রির। এখ প্রেছরবিখারইত্তমং সতলো জোবেণং উবালহ।

मॅक्डना वनिरनन-श्रिय्यना आगात

বুকের বন্ধল অভিশয় জাঁটিয়া কাধিয়াছে, অভএব, অনহয়ে, ভূমি এটা একটু আরা করিয়া দেও। প্রির্থদা উত্তর क्तिलन-जामाद निर्वत त्योवत्नक জোরে তোমার পরোধর বিভুত হই-बाह्म, जा आभारक त्माय मिला कि इतव १ ছমজের মন যাহা চায় এত তাই। তপস্থিকন্যারা আশ্ৰমধৰ্মপ্ৰতিপালনে नियुक्त ; किन जाअभ्यभ्य छिन जना विश-युष उंशिष्टित महान शहिया थारक। তাঁহারা যৌবনের মর্ম্ম বুঝিয়াছেন এবং योगतनत्र विषया कथावाकी कहिन्ना था-কেন। এ সব দেখিয়া শুনিয়া স্পৃহাবান হ্ময়ের বিদ্নাশকা কমিবার কথা। বস্তু-তঃ সে আশকা কমিয়া ম্পৃহা এবং ম্পৃহা-অনিত অভিনিবেশ বাড়িয়া উঠিল। তিনি শকুত্তলার শারীরিক সৌন্দর্য্যে মুগ্ধ হইয়া তাহার প্রশংসা করিতে লাগিলেন। মুহ্রতপরে শকুস্তলাকে কেশরবৃক্ষমূলে কি-किः (हिममा माँ ए। हेट ए विना शिन-घना वनिरमन (य, ठिक (वांध इरें एड एड যেন এই কেশরবৃক্ষীর একটি লতার স হিত পরিবর হইয়াছে। তপশ্বিদ্যাদিগের মানসিক অবস্থা আরও প্রকাশ পাইল। ছ্মন্তের বিদ্বাশস্থা আরও কমিয়া গেল; তাঁহার স্পৃহাবিচলিত মন আরও বিচলিত হইল; তিনি সেই বর্দ্ধিতম্পুহার বলে শকুম্বলার ওষ্ঠ, বাহু, প্রভৃতি এক একটি चाम व त्रीमधा (प्रविष्ठ नाशित्न-व्यस्तुः किमलग्रतार्गः त्कामलविष्टेशाङ्ग-

कातिरणी वाहू।

कुरुशमिव रशास्त्रनीयः योगनगरत्र्यु नवसम् ॥

অফুরাগ যত বৃদ্ধি হয়, লোকে অফুরাগের বস্তু তত্ত তর তর করিয়া দেখে।
লোকে যথন কোন বস্তুর প্রতিঅংশে
সৌন্দর্যা দেখে, তথন বৃদ্ধিতে হয় যে
তাহাদের মন সেই বস্তুর প্রতি অফুরাগে
পরিপূর্ণ হইয়াছে। হয়স্তের মনও এখন
শকুন্তুলার প্রতি প্রবল অফুরাগপূর্ণ।
শকুন্তুলার প্রতি অসে সৌন্দর্যা দেখিতেছেন, এমন সময় অনস্রার মূপে শুনিলেন যে শকুন্তুলা নিজে বৃক্ষের সহিত্
নতার বিবাহ দিয়া থাকেন—কোন
বৃক্ষের পত্নী করিয়া দেন, কোন লতার
পতি করিয়া দেন।

ইলা শউস্তলে ইঅং সঅংবরবন্থ সহ-আরম্ম তুএ কিদনাসহেমা বনলোসিনী তি গোসালিমা গং বিস্কারিদাসি।

भक्षना উত্তর করিলেন:-

তদা জতাণং বি বিস্ন্মরিস্মং। (লতামূপেতাাবনোকা চ) হলা রমণীরে ক্পু
কালে ইমস লদাপালবমিহণত্ম বই লবো
সংবৃত্তো। গবকুস্মজোকাণা বনলোসিনী
বন্ধপলবদাএ উবভোষক্ধমো সহআবো।
স্থি, রমণীর সময়েই এই লতা ও
পাদপের মিদন হইরাছে। দেখ, বনজ্যোৎসা অংশ নবকুস্মের যৌবন আর
এই সহকার ভক্ষ নবপলবধারণ করিয়া
সম্ভোগস্থের কেমন উপফুক্ত হইরাছে।
এতক্ষণ হলত্ত প্রির্ঘদার মুখেই অনেক ক্ষা গুনিয়াছিলেন। গুনিয়া

শকুত্তলার মনের ভাবও অবভা বুঝিতে-ছিলেন। কিন্তু এপন স্বয়ং শকুন্তবার मृत्थ प्रत्नक कथा छनित्न व्यवः भक् ম্বলা কি করিতে ভালবাসেন তাহাও জ।নিলেন যে শকুন্তন। वांनित्वन । বৃক্ষ এবং লভার মধ্যে বিবাহ দিতে ভাল-वारमन এवः प्रिश्लिन रम जिनि नवः मित्रका अवः महकाद्वत मिनन् मिश्रा । তাহাদিগকে জীপুরুষ ভাবিয়া পর্ম-হর্ষেৎফুল। আবার হুই প্রিয়ম্বদা তথনি অনস্যাকে ব্ঝাইয়া দিল, যে শক্সলাব নিজের উপযুক্ত পতিলাভের ইচ্ছা হই-য়াছে বলিয়া পতিপ্রাপ্তা বনজ্যাৎমার প্রতি নির্নিষে নয়নে চাহিয়া আছে। এবং শকুত্তলা সেই কথা গুনিয়া প্রিয় স্থাকে বলিলেন—তোমার নিজের বুঝি সেই ইচ্ছা হইরাছে। শকুন্তলার মান-সিক অবস্থার বিষয় জানিতে আর কিছু বাকি রহিল না। ভাঁহার মন এপন মিলনকলনাপুর্ণ; তাঁহার ভাবনা এখন मिलानतः; डीहात कीवन अथन अथमा এবং সে শ্বপ্ন নৰপ্ৰাক্টিত ধৌবনের অপরি-কুট সঙ্গীতে সজীতময়। সেই সঙ্গীত-ধ্বনি ভূমক্টের কর্ণে বাজিল। তাঁহার লাল্যা মিলন্কামনায় পরিণ্ড হইল ৷ भक्षनारक बाध्यकना। गरन তিনি তথনি বিবাহসমধ্যে সন্দিহান হইলেন। কিন্তু শকুন্তলার মন জানিতে পারিষা উাহার প্রধান আশস্থা এখন ঘুচিয়া গিয়াছে। তাঁহার মন উৎসাহপূর্ব। ভিনি শক্ষলার জা^{তি}

निनंत्र कतिरवन विविद्या श्रितमद्भ हरे-লেন। লালসার বস্তকে ঈপ্সিত অবস্থা-পর বৃঝিতে পারিলে লোকে তাহা অধিকার করিবার জন্য সাহস এবং বাত্রতাদহকারে উপায় চিন্তা করিয়া থাকে। ছম্মত এতকণে শক্তলার স-হিত অধিকারের ভাব সংযোগ করিলেন। তার পর শক্ষণাকে ভ্রমরতাড়না হ ইতৈ পরিত্রাণ করিবার নিমিত ছম্মন্ত বুক্ষান্তরাল হইতে নিক্ষান্ত হইয়া তাপস-वानापिरातत त्रयूर्य डेशश्चि इटेरनन। महमा कान अञातभानी शुक्रववहरक (मिश्रिल क्युजवानिकात मान (य ठिकाउत्र ভাব হইয়া থাকে, ভাহা শমিত হইবার পরেই শকুম্বলা মনোবিকার অমুভব করিলেন :--

কিং গুক্ধু ইমং পেক্ধিঅ তপোবন বিরোহিণো বিআরম গমনীঅ দ্ধি সং-বুৱা।

ই্ছাকে দেখিয়া আমার তপোবন-বিরোধী মনোবিকার জ্বিল কেন ?

কুত্র হরিণী একেবারে ব্যাধশরাহত।
প্রির্থদা এবং অনুস্রা শকুন্তলার মনের
ভাব বুরিলেন। শকুন্তলা উহিলের
কাছে এবং ছল্পন্তের কাছে পুকোচুরি আরম্ভ করিলেন। প্রির্থদা কি অন্
ক্রা ছল্পন্তমন্ত উহিলে মনের মতন
কণা বলিলেই তিনি বাগ করিতে
লাগিলেন। তিনি সত্কভাবে কিন্ত
বেন চোরের ন্যার ভরে ভরে ছল্পন্তকে
দেখিতেছেন, কিন্তু ছল্পন্ত তাহার পানে

চাহিয়া দেখিলেই তিনি চকু কিরাইরা লইতেছেন। শকুত্বলাদয়কে ত্মতের এখন যেরপ মনের ভাব, তাহাতে তাঁহার (करन हेहाहे कांगा आवणाक (य णुकु-স্থলার সহিত তাঁহার বিবাহ হইতে পারে কি না। তিনি ওনিলেন যে শকুম্বলা क्रक्तियकना। এवः शिव्यमा डाँहारक चारता विनया मिन त्य कवृ भक्षनाटक উপযুক্ত পাত্রে সমর্পণ করিতে অভি-नायी। कथां । भकुछनांत्रं शूद मरनत मछन रहेल। किछ छिनि दांश कतियां চলিয়া যাইতে উদাত হইলেন। প্রিয়-খনা তাঁহাকে আর হুইটি গাছে জল मिरात व्यक्षीकारतत कथा चुद्रन कतिया ছম্মন্ত ভাঁহার শ্রমকাতরভার কাতরতা প্রকাশ করিয়া তাঁহার ঋণের विनिम्द निष्मत अनुती छित्रवर्गाक দিলেন। প্রেমের ক্ষেত্ময় মূর্ত্তি প্রক-টিত হইল। অঙ্গুরীট পাইয়া প্রিয়ম্বদা শকুন্তলাকে ঋণমুক্ত করিয়া চলিয়া যাইতে অনুমতি দিলেন। কিন্তু শকুত্ত-লার এথুন চলিয়া যাইবার সাধ্য নাই। তিনি রাগ করিয়া প্রিয়খদাকে বলি-(लन-

কা তুমং বিসজ্জিদকক্ম কদ্ধিদকক্ম বা।
আমাকে তাড়াইয়া দিবারই বা তুমি
কে আর ধরিয়া রাখিবারই বা তুমি
কে?

প্রথম প্রেমসঞ্চারের সমর রমণী অধিক্তর লজ্জাশীলতাহেতু এইরূপ লুকোচুরিই করিয়া থাকে। রমণী শীঘ

यदनत कथा विलाख शास्त्र ना । तम्भीत खखिष समझ्या। (य यत समझाशीन, বাহা অভিবাক্তি তাহার তত কষ্টকর। त्म कष्ठे त्रम्शीमश्राम मध्याक्राभावन कः রিয়া লুকোচুরি প্রভৃতি রমণীয় কুটলভায় অভিবাক্ত হয়। বেখানে রমণী পুরুবের महिङ दिभौ विभाविणि करत्र, मिशाम রুমণীর বাহা অভিবাক্তি কতকটা অভান্ত त्मरे बना त्रमीत हरेया भए। ক্রেমের ইতিহাস, অথবা বলিতে গেলে न्नम्बीत नमस्र देखिहान, देखेरतार्थ এक ন্নকম, এগিরার কিছু ভিন রকম। শকু-স্তলা হিন্দুরমণী। স্থতরাং ভাঁহার প্রেম-मकोटबब मटच मटच नूटकांচुबिब व्यापांत्र किइ (वभी। ध नब्डामीनडा धरः লুকোচুরির আরো এডটু তাৎপর্ব্য আছে। বে দেশের ভাবে এবং শিক্ষার শরীর আত্মার তুলনায় অতি অপবিত্ত, দে দেশে শারীরিকসভোগস্চক প্রসদ-মাত্রই কিছু লব্দা উৎপাদন করিয়া शांक। धवः त्रहे निमिष्ठहे त्र तिर्म প্রেমের সহিত পুকোচুরির কিছু খনিই-ইউরোপের ভাব এবং শিক্ষা व तकरमत नत्र वदः (मरे मना रेडे-বোপার কাব্যের নারিকাগণ প্রেমপ্রসঙ্গে क्षक त्रक्म व्यनमञ्जा वनिरमहे हत्र। किख ভারতের এই ভাব এবং এই শিকা। এবং শক্তলা ভারতরমণী এবং ব্ৰহ্ম-সেবানিরত ভাপদবালা। সেই জনাই চুম্বান্তর প্রকট হইতে গ্রনকাশে ভাষার পায় কাটা ফুটিল এবং তাঁহার

বন্ধ গাছের ভালে আট্কাইরা গেল। তথ্য ছম্মন্ত থেমন তাঁহাতে মলিয়াছেন তিনিও তেমনি ছমডে মজিরাছেন। তবে তিনি এক রক্ষে मिक्रांट्स. ছুत्र जात थक तकरम मिलद्राह्न। তিনি इश्रष्टक प्रियोगांवर मिनशारहन. ছম্ম ভাঁছাকে দেখিবামাত্র মজেন नारे। इत्रदस्त (श्रीममक्षादात मदन मदन জ্ঞানের কার্য্য হইয়াছে; স্থতরাং সে শ্রেম একটু একটু করিয়া বাজিয়া উঠি-याहि। हैनि स सिचिट भारे जनिः কনাা, ইনি বোগ হয় ব্রাহ্মণকন্যা-ত্রয়স্ত मर्या मर्या এই मक्न विष्कृतमा कृति-ষাছেন। বোধ হয় কোন কলিত বিঘ প্রাক্ত বিদ্ন বলিয়া জানিতে পারিলে হ্মন্ত শক্তলার মোহ ঝাড়িয়া ফেলিয়া চनित्रा यारेट्डन। किन्दु इत्रस्टरक रत-খিয়া শকুম্বলা সে রক্ম কোন বিপ্রকল্পনা করিলেন না। তাঁহাকে দেখিয়া তাঁহার मन এक्वारबर्ट विव्निड रहेश डिविन, उँशित कारनत कार्या किছु हे हरेग ना। বোধ হয় সে প্রেমের কোন বিদ্ন ঘটিলে সেই প্রেমানলেই ভিনি ভন্মীভূতা इटेटिन। . त्रमनी क्षत्र-क्षथान विनिगरि श्वास धारः भक्षनात त्याममभारतत धरे ভিন্ন প্রণাদী।

হ্মন্ত এবং শকুন্তলার প্রেমসঞ্চার হইয়াছে। তাঁহারা পরস্পারে এমনি মুঝ, যে কাহারও কাহাকে হাজিয়া থা-কিতে আর ইছোঁ হয় না। কিন্ত হাজিয়া থাকিতে হইল। হ্মন্ত আশ্রম হইতে চলিয়া গেলেন; শকুষ্থলাও আশ্রমকুটারে প্রবেশ করিলেন। এই বিচ্ছেদের পর যে পর্যান্ত না উভয়ের মিলন
হইল, সে পর্যান্ত ছইজনের ইতিহাস
কতকটা একরকম কতকটা ভিল্লরকম।
উভয়েই পরস্পারের চিস্তা করিতে
লাগিলেন। কি দিবা, কি রাত্রি সকল
সময়েই সেই চিস্তা। চিন্তা করিয়া
করিয়া উভয়েই শীর্ণ, ছর্কল, আহারনিদ্রাব্ঞিত।

কামকামকপোল মাননমুরঃ কাঠিন্য-

মুক্তর: মধ্যং ক্লাস্কতর: প্রকামবিনতাবংসৌ ছবি: পাণ্ডুরা।

শোচ্যা চ विद्यसमाना চ मननक्रिष्टित-

মালক্যতে

পত্ৰাণামিৰ শোষণেন মক্কতা স্পৃষ্টা লভা মাধবী॥

ভাবিয়া ভাবিয়া শকুন্তলার ত এই দশা-হইয়াছে। ভূমন্তেরও তাই ঘটিয়াছে। প্রিয়ম্বদা অনস্থাকে বলিতেছেন:—

गः সো রাএসী ইমস্মিং দিণিদ্ধ দিত্তি এ ফ্টনাহিলাসো ইমাইং দিক্মসাইং পজ্জা-অর্কিসো লক্ষীক্ষদি।

এবং ছম্ম নিজে এই কথা বলেন:—
ইদমশিশিরৈরস্কস্তাপান্থির্ন মনীকৃতং
নিশি নিশি ভূজনাস্তাপালপ্রসারিভির-

শ্ৰুভি:।

অন্তিলুলিভঞ্চাঘাত। সং মৃত্ৰ্যণিবদ্ধনাৎ

কণকবলয়ং অন্তং অন্তং ময়া প্ৰতিসাৰ্য্যতে।।

এ কি বৃক্ষ চিস্তা ? ত্যুত্তের সম্বন্ধ

এ প্রশের উত্তর দেওয়া সহজ, শকুত্তলার সম্বন্ধে তত সহল নয়। কারণ হুমস্তের সম্বন্ধে এ চিস্তার বাহাক্তি আছে, भक्छनात्र मदस्क वाहाकृष्टिं नाहे। इश्रस्ट আশ্রম হইতে চলিয়া গিয়াই নিজস্থা माधरवात कारह मकल कथा विलाउ লাগিলেন, কিন্তু শকুন্তলা নিজস্থীদয়ের কাছে কোন কথা বলিলেন না। গুলুস্ত শকুষ্টলার রূপের কথা মনে করিতে লাগি-লেন; তাঁহাকে দেখিয়া শকুন্তলা কি कत्रियाहित्नन जाहा ভारित्व गातित्नन; আবার কি রকম করিয়া শকুন্তলার महिठ (मथा इटेरव छांहा विरवहमा করিতে লাগিলেন। শকুন্তলা তাঁহাকে मिथेश कि कतिश्राहित्तन, (मरे भर्गा-लाहनारे इत्ररस्त मरम थावन। পর্যালোচনার প্রকৃতি এই:-কামং প্রিয়া ন স্থলভা মনস্ত তত্তাব-

দর্শনায়াসি। অকুতার্থেংপি মনসিজে রতিমুভয় প্রার্থনা কুকুতে॥

(প্রিতং কৃষা) এবমাম্মাভিপ্রায়সম্ভাবিতেই-জনচিত্তবৃত্তিঃ প্রার্থীয়তা বিড়ম্বাতে। প্রিশ্বং বীক্ষিত মন্যতোহপি নম্ননে যৎ-

প্রেষয়স্ত্যা তয়া

यां उर्च कि निजन्दात्रार्श्व ऋजन्ना मन्मः विनामानियः

মাগা ইত্যুপক হয় যদপি সা সাহয়মুক্তা স্থী

সর্বং তৎ কিল মংপরারণমহোঁ কামী স্বতাং পশাতি॥ ি মনে করিলেই প্রিয়াকে পাইবার मञ्जादना नारे, किन्ह आगात मन जा বুঝে না। সে দদা তাঁহারই অনুরাগ-नर्मत डेर्क्ष । এখনও মনোরথ পূর্ব হয় নাই বটে, কিন্তু পরস্পর পরস্পরের অমুরাগ দর্শন করিরা একপ্রকার আনন্দে উন্মত্ত। (ঈষৎ হাস্য করিয়া) ছ: এই-রূপে প্রাণয়ী বাক্তি প্রতারিত হয়। সৈ ভাবে ভাহার আপনার মনে যে যে ভাবের উদয় হইতেছে তাহার প্রিয়-জনের মনেও অবিকল সেই সকল ভাবের উদয় হইতেছে। তিনি অন্য नित्क यमुञ्जाब नयननित्का कतियाद्वन, আমি ভাবিয়াছি সেটা আমাকে দেখি-ষাই। তিনি গুরু নিত্ত্বের ভরে মন্থর-ভাবে গদন করিয়াছেন, আমি মনে করিয়াছি আমাকে দেখিয়াই তাঁহার গতি বিবাদে অলম হইয়া পড়িতেছে। প্রিয়ম্বদা তাঁহাকে চলিয়া যাইতে দেখিয়া আটকাইলে তিনি স্থীর প্রতি কোপ প্রকাশ করিলেন, সেটীও আমার মনে इहेन (य आमात्रहे जता। कामी वाकि আপনার ভাবে ভোর হইয়া সকলি আপনার বলিয়া দেখে।

क शर्यात्माहनात वर्ध-मत्मर। ८थीत्यात्म क वाकि त्थात्मत नक्षन वृत्तिया छ वृत्ति
ना, निष्ठिष रहेत्रा छ मिण्डान रत, व्याचे छ
रहेत्रा छ श्रेष्ठा विक्रमत्म करता भक्षात्मातक
कर्व्यातिकात्मात्र पिषिया प्रचार कर्वात्म
मत्मर क्रिया भन्नक्ष्मार निष्णिय प्रचार व्यातिकात्म

বনবদস্বস্থারীরা শকুস্তলা দৃশ্যতে।
তৎ কিময়মাতপদোব: ন্যাৎ উত যথা মে
মনসি বর্ততে। অথবা কৃতং সন্দেহেন
স্তননাস্তোশীরং শিথিলিতম্ণালৈকবলয়ং
প্রিয়ায়া: সাবাধং কিমপি কমনীয়ং বপ্

तिमग्।

সমস্তাপ: কামং মনসিজনিদাপপ্রসর্থোনত্ গ্রীমনৈ সং স্থান স্থান সং বৃত্তি বু।
কিন্তু কিন্তু কিন্তু কাম্পরাক্ষং বৃত্তি বু।
কিন্তু কিন্তু কিন্তু কাম্পরাক্ষা বুলি বুলি কারণ প্রকাশ করিতে অনুরোধ করিলেন,
তথন শকুন্তুলার উত্তর প্রতীক্ষার হল্পপ্র
ভরাকুলিত হইয়া পড়িলেন, চিন্তুইর্ঘ্যরক্ষা করিতে পারিলেন না।
পৃষ্ঠা জনেন সমহংশস্থাখন বালা
নেরং ন বক্ষাতি মনোগতমাধিহেতুম্।
দৃষ্টো বিবৃত্য বহুশোহপ্যনন্না সত্ত্ত্ব

যাহারা চিরদিন ইহার ছংখে ছংখী ও স্থে স্থী গেই স্থীরা জিজ্ঞাসা করিতে-ছেন,ইনি এখন আর মনস্তাপের কারণটা লুকাইতে পারিবেন না। ইনি তৎকালে বারংবার সভ্যুত দৃষ্টিপাতে আমার প্রতি প্রাথয় প্রকাশ করিলেও এই সময়টা (ইনি কি বলেন তাহা শুনিবার জন্য) আমার মন অস্থির হইয়া উঠিতেছে।

শুধু থেম কেন, সকল বিষয়েই মান্ত্ৰ যাহার বেশী অভিলাষী হয় তৎস্থলে থিরনিশ্চর হুইয়া ও সন্দেহসংক্ষুক হইয়া থাকে। কিন্তু শকুন্তলার বোধ হয় এ, রকম সন্দেহ হয় নাই। এ রকম সন্দেহ

युक्ति श्रातार शत । तमनी शत्रमर्कत्य । সে হৃদর বিচলিত হইরা উঠিলে রম্ণী क्रमस्त्रत वसं शहिवात सनाहे वाक्न दन, পাওয়া সম্ভব কি না ভাচা বিবেচনা करतन ना। यमि रम वञ्च शान, छानहै; नटि 6 बद्दः थिनी इटेब्रा थाटकन, अथवा ু গুকাইয়া শুকাইয়া মরিয়া যান। * প্রিয় খনা এবং অনস্থার অনুরোধে মনের क्णा श्रकीम क्रिया मकुखना मधीवश्रक वितितन:--

তং छ है (वा अनुमनः उह वक्तह छ इ তম্ম রাএসিলো অণুকম্পনিজ্ঞা হোমি। অগ্লহা অবস্দং দিঞ্ছ মে তিলোদ অং।

অতএব তোমাদের যদি মত হয় ভ যাতে সেই রাজর্ষি আমার প্রতি দয়া প্রকাশ করেন তাহার উপায় কর, নতুবা আমার জীবনের আশা পরিত্যাগ কর।

তবে শকুস্তবার একটি সন্দেহ হইয়া-ছিল। তিনি ভাবিয়াছিলেন যে তিনি इञ्चल्डत (योगां कि न!। প্রেরস্থলা यथन তাঁহাকে পত্ৰ লিখিতে বলিলেন, তখন विनि विन्तिन:--

हिस्त्रिम बहर। खबहीतनजीक शर छन বৈবই মে ভিজাগ্নং।

ष्यदछ। करतन এই छए स्थामात जनग কাঁপিতেছে।

किञ्च । मामह श्रेक्ठ युक्तिभृतक मत्निर नम्। ध मत्निर्वनाम ख्या। याहात चारगात हेल्हात छे अत की वन धवः মৃত্যু নির্ভর করে, ভাহার সেই ইচ্ছা ভানিবার সময় এইরূপ ভয় হইয়া থাকে। প্রেমসফারের পর মিলন নাত্ত্যা পর্যাস্ত যে অবস্থা আমরা বর্ণনা করি-তেছি তাহার আর একটী লক্ষণ যন্ত্রণা। এ যম্বণার ছইটী কারণ-সন্দেহ এবং আসঙ্গলিপ্সা। তনুধো আদক্ষলিপাই প্রবিল কারণ। এই কারণ দুল্লন্ত এবং শকুछना উভয়েই বর্তমান। উভয়েই কর্জরিত দেহ। উভয়েই উত্তপ্রশো-ণিত। উভয়েই জলিয়া যাইতেছেন। কিন্তু এ জালায় চুত্মন্ত অধীর, অন্থির: শকুন্তলা প্রায় চেতনাশূন্য, বিকলাঙ্গ, উত্থানশক্তি রহিত। তুমন্ত ছটফট করিয়া বেড়াইতেছেন এবং প্রতিনিশ্বাদে প্রজনিত চুলীর নাায় অগ্নি উল্গীরণ করিতেছেন:--

(নিখাস ফেলিতে ফেবিতে) সেই তাপসভন্যা যে পরাধীনা ইহা আমি বিলক্ষণ জানি, এবং তপ্যাার কিরূপ উগ্ৰপ্তাৰ তাহাও বিলক্ষণ জানি, তথায় আমি ভাবিতেছি। কিন্তু পাছে তিনি " আপন ইচ্ছায় কিছুই করিবার শক্তি নাই। তথাপি দেই হুৰ্লভ বস্তু হুইতে হানয়কে কিছুতেই ফিরাইতে পারিতেছি না।

^{*} বিষমবাবুর শৈবলিনী রমণী বলিয়া উন্সাদগ্রস্থা। সেও এই কথার একটি ^{বিকর্মাত্র। তাঁহার কুলনন্দিনীও এ কথার একটি প্রমাণ। কিন্ত যে সকল} বঙ্গীয় কবি এবং উপন্যাদলেখক অসিদ্ধমনোরথ নারিকাকে যোগিনী সাজাইয়া শশানে মশানে পুন্ধরে ভূরিছারে ঘুরাইয়া লইয়া বেড়ান, তাঁহারা জীপ্রকৃতি বড় . একটা বুঝেন বলিয়া বোধ হয় না।

(মদনপীড়া প্রকাশ করিয়া) হে ভগবন্ কুমুমাযুধ! আপনি এবং চন্ত্র, আপনারা উভয়ে নিজ কোমল ও বিশ্বস্ত্রিতে প্রণোভিত করিয়া প্রণয়পীড়িত বাক্তি গণকে প্রতারিত করিয়া থাকেন। আপ-নার শর স্থকোমল কুস্থমে রচিত এবং চন্দ্রের রশ্মি শীতল স্থামর, কিন্তু আমার निकरि उ हेशात मण्पूर्व विभवीज मिथ-কারণ চক্র হিমগর্ড রশ্মিদারা তেছি। অগ্নিবর্ষণ করিতেছেন আর আপনিও কুস্মশরকে বজের ন্যায় কঠিন করিয়া-ছেন। তপস্বিগণ যজ্ঞকার্য্যের অবসানে আমাকে গমনে অহুজা দিয়াছেন,একণে কোন্ ছানে গিয়া প্রাস্তি দ্র করি। (দীর্ঘনিশ্বাস পরিত্যাগ করিয়া) একমাত্র সেই প্রিয়তমার দর্শন ভিন্ন আর শান্তি কোথার ? এই দাকণ রৌদ্রের সময় শকুন্তলা স্থীজনের সহিত প্রায়ই মালি-নীতীরস্থিত নিকুঞ্জদেশে অবস্থান করিয়া थारकन, चाउव रमहे शारनहे गमन (গন্ধন করিয়া স্পর্শস্থ অসুভব করত) আহা! এই স্থানটা শীতেলবায়ুর সঞ্চারে কি মধুর! আমার অঙ্গ সকণ না কি অনঙ্গবহ্নিতে জলিতেছে, তাই এই পদ্মসৌরভপূর্ণ মালিনীনদীর শীতন ী বাতাসটুকু 'বারংবার গান্তরপে আলিকন করিতে ইচ্ছা হইতেছে। শকুস্তনা এই বেতস্বতাবেটিত বভা-মণ্ডপে অবস্থান করিতেছেন, কেন না, ইহার এই সিকভাময় দারদেশে নৃতন

পদ্চিক্ সকল পতিত রহিয়াছে, আর এই পদচিহ্ন সকলের পূর্বভাগ উচ্চ রহিয়াছে আর পশাভাগ অখনভরে বালু-কায় বসিয়া গিয়াছে। অতএব লভাস্ত-द्रात्त शंकिया (मथि। (महेक्रभ किया थानत्म) थाः! थामात्र ठक् क्र्डारेल।* যাহার অন্তঃপুর স্থন্দরী রমণীতে পরি-পূর্ণ ভাহার এরূপ অবস্থা দেখিলে কে ना विलाद एवं जाहात तिशु यथार्थ हे इर्फमं-নীয়, আসম্বলিপা কিছুতেই মিটিবার এ অতি ভয়ানক অবস্থা। রকম অবস্থায় মাহুষ হিভাহিতবিবে-চনাশ্ন্য হইয়া পড়ে এবং ঘার-ञ्जिष्टिमाध्य मुक्तम ह्य । কিন্তু এ অবস্থার, এ যন্ত্রণার একটি বিশেষ लक्न जाए। এ যন্ত্ৰায় বাহ্য জ্ঞান অতিশয় তীব্র। যে চন্দ্রশ্মি অনা সময়ে 'খবরে' আসে না, যে শীতল वां यु व्यना नमस्य शांद्य नांद्र ना व যন্ত্রণায় সে চক্ররশি, সে শীতল্বায় তীব্রভাবে অহুভূত হয়। এ যন্ত্রণায় বাহালগৎ ভয়ানক প্রভাবশালী। কিন্ত শকুন্তলার যত্ত্রণা এ রক্ষের নয়। भकुछना । यूगुर्वत नाम । भवाभामिनी। হুম্মজ্বকে দেখিয়া অৰ্থি তিনি যেন ভাঙ্গিয়া চুরিয়া পড়িয়াছেন। এক পা निष्वात मिक नाहै। যদিও তাঁহার বাহিক দৃশা মুম্র্^র ন্যায় তাঁহার অস্তর বিষম জালায় জ্লিয়া याहेर ७ हा । (म बाना ७७ थावन रि

^{*}হানাভাবে ইহার মূল দেওয়া হইলনা।

তজ্জন্য তিনি একরক্ম বাহারুভূতি-সে আলায় তিনি পল্পত্র-রহিত। সঞ্চিত বায়ু অহুতৰ করিতে পারেন সে আলায় বাহুলগৎ তাঁহার কাছে অন্তিবহীন। সে আলায় একটি কথাও তাঁহার ওঠখনিত হয় নাই। कृष्टे बरनत याजनात कृष्टे तकम आकृष्टि। ্একজন বাতনায় ছট্ফট ্করিয়া বেড়ায় जंदर वार्का जंदर निश्वारम अधि डेम्मीदर्ग করে। আর একজন যাতনায় মুমুর্র नांत्र भिथिनाम् ७ वर मृत्वत नांत्र निछक । इरे बरनरे रयन बाटमन शिवि। কিন্তু একটী গিরির গর্ভন্থ অগ্নি সতেতে শিখর ভেদ করিয়া উৎক্ষিপ্ত হইতেছে वरः मृत्र अमृत्र विकिश श्रेरिकाः ; আর একটি গিরির গর্ডন্থ অগ্রি শিপর ভেদ করিতে না পারিয়া সেই গর্ডকেই বর্দ্ধিতবিক্রমে দগ্ধ করিয়া ফেলিতেছে। এখানেও দেখিতেছি যে পুরুষ এবং तम्नीत मर्या थालम धरे रा भूकरवत অভিব্যক্তি আছে, রমণীর অভিব্যক্তি নাই। এই মূলীভূত বৈপরীতা কালি-দাস যেমন আঁকিয়া দেখাইয়াছেন, আর (कान कवि एकमन (मधान नाहे।

তার পর মিলন। প্রির্থদা এবং
অনস্বার সমুথে ছমন্ত বলিলেন:
পরিগ্রহব্ছত্বেহলি বে প্রতিষ্ঠে কুলন্ত মে।
সম্প্রবসনা চোর্বী সধী চ যুবয়োরিরম্॥
বলিও আমি বছপদ্মী গ্রহণ করিয়াছি
কিন্ত এখন হইতে হুইটা বন্ত আমার
হলমে প্রতিষ্ঠিত হইল—একটা আমার

আসমুদ্র সাত্রাজ্য আর একটা ভোষা-দের স্থী শকুস্তলা।

শুমান প্রকৃত প্রেমের একটা প্রধান
উপাদান। ছ্মান্তের প্রেমের সেই উপাদান এখন বাক্ত হইল। দেখিয়া প্রিয়দান এখন বাক্ত হইল। দেখিয়া প্রেয়দান এবং অনস্মা সরিয়া গেলেন।
তখন রিপ্রান্ত ছ্মান্ত শকুন্তলাকে ধরিবার চেটা করিতে লাগিলেন। শকুন্তলা
উঠিয়া চলিয়া যাইতে উদ্যান্ত হইলেন।
ছ্মান্ত বলপূর্ব্বক তাঁহাকে প্রভিনিবৃত্ত
করিলেন। তখন শকুন্তলা বলিয়া
উঠিলেনঃ—

পোরব রক্ধ অবিণয়ং ম্ফাণ্সংততা বি ণছ অত্তো পহবামি ৷

পৌরব! শিষ্টাচার ভঙ্গ করিও না। আমি লালসাবতী সত্য, কিন্তু আমার নিজের উপর আমার কোন ক্ষমতা নাই।

এই কথা শুনিরা হ্মন্ত তাঁহাকে গান্ধর্ক বিবাহের ইতিহাস বলিয়া এইটা ব্যাইতে চেষ্টা করিলেনু যে শুরুজনের অহুমতি বাতিরেকেও তিনি'আয়সমর্পণে সক্ষম। শকুন্তলা ব্ঝিলেন না। তথন হ্মন্ত তাঁহাকে বলিলেন যে আমি তোমাকে এখন ছাড়িব না; ছাড়িব কথন, না—

অপরিকত কোমলস্য বাবৎ কুস্থমস্যেক নবস্য ষট্পদেন। অধরস্য পিপাসতা মন্না তে সদন্ধ স্থলরি গৃহতে রসোহস্য॥

যথন তোমার কোমল অক্ষত অধরের

মধুণান করিয়া আমার ধরতর পিপাসা নিবৃত্ত হইবে। এই বলিয়া তিনি অভি-थाश्रक्षत्र कार्या कविवाद हारी कति-किन्छ भक्षमा छाहात्रहे नाम ভোগভৃষাতুরা হইয়াও তাঁহাকে প্রতি-নিবুক্ত করিবার চেষ্টা করিতে লাগিলেন। नज्जामीनात नज्जामीनजा এখন । धारन: कानशैनात कान व ममरत्र अति-হার। কিন্তু সংবতচিত্ত তুমন্ত একে-বারে বিহ্বলমতি; জ্ঞানপ্রধান ছ্মন্ত मम्भूर्व छानशैन। यथन दाहाबग९ जूनित विषय अनिष्ठे घटि उथन दमनी वांश्यगं९ जुल ना, श्रूक्ष जुल। অবশেষে হুম্মস্কের যাহা ইচ্ছা তাহাই इरेल। तिश्वत्री इरेल। नाात्रभवात्रन সংযত্তিত ধর্মবীরের পদখলন হইল। (म भाषानात कांत्र (महे धर्मावीदात्र প্রবল রিপু। ছম্মন্ত ব্ঝিতেন যে গান্ধর্ম বিবাহ যুক্তিগঙ্গত নয়; ছুম্মন্ত বুঝিতেন (य भक्छनात आञ्चनमर्शनकम्बा नारे। শকুন্তলাকে প্রথম দেখিয়া গিয়া হুমন্ত মাধবোর কাছে তাঁহার অতুল রূপের বর্ণনা করিলে পর মাধবা তাঁছাকে বলি-লেন যে আপনি যত শীঘ্ৰ পারেন সে क्रभवजीदक प्रथम कविवाब हिंडी कक्रन, विवय कतित्व इत्र उ त्म कान हिक्न-মন্তক ঋষির হাতে পড়িবে। তাহাতে তिनि वनिशाहितनः--

> পরবৃতী খলু তত্তভবতী। ন চ সরিহিতোহত গুরুজনঃ।

তিনি পরাধীনা এবং তাঁহার গুরুজন গুহে নাই।

এখন শকুষ্কলা স্বয়ং সেই কথাই বলিতেছেন। কিছু এখন তিনি সে কথা না শুনিয়া শকুস্তলাকে বুঝাইতেছেন যে তিনি আয়ুসমর্পণে সক্ষম, তাঁহার শুকুজনের সম্মৃতি লইবার আব-শাকতানাই। এ রহস্যের অর্থ— হর্দমনীয় রিপু। শকুস্তলাকে কাছে পাইরা হুমস্ত গুলার উন্নত নীতি, উন্নত বুদ্ধি, উন্নত বিচারশক্তি, অসাধারণ চিত্তসংয্মক্ষমতা সকলই হারাইলেন। প্রথব রবি মেঘাচ্ছন্ন হইল।

ছম্ম এবং শকুতলার মধ্যে দাস্পত্য সম্বন সংস্থাপিত হইয়াছে। ভাঁহাদের পরস্পরের প্রতি কি রকম ভাব তাহা দেখিতে হইতেছে। আমরা मिथिशोहि य इश्व कि दिन्दी तिश् পরবশ। তিনি ভোগলালসা চরিতার্থ করিয়া করের আশ্রম হইতে নিজ রাজ-ধানীতে গমন করিরাছেন। ভোগলাল্যা চরিতার্থ করিয়াছেন বলিয়া তাঁহার শকুম্বলা-প্রেমের উচ্ছেদ হয় নাই। শকুস্তলা তাঁহার হৃদয় দৃঢ়রূপে **अ**धिकांत्र कविद्यादहन—तम क्रमाय मंकू-खना-त्थ्रम भीवन थाकिए डेव्हिन हरे-वात नम्र। अञ्जीम शूनर्गन कतिमा হুম্মস্ত যে ভয়ানক যন্ত্রণভোগ করেন তাহাই তাঁহার শকুস্তলা-এথমের গাড়তের পরিচয়। কিন্ত মহাক্বি সে পরিচয় অপেকা একটি সহলগুণে আশ্চর্যা পরি-

চর দিরাছেন। ছ্র্রাসার শাপে ছ্মস্ত শক্ষলাম্বতি হারাইরাছেন। হারাইরা একদিন মাধব্যের সহিত বদিরা আছেন। এমন সময় একটি মনোহর গীতিধ্বনি শ্রবণ করিলেন। করিয়া ভাঁহার মন এক অণৌকিকভাবে গলিয়া গেল। সেভাব এই:—

• किः सू थन् गीजमाकर्ग देवेषन वित-हान् एउ शि वन वह ९ किं एठा श्या । व्यथना तमानि वीका मधुताः च निममा मकान् भगूं ९ क्रकी जविज वं९ क्रिया छ। हिम्स ब्रह्म । जल्ल छना क्रविज न्नम (वासंभूक्षः जाविष्ठतानि क्रम ना खतर नो इनानि ॥

কই আমার ত কোন ইটবস্তর সহিত বিচ্ছেদ ঘটে নাই, তবে এই গীতপ্রবণ করিয়া আমার প্রাণ এত আকুল হইল কেন ? অথবা কোন রম্য বস্ত দেখিলে বা কোন মধুর শক্ষ শুনিলে স্থাধর অবস্থায়ও যে মাধ্যের মন আকুল হইয়া উঠে, সে বোধ ছয় তথন পূর্ব্বজন্মের কোন স্থান্ত প্রণয়ের বস্ত্বকে অজ্ঞাতভাবে অয়ণ করে।

কি কোমল, কি গন্তীর, কিপবিত্রভাব! এ ভাবের গাঢ়তা বিবেচনা করিলে
চমৎকত হইতে হয়! যে বন্ধ জন্মান্তরপরিগ্রহেও শৃতিপথে থাকে সে বন্ধ জ কত পবিত্র, কত গাঢ়, কত মিষ্ট। ত্রস্ত শক্তলাকে ভূলিয়া গিয়াছেন,কিন্ত শক্তলার জাফুট শ্বতি আজিও তাঁহার মনকে
এই অলৌকিকভাবে পরিপ্রিত করিতিছে। ত্র্বাসার শাপে ত্রস্তাভিত আজ শকুত্তলাসম্বন্ধ মহাপ্রসম্প্রত। সেই মহাপ্রলয়কেও ভেদ করিয়া সেই প্রেম ফুটিরা উঠিতেছে। মহাপ্রলয়েও সেরকম প্রেমের লয় নাই। <u>ছখ</u>-ত্তের শকুন্তলা-ত্থেম যথার্থই গাড়তম, পবিত্তম, কোমলতম্। কেনই বাসে त्म ब्रक्म न! इहेर्द ? भंकू-শুধু তাঁহার শারীরিক সৌন্দ-র্থার দারা ছম্মন্তকে পরাজয় করেন তাঁহার মানসিক সৌলর্ঘ্যের ষারাও তিনি সেই পুরুষপ্রধানকে পরা-ব্যর করিয়াছেন। ত্মস্ত এবং শকুস্তলা যে কয়দিন দম্পতিভাবে কণের আশ্রমে हिल्न, छांशालत (म क्य्रेनित्न बीवन-व्यनानीत विषय महाकवि किছू वानन নাই। সে বিষয়ট তিনি পাঠকের দৃষ্টি इटेट यवनिकाष्ट्राषिठ द्राधियाट्टन। একটিবারমাত্র একটি মুহুর্ত্তের জন্য সেই यवनिकात अकृष्टि शार्ष मत्राहेश (मथाहे-য়াছেন। কিন্তু সেই মুহুর্ত্তমধ্যে দেই স্কীৰ্ণ দার দিয়া মহাক্বিণ এক আশ্চৰ্য্য নৈতিক । বিপ্লব দেখাইয়াছেন। তিনি **(मशोरेबाट्डन (य शूक्रमश्राम, वीत्रश्राम** ত্মন্ত শকুন্তলার কাছে বসিয়া শকুন্তলা-ময় হইয়াছেন, পুরুষের পৌরুষভাব হারাইয়া রমণীর রমণীয় প্রাপ্ত হইয়া-ছেন। পৌরবসভার শকুন্তলা বলিতে-ছেন :--

নং এক সিং দি মহে গোমনি সাম স্বাধ ননিনীপত্রভাষণগৃষ্ণ উদসং তৃহ হথে সিনিহিদং আসি তক্ষণং সো মে পুত্র কিদ্যো দীহাপকো ণাম মিঅপোদজো উবচ্চিদো। তৃএ অনং দাব পটমং পিন্ত ভি অমুম্মিলা উবছ দিলে। উঅ-এণ। ণ উণ দে অপরিচ্নাদো হখ-ওাসং উবগদো। পচ্ছা তদ্মিং একা মএ গহিদে সলিলে তেণ কিদ পণ্মো। তদা তুমং ইখং পহসিদো সি সকো সগদ্ধেম্থ বিশ্বসদি হবে বি এখ আবর্ধেনা ভি।

একদিন আমরা উভয়ে নবমলিকামণ্ডপে বসিয়ছিলাম, আপনার হন্তে
পদ্মপত্রের ঠোঙার জল ছিল, তৎকালে
আমার ক্রত্রিম পুত্র দীর্ঘাপালনামে সেই
হরিণশিশু আসিয়া উপস্থিত হইল।
এই তবে অগ্রে জলপান কক্ষক ইহা
বলিয়া আপনি স্নেহতরে তাহাকে নিকটে ডাকিলেন, কিন্তু সে অচেনা বলিয়া
আপনার নিকটে আসিল না। অনস্কর
সেই জল আমি গ্রহণ করিলে সে আসিয়া পান করিল। আপনি তাহাতে
উপহাস করিয়া বলিলেন, সকলেই
অজনে বিশাস করে, তোমরা হুলনেই
জললা কি না।

যে ছ্মন্ত বীরবিক্রমে শাণিতপর হতে
ছরিণ তাড়না করিতে করিতে আশ্রমে
প্রবেশ করিয়াছিলেন, এখন সেই ছ্মন্ত
সেই আশ্রমে বসিয়া একটি বালিকার
সহিত বালিকার ন্যায় ছরিণের শুশ্রুবা
করিতেছেন! ক্রিনহুদর পুরুষপ্রধান
কোমলহুদর বালিকা ছইয়া পড়িয়াছেন!
ক্ষুদ্র বালিকার হুদয় সসাগরা পৃথিবীর
রাজাকে পরাজয় করিয়াছে! এই নৈতিক

পরাজ্যের গুণেই ছ্মান্তের শকুন্তলা-প্রেম এত কোমল, এত গাঢ়, এত পবিত্র, এত স্থানিজাবপূর্ণ। সে প্রেম এত বড় বিপ্লব ঘটাইরাছে বলিয়াই মহাপ্রালয় ভেদ করিয়া ফ্টিরা উঠিতে পারিল। এবং সেই নিমিত্তই হিন্দুশাল্লজ্ঞ ছ্মন্ত হিন্দুপতির পদগৌরব ব্রিয়াও কশাপা-প্রমে শকুন্তলার কাছে নতশিরে, নতজামু হইয়। ক্ষমা প্রার্থনা করিয়াছিলেন।

হুমান্তের প্রতি শকুন্তলার প্রেম এক আশ্র্যা পদার্থ। সে প্রেমের তুলনা नारे, পরিমাণ নাই, সীমা নাই। সে প্রেম একটি আন্চর্য্য শক্তি। সেই শ ক্তির গুণেই কোমলতামরী পকুরলা কণের আশ্রম হইতে হস্তিনাপুর ইাটিয়া গিয়াছিলেন। সে প্রেম একটি মন্ত্র। मिट माज बाह्य हरेशा भक्षना ह्यी-সার ভরহর শাপ শুনিতে পান নাই। त्म त्थायत्र वकि ध्यमान छेनामान वि श्यक डीशांक शक्तर्विशांतन विवाह कतिया धक्षि व्यवधातिक সময়ের मध्य डाहाटक हिनाश्रत नहेबा गाहे-(यन वित्रा हिन्दा शिलन। ছুর্মাসার শাপপ্রভাবে তাঁহাকে ভূলিয়া এদিকে অবধারিত সময় অতীত হইরা গেল। অনস্রা ছমডের डेनव ठाँवा डेठिवा डांहात्क गानि निट्ड व्यावस कवित्तन :--

পড়িবুদ্ধা বি কিং করিসং। গুমে উইদেফ বি নিঅকরণিক হথপাজা পদ-রম্ভি। কামো দানিং দাকামো হোছ জেন অসচসংখ্য কণে সুরহিঅ আ পদং কারিদা।

কিন্তু শক্তবার রাগ হইল না। তিনি পতিকে সন্দেহ করিলেন না, গালি দিলেন না। তিনি মুগ্ধহদয়ে, সন্দেহশ্নামনে প্নরায় পতিদর্শনপ্রতীক্ষা করিতে লাগি-লেন। আশ্রম হইতে বিদার গ্রহণকালে চক্রবাকের জনা চক্রবাকীকে সকাতরে চীৎকার' করিতে দেখিয়া তিনি জন-স্মাকে বলিলেন:—

হলা পেক্থ নলিনীপত্রন্দরিদং বি সহ-অরং অদেক্ণন্তী আহ্রাচকবাই আর-ড্দিছকরং অহং করেমি।

স্থি, দেখ, চক্রবাক্ নলিনীপত্তের
অস্তরালে আছে। চক্রবাকী তাহাকে
দেখিতে না পাইয়া সকাতরে চীৎকার
করিতেছে। কিন্ত আমি এতাবৎকাল
আর্য্যপুত্রকে না দেখিয়া আছি। আমি
ছক্র কার্য্য করিতেছি।

এ কথার রাগ বা সন্দেহের চিহ্নমাত্র
নাই। এ স্লেহের কথা, আদরের কথা,
হদরের মিষ্টতার কথা। অবিখাসীর
সম্বন্ধে রমণী এমন কথা কর না।
আবার তথনই তাঁহার স্থীবৃর তাঁহাকে
বলিরা দিলেন যে যদি হুরস্ত তোমাকে,
চিনিতে না পারেন, তাহা হইলে তৃমি
তাঁহারই নামান্ধিত অঙ্গুরীয়টি দেখাইও।
কথাটি শুনিবামাত্র শক্ষণা একটিবার
মাত্র যেন শিহরিরা উঠিয়া পরক্ষণেই
সব ভ্লিয়া গেলেন। ভ্লিয়া গিয়া
পথিমধ্যে সেই অঞ্গীয়টই হারাইয়া

क्लिलन! (श्रेममग्री मद्रनावाना पृथि-বীকে সরলহৃদরের সর্ব্বোৎকৃষ্ট প্রতিমা (मशाहेतन। (म क्रमाय (श्रायत व्यक्षम्बर्क সন্দেহ স্থান পায় না। অগাধ cetম विश्वामभूनक। यथारन ज्ञांधरश्रम स्मर् খানেই এই রকম সরলতা। শকুস্তলার প্রেম এত অগাধ, এত বিশাসমূলক, এত সরলতাময় না হইলে, তিনি স্থীদ্যের উপদেশ শুনিয়া অগ্রে অঙ্গু-বস্তাঞ্চলে আঁটিয়া বাঁধিতেন **এবং মধ্যে মধ্যে शृक्षिया দেখিতেন** সেটি যথাস্থানে আছে কি না। কিন্ত তিনি তাহা করেন নাই। বোধ হয় কোন কোন বিজ্ঞ পাঠিকা বলিবেন যে শকুন্তলা বড় বোকা মেয়ে। বলি যে এমন স্থমিষ্ট বোকা মেয়ে জগ-তের আর কোন কবির কল্লনায় উদ্ভূত হয় নাই। শকুন্তলা অগাধপ্রেমে মুগ্ধ থাকিয়া এক মুহুর্ত্তের জন্যও পতিকে অবিখাস করেন নাই এবং পতির নিকটে অন্যায়াচরণ আশঙ্কা করেন নাই। সরলাবালার প্রথম আশঙ্কা পতির কথা শুনিয়া । জারিয়াছিল। গৌতমী এবং শাঙ্গরিব যথন তুম্মতকে শকুস্তলাকে গ্রহণ করিতে বলিলেন তখন হল্পস্ত वितालन :---

কিং চাত্রভবতী ময়া পরিণীতপূর্বা।

ইহাকে কি আমি পূর্বে বিবাহ করি-য়াছি ?

এবং তখনই শকুন্তলা ভাবিলেন :— হিঅঅং সংপদং দে আসলা।*

^{*} Monier Williams এ কথার এই অর্থ করিয়াছেন:- O my heart, thy

এখন আমার হৃদয়ের একটি আশ-কার কারণ জয়িল।

শকুস্তলার প্রেমের আর একটি প্রধান উপাদান সম্রম। শকুত্তলা যাঁহাকে পতিরূপে গ্রহণ করিয়া হৃদয় क्तियाष्ट्रन छै। हारक रमहे क्तरवत शृका (म्वडा विनया मञ्जम करतन। ভাগিনীর জীবনের সর্কাপেকা ছঃখপূর্ণ সময়ে এই পতি-সম্ভ্রম তাহাকে এক অনিকাচনীয় শোভায় শোভিত এবং মহিমায় মহিমাধিত করিয়াছিল। পতি-কর্তৃক কুলটা বলিয়া পরিত্যক্ত হইর। শকুস্তলা পতিহীনার ন্যায় মলিনবেশে छशक्तरम मीर्घकाल कर्छात्र धर्माहत्रर অভিবাহিত করিরাছেন। সহসা সেই পতির সাক্ষাৎলাভ করিলেন। তাঁহাকে (मिश्राहे छाहात शमग्र जानत्मारकृत হইল। কিন্তু হয়ন্ত অমুতাপে শীর্ণ এবং বিবর্ণ হইয়াছেন বলিয়া তথনও তিনি পতিকে পতি বলিয়া ভাল চিনিতে शादिन नारे। किंद्र मिट्ट महर्त्वरे চুম্মস্তের কথা শুনিয়া তাঁহার সন্দেহ ঘুচিয়া গেল। তখন তিনি কি করি-লেন ? 'জেছ অজ্জ উত্তো,' আৰ্যাপুলের জন্ন হউক, অফুটস্বরে এই কথা বলিবার পর বাষ্পাকুললোচনার কণ্ঠ অবরুদ্ধ হইস, তিনি নিতক হইলেন। শকুস্তলার नीर्चकालकाशी इःश ध्रथन मृद्र्छमदृष्ट

रुहेत्रारह। (य इ:४ जारनक वर्त्रत ४-রিয়া ভোগ করিয়াছেন, সেই তুঃখ এখন তাঁহাকে এক মুহুর্ত্তকালের মধ্যে ভোগ করিতে হইল। যেন স্থদীর্ঘ স্রোতস্বতী সহসা একমৃষ্টিপরিমিত হলে গুটাইয়া পডিয়া বিপরীত তেকে উৎসাকারে উঠিতে नाजिन। এ तकम मृहूर्ख এकि ভরানক পরীকা। সে পরীক্ষার রমণী প্রায়ই ভালিয়া পড়েন। िनि इत्र মৃচ্ছাপর হন, নাহয় পতির গলা জড়া-हेब्रा श्रतिब्रा मुद्धानिवात्रण करतन । हेडे-রোপীয় সাহিত্যে এ কথার ভূরি ভূরি প্রমাণ পাওয়া যায় কিন্তু দে পরীক্ষায় मक् छलात (म तकम कि हुरे इरेन ना। তিনি আশ্চর্যা গান্তীর্যাসহকারে অটল-ভাবে দাডাইয়া রহিলেন। এ গান্ধী-ব্যাৰ মূল পতি-সম্ভম। বেখানে সম্ভমের আধিক্য সেইখানেই অসীম শক্তি,অসীম গান্তীৰ্য্য-সেখানেই ছৰ্বলতা দেখাইতে লজ্জা হয়, মন আপনিই দৃঢ় এবং महिमार्श्व इहेबा डेटिं। तम मिक्ति, तम গান্তীর্যা, সে মহিমা অতীব মনোহর। ব্যন দেহ এবং মন ভাঙ্গিয়া পড়িবার कथा उथन (य अप्रेम जवः शञ्चीत इहेश . थाक रम कशर उत्र क्रकि अधान रमोन्मर्ग শকুন্তলা ध्वर आताश वश्व। পত্নী বলিয়াই এত অটল, এত গম্ভীর, কেন না হিন্দুপত্নীই পতিকে শ্রেষ্ঠতম

worst misgivings are confirmed. যেন শকুন্তলা পূর্বাবিধি এই রকম আশহা ক্রিতেছিলেন! কিন্তু তাহা হইলে শকুন্তলার চরিত্র, শকুন্তলার হৃদর কলন্ধিত করা হয়। বোধ হয় পঞ্জিতবর নে চরিত্র এবং সে হৃদয় বুঝিতে পারেন নাই।

বলিয়া পরম সম্রমের সহিত ভালবাদেন। হিন্দুপত্নীর হিন্দুপত্নীত্ব কেহ যেন ঘুচায় না! হিন্দুপত্নীকে ইউরোপীয় পত্নীর नात्र मामावामिनी कतित्म छाहात हिन्तू-পত্নীত্ব ঘূর্চিয়া যাইবে। কিন্তু সকলেরই মনে রাখা উচিত যে, গুভাদৃষ্টবশত জগ-তের শুশ্রষা যে ভাগাবতীর স্বাভাবিক [°] ধর্ম এবং কর্ম তাহার পক্ষে পুরুষ্ জাতির সহকে সাম্ভাব অপেকা সম্ভ মের ভাব বেশী উপ্যোগী এবং উপকারী। मक्षनात रुपम এक आम्हर्या भागर्थ। म छन्दात्र छान्यामा अगाध, विधाम

অগাধ, ক্ষেহ অগাধ, সম্রমকারিতা অপরি-মেয় কোমলভা অনিকচিনীয়, সরলভা চনৎকারিণী। সে হৃদয়ের কাছে পুরুষ-প্রধান ছুম্মস্ত চিরকালের জন্য পরা-জিত। সে হৃদয়ের মৃত্মধুব নিশাসে ত্দিমনীয় রিপুপরবশ ত্মান্তহাদয় এক আ-শ্চর্য্য নৈতিকবিপ্লবে চিরদংস্কৃত। সে হৃদয় জগতের একটি আবশাকীয় মহো-পকারী নৈতিক শক্তি। পুরুষজাতির সংস্কাব এবং উন্নতির নিমিত্ত সে হৃদ-য়ের স্টে।

রত্বতত্ত্ব।

षामक्षा वक्रमर्गटन (य ''त्रज्ञत्हमा" ना-মক প্রস্তাব লিখিতে আরম্ভ করি, এ প্রস্তাব তাহারই অবয়বমাত্র। পূর্ব-প্রকাশিত প্রস্তাবে মুক্তাসম্বন্ধীয় কতিপন্ন অমাণ উদ্ধৃত করিয়া মুক্তার জাতিনিব্য় প্রভৃতি প্রকাশ করা হইয়াছিল, সম্প্রতি ভাহার দোষ, গুণ, বর্ণ ও মূল্যাদি নির-পণবিষয়ক কভিপায় প্রমাণ উদ্ধৃত কং । ঘনং ৫ সিগ্রহণ ৬ সচছায়ং ৭ তথা-রিয়া উপস্থিত প্রবন্ধ লিখিত হুইল। প্রাতনকালের তত্ত্বিৎ লোকেরা কি রূপে মুক্তাপরীকা করিতেন, তাহ। বিবৃত করা যাইতেছে।

মংসাপ্রাণের মতে মুক্তাফলের গুণ अधानकः ৮ चार्छे। এবং দোষও প্রধান क्रि ३० है। **उत्रदश** 8 है। महाराग

এবং ৬টি মধাম দোষ, অতো ইহার যথাক্রমে গুণ সকল বর্ণনাকরা যাই-তেছে পশ্চাৎ দোষের বিষয় বর্ণিত इट्रेंद्र ।

खन गथा।

"ऋडाउक्ष > ऋतृखक २ ऋष्ट्रक ७ निर्पान-

ফুটিত ৮ মেৰ চ।

यही खनाः गमानााजा मोक्किनाना

মশেষতঃ।

মৎসাপুরাণ।

রত্বতব্বিৎপণ্ডিতেরা মুক্তাফুলের যে ৮টি মহাত্তণ নির্ণয় করিয়াছেল, ভাহার প্রত্যেকের নাম এই—স্থতার (১) স্বর্ত্ত (২) স্বচ্ছ (৩) নির্মাণ (৪) ঘন (৫) স্নিগ্ন (৬) সচ্ছার (৭) ও অক্টোড (৮)।

" স্থভার" নামক গুণ কাহাকে বলে ভাহা উক্ত হইতেছে যথা—

তারকাছ।তিসংকাশং '' স্থভার'' মিভি গদ্যতে।''

গগনমণ্ডলক্থ তারকার নাম ছাতি-বিশিষ্ট হইলে, মুক্তার সে গুণটির নাম "স্থতার।" এই স্থতার-মুক্তা অতি হুর্লভ।

স্থ্যতত্ত্ব কি তাহাও উক্ত হইয়াছে, যথা—

"मर्न्यराजा वर्जुनः यक स्रवृद्धः जिन

भगारज।"

যাহা সকল দিকে সমান স্থগোল তাহা "স্ববৃত্ত।"*

স্বচ্ছ গুণ ুযথা—স্বচ্ছং দোষবিনিমু-ক্তং।" ৪ প্রকার মহাদোষ ও চয় প্রকার মধ্যম দোষ না থাকিলে, তাহা "স্বচ্ছ ' বলিয়া বাবজুত হয়।

নির্দ্মল গুণ যথা—'নির্দ্মলং মলবর্জ্জি-ভং।'' মলরহিত হইলেই সে নির্দ্মল ইহা সকলেই বিদিত আছেন।

ঘনগুণ যথা—''গুরুত্বং তুলনে যদা তদ্খনং মৌক্তিকং বরম্।'' বাহা গুলনে ভারি তাহা খন। এই খন মুক্তা দর্কান পেকা শ্রেষ্ঠ।

স্নিগ্ধ গুণ যণা—''সেহে নৈব বিলিপ্তং যত্তপ্ৰিগ্ধুমিতি গদ্যতে।'' যাহা স্নেহ (মৃত তৈলাদি) অক্ষিতের নাার দেখার, ভাহা সিশ্ধ খণ বলিয়া খাতে।

সদ্ধায়গুণ যথা—"ছায়াসম্বিতং যচ স্কায় গুলিগদাতে।" যে মুক্তার কোন না কোন ছায়। (কান্তি) বর্ত্তমান থাকে, তাহা সচ্ছায় মুক্তা নামে কথিত হয়। (মুক্তাফলের ছায়া কি পু তাহা ছায়া- 'পরীক্ষায়লে প্রকাশ পাইবে।).

অফুটিতগুণ—''ব্রণরেখাবিহীনং যন্তং-স্যাদক্টিতং শুভম্।''

যে মুক্তার ত্রণ অর্থাং কোন প্রকার ছিল্লাকার চিচ্চ নাই বা কোন প্রকার রেখা নাই, সেই (বেদাগ) মুক্তা অক্ষ্ টিভ বলিয়া গণা এবং তাহা অভীব গুভ-দায়ক। বস্ততঃ বেদাগ মুক্তাই ম্লা-বান্।

মুক্তাসম্বন্ধীয় নির্দিষ্ট ৮টি গুণের কথা বলা হইল। বস্ততঃ এতদ্বিন্ন জন্য কয়েকটি লক্ষণ আছে, যাহা থাকিলে রম্ভত্তপরীক্ষকেরা ভাদৃশ মুক্তাকে মহা-রম্ভ বলিয়া বিবেচনা করিয়া থাকেন, সেই কয়েকটি মহাগুণ এই—

'ভাজিফু কমলং কাস্তং মনোজং ফুর-তীব চ

ি শ্রবতীৰ চল্বভানি ভন্মহারত্ব সংজ্ঞিত্য্।" অপিচ,

'বেতকাচসমাকারং গুজাংগুশত-যোজিতম্।''

শশিরাজপ্রতিচ্ছারং মৌজিকং দেবভূষণম্।

^{*} মুক্তাফলের গঠন নামাপ্রকার (নিম্বকল, চিপিটক, ধান্য, প্রভৃতি) হই রা পাকে, তর্মধ্যে সুস্তুত গুণের মুক্তা অতি মুল্যবান্।

লাক্স-দীপ্তিবিশিষ্ট। কোমললাবণাস্কা। কাজং-ইচ্ছোক্রেককারী
গুণবিশিষ্ট। মনোজ্ঞ-মনোহর। যদি
এই সকল গুণ থাকে, আর ফুরণ হর
অর্থাৎ যদি আলোক বহির্গত হওরার
ন্যার এবং তেক গলিরা পড়ার ন্যার
দেখার, তবে তাদৃশ মুক্তা মহারত্ম নামে
ব্যবস্থত হয়। এবং যে মুক্তা অন্ত ও
স্পুল্ল কাচের সদৃশ আকারবিশিষ্ট ও চক্রেরশ্যত্না হারাযুক্ত হয়, সে মুক্তা দেবভূবণ অর্থাৎ হর্নত। ফলতঃ প্রস্থান্তরে
মূল্যবান্ উত্তম মুক্তার সাধারণ লক্ষণ
এইরপে নির্ণাত হইরাছে। যথা—

প্রমাণবদেগারবরশিষ্কং দিতং স্বর্ত্তং সমস্করদুং। অক্রেকুরপ্যাবহতি প্রমোদং। যম্মেক্তিকং তদ্ভণবং প্রদিষ্টং।"

'প্রমাণবং' অর্থাৎ দেখিতে বড়।
'গৌরব, অর্থাৎ ওমনে ভারি। রশ্মি
অর্থাৎ তেলোময় লাবন্য। যদি এই
করেকটি গুল থাকে, আর বর্ণ শুল, গঠনে
মগোল, ছিছে সমান ও স্ক্রতা থাকে,
দেখিলে অফ্রেতারও আমোন উপস্থিত
হয়, তাহা হইলে নেই মুক্রার গুল আছে,
বলা যায়।

প্রাচীন রদ্ধান্তে এইরপ মুক্তাসখকীয় বহুতর গুলের বিচার করা হইমাছে, বুথা প্রস্তাবহৃদ্ধির জ্বে তাহার
উল্লেখ করা হইল না। মুক্তাসখন্দীর
যে সকল দোবের উল্লেখ আছে, তত্তাবতের মধ্যে গরুজ্পুরাণোক্ত ক্রেক্টি

প্রবল প্রবল দোষের বিষয় বর্ণনা করা যাইতেছে।

মুক্তাসম্বন্ধে যে সমস্ত লোৰ আছে, তন্মধ্যে ৪টি মহালোষ, ৬টি মধ্যম লোষ, এবং এতভ্যি হুই একটি কুজ কুজ লোষও আছে। যথা—

''চषातः स्या र्यहारमायाः यन्त्रशान्त श्रकीर्विकाः ।

এবং দশ সমাখ্যাতা তেবাং বক্ষ্যামি লক্ষণম্ ।'' ''শুক্তি>লগ্নন্দ মৎস্যা২কো জঠরঞ্চাত্তি

ত্রিবৃত্ত হঞ্চ চিপীটঞ্চ ত্রাশ্রং ৭ ক্লশক৮ মেব চ ॥

ক্বশনপার্থমবৃত্তঞ্চ> মৌক্তিকং দোধ-বস্তবেৎ ॥''

মুক্তাসম্বন্ধে চারিটি মহালোম এবং ছয়টি মধামদোষ। সর্বাদমেত দশটি দোষে রম্পরীক্ষকগণ কর্তৃক আখ্যাত হইয়াছে। এই দশটি দোষের নাম ও লক্ষণ ক্রমে বলা যাইতেছে।

ভাজিলয়, মৎসাক্ষ, জঠর ও অতি রক্ত; এই চারিট মহাদোষ বলিয়া গণা। ত্রিবৃত্ত, চিপীট, ত্রাশ্র, কুশ, কুশ-পার্ম ও অর্ত্ত, এই ছয়প্রকার দোষ মধ্যম বলিয়া খাতে। প্রথমোক্ত ভক্তিন্দার প্রভৃতির লক্ষণাদি কিরূপ ? তাহা . উল্লিখিত কারক্রমধৃত গ্রুড়পুরাণের প্রমাণ্ডেই নির্দিষ্ট আছে যথা—

১ গুল্জিলয়—"যুৱৈকদেশে সংগণ্ণ গুক্তি-খণ্ডো বিভাব্যতে खिक्तिशः मयाशाजः माना

कृष्ठकात्रकः।"

যে সুক্তার কোন এক প্রাদেশে ভগ্ন শুক্তিথণ্ড (বিস্ক্তের শব্দ) সংশ্লিষ্ট থাকে, তাহা "শুক্তিলয়" নামে খ্যাত এবং তাহা কুঠরোগের আকর্ষক।

২ মৎস্যাক্ষ ।—"মীনলোচনসকাশো দৃশান্তে মৌ ক্তিকেডু য:।
মৎস্যাক্ষঃ স ডু দোষঃ
স্যাৎ পুত্রনাশকরে। ধ্রুবম্।"

কোন কোন মুক্তার কোন কোন প্রদেশে মংস্যের চক্ষ্র নার একপ্রকার চিহ্ন দেখা যার। প্রকাপ দৃশ্যটিকে মং-স্যাক্ষ বলে। এই মংস্যাক্ষ মুক্তা ধারণ করিলে ধারকের পুত্রনাশ হইরা থাকে। ভ কঠর।—"দীপ্রিহীনং গতছোরং কঠ-রং তহিত্ব্ধাঃ।

তল্মন্ সন্ধারিতে মৃত্যিজায়তে নাত্র-সংশয়ঃ ।''

যাহার দীপ্তি ও চারাবিহীন, তাহার
নাম ''লঠর।" এই লঠর লাজীর মৃকা
ধারণ করিলে মৃত্যুপ্রাপ্তি হইরা পাকে।
৪ অতিরক্ত ।--''মৌক্তিকং বিজ্ঞসচ্ছার
মতিরক্তং বিছ্র্ধাঃ।
দারিজ্ঞনকং যন্ত্রাৎ তন্ত্রান্তংপরিবর্জ্বের।।"

কোন কোন স্থানের স্কার প্রবাদের ন্যার রক্তাভা জরিরা থাকে, সেই সকল স্কো রত্নশাল্তে "অভিরক্ত" নামে নির্বাদি চিত হর। ডাহা ধারণ ক্রিলে দ্রিজ্তা জন্মে বলিয়া এই শ্রেণীর সুক্তাবর্জন করিবেক।

অবৃত্ত।—"উপর্গুগরি তিইন্তি বলয়ে। যত্ত মৌক্তিকে।
তিবৃত্তং নাম তস্যোক্তং
সৌভাগাক্ষরকারকম।"

যে মুক্তার উপর্যুপরি বলি অর্থাৎ '
শুরের নাার রেখা খাকে ভাহার নাম'
"ত্রিরত।" এই ত্রির্ত্ত মুক্তাখারণে
সৌভাগ্য ক্ষরপ্রাপ্ত হইরা থাকে।
৬ চিপীট।—"অবৃত্তং মৌক্তিকং যচচ
চিপীটং যরিগদাতে।

মৌক্তিকং প্রিয়তে যেন তস্যাকীর্দ্তির্ভবেৎ সদা।''

যাহা "চিপীট" বলিয়া উক্ত হইয়াছে, তাহা অবৃত্ত মধ্যে গণ্য (অর্থাৎ হ্রগোল নছে) যে মহুষ্য এই " অবৃত্ত" মুক্তা-ধারণ করে, সে সর্বাদাই অ্যশোভাগী হয়।

৭ ত্রাশ্র।—''তিকোণং ত্রাশ্রমাখ্যাতং' সৌভাগ্যক্ষকারকম্।''

ত্তিকোণাকারে ধে মুক্তার গঠন নিশার হর, ভাহা ''ত্রাশ্র' নামে খ্যাত। ত্রাশ্র ুমুক্তা সৌভাগ্যের হানিকর।

৮ कृत्र ।—''मीर्चः यद्धः कृत्रः (श्राकः श्रक्षाविश्वःमकात्रकम्।"

দীর্ঘাকার মূকা 'কেশ' সংজ্ঞাপ্রাপ্ত হয়। এই মূকা বৃদ্ধিনাশক বলিয়া প্র-দিয়া

৯ কুশপাৰ্থ।—নিৰ্ভগ্ন মেকতো যচ্চ কুশ পাৰ্খং ভত্চাতে।"

যাহার কোন এক প্রদেশ ভগ্ন বা ভগ্ন প্রার অথবা নির্ভগ্ন অর্থাৎ বক্র বা বন্ধুর, তাহাকে "कुण्णार्च" वना यात्र। এই কুশপার্থ মৃক্তাও নিক্নীয়।

১- অরুত্ত।—মবৃত্তং পিড়কোপেতং সর্ব্ব সম্পত্তি হারকম্।"

† পিড़कांयुक मूकांकन "चव्छ" नारम এই অবৃত্তমূকা ধারণ ব্যৰস্ত হয়। कतिरा मकन मन्त्रु सि महे हते।

षाडः भन्न वक्तवा धहे (य, यूकामध्यक्त খাণ ও দোষ যাহা পুরাতন রত্নতবিৎ পণ্ডিভেরা নির্মাচন করিয়া গিয়াছেন, ভাহার সমুদ্র সকলন করা ছ:সাধা ও निर्द्धायन। এ विवय अवना छाउवा यून यून विषय छनि সংক্ষেপে वास्त्र करा

[इरेग। भूर्क रिंग ग्राह्म ग्राह्म मुका-नवकीय हात्रा ७ कास्त्रित्र कथा वना हहे-ब्रांट, তाहांत्र अख्यांत्रः भरत विभावतार्भ वाक कर्ता बाहेरन। कन डः काञ्चि ও ছा-য়ার প্রভেদ এই যে, মুক্তার লাবণাবিশে-वित्र नाम कांखि चात वर्गविष्णवित्र नामन् চায়া। "ভরতরসপ্রকরণ" নামক গ্রন্থে মুক্তাফলের কাস্তির সহিত উপমা দিরা ''লাবণা কাছাকে বলে ?'' ভাহা বুঝান रुडेबाटि । मुकाटि व अन्धकात हेन्-টলে চিক্কণভাব দৃষ্ট हम, ভাৰাই স্ত্ৰী-भद्रीदवद सावना।

> ক্ৰমশঃ। औदामनाम (मन।

পশ্চিমদেশে বাঙ্গালার জ্ব।

खना यात्र, बाजानात श्रीशब्दत हेमा-नीः मिन्नी, नाटहात भर्यास अब कति-शाष्ट्र। राजानित भरक हेश व्यक्तित विषय वर्षे। अनाडेशांद सन्म वानावात्र, पक्ष (महे अनाडेंग शृथिवी बमाउन লার আল অভিক্রেম করিয়াছে, এখন वात्रानात्र नाम मर्ख्य मर्खकर्छ উচ्চा विड इट्टा

क्लवध्य नामि वानालात अव हित-कान वानानात्र वद्य हिन, कथन घटत्रत

वाहित हम नाहे, क्थन धनिक अमिक নজর করে নাই; একণে আবার এ ন্তন প্রবৃত্তি তাহার কেন হইল বলা যায় না। বাদালির ছৈলেরা ভারতবর্ধের সাবেক সীমা কেন উল্লন্ডন করিতে আরম্ভ দিতেছে। আনবার বালালার জ্ব বালা- , করিয়াছে ভাহা ব্ঝা যায়, কিন্তু জ্ব কেন আপন ঘরের বাহির হইল ভাহা व्या यात्र ना।

> বাঙ্গালার জ্বর পশ্চিমদেশে কেন গেল **এই नहेत्र। अशान त्रशान जात्मानन** रुरेट्ट ; अस्मकात रेहा निकिन्त

[†] फ्रक्षित नावि हिरूटक शिष्का वटन ।

হইরাছে বে, ইট্ট ইণ্ডিরা বেলওরে
নির্ন্থিত হওরার পর পশ্চিমাঞ্চলে এই জর
গিরাছে। কাজেই সকল ভর্ক মৃদ্দীভূত
হইরা শেষ হুইটি অকাট্য কার্য়ণে আদিরা দাঁড়াইয়াছে, একটি এই বে বালালার জর রেলের পাড়ি চড়িরা পশ্চিমে
গিরাছে। অপর হেড়, এই বে রেলওরেরছারা পরঃপ্রণালী রুভ হওরার
পশ্চিমে জর আরম্ভ হইরাছে।

উভর হেতুই সকত বলিলা বোধ হয়।
গাড়ির স্থবিধা হইরাছে, মতএব বাকালার জর যে তীর্থবাত্তা করিতে বাইবে
তাহা সম্পূর্ণ সম্ভব। আবার রেলওয়েলারা
পর:প্রণালী বে কৃষ্ণ হইরাছে, তাহাও
নিশ্চর। বিশেষতঃ, সকলেই বলে যে,
কেবল রেলয়ের নিকটবর্ত্তী গ্রামসমূহেই
এই জর প্রবেশ করিয়াছে, দ্রগ্রাম
সমুদর পূর্ববিৎ সচ্ছদে আছে।

কিন্তু বাঁহারা বলেন বে, গাড়ী চড়ে জর পশ্চিমে গিরাছে; তাহারা সামান্য লোক হউক তাহাদের সংখ্যা নিতাম্ব অধিক, অতএব বহুতর ব্যক্তির সঙ্গ ছাড়িয়া অনকতক লোকের অর্থসরণ ক-বিতে পারা যার না। আমরাও কাজেই বহুচেটা করিয়া সেই বহুজনম্বলভূক্ত হুইয়াছি।

আমরা একবার রেলওরে উঠিরা হগলী হইতে বর্দ্ধানে ঘাইভেছিলাম, ছই এক ক্রোশ গেলে একটি বিলী অর্থাৎ বিবিশোকা মাঠ হইতে উড়িতে

উডিতে আমাৰের গাড়ীতে করিল, এবং গাড়ীর ভিতর উড়িয়া विकारेट नानिन। গাড়ী বায়ুবেগে ছুটতেছে, কিন্তু তথাপি কিন্তী আপন বেগ ৰাডাইল না: মাঠে যেরপ নবাবি চালে चुवित्रां, किवित्रां, छेठित्रां, नामित्रा উড়িতেছিল, সেইক্লপ উড়িতে লাগিল **এবং ক্রমে আমাদের সঙ্গে প্রার** দশ क्याम अब राजा। (हेरनत मर्क मर्स) मर्था रव इरे अकृषि नीनकर्श वा काक উড়িতেছিল, ভাহারা ছই মিনিটের মধ্যে পদাতে পড়িতে লাগিল: কিছু বিলী দশক্রোশ পথ ক্রীড়া করিছে করিতে গেল ৷ মাঠে উদ্বিলে বিল্লী শতহন্তও টে্ণের সঙ্গে ঘাইতে পারিত না; কিছ গাড়ীর ভিতর উড়িতেছিল ব-ইহাতে এই लिया मणकाण (शन। উপৰ্জি হইতে পারে যে, বিনী যে বায়ুতে উড়িতেছিল, সে বায়ু গাড়ির সঙ্গে সঙ্গে বাইতেছিল, মাঠের বায়ুর গাড়ীর পশ্চাতে পড়তেছিল না। বদি এ কথা সভা হয় যে, গাড়ীর ভিতরের বাহু গাড়ীতেই থাকিয়া যার, তাহা इहेरन वाकामात्र वायू अ**डा**इ वह-, शिववाद शिक्टिय हानान वारेटल्ड वी-কার করিতে হইবে। নিভাত অর গাড়ী যার না! বালাগার বিষ একণে কার্ফেই পশ্চিমে অনারাসলভা হইরাছে। এই कना दामश्रवत शास्त्रहे यात्रामात कत भीश, एक्था यात्र, अस्त अटकवादत नाहे।

বঙ্গদশ্ন।

সম্বর্গর।

৭৯ সংখ্যা।

স্থতন খাজানার আইন সম্বন্ধে কলিকাতা রিবিউএর মত।

রেণ্টকমিশনের রিপোর্ট বাছির হই-প্রায় বংসরাবধি ধরিয়া এই রিপোর্ট প্রস্ত হইযাছে। अफ वृष्टित व्यार्ग नव निथत हरेशा यात्र. জল থমথমে মারিয়া যায়, গাছপালার পাতা পর্যান্ত নডে না, রিপোর্ট বাহির হইবার পূর্বের বাঙ্গালার রাজনৈতিকক্ষেত্র সেই রূপই ছিল। যেমন নিস্তব্ধ বিস্তীর্ণ इप लाई निक्ल क्रिल ठारिनिक् व्यात्नाष्ट्रिक इहेब्रा डिटर्ड, निख्क मःवान-প্রসমূহমধ্যে ২১শে জুলাইরের রিপোর্ট পড়িয়াও ঠিক তাহাই হইয়াছে। রিপোর্ট বিল'ও কাগভপত্ৰ সইয়া স্পেশাল शिक्षेवानित्र शिक्षमः था। ४०८। मक्रात्र পড়িবার অবসর হয় নাই, হইবার क्षां नारे अथह मक्टनरे जानन जानन में धिकाम क्रिडि.कृष्ठिल इरवन नारे। क्ट वनित्नन, श्वांत्र तिर्लार्ड कत्र, আর বিশই কর, রায়ভের সঙ্গে স্থায়ী

বন্দোবন্ত না করিলে কিছু হইবে না।
কেহ বলিলেন, বাপু যা ছিল বেশ ছিল,
আবার কেন ঘুমন্ত বাঘ জাগান হয়।
কেহ বলিলেন, জমীদারের সর্কনাশ
হইল, কেহ বলিলেন, প্রজার শোষণ
করাই রাজার উদ্দেশ্য। এই সমস্ত
গোলযোগের মধ্যে কলিকাতা রিবিউ
উচ্চি:স্বরে বলিয়া উঠিলেন:—

The permanant settlement is a great accomplished fact in Bengal, and can already claim an antiquity of nearly a century; it has only just recovered from the position of unstable equilibrium into which it was—we still cling to the belief—unintentionally thrown by the Act X of 1859. The elaborate draft Bill in two parts is designed to upset it, it does not

purpose this and that minor alteration in the multiform system of rights which has grown under the shadow of the permanant settlement, but it deliberately aims a decisive blow at its fundamental condition:

'-But that two handed engine at the door Stands ready to smite, once and smite no more.'

অর্থাৎ দশসালা বন্দোবতে যে সব

শব্দ জ্মীদারকে দেওয়া হইয়াছিল, ৫৯

সালের ১০ আইনেই তাহার প্রায় সবই
লোপ হইয়াছে, যাও কিছু ছিল এইবার
ভাহাও গেল। আইন সাঁকারির করাত

হইয়া দাড়াইল আগু হইলেও কাটিবে
পিছু হইলেও কাটিবে।

এই সম্বন্ধে কলিকাতা রিবিউএর প্রবন্ধ ৫২ পৃষ্ঠা। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালারের একজন প্রধান ছাত্রের লেখা। যেমন কলমের জোর, তেমনি লেখার বাঁধনি, তেমনি স্ক্র দৃষ্টি। কিন্তু হইলে কি হয় লেখা দেখিলেই বোধ হয় কোন উকীলের বক্তৃতা; কেবল মকেলের দিকেই টান। লেখার সবই ভাল কেবল গোতম আর আরিষ্টটালের পিওদান ও আদাপ্রান্থ। আজি কালি যদি গৌতম খারি স্ক্র নির্দ্ধাণী করিতেন তাঁহাকে দিনীরবস্থা নের্মাণী করিতেন তাঁহাকে দিনীরবস্থা chapter এর হেডাভাস ছল জাতিনিগ্রহস্বানের উদাহ্রণের অন্য

আর কোথাও যাইতে হইত না। এক আগুনাবুর প্রবন্ধমধ্যেই সব পাইতেন। প্রবন্ধটা ইংরেজিতে লিখিত; কিন্তু ইংরেজি যেই পড়িরাছে সেই হাসিয়াছে বাস্তবিক ইংরেজিতে তাহার খণ্ডন অনা-বশাক। এইজনা বাঙ্গালায়ই তাহার খণ্ডন করিতে আমরা প্রবৃত্ত হইয়াছি।

युक्तिभग्रत्व शुर्व्य अकृष्टि कथा वना আবশাক। প্রবন্ধন State Literature এর উপর বড় চটা, ভাঁহার মতে আইন পাশ হইবার পূর্বেবি যে সকল মিনিট, রিপোর্ট, ও অন্যান্য লেখালেখি চলে সে সকল ভ্যাগ করাই লোকের কর্ত্রবা। তিনি চান যে, লোকে আইনে যা কাছে ভাহারই অনুষায়ী হইয়া কার্য্য क्क्रक। किन्न चाहित्व व्यक्तियात्र मन्त्रह হইলে যেথানে ব্যাখ্যা বৃদ্ধিবলাপেকার উপর নির্ভর করিতে হইবে, সেধানেও মিনিট রিপোর্ট ইত্যাদির পাঠের প্রয়ো-छन नाहे। किन्न अ.गामित मटि धी बिर्णार्षे व्यक्ति व्यम्भा, खेहादा व्याहरने অর্থবৈশদা পক্ষে যেরূপ সাহায়া করে এত আর কিছুতেই করে না। লেথক টেট লিটবেচরের উপর চটা অথচ আত্ম-প্রার্থসিছির জন্য তিনিও Pemberton Leigh সাহেবের মত উদ্ধার করিতে কস্থর করেন নাই। (৩৫৯ পুঃ)

তিনি বলেন চিরত্বায়ী বন্দোবত কণ্ট্রাক্ট বই ত নয়। বেমন নোট কণ্ট্রাক্ট তেমনি উক্ত বন্দোবতও কণ্ট্রাক্ট। চুক্তি অতি ফাটন এজন্ত মনেকে উহার অনেক প্রকার অর্থ করিয়া পাকে। তথাপি উহা চুক্তি ভিন্ন আর কিছু নহে। এই চুক্তিতে বর্ত্তমান জমীদারদল যে লাভ-প্রেপ্ত হইরাছেন তাঁহার। তাহার পূর্ণ মুল্য দিয়াছেন, ইত্যাদি, ইত্যাদি।

আনাদের মতে উহা চুক্তি নহে উহা আইন; ব্যবস্থাপক সমাজ্বারা

নিধিবল্ধ; উহা হইতে অনেক চুক্তি উৎপন্ন হইয়াছে কিন্তু উহা নিজে চুক্তি নহে।

যদি চুক্তি হয় কে কে সে চুক্তি করিল গ্
গবর্ণমেন্ট আরে জমীদার। প্রজা এ

চুক্তির মধ্যে কেহ নহে। যাহার জবা
ভাহার মত না লইরা, ভাহাকে জিজ্ঞাসা
না করিয়া সামান্য কর্মচারীকে ভ্রামী
বিসিয়া প্রকাশ করিবার গ্রগ্নমেন্ট কে গ্

পারমানেট সেটলমেট যদি চুক্তি হয় তবে উহা সোরের চুক্তি আইনমতে উহার কোন মুলা নাই। যদি আশুবাবুব কথামত উহা চুক্তি, সিদ্ধ চুক্তিই হয়, তবে উহা দ্বারা কি প্রজাদের ভূষত্ব বাজেয়াপ্র করা হয় নাই। উহা কি যথেক্তাচার প্রণালীর চূড়াস্ত নিদর্শন নহে? তাহা হইলে এক কলমের দ্বায় ৩ কোটা প্রজাব সমস্ত জমীস্ত স্বস্থ কাড়িয়া লইয়া জন্ত কর ধনী লোককে ভূমিতে নির্মাট স্ব্রান বলিয়া স্বীকার করা, ঘোর মূর্য তার কর্মা হইয়াছে। এমন পারমানেট সেটলা মেট যত শীষ্থ উঠিয়া যায় ভতই ভাল।

আরও এক কং।, যদি এই বলে: ২ন্ত চুকিই হয়—যদি উহা আগুৰাবু ঘ: হা ব্লিয়াছেন ভাই হয়,—যদি সমস্ত ইতিহাসের মুগুপাত করিরা সমস্ত যুক্তির শ্রাদ্ধ করিয়া চিবস্থায়ী বন্দোবস্ত চুক্তিই হয় তথাপি জমীদারেরা চুক্তিভঙ্গ অপ-রাধে অপরাধী হইয়াচেন। ১৭৯৩ অন্দের প্রথম রেগুলেশনের সপ্তম ধারায় লিখিত আচে—

To discharge the revenues at the stipulated periods without delay or evasion and to conduct themselves with good faith and moderation towards their dependant Talukdars and Ryots, are duties at all times required from the proprietors of land and a strict observance of those duties is now more than ever incumbent upon them in return for the benifits which they will themselves derive from the ordes now issued.

যদি দশশালা বন্দোবন্ত চুক্তিই হয়
তবে প্রজি,দিগের প্রতি সদ্বাবহাব করাও
সে চুক্তির এক করার। কিন্তু জ্মীদাবেবা কি এই করারমত কাজ
কবিয়াছেন
তুঁহারা কি প্রজাদিগের
প্রতি সভা সভাই good faith and
moderation দেশাইয়'ছেন। দশশালা
বন্দোবন্ত ১৭৯৩ খ্রীপ্রম্পে চিরস্তায়ী হইযাছে। আজিও একশত বংসর পূর্ব
হয় নাই; ইহারই মধ্যে থোদকন্ত রায়তের নাম লোপ হইরাছে। প্রগণা

नितीथ,--याहात अधिक थासना आनात कत्रा वित्रमिन चारैनिविक्क,--थाशविक्क এবং যুক্তিবিরুদ্ধ,—জমীদারেরা উঠাইয়া দিয়াছেন। সর্বত আইনসঙ্গত হউক আর নাই হউক, থাজনার বৃদ্ধি লইয়া होनाहानि कतिशाष्ट्रन। छाहारमत जानाश কত প্রভা দেশত্যাগ করিয়াছে। কত স্থানে গৃহদাহ গ্রামদাহ করিয়া তাঁহারা প্রভাকে উৎখাত করিয়াছেন। স্থানে স্থানে তাহাদের প্রতি এতই অত্যাচার कत्रा इहेत्राष्ट्र (य, वत्रामणीत्र निर्कीत, নিরীহ প্রভাগণও আর সহা করিতে না পারিয়া বিদ্রোহী হইয়াছে। এই কি তাঁহাদের good faith and moderation ? কর্ণোয়ালিস তাঁহাদিগকে যে कद्राद्य मर्गमाना वत्नावछ क्रश ठूकि मित्रांहिन रम कतात कि छत्र रश नाहे ? একপক হইতে করার ভঙ্গ হইলে সে চুক্তি कि वाजिल ও नामक्ष्र दश ना? অতএব শুদ্ধ এই এক করারভঙ্গ অপ-द्राध वण्डः मण्णांना वत्नावछ कि डिठारेया (पश्या डिविड नय ?

কিন্তু বাস্তবিক দশশালা বন্দোবস্ত চুক্তি নহে--উহা ব্যবস্থাপকসমাত্র হইতে বিধিবদ্ধ আইন। নচেৎ হইপক চুক্তি করিয়া তৃতীয় পক্ষের স্বত্ব লোপ করা দস্তার চুক্তি ভিন্ন আর কিছু নহে। প্রকৃত ভৃষামীকে ত্যাগ করিয়া আর একজনকে ভৃষামী বলিয়া খীকার করা চুক্তির কর্মান নন। আইন ভিন্ন উহা ভার কেহু করিতে পারে না। এবং দশসালা বন্দোবস্তের আইনে তাহাও করে নাই।

আমাদের ভারতবর্ষে অতি প্রাচীনকাল হইতে প্রজাই ভূমির মালিক। আমা-रमत रय मखन ७ शारों हाती खाश প্রচলিত আছে তাহাতে প্রজার স্বত্ত সাবাস্থ করিরা দিতেছে। জমীর দক্রণ थाकाना (rent) व्यामारमत (मर्म हिम ना। মহুতে তাহার উল্লেখ নাই। সংস্কৃত কোন পুস্তকে খাজানা দিবার উল্লেখ নাই। কাহার কত করে রাজস্ব দিতে হইবে,সেই সম্বাদ্ধ মন্থ বলিয়াছেন "ধাতা-নামষ্টমোভাগঃ ষষ্ঠ দাদশ এব বা," অর্থাং शादनात वर्ष व्यः म व्यथवा व्यष्ट्रम व्यववा দাদশ অংশ রাজাকে করম্বরূপ দিতে হটবে। রাজার জমী কর আর নাই কর তোমাকে রাজস্ব দিতে হইবে। এইজন্য অধিরা বনে কুড়াইয়া যে অক্টপচা ধানা সংগ্রহ করিতেন, ভাহারও ষ্ঠাংশ রা-জাকে দিভেন। প্রজারা সকলই রাজাকে কিছু না কিছু দিত, কেহই রেয়াত পাইত কামার কুমার ছুতার প্রভৃতি সকলেই রাজস্ব দিত অথচ হয় ত ভাহারা কেইই জমি করিত না। এইরপ करतत नाम वतः तालच revenue इहै उ भारत कि इ डिश थाकाना नरह। সময়ে বৃটীষ গবর্ণমেণ্ট ঘেমন নানা थाकात (ठेक वनान (नहेक्रभ कामारमत দেশে চিরহায়ী টেকা ছিল জমির খালনা স্বতন্ত্র ছিল না। সেই টেক্স বা রাজ্য कथन कथन त्रांकाता वृद्धि कतिर्छन।

সময়ে স্থায়ে তাঁহারা কর রেয়াতও করিতেন। প্রান্ধা স্ফীণ এবং রান্ধা অত্যা-চারী হইলে ছব্দহকরভার তাহারা কঠে সৃষ্টে বছন করিত কিছু ফাক পাইলে তাহারা বিদ্রোহ করিতেও ছাড়িত না। এই রূপে ক্রমে মুসলমানদিগের অধিকার কালে প্রভার টেক্স ছাড়িয়া ভূমির টেক্স হয়,সেই টেক্স কিছু কিছু করিয়া বাড়িয়া, আক্বরের সময় এক তৃতীয়াংশে দাঁড়ায়। हेहात नाम जानन जमा। कारम मूनन-मारनता नाना कात्रनरभकः आत्र किहू किছू आमात्र कतिछ, छाहांत नाम धाव-বুটীষ গ্ৰহণ্মেণ্টও দেওয়ানী পাইয়া অবধি বরাবর ঐরপ আবওয়াব আদার করিয়া আদিয়াছিলেন। অক্রের প্রথম আইন ছারা যথন ঘমীর च इ हित्रकारनात खना खभीमात्रक (मध्या হয় তখন এই আবওয়াৰ ইতাদি সমস্ত আদল জমাভুক্ত হইয়া যায়। তাহার পর আবওয়াব ইত্যাদি আদায় করা এককালীন বন্ধ করিয়া দেওয়া হয়। (১१৯० माल्यत अष्ठेम आहेत्मत ८८ ७ ८८ ধারা) অথাৎ প্রজার নিকটহইতে কোন वाद जात जिथक कत नहेव गा, शीकांत्र कताहेशा अवः ८महे व्यवह्निशेष कत निर्फिष्ट कतिवात छात समीनादत छेशत निया शवर्वामणे समीमात्रक वित्रमिटनत मङ ভূষামী विनिष्ठा चीकांत्र कतिदनन। **घठ ६ व मम्माला वस्मावस्य विल्ला छैहा** एक स्थीनाद्वत महिल वित्रसात्री वर्णाः বস্ত ব্ৰায় না উহাতে প্ৰজার সহিতও

চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত ব্ঝার। এ কথা
আমরা যে আজি বলিতেছি এরপ নহে
আমাদের পূর্বেও অনেকে বলিয়া গিয়াছেন। কিন্তু আশুবাবু State Literature
উপর বড় চটা। এইজন্য তাহা ছাড়িয়া
আইনের কথা ধরিয়া দশশালা বন্দোবস্তের ঐ অর্থ দেখাইতে চেটা করিব।

এই সময়ে আমাদের একটি কথা কেবল विनारं इहेर्द। (कह बिक्कामा कतिएक পারেন যদি প্রফার সঙ্গেই চিরন্থায়ী वत्नावछ इटेन তবে स्मीमात्रक जुनाभी করিবার লাভ কি ? প্রজার খাজানা যদি বৃদ্ধি করিতে না পারিলেন তবে জমীদার ভূমামী হইলেন আর না হইলেন তা-হাতে ক্ষতিই বা কি, বৃদ্ধিই বা কি ? এ প্রশ্নের উত্তর এই যে লর্ড কর্ণোওয়া-निम वान्नानात्र समीमारवत्रा (य कि ধাড়ুর লোক তাহা ভাল করিয়া বুঝেন नाहे। क्यीमाद्वत्रा त्य आभी वरमद्वत्र মধ্যে চিরপ্রচলিত পরগণানিরিখ উঠা-ইয়া দিতে পারিবেন তাহা তিনি স্বপ্নেও छारान मारे। श्राकाना ७ कत्रमश्रस (य সব নৃতন নৃতন মত উনবিংশ শতাকীতে বাহির হইয়াছে তাহা তাহার সময়ে হয় নাই। তিনি শোর সাহেবের আপত্তির উত্তরে বলিয়াছিলেন অমীদারের উপস্বত্ব বুদ্ধির ছুইটা মাত্র উপায় থাকিবে। পতিত ভূমির পুনরদার এবং উৎকৃষ্টতর भागा উৎপাদনে প্রজাদিগকে প্রবর্ত্তন कता। अभीमात, (य थाजना वृद्धित अना উৎপীড়ন করিয়া আপনার লাভবৃদ্ধি

করিবে এবং প্রাঞ্জার সর্ক্রনাশ করিবে ইহা তাঁহার একেবারে অভিপ্রায় ছিল না। কার্যোও তিনি, তাহার কোন পথ রাখিয়া যান নাই। তৎপ্রনীত অষ্ট্রম আইনের ধারাগুলি উদ্ধৃত করা উচিত কিন্তু স্থানাভাবপ্রযুক্ত কেবল ছুইটী ধারা উদ্ধৃত করা গেল।

54. The impositons upon the Raiyats, under the denomination of abwab, mathout, and other appellations, from their number and uncertainty having become intricate to adjust, and a source of oppression to the Raiyats, all proprietors of land and dependent Talukdars shall revise the same in concert with the Raiyats, and consolidate the whole with the assal into one specific sum.

In large Zemindaries or estates the propriators are to commence this simplification of the cents of their Raiyats in the Parganas where the impositions are most numerous, and to proceed in it gradually till completed; but so that it be effected for the whole of their lands by the end of the Bengal year 1198 in the Bengal districts, and of the Fasli and Wilayate year 1198 in the Bihar

and Orissa districts, these being the periods fixed for the delivery of pattas, as hereafter specified.

55. No actual proprietor of land or dependent Talukdar or farmer of land, of whatever description, shall impose any new abwab or mathaut upon the Raiyats, under any pretence whatever.

Every exaction of this nature shall be punished by a penalty equal to three times the amount imposed; and if at any future period, it be discovered that new abwab or mathaut have been imposed the persons imposing the same shall be liable to this penalty for the entire period of such impositions.

আশুবাবৃত্ত অনেক ধারা উদ্ধৃত করিয়াছেন, কিন্তু উপরোক্ত যে ৫৪ ও ৫৫
ধারার উপর সমস্ত নির্ভর কবে, সেই
ছইটি না দিয়া তাহার কেবল marginal
note ছইটি তুলিয়া দিয়া ঠিক উটি।
বুঝাইয়াছেন। আমরা ঐ ধারার ব্যাখ্যাছলে তাহা প্রদর্শন করিব।

বে সব নির্মাবলীতে জ্মীদরে বাধা হইবেন, তাহার প্রথম এই। আনল নামা ভিন্ন কেহ প্রভাবা তালুকদারের নিকট থাজানা আদায় করিতে যাইতে ণারিবেন না।

ংয়। আবেওয়াব ইত্যাদি আনস্ব জমাভুক্ত হইয়াযাইবে।

তয়। ১১৯৮ বঙ্গাব্দের মধ্যে সর্ব্বর আবওয়াব আদি জ্বমাভূক হইয়া যা.

ইবে। কোন্প্রালাকে কত জ্বা দিতে
ইইবে, তাহা স্থির এবং নির্ণীত করিতে
ইইবে।

৪র্থ। ইহার পর কেহ আর ন্তন আবওয়াব লইতে পারিবে না। যদি কেহ লয়, ভাহাকে ৩ গুণ জরিমানা দিতে হটবে। যদি ভবিষাতে প্রমাণ হয় য়ে, কোন জমীদার বরাবর আবওয়াব লইয়া আদিতেছেন, ভাহা হইলে তাঁহাকে বরাবর যত আরওয়াব আদায় করিয়াছেন, সমস্ত জরিমানা দিতে হইবে।

থম। জ্বনীদার ও প্রকার প্রায়ই থাজানামাত্র লইয়া সম্বন্ধ থাকিবে। প্রদা যে কোন প্রকার শসা ইচ্ছা উৎপাদন করিতে পারে। কিন্তু যেথানে এরূপ প্রথা আছে, যে জন্য প্রকার শসা উৎ-গাদন করিলে অধিক রাজম্ব দিতে হয়, সেখানে সেই প্রথাই বলবৎ থাকিবে।

৬ ঠ। প্রজাদের রাজস্ব কি নিয়মে ।

নইতে হইবে, তাহার পাকা বন্দোবস্ত
করিবার পাট্টা দিতে হইবে। ঐ পাট্টার
প্রজাকে কত ধাজানা দিতে হইবে,

তাহা ঠিক করিয়া লেখা থাকিবে।

^{৭ম।} পাটায় বেধানে হার ধরিয়া ^{রাজ্}য দিতে হয়, সেধানে হার এবং যেখানে শস্যে রাজস্ব দিতে হয়, সেখানে শস্যদানের নিয়মের পাকা বন্দোবস্ত থাকিবে।

৮ম। জামীদারেরা পাট্টার উক্ত নিয়-মাহ্যায়ী ফরম প্রস্তুত করিয়া কালেক্ট-রের অনুমতি লইয়া দেওয়ানী আদা-লতে রেজেইরী করিবেন।

নম। জমা নির্ণীত এবং দ্বিরীকৃত হইয়া গেলে জমীদার যদি প্রজাকে সেই জমীর পাটা না দেয়, তাহা হইলে রায়তের পাটা লইতে মোকদমা করি-বার সমস্ত ব্যয় জমীদারকে দিতে হইবে।

১০ম। রায়ত কিখা পেটাও ইজারদারদিগের সহিত এই বন্দোবত্তের পূর্বে যে বন্দোবত্ত ছিল, তাহা যদি এই সকল নিয়মের বিক্লদ্ধ না হয়, তাহা হইলে উহা বন্দোবত্তের মেয়াদের শেষ পর্যান্ত বলবৎ থাকিবে। জুয়াচ্রি করিয়া বন্দোবত্ত করিলে, সে বন্দোবত্ত বলবৎ হইবে মা।

১১শ। কোন জমীদার নিম্নলিখিত
কারণ বাতীত খোদকন্ত রায়তের পাট্টা
রদ করিতে পারিবে না। যে সকল
'কারণবশতঃ পাট্টা না মঞ্র হইবে তাহা
এই। জুয়াচুরি করিয়া পাট্টা লইলে,
পারগণা নিরিখ হইতে তিনবৎসরের
মধ্যে রাজন্ব ক্ম হইলে, জুয়াচুরি করিয়া
রাজন্ব রেয়াত পাইলে, 'কিছা পারগণার
জারীপ হইলে।

>२ । >>>৮ भारतत्र मरश समी-

দারেরা সকল প্রস্তাকে পাট্টা দিবেন।
১১৯৮ শাল অতীত ইইয়া গেলে, প্রজার
সহিত পূর্ব্বোক্ত নিয়মের বিরুদ্ধ কোন
প্রকার বন্দোবস্ত, আইনাহুমোদিত হইবে না। যে সকল অমীদার আবওয়াব
ইত্যাদি অমাভুক্ত করিয়া প্রজাকে পাট্টা
না দিবেন, তাঁহারা রাজস্বের জন্য
নালিশ করিলে সে নালিশ না মঞ্জুর
হইবে।

এই সমস্ত ধারার অর্থ এই ষে, গবর্ণ মেন্ট বেমন জমীদারের সহিত চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত করিলেন, জমীদারও প্রজার সহিত তদ্ধপ চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত করি-বেন। যে জমা স্থির হইবে তাহার উপর আর এক পশ্বসা লইতে পারিবেন না।

বন্দোবন্তের পূর্ব্বে গবর্ণমেণ্ট জমীদাবের কাগলপত্ত দেখিরা,মোট আদারের
৯ ভাগ নিলে লইনেন এবং একভাগ
জমীদারের জন্য রাখিরা দিলেন, কিন্তু
প্রজার বেলা প্রজা কত দিতে পারিবে
এবং ভাষার উৎপন্ন কত কি্ছুই না
দেখিরা আরওরাব ইত্যাদিতে সে যাহা
যথার্থ দিত, ভাষাই ভাষার ন্যায় দের
বলিরা স্থির করিরা দিলেন। প্রজার
প্রতি কোনরূপ উৎপীড়ন যাহাতে না

হয়, লর্ড কর্ণোয়ালিশ তাহার বিশেষ বাবসা করিয়াতিলেন।

কর্ণোয়ালিশের সমস্ত আইনগুলির
মধ্যে প্রজার উপর রাজস্ববৃদ্ধির নামও
নাই। বরং পূর্বে আবওয়াব প্রভৃতি
নানা কারণে প্রজার নিকট যে অধিক
রাজস্ব আদার করা হইত, তাহা চিরকালের জন্য উঠাইয়া দেওয়া হইল।
প্রজার থাজানা চিরকালের জন্য বাধিয়া
দেওয়া হইল আইনে কেবল ইহাই
দৃষ্টি হয়।

নিয়মমত রাজস্ব দিলে প্রজার যোত উচ্ছেদ করা আমাদের দেশে কথন ছিল না, কর্ণোয়ালিশের আইনেও যোত উচ্ছেদের কোন বিধান নাই। যে ক্রমক একবার ক্রমিকার্য্যের জনা" ভূমি লইল, সে যতদিন রাজস্ব দিবে,ততদিন সে ভূমি তাহারই থাকিবে এই আমাদের দেশে চিরস্তন প্রথা। যোত ছাড়াইয়া দেওয়া ও রাজস্ব বৃদ্ধি করা, এ দেশীয় লোকের অক্রচিকর, তবে প্রজা হর্মল ও জমীদার সবল এ জন্য প্রজারা জমীদারকে খুসী করিবার জন্য নজর প্রভৃতি সময়ে সময়ে দিত, কিন্তু রাজস্বের উপর একপয়সা বৃদ্ধি করিতে তাহারা কথন চার্য না, এবং এখনও অর্থাৎ দশ আইন পাস

^{*} মৌরসী, মকররী, মেরাদী প্রভৃতি পাট্টা বাস্ত, উবাস্ত, বাগাতপ্রভৃতি স্থলেই চলিত, কৃষিকার্য্যের জনা ভূমি লইলে ঐরপ পাট্টা চলিত নহে, কৃষকেরা প্রায় পাট্টা লয় না, ১৭৯৩, ১৮৫৯, ১৮৬৮ শালে পাট্টা লইবার এত স্থবিধা করিয়া দিলেও অতি অর লোকেই পাট্টা লইবাছে। কৃষকরায়ত একটু পুরাণ হইলেই তাহারা কদীমী রায়ত কহিত। তাহাদের স্বন্ধ প্রায় মৌকসীর নাায়।

হইবার পরও অনেক জায়গায় জমীদার
চারিপয়সা রাজস্ব বৃদ্ধি করিতে চাহিলে
প্রজারা জ্লীদারকে দশটাকা নজর
দিবে, জমীদারের আমলাকে দশটাকা
বৃষ্ধ দিবে, তথাপি সে চারিটা পয়সা
বৃদ্ধি দিতে চাহিবে না; কর্ণোয়ালিশের
আইনে যথন ঐ নজরাদি আইনবিরুদ্ধ
করিয়া প্রতিপর হইল, যথন আবার
১৯৯৮ শালের মধ্যে আবওয়াব আদি
অন্তর্ভুক্ত করিয়া রাজপের সোট স্থির
করিয়া সেই রাজ্যে পাটা দিবার কথা
রহিল, না দিলে রাজ্যের নালিশ চলিবে
না এমত বন্দোবস্ত রহিল,তথন সেপাকা
চিরহায়ী বন্দোবস্ত নয় ত কি?

श्रक्षांपिरशत त्रकात कना विस्था विधान করা আবশাক বলিয়ালোকে যখন কর্ণো য়ালিশকে পীড়াপীড়ি করিয়াছিল, তথন তিনি তাহার উত্তর দিয়াছিলেন যে. শত শত বংসর হইতে প্রচলিত স্থানীয় হার এবং পরগণানিরিখ কেছই উন্তবন ক্রিতে পারিবে না। এই চিরস্কনপ্রথা ध्वामिरशत शतिकांग कविरत। कि क বাশালি জমীদার যে কতদুর স্বার্থপর, নৃশংস এবং স্বার্থসিদ্ধির জন্য তাহারা कड गर्हिड, नाायविक्रम ଓ जयन कार्या ক্রিতে পারেন ত.হা উদারচেতা লর্ড কর্ণোয়ালিশ কিছুই জানিতেন জানিলে তিনি আর রাম্ম্বনির্গ এবং शिष्ठीमान कार्यात्र छात्र के समीमात्रदमत ^{হত্তে} সমর্পণ করিতেন না; সেটা ं निटक्टे कतिया मिटलन । कमीनांत्ररमत হাতে দেওয়ায় ফল হইয়াছে এই বে,
ঐ সকল রেকর্ড রক্ষিত হয় লাই, ঘাহাঞ
বা হইয়াছে, তাহাতে প্রফার সর্প্রনাশ
বই আর কিছুই হয় নাই। ক্যাছেল
সাহেব তাহার কব্ডেন ক্রবের প্রবন্ধ
এই রেকর্ড না রাখাই গ্রন্মেটের প্রধান ভূল ও বঙ্গীয় প্রকার প্রধান অনর্থ
স্থির করিয়াছেল।

আমাদের দেশে রায়তেরা জানিত, জমী করিব থাজানা দিব। থাজানা বাড়ান, যোত ছাড়ান এ সকল তাহাদের পক্ষেন্তন; এবং যথন, দশশালা বন্দোবস্তেও উহার কথা নাই, তথন উহা রায়তের পক্ষেও চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত। ক্যাম্থেল সাহেব লিখিয়াছেন, "There are in them (regulations) expressions which would seem to imply that no more is to be taken from any class of ryots, old or new, than the customary rates in the neighbourhood."

লর্ড কর্র্নালাশ জমীদারী ফেরাবীর তলা পর্যান্ত বৃধ্ন আর নাই বৃধ্ন, তিনি জমীদারদের তত বিশ্বাস করিতেন না, এবং গবর্গমেণ্টের রাজস্বটা ঠিক ঠিক আদায় হইয়া যার সেই দিকেই তাঁহার অধিক নজর ছিল বলিয়া তিনি তাঁহা-দের উপর কতকটা নির্ভর ক্রিতে বাধ্য হইয়াছিলেন। এই জন্য তিনি প্রজার, রক্ষার্থ পুর্কোক্ত ধারাসকল প্রশাসন করিয়াপ্ত একটি ক্ষমতা নিজ

হস্তে রক্ষা করিরাছিলেন। গৈটি এই---It being the duty of the ruling power to protect all classes of people and more particularly those who from their situation are most helpless, the Governor General in Council will whenever he may deem it proper enact such regulations as he may think nec cessary for the protection and welfare of dependent Talukdars, Ryots and other cultivators of the soil, and no Zemindar indepen dent Talukdar or actual proprictors of land shall be entitled on this account to make any objection to the discharge of the fixed assessment which they have respectably agreed to pay.

এই ধারার প্রকৃত অর্থ এই যে রায় চদের রক্ষা করিবার জন্য গবর্ণমেন্ট ভবিবাতে আইন করিবেন, জমীদারু সেইজন্য
অবধারিত খাজানা দিতে পারি না বলিয়া
জাপত্তি করিতে পারিবেন লা। কিন্তু
আশু বাবু বলেন উহার অর্থ অন্যরূপ।
ভাহা প্রতিপন্ন করিবার নিমিন্ত ভিনি
১৭৯৩ শালের দিতীর রেগুলেশনের
মূপবন্ধ হইতে একটি বাক্য উদ্ধার
করিয়াছেন। এবং সেটি বড় বড় অক্ষরে
ছাপাইয়াছেন। সেটি এই—

No power will then exist in the

country by which the rights vested in the landholders by the regulations can be infringed or the value of the landed property affected.

অর্থ এইরূপ করা হইরাছে যে বলি

অমীদারের স্বান্থে হস্তক্ষেপ করিবার উপ
যুক্ত ক্ষমতাই এ দেশের মধ্যে কাহারও

না রহিল তবে গবর্ণরজেনেরল ইন্

কৌন্দিল উক্ত স্বান্থে কিরুপে হস্তক্ষেপ

করিতে পারেন । অর্থাৎ প্রস্তার রক্ষার

অমতা নাই। অর্থাৎ ৯৩ শালের প্রথম
আইনের অন্তম ধারার অন্যরূপ অর্থ।

কিন্তু আগুবাবু প্রবন্ধের শেষ অংশ লিখিবার সময় গোড়া ভুলিয়া গিয়া-हिम्म। क्लिकाडा त्रिविडे ७৮৮ पृष्ठी। "None but a fool or madman will deny the power of the legislature to redistribute property in land and indeed private property of every other description." fag किनि आवात्र निरम्हे विलग्नाहरून, ध्य सिम्बर माना क्यीमाद्वर याच रखामन করিতে পারে এমন কমতা কাঁহারও থাকিবে না। এইরণে তিনি আপনার পদেই আপনি कुठांत्र मात्रिवाह्न । তিনি विकीय दा करनमानद छेशदांख्न य शरी উদ্ধার করিয়াছেন ভাতা "চকুরোগে-मम्रशास कर्नोहियां कृष्टिः मरहर ।" वहे অখ চিকিৎসার বচনটি মহুষাচিকিং-

माध बावक्रक कतिरल (यज्ञभ कल स्य **छळ** कनश्रम् कविशाहि। লান অভাব প্রযুক্ত বিতীয় রেওলেশনের মুখবন্ধটী ভূলিরা দিভে পারিলাম না। দিতে পারিলে পাঠকগণ দেখিতেন যে के द्विशासन द्वादा किवन मान जाती-•লত উঠিয়া বার ও তাহার কার্যা দেওয়ানী আদালতে সমর্পণ করা হয়। তাহার মধ্যে প্রভার স্থাপক্ষ আইন করিবার ক্ষমতা কাহারও রহিল না এমন কোন क्षा है नाहे, थाकि वार्त्र महावना नाहे। আশুবাবুর উদ্ধত পদের কৈবল উপর এবং শেষ অংশ পড়িলেই উহার অর্থ বোধ চটবে--এই জনা আমরা ভাষা উদ্ধার করিয়া দিলাম, আমরা এ বিষয়ে আর অধিক কথা কহিব না। উদ্ভ অংশটকু এই---

The collectors of the revenue must not only be divested of the power of deciding upon their own acts but rendered amenable for them to the courts of judcature and collect the public dues subject to a personal prosection for every exaction exceeding the amount which they are authorized to demand on behalf of the public and for every diviation from the regulations prescribed for the collection of it; no power will then exist in the country by which the

rites vested in the land-holders by the regulations can be infringed or the value of landed property affected.

অর্থাৎ কালেক্টর নিজে অত্যাচার করিয়া নিজেই বিচারপতি হইলে জমীদারের
স্বন্ধের প্রতি হস্তক্ষেপ করিবার যে
সম্ভাবনা তাঁহার থাকিত ভাহা আর
থাকিবে না। বাবস্থাপক সমাজের এবং
গবর্গর ক্লেনেরলের ক্ষমতার সহিত ঐ
power শব্দের কোন সম্পর্ক নাই।
আগুবাব্ ভাহা পাকা উকীলের নায়
গোপন করিয়াছেন।

তিনি Right Hon'ble T. Pemberton Leagueরএকটি রাম হইতে একটি পদ উদ্ধার করিয়া বলেন যে রাছকার্যনির্বাহপ্রণালী স্থনাররূপে চালা-ইবার জনা এবং প্রস্তাদিগের অবস্থা উন্নত করিবার জনা East Indian Company बभीमात्रक ज्ञामीकाल প্রবিদ্য করিয়া এবং তাহাদের সদত্ समा हित्रालित सना श्रित कतिया निया স্থাসনের সর্বাপ্রথম সোপান করিয়া पिट्न । डिनि व्हान कहे श्रथम (मा-°পান ১৭৯৩ শালের ২২ শে মার্চের মন্তি-সভাধিট্ড গ্রুগর ভেনারেলের ছে:ম্বা পত্র !! আভবার ঘোষণাপত্রেরও কিয়-দংশ উদ্ধার কবিয়াছেল কিন্তু অন্তমধারার কি কথ তিনি করেন, কোন স্থানেই थुनिया वानम नाहे। जिनि वानम আমরা উহার কি অর্থবোধ করি ভাষা

যোষণাপত্তের উদ্ধৃত অংশ পড়িলেই অমুমান করিতে পারা যাইবে। এরপ অর্থ অমুমান করিয়া লওয়ার ভার পাঠ-(कत्र इर्छ (म्अम् वर्ष मन्द्र नरह। তাঁহার ঘোষণাপত্রের উদ্ধৃত অংশ পড়িয়া আমরা ত বিশেষ কিছু অমুমান করিতে পারিলাম না। তবে যেন একটু একটু (वांध इम्र (य, लाक वृद्धित कमी-দারেরা পুর্বে পুলিষ-বিচার প্রভৃতি যে সকল রাজকীয় ক্ষমতা পাইয়াছিলেন দেই ক্ষমতা উচ্ছেদ করিবার জনা নৃতন নৃতন আইন প্রস্তুত করিবার ভার গবর্ণর (सत्तद्रल दाथित्तन। कि**ड** व्यथम (द्रश्च-লেশন বরাবর পড়িয়া আদিলে কখনই এরপ অর্হয় না। সমস্ত প্রথম রেও-(लभारत माथा समीपादात पाउमानी क्लिनाती देखानित नाम व नारे गक 9 নাই। স্থতরাং মাঝে হটতে ভাহার ष्यद्वेयश्वादा स्मीमाद्वत (को समात्री क्रमता নিষেধরণ অর্থ কিরুণে হইবে তাহা আমরা বুঝিতে পারিলাম না।

তিনি বলেন চিরস্থায়ী বন্দোবন্ত রূপ
চুক্তি করিবার সমর জমীদারকৈ তাহার
জনেক মূল্য Valuable consideration
দিতে হইরাছিল। জনেক কট সফ্র্
করিতে হইরাছিল। তাহার একটি এই যে
হালা স্থা, জন্মা জন্মা, সমস্ত সহেও
লাটের ঠিক তারিখে রাজস্প আদার দিতে
হইবে,না দিতে পারিলে জমীদারী নিলাম

रहेर्द, जांत्र यनि निर्माटम त्राक्टचत वाकि होका ना उद्धे उदय सभीमाद्वत्र अन्याना সম্পত্তি বিক্রেয় হইবে। আত্তবাবুর মতে এই Valuable consideration। তাহার মতে ইহা অতি কঠিন নিয়ম। কিন্তু মুব. भिन क्लिशांत देवक्र, मूल्यत्त्र शक्त, करमन, अभीनाती थान कता, अभीनादीत थाम वत्नावछ, अभीनातीत चल्लानु এ সকলের চেয়েও কি পূর্ব্বাক্ত নিয়ম এত কঠিন ? হইতেও পারে। কেহ কেহ বলিতে পারেন যে'সাবেক আমলে ভ্রমী-मात्रक नवान करम्म कति छ, मात्रिछ, मा হ্য অপমানই করিত। মুদলমানেরা ত টাকা লইতে পারিত না, স্কুতরাং তাহা অপেকা কিন্তীতে কিন্তীতে টাকা দে-ওয়া বড়ই শক্ত। বড়ই Valuable consideration (

আগুবাবু যে আর এক কথা কেন বলেন
নাই তাহা বলিতে পাবি না। ৯০ শালের
চতুর্দশ আইনের নবম দশম একাদশ
ধারার ক্ষমীদারকে বাকী থাজানার দাযে
করেদ করার যে কথা ছিল মেও ত
দশশানা বন্দোবস্তরণ চুক্তির এক অংশ।
১৭৯৪ খালের তিন আইনের ৩ ধারার
তাহা বন্ধ করা হইয়াছে। গ্রবণ্মেট
এইরূপ করেদ করার ক্ষমতা ত্যাগ করার
ফুক্ল ক্ষমীদারের নিকট কি কিছু ক্ষতিপূর্ণ
লইয়াছেন ? লন নাই, তবে গ্রব্মেট
এখন প্রেলার রক্ষার জন্য আইন করি-

[&]quot; আমরা কিতীশবংশাবশীচ্রিতে পড়িয়াছি যে অনেক স্থলে মুসলমানের। ছুই অমীদারের অমীদারী কাড়িয়া কইয়া কুঞ্চনগরের রাঞ্চাকে দিয়াছেন।

তেছেন জমীদারগণ নানা কথা তুলি-তেছেন কেন? তাহার পর আভ্বাব্ footnoteএ লিখিয়াছেন।—

It would be interesting to compute the sum total of other real or personal property sold in the 75 years between 1793 and 1868 t

ইহার উত্তরে আমরা বলিতে পারি, জ্মীদারেরা এই কয়েক বৎসরের মধ্যে নানা উপায়ে যে অর্থসঞ্চয় করিয়াছেন পূর্ব্বোক্ত অংশ তাহার শতাংশের অদ্ধাং-শও নছে। আর এই কয়েক বৎসরের मध्य धायात कि इरेग्राट, समीमादत्रता যাহা লোকসান দিয়াছেন তাহা আইন অমুদারেই দিয়াছেন। কিছু প্রায় তিন কোটা প্রজা তাঁহাদের শাসনের গুণে তাঁহাদের দ্যাধর্মের গুণে জমীর মালিক घृतिया धाय रेव्हाधीन तावड tenant at will क्ट्रेया উठियाटक । " अधिकाः भट्टे লা্ঠী জুতা ও গৃহদাহ ইন্ড্যাদির দারা ও মান্তন মাণ্ট ভিক্ষা গোমস্তার পার্কনি হিসাবানা নজর ইত্যাদি আইনবিক্ত व्यानारयत ८ हाटि मन्त्रं वास हरेबाहा। গবর্ণমেণ্ট এত পুলিষ,দেওয়ালী ও ফৌল-দারী কাছারী স্থাপন করিয়াও ত প্রজার প্রতি জমীদারের অভ্যাচার নিবারণ ক-तिर्छ भारतन नाहे। ध्यन छ स्मीनादत नारमय शामका मकचल इटी कडी; এখনও নানা স্থানে ভাহারা স্বরিমানা

করে রামের ধন ভামকে দের, ভামের ধন হরিকে দের। কিন্তু গরিব প্রশাদিগের জন্য কণা কহেন এমন লোক কোথার ? জমীদারের হুগ্নে চিনির ক্রটি ইইলে তাহা লইয়া চীৎকার করিবার লোক দেশগুদ্ধ মিলিবে কিন্তু গরিব প্রশাস যে পাস্তাভাতে একটু লবণও জ্টিয়া উঠে না তাহা কে দেখিবে! কে তাহাদিগের হুংগনিবারণ করিবে! যাহারা প্রজাদের একমাত্র ভর্মা সেই শিক্ষিত যুবকদলও ক্রমে নানা কারণে জমীদারদিগের দলের সেনাপতি বা অল্লাস হইয়া দিডাইতেছেন।

হে বঙ্গবাদী ছুর্মল নিজীব রায়তবৃন্দ। তোমরা ভর্মা ত্যাগ কর। তোমাদের (कहरे वसू नोरे, ट्लामाम्बत रहेगा कुकथा কর এমন লোক একটিও নাই। ইংরেডী শিক্ষার দেশের যে উন্নতি হইতেছে সে ভোমাদের জন্ত নছে। সে ধনবানের জনা। জানিও, শিক্ষিতলোক জমীদার বা তালুকদারের জনা। কেন না ভাহারা পয়সা বায় করিতে পারে। শিক্ষিতলোক ভোমাদের কেছ নছে। ভোমরা নিজে বৃদ্ধিমান হইতে চেষ্টা কর লিখিতে পড়িতে ও আপন খব বুঝিয়া লইতে তোমরা নিজে আপন সাহায্য করিতে পারিলে ঈশ্বর ভোমাদিগের महाय इहेरवन। ব্রিটিষ গ্রন্মেণ্ট

^{*} रश्चरमत अल्डाहादत्र त्य क्ल श्रमात्र मर्सनाम रहेबाह् लाहात लाहेल्य it would be interesting to compute.

ভোমাদের রক্ষার্থ নানা যত্ন করিয়াও তাঁহারাও সফলপ্রয়ত্ন হইতে পারেন। ভোমাদের রক্ষা করিয়া উঠিতে পারিতে- ভোমরাও বাঁচিয়া যাও নচেৎ ভোমাদের ছেন না, ভোমাদের চকু কর্ণ ফুটলে ভরসা নাই। আশা নাই।

অভিজ্ঞানশকুন্তল।

৫। ইহার অর্থ।

हजूर्व क्षेत्राटव व्यामना त्मशाहित्राहि त्य ছন্মন্ত किছু বেশী तिপুপরবশ, কিন্তু রিপু-পরবর্শ বলিয়া তিনি অধার্শ্মিক নন। তিনি বছন্তীসত্ত্বেও শকুরুলার লোভ मचत्र कतिए भातित्वन न। वर्षे ; किंद ভাই বলিয়া তাঁহার শকুস্তলার প্রতি जामिक यरशब्दाहात्री इताहारतत जामिक নয়। এ কথা পূর্বে ব্রাইয়াছি। এখনও বলি যে রিপুশ্বভ ছমত অসাধারণ চিত্ত-**मः**यमगरकाद्य **मक्**खनाव প্রভৃতি নির্ণয় করিয়। শেষে শক্ষণাকে ष्यिकात कतिवात (हरे। कतित्राहित्नन। व्यथम श्रञ्जाद दमशहेत्राचि दम, मकुछ-লাকে দেখিবামাত্র ছম্মস্তের পরীকা चात्रस इब-- डाहात तिशु धवः धर्म-ভাবের মধ্যে যুদ্ধ উপস্থিত হয়। সে যুদ্ধে कांशांद धर्माञान सत्री इरेदाहिन। धर्माञांद सती हरेता इच्छ এवः मक्छनाटक পৰিত্ৰ পরিণয়স্তে বন্ধন করিয়াছিল। त्म পরিবরের অর্থ-ছবাস্পদ-কামোরত গণেচ্চারীর কর্মবানান-পরিভৃত্তির निविष्ठ क्रिक मध्य नहा । तम शहि-

ণরের অর্থ—জীবনব্যাপী পবিত্র পতি-পত্নীর সম্বন্ধ । কিন্তু সে পবিত্র পরিণয়ের ফল কি হইল †

সে পবিতা পরিণয়ের প্রথম ফল-নারক নারিকার বহুগামর বিচেছদ। পতি-কর্ত্ত অপমানিত হইয়া শকুরলা কশ্য-পাশ্রমে থাকিয়া অনেকবংসর ধরিয়া ভয়ানক যন্ত্রণাভোগ করিয়াছিলেন। পতিশ্রোণা পতিহীনার ন্যায় সকল সুখে खलाश्चलि मिद्रा (कामल क्रमर्ग विषय विष्ट्रमाधि शादन कतिहा अस्टत अस्ट्र দশ্ব হই রাছিলেন। সেহপ্রাণা সেহম্মী সর্বোৎকৃষ্ট মেহের পদার্থ হারাইয়া ভগ-क्षारम मीर्चकाल हाहाकात कतिमाहित्तन। আসমুদ্র ভারতসামাজ্যের রাজ্ঞী অসহায়া 'অনাপার ন্যায় বহুকাল কাদিয়া কাদিয়া काष्ट्रीहर्मन। ठखन्था जनक, शृथि-বীর রাজকুলভিলক ছ্মান্তের প্রতিষ্ঠিত মহাদেবী সর্বলোকোপেক্ষিতা অধ্যত্না কাঙ্গালিনীর ন্যায় ধূলিধুসরিত অঙ্গে याष्ठि दहेवा याष्ट्रिक यिणाहेवाहित्तन। হ্মত্ত শক্ষণার বিচেদে উন্নাদগ্রত।

নিরপরাধা সভী সাধ্বীকে নির্ভাবে নির্ভুবাকো তাড়াইয়া দিয়া ধার্মিক-প্রধান হ্মন্ত অনুভাপে দগ্ধহদয়, জীর্ণ, দীর্ণ, আহারনিজাবর্জিত, আকুলপ্রাণ, শোকবিহ্বল।

সে পবিঅপরিবয়ের বিতীয় ফল-ছায়কনায়িকার আত্মীয় বন্ধুগণের যন্ত্রণা। ্অণমানিত শকুন্তলাকে রাথিয়া গৌতমী, শার্করব প্রভৃতি যখন আশ্রমে ফিরিয়া যান তথন তাঁছারা যে কি বিষম শোক-ভারে ভারাক্রাস্ত হইয়া গিয়াছিলেন তাহা সহজেই বুঝিতে পারা যায়। শকুন্তলা ভাহাদের সকলেরই আদরের বস্তু। আশ্রমপ্রদেশে হুমন্তের অবস্থান কালে শকুস্তলার যে পীড়া হয় ভাহার প্রকৃত কারণ বুঝিতে না পারিয়া সমস্ত আশ্রমবাসী এবং আশ্রমবাসিনী শশবান্ত रहेशा छेठिशाहित्सन । আবার যপন গোত্ৰী প্ৰভৃতি আশ্ৰমে আসিয়া সেই নিদাকণ কথা জ্ঞাপন করিলেন তখন যে পবিত্র ব্রন্ধচিস্তানিমগ্র ব্রন্ধনামপূর্ণ তপদ্যাশ্রম অকিঞিংকর সংগারাশ্রমের ন্যার মোহমুয়ের হাহাকারে পরিপূর্ণ হইয়া উঠিয়াছিল তাহাতে. অমুমাত্র मत्मर इहेट्ड शाद ना। (म कथी ভনিয়া ঋষিকুলপতি কণ্ডের হৃদয়ে কি ভয়ানক আঘাতই লাগিয়াছিল! শকুস্তলা कर्वृत व्याववायू—' कवृत्रा क्वभरउक्छ्-সিতম্। আর প্রিয়খদা এবং অনক্রার ত কণাই নাই। ভাছারা সে কথা ও-নিয়া যে কি ক্রিয়াছিল তাহা ঠিক

করা ছঃগাধা। আবার মেনকা কন্যার নিমিত্ত যারপর নাই কাতর এবং শোকা-তিনি কন্যার হঃখে অস্থির হইয়া হুমন্তের মনের ভাব জানিবার নিমিত্ত সাত্রমতীকে হস্তিনাপুরে পাঠা-रेग्रामिटनम् । **ब्हेंक्र** ए ए एथान শকুম্বলাকে ভানিত এবং ভাল বাসিত সেই তাঁহার নিমিত্ত ব্যাকুল,শোকসম্ভপ্ত। ওদিকে হ্রান্ডের রাজপুরীও শোকনিময়। তাঁহার কর্মচারিগণ ভীত, উৎক্ষিত, শোকাতুর। তাঁহার রাজপুরবাসিনীরাও তদবস্থ। তাঁহার অমুমতিক্রমে চির-প্রচলিত-বমস্তোৎসব বন্ধ হওয়ার হস্তিনা-श्रुद्धत्र त्राक्यांगि (यन अकृष्टि व्यनत्रकृती चछेनात्र ছात्रात्र शाहितमध--- निः नक्, निष्ठक, निदानन !

সে পবিত্র পরিণয়ের তৃতীয় ফল—
রাজার অমঙ্গল। আমরা প্রথম প্রস্তাবে
দেখাইয়াছি যে জ্মন্ত মহা পরীক্ষায়
পড়িয়া রাজকার্য্য ভূলেন নাই। আমরা
বলিয়াছি যে সে পরীক্ষায় ভিনি জয়ী
ছইয়াছিলেন। এখনও আমরা সেই কথা
বলি। কিন্তু আরো একটি কথা আছে।
অঙ্গুরীয় পুনর্দর্শন করিয়া যখন তাঁহার
শকুন্তবার স্থৃতি ফিরিয়া আসিল, তখন
ভূনি ঘোর য়য়ণায় দয় হইতে লাগিলেন।
সে য়য়ণায় তাঁহার স্মাভাবিক মানসিক
অবস্থার যে রকম পরির্ভন হয়, রুদ্ধ
কঞ্কী তাহা বর্ণনা করিয়াছেন। সে
বর্ণনার কিঞ্জিয়াত্র উদ্ধৃত করিলেই
চলিবেঃ—

রমাং বেটি যথা পুরা প্রকৃতিভি র্ন প্রতাহং দেবাতে।

তিনি এখন পৃর্বের মত মৰোহর বস্তুতে প্রীত হন লা এবং অমাত্যবর্গকে প্রতিদিন আহো প্রদর্শন করেন না।

তবেই দেখা যাইতেছে যে ত্মান্তের যন্ত্রণা রাজকার্যাবিভাগেও সম্পূর্ণরূপে कलभूना नयू। অমাত্যগণের প্রতি রাজার আন্তাভাব রাজ্যের পক্ষে মঙ্গলের বিষয় নয়। রাজা এবং অমাতামগুলী উভয়েই ভাল হইলে সে আন্বাভাব व्याक व्यक्तिष्ठेगाथत्न व्यक्तम इत्र वर्षे, किन्न দীর্ঘকালপ্রায়ী হইলে সে আপ্রান্তাব ভাল রাজ্যেও প্রজাবর্গের অমঙ্গলের कावन बहेबा फेटिं। कन्छ: अमाठा-বর্গের প্রতি রাজার আস্থাভাব রাজ্যের भक्त मन वहे जान नय। (म आशा-ভাব ক্ৰামাত্ৰ স্থায়ী হইলেও এককালে দোষশূন্য নয়—খোর অনিউকারী না इटेरम् कियर शतिमार कार्या विमुख्य न जा উৎপন্ন করিয়াই থাকে। কিন্তু ছম্বন্তের যে ওধু অমাতাগণের প্রতি কিছু, আন্থা-ভাব হইরাছিল তা নর। তাঁহার যন্ত্রণা আবো কিছু গুরুতর অনিষ্ট্রদাবন করিয়া-ছিল। তিনি ধর্মবীর এবং চিত্তবীর। যে চিত্তবীর সে কোন অবস্থাতেই চিত্ত धर्म এक्वाद्य हात्रात्र ना। ছুম্মন্ত ঘোর পরীক্ষার পড়িয়া তাঁহার চিত্তধর্ম **क्षा कार्या कार्यामं नार्छ। यदः मिर्ह** भरीकात 'अक्ष विरवहमात छाहात हिख-धर्म विक्रिज्यात्रिय अकाम भावेग्राहिन । কিন্তু সে পরীক্ষার তিনি যে সম্পূর্ণরূপে অবিজ্ঞিত ছিলেন এমন কথা বলা যায় না। যন্ত্রণাবিছ্বলাবস্থায় তিনি যথন রাজকার্যোর বাবস্থা করেন তথন এইরূপ বলিয়াছিলেনঃ—

বেতাবতি মন্বচনাদমাত্যমার্যাপিশুনং ক্রহি চিরপ্রবোধার সম্ভাবিতমস্মাভিরদ্য ধর্মাদনমধ্যাসিত্ং যৎ প্রত্যুবেক্ষিতং পৌরকার্যামার্যোগ তৎ পত্রমারোপ্য দী-রতামিতি।

ৰেত্ৰবন্তি, আমার কথার অমাত্য আর্থ্য পিশুনকে গিরা বল যে অনেক বেলায় জাগিরাছি বলিয়া ধর্মাসনে অধিকৃত্ হ-ইতে আজ আমরা অসমর্থ। তিনি পৌরকার্য্য যাহা দেখিয়াছেন তাহা লিখিরা দিন।

বন্ধনায় ছ্মন্তের রাত্রিতে বিদ্রা হয়
নাই এবং সেই জন্য তিনি আল বিচারাসনে বসিতে অক্ষম। কি গুরুতর কি
লঘুতর সকল কার্যাই তিনি বরং করিয়া
থাকেন। কিন্তু আল তিনি সে প্রণালী
অনুসরণে অলক। আল তিনি নিজের
আসনে প্রধানামাত্যকে বসাইরা আপনি
কেবল গুরুতর কার্যা পর্য্যালোচনা করিতৈছেন। প্রলাবংসল রাজকার্য্যার্রক
হ্মন্ত আল প্রতিনিধি ছারা রাজকার্য্য
করিতে বাধ্য। তবে হ্মন্ত প্রক্ষপ্রধান,
চিত্তসংযমে অমিতবল, রাজধর্মপ্রতিপালনে দৃঢ়ামুরালী। তাই আলিকার
পরীকাতে তিনি সম্পূর্বরূপে প্রাতৃত
নক-ভাই আল প্রক্ষপ্রধান প্রক্রপ্রধান

নই রহিয়াছেন। হ্রাস্ত হয়স্ত না হইলে আজ ভারতের কি হুর্দলা ঘটিত তাহা সহজেই বুঝিতে পারা যায়।

(म्था (शन (य प्रश्च अवः नेक्छनात প্ৰিত্ৰ প্ৰিণ্য হইতে তিনপ্ৰকাৰ অম-লল ঘটিল :- স্থাং তৃত্মন্ত এবং শকুন্তলার •জনঙ্গল ; ত্মন্ত এবং শকুন্তলার আত্মীয়-শ্বনের অনকল; ভারতসামাধ্যের অনুসল। কার্য্য তুইটা লোকের কিন্তু ভাগাৰ ফল কোটি কোটি লোকের স্বারা রোমিও এবং জুলিয়েটে অকুভুতু। अन्दात यना (गरे शकातं इरेग्राहिन। "By the introduction of the Prince in his political power, Shakspeare gives a public interest to the private history of the lovers. A whole community is represented in a state of ardent excitement, by which the public good is endangered: the Prince intercedes between the two contending parties, and thus, what in other respects was a private concern, becomes a matter of public and political importance, affecting the whole constitution of society and the common good." সেক্সীয়রকে ঘটনাকৌশলের দারা এই সভা বুঝা-^{ইতে} হইয়াছে; কালিদাসকে ভাহা করিতে হর নাই, কেন না ভাঁছার নাট- কের প্রণয়ী নিজেই রাছা। তবে তিনি
এই মহাসতা ব্বিতেন বলিয়া ওাঁছার
লামকের প্রণয়ের ইতিহাস এমন প্রধালীতে বলিয়াছেন বে তীহার পাঠক
সেই মহাসতা ব্বিজে পারেন। সে
সতা এই—ব্যক্তিবিশেষের প্রণয় শুধু
দেই ব্যক্তিবিশেষের শুভাশুভের কারণ
নয়; তাহা সমস্ত সমাজের শুভাশুভের
কারণ। ইহাই অভিজ্ঞানশকুয়নের
প্রথম অর্থ।

দেখিলাম যে ছম্মত এবং শকুত্তলার পবিত্র পরিণয় হইতে বিষময় ফল ফলিল। এখন জিজ্ঞাসা এই--বিষময় ফল কেন ফলিল? ইহার প্রথম উত্তর, ত্র্কাসার তুৰ্কাষা শাপ দিয়াছিলেন বলিয়া গুম্বন্ত শকুন্তলাকে ভূলিয়া গেলেন. ভুলিয়া গিয়া তাঁহাকে তাড়াইয়া দিলেন. তাড়াইয়া দিয়া তাঁহাকে অস্থা করি-লেন এবং শেষে আপনিও অসুখী হই-**(नन। किन्छ विका**ना **এই** यে. य শাপ হইতে এত অনিষ্ঠ উৎপন্ন হইল महाकवि दुक्त दम भाभ दम खत्राहेदलन। ইহার উত্তর এই যে, তুর্বাদা শকুস্তলার কাছে অতিথা প্রার্থনা করিয়াছিলেন. °শকুন্তলা সে প্রার্থনা শুনেন নাই। ভাপসাশ্রমে অতিথিসেবা একটি প্রধান কর্ত্তব্য শকুস্তলা তাহা জানিতেন। প্রা-চীন ভারতে তপস্যাশ্রমে সর্বদাই অতি-থির স্মাগ্ম হইত এবং আশ্রমবাসী-দিগের সেই সকল অতিথির সেবা

^{*} Dr. Ulrici র Shakspe are's Dramatic Art নামক গ্রাছের ১৭৮ পৃষ্ঠা।

করিতে হইত। শকুস্তলা প্রাস্থৃতি সেই অভিথিসেবা-ধর্মে দীক্ষিত হইরাছিলেন এবং সে ধর্মের উৎকর্ম ব্ঝিতেন। শকুস্তলা প্রভৃতিব সম্প্র ক্মন্ত উপস্থিত হইবান'ক অনস্থা ব্লিয়:চিলেন—

দাণিং অদিহিবিদেস্বাহেণ। হল। সউন্দলে গছে উড়্যং ফ্ৰমিস্সং অগ্যং উবহুৰ। ইদং পাদেদি মং ভবিস্স্দি।

আপনার ন্যায় অভিথিকাতে তপদার বৃদ্ধি ইইতেছে। ওলো শক্তকে,উটজে যাও এবং ফলযুক্ত অংঘা আনয়ন কর। এই পাধুইবার জল।

আবার যখন শকুস্তলা রংগের ভান করিয়া চলিয়। যাইতে উদ্যুত হন, তখন অনস্য়া তাঁহাকে বলিয়:ছিলেন—

সহি ণ জুত্তং অকিদমকাবং অদিকি-বিদেসং বিসজ্জিক সক্তৰ্দদো গমণম। স্থি, অকুত্সংকার অতিথিকে ত্যাগ করিয়াসচ্ছলের চলিয়াবাওয়াউচিত নয়। মহাকবি দেখাইলেন যে শকুম্বলা षाठिथित्यात कर्जगाठा धनः উरकर्ष সকলই বুঝেন। তার পর তিনি দেখাই লেন যে শকুন্তলা চন্মন্তচিম্বায় নিমগ্র थाकिया अভिणि कितारेशा नित्नन, অভিথি শকুত্বলাকে শাপ দিয়া গেল। हेशात कार्य कि ? हेशात कर्य धहे या প্রের মৃত্র পবিত্র এবং উৎকুষ্ট পদার্থ इडेक, (म यनि मामाजिक कर्छवामाधानत প্রতিবন্ধক হয়, তবে ভাহাকে দুষ্ণীয় विषया वित्तिहमा क्षित्र इहेरवक। শকুত্তলা পতির চিন্তা করিভেছিলেন।

পতিচিত্ত। কিছু অপবিত্র কার্যা নয়। কিন্তু সে চিন্তায় তিনি এতই নিসগ্ন যে অভিথির সমাগ্য ভানিতে পারিলেন না এবং দেই জন। শাপগ্ৰস্ত হই লেন। ইহার শর্থ এই যে হৃদয়ের অতি পাণিত্র ভাবও অপবিত হইয়া পড়ে যথন তাহা মাপুষকে সমাজ ভুলাইয়া দেয়। ইহার. অর্থ এই যে, অগ্রেসনাল পরে আপার - আগ্র অনরের চিন্তা পরে আগন্ব চিন্তা। আপয়ার চিন্তা অতি বিশুদ্ধ, অতি প্রশংসনীয় ইইলেও তদ্বায়দ অপবের চিন্তা বিলুপ হয়, তবে তাহা আত অওদ্ধ, অতি নিল্নীয় হইয়াপড়ে। পবিত্র প্রেম অতি উৎকৃষ্ট বস্তা। কিম্ব নে প্রেম যদি মামুদকে সমাজ ভুলাইয়া দেয়, ভবে ভাষা অভিশয় অপরুষ্ঠ হইয়া পড়ে। এ कथात ऋर्य এই सে প্রণয়ের প্ৰিক্তা বা অপ্ৰিক্তো শুধু প্ৰণয়ী অপবা প্রণারীর নিজের মনের পবিত্রতা বা অপবিত্রতা দারা নির্পাত হয় না। সমাজও তাহার একটা প্রধান নিরপক। শকুত্বল। এই নৈতিক নিয়ম ভঙ্গ করিয়া-हिट्लन विद्या ७ इ इ छ। अ क्रिलन। তিনি পৰিজ্ঞানে পৰিজ্ঞাৰে প্ৰণয় ক্ৰিয়াছিলেন। কিন্তু শুধু তাহাৰ মন প্ৰিত্ৰ হইলে কি হইবে? তিনি প্ৰণয়ে মুগ্ধ হটয়। সুমাজ ভূলিয়া তাঁহার প্রণয়কে পূর্বনাত্রায় পবিত্র করিতে পারেন নাই। তাহার প্রণ্যের পবিত্রতা অসম্পূর্ণছিল। সেই অনা তাহার অদৃটে এত ছঃধ। আর মহাকবি যদি প্রকৃত তব্জাপন

করিয়া থাকেন ভবে যিনি যেখানে প্রণয়ে मृक्ष हरेशा সমাজকে ভুলিবেন ভাহারই जन् हि बहेज्ञभ इःच घिट्य। हेहात একটা व्यर्थ এই त्य, त्रम्भीत नाम त्य হৃদয়প্রাধান এবং হৃদয়েব মোহে বেশী মুগ্ধ হয়, ভাহার হৃদয়কে শিক্ষা দ্বারা কর্ত্তবার •পথে রাণিতে হয়, এবং সমাজদেবা ধ্বং অপরের নিমিত্ত চিস্তা সেই শিকার প্রধান আজ এবং উপকরণ। রমণীব যে অম্বলীনভাব ভাব তৃতীয় প্রস্তাবে বণনা করিয়াছি তাহা আত্মনম্বন্ধে হইলে সমাজবিরোধী। সে ভাব অধিক প্রভায় পাইলে সমাজের অনিইদাধন করে। সেই নিমিত্ত সে ভাবকে শিক্ষা দ্বারা সীমাবদ্ধ করিতে হয়। কিন্তু সে শিকা সহজে লাভ হয় না এবং হইবার নয়। শকুম্বলা জন্মান্ধি পরোপকারত্রতে তাতী থাকিয়াও সে ভাব দমন করিতে অক্ষম रहेशाकित्वन। व्यत्नक हेहेत्राशीय मार्गनितकत्र अ गठ उठ (म.माम्ल्य उपावणाय জীপুরুষের প্রেম আপনাদিগের মধো অধিকপরিমানে আবদ্ধ থাকিয়া সমাজের অনিষ্টকারী হয় এবং সেই নিমিত মামু ষের সে অবস্থায় প্রবেশ করা অফুচিত। আমরা মাতুষকে এ রকম বাবভা দি ना, (कन ना आमत्रा हेट्टिक लागत्वत বাবস্থা মলে করি। কিন্তু আমবা এ কথা খীকার করি যে এখনও মনুষোর মধো দাম্পতা প্রণয় কিছু বেশী পরিমাণে মোহ मुक्षकाती विश्वता मुगास्त्रमञ्जलक किছू অনিষ্টকর। এবং দেইজনাই আমরা

বলি যে দম্পতির প্রণয়কে শিক্ষা ছারা সমাজের অনুক্ল করা কর্ত্তির। তৃত্মস্ত-নিমগ্রা শাপগ্রস্তা শকুস্তলার অর্থপ্র তাই। তাহাই অভিজ্ঞানশকুস্তলের দ্বিতীয় অর্থা অভিজ্ঞানশকুস্তল জগতের একথানি প্র-ধান সমাদ্ভব্বস্থাপক নাটক।

শক্তলার মোহ হর্কাসার শাপের একটী কারণ বটে। কিন্তু দেই কাবণের অস্ক্রনালে আব একটী কাবণ আছে। শক্তুলা সমস্ত বাহ্যজগং ভূলিয়া হ্মপ্তকে ভাবিতেছিলেন বলিয়া হর্কাসা তাঁহাকে শাপ দিলেন যে হ্মপ্ত তোঁমাকে ভূলিয়া যাইবেন। হ্মপ্তও তাঁহাকে ভূলিয়া বিরা তাঁহাকে গ্রহণ কবিতে অস্বীকার কবিলেন। শক্তুলা তাঁহাকে তাঁহাদের বিবাহেব প্রমাণ দেখাইতে তাহিলেন। শুনিযা হ্মপ্ত আহ্লাদিত হটয়া বলিতান

डेनातः कहाः। (तम कथा।

তথন শক্সলা অসুবীয় বাহিব করিতে
গিয়া দেখিলেন যে অসুলিতে অসুবীয়
নাই। গুলার তাঁহাকে চতুবা কুলটা
বলিয়া পরিহাস করিতে লাগিলেন।
কিন্তু অসুবীয় সওয়ায় যদি বিবাহের
অনা প্রমান থাকিত তাহা হইলে ত
কোন গোল হইত না। গুলান্ত নিজেইত
পবে মাধব্যকে বলিয়া ছিলেন— মাধব্য
তুমি কেন আমাকে তথন বিবাহের কথা
মনে ক্রিয়া দেও নাই, এবং প্রথমবৃদ্ধি
মাধ্বা উত্তর করিয়াছিলেন যে আপনি

भक्**खना**त विषय् विषया वागारक (व त्रकम বিলয়ছিলেন তাহাতে আমি এইরূপ বুঝিরাছিলাম যে তাহার সহিত আপনার विवाह इम्र नाहे। अञ्च अमान थाकितन ছ্র্বাসাও শকুন্তলাকে সে রকম শাপ দিতে পারিতেন না এবং দিলেও তাহা কার্য্য-কর হইত না। কিছু সে বিবাহের অন্ত প্রমাণ ছিল না. কেন না সে বিবাহ रगाशास्त्र प्राप्त के इंद्रोशित । रगाशास्त्र সম্পন্ন হইবার কারণ কি? না ছম্ময়ের ত্র্দমনীয় রিপু। ত্রুস্তের ত্র্মনীয় রিপুট ভ্র্মাসার শাপের এবং সেই শাণো-মুত সমস্ত অনিষ্টের অবাস্থর কারণ। কিন্তু সে বিপু অপবিতা নয়। হুন্নন্ত রিপুমত বটে কিছ হুরাচার নন। তিনি শকুম্বলাকে কলঙ্কে ডুবাইবাব নিমিত্র ভাঁছার সহিত মিলনপ্রার্থনা কবেন নাই। তিনি শকুন্তলাকে পত্নী করিয়া-ছিলেন—আসমূদ ভারতরাজাের র জী कतियाहित्सन। किंद क्र्ममनीत दिशुः পরবশ হইয়া তিনি কৰের প্রতাাগমন অপেকা করিতে না পারিয়া গোপনে भक्कारक भन्नीए अटिष्ठित कतिशा-हिट्टन। धवः (महे बनाई आगनि এত কট পাইলেন, শকুমুলাকে এত काष्ट्र (क्लिलिन এवः সমস্ত ভারত-त्राकारक विभम्शक कतिरलन। व्यर्थ এই यে ७४ ७ का छः कतरण विवाह कतिरण विवाह निक दश ना, अधू श्वनद्वत विनगर्क विवाह यान गा। विवाह শামাজিক স্থপত্ঃখের নিয়ন্তা; অতএব

সমাজকে সাকী করিরা, সমাজের সম্মৃতি শইয়া বিবাহ সম্পার করিতে হয়। মমু-বোর হৃদর সকল সময় এক কথা কয় না।

অজ্ঞাতহদয়েবেবং বৈরীভবতি সৌহদম্। (অভিজ্ঞানশকুস্তল, পঞ্মাঙ্ক)

যাহার হৃদ্র অপরিজ্ঞাত তাহাতে প্রীতিবন্ধন এইরূপ বৈরিতায় পরিণ্ড হুইতে পারে।

আরো এক কণা। সমাল নমুষাচবি ত্রের উন্নতির প্রধান কারণ। মনুষ্য চরিত্রে বাহা কিছু ভাল, উৎকৃষ্ট এবং মহং আছে তাহার অধিকাংশই কেবল সমাজ আছে বলিয়া বিকাশ পায় এবং দেপিতে পাওয়া যায়। দ্বিতীয় প্রাপ্তার হুমন্তচরিতোর বিশ্লেষণে আমরা এ কথাব পরিস্বার প্রমাণ পাইয়াছি। দেখিয়াছি যে আত্মেতর ভাবের কাচে আত্মভাবের লয়েই সে চরিত্রেব গৌ-त्रव धवः উৎकर्ष। जागात्मत त्य अवज मानिक भक्ति ध्वः कत्रव्यव श्रवृधि আছে তাহা সমাজ-দেবায় নিযুক্ত না इहेटन পৰিত্ৰতালাভ করে না। স্থাজ-সেবার নিযুক্ত হইলেই সে সকল শক্তি **এवः अवृद्धि महदमः युक्त इत्र ।** नरहर পশুপ্রত্তির ন্যায় হেয় হইয়া থাকে। দাম্পতাসমঙ্কও সমাজদেবায় উৎস্গী-কৃত না হুইলে হীনতা এবং অপবিত্তা দোৰে দ্ধিত হয়, কেন না তাহা ২ইলে তাহা পশুপক্ষীর মিলন অপেকা বড় धक्षे। छेरक्षे दह मा। সমाबरे **छे**न्छ-

নীতির প্রাক্ত উৎস এবং উদ্দীপক।

এবং সেই জনাই সমাজকে সাক্ষী করিবা,
সমাজের সম্মতি লইবা, সমাজের মঙ্গণের

নিমিত্ত জীপুরুষের বিবাহস্থ্যে আবদ্ধ

হওয়া উচিত। ছল্লস্ত সে প্রণালীতে

শক্ষলার পাণি গ্রহণ না করিয়া মহা
গাপ করিলেন এবং মহা অনিট ঘটাই
গলন। ইহাই অভিজ্ঞানশক্ষণের তৃতীয়

অর্থ। অভিজ্ঞানশক্ষণে সমাজভব্বের

একখানি প্রাণ্য কাব্য।

किन्न प्रश्नेष्ठ वि हिन्देन्तरम प्रक्रम হইয়া মহাপাপে পতিত হইলেন, ইহা কি ভয়ানক কথা ! মহাকৰি যে প্ৰাণা-নীতে এই মহাপাপের উৎপত্তি ব্যা-য়াছেন তাহা বিবেচনা ক'রলে আমরা সমস্ত মহুদাকাতির নিমিত্ত ভীত 💩 ছঃথিত হই। ছয়স্ত সকল গুণের আধার। তিনি রাজা হটয়া, সমগ্রভারতের রতু-ভাগুরের অধীশ্ব হুইয়াও বিলাসবিধেষী। दिनि মনে कहिरल निवादांक विनाम-সাগবে মগ্ন হট্যা পাকিতে পাবেন এবং विविद्यानानीटक विनामवामना भून क-রিতে পারেন। কিন্তু তিনি তাহা করেন না। তিনি পুরুষ প্রধানের নায়ে निवात्राजि श्रक्तत्वाशत्याभी कार्या नियुक्त । उँ। हात्र व्याध्याम श्राम श्रा वाक्षक। विभाग धसूर्वाग्हर्छ मधाङ् विविव विभागक्षकाती कित्रनदाणि कुछ

করিয়া পর্কতশৃল হইতে পর্কতশৃলাভারে বিচরণ করিতেই তাঁহার আমোদ। রাজকার্য্যে তাঁহার প্রগাঢ় অমুরাগ, গভীর অভিনিৰেশ, অপরিমের শ্রমশীলতা। বাছবলে তিনি অধিতীয়; শত্রুদমনে কিপ্রহন্ত, আগ্রহচিত্ত, অসীমসাহস। তিনি মাতুষ, আত্মদেবার অনুরক্ত। কিছ সমাজদেবার্থ আত্মবিসর্জন আব-খুক হইলে তিনি তাহা অবলীলাক্রমে করিতে পারেন। তিনি মানুষ, মানু-ষেব নাায় মোহমুগ্ধ হন, কিন্তু আবশাক रहेटल हे अस कालिए कर गांत्र गिरमध्यरधा মোহজাল কাটিয়া খণ্ডখণ্ড কবিতে পাবেন। তিনি গুরুজনসম্ভ্রমকারী কিন্তু স্বাধীন চিন্তাশীল। তিনি সংগ্রুতির প্রশন্ত আধার-বিগরের বন্ধু, দরি-দ্ৰেব প্ৰতিপালক, সকলেরই হিটেমী। তিনি আত্মশাসনে বীরশ্রেষ্ঠ। শাস্ত্রে স্থপণ্ডিত, চিত্রবিদ্যার স্থানিপুণ, অন্নবিদ্যায় স্থাক । তিনি পুরুষছের প্রতিমা—শক্তির জীবস্ত মূর্তি। তিনিও,বিপুর শাসনে খলিতপদ। রিপু কি ভয়ানক বস্তু! রিপুর কি অসীম शक्ति। दिश्रमवा कि विषय, कि मृश्गीय কার্যা। এ কথা অভিজ্ঞানশকুম্বল ভিন্ন আর কোথাও লেখে না। সেকাপীয়রের রোমিও এবং জুলিয়েটেও এ তত্ত্ব দেখিতে পাই না। • রোমিও এবং জুলিয়েটে বাছ

শ সমাজের মক্লের নিমিত্ত উদাহ—এ কথা বোধ হয় উনবিংশ শতান্দীর বলীয় সমাজসংস্কারক-নিন্দিত হিন্দুশাল্ল ভিন্ন আর কোথাও লেপে না। বাইবেলের ত কথাই নাই—ভাহাতে লেখে যে বিবাহ না করিতে পারিলেই ভাল হয়।

অগৎ রিপুদেবার প্রতিকূল বলিয়া রিপু সেবা অনিটের চেতৃ হইল। অভিজ্ঞান শকুন্তলে অন্তর্জগং রিপুদেবার প্রতিকৃগ থাকাতেও রিপুগেবা অনিষ্টের হেতৃ হইল। বাহালগৎ পরিবর্ত্তনশীল। অত-এব রোমিও এবং জুলিয়েটের এমন অর্থ হইতে পারে যে বাহ্যগ্র অনুকূল থা किटन तिश्रमिवा पृष्ठीय नय। উন্নত-নৈতিক-নিয়ম-শাসিত অংধাংগ্রিক छग् अপরিবর্তনীয়। অপরিবর্তনীয়ের শশ্বের যাহা দ্বণীয ভাহা সকল সময়েই দৃষ্ণীয়। বাহাশক্তি প্রবশতম হইলেও তুর্বল। কিন্তু আধ্যাত্মিক শক্তি সকল সময়ে এবং সকল অবস্থাতেই প্রবল। মানব প্রধান মতু বলিয়াছেন--অরক্ষিতা গৃহে রুদ্ধাঃ পুরুবৈরাপ্ত কারিভিঃ। আত্মানমাত্মনা যাস্ত রক্ষেয়ন্তা: সুর িং এ।:। এবং কবিগুরু বাল্মীকি বলিয়াছেন:--न गृहानि न बञ्जानि न आकातास्टिविद्याः। নে দৃশারাজ সংকারা বৃত্তমাবরণ স্নির:। অভ্রব বাহাশক্তি অভিক্রম করিয়। যে রিপু কার্যা করে ভাহাকে প্রাবল विविद्या (वाध इब मस्म्ह नाहे। कि ষ্মাধ্যাত্মিক শক্তি অভিক্রম করিয়া যে রিপু কার্যা করে তাহ কে প্রবর্তম অ (भक्ता व्यवन वित्रा (वास इग्र। ७३ निगिछहे (तःगि ३ वरः क्लिए ४८ हे हि-হাদ পাঠ করিলে আমরা ৩% দেই नामकनामिकात संना छः थिछ इहे। कि ख ত্মন্তের 'ইতিহাস পাঠ করিলে আমরা সমস্ত মানবজাতির নিমিত্ত ভাবিত হই।

যণন দেখি যে রোমিওতে প্রাণয় এবং রিপুনাত্তা বই আর কিছুই নাই তখন गत्न इत्र (य ष्यात्र (कान मानितक भक्ति থাকিলে রোমিওব ন্যায় রিপুন্মত হইয়া সংসারের তঃপভাগী হইতে হয় না। किंद्र यथन (पश्चि (य इच्च क्ष ममक मान-সিক শক্তির আধার হইয়াও রিপুরান্ততা-ৰশত বিষম পরীক্ষায় নিকিপ্তা, তপন-শুপু চুমান্ত কেন সম্ভ মানবলাভির निशिष्ठ हिश्विष्ठ इहे। धिमिटक मानत-জাতিৰ ইতিহাস এবং অবস্থা পাৰ্যা! লোচনা করিলেও ত সেই চিম্বার উদয় इत्। मल्यामारक का कि अ तिश्र श्राम. विश्व भागरम मीडिङ्केट । भागाना (ला-কের ত কথাই নাই। যে স্কল মহা-পুক্ষ ভগতে বিদা।, বুদ্ধি, উল্ভনীতি, উন্নত চিত্তসংব্য-শক্তি, বীরত্ব এবং উদার । । আদশ্ররণ ভাহার।ও রিপুর শাসনে হীনগোৰব। একটি মাত্র নাম क तिर्लाई शांठक व कथात अर्थ द्विरदन। সে নাম ভাকেবরে সা। আক্রবর সা অংশৰ গুণে ভূষিত ছিলেন; কিছু ঠা इ। व 'न अरवारकत' कथा (वान इस मकः (बड़े **चत्रड चार्ट्स: मार्न** संक-८ अष्ठे 'অগন্ত কোম্বও বলেন যে মারুংধ্ব বুভুকাপেবৃতি ছাড়িয়া দিলে, ভাহাৰ রতিপ্রবৃত্তি অন্যান্য সকল প্রবৃতিব कारशका बनवडी बनिया वाध हा। किञ्च गानवज्ञाण्ति এই गानमिक धनः ঐতিহাসিক তত্ত্ব সেকাণীয়রের বোমিও वार कृतित्यटि भाष्या यास ना, कान

দাসের অভিজ্ঞানশকুস্তলে পাওয়া যায়।
ফলতঃ অভিজ্ঞানশকুস্তল এই ত্রেবই
দ্শাকাবা। ইহাই অভিজ্ঞানশকুপ্তলের
চতুর্গ অর্থ।

অভিজ্ঞানশকুষ্কলের প্রায়ে সণস্ভ বৃ-विद्या (मेश इंडेल। किन्द এथन ९ किंडू , দেখিতে বাকি আছে। মহাকবি ছল্লন্ত ্এবং শকুন্তলার চরিত্র যে ভাবে চিত্রিত ক্রিয়াছেন,ভাহা বিবেচনা ক্রিলে স্পষ্টই বোধ হয় যে, ছন্নন্ত এবং শকুন্তলা পুরুষ এবং প্রকৃতির প্রতিকৃতি। পুরুষের অর্থ – -জগতের স্কা, অনপলাপা, অপরিবর্ত্ত-নীয় উপাদান; প্রাকৃতির অর্থ—জগতের সুল, অপলাপা, পরিবর্ত্তনশীল উপা প্রথম এবং দিতীয় প্রস্তাবে আমরা হ্মন্ত-চরিত্রের যে বাাখ্যা করি-য়াছি, তাহার একটি মর্ম্ম এই যে, ত্মস্ত জনপ্রধান এবং তীহার মনের এমন একটি ভাব আছে যে, তিনি নানাবিধ অবৃহায় পড়িয়াও সেই ভাবটি রকা করেন। তিনি যথনি কোন মোছে অভিভূত হইতেছেন, তথনি আমর। দেশি যে, ভিনি সেই মোহ কাট।ইয়া তাহার পৌরুষভাব ধারণ করিতেছেন। **परे मुना मिश्रिश है** त्वांत इम्र ত:হাতে এমন একটি ভাব আছে যাহা অপরিবর্তনীয় এবং অনপলাপ্য। শকুন্তলাতে আমরা সে রক্ম কোন ভাব দেখিতে পাই না। তিনি ভিন্ন ভিন অবস্থায় ভিন ভিন ভাব করেন; কিন্তু যখন ভিন্ন ভিন্ন ভাবে

অভিভূত, তথন তাঁহাকে চ্লাস্তের ন্যায় कान धक्षि निर्मिष्ठ डाटनत मिटक थान-মান দেখিতে পাই না। যেন ভাঁচাতে কোন অনপলাপা, অপরিবর্ত্তনীয় উপা-দান নাই। অধিকন্ত, তৃতীয় প্রস্তাবে भक्षणा-हित्राचा नाथा वित्वहना क-রিলে বৃঝিতে পারা যায় যে, শকুন্তলার মন concrete नवक, তুমাছের মন abstract প্রিয়; শকুন্তলার হাদয় জড়জগৎ-সাপেক্ষ, ত্মন্তের হৃদয় ভাহার বিপরীত। এই এক কথা। আবার দেখি যে, পবিত্র তপ্দ্যাশ্রমে রিপুদেবারূপ জড়জগতের কার্যা হইতেছে; ত্রন্ধনিষ্ঠ, ত্রন্ধাত্মক ঋষিক্লপতি কণু শকুন্তলাকে সংসারা-थारा (श्रद्रण क्रिडिट्स्न; अवः (प्रद-তুলা কশাপ হ্মন্ত এবং শকুন্তলাকে দম্পতিরপৈ পুনর্মিলিত দেখিয়া আহলা দিত চিত্তে আশীর্কাদ করিতেছেন। এই मक्न विरवहना कतिल, त्वाध इम्र त्य, ত্মস্ত এবং শক্স্তলা পুরুষ এবং প্রকৃতির দৃশামান মৃর্তি। আবার কুমারসম্ভব প-ড়িয়া আমরা জানি যে কালিদাস সাঙ্খা-মতাবলম্বী ছিলেন, এবং কুমারসম্ভবে সাখ্যাদর্শনের পুরুষ এবং আধ্যাত্মিক মিলন চিত্রিত করিয়াছেন। **এবং সেই কালিদাস গুল্মস্তের মুখ দিয়া এইরূপ বলাইয়াছেন:**—

অদ্যাপি নৃনং হরকোপবছিল ভারি জলভোটার ইবাস্থাশৌ। ওমনাথা মন্মথ মহিধানাং। ভাষাবশেষঃ কথমের মুক্ষঃ। বোধ হয় আজিও হরকোপানল স্মুদ্রে বাড়বানলের ন্যার নিশ্চরই তোনতে জনিতেছে। নচেৎ, হৈ ম্যাণ, তুমি জ্পাবশিষ্ট হইলেও বিরহীদিগের পক্ষে কেন এরপ উষ্ণ হও।

এই সকল কারণে স্পষ্টই বোধ হয় रि क्मातमञ्चर रियम शूक्ष धरः शकः তির মিলন চিত্রিত হইয়াছে, অভিজ্ঞান শকুন্তনেও তাই হইয়াছে। ভবে কুমাবসন্তবের এবং অভিজ্ঞান-শকুন্তলের পুরুষ-প্রকৃতির মিলনের প্রভেদ এই যে, কুনাবসম্ভবে পুরুষ এবং প্রকৃতির মিলন আধাাত্মিক ভাবে মিলন, অভিজ্ঞান-শকুন্তলে পুরুষ এবং প্রকৃতির মিলন সাংগারিক ভাবে মিলন। এই প্রভেদ-বশতঃ কুমারসম্ভবে মদন ভস্মীভূত र्हेन, विख्छान-भक्षाल मन्ने खरी इहेत। हेहात कार्य এहे (य, अधि डर्ग-স্বীর ন্যায় আধাান্মিকভাবে জীবন্যাত্রা निर्काइ करिएंड इटेल श्रकुंडिएक निर्मेष्ठ করিতে হয়, কিন্তু সংসারাশ্রমে থাকিয়া সংসারধর্ম পালন করিতে হইলে প্লক্ষতির প্রভাব স্বীকার করিতে হয়। **আ**ধাা-ত্মিক জগতে পুরুষেরম্বারা প্রাকৃতি শাসিত হয়; সংসারাশ্রমে প্রকৃতিরহারা পুরুষ मानिक हरा। · এই প্রভেদ ব্রাটবার क्षना মহাকবি শকুত্তলাকে লইরা তুর (सत्र शक्ष्यणन (क्षाहिलन, जवः वस्रः মতী, হংসপদিকা, প্রভৃতি রাজ্ঞীদিগকে ত্মত্তের ইতিহাসের মধ্যে আনরন করিয়া পঠিককে 'বুঝাইলেন ষে, অগতে প্রক্র-

তির বলে জীপুকবের বোগদাধন হয়
বলিরা ত্মন্ত শুধু শকুন্তলাকে লইরা
বিপদ্প্রন্ত নন, সারো অনেক রমণী লইরা
বিপদ্প্রন্ত। এবং জগতের অবস্থা পর্যা-লোচনা করিলে বুঝিতে পারা যার যে
মন্ত্র্যানাত্রই ত্মন্তের নাার বিপদ্গন্ত।
ইহাই অভিজ্ঞানশকুন্তলের পঞ্চম কর্থ।

কিছ প্রকৃতির বলেই জীপুরুষের . भिलम यपि ऋष्टित नियम इहेल, ভবে সে নিয়মসস্তাবনীয় বিষময় ফল নিবারণের উপায় কি? মহাকবি তাহাও বলিয়া দিয়াছেন। হ্বাসার শাপেরছারা ছ্ম-স্তকে মহাপধীক্ষায় মিকেপ করিয়া এবং সেই পরীক্ষায় ভ্রমন্তকে জয়ী করিয়া महाकवि (मधारेशाट्डन (य मसूरामात्तत শক্তি অসীম এবং অপরিমেয়, প্রকৃতি यडहे वलवडी इडेक, मञ्राह्म मन उन-পেকা বলবান্। মাকুষ চেটা করিলে **উक्ट नित्रम मञ्चादनीय दिवसय क्ल नि**रा-রণ করিতে সক্ষম। কিছু সে চেষ্টা অরা-ब्राटम ऋमिश्व इहेबाब नय। श्रवाहि वर् ভয়ানক শক্তি। সে শক্তি দমন করিতে इहेल माञ्चरक रमवाञ्चरतत यूरकत नात विभर्ते छ युष क्रिट इहेरव। क्रिल 'তবে সংসারাশ্রম কুখ, শান্তি এবং পুণোর আশ্রম হইবে। मःमात्राध्य (म द्रवहत्व একটি ভয়ানক রণস্প। প্রত্যেক মমুষাকে বীরপ্রধান হইতে **हहेर्द, नरहर भाभ-ऋधित्र जवः यञ्जनात्र** হাহাকাররবে রবছল পরিপূর্ণ হইরা

[&]quot; विक्रमवायूत्र विवदुरक्छ ८मई त्रव धना वात्र ना ?

উঠিবে। আরো একটি কথা আছে। চুত্মন্তের ইতিহাদে দপ্রমাণ ছইতেছে যে মানসিকশক্তি এবং ঐক্রিমিকশক্তি ছইটী भुगक् **এवः श्वाधीन भ**षार्थ, माननिकशक्त প্রবল হইলেই যে ঐক্রিয়িকশক্তি দমিত ছইবে এমন ভির্নিশ্চয়তা নাই। অত-এব ঐ शिक्षितिक भक्ति मर्भन कतिए इहेल শুধু মানসিকশক্তির উপর নির্ভর করিলে সকল সময়ে অভিল্যিত ফল্লাভ নাও ছইতে পারে। সেইজনা মানসিকশক্তির সহিত সমাজ-শক্তি যোগ করা আবশ্যক। অথাৎ সমাজের গঠনপ্রণালী এবং সামা-জিক ৰিয়ম এমন হওয়া চাই বে সেই প্রণালী এবং নিয়মের বলে লোকের ঠি জিয়িক শক্তি প্রশায় নাপাইয়া দমিত অভিজানশকু দলে চটরা আইসে। কালিদাস এই মত স্পটাক্ষরে ক্রিয়াছেন। শকুস্তলার হারা তিনি व्यादेशास्त्र (य गाक्स विवाद म्यनीय; এবং বস্মতী, হংসপদিকা প্রভৃতি রাজী-গণের শারা তিনি বুঝাইয়াছেন যে বছবিবাছ বিষম অনিইকারী। তিনি (मथाहेशास्त्रत (य डेक्ट्रश्राकात विवाहरे প্রকৃতি বা ঐক্তিয়িক শক্তির ফল এবং ঐদিয়িকশক্তির প্রতিপোষক। ঙিনি ' অভিজ্ঞানশকুস্তলে এই শিক্ষা দিয়াছেন যে ঐক্তিরিকশক্তি দমন করিতে হইলে ওধু मानिमक मक्ति श्राद्यांश कदित्व हिन्दि না, সমান্তকে সুদংক্ত এবং নীতিপ্রবণ क्रिया সমাজন্ত মহা শক্তিও প্রয়োগ ক্রিতে হইবে ৷ অভিজ্ঞানশকুস্থল মান-

দিকশক্তি এবং সমাজশক্তির মহাকাব্য। ইহাই অভিজ্ঞানশকুস্তলের বঠ অর্থ।

উপরে যাহা বলা হইল, তাহার মর্ম্ম এই যে, অভিজ্ঞানশকুত্তল ভারতের একটি প্রধান দার্শনিক তত্ত্বের দৃশ্যকাব্য। (वनायनर्गास वाल (य, शूक्यरे महा এবং সং, প্রকৃতি অথবা জড়জগং মিখ্যা এবং অ-সং--পুরুষই পদার্থ, প্রকৃতি ছায়ামাত্র। সাঙ্খামতাবলম্বী কালিদাণ অভিজানশকুস্তলে দেখাইয়াছেন যে, পুরুষও যেমন সতা, প্রকৃতিও তেমনি সতা; পুরুষও যেমন সং, প্রকৃতিও তেমনি সং, পুরুষও বেমন পদার্থ. প্রকৃতিও তেমনি পদার্থ। অভিজ্ঞান भक्षान थाकृष्ठि एय तकम छेड्डनवर्श চিত্রিত হইরাছে, যে রক্ম প্রভাবশালী मुष्ठे दम, य त्रकम श्राधीन-कामाविभिष्ठे **(मथा यात्र जाहाटज निक्ठब्रहे ८वा**ध हव যে মহাকবির মতে, অন্তিত্ব এবং প্রভাব সম্বন্ধে, প্রকৃতি পুরুষের সমকক্ষ পদার্থ —ছায়া বলিয়া উড়াইয়া দিবার জিনিদ নয়। 🕰 ফুতি যে ছায়া নয়, প্রকৃতির र्य वक्षे याधीन,वक्षे महाअज्ञावनाती. একটা বিষম সত্য-অস্তিত্ব আছে, অভি-জানশকুস্তলে তাহা উজ্জলতম অকরে লেখা আছে। সেই মহাতত্ত্ব যেন অভিজ্ঞানশকুম্বলের প্রাণ। ष्ठां अध्यान विकास का अध्यान विकास का व पर्नत । देशहे अख्ळान**मक्**खलत वर्श-তবের চরমসীমা। এত অর্থ আর (कान काटका करव रक रमिश्राटक ?

চন্দ্রগুপ্তের সংক্ষিপ্ত জীবনী।

आर्था। वर्ष मगधनास स्य सनाम ছিল বৈদিক সময়ে তাহাকে কীকট বলিত। বিখা। ভরাসয় নৃপতি মগধ-নেশে নিজ হ'জাভাপন করেন। তাঁহার সময় হটভেই এট দেশ মগ্ধন'মে পরি 6 छ। भगरभद काथुनाचन नाम दनहान জ্বাসন্ধ য্যাতিপুল পুরুর বংশেৎপর এবং মগধবংশীয় মহাবল পরাত্রান্ত ভূগালগণের আদিপুক্ষ। গয়ার পূর্কভিত রাজগৃহে তাঁহার রাজধানী ছিল। তিনি পাওবদিগের সমসাময়িক নৃপতি এবং ভীমের সহিত দক্ষুজ নিহত হয়েন। বারানসী নগরীতে खदामक (य क्याउट्छ निर्माण कविया-ছিলেন; মুস্ল্মানেবা ভাহা ভাগিয়া কেলিয়াছে। দাবিংশতিজন নৃপতি জরা-সন্দের সিংহাসনে রাজত্ব করেন। বিষ্ণু-পুরাণের মতে মগধবংশের স্থিতি সহস্র বংসর পর্যান্ত নিরূপিত আছে, অর্থাং এই দ্বাবিংশতিজন ভূপাল একসহস্রবংসর মুগ্ধসিংহাসন অধিকার করিয়াছিলেন। শেষ নৃপতি রিপ্ঞর স্নীক নামে তাঁহার ত্রাত্ম। সচিবের হস্তে নিহত হন। রাজালুৰ স্থনীক ভাঁহার পুত্র প্রদোতিকে মগধসিংহাদনে প্রভিষ্ঠিত করেন। ইইার পরে পঞ্চদশব্দন মহীপতি মগধরাকো देई।रमत्र त्राज्यकान রাজত্ব করেন। বিষ্ণুরাণের মতে চারিশত নবতি বং

সর। মহারাজ মহানক্ষী ইহাঁদিগের
পঞ্চদশতম। ইহাঁর মহাপদ্ম নামে এক
তনর জ্যো। এই মহাপদ্মই ইতিহাসে
নক্ষনামে প্রোথিত হইরাছেন। মহাপদ্মনন্দ শ্রাগর্ভ সমুভূত ছিলেন্। ইহাঁর ক্রাছেন। কহা বিদিত
হইরাছিল। কেহই তাহার শাসন উর্ভিরন করিতে সমর্থ হইত না। যদাপি
ইনি শ্রার গর্ভে জ্যারাছিলেন, তথাপি
তাহার সামাজিক প্রতিপত্তি হির ছিল।
মহাপদ্মনন্দের নব পুত্র জ্যায়ছিল।
এতিছিল তাহার ওরসে মুরানামী দাসীক
গর্ভে চন্দ্রগরের মার এক পুত্র হইরাছিল। এই চন্দ্রগরের সংক্ষিপ্ত জীবনী
আমরা এ প্রতাবে সক্ষলিত করিব।

নন্দের পরলোকগমনান্তর তাঁহার নব প্রেরা রাজা অধিকার করিলেন। তাঁহারা চক্রপ্তথকে উপযুক্ত বৃত্তি দিতে চাহিলেন, কিন্তু রাজ্যের অংশ দিতে অসম্মত হইলেন। চক্রপ্তথ তাহা গ্রহণ করিলেন না বলিয়া তাঁহারা তাঁহাকে মারিবার উপক্রম করেন। প্রাণভয়ে ভাত হইয়া চক্রপ্তথ পঞ্চনদ্প্রদেশে পলারন করেন। তথায় তক্ষণীলানিবামী চাণকাপতিতের সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হয়। চাণকোর সহিত তাঁহার যেদিন প্রথম আলাপ হয়, সেদিন তিনি দেখিলন বে, চাণকা তক্রসেচনপূর্কক কতক

গুলি কুশাস্কুরের মৃলোচ্ছেদ করিতেছেন এবং তাঁহাকে আপনার কার্যোপযোগী ব্যক্তি ন্তির করিয়া তাঁহার সহিত মিলিত হইলেন। চাণক্য অতিশয় বৃদ্ধিনান্ এবং রাজনীতিশান্তে সমাক্ বৃহ্পর ছিলেন। এতাদৃশ সহায়প্রাপ্ত হইয়া চক্রপ্রপ্র মগধে প্রত্যাগননের উদ্যোগ করিলেন।

शीमामनीय देखिशमान्य कवा वालन (य. हक्क छन् यथन भक्क नम् अस्म कि লেন, তথন মহাবীর আলেক্জাণার ভারতবর্ষ আক্রমণ করেন, এবং বিপাশা-নদীভীরে শিবিরসয়িরেশ करवन । हक् छश्च बादनक्षा छोदत्व दमनानिद्वरभ প্রবেশ করিয়া আলেক্লাডারেব সহিত সাকাং করিয়াভিলেন। চন্দ্রপ্রের বাচালতা ও স্বাধীনভাবে বাক্যপ্রয়োগ হেতু সেকল্ব ভাঁগার উপর এরণ কুন্ধ इटेग्नाडिटलन (य, जिनि शनामनवार) आध्यवका मन्नावन ना कवित्त, निक्ष তাঁহাকে মারিয়া ফেলিভেন। পবে তিনি কুত্মপুরে পলায়ন করেন, তথায় নবনন্দ নরপ্রিগণ একতা মিলিত হইয়া বাজহ করিতেছিলেন। তাঁহাদিংগর সময়ে রাজগৃহ ছইতে রাজধানী ভানাতঃ রিত হটয়া কুন্তমপুর বা পাটলিপত্রে শংস্থাপিত হয়। কথন যে স্থান:স্থিত হইয়াছিল, তাহা আমরা জ্ঞাত নতি। নন্দনরপতিগণ প্রকারঞ্সদারা প্রসাবগের ^{পরম} অমুরাগভাজন হটয়া উঠিলেন। রাক্ষস নামে অংশেক নীতিজ আক্ষণ ইহাঁদিগের অতিপ্রাচীন স্চিব ছিলেন। রাক্ষ্যের অক্তিম স্থামিভক্তি এবং রাজ্যেব হিতচিস্তনহেতু স্ক্ষেই তাঁহার প্রাণ্যা করিত।

একদা চাণকা রাজবাটীতে কোন কার্য্যোপলকে নিমন্ত্রিত হইয়াছিলেন। তথায় কোন কারণবশতঃ ভিনি নদ-নুপতিগণকর্ত্তক অপমানিত এবং সভা হইতে বহিস্কৃত হয়েন। এই নিশারণ অবমাননা জনা তিনি নক্ষরণতিদিগের ধ্বংস সর্ক্রমফে প্রতিজ্ঞাক্রেন। প্রে মে প্রতিজ্ঞা রক্ষা হইয়াছিল। চাণ্ক্যের गएना उ वृक्षिकोनाल हलाखन निक ম্রাত্রগণকে উপাংশুনিহত করেন এবং সিংহাসনে আক্ত ইইয়া চাণ্কাকে নিজের মন্ত্রিছে ববণ কবিলেন। তংপারে উপ্রশানামক একজন নলপুত্রদিপের পক্ষীর রাজা চল্ল গুপের বিনাশের উপায় কর্মা কবিলে, তিনি নেপালবালা হইতে माहाया आर्थना करतन এवः উত্তাপনাকে পরাজিত কবিয়া সিংহাসনে দুড়তররূপে गमामीन काबन।(১) এ निषद बागदा আমাদিণের মতামত প্রকাশিত কবিব

এ দিকে অনাভাবাকণ অচফে চাপ্রাক্তি নক্পতিগণের সম্চেছ্দ
সক্ষান করিবান্থর হইতে বহিগতিহইয়া
মল্যকেতৃনামক জনৈক পার্কাহীয় রাজার
সহিত মিলিত হইলেন। ইহার সহিত

নিলিত হইয়া চক্রগুপ্তের অনিইদাধনে প্রবৃত্ত হইলেন এবং মলয়কেতৃকে কুস্থম-পুর আক্রমণ করিতে বলিলেন। মলয়-**क्ष्रिम्मात्र नन्दर्भा** शाहेरवन विश्वा আক্রমণের উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। রাক্ষসের মন্ত্রণাকৌশলে কুলুতদেশের অধিপতি চিত্রবর্মা, মলয়দেশের রাজ। সিংহনাদ, কাশ্মীরাধিপ পুষরাক্ষ, সিকু-দেশভূপাল সিন্ধুদেন এবং বছতুরঙ্গ সৈন্য-শালী পারসীকপতি মেঘাক্ষ প্রভৃতি মেচ্ছরাজ্বগণ মলয়কেতুর সহায় হইল। অন্যান্য পার্থিবগণও মলয়কেতুর পৃষ্ঠ-পোষকভা করিতে স্বীকার করিল। ভদ্ৰট, পুৰুষদত্ত, হিঙ্গুরাত, বলগুপু, রাজদেন, ভাওরায়ণ, রোহিতাক, বিছয়-বর্মা প্রভৃতি চক্রগুপ্তেব সংহাথায়ী প্রধানপুক্ষগণ মলয়কেতৃর সভিত যোগ निन। क्यूमपुरत देख**बरा**खांत कना থশ, মাগধ, চেদি ও হুনদৈনাগণ সমাগত হইতে লাগিল। পান্ধার ও যবনভূপাল গণ এবং শকভূপতিগণ সঞ্জিত হইতে সত্ত্রই কুস্থমপুর অবরোধ করিতে মলয়কেতু স্বলৈন্য গমন করি-लान वदः मिन मिन नगरतत निक्रे वर्खी इहेटि नागितन। मर्खबरे छेश्माइ छ षाधावमात्र मृष्टे इटेट्ड नाशिल। मक्टलहे ভাবিল চক্ত গুপুর আর রক্ষা নাই। অমাতারাক্ষস কেবল এই বুদ্ধবিগ্রহের **च्यामा ना थाकिया हता** श्रद्धित विनारभत निगित वर्क विषयमी कना। शाशुरन निरद्धािक कतिरलन, এবং यञ्जनिर्धान,

বিষ্প্রদান প্রভৃতি কার্য্যে কয়েকজন প্রণিধি প্রেরণ করিলেন এবং জন্যান্য व्यत्नक नीजिरको भन श्राद्याश कतिरनन। অমাতারাক্ষ্মের এই স্কল কৌশল-(पिथा नी जिल्ला जानका जी ज हरेतन न না, ক্রমে তাহা অন্তণা করিতে আরম্ভ করিলেন। চাণক্য প্রথমত: নিজ আজ্ঞাবহ অমুচরগণকে এবং কার্মানিপুণ্ চরদিগকে মলয়কেতু এবং রাক্ষদের নিকটে দাসত্ব স্থীকার করিতে প্রেরণ করিলেন। তাহারা স্থরেই উভয়েরই অতাম্ভ বিশ্বস্ত ভূতা হইয়া উঠিল। অমাতা রাক্ষস তাহাদিগের হারা যে যে কার্যা করিতেন,চাণকা তৎসমস্ত জানিতে পারিতেন; অমাতারাক্ষণ কিছুমাত্র বুঝিতে পারেন নাই, যে ভাঁচ্র সেবকণর্গ চাণকোর লোক এবং ভাঁহার সর্বাশ করিতে উদ্ভাক্ত। কোন বাক্তি চন্দ্রগুপের পক্ষ এবং কোন্ বাক্তি বিপক্ষ, ভাহা বিশেষক্ষপে জ্ঞাত হইবার নিমিত্ত চাণকা নানাভাষাকুশল চরসকল নিযুক্ত করিয়াছিলেন; তাহারা ভিন ভিন্ন বেশধারণ পূর্বক নানাস্থানে ভ্রমণ করত তত্ত্ব লোকদিগের আচারবাব-হার অবগত হইতেছিল এবং কুস্মপুর-वानी नक्तत्रभण्डित अभाजा ও वसुवास्तर-দিগের গুড় ব্যাপার ও উপায় নিপ্ণরূপে অসুসন্ধান করিয়া বেড়াইতে লাগিল। শেষ তিনি রাক্ষ্যের বিশ্বস্ত বাজিদিগ্রে পर्याष्ठ चरम् जानित्यन ।

চাণকা আনিতেন যে অমাত্যরাক্ষ

স্বার্থশূন্য, ভক্তিসহকারে তাঁহার কর্ত্ব্য সম্পাদন করিতেন এবং কি প্রকারে প্রভুর শ্রেয়ঃ হইবে তাহাই অননাচিত্তে চিন্তা করিতেন। चारिक लारिक है স্বার্থসিদ্ধির জনা সক্ষংশালী প্রভুকে त्यां करतः; किन्छ त्राक्षम त्मत्रे हिल्लम 'না। চাণকা বিবেচনা করিলেন যে র্ক্তিসকে হস্তগত করিয়া চন্দ্রগুপ্তের মন্ত্রিত্ব স্বীকার করাইবার প্রয়াস পাওয়া নিতান্ত আবিশ্রক। রাক্ষ্যের বৃদ্ধি, বিক্রম এবং ভক্তি, এই ত্রিবিধ গুণ ছিল বলিয়াই চাণকা তাঁহাকে চক্রগুপ্তের মন্ত্ৰী করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলেৰ। যাহা-দিগের বৃদ্ধি, বিক্রম ও ভক্তি এই তিন খণ থাকে, ভাহারাই প্রাকৃত ভূতা এবং ভাষাদের হইতেই স্বামীর সর্ক্ষকালেই যথার্থ মঙ্গল হইবার সন্থাবনা। স্করাং চাণকা রাক্ষদকে হস্তগত করিতে যভদুর गांश यञ्च करद्रन। প্রথমতঃ রাক্ষ্য ध मनभारक जूब विष्ठिम छे २ भाम न कविनात निभिष्ठ চानका अक कोमन करिएनन; রাক্ষ্যের নামমুদ্রা ধারা অক্ষিত একথানি প্র চন্দ্রগুপ্তের নিকটে প্রেরণ করি-থেরিত মলয়কেতুর বিশ্বস্ত সেবকদিগের ^{দারা} ধৃত এবং মূলমুকেতুর স্মীপে আ নীত হইল। তদৰ্শনে রাক্ষণের প্রতি ^{মলয়কে}তুর সন্দেহ বন্ধমূল হইলে তিনি অগতারাক্ষকে আহ্বনে করিয়া আনা এবং তদ্বিয়ক বিনিধ প্রশ্ন उँशिक किछः। कतित्वन।

পতের মর্ম কিছুই জানিতেন না, ভিনি এবিষয়ে সম্পূর্ণ নির্দ্ধোষ চিলেন; স্থতরাং তিনি সত্ত্তর প্রদানে অসমর্থ হইলেন। ইহাতে মুগ্ধবুদ্ধি মলয়কেতৃ র‡ক্ষসকে অপমানিত এবং স্বদকাশ হইতে দূরীভূত করিলেন। এবং চিত্রবর্মা প্রভৃতি পাঁচ জন মিত্রবাজকে মারিয়া ফেলিলেন। এই জনা অপরাপর রাজারা " মলয়কেতু অতি অবিবেচক তুরুভি" ইছা বিবেচনা कतिया, विश्मिष्ठः अधिवश्वन रेमञ्जानरक পলায়ন করিতে দেখিয়া আপনাদিগের বিষয় সম্পত্তিরক্ষার নিমিত্ত মলয়কেতৃর সেনানিৰেশ পরিত্যাগপূর্বক স্বস্থরাজ্যে প্রস্থান করিলেন। তদনস্থর ভদ্রভট, পুরুষদত্ত প্রভৃতি চাণক্যপ্রেরিত প্রধান-পুরুষগণ মলয়কেতৃকে বন্ধ কবিয়া ফেলিল। তৎপবে রাক্ষস ছঃথিতান্তঃ-করণে কুমুমপুবে আগমন করিয়া প্রচ্ছন্ন-ভাবে অবস্থিতি কবিতে লাগিলেন। চাণকা তাহা জানিতে পারিয়া আরু একটা কৌশলপ্রয়োগ দারা তাঁহাকে হস্তগত করিলেন। একদিন চন্দ্রপ্রের সমভিব্যাহারে ভাঁহার নিকট গ্যন করি-লেন, দেই পতা পথিমধো চাণকোর লেম এবং আপনি অমাতারাক্সকে প্রণাম করিয়া যথাবিহিত বহুমানপুর: দর চন্দ্রগুকে তাঁহাকে প্রণাম করিতে বলি-লেন। অমাতারাক্ষস চক্রপ্তথকে 'বিজয়ী इउ" विद्या आंभी त्वान क्तिलन।

> এই নপে রাক্ষম হস্তগত হইলে চাণকা ভাঁচাকে চক্ত গুপ্তর সচিবকার্গ্যের ভার গ্রহণ করিতে অনুবোধু করিলেন অং-

মাতারাক্স অগভা৷ ভাহাই করিছে ষীকৃত হইলেন। তৎপশ্চাৎ চাৰকা **চক্ত छ** छ त मगीर न वाक राज नानाविश मन् छन वर्नना कतिया छ। हारक महिए इत চিহ্নস্তরণ শস্তপ্রদান করিলেন। অমাত্য-রাক্ষস চন্দ্রগুপের শক্তগ্রহণ করিয়াছেন, এমন সময়ে রাজপুরুষেরা মলমকেতৃকে হস্তপদে বন্ধ করিয়া হারদেশে ভাপিত कतिल। बाक्रभुक्रस्वता कि कतिएक इंटेरव धई विषय हानकारक किछामा कतिरन, চাৰকা বলিলেন যে একণে অমাতা-রাক্ষ্য রাজকার্য্য করিবেন, স্থভরাং জা हारक निर्देशन करें। त्राक्रम छ्थन চন্দ্রগুরেক বলিলেন, "রাজন্, তুমি ত জানই যে অ।মি মলয়কেতৃর সহিত কিছু-কাল বাস করিয়াছিলাম, অভএন ইহার व्यानव्यका कवा" हन्स्वर्थ हान्द्रात घूरथङ्ग निरक नित्रीकन कतिरल, डिनि विनित्न "ठळ्ळे छे, ज्यां छात्राकत्मत्र এই প্রথম প্রার্থনা রক্ষা করা উচিত।" ভদমুদারে চক্রপ্তথ মলয়কেতৃকে পৈতৃক রাজা প্রদান করিলেন এক সম্মানের স্থিত তাঁহাকে নিজ পৈতৃক রাজাে भाष्ठ। हेवा मिटलन ।

চক্রপ্ত রাজের ভীননীর এই স্থানে
হল্প রাক্ষণ নামক নাটক শেষ হইয়াছে।
এই নাটকে চাণকোর বৃদ্ধিচাল্রী এবং
রাক্ষ্যের অকৃত্রিম প্রভৃতক্তি অতি ক্ষাষ্ট রূপে বর্ণিত হইয়াছে। চক্রপ্তপ্তের জীব-নীর শেষভাগ প্রাণ প্রস্তুত অন্যাত গছ হুইতে সক্ষন ক্রিতে প্রবৃত্ত হুইলাম। বাযুপুরাণে চক্তগুরের রাজ্যকান আটাইশ বংসর নিরূপিত আছে। কুনারিকাপতে এবং অগ্নিপুরাণে লিগিত আছে যে চালকা এবং চক্তগুরু কলিযুগের ২৭৯০ বংসরে স্কুক্ত পাপের প্রায়শ্চিত্ত করিবাব নিমিত্ত নর্ম্মণাতীরন্তিত ত্রুক্তীর্গেসন করেন। এক্ষণে কলিযুগের ৪৯৮২ অফ চলিতেছে। স্কুত্রাং শুক্তবির্গে গমন ৩১২ পূর্ব্ব প্রীষ্টাব্দে ঘটিয়া ছিল।

স্থলপুরাবে লিখিত আছে যে কনিযুগের ২৬৯০ বংসব গত হইলে নন্ধরাজা
এবং তাহার একশত বংসর পবে অর্থাং
২৭৯০ অকে চক্রগুপ্তের রাজ্য আবেয়
হইবে। ইহা কুমারিকাপণ্ডের স্ম্যা
নিরপণের সভিত মিল হয়। কন্দ্পুবাণের
বহন—

''তভোপি ত্রিসহয়েয় দশাধিকশ্বতায়। ভবিষান্দরাক্ষ্য চাণকো যান্*্ন*

થાઉં ''

অর্থাং তিনসক্স বংসরের তিনশত
দশ বংসর অব্লিষ্ট থাকিতে নলবালোর
আরম্ভ। অনেকে "ত্রিসক্সের্" থানে
"হিসক্সের্" পঠে করিয়া একসংস্ত বংসর পশ্চাতে ফেলেন। ভাগবাতর
হাদশম্মের প্রথম অধ্যায়ে দৃষ্ট ইপানা
মহানকীর পুত্র মহাপদ্মানক এবং উ: ব ক্যালা প্রভৃতি অন্ত পুল ছিল। এই শি মহাপদ্মনক এবং উ।চার পুত্রগণ একশত বংসর পৃথিবী ভোগ করিয়ছিলেন। ভাগবতের মতে ইছারা প্রীক্ষিং নূপ

তির জন্মের ১৫১০ বংসর (এডবর্ষসহস্রঞ্ শতং পঞ্চ দশোন্তরং) পরে রাক্ষত্ব করিতে ভারস্ত করেন এবং একশভ বংগ্র রাজত্ব করেন। ইহার মতে পরীকিৎ কলিমুগের অশীতি অস্বে জন্মগ্রহণ করেন। স্থতরাং কলিযুগের ১৬৯০ অন্দে নন্দরাভা কাল। অভএব ১৭৯০ कनित करम वा ১৩১२ शूर्क औष्टे। स्म **ठ** छ छ । कि छ हेहात महिक शृत्सिक मभरत्रत केता इस না। প্রাচীন ভারতের কোন রাজার সময়নিরূপণ প্রায় অস্তুর। তবে हल ७% विषय याश किছू भूगांगानिएड পাওয়া গিয়াছে ভাহা পাঠকমহাশয়কে উপহার দেওয়া গেল, তিনি ইহার ভিতর হইতে সারগ্রহণ করিবেন। বৌদ্ধ धार हेन धारीत ताकाकान (होकिन वर्स নিদিষ্ট আছে। বৌদ্দাতে চক্ৰগুপ্ত ১৯৬ পূর্ব গ্রীষ্টাবেদ সিংহাসনে আরোহণ করের। পুরাণমতে ভিনি ২৫ বৎসর নিরুপদ্রে মগধরাজ্য শাসন করিয়া मानवनीना मचत्र करतन। কোন মতে ২৯২ পূর্ব গ্রীষ্টাব্দে ভাঁহার मृङ्ग इस ।

চক্রপ্ত বিশ্বার করিয়াছিলেন এবং
পঞ্চনদ প্রদেশ হইতে একি বা যবনদিগকে দুরীভূত করিয়া দিয়াছিলেন।
প্রাদ আছে যে তিনি দাক্ষিণাভ্যে
ফফানদীর তটে চক্রপ্তরনগরী নামে
এক নগরী সংস্থাপিত করেন। ত

विका लारकही हिन्द्र छित हे विहास বিশেষরপে অবগত আছে। মুদারাক। সের রচয়িতা এবং টীকাকার উভয়েই **जल्मभीत्र (लाक। यवनस्मनानी (मलि-**উক্স ভারতবর্ষে নিজ অধিকার পুনঃ প্রাপ্তির জন্য আর একবার ভারতবর্ষ আক্রমণ করিতে অগ্রসর হয়েন। কিন্তু ठळ छ । चरेननामाम् छ मम् ७ वाशित তাঁহার গভিরোধ করেন এবং তাঁহাকে পরাজিত করিয়া সন্ধি করিতে বাধ্য करतन। मूजवाकारगत (भारत रायवन দিগের অক্রেমণের উল্লেখ দৃষ্ট হয় তাহা এই আক্রমণ। মগধরাভা পরাক্রান্ত না থাকিলে যবনহস্ত হইতে ভারতবর্ষ রকা করা ভার হইত। महिङ गतनरमनाপতिর मन्नि ७०२ औ**ष्टे**।स्म হটয়াছিল। চক্রগুপ্তের রাজ্যে প্রজা-निट्धत स्थक्कन दृष्टि धवः मामा**किक** উমতি হইয়াছিল। প্রাকৃতিবর্গ মগধ-রাজ্যের শাস্তিছায়াতে নির্বিল্লে স্থথে কালহরণ করিত, কোন উপদ্রব বা অভ্যাচারের শকা ছিল না।

চক্রগুপ্তের রাজধানী পাটলিপুত্র নগর গঙ্গার উপকৃলে স্থিত এবং পঞ্চক্রোশ দীর্ঘ 'ও একক্রোশ প্রস্থে বিস্তৃত ছিল। তৎ-কালে ইহা বানিজ্যের একটী প্রধান স্থান ছিল। নদীর বক্ষে শত শত বনিক্পোত ভাসিতে দেখা যাইত। নগরের মধ্যে নানাশ্রেণীর কারু শিল্পকর বাস করিত এবং অগণা পণাবছল বিপনি ও আপণ-মালা রাজপথের শোভাসম্পাদন করিত

হত্তিগণ অলম্বত হুচাক হাওদা পুঠে कतिया शञ्जीत्रभविदक्षम शृक्षक वास्रभर्भ ইতন্তত: বিচরণ ও যাতারাত করিত। অখারোহিগণ তুরঙ্গমপৃষ্ঠে বিচিত্রগভিতে ইতস্ততঃ পরিভ্রমণ করিত। রাজা স্বয়ং त्रगटका दिनाशिकत कार्या अवः धर्माकिः করণে বিচারপতির কার্য্য করিতেন। চন্দ্র প্র অভিশয় রণকুশল সেনাপতি धवः अछि स्विष्ठ विहातक हिल्लन। ভাঁছার চারিলক্ষ বেতনভোগী স্থির দৈনা (standing army) ছিল। তিনি মুগরা-भील हिल्लन এবং भन्नाजनशातिनी यवनी-গণপরিবৃত হইয়া মৃগয়ার্থ বহিগত হই-তেন। তাঁহার রাজ্যে সভাতার আলোক मर्बज विकीर्व द्रेशाहिल। बाडिएडम এবং পৈতৃকব্যবসায়াহসরপ্রথা সমাক্ প্রচলিত ছিল। রাজ্যের নানাবিভাগে श्रुर्यात्रा बाज्यक्रमिरावदावा श्रुठाकः ভাবে রাজাশাসনকার্যা ও শান্তিবিধান সম্পাদিত হইত। প্রজাদিগের গৃছে স্থ भाखि विदावमान हिल। अवादा यूर्थ স্বচ্চলে কাল্যাপন করিত। বুৰ্ণক্ ও भिज्ञीता तारकात विविधक्यकारत **উ**ञ्चिक সাধন করিত। **डाहाता** हम श्रद्धत রাজ্যে ব্যক্ষার্য করিতে অভুমতিপ্রাপ্ত' আমরা প্রকাব শেষ করিব। হইয়াছিল বলিয়া রাজাকে কর দিত। ष्यधूनांखन देश्टबबत्रात्का वावनात्रीत्रा जवः শিলীরা আইনখারা সুরক্ষিত হইরা नित्राभाम पत्रकारी कात्र वित्रा त्राधारक কর দিয়া থাকে। অন্তলিশ্মাণ এবং পোতনিশাণের খতত্র ক্রিয়ালয় ছল

এবং সেই সেই স্থানে স্বস্ত্র ও পোত সকল নিৰ্মিত হইত। রাজা বাহ্মণ দিগকে অভিশয় সন্মানপ্রদর্শন করিতেন। প্রতিবৎসর তিনি ব্রাহ্মণদিগকে লইয়া এক মহাসভা করিতেন এবং তাঁহাদিগের সহিত রাজ্যের ও প্রজাদিগের উন্নতির উপায়চিস্তা করিতেন। চন্দ্র গুণ্ড চতু-, র্বিধ রাজবৃত্ত সমাক্ সাধন করিতেন.। नावाञ्चादव अर्थाभाक्तन, त्महे अर्थव वर्षन, ভाषांत्र त्रक्रम ध्वरः मरश्रकाद्व তাহার বার এই চারিটা কার্যাই তিনি উত্তমরূপে ধুঝিতেন। চক্সগুপ্ত বৌদ্ধ ছিলেম না, হিন্দু ছিলেম। তাঁহার পৌত্র ष्यानक रवीष इटेशाहित्नन धवः ष्यानक বৌদ্ধ खुপ ও মঠ নির্মাণ করিয়াছিলেন। চন্ত্রতপ্তের রাজ্যসময়ে সমাজে "অহিংসা পরমো ধর্মঃ" এই মত প্রচলিত হইয়া ममाक्राक व्यवकान भरत (वीष्यर्भ व्य-नष्म कतिवात डेशरयाशी कतिराहित। हळ् ७ तथेत बाकाकारन ध्वर ड्रांशंत्र পুত্রপৌত্রের সময়ে মগধরাক্ষ্য অতান্ত সমৃদ্ধ ও প্রবলপরাক্রাস্ত হইয়াছিল। ম্থধরাজ্য হইতে ভারতবর্ধের কি উপ-কার হইবাছে, ভাছার উল্লেখ করিয়া

বখন শাক্যসিংহ মগধে পরিত্রমণ করিয়াছিলেন, তখন মগধ ছই চারিটি কুত্র কুত্র রাজ্যে বিভক্ত ছিল। কিব যখন আলেক্জাঞার ভারতবর্ষ আক্রমণ करत्रन, उसन मगर माजिलम छेत्रज, এই হুইশত বা ममुद्ध ७ व्यवन।

আড়াইশত বৎসরের মধ্যে পুর্বোক্ত কুদ্র রাজাগুলির সমবার হইয়া মগধসাত্রা-ভোর উৎপত্তি হয়। কি কারণে এই রাজাসকল সমবেত হইরাছিল, তাহা ল্লানিবার কোন উপায় নাই। ভারত-वर्ष (य त्रांत्मात त्रांचा भत्राकान्त छैं। होत . त्रारबारे ध्रमानिरगत स्थमांखि ७ ममुक् मिथिए भावमा गाम। মগধসাম্রাজ্য অতি প্রবল পরক্রাস্ত ছিল বলিয়াই श्रकाषि श्रिव অথযাজনাও নিরাপদ मगध्राक्रांग পृक्तिकार्याचात्रा ध्यक्षानिरगत स्थयक्षक कार्विधात यक्षणीत ছিলেন। মগধরাজ্য তৎকালে ভারত-वर्षत्र शांगचन्नभ इटेगाहिन। य थ न (मक्नव ভाরতবর্ষ আক্রমণ করেন. তখন পঞ্চনদপ্রদেশের রাজগণ তাঁহার প্রতাপ সহা করিতে অসমর্থ হইল। किस मगरधन गर्ज्यान छै। हात इत्राय ভীতির সঞ্চার ছইল এবং তিনি আর **श्र्कतिक ना जानिका शक्तनकातम हरे-**তেই স্বরাম্ব্যাভিমুখে প্রতিপ্ররাণ করি-लन। किছुपिन शरत जारांत यथन সেক্সরের অন্যতম সেনানী সেলিউক্স ভারতবর্ষ আক্রমণ করেন, তখনও মগধ হইতে ভারতরকা হয়। চল্র থথের সহিত বুদ্ধে পরাজিত হইয়া मिक क्रिट्ड वांचा इहेब्राइट्लन। मगंध गांबाका ना शांकिटन (वांव इत्र, छात्रछ-

वर्व किছ्मिन औकिमिरांत्र अभीत्न था-किछ। मूलाताकरमत्र (भरव ८२ ववन-দিগের আক্রমণের কথা দৃষ্ট হয়, তাহা বোধ হয় সেলিউকদের আক্রমণের ৰূপা। অতএব মগধ হইতে ভারতবর্ষের ছ্টটি প্রধান উপকার সাধিত হয়। একটি প্রকৃতিদিগের অধ্যক্তনতাবৃদ্ধি ও সামাজিক উন্নতি। বিতীয়টী ভারত-বর্ষের বিদেশীয়দিগের আক্রমণ হইতে রক্ষাদাধন। যতদিন মগধের বলবিক্রম বিদ্যমান্ ছিল, ততদিন আর কোন বহিংশক্র ভারতবর্ষে প্রবেশ করিতে माहम करत नाहै। মগধরাজ্য হইতে আর একটা ট্রপকার হইরাছে। তাহা দাকিণাতো আধিপতাবিস্তার। ইহা অশোকরাজের সময়েই ঘটে ৷ অশোক নুপতির রাজ্যকালে দাক্ষিণাত্যের অনেক স্থান ও সিংহলদেশ বৌদ্ধর্মেদীকিত হয় এবং তাৎকালিক ব্রাহ্মণগণ মহারাষ্ট্র, স্রাবিড়, কেরল, তৈলঙ্গ প্রভৃতি প্রদেশে পৌরাণিক্যত প্রচার করেন। মগধসাদ্রাক্র ভূতীয় উপকার। ইহার বিশেষ বিবরণ এ প্রস্তাবের প্রতিপাদ্য विषय नटह विनया आमता आमा हेरात সেৰিউকস[°] বৰ্ণনা করিতে প্রবৃত্ত হইলাম না। সময়াস্তরে ইহা বিবৃত করিবার অভিলাষ ब्रह्म ।

त्र म्।



মাধবীলতা।

२०

পরদিবস প্রাতে মাতকিনী একজন
বৃদ্ধা পরিচারিকাকে বলিল, "আরি,
আমার চাকুরীতে ইস্তফা—ঠাকুরাণী
আমার খুঁজিলে তাঁহারে বুঝাইরা বলিও
আমি চলিলাম।" বৃদ্ধা জিজ্ঞাসা করিল,
"সে কি! তুই কোথার চলিলি?"

মাত। তা এখনও ঠিক ফানি না।

वृद्धाः। (कन हिन ?

মাত। আর চাকুরী করিব না।

बुद्धा। कि कद्र शाविश

माछ। घढेकानी करत्।

বৃদ্ধা। ও জাবার কি কথা? তা একটু থেকে যা, ঠাকুরাণী উঠিলে ভারে বলে যাস্।

মাত। তাঁরে বলা হবেনা।

वृद्धा (कन १

মাত। তাঁরে দেখিলে যাইতে পারি-বনা।

বৃদ্ধা। তা তোর গিরে কান্ধ কি ? মাত। আমার কান্ত আছে, আমি

हिन्गाम ।

এই বলিয়া মাতলিনী চলিয়া গেল।
বৃদ্ধা একবার ডাকিয়া বৈলিল, "তোর
পাপ্তনা পাইয়াছিল ?" মাতলিনী কোন
উত্তর করিল না। বৃদ্ধা আপনা আপনি
বলিতে লাগিল, "মর! ছুঁড়ি, পাগল
হরেছেনা কি ?"

মাতি সিনী রাজবাটী হইতে বহির্গত হইয়া একবার বাটীর দিকে ফিরিয়া চাহিল, সজলনমনে মনে মনে বলিল, ''মা নিজা যাও,—নিশ্চিক হইয়া নিজা যাও, এ দাসী তোমার তোমার স্বামীরু সিংহাসনে আবার বসাইবে।''

অপরাক্তে মাতলিনী বন্ধচারীর সহিত সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত ভাঁহার মন্দি-द्राञिम्र्रथार्शन । ₹ शरथ घुरे এकि श्रकः ষের সহিত সাক্ষাৎ হইলে, ভাহারা মাত-क्रिमीत क्षिक विक्रिकटलाहरन् हाहिल। মাতলিনীর মানে পড়িল, যে দে যুবতী; কিন্তু তৎক্ষণাৎ মৃষ্টিবন্ধ করিয়া অঞ্ব ধরিয়া মাখা নাড়িয়া সদর্পে চলিরা গেল, মন্দিরের সমুখে পে ছিলে তিলার্ছ ইতত্ততঃ না করিয়া প্রবেশ कतिन; उथाइ त्कृश नाहे (प्रिया मित्र इटेटि वहिर्गेष्ठ इटेबाईकानीपर ভটে ব্ৰহ্মচারীর প্রতীক্ষার বসিয়া বহিল। সায়ংকাল উপস্থিত, ত্রন্মচারী আসি লেন না কৈমে রাজি একপ্রহর অভীত इहेन, ७ थन्छ उन्हातीत एथा नाहै। মাত্ৰিনী অভকার দেখিয়া একবারমতি किकिर हकन रहेबाहिन, किंद भरत (म हांकना आहे हिन मा। मरस्त्र त्याशास्त्र विमन्ना मस्मिरदेव क्षि बाजि छ्रेशहरवव চাহিয়া রহিল। সময় বন্ধচায়ী মশিয় হইতে বহিণ্ড হইলেন দেখিরা মাতদিনী কিঞ্চিৎ বিশ্বরাপর হইল, কিন্তু সে দিকে মন না দিরা নির্ভর্গতিতে ব্যক্ষচারীর সমূধে আসিরা দাঁড়াইল। ব্যক্ষচারী জিজ্ঞাসা করিলেন, "কে?" মাতদিনী উত্তর করিল, "ভিধারিণী।"

ব্রন্ধ। অসমরে তিক্ষার নিমিত্ত কেন ? আর আমি নিজে ভিক্ষুক আমার নিকট তিকা কিরপ ?

মাত। আপনার নিকট ভিকা ক-রিতে আদিতে গেলে বোধ হয় এই ঠিক সময়। আর আপনার নিকট কেবল মাত্র একটি পরিচয় ভিকা করিতে আদিয়াছি।

ব্ৰহ্ম। কি পরিচর ?

মাত। আপনি রাজ্জামাতাকে চিনি-তেন ?

ব্ৰন্ধ। না—কিন্তু সে পরিচরে ভো-খার কি প্রয়োজন ?

মাত। রাজভাষাতার নিবাস কোপার ছিল আপনি ভানেন ?

ত্রদ। ভানি—তকপ্র।

মাত। রাজজামাতার নাম কি ছিল জানেন ?

বৃদ্ধ। জানি—বিলয়রাজা কিন্তু আরু কোন কপার আমি উত্তর দিব না। ভূমি বল, ভোমার এ সকল কপার কি প্রয়োজন গ

মাত। আমি বিজয়রাজকে পুঁজিতে

যাইব—তাহাই আপনাকে জিজ্ঞাসা

করিতেছি।

বন্ধ। বিলয়রাককে তোমার কি প্রয়োজন ?

মাত। বিজয়রাজ আমার মাতার
নিকট বহুকাল অবধি ঋণী আছেন,
সেই ঋণ আদায় করিতে আমি উছোর
নিকট যাইব।

ত্রন। কে তুমি ?

মাত। আমি বিধবা-অনাথা।

ব্ৰহ্ম। কিছ যুবতী দেখিতেছি।

মাত। বৃদ্ধ ব্ৰহ্মচারীর তাহা চিনিতে পালা উচিত হয় না।

ত্রন। এই অন্ধকারে একাকী যুবতীর প্রান্থরে আসা আরও উচিত হয় না। 🔭

মাত। বিপদ্গত্তির সে বিচার থাকে না। অভ্যেরও সে বিচার করা অক্তার। ব্রন্ধ। আমি আবার জিজ্ঞাসাকরি, "তমিকে ?"

মাত। স্থামার যাহা দেখিতেছেন, স্থামি তাহাই। ইহার স্থাধিক পরিচয় স্থার আমার নাই।

বেল। বিজয়রাজকে তোমার মাতা

থপন ঝীণে আবদ্ধ করিতে সক্ষম হইয়াছিলেন, তথন তাঁহার পরিচয় বিলক্ষণ
আচে তবে তাঁহার পরিচয় দিতে তোমার
আপতি কি ?

মাত। কোন পরিচয় আমায় জিজ্ঞাসা করিবেন না। আমি আপনাকে '
ভক্তিকরি, তাহাই আপনার নিকট আসিয়াছি। আমার সহায়তা করিতে পারেন, আপনার ধর্ম আছে; সহায়তা

না করেন, বলিয়া দিন তক্ষপুর কোন পথে যাইব।

বন্ধ। বিজ্ঞারাজের বহুকাল মৃত্যু হইরাছে; তক্ষপুরে তুমি অনর্থক যা-ইবে।

মাত। তাঁর আর কে আছে।

दम्। এक छाई बाह् ।

মাত। আপনি তাঁরে চিনেন ? তিনি কিরপ ব্যক্তি ?

বৃদ্ধ। আমি চিনি, কিরপ বাজি ভাষা ঠিক বলিতে পারি না, তিনি একণে যুবা—আমরা বৃদ্ধ, যুবার কিম্বা যুব-ভীর চরিত্র অনুভব করিতে পারি না।

মাত। তাঁর হুই এক ট্র কার্যা যদি দেখিয়া থাকেন, আমায় বল্ন আমি অফুডব করিব।

বৃদ্ধ। আমি তক্ষপুরে অনেকদিন যাই
নাই, যখন যাইতাম তখন ধনমদে জিনি
উন্মন্ত ছিলেন। তাঁহার দান্তিক তা অতিশব্ধ বলিয়া বোধ হইত। কোন
রাজা, কি প্রভা, কি পণ্ডিত, কাহাকেও
তিনি গ্রাহা করিতেন না। এমন কি
তাঁহার জন্মদাতাকেও তিনি লক্ষ্য
করিতেন না। একদিন তাঁহার তাকিয়ায়
লাখি মারিয়াছিলেন। আর পিতাকে
চাক্রী হইতে বরপান্ত করিয়াছিলেন।

মাত। পিতাকে বরণান্ত করিয়া-ছিলেন কি, বুঝিলাম না। তাঁহার পিতা রাজা ছিলেন, তাঁহাকে কিরণ বরখান্ত করিয়াছিলেন ?

वचा। छाहात समानाजा ताला दिरगन

না। তিনি রাজার দেওরান্ ছিলেন।
রাজা সেই দেওরানের পুত্রকে পোষ্যপুত্র
লইরাছিলেন। বিজ্ঞরাদের ভাই
এমনি কুতম্ব ধে রাজ্য পাইবামাত্রই
দেওরানের দেওরানী কাড়িরা লই-লেন।

মাত। কেন, তাহা কিছু মানেন ? বন্ধ। তাহা আমি ঠিক ভানিনা, কাল মাহাত্মে এসকল ঘটে।

माछ। এখন দেওয়ান্ কে ?

বৃদ্ধ। বলিতে পারি না, তবে ওনি য়াছি যে বিভায়রাজের সময় যে সকল আমলা ছিল, উঁ.হার ভাই ভাহাদের সক-লকে ভাকাইয়া নিজ নিজ কর্ম্ম দিয়া-ছেন আর তাঁহার জনকের নিয়োজিত সকল লোককে ভাড়াইয়াছেন।

মাত। তুইটিই শুভ সম্বাদ, এগন তক্ষপুরের পথ বলিয়া দিন, আমি আমার শুপ আদায় ক্রিতে পারিব।

ব্ৰহ্ম। এই ছুইটা পরিচয়েই ডুমি কি বুঝিলে ?

নাত। আমি এই বুঝিলাম বে বিজয়রাজের ভাই বুজিমান্— ঘনকের শুঠতা বুঝিয়াছেন।

ত্রহ্ম। তাহা আমিত কিছুই বুঝি নাই--ভাল, ভূমি তক্ষপুরে যাইবে, তোমার সঙ্গে আর কে যাইবে?

माउ। जांशिन याहितन।

বন্ধচারী চক্ষু বিক্ষারিত করিরা নাত-দিনীর দিকে চাছিয়া রহিলেন; কির ক্ষকারে ভাহার মুখ্ কিছুই দেণিতে शहितन ना। यांजिनी आंत्र छेखदात चाराका ना कतिया मृहार्खक मासा मिन्द्रशास्त्र क्रिया क्रम्थन आनिया ব্ৰহ্মচারীর হাতে मिन। बिखांत्रा कतिरगन,-"ध कि ?"

माजिनी वितन, "हनून।"

° ব্ৰুচারী অবাক্ হইয়া আবার মাত-क्रिनीय मिरक हारिया बहित्सनः [माछ-দিনী বলিল, "ভাবিতেছেন কি ? আপ-नाक याहे एक इहेरत्। आमि छ शूर्त्त्रहे वित्राष्ट्रि जामात जात (कर नारे (य चामात मत्त्र बाहेद्व। चामि युवजी, चारा चामात महत्र (शर्त छान (मर्था-हेत ना. अञ्चर आश्रीन गाहेरनन। আপনার এখানে থাকিয়া কি লাভ ? কারার উপকার করিবেন? আমার সঙ্গে গেলে আমার উপকার হইবে। ষ্ঠতএব চলুন।"

ত্রন। তোমার নাম কি ? মাত। আমার নাম "মাত কিনী।" ব্রন। তোগার বড সাহস। মাত। বড় সাহস না হইলে বড় गशत स्तिएक वामि नारे।

করিলে, ভোমার মত স্তীলোক কৈ षामि उ कथन (स्वि नारे। ইচ্ছা হইতেছে যে তুনি তক্ষপুরে গিয়া कि कत्र छाहा व्यागि स्थि।

गाउ। उद्द हजून। ব্ৰহা। जाबि नहि।

गाउ। जाजिहे। विनष इहेटन व्यांशनि वाहर्ष्ठ शाहित्वन ना। আজি বাত্রা করে কতকদূর গিয়া বিশ্রাস कतिरवन।

विष्काती शामित्रा वितासन, " आक्षा. চল, (मधा याउँक, ইहाর পর আর কি আছে।"

তাহার পর উভয়ে তক্ষপুর উদ্দেশে যাতা করিলেন।

23

যে অপরাহে মাতলিনী ব্রহ্মচারীর সহিত সাক্ষাৎ করিতে যাইতেছিল, সেই অপরাকে পুটুর মার প্রতিবাদিনী পদা,কে-भविनाम कतिया, बक्तरश्च भविया, भूथ-থানি তৈলে●মার্জিত করিয়া ছারে मां इंदिश हिटलन ; अयं ठ ममत्र प्रेंबन व्यवादबारी शर्थ मिश्रा (वर्ष) व्यवहालना করিয়া গেল। পদ্ম তাহাদের দেখিয়া অভি চঞ্ল হইলেন, "এইবার আসিতে চেন" ব-निया वज यथाञ्चात नाउ कतिया (यन अञ्चयनस्य वाहित्त मानित्सन, त्यन कि हू হারাইয়া গিয়াছে বলিয়া ভাহা খুঁলিতে वाशित्वनः गर्धा मर्धा पश्चिकत्तत्र श्रीक কটাক করিতে লাগিলেন, কিন্তু অখা-ত্রকা। ভূমি আমার বড় আশ্চর্যান্তিত্ব রে:হীদের পর কোন শিবিকা বা লোক-জন নাদেখিয়া হতাখাদ হইয়া আবেরে यथाश्वात ध्राञावर्त्तन कतिर्वान। অবধি পুঁটুর মার পরিচর্যায় রাজা मात्र मात्री नियुक्त कतिया नियाकित्नन, দেই অবধি পদ্ম প্রায় প্রত্যাহ অপরাক্ **এইরপ-বেশবিনাাস করিয়া ছারের অস্ত**-রালে দৃড়োই বা পথের লোক দেখিতেন।

পালার বরস ুবিংশতি বংসর কিন্তু দে-थित जिः भरवर्षीया त्थीका विनया त्वांश रहेड, भागमवर्गा, विश्वाकी, कीर्चनवना, क्रयून चित्र यून। भाषांत्र यूनामहरण কুন্দরী বলিরা পদ্মের পশার ছিল; কিছু পদ্ম इक्तिका विनया छाहाता कथन मत्मह कति जा, अपह भन्न हेमानीः पूप-খানি তৈলম।ক্ষিত করিয়া হারের অন্ত: রালে যে ভাবে দাড়াইয়া থাকিতেন,ভাহা দেখিলে নিজ পাড়ার না হোক্, অপর পাড়ার যুবারা সন্দেহ করিলে করিতে পারিত।

পদ্ম বে কেন বাবে দাড়াইয়া থাকিত, ভাছা কেবল সোহাগী দাসী বুরিয়াছিল। অশ্বারোহীর পশ্চাতে সেহিাগী পথ দিয়া যাইডেছিল, পদ্মের প্রতি কটাক্ষ ক-রিরা ঈষৎ হাদিল। তাহার হাদি (पिनिया भाषा मूथ भाषु वर्ग इहेशा গেল, তৎক্ষণাৎ পদ্ম বারক্ষ করিয়া অস্ত:পুরে গেলেন, আর চারি পাঁচ बिरम (म बाद बामिश्म ना। সেই অবধি সোহাগীর প্রতি পদ্মের বিশেষ বীভরাগ জন্মিল। পাড়ার श्चीत्नांकमत्था अक्षिन शृष्ट्रेत मात्र कथा हरेटडिकन, मकरनरे छारात निन्मावाम, ভिद्वाहाधारमंत्र (ছरन, खाराता नाकिखारमत করিতেছিল। পদ্ম বলিল, পুঁটুর মার कान पाव नाहे, यक पाव के माहाशी माशीत । थे छ धरे नर्सनाम पछारे-बाह् ; बाजा कि नित्य दिश्ए जरम-किरमन, के मागीरे छ महान निश्व हिन। ঐ ত বারের পাশে ছুঁড়িকে 'সেবিন

माफ करत दार्थ शियाहिन। आह धक्यन विनन, छ। नम् ध मिनिकान घটना नम्, अरनक मिन अविध कथाल शूरफ़रक, रमथ नारे माथवीना किक রাজার মত ? আগে ত কখন মিজেকে দেখি নাই, এখন কাণায় বৃঝিতে পারে যে, মাধবীর হাতের গড়ন, ঠোটের গড়ন, মুখের গড়ন ঠিক রাজার মত।

পদা। আমরা যথন পুঁটুর মার কাছে আদর করে বলিতাম, তোর পুঁটু যেন রাজকুমারী, পুঁটুর মা তখন মুগ টিপে টিপে হাসিত; এখন বুঝিলাম কেন श्तिक, हुँ कि अमिरक मास प्रिथिक পাই, ভিতরে এতখানা । ভাল। জিজ্ঞাসা করি মাধবীলতার পেটে এর भव य एक्टन क्र द मिक ब्रीका इसन पोनड **भा**द ?

প্রথম প্রতিবাসী। তাকেমন করে পাবে? মাধবীলতা ত রাণীর গর্ভের मञ्जान नत्र, एक एक स्थाप कि करल के दब, विवाह कवा जीव गर्छ ना हरन कि विवय

পন্ম। তবে, পরে রাভার রাজা কে পাবে ? द्नारक वरन जाकक्यांत दर्गन् काल निक्छ अमिष्टिन।

व्य, व्यक्तिवात्री। त्म व्यावात वि কথা • ভবে রাজা কি অভের ছেলে চুরি করে এনেছিলেন १

ৰি, প্ৰতিবাসী। তিনি সকল পারেন, সক্ৰ ক্রেন,চোধের উপর দেখিতেছ না বৃদ্ধ বয়সে কি কাশু করিলেন। বারে এক রোগে ধরে ক্রমে ভারে সকল রোগে খেরে।

পদ্ম। তা এখন আমাদের পাড়ার পোড়া কপালির দশা কি হবে? লোকে যে বলিতেছে তারে নাকি পাড়া ছাড়া করে দেবে, এ কথা কি সত্য?

°, প্র, প্রতিবাসী। সত্য মিথ্যা কেমন করে জান্ব বোন্। রাজা বাহার সহায়, প্রজায় তাহার কি ক্রিবে? তবে নাকি রামসেবককে সকলে ধরে একদিন লজ্জা দিবে। সকলে বলিবে যে তোমার কালামুধ, তোমার মুধ পুড়ে গেছে।

ৰি, প্ৰতিবাসী। তায় আর-লাভ কি ? যা হবার তা হয়ে গেছে, রামসেবক গোবেচারা তারে মনোহঃখ দিয়ে আর লাভ কি ?

• পদা। লাভ আছে বই কি, রাম দাদা শাদা লোক, এ সকল কিছুই জানেন না,• তাঁরে বলে দিলে ছুঁড়িকে লয়ে তিনি এখান ছইতে দুরে যাবেন, তাহা হইলে পাড়ার কলক যাবে।

সোহাগী এই সময় উপস্থিত পাকিলে বলিত, ''পাড়ার কলঙ্ক যাক্ না যাকৃ পালের কণ্টক যাবে।'' পুঁটুর মাকে পদ্ম বাতবিক কণ্টক স্থান্দ বিবেচনা করিতেন, পদ্ম আনিতেন বে, তিনি ক্ষারী, গৌভাগ্য পাড়ায় যাহা কিছু ঘটবে তাহা তাহার ভিন্ন আর কাহারও সম্ভবেনা। তিনি থাকিতে রাআর নফরে পুঁটুর মা পড়া অসমত হইরাছে। তবে

যে এ ঘটনা ঘটিয়াছে কেবল সোহাগীর অবিচারে, অতএব ভাবিলেন সোহাগী মকক। কিছু আবার ভাবিলেন, পুর্বেস্থাহাগীকে হন্তগত করিতে পারিলে, আৰু আমারই অনৃষ্টে এই সকল স্থুখ ঘটিত। পুঁটুর মা চকখাকি ভোমায় বঞ্চিত করেছে।

শংগর মনে থেরপ আলোচনা হইতেছিল, পাড়ার আরও ছই এক যুবতীর
মনে সেইরপ ভাব কিছু কিছু আদিয়াছিল। ছই একটি গৃহিণীরাও সেই
মতাবলম্বী ছিলেন, তাঁহাদের কন্তারা
থাকিতে পুঁটুর মার অদৃষ্টে এই সৌভাগ্য
উচিত হয় নাই, কাজেই পুঁটুর মার প্রতি
তাহাদের সকলেরই বিষদৃষ্টি অন্মিরাছিল।
এই সকল গৃহিণীরাই পুঁটুর মার কলক
রটাইয়াছিল, তাহারাই এক্পে রামসেবককে লক্ষা দিবার বিশেষ উদ্যোগী
হইয়াছিল।

পণা বলিল, আমার,ইচ্ছা হয়, আমি
গিয়ে একবার কালামুখীকে ত্কথা শুনাইয়া আসি। আমি এই ভাবি, তার মুখে
ভাত উঠে কেমন করে।

পল্মের মা। ভোর সে সকল কথায় কাল কি, ভোর কি মাথা ব্যথা পড়িল যে, তুই ছুক্থা শুনাতে যাবি।

প্য। আমার যে মহা হয় না।

বান্তবিক' পদ্মের অসহ্য হইরাছিল।
সন্ধার সমর মাতাকে পুকাইরা পদ্ম পুঁটুর
মার . খড়কীদারে গিরা দাঁড়াইলেন,
পুঁটুর মাকে ডাকিরা বলিলেন, '' ওলে।

কালামুখী একটা কথা বলি শুনে বাডো।" **এই আহ্বানে পুঁটুরমা পরমাণ্যারিত** হইরা হাসি হাসিমুখে পদ্মের নিকট चारतक मिरनज श्रेज शरमाज সহিত সাক্ষাৎ, ভাবিলেন পদা তাঁহাকে कडरे गिष्ठे कथा विलाद, छारांत्र अना कछरे चांझ्नाम कतिर्द, छारारे रत्न छ পল্ল এই সময়ে একা আসিরাছে। পুঁটুর মা আরও ভাবিলেন বে, আমার এত বস্ত্র, এত অলহার ত আবশাক नारे; हेशांत कठक शमा शतिरम छाशांक कडरे स्मन्नं (मधार्व, षाउवव वरे সময় তাহাকে ডাকিয়া চুপি চুপি कडू मिरे; চুलि চুलि वा क्न, আমি দিলে কে রাগ করিবে ? তিনি (त्रामी) मतिज हिल्म वर्ष, किंद्र वह ঐশর্যোর দিকে ভ একবার ফিরিয়াও চান না, তবে কেন তিনি রাগ করি-(वन। त्राहाशीहे वा तंकन विकाद ? ভার কি ক্ষতি ? হর ত সে রাণীকে वरन पिरव, जा आमि जात शंस्त धरत তখন বারণ করিব।

এই ভাবিতে ভাবিতে পূঁটুর মা পুছরিশীর কুলে পল্লের নিকট গিরা উপস্থিত
হইলেন। পল্ল বলিলেন, "ওলো
কালামুখী, বল দেখি, বুড়া রাজার
মন কেমন করে ভুলালি ?"

शृष्ट्र या। आपि ज्नारे नारे, शृष्ट्रे ज्नारेबाट्ट।

পর। তা বই কি! এরেই বলে পোরনামে পোরাতি বস্তার। হা কালা- মুখী! ভোর মরণের কি আর জারগা ছিল না; ছরত বল্বি নইলে এ ধন দো-লত কোথা ছইতে আসিত। তা অমন ধন কড়ির গলার দড়ি, অমন কাপড় পরার গলার দড়ি, অমন গহনা পরার গলায় দড়ি, ধিক্ তোরে, ছার কপালী!

পুঁটুর মা। কেন ঠাকুর ঝি, খামি কি করিলাম ?

পশ্ব। আহা কিছু জানেন না, আবার বলেন কি করিলাম, রাজা তোরে এত ভালবাসে কেন, তোরে এত গহনাপাতি দের কেন, আর কাহাকেও দের না কেন?

পুঁটুর মা। আমি পুঁটুর মা বলে আমার রাজা এই সকল দিরাছেন, তিনি পুঁটুকে বড় ভালবেদেছেন।

পন্ম। বলি, রাজা আর কাহারও
পূঁটুকে ভালবাদেন না কেন, ছেলে
মেরে ত আর অনেকের আছে। এ
সকল কি ঢাকা থাকে ? না ব্রিতে
বাঁকি থাকে ?

পুঁট্র মা। কি ঠাকুরঝি, তবে বল নারালা আমার কেন ভালবালেন ?

পদ্ম। আমরি নেকি, কিছু ভানেন না।

পুঁটুর মা। না সভ্য বলিতেছি ^{কই} আমি ভ কিছু জানি না।

পদ্ম। বখন দাদা তোর গলার বিটি দিবেন তখন ড বলিডে পারবিনে ^{যে} আদি কিছুই জানি না।

পूरिव मा। ट्यामान भारत धनि ठीक्ववि

वामात्र वरण रहे। वामि वानिमां वहे জন্ত এখন আমার বুকের ভিতর কেমন ভবিতে লাগিল।

नगा उद बरन विव । धकांड বলিতে হবে-না বলিলে তুমি মানিবে না ? (কৰ্বে ছই তিনটি কথা)

পুঁটুর মা ভাছা ওনিয়া অবাক্ হয়ে পাদার মুধপ্রতি চাহিয়া রহিল, পদা हिनदा घारेवांत मयस विनया शासन, ণ এখন টের পাও গহনা পরা কেমন হুখের।"

२२

প্রদিব্দ প্রাতে রাজা অন্তঃপুর हरेट विकाशित गारेट गारेट একস্থানে দাড়াইলেন; একজন দাসীকে বলিলেন, ''জ্যোৎসাবতীর সহিত এক-বার সাক্ষাৎ করিতে আমার ইচ্ছা ইইবাছে।" দাসী তৎক্ষণাৎ রাজভুগি-নীর মহলে প্রবেশ করিল। রাজা যষ্টির-ধারা ভূপতিত একটি বিৰপত নাড়িতে লাগিলেন, আর আপনা আপনি অফুট यदा पृष्टे এक है कथा विलय्ड नाजितन । এমতসময় রাজভাগিনী আসিয়া প্রণাম शिश मंडिटनम्। द्राव्या विल्लन्, "দেধ দেখি, কি অভার।" জোৎমাবভীর **७३ इरेन : छाविरमञ, त्रांनीत्र टा**छिनिदि-বরণ রাজা শ্বয়ং তাঁহাকে তির্থার ব্রিতে আসিরাছেন।

অরপরে রাজা আবার মাথা নাড়িয়া वितित्तन, " दक्ष अञ्चात, दक्ष अगवड,

एक अधारन विवशक स्कृतिश निवाद्ध, হর ত এই বিৰপতে আমি পূজা করে थांकित।" कहे विनवांमाळ क्यांश्यावडी मयद्व विद्वशक्षेष्ठ जुलियां महत्त्व ; ताका वितालन, "(प्रथ, (यन जान कांग्रशांत्र विय-পত্রটী ফেলা হয়। আর একটা কথা লিজাসা করি, তুমি কি উত্তর দাও ?'' এই वित्रा करनक हुन कतिया तहिरलन; জ্যোৎসাবতী কোন উত্তর করিলেন न। (प्रशिश श्रमदात्र विकामा कतित्वन. "তুমি কি বল? আমি ত সে সময় ছিলাম ना।" (ब्यारमावडी शीद शीद बिखायी क्तिरानन, "रकान् नमय ?"

বাৰা। যে সময় বাণী প্ৰস্ব হন। জোৎ। আজ্ঞা করুন। সে সময় আমি উপস্থিত ছিলাম।

রাণী কি সম্ভান প্রস্ব বাভা। करव्रन ?

ব্যোৎ। এক মৃতকন্তা প্রথমে ভূমিষ্ঠ इरेड (मिश्राहिनाम।

তার পর রাজা আর কোন কথাই ना अनिहा वहिकां है एक हिन्दा शिलन: झारशावंडी वनिष्ठ नाशितन, "এ করিরেন, এবং নভশিরে একপার্শে, সম্বন্ধে আরও বিশেষ কথা আছে।" वाका ভাহাতে কর্ণাতও (नन ना, मडांब्र शिवा ध्वकार्ड वनि-लन. "ভট্টাচার্যোরা যে কথা উখা-পন করিয়াছেন, তাহা . সম্পূর্ণ সত্য; রাজকুমার আমার পুত্র নহেন। রাণী মৃতক্তা প্রস্ব করিয়াছিলেন, আমি বিশেষ করিয়া তদত্ত করায় সকল কথা কানিতে পারিয়াছি; অদ্য ভট্টাচার্যাদিগের আসিবার কথা আছে—এখনই আসি-বেন; আমার ইচ্ছা বে ছেলেটকে পোরাপুত্র লই।"

এই কথা গুনিবামাত্র সভাসদ সকলে
বিমর্ব ছইলেন। দেওরান্ মহাশর জ্ঞকূটী
করিয়া একবার রাজার দিকে কটাক্ষ
করিলেন, কিন্তু কোন কথা বলিলেন না।

এই সময় পিতম পাগলা আদিয়া উপস্থিত হইল। কেছ তাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিল না দেখিয়া সে একপার্থে দাঁড়াইয়া একবার রাজার দিকে, একবার চূড়া ধনের দিকে চাহিল; কিছুই বুঝিতে না পারিয়া ফিরিয়া যাইবে কি অপেকা করিবে ভাবিতেছিল, এমত সময় রাজা বলিলেন, "পিতম, আমার দশা এখন ভোমারই মত হইল।"

পিতম দেওরান্কে বিজ্ঞাসা করিল, "কি হইরাছে ?"

দেওয়ান্ কোন উত্তর দিখেন না। একজন সভাসদ বলিবেন,

"রাজকুমার ভট্টাচার্যাদিগের পুত্র আমাৰ হইয়া গিয়াছে।''

ওনিবা যাত্র পিত্য হাসিরা রাজার দিকে চাহিরা বলিল, "আপনার সত" রাজা ছই একটি দেখেছি, কিছ এমন স্বর্জা দেওরান্ আমি কখন দেখি নাই।" দেওরান্কীর কর্ণে শেব কথাটি গেল। দেওরান্ আপনা আপনি বলিলেন, " আমি সভাই অক্সা দেওয়ান্।"
রাজা। এ সকল কথা যাক্, এখন
কি কর্ত্তব্য ভোমরা আমার পরামর্শ
দাও। আমি কিছুই ব্ঝিতে পারিতেছি না।

পিতম। পরামর্শ আপনি এখন কেবল চূড়াখনবাবুকে জিঞ্জাসা করুন। চূড়াখনবাবু বড় পরামর্শী। চূড়াখনবাবুণ ভুবনেশ্বের পরাম্শী।

এই কথা শুনিবামাত্রই চূড়াধনবার্ কলের পুত্তনীর স্তায় সহসা উঠিয়া দাড়াই-লেন। দেওয়ান্ চূড়াধনবার্র প্রতি এক-বার কটাক্ষ করিয়া পিতমকে জিজ্ঞাস। করিলেন, "সে কিরপ ?"

পিতম। আমার মনে নাই।

এই বলিয়া পিত্ৰ চলিয়া গেল। कछकमूत्र शिल धक्री कृष्णवर्ग माँज আসিয়া পিতমের পথরোধ করিয়া দাড়া ইল; পিতম যাঁড়কে জিল্ডাদা করিল, ''হৈরব, কেমন আছ ?'' ষাঁড় সুথ তুলিয়া মাপা নাজিল, অল অগ্ৰসর হইয়া পিতমের ऋक्षत्र मिटक शना वाड़ाहेबा मिन; পিত্ৰ বত্নে তাহার গলার হত্তমার্জনা क्रिटिक क्रिटिक विकास क्रिन, ''देखत्र, ভোমার উদরের সংবাদ বল, ভূমি ত আমার মত উম্বপনায়ণলোক, বল দেখি शंक क्ला कि कृषिशाहिल ? आयात मठ वृष्क्रकरम शक्षित्रा कि दक्ष्यम संख्यारं कि वि বাহিলে? ভোষার বড় দেখে, কেহ ভোগায় না ডাকিলেভূমি ৰাও না। লোকে তোমায क्न जिल्हार ? क् प्रि ! ला^{क्न}

ভোমার কি দরকার ? ভোমার বিরাট-মূর্ত্তিতে কে ভূলিবে'<u></u> তোমার কোম-লতা কে দাড়াইরা দেখিবে প্ডোমার এই প্রস্তরন্ত পে নবপল্লবের কোমলতা চিনিয়া কে তোমায় বাহবা দিবে; তুমি चामांत्र निरत्रे प्रम, जूमि এইशान দাড়াও, আমি একবার ন্নান করে অংসি।" °এই বলিয়া পিতম আপনার ঝুলি ভৈর-বের শৃক্ষে ঝুলাইয়া গাত্রবন্ত ভাহার পুঠে ফেলিয়া নিকটন্থ পুকরিণীতে না-मिल। এই সময় অনেক ছেলে আসিয়া जूरित ; তাহারা पूरत माँড़ा हेत्रा टेल तरक बात्र कतिएक नाशिनं, रेखबर ''हानना তলার" বরপাত্তের নাায় গম্ভীরভাবে দাড়াইয়া রহিল, তাহাদের কোন কথা গ্রাহ্ম করিল না। পিতম আন সিলে ভাহার অলসিক্ত পিয়া ভৈত্তৰ পিতমের গ:তালেছন করিতে আরম্ভ করিল। বালকেরা হাসিয়া বলিল, "পিতম, ভোমায় ভৈরব বংগ ভাবিয়া আদর ক্রিভেছে ?' পিত্য হাসিয়া উদ্ভর করিল, 'ভার আসায়কে चानत कतिरव ?" (हासता मकाल এक-वारका वित्रा छेडिल, "आमता आनव क्रिव।" এই विनिधा मकत्नहे भिडमाक মেরিরা ধরিল, কেছ হত্তে, কেছ ভা**ফ্** দেশে, কেহ পৃষ্ঠদেশে চুম্বন করিতে শাগিল। ভৈত্তৰ ভাষা দেখিয়া কিঞ্ছিৎ जनवर्ष्ठ रहेवा शिर्व बीरव छनित्रा গেল।

धरे नमक इंदे हाक्षित्रन व्यक्तिनी

সেখানে আসির। দাঁড়াইরাছিল, ভাহারা
দ্বে দশরণ ভট্টাচার্যাকে দেখিরা রাজপুত্রের প্রসঙ্গ আরম্ভ করিল। ক্রমে পিডমকে একজন জিজ্ঞাসা করিল, "সভাই
কি সাজকুমার দশরথ শর্মার পুত্র গু"
পিতম বলিল, "দশরথের পুত্র রাম।
অনেক দিন তিনি বনে গেছেন।"

প্রথম প্রতিবাদী। পিতম, আমরা ত
কিছুই বৃঝিতে পারিলাম না। ভূমি
এখন রাজবাদীতে গিরা থাক--কি শুনিতে
পাও ? এ রাম দশরথের পুত্র কি ?—না
সে কথা মিথা। ?

পিতম। সে কথা ভ্রনেশ্বর বলিতে পারেন, সে দিন রাত্রে তাঁহার মন্দিরে বসে কথা হয়। তাহা তানিয়া থোদ পাষাণ ভ্রনেশ্বর দশরথকে বারণ করি-লেন; বলিলেন, "চুড়াধনের কথা তানিস্না।"

এই শুনিবামাত্র একজন বালক গা-ইয়া উঠিল, "ভূবনেশ্ব কথা কয়। ছেলে দশরথের নয়।" সকলে হাসিয়া বলিল, "বেশ্বেশ্।" অমনি ভার সকল বালকেরা নৃত্য করিতে করিতে এক্তে গাইতে লাগিল:—

> ভূবনেশ্বর কথা কয়। ছেলে দশরণের নয়।

দশরপ তাহা দ্র হইতে শুনিতে পাইরা তাঁহার সঙ্গীদেব মুথপ্রতি চাহিলেন; ছেলেরা সেইদিকে গাইতে গাইতে যাইতে লাগিল; দশর্প তাহা-দিগকে চীৎকার ক্রিয়া গালি দিলেন>

"এত বড় মজার থেণান" বলিয়া বালকেরা অধিকতর আনন্দে হাসিয়া হাসিরা আরও গাইতে লাগিল; খের म्मत्रथ रुष्ठ रहेक नहेलन। छारात সঙ্গীরা তাঁহাকে নিরস্ত করিতে লাগি-(लन: जिनि क्षेनिर्लन ना एमिश्रा অগত্যা ভাঁহার সঙ্গীরা ভাঁহাকে ত্যাগ করিয়া যেখানে প্রতিবাদীরা দাঁড়াইয়া त्रक (पश्चिष्टिहन, त्रहे निष्क हिन्दन। পিতম বাহা বলিয়া গিয়াছিল, করিয়াছিল তাহাতে সকলে স্থির य मनद्राधंत्र मावि मिथा, व्यथम यथन দশরণ দাবি উপস্থিত করেন, উপস্থিত ব্যক্তিগণ সকলে ভাষাতে আহলাদিত হইরাছিল; রাজার চরিঅসম্বন্ধে সন্দেহ করিবার উপলক্ষ পাইয়া কতই কথা, কতই পরামর্শ, কতই নিন্দা করিয়া-हिन। निना ध मः माद्र भव्य स्थ: मभवर्षित्र मावि **উপলক্ষে** সে হৃথ-ভোগ হইয়া গিয়াছে, আর তাহাতে রস নাই, তখন নিন্দার স্রোত ফিরি-वात ममत्र हरेबाह्य, काट्यरे शिक বাসীরা যথন দশরখের দাবি মিখা৷ वित्रा मत्मर कतिवात उननक भारेन, আবার ভাহারা চরিতার্থ হইল, একলন তখন रनिल, "किंक कथा, अमन कि कथन হইতে পারে ? রাজা কেন পরের ছেলে চুরি করে আনিবেন ? তাঁহার পুত্র না रहेत्व छिनि धनाबारम श्रीयाभूख नहे-তেন; ভাহার কিসের ছ:খ ? - বেশে **এड (इ.म. थाकिएड डिनि (कम मन्नी**-

ছাড়া দশরথের পুদ্র লইতে যাইবেন।
আমাদের ছেলে হয় ত সে স্বতন্ত্র কথা।
এ মিথ্যা দাবি বোধ হয়। টাকা পাইবার প্রত্যাশায় দশরথ এই দাবি
সাঞ্চাইয়াতে।"

দি, প্রতি। তাহার আর সন্দেহ
নাই, নতুবা পিতম এ কথা বলিবে
কেন ? পিতম ত পাগল নহে, পিতম্
সিদ্ধপুরুষ; কেবল ঠাট করে ফেরে—
যেন কতই পাগল, কিছু কিছুই নম—
সকল জানে, ভ্বনেখরের মন্দিরে রাজে
কি হয়েছিল তাহা পর্যান্ত জানে।

তৃতীয় প্ৰতিবাসী। পিতম কি বলিল, আমি বুঝিতে পারিলাম না।

প্রতি। বুঝিতে পারিলে না ?
চুড়াধনবাবু দশরপকে কিছু টাকার লোভ
দেখাইয়া এই কার্য্যে নামাইয়াছেন।
বালকুমার যদি দশরপের সন্তান বলিয়া
জনরব থাকে, তাহা হইলে রাজার
অবর্ত্তমানে চুড়াধনবাবু রাজ্য পাইবেন।

চতুর্থ প্রতি। সেই দেঁতো কটাচ্ন।
হারামজাদা ! তার আমি হাড় ভাজিব—

 এমত সময় দশরপের সঙ্গীরা উপুস্থিত

হইরা জিজ্ঞাসা করিলেন "ব্যাপারখানা
কি,ছেলেরা এ কি বলে ?"

প্র, প্রতি। বাহা সত্য, তাহাই বলে।
চতুর্ব, প্রতি। দশরথ শর্মাকে সঙ্গে
করে একবার রাজবাদীতে যাও, ব্যাপার
শুনিতে পাবে দেখিতেও পাবে। চূড়া
ধনবার ধরা পড়েছেন, দশরধকে ধরিতে

দিপাছী এখনই যাইবে; কিছ ঐ দেখিতেছি তিনি আপনিই ধরা দিতে আসিতেছেন। ভ্রনেখরের মন্দিরে রাত্রে যে পরামর্শ হয়ে ছিল, তাহা এখন প্রকাশ হয়েছে।

দশরপ এই সময় উপস্থিত হইলে তাঁহার সঙ্গীরা বলিল, 'দশরথ, এই সকল জন্ত্র লোকে লি বলিতেছেন, শুন। তুমি কি একদিন রাত্রে ভ্বনেখরের মন্দিরে গিয়া চ্ডাধনবাব্র, পরামর্শ মতে এই মিথ্যা দাবী উপস্থিত করে ছিলে ? তাহা হইলে এই সময় বল, স্থামাদের আর কেন মন্ত্রাপ্ত, একথা রাজসভায় প্রকাশ হইরা পড়িয়াছে।"

দশরথ চারিদিক দেখিতে লাগি-লেন। সকলের মুখপ্রতি চাহিলেন, শেষ পলায়ন-উন্মুখ। এই সময় এক-জন প্রতিবাসী বলিল, "সে ছড়ে বালি! সিপাহীরা আগতপ্রায়।"

দশরথ। আপনাদের সাক্ষাতে বলিতেছি আমি এক পরসা লই নাই;
আমি ত টাকার প্রত্যাণী নই?
এই সমর একজন বালক বৃলিল, "ঐ
সিপাহী আসিতেছে।" দশরথ আর
ফিরিরা চাহিলেন না,পলাইলেন।

৾ঽ৩

দশরণ পনাইলে পর এই সকল ব্যক্তি একত্রিত হইরা রাজসভার উপস্থিত ইইলেন। যে অধ্যাপক পূর্বে দশরথের পক্ষ হইয়া দেওবান্কে মকল বৃদ্ধাত

অবগত করিয়াছিলেন, তিনি অগ্রসর श्रेता याज्यस्य ताजात्क विश्वनन, " यहाताक, जामारतत जनताथ हहेबारक, मनवर्थ वाज्ञानि (भाकविह्यन इहेब्रा কেবল পরের পরামর্শে রাজকুমারকে नांवि कतिशाहित्सन। ज्वतनचंत्रत्र म-ন্দিরে বে পরামর্শ হয়, তাহা এক্ষণে প্রকাশ হইরা পড়িরাছে, আমরা সে পরামর্শের কথা পুরে তনি নাই; তাহা হইলে कनाठ नभत्र वित्र महन আমরা আসিতাম না। দশরথ একণে পলাইয়াছেন, তিনি নিডাম্ভ পরের পরামর্শে এই কুকার্য্য করিয়াছেন; অতএব আমাদের একান্ত প্রার্থনা যে সে দরিত্র আন্ধাকে আপনি ক্ষমা করেন। তাহার অপরাধ গুরুতর নহে, ষিনি তাঁহাকে লওয়াইয়াছেন, তিনিই প্রধান অপরাধী।"

রাজা কথা কহিবার পূর্বেই দেওয়ান্ বলিলেন, "যিনি প্রধান অপরাধী তাহা আমরা জানিয়াছি, এক্ষণে আপ-নারা বিদ্বার হউন।"

ভটাচার্যোরা বিদার হইলে, রাজা থিজ্ঞানা করিলেন, "তবে মৃতক্তার কথাটা কি, আমি ভাল বুঝিতে পারি-তেছি না।"

দেওরান্। এখনই ব্বিতে পারিবেন,
আমি রাফিধাইকে ডাকিতে পাঠাইরাছি। আমার ইচ্ছা যে রাজদাসীদের
ডাকিয়া এই রাজসভার সে সর্বদ্ধে হুই
একটা কথা ভিজ্ঞাসা করা হয়।

রালা। আবস্তক নাই, আমি স্বয়ং ভাহাদের জিম্পানা করে আসিভেছি।

রাজা উটিয়া গেলে, চুড়াখনবার বি্মর্থসুথে ঈষৎ হাসিয়া বলিলেন, "পিত্ম
পাগল বিলক্ষণ ধূর্ত, এক কথা রটাইয়া
ক্ষরথ বাচক্ষতিকে ভাল ভয় দেখাইয়াছে। নিক্ষর পিত্ম পার্গল ম্শ্রথকে
পথ হইতেই তাড়াইয়াছে।"

দেও। সম্ভব। পিতম ধুর্ত্ত না হইলে ভুবনেশ্বরের মন্দিরে যে বে বাক্তি উপ-স্থিত চিলেন, তাঁহাদের নাম রাজসভার বলিয়া ফেলিত।

চূড়াধন। বেখানে আপনার সত দেওয়ান্ উপস্থিত, সেখানে পাগ্লেরও বিজ্ঞতা করে।

দেও। ষেধানে আপনার মত ব্যক্তি থাকে, সেধানে বিজ্ঞতা আরুশাক, ভাহানা ইইলে বিয়াদ্বি হয়।

এই সময় এক্ষন নকিব আদিয়া উচ্চৈঃখনে বনিল, "সভা বরণাত, রাজা বাহাত্র অহস্থ হইয়াছেন।"

সভাতত হইলে রাজা জন্মর হইতে আসিরা এক নির্জন বরে অতি রিমর্বভাবে
বসিলেন। তৎক্ষণাৎ ঘরের ছার ক্ষম
হইল। রাণীর মহলে গিরা রাজা বজ্
যত্রণার পড়িরাছিলেন। রাণীকে স্কৃত
কল্যার কথা জিজানা করিলে ভিনি ফণিনীর জার মাধা তুলিরা রালার প্রতিথর সৃষ্টিপাত করিলেন। রাজা
কিঞিৎ অপ্রতিভ হইরা বলিলেন,
'ব্যায় প্রাতে জ্যোৎস্থাবতী আনার।

বলিয়াছিলেন যে, তুমি এক মৃতক্তা প্রস্ব করিছাছিলে; তাহাই আমি সে কণা বিকাসা করিতেছি।" এই क्था छनिवामाळ बानी अकि क्काराव বলিলেক "ভোগ্যাবতী আমার পরম भक् ; त्मरे क्षेश्रस ब्रहेबिहरू (य, রাজকুমার আমার সন্তান নতে। তাহা-बरे वाम ভট্টাচার্য্যেরা আসিরাছিল। আপনার ভগিনী নিজের সংসার জালা-ইয়া আসিয়াছে, একণে আমার সংসার শ্বশান করিতে বসিয়াছে। ফুশ্চরিত্রা বলে একবার তাহার খণ্ডর তাড়াইয়াছে, এবার আমি ভাড়াইব। আপনি তাড়াইতে না দেন, আমি নিলে সংগার ত্যাগ করে যাব, আপনি ভগিনী লয়ে ব্রিফা ককন।"

রাজা। স্থির হও, আমার বলিতে ভ্ল হইরাছে, হয় ড ভূলে আমি জ্যোৎকা বতীর নাম করিয়াছি।

রাণী। আমি আর সে সকল তোক-বাকা শুনিতে চাই না। এখনই পাকী আনিতে পাঠান, হয় তাহাতে জ্যোৎসা-বতী উঠিবে, নতুবা আমি উঠিব।

এই বলিয়া রাণী বেগে ক্যোৎস্নাবতীব মহলে গেলেন। রাজা কর্ত্তবাকর্ত্ব কিছুই বৃশ্বিতে না পারিয়া বহির্বাটীতে গিয়া বদিয়া রহিনেন।

অপরাক্তে একজন পরিচারিকা সেই কক্ষের হার খুলিয়া ঈবৎ মুখ বাড়াইয়া বলিল, "রাজভাগিনী রাজগৃহ ভ্যাগ করিয়া গেলেন।" রাজা জিঞাসা করিলেন, "কো ধার গেলেন ?''পরিচারিকা উদ্ভর করিল, "কানি না।" রালা উদ্ভরীরবারাচ কু আ বৃত করিলেন। পরিচারিকা চলিয়া গেল।

পরনিবদ প্রাতে রাজসভার সকলে
বিমর্বভাবে উপবিষ্ট আছেল, রাজা জনামনকে কি ভাবিভেছেল, এমতসমর
ক্ষতকগুলি শিবিকাবাছক আসিরা আনাইল, "রাজভগিনী কলা সদ্ধার পূর্ব্বে শিবিকা ত্যাগ করে পদরকে গেলেন, আন
মরা এত মিনতি ক্রিলাম, তিনি ভনিলেন না; বলিলেন, আর আমার
"পান্ধীর প্ররোজন কি গু এখন অ মি
কালালিনী।"

ভনিবামান রাজা গাজোপান করিলেন;
পিতম পাগলা অন্যমনকে দুরে বসে ছিল,
উঠিয়া গেল; এই সমর দেওয়ান্ মহাশরকে একজন আনাইল যে রামিধাই
উপ্রতি। রামি প্রধাম করিয়া যোড়করে
য়াড়াইল; রাজা কক্ষান্তবে বাইতেছিলেন, রামি ধাইকে দেখিয়া নিজ্ঞাসা
করিলেন, 'রাণীর কি সন্তান ভূমিঠ
বইয়ছিল ৮''

রামি ধাই। প্রথমে এক কন্যা। রাজা। ভবে কি রাজকুমার রাণীর গর্ভে ময়ে নাই।

বামি বাই। রাজকুমারও আপনার সন্তান; প্রথমে কন্তা অন্মে, পরে বালকুমার ভূমিষ্ঠ হন। রাণী তথন অ-আন অবস্থার ছিলেন, কন্তাটি অন্মিলে মৃত মনে করে আমরা তাহার সংকার করিতে যাই, সেই সময় কোপা হইতে বিভন পাগলা জাসিয়া তাহাকে লইয়া
পণাইল; রাত্রে একটি ব্রাহ্মণের কঞ্চা সেই
ভূমির্চ হইরাই মরে, তাহার জননী দেই
মৃত সন্ধান কোড়ে করে গুইরা থাকে।
কন্যাটি মরিয়াছে এ কথা বলিলে,
অমনি কন্তাকে কোড়ে টানিয়া চুমা
থার। সে ঘুমাইলে পিতম পাগলা
তাহার কোড়ে হইতে মৃতকন্তা চুরি
কবেমহারাজের কন্তাকে তাহার কোড়ে
রাথিয়া আসে। সেই কোড়ে আপনার কন্তা জীবিতা হয়—অদ্যাপি
জীবিতা আছে, আমরা ভরে এ কথা
এপর্যান্ত বলিতে পারি নাই। এক্ষণে
রাজভগিনী এসকল ব্তান্ত জানিতে
পারিয়াছেন, কালেই বলিতে হইল।

রাজা। এ কি কাও ওনি!

দেও। অসম্ভব নহে; কিন্তু রামি
বলিতেছে যে, মহারাজের মৃতক্সা
বাহ্মণীর ক্রোড়ে দিরা পিতম সেই
বাহ্মণীর মৃতক্সা উঠাইরা লয়, এ
কথার তাৎপর্য্য ভাল ব্রিতে পারিতেছি
না, পিতমকে একবার এই সময়
ডাকিলে ভাল হয়।

রালা। এখনই ডাকিতে পাঠাও; কৈন্ত তাহার নিকট সরল উত্তর পাওরা দার।

রামি ধাই। পিতম পাগলা যখন
ভূমি হইতে মৃতদেহ উঠাইরা লইরা
পলাইন, আমবা ঠক্ ঠক্ করিরা কাঁপিতে বাগিলাম। ভাবিলাম, সঁর্কনাশ
হুইল, পাগলা হয় ত পিশাচ, সকলই

ক্রিতে পারে। তাহার পদ যথন शिक्त मुक्तार गरेता পুৰুৱিণীতে নামিল, তখন আরও ভর হুইল। चांमत्रा भगारेगाम, छटत चात्र व कथा मूर्थ जानि नारे। छारात भन्न जायात ভগিনীর কাছে সকল বুড়াস্ত শুনিলাম। ব্ধন পিত্র বান্ধ্রীর স্থতিকাপারে टाराम करत्र, उथम आमात्र डॉगनी হারাধাই জাগ্রত ছিল, তাহাকে পিডম दनिन, "(कान कथा ध्यकान कतिन्ना তোর ভাল হবে।" তাহার পর যধন পিতম ত্রাক্ষণের মৃতক্তা দইয়া গেশ, ज्यन महात्रात्वत्र कञ्चा कृतिता छेठिन। আমার ভগিনী উটিয়া কলাকে হয় থাও-রাইতে লাগিল।

রাজা। তবে তোমার ভগিনীকে ভাকিতে পাঠাও। পিতম কই ?

একজন পরিচারক বলিল, "পিতম ঐ আসিরাছে।"

রাজা। পিতব,ভূমি আমার ক্সাকে কোথার রাখিরা আসিরাছ?

পিতম। আপুনার ভগিনীকে আ-পুনি কোণার পাঠাইরাছেন ? মরা কভার স্থান লওরা অপেকা জীবিত ভগিনীর তত্ত্ব করা ভাগ।

রাজার চক্ষে জন আনিন। চক্ষু দেশতাগী হা সুছিয়া দেওয়ান্কে বলিলেন, "উলোগ করিক্ষে বন, জোৎসাবতীর সন্ধানে আমি বুলুং বাইব। সে পদবলে কো-ভারে বনে বনে বেড়াইতেছে; আমিও রাজা। ভ পদবলে ভাষার অলুসন্ধানে মাইব। আমার কলা।

আমার ভগিনী এত ক'ষ্ট পাইতেছে, আমি কি বলে গাকী চডিব।"

বেও। পিতম, ভোমার যাহা জি-জ্ঞাসা করি, স্পষ্ট উত্তর দাও; এ সময় পাগলামি কর না।

পিতম। পাগলের পাগলামি আছেই, পাগলের কথা বিখাদযোগ্য নহে। চূড়াধনবাবু কোধা, তাঁহাকে যে আজ বড় দেখিতেছি না।

রাজা। এখন আমার কন্তার স্থাদ বল।
পিত্য। আপনি কোন্কন্যার কথা
বনিতেছেন ?

রামি ধাই। যে কস্তা মরিরাছে মনে করিরা আমরা মাটাতে প্তিডেছিলাম, ভূমি দৌড়িরা আসিরা লয়ে গেলে।

পিতম। কবে ? আমার মনে নাই।
রামি ধাই। ঐ আমার ভগিনী
আসিরাছে। উহার নিকট সকল ওয়ন;
বল্ত লা—এখন পিতম বলিতেছে কিছু
মনে নাই।

হারা ধাই। মদে করে কি হবে, সে কল্পা ভ আর এখানে নাই।

ब्रामा। (कन १

রামি ধাই। পাড়ার লোকেরা ব্রাহ্মণীকে টুদানীং বড় জালাতন করিতে জারভ করিরাছিল। শেষ তিনি মেয়েটা লয়ে বেশত্যালী হরেছেন।

রা**লা। কা**হার বাটীতে আমার কয়া প্রতিপালিত হইত ?

পিতম। আপনার রামকুরকের বা-টীতে।

্যাথা। ভবে নিক্ষুই বাৰ্থীণতা আনায় কলা।

বঙ্গদৰ্শন

্স প্রমবৎসর।

৮১ मःখ्या।

বঙ্গোনয়ন।

পঞ্চম পরিচেছদ। বাঙ্গালাব রোগ।

বাশালার যভপ্রাকার অমঞ্চল আছে, ব্যাপক অর* ভাষাদের মধ্যে সর্ব-প্রাধান।

ছুল্চিকিংস্য গুলাউঠা রোগ লাণাতত:
অধিকতর জন্নাক বলিয়া বোধ হয়
বটে, কিছু বাাপক জ্বরে যজ্ঞপ শারীরিক
ও মানসিক দৌর্জালা হয়, তজ্ঞপ জন্য
কোন-রোগেই হয় না। এই মহারোগের সমস্ত কারণ নির্দেশ করা স্বকঠিন।
নিদান জ্বাং রোগের কারণনির্দি অতি
ইক্ছ শাস্ত। দুশ্বাক্তি একত্র গলানাম যুইতে প্রিমধ্যে বৃষ্টিতে ভিজে।

এক জনের সামান্য জর হয়, এক জন কবি কাবে প্রাণভ্যাগ করে, এক জনের কফের কোপ হয়; এক জনের সাংঘাতিক ফলাকান্দের সঞ্চার হয়। অবশিষ্ট ছয়বাক্তির কিছুই য়য় না। যদি রৃষ্টিতে ভিজাই প্রথমান্ত বাক্তির জরের এক মাত্র কারণ হয়, তবে সকলেরই সামান্য জর কেন না হইল ? বস্ততঃ রোগীর শরীরে নিহিত আভাস্থরিক কারণের অফ্সন্মান না করিয়া কেবল বাহাভৌতিক কারণের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে রোগের প্রকৃত নিদ্বান হয় না। পাক্ষান্তরে ছয়ব্রক্তিকে ক্ষম্ভ দেখিয়া অনেকেই এই সিদ্ধান্ত করিতে পারেম, মে রোগীর শবী-

ু আনেকে এপিডেমিক্ জরকে সংক্রামক জর বলেন। বসস্ত, হাম ও উপ-দংশ রোগের বেমন সংক্রমণ দেখিতে পাওয়া যার, জরের তেমন কিছুই নাই। আনেক ব্যক্তিক এককালে জরাক্রান্ত দেখিয়া, সংক্রমণ সমুমান ফুক্তিসিল্ল নহে। জনবোগীলে প্রশাস করিয়া কাছারও জর হয় না। এপিডেমিক্ জরকে বাাপক 'রের পূর্কাবস্থাই বোগের মৃলীভূত কারণ; বৃষ্টিতে ভিন্না উপনক্ষনাত্র। আনেক कातरन रहारधत प्रेरण छ इस ; उनारेशा পরিদুশান্ত্র কোন একটি কারণ পাধা-রণ লেকে ভানিতে পারে; চিকিৎসক इस ७ माधारण त्याकारशका किছू छात বুংঝন; কিন্তু সমস্ত আভাত্তরিক করে-ণের বিষয় হাত্র্যানী ভগবান্ বাতীত (कर्हे डासिएड शंप्तक मा।

ি(১) ইউবেপীয় চিকিৎসকেরা বলেন धक्रशकाव नागवा विष भावीवश्रद्धा छा-(तुम कतिर्देश भविदाय हुः कृथम क्थम স্বাবিরাধ অংশের উৎপত্তি হয়। এই বিষৰাযুর ন্নে নাকেরিয়া রাজা जित्रकार शिख उरलग शार्टल दिखा**र**्थीशांग কারণ ভূমির নিয়ন্তবের কার্যভা। এই মত স্ক্তোভাবে অন্তেহটক বা না इदेक, हेश (य व्यानकत्व मञ्ज छ। हात गत्महर्गाहै। यागरा च उपक (प्रशिक्षा हि (गंभारम नाश्यक खरतत खर्मिक आधुर्छ। त. (मर्थानकाद वृक्षंभरामित वड़ (उन्न। বিশেষতঃ কচুগাছগুলি দেখিলে বেংগ হয (यन এक এक्षि कलाशारहर्व (उडे इ, এবং সিক্তভূমিবিলাগী রক্তএর ও ভূপায় বিরাজ করে। ভূমির নিয়ন্তর প্রচুর • (salt-water lake) না আকিত, क्षत्र ना शाहेटल बना करू । लाल-ভেরপ্রার এমন তেজ হয় না।

हिमालबाहरलव ममल छल नहीं निवा निर्गेष्ठ इंद्र नार्ने करनक कन जमजन ভূমিতে প্রথেশ করিয়া ভাষাঃক্ষার্ক্র করে; धरे कातरवर दिमालस्त्रत छतारे खन अमा-

নক; এই কারবেই রঙ্গপুর, দিনাঞ্পুর, পূর্বিহা ও চম্পারণের উত্তরভাগ এগন অস্বাস্থাকর। 🔭

अकास्ट्रत हेहा बना याहेट्ड भारत, যে ১২৮৬ সনের ভাজ ও আখিন মাদে নদিয়া জেণা বনায়ে প্লাবিত হইয়।ছিল। সে বৎসরে অবের অধিক প্রাত্তাব না इरेग्रा একবৎসব পরে কেন इन्ते १ এই প্রান্ত্র ক্রমরা কাহারও নি-কট পাই নাই; কিন্তু আমরা বলিতে शांति এই तृश घुठे अविषे छेन : इत्व श्राता ताका निश्चरवत गरण्य भः धन हम् ना।

(২) অগভীর হির বলাশয় মালেরিয়ার অতি প্রধান আকর। বিলমরপ্রদেশে অংবর প্রাছ্রিব এই বাক্যের প্রাত্যক अयान। हेछे:लिएमर्म शन्छिम विन হইতে শরংকালে এত মালেরিয়া উথিত হয় যে রাত্রিকালে পথিকগণ তাহার নিকট দিয়া চলিতে পারে না। চলি-(सहे जर इस्र। जगडीत जनाभग्रयनि लन्। पूरम, हाइ। इहेटल कात्र अविदाराः कत द्व। व्यामारम्ब (मर्म (वाश) वा থার সে সংস্কার আছে, ভাষার মূল এই। ক্লিকাভার পূর্বদিকে যদি ধাণা खाहा इटेरन कलिकाडा अधिकडत याश[.] কর হইছ। কলিক।তার ফিভার হাস পাতাল ভাপিত হওয়ার পুর্বে, ^{রাজ}-धानीत व्यथान व्यथान छाव्यात्रमार्ट्या धक्रवाका के मङ अकान क्रिश्राहितन। মেদিনীপুৰ ফেলার দক্ষিণে হিজ্লির

নিকটবর্ত্তী স্থান যে অস্বাস্থাকর হাহার কারণ এই যে অগাড়ীর লবণান্থ নিকটে আছে। এই কারণেই ২৪ পরগাণা এবং যশোভরের দক্ষিণে স্থানরবন অরাধিকত হইয়াছে। বাপরগঞ্জের স্থানরবন বারণ এই গে তথাকার নদীসকল পদ্মার বেণী; ভারার প্রচ্র অলবনকল সমুদ্রে লইরা যায়। জাম্মে লাভেন্দে প্রদেশ পুর্ব্বে কারণেই অস্বাস্থাকর ছিল। স্থান্থ একপ্রকার হিরোহিত হইয় ছে। ভাহা তেই লাভেন্দে এখন পূর্ব্বিপেক। ভাল হইয়াছে।

करत्रक वरगत स्टेल कर्नल (इश् হগলি ভেলার ব্যাপকজ্ঞরের কারণায় সন্ধান করিয়াছিলেন। তিনি আপন विकालगीटि अवाम कतिशाहिन, "तैकान दकान विद्वात ध्वक्षाद्य विशक्ष ম্বর, অপরপারে কিছুই নাই বলিলে हरा।" शार्क म निकाम। कतिए भारतन. थमन देश्याम कातन कि १ हेश्य हे छव এই ছটতে পারে 'যদি জট আনের ष्यतामा निष्देश अवशा प्रमान इस. उत्त শে গ্রামৈ অধিক রৌদ্র পায় ও যাহাতে * विश्वमकात्वत्र महुनाय चारक, (महे आंभ অংশেক ক্রেড স্বাস্কর। আর সর্ট্যাস ওয়টিসন আছিপর করিয়াছেন, যে वित्तत शार्थ निविष् तुकानि शाकिशा ^{বদি নিবের বায়ু প্রতিরোধ করে;} ভাহা ^{इडे}रच ३ शारमत मणना

্থৈতি নদী ভরাট হওয়া এবং নদীর
্থৈতি নদ্ধ হওয়া মহা ফানিটের মূল।
গত শতাকীতে কাশিমবালার বালালান
দেশমধ্যে সক্ষেপ্রধান বাণিজালান ছিলা।
ইংবেল, ফরাসী, ওলন্দাল, আর্থানী,
দৈনি ও ফিলুবণিকে নগর প্রিপূর্ব গানিক। এখনও ভগ্গ অট্টালিকা, ভগ্গ
মন্দির, ভগ্গ প্রস্তরমর ঘাউ ও বিস্তৃতি গোবস্তান বিদ্যান আছে। মানিভর
হলা, নগর উৎসন্ন গিরাজে। তবে বে
ইহার প্রান্তিন গারব একেবাবে লুগ্র
হল্ম নাই, ছাছা বল্পনাবীভূষণ মহারাণী
স্বব্যরীৰ প্রসাধেন।

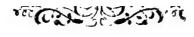
কাশিমণাভাবেৰ ভাগঃপাত্ৰেৰ কারণ **७३ ता अशीवशीमतीय शकि कार्श** रेगगनावारनंत श्रुक्त निक् भिन्ना हिन, जकरन পশ্চিম্নিক দিয়া হইয়াছে: তাহাতে नमीत अटशुर्भा गर्छ गारगतियात जाकत বিল ১টরাছে। নদীব গতি পরিবর্তনের অলকাল প্ৰেট মহামাৰি হয়; একাণেও ঐ নগর জবাকীর্ণ ছনপদ বলিয়া বিখাতি ष्ठार्छ। य्वशिषावान (क्ष्यात (यमन भागीरवीर इंग्निया गांड समिष्ठ हैर-शामन कडिएडरफ, समीवा (जनाय उ सम्बा, (वडना, ७ (कामगाव ध्ववणा, रामाश्य देवरानन वालविष्ठ जनश्य, a शहरावास आमिशका, का छेरे नमी. स्टीनतीय अपदृष्टेश, छशनी दिनास कारामधी अ सबस्र होत हर्गेंडि महा स्वरा-ভোর মূল হটীয়াতে।

আমানের রাজপুরুষণাল বেলপুরে

প্রস্তুত করিয়া আপনাদের উদ্বার রাজনীতির পরিচয় দিতেছেন। তাহাতে তাহাদিগকে সাধুবাদ দিতে ছয়; কিব লুগুপ্রায় নদীগর্জের সংস্কার করিলে দেশের ষত হিত হয়; এমন আর কিছু-তেই হইবে না। লোকে অপেক্ষাক্ত নির্মান কলা গাইবে, নেংকাপ্রে বালি

(फात श्विधा इहेर्द्र, जवर शाटकात दृष्टि इहेत्र। यः तथत नाहे मण्ण इहेर्द्र। श्राष्टिन्गाल् शव्णिक खत्रार्कम् स्मरवत श्राधकारम् जहे कार्याहे श्रारतां कता कर्षता।

e1, e1, 5 1



চাকুরীর পরীক্ষা।

বিবাহ উপলক্ষে যেরপ কুলপরিচয়ের
প্রায়েল হয়, পুর্বে চাকুরী উপলক্ষেও
সেইরপ প্রায়েল হইত। তৎকালে
বিশাস ছিল য়ে; কর্মদক্ষতা কেবল
সংকুলেই সম্ভব, অসংকুলে ছর্লভ।
সে বিশাসের বিশেষ হেতুও ছিল; তৎকালে শিক্ষা কুলগত ছিল, এক্ষণে আর
ভাষা নাই, এক্ষণে শিক্ষা সকলকুলেই
সম্ভব, কার্যদক্ষতাও কাছেই সকল
কুলেই পাওয়া যাইতে পারে। কাডেই
কার্যদক্ষ বাজি নির্পাচন করা কিছু
কঠিন হইয়াছে।

বোগ্যাক্তিকে কার্য্যে নিযুক্ত করা যে আতি কঠিন তাহা সকলের সংস্কার নাই।
সাধারণতঃ বিশ্বংস আছে যে, উপযুক্ত বাজিরাই কার্য্যে নিযুক্ত হুইয়া থাকেন,
কিন্তু বালুারা কিঞ্ছিং বিশেষ স্থানেন,
ভাহাদের মত স্বংগ্র। এইজনা ইংলও

দেশের একজন প্রধান ব্যক্তি আপনাকে
মল্লিছপদে নিবৃক্ত হইবার সম্ভাবনা
বৃষ্ণিরা আপন কর্তবাকার্যার ভালিকার
লিথিয়াছিলেন যে, আমি মন্ত্রী হইরা
কেবল যোগালোককেই রাজকার্যো নিযুক্ত করিব। তিনি জানিতেন যে
এইটি বড় সহজ্ব নহে, ইহার নিমিত্ত
বিশেষ প্রতিক্তা আবেশাক। অযোগা
ব্যক্তিরা অনুরোধের জরপভাকা তুলিয়া
সর্ক্রদাই সর্ক্তি দাড়াইরা খাকে,
ভাহাদের উর্জ্যন করা অতি কঠিন।
এইজনা উপনৃক্ত ব্যক্তিকে কার্গো নিযুক্ত
করা হর না।

ইদানীং বিজ্ঞরাজপুরুষেরা অমুরোধের মূলোচ্ছেদ করিবার নিমিস্ত এবং যোগ্য বাক্তিকে সহজে নিরাকরণ করিবার নিমিত এক উপায় উদ্ভাবন করিবাছেন, বাহা পরীকা। পরীকা একণে সকল বা জোই প্রচলিত হইরা উঠিয়াছে। আমা-দের দেশেও প্রায় ৩২ বংসর হইল কডকাংশে আরম্ভ হইরাছে।

পরীকা দিয়া চাকুরী করা একণকার
নিরম। যাহারা পরীকা দিতে অসমর্থ
অথচ চাকুরীর লোভ রাথে, কেবল
তাহারাই পরীকার বিদ্বেধী হওয়া সম্ভব।
ত দ্বর যদি আরে কেহ ইহার বিদ্বেধী
থাকেন, ভাহা হইলে হেওু অনুসন্ধান
করা আবিশাক।

উমেদার বাতীত্রসভাই অনেক লোকে এই নির্মের বিরোধী দেখা যার;
তাঁহারা মৃক্তকঠে স্বীকার করেন বে,
উপযুক্ত কর্মচারী নির্মাচন করিছে গোলে পরীক্ষাই তাহার একমাত্র উপার।
অথচ আবার চুপি চুপি জিজ্ঞানা করেন,
'ভাল! পূর্মকালের ভেপুটি মাজিট্রেট
অপোকা এক্লকার ভেপুটি মাজিট্রেট
অপোকা এক্লকার ভেপুটি মাজিট্রেটরা
অযোগা কেন? পূর্মেণ্ড তাহাদের
পরীক্ষা ছিল এক্লনেও ত সেই পরীক্ষা
আছে।' আবার বলেন "উকীলদের
পরীক্ষা পূর্মে ছিল এখনও আছে, তবে
পূর্মকালের উকীল অপেক্ষা এক্লনকার
উকীলেরা ভাল কেন?''

এ কথার প্রথমেই আগত্তি হইস্তে ,
পারে যে, একণকার ডেপ্টি সালিট্রেটরা
যে অপেকাক্ত অযোগ্য, অথবা একণকার উকীলেরা যে অপেকাক্ত উপযুক্ত
ভাহার প্রমাণ কি ! প্রমাণ পুরাতন
লোক, এই প্রস্তাবলেশক ভাহার মধ্যে
একজন। যাহারা উভয় সম্বের কর্মা-

চারী দেখিরাছে, তাছাদের প্রমাণ গ্রহণ
না করিবে আর প্রমাণ নাই। কিন্তু
ভারাদের প্রমাণ যদি গ্রহণ করা যায়,
ভারা হইলে স্বীকার করিতে হর যে
পরীক্ষাসন্ত্রেও প্রকণকার ডেপুট সাঞ্জিট্রেটগণ অযোগ্য। পরীক্ষা সত্ত্রেও যদি
একপ হয় ভবে পরীক্ষার প্রয়োজন
থ যোগাবাক্তি নির্বাচন করিবার নিমিত্ত
পরীক্ষা যে একমাত্র উপায় অথবা
বিশেন উপায় ভবে ত'হা নিগ্যা হইল
থ অন্যদেশে পরীক্ষাদারা যোগ্রা লোক
নির্বাচন হইভেছে, কস্ক আমাদের দেশে ভারার
বিপরীত ফল কেন হয় ভদন্ত করা
ভারশাক।

शृःर्स यदकारन जागारनत रमरण छेशः যুক্ত ব্যক্তি বড় পাওয়া ঘাইত না, তখন গ্ৰৰ্ণমেণ্ট উপস্কু লোক সংগ্ৰহ করিতে সক্ষম হইয়াছিলেন; একণে যোগালোক বাঙ্গালার সর্বত শত শত পাওয়া যায়, অথচ যোগ্যলোক রাজকার্যো নিযুক্ত হয় না, ইহার হেতু कि ? এই कथा वहेंग्रा नात्रानिता मधा मर्था (शायान कात्मानन कविया थारकन। व्यत्तिक विश्वाम कश्चित्राह्य (म, शवर्ग-(मणे এकार। हेड्। शृक्ष क अन्त्रयुक লোক নিযুক্ত করেন, তঁ:হাদের মধ্যে क्रिक्वरमञ् अविध এक्ট। कथा हर्षि-याद्य पि प्रदिश्व नाट्य यथन है:-লণ্ডের রাজমন্ত্রিপদে নিযুক্ত ছিলেন,সেই স্ময় এক 1 র তথার কথ। উপস্থিত হয়

(व हेन:७ इहेटड जात जिसक covenanted servant) কৰনাতেডিড সারবাণ্ট পাঠाইবার প্রবোদন নাই, এই সন্দি সাহেবদের বেতনে ভারতবর্বের অনর্থক खानक खर्यगुत्र इहेट्डेट्ड। वित्नवः एक शृष्टिमा किट्डे वे एक त्रम्था (धक्म डे शब्क वाकि (मिथिट शास्त्र) यात्र, धकारन क्यमासारम् क्षिकार्भ कार्या छाहारम् इ उन्त निर्ভेत कता यांहेटक शादा । **डिग**रतिल मा হের তাহাতে ভাবিলেন সনদি চাকরেরা বেত্রস্বারাভারতের অনেক টাকা ইংলওে कानिएक छ, छ। इ। दमत मः भा। कम इहेरन ইংলতের অর্থাগন কদ হইবে। অত এব এই আশস্কায় ডিসরেলি সাহেব গো-পান নিষেধ করেন যে, আর गেন বিশেষ উপযুক্ত বাঙ্গালিকে উচ্চপদ না দেওয়া হয়, তবে এখানে দেখানে ছুট একটি ভান লোককে কর্ম দিলে ক্ষতি নাই दत्रः गा नित्न गिन्छ। इहेर्व। अनिङ्क এরণ অমূলক কথা বাঙ্গালিমহলে রটিনে ভাহার আর আঞ্চর্যা কি ? নিতা याही देव, उ दाव मामामा ব্যতিক্রম (मवडारमन (मशिल त्य वामानिया **ट्याघाट्याभ कटब ट्य वाक्यांग्या ट्याक-**বাহিক্রম निर्माहन সম্বন্ধ সামানা ষে ডিগরেলি 門に変する事 (मिशिस या देश्यक्रक्रमानगरक साम्राध्यान क রিবে ইহার আরে আশ্চর্য কি ? রাজস্থীর গোপন্তান্মতি প্রধে তাহাদের এডদ্র विदेशि (य छीहात्रा ध्यमायात्म , मिला थादकन "धनि (शालननित्यम ना शाकिदन

छट्य वार्यामाट्यमा यो स्मीमार्वेशण त्य (अंगीत लाकरमत्र क्षि कि भेडेम টাকার চাকর রাবেন এক্ষণে সেই খ্রে-बीत लाकामत शर्गातमण हातिमञ পাঁচশত বেতন দিয়া কেন রাখিতেছেন।" আমবা স্বীকার করি ঐ শ্রেণীর লোক क्रां कर्म का विद्वेति मार्था करमक (मणा यात्र वर्षे, किन्न छाहाने (इकृ গ্ৰণ্যেণ্টের কোন কুঅভিদক্ষি নছে: গ্রণ্থেণ্ট নির্পেক্ হট্রা কেবল পরীক্ষারার সেই সকল লোক নিযুক্ত করিয়াছেন। যদি ভাষাতে অতুপযুক্ত बाक्ति निबुक्त इंडेग्रा थात्क उंदन दम দোৰ পরীক্ষার। তাহার পরিচয় সং-(कर्ष (मध्या य.हेटड्रह् । (याभा त्याक निकाष्ट्राव পরীকাই खना मर्कारकृष्ट जिला मरमह नारे कि उभारतानी भवीका अनगान उद्यादिक इन भारे। এই बना जुन इरेटः ए अवर षात्मक मिन शर्गाष्ट्र अहे जून हनिता।

যপন প্রেসাহেব গবর্ণব ছিলেন, তুর্গন এই নিয়ম করা হয় যে পরীকা করিয়া ডেপ্টি মালিট্রেট নিযুক্ত করিতে হইংই, নিযুক্ত করিছা আবার ভাষাদের পরীকা। লাইতে হইটো। পূর্কো এ প্রাথা ছিল না, নিযুক্ত হইবার পূর্কো মার কোন পরীকা হইড না, প্রোসাহেব ভাষা প্রেথম করিলেন, করিয়া ভাবিলেন, আর অযোগ্য লোক ডেপ্ট মালিট্রেটীপদে নিযুক্ত হইটে পারিবে না। নিযুক্তের পূর্কে পরীকা, নিযুহক্তর প্রে পরীকা,

শুনিলে ভাগাই আপাত্তঃ বোধ হয়। किस क्षांगावण : (श्राद्यात नम्स इहेट्डरे बात्र वित्ममत्त्राण करवांशा उ সামান্য লোক নিযুক্ত হইতে আরম্ভ इहेल। श्रिमात्हर त्यांथ इत्र ভारियाः किटलन (य. यांशांता महाश्वनः भारत्ने, याहाता अभाषादम्हे " खुशातिद्यत" (वा-গাড় করিতে পারে, সচরাচর তাহা-রাই ডেপুটিনাজিট্রেট হটরা থাকে; ভাহারা অবোগা হইবেও এ পদপাপ্ত कहेता भारक। कात याकारमन नःभा-(शीवन नार्टे, अपह (याशाना कि टाइावा এ পদ প্র'য় পায় না; অতএব এ কু এ-थात्र भगरवाम कतिवात निभिन्न शननंत मार्ट्य मर्ममाधावनक छाउ कविल्य (य, (म (कह डेक्डा करतन डिनि পू सीएए निम्ननिष्ठ अकृष्टि भरीका विद्रा व्यापनात नाम (छप्छि माजिरहुँही (त:ब-ইরীতে লেখাইতে পারেন, ডেপ্টি गाबिरहें कि तकता (महे शहीरकाछीर्न-(पत (प क्ता याहेटन । वला जानभाक (य शतीकाडि वड़ कठिन नटर, এक है একটু অহ্বাস, रेटिशम धरे भरेगा (गरे, भरीका। णागःदेवत (तर्भ वालदकता कृत्त महः । भन (त्रवता इहेत। वाह्य यादा काशायन करव (कवल সেই সম্বন্ধে এই পরীকা। সরলচেতা ব্ৰেসাহেৰ এই নিয়ম ৰছ কহিলে मामाल क्यांनी, आंधा कृत्याहायगा ना-विश देविन। छाद्यात्रा व्यापनात्मत्र व्यापन ^{গাতা} কানিচ, তাহারা কমিনকাণে হেড

কেরাণী বা হেড মাষ্টার হইবার প্রভ্যাশা করিত না এক্ষণে ভাছাদের কপাল খুলিল, অনায়ালে পরীকা দিয়া ভাছারা ए पृष्टिमा बिरद्वे छ इहेट नाशिन। (क्इ त्रक्त) कतिता अहे नकत (छ्पुंडिएक) "গোৰ গাধা" ৰলিয়া থাকেন। এ मारहत जाशनांत जून भाष वृत्रिशाहितन। कि कृतिन भरत्रे तिरे भन्नीका वस्त कन्नि য়াভিলেন। গ্রের-সকল ভেপ্টিই গাধা নহেন, গুণবান ব্যক্তি অনেকে আছেন गरन्द गाई।

(श मार्क्रवत भन्न काश्रिम मारहन भन-ৰ্ব হুইলেন। তিনি জানিতেন বাজা-নির। শিক্ষাদোষে ত্র্বল অভএব ব্যা-রান শিক্ষার উৎসাহ দিবার নিমিত্ত एप्रिमाबिद्धितिभा वनिर्द्धत भातित्छा-विक दित्र कतिरलन। छोहारमत ध्रेथ-মত: কার্যাপ্রণালী শিক্ষার নিমিত্ত সব্ ভেপ্টপদ নৃতন সৃষ্টি করিলেন, যাহারা व्यथारताहर्ग, मञ्जर्ग, भनमकानरम विन-ক্ষণ পটু ভাহারাই সৰ্ডেপুটি হইবার अधिकाती इहेल। এই পদের নিমিত্ত मागागात्र अतिथ खगावनित बाद धकरू चारेन मानि एनरे इरेंदि এ हे तभ विकान के।। यस मारहः (नत्र निक्ठाशन श्रीहात इहेटल आदात গ্রামা সুলমাষ্টার দিগের মধ্যে উৎসাহ পড়িয়া গেল । কের। বি ও মৃত্রিদলের ञ्चिशात खना शवर्तत गारंश्व एक्म पिरलन যে তাহারা করিপ ক্যাবনিদ প্রভৃতি শिका कतिवात निभित्त हुछ ठाहिरल जना- রাসে ছুট পাইবে। স্থবিধার মার সীমা রহিল না। সেই সকল মুছরি, কেরানি, গ্রামাশিক্ষক প্রথমে সব্ডেপ্টি হইরা ক্রেমণে ডেপ্টিমালিট্রেট হইরাছেন। ক্যামল সাহেব হস্তপদের গুণ পরীকা করিয়া ভাহাদের নিযুক্ত করিরাছিলেন ক্রেই জন্য কেহ কেহ রহস্য করিয়া ভাহা-দের "ক্যাম্বলি উট" (Campbell's Camel) বলেন।

কিরপে অযোগ্য ও সামান্য ব্যক্তিরা ইদানীং ডেপ্টিনারিট্রেটি পদলাভ ক রিভে পারিরাছে তাহা বোধ হয় এই সংক্ষিপ্ত পরিচয়দারা অনারাসে অম্ভব হইতে পারিবে। ইংরেক কর্মচারী এ দেশে প্রয়োজন ইহা বিলাতে প্রভি-পর করিবার নিমিত্ত অযোগ্য বাঙ্গালিকে উচ্চপদে আসীন করা হয় নাই। প-রীক্ষা করিয়া ভাঁছাদের নিযুক্ত করা হই-রাভে,যদি ভাহাতে অযোগ্যবাক্তির পদ-প্রাপ্তি হইয়া থাকে সে দোষ পরীক্ষার।

পরীক্ষার দোব গুণ তুই আছে। পরীক্ষার গুণ আছে বলিরা সকল দেশেই
পরীক্ষা আরম্ভ ইরাছে, পরীক্ষা থাকিলে
অক্রোধের বল হাস হইরা বার। একণে
বিনাপরীক্ষার, কেবল অক্রোধের বলে,
আর কেহ মুক্ষেফ হইতে পারেন না।
ডেপ্টিমাজিট্রেটিতে অদ্যাপিনে নিরম বল
বং হর নাই, হইবারও বিলম্ব আছে,
তথাপি ক্রম্ভিণ নৈরম গ্রপ্র
ক্যান্তল সম্বের সম্বের হইরাছিল।
একবার ভিনি এক্সন অস্নাহেবকর্ত্রক

অসুকদ্ধ হইরা বলিরাছিলেন যে, আপানার প্রাতপ্টাকে আদি একারেক ডেপ্ট মালিট্রেট দিতে পারি না, তিনি উপযুক্ত হইলে অনারাসে নেটিব দিবিল-নার্লিদের অর্থাং সব্ডেপ্ট পরীক্ষা দিতে পারিবেন। ডাহা হইলে অরু দিনের মধ্যে ডেপ্টিমাজিট্রেট অনারাসে হইতে পারি-বেন। পরীক্ষার প্রথা ছিল বলিয়া ক্যাম্বল সাহেব অমুরোধে উপোক্ষা করিঙে পারিরা-ছিলেন। পরীক্ষার অকট্যে মিয়ম থাকিলে কেহ অমুরোধ করিতে আইসে না। কাজেই উপযুক্ত ব্যক্তিকে মনোনীত করিবার বাধা কমিয়া যার।

পরীকা সমত ও শ্রেম: বলিয়া সর্বাত্তে वाहिन इटेट बात्र इहेगाइ। वाइड भत्रीका इहेल छाहाहे वरते. किन्द्र त्य व्यनानीएक जामारमञ्ज स्मर्थ भन्नीका আরম্ভ হইরাছে তাহা প্রায় অসমত। যে কাৰ্যো যে গুণ আবদাক ভাষা উমেদারের আছে কি না করাই পরীক্ষা। কিন্তু পরীক্ষার পূর্বে তির করা চাই যে, কোনু পদের নিমিত্ত कि कि खन आवमाक। भूकी एक जारी ন্থির করিয়া পরীকা করিলে সেই প-बीका नार्थक इत्र। नजुरा आगारमद গবর্ণমেণ্ট বেরূপ পরীক্ষা করেন, সেই-রূপ পরীকা অনর্থক। যদি নিয়ম কর यात्र त्य विकिशम (मित्रा "डाक त्रगात" নিযুক্ত করা যাইবে ভাহা হইলে সঙ্গত इत। किंद्व विन वना गात्र, विनिष्ठं भन (म अया याहेदन गानिएडेन দেপিয়া

তাহা হইলে কে না উপহাস করে ?
বলিষ্ঠপদ মন্থ্যমাতেরই প্রয়েলন সদেহ নাই ৷ কিছু মাজিট্রেটী কার্য্যের
নিমিত্ত যে তাহা বিশেষ আবশাক ইহা
কেছু প্রতিপর করিতে চাহিলে কে
ভাহাতে কর্ণপাত করে ?

• গবर्गरमणे व्यरभक्ता (लाटकं भद्रीकक ভाল. णानकाक शवर्गामणे छेकिनित्र চাপ দিয়া ছাডিয়া দেন, তাহার পর লোকে ভাহাদের বাছনি করে। গবর্ণ-মেণ্টের পরীক্ষার তাঁহারা সকলেই যোগা, পরীক্ষায় ভাহাদের মধ্যে লোকে ব অনেকেই অবোগা: তাহাই তাহা-দের ভাবস্থার তারতমা। উকিলদের আইনজ্ঞ হওয়া উচিত সভা, গুটিকতক গুণ তহির তাঁখাদের আর থাকা আবশাক, ভাহা না থাকিলে (करत चारेन चाना दुशा इत। शवर्न-মেণ্ট সেই গুণগুলির পরীক্ষা একেবারে कात्रन ना, काटकडे एमशा यात्र काटरनत প্রীকা দিয়া যোগাতার সার্টিফিকেট হাণিল করিয়াও অনেক উকিল, অযোগ্য বলিয়া আদালতে প্রায় অগ্রাহা হইয়া थारकन; कारमहे विनिष्ठ इहेरव अकरन টকিলের যে পরীক্ষা আছে তাহা ममञ्जूर्व।

তেপ্টি নাজিট্রেটাসম্মেও সেইরূপ।

চাহাদেরও কেবল আইনের পরীকা

ইরা থাকে। কিন্তু সকলেই নিত্য

থিতে পান বে, কেবল আইন জানি

টি নাজিট্রেটি ভাল হয় না। আই-

নজমাত্রেই যদি ভাল মাজিট্রেট হইড, তাই। হইলে পরীক্ষোন্ডীর্ণ মাজিট্রেট-দের মধ্যে আর তারতম্য থাকিত না, সকলেই ভাল মাজিট্রেট হইতেন। কিন্তু প্রকৃতপক্ষে দেখা যার পরীক্ষো-ভীর্ণদের মধ্যে অনেকে অযোগ্য আছেন।

বিচারকদিগের পক্ষে আইন জানার আবশাকতা আছে সত্য, কিন্তু মাজিট্রেটগণ কেবল বিচারক নহেন, তাঁহাদের
অন্য কার্য্যের নিমিত্ত অন্য গুণ আবশাক; কেবল আইনের পরীক্ষায় সে
সকল গুণের পরীক্ষা হয় না; বিশেযতঃ আইনের নিত্য পরিবর্তন হয়,
একসময় গুটকতক আইনের পরীক্ষা
করিয়া ছাড়িয়া দিলে ভবিষ্যৎ আইনসহত্ত্বেও পরীক্ষা হইয়া রহিল এ কথা
বলা অসমত। তবৈ বড় জোর এইমাত্র বলা যায় যে, একবার যে ব্যক্তি
উদ্যোগ করিয়া আইনের পরীক্ষা দিতে
পারিয়াছেন, তিনি উদ্যোগী পুরুর্ব।
উহার শ্বরণশক্তিও আছে।

কিন্ত উদ্যোগ আর স্থানশক্তি কেবল
এই ছই থাকিলেই লোকে বিচারাসনে
ক্রিপুবার যোগ্য হয় এমত নহে। বিচারপতিদের নানাগুণ আবশ্যক, গ্র্বমেণ্ট
তাহার একটিও পরীক্ষা করেন না, বোধ
হয় করিতেও পারেন না। অপক্ষপাতিতা বিচারপতির পক্ষে নিভান্ত
আবশ্যক, একণে ভাহার কোন পরীক্ষা
নাই,এইরূপশত শত বিষ্যের ক্রেশ্টিরই
পরীক্ষা হয় না, কেবল আইদের

भनीका इत्र। अधिक कि (यही गर्सश्रधान, সেই চরিত্রের পরীক্ষাই নাই। তাহাই বলিতেছিলাম গ্রথমেণ্টের পরীক্ষা অতি ष्ममण्यूर्व। এक्षम विठात्रपिक मस्या मस्या কোর্টফি গোগনে আত্মদাৎ করিতেন, হ-ठा ९ थता ना शिष्टित जिनि बमालि विहात-পতির উচ্চ খাসনে খাসীন থাকিতেন. গাবর্ণমেন্ট ভাঁহাকে পরীকা ক্রিয়া বিচারপতির পদ দিয়াছিলেন কাডেই लारक डाँशारक विश्वाम करिएड वाधा, ना कतिरम गवर्गरमण्डेरक अवमानमा कता इया श्रीशांक विश्वाम कविरत्त ला-কের সর্কাশ হয়। এঅবস্থায় সচ্চরিত্র দেখিয়া বিচারপতি করা গ্রন্থেটের कर्खना. लाहा ना कतित्व शंदर्गस्यत्वेत्र विटमंब कृषि। योगा चयागा निहात ना করিয়া রাজপ্রতিনিধিরা চাকুরি বিতরণ करतन, डाहाता रमनात्मत डेभत रमनाम-ह निश यान, किन्द्र शंकारण সে কণ্টক क्फेक हा चित्रा यान। সমাজের অঙ্গে বিদ্ধ হয় তাহাতে বিদেশী গবর্ণমেণ্টের অখ্যাতি অংখা।

চরিতের পরীক্ষা করা অতি কঠিন।
সহংশলতে হইলে সচলিত্র হর, ইহা
পুর্বের বিখাস, অদ্যাপিও সে বিখাস
কতকাংশে আছে। এইকনা গবর্ণমেণ্ট
পুর্বে বংশ অফুসন্ধান করিতেন;
কা যার এক্ষণেও তাহা করিয়া
ঝানেন; কিছ তাহার ফল বড় দেখা
যার রা
আইবে, অনেক লোক
ক্ষেণ্ড উচ্চপদে নিযুক্ত হইতেছে।

বছতঃ ভাহাতে কোন ক্ষতি নাই, যদি কর্মচারী নিজে পবিত্র হন, তবে পূর্বা-शुक्रव अभविख वित्रा कि शंनि ? किछ भनाका अकी दा निष्म भविज्य कि ना, हैश ष्यप्रकात कतिवात्र निमिख भवर्गस्य छ কি উপায় অবলম্ব করিয়া ভাষা আমরা জানি না। चारनरकर धात्रणा (य এই অञ्चलकानमञ्जूक गुन्त মেণ্টের কোন উপায়ই নাই। ছাহা সম্ভব। আমরা শুনিয়াছিলাম যে ডেপুট माशिष्टि भाषाका दिन वाकि गयः शवर्षां कि दक्षात क्षम कि हो है नावि-"ডিমি অফিসিয়াল" পত্র লিখিরাছিলেন, मासिट्डेंडे गाह्य (म वाकित्क निष् অঞ্লে তথাকার ডেপ্টিমাজিট্রেটবে সেইরপ এক পত্র লেখেন। ভেপ্ট্রাঞ্ ষ্ট্রেট খাঁ বাহাত্র নৃতন আসিয়াছেন,কাফ কেও জানিতেন না, কামেই তিনি থানা नव्हेन्टचाक्टात्रक निश्चित, मव्हेनटच ক্টার যথানিয়মে তলবি পরওয়ানা পাঠাই শেন। পরওয়ানা হত্তে ছুইজন করে। वन डिरमनादात वाडी आतिशा नाइ हेल बाबूब हक्क् इब हरेन, करन ৰলদের সঙ্গে অগত্যা তাঁহাকে আসা नाय याहेटल हरेन, छीहात जनत्र^{हा} কারা উঠিল, পাড়ার লোকেরাও "আই विनिद्या विनद्यम नमम यत्पष्टे नश्रूष् अकाम कतिएक नाशिन। (भव ^{कुर्मिन} बाब् भावना मारहरवत्र मञ्जूर्य डेर्ना

इहेरन जिनि छैदित अवदात गरेरड ভারস্ত করিলেন। নাম, ধাম, পিভার নাস, কাতি, পেশা, বিষয়সম্পত্তি, কি विमां, कंड विमां, कंपन हतिवा, चायू शृक्षिक गकन श्रेष्ठ कतित्रा (भव वर्शा-नियाम (बायमारम निशियन य अ ह्यांकि महतिक ७ एक्षराम वर्षे। हेड्रांक एअपूरियबिट्डेरि (मध्या राहेए - शास्त्र ।

এ কথা যদি সভা হয়, তবে রহসোর विषत वर्षे. किन्न चार्क्ण इत। চরিত্রের পরীক্ষা অতি কঠিন, কোন রাজ্যেও তাহা অসম্পর হর না। ইং-ল্ড ইইভে বিশেষ প্রীকা করিয়া (र मकल मनि मार्ट्रिटक अ (मर्भ अज, याहिए हें छै शाम व निमिष्ठ शांठान इहे-ভেছে তাঁহাদেরও চরিত্রপরীকা হয় বা। বেশ্বলে চরিত্রপরীকার কোন

छिशांत्र नाहे, रमशांत्र त्वांश इत्र मुक्त लाकरे मळविख, मठावानी, धवः मनामद বলিয়া অফুভব করিয়া লইতে হয়। यङक्त डाहात बानाथा व्यहे ना (प्रसिट्ड পাওয়া যায়, ডতকণ এ অভুতৰ ভিয় আর উপার নাই।

আমরা এপর্যান্ত যাহা বলিলাম,ভাহার मःरक्ष्म এहे (य अञ्चलार " हाकूबी" দেওয়া অপেকা পরীকা করিয়া চাকুরী দেওয়া ভাল। কিন্তু প্রকৃত্ত পরীক্ষা আবশ্যক: যে পরীক্ষা এক্ষরে গ্রন্থ-মেণ্ট করিয়া গাকেন তাহা অসম্পূর্ণ।

আসাদের আর একটু বলিতে ইচ্ছা (य अरवाशा वाकि बाजकार्या नियुक्त হটনে নে কতি, তাহা গবর্ণর সাছেব বা क्रियमत माह्यदा नहा । क्रांड मधा-ভের :



७। 'अन्याना व्यक्तिशन। শক্রণার সহিত তুম্নত্তের প্রণয় অভি-জানশক্রলের বর্ণনীয় বিষয়; জুলি-রটের সহিত রোমিওর তাণ্য রোমিও वरः ख्निरहर्षेत्र वर्गीत विषय। इरे ানি নাটকের বর্ণনীয় বিষয় এক, কিন্ত र्गात थानानी विकित्तः समुद्रस्त थान-

(शंक्ष वाहा शिविषक नारे; दागि वन প্রণয়ের বাহা প্রতিবন্ধক আছে। শকু-खनात व्याजीय असम नकरनतरे हैक्स বে ছ্মান্ডের সহিত তাঁহার বিবাহ হয়; বোমিওর আত্মীর অপন কাহারো ইচ্ছা नत्र (य जूनियारिक महिन जाहात विवाह इस् । এই প্রভেদ বশতঃ রোমিও এবং জুলিরেটে বাহামগৎ মপেকারত প্রবল ; অভিজ্ঞানশকুস্তান অন্তর্ভাগৎ অপেকা-इंड धारम-तामिश धार क्निरम्हे ঘটনার বাছলা; অভিজ্ঞানশকুন্তলে ঘট-नीत चत्रका। (यथीरन चन्द्र महन महन স্থোনে বাহালগতের আবশাকতা কম: যেখানে দৃশ্বিহিরে সেণানে বাহাজগৎ कारक कारबंदे धावत। अधिकञ्च (य नार्टेक वांहास्त्रं नाम्रक्त अञ्चितानी. সে নাটকের ব্যক্তিগণ একখেণীভূক্ত না इहेबा, इहे वा उट्डाधिक श्राफ्तिंक्यी (अ-পীতে বিভক্ত হয়। কিন্তু যে নাটকে বাহা-জগৎ নায়কের প্রতিবাদী নয় সে নাটকের ব্যক্তিগণ বিক্ষ শ্ৰেণীতে বিভক্ত হয় ना । अध्छानमक्छान वाशंकगः नाग-**टक**त श्री हिवामी नट्ट थरः (प्रहे कना অভিজানশকুস্তবের প্রায় সমস্ত বাক্তি धक (मंगीजुङ, इहे अक्षम हाड़ा मकरनहे इश्रास्त्रत चलक छाडानित्रात गरमा पर्म कव मर्साः (भई क्षधान ।

মহর্ষি কণু অভিজ্ঞানশকুস্তলের আথায়িকার ভিতিত্থানীয়। তিনি শকুস্তলার পালক পিতা। শকুস্তলার ঐতিক অদৃষ্ট তাঁলারই ইচ্ছাত্থামী। তিনি ইচ্ছা করিলে শকুস্তলাকে যাব-জ্ঞীবন তপশুর্ঘায় রাণিতে পারি-তেন; তাঁহার ইচ্ছা না হইলে শকুস্তলা কথনই সংসারাশ্রমে প্রবেশ করিতে পাব্রন না। ছ্মুম্ব অব্রে ভাঁহার অভিব্রেম ক্রাত ভইয়া পরে শকুস্তলাকে লাভ ক্রিতে বত্নশীল হয়। প্রকৃষ্ণলাও তাঁ-

হার অভিপ্রায় জানিতেন বলিয়া গুমান্তের প্রশাসলাভ করিতে অভিলামিনী হন। গুমান্ত এবং শক্তলা—এই জুই ব্যক্তির মূলে মহা-ঋষি কণু। মহর্ষি কণু অভিজ্ঞান শক্তালের মেরদান্ত।

कि চমৎকার মেরুদণ্ড। মহর্ষি কণ্কে বৃষিয়া উঠা যায় না। কলনা উ:হাকে अं।টিতে পারে না। চিন্তা তাঁহাকে আয়ত্ত করিতে গিয়া সসম্ভামে স্রিয়া দাড়ায়। তিনি স্বৰ্গ এবং মৰ্ক্তা: তিনি हेहकाल এবং পরকাল; ভিনি পুরুষ এবং প্রকৃতি; তিনি মোছ এবং বৈরাগ্য: ভিনি চিন্তা এবং হৃদয়: ভিনি শান্তি এবং তেজ। মহর্ষিকণ ভারতের এক-कन श्रीभा इनामा अधि। छिनि मःगाताः শ্রম পরিত্যাগ করিয়া, পার্থির স্থপ ভূজ্ कतिया, ज्क्यनीय (जाशनानमा दिनहे করিয়া, জগতের মোচমুগ্ধকারী মায়ালাল काष्ट्रिया त्कानिया. तन्द्र मन, व्याद्या. मक लई जन्नत्मवात्र छेरमर्ग कदियाद्यन पृथितीत स्म, पृथितीत मन्भन, पृथिती यम, পৃথিবীর সর্ব্যাদা, পৃথিবীর গৌব ইছার কিছুই উাহার প্রার্থনীয় ধ্রি বেধি হয় না ৷ এ সকলট ভাঁহার কা मामाना, मुनाशीन, अकिशिश्कर। পাৰ্থিবতায় সমস্ত পৃথিবী মুগ্ধ সে ^{পাচি} বতা তাঁহার কাছে হতশক্তি, হতপ্রভা মহিমাশ্না: পৃথিবীর মে^{[হনী ম}ি **डीहातृ कारक विमुश्च**। लार्थिव ललारः সহিত ভাহার চিন্তা, ভাহার হা^{ন্য, †} ৰায় কৰ্মক্ষমতা, ভাঁহার কিছু^{রই সং}

नाहे। भार्थित भमार्थ छाहात्र हत्क नि-कृष्ठे, क्ष्मियत्वहे (यांगा। डीहांत वृष्टि স্বৰ্গাভিমুখে। তিনি মৰ্ত্তালোকে আছেন কিছ বন্ধলোক ভাঁহার প্রকৃত বাসস্থান। भाषित भाषि छाहारक भतिरबहुन कतिया আছে,কিন্তু তিনি পার্থিব পদার্থের নিকট नाहे। जिनि পार्थित भनार्थ शतिरवष्टिक. কিছ তিনি পার্থিব পদার্থের শাসন অতি-ক্রম করিয়াছেন। তিনি বেন মমুধ্যা-(भक्ता जातक উक्तउत महाभूक: यह नावि भृथिवीत डेकंप्लर्भ विहत्र करतन। তিনি দিবারাত ঈশ্বরের কার্যো নিযুক্ত। वाश, यक, शान, वाताधना—हेशहे তাহার একমাত্র কার্যা, একমাত্র স্থ, একমাত্র অভিলাষ। তাঁহার চিস্তা ব্রহ্ম विषयक, डाँशांत क्षम बक्रावादाधनाय, তাঁহার আশা ত্রহ্মপদে—তিনি পৃথিবী छााश कतिया उत्तरलाटक बहिबाटम । বন্ধবলে ভিনি বলীরান্। তিনি ত্র **८ छत्र नाग्य वीतश्रक्य नन; क** खिन्न-যোদ্ধার নাায় ভাঁহার বাত্বল তিনি শন্তবিদারে অধিকারী নন। থাপি তিনি শক্রদমনে সক্ষম। আশ্রমের সরিকটন্ত পর্কতপ্রদেশ রাক্ষ্য-নামধের অনার্যভাতির বাসস্থান। রাক-সেরা দলবন্ধ হইয়া পর্বত প্রদেশ হইতে षानिया সমরে সমনর আশ্রমবাসীদিগের यककार्यात्र धवः जलकार्गात विष्यार-शामन करता किछ जान्हर्यात वियव थरे रा, यथन महर्ति कन् चाल्राम बारकन उपन छाहाता आध्यभवामीमिश्यत देवति

তাচরণে সাহসী হর না। ছম্মজের আশ্রমপ্রদেশে অবস্থানকালে রাক্ষ্যেরা আশ্রম আক্রমণ করে। ঋষিগণ উপা-রাত্তর না দেখিয়। ছম্মজের বাত্তবলের প্রার্থনার তাঁহাকে জানাইলেন যে— কণুসা মহর্ষেরসালিধাাৎ রক্ষাংসি নঃ

रेष्टिविष्रगुरभामग्रस्ति। (शत्र व्यक्ता) মহর্ষি কণু উপস্থিত না থাকা ছেতু রাক্ষসেরা যাগ্যজ্ঞের বিঘু করিতেছে। কণের কি প্রভাপ! তিনি উপস্থিত धाकित्व ছत्रस्र वलविक्रमभानी बाक्रम-রাও তাঁহার আশ্রমেব নিকট মাসিতে माहम करत ना। छ। हात वाह्य न नाहे। কিছ তাঁহার এমন কোন আধাাত্মিক বল আছে যাহার কাচে বাছবলপ্রধার্ম ত্রাচার মন্ত্রাহতের নাায় হাতদাহদ এবং নিবীর্ঘা। কণাট কাল্পনিক নয়। আধাা-আ্বিক তেজেরছারা দৈহিকশক্তির অপ-নয়ন আমরা সকলেই শ্বরপরিমাণে দেখিয়া থাকি। মহর্ষি কণু আধাাত্মিক শক্তির পূর্ণায়ত প্রতিমূর্ত্তি। काष्ट्र व्यमःशा देनिहकतन श्रेथान त्राक्रम যে মন্ত্রাহত বিষধরের ন্যায় নিজীব **इ**हेब्रा थाकिरव छाहा व्यमञ्जय नय । किन्न (य महाशुक्र रवत कार्छ महत्र महत्र इर्फम-षुत्राहात वसवीर्याहीन छीक्त नीव नाम खर्भामाम এवः खत्र कृत, म महाशुक्रायत महिमात (क हेब्रेखा कतिरव। छै। हात्र अभीम धवः अमाधादन आधा-ছাক শক্তির কে পরিমাণ ্তাছার আধাাত্মিকতার • বিস্তার

গভীরভা কে বুবিয়া উঠিবে। ভিনি রক্তমাংস মন, তিনি আতা: ডিনি মাতুৰ নন, তিনি সন্ত। কিন্তু আধাাত্মি-कछात्र वरण छीहात समन वाहाशाखात, তেমলি বাহাজান। অনতিবিলম্বে শকুন্ত-লার ভাগ্যে বিষম কটভোগ আছে ভিনি ভাষা ভানিতে পারিবাছেন। পারিয়া ভাষার প্রতিবিধানার্থ সোমতীর্থে প্রমন করিরাছেন। ভাঁহার অনুপরিতি-कारल इञ्चल अवः भक्छलात शतिनग्र হটরা গেল। কিছ কাহারও কাছে পরিবয়সম্বাদ না পাইরা ও আশ্রমে আসিয়াই---

जबः डांडकचारान असः व्यक्तियः कि हिमा धुगाडे विकास हिए। विकास মাণস্ম পাবতা এবৰ আছুই প্রিআ। बर्फ्ड स्वित्रभिद्रिषित्रां विष विद्धा घटगा-অবিকা সংবৃত্তা। অজ্ঞ এক ইসি পড़ितक्षिचः जूमः छत्तुत्। मजामः विम-कांगि छि।

क्ष ७ क्था (क्रमन क्रिक्श क्रानि-**(मन १ खित्रमन) वरनन (य डि.नि ५३क्र** प चाकामवानी छनिवाहितना :---इयारञ्जाब्डिश (कर्या मधानाः कृत्यः

. জুব:। অবৈহি ভনমাং প্রকারগ্রিগর্ভাং শনীনিব।। হে ব্ৰহ্মন্ ভোমার ক্যাকে অগ্নিগর্ডা मेशीनভाর नात পৃথিবীর অভাদরের নিমিত সুত্রতনিহিত তেজধারণ করিতে-**८इन स्ना**निख।

यथार्थहे रमवरमारक छकातिकवाका मा ইঞ্জিয়াপোচর ঘটনার আধ্যাত্মিকজ্ঞান 🕈 ध अत्मत भी भारमा धक्रत निर्श्वासन । किन्न चाकाभवागीत व्यर्थ यादारे इंडेक. এ कथा निः भइ हिट्छ वना याहेट शाद (य, (य महाश्वारय आधाश्विक छ। व्यदन তাঁহারই আকাশবাণীতে অধিকার-যাঁচার আধাজিকতা কম তিনি দেশকাল অতিক্রম করিয়া ইঞ্রিয়াগোচর ঘটনার क्षांनलां कतिएक शादान ना। क्क আশ্চর্যা আধ্যাত্মিক তার .গুণে দূরে থা-কিয়াও ছন্মন্ত এবং শকুন্তলার পরিবয়ের विषय सानिएक शांतियाहित्यन । वाहा-জগৎ মহাথবির আহার অধীন -- অংখার णाळाताही-णाजात की कात शमार्थ। यथन व्यक्तिजनगणनार्थ भक्छला (वर्ष-বিনাাদ করিছেছেন, তপন ছইজন ঋষিকুমার ঠাহরে নিমিত্ত মহামূল্য অলহার আনয়ন করিল। গৌত্মী চম্কিতভাবে बिकामां क्रिलान-

वष्ट्र वात्रक कृत्मा धमर। वाहा, नारम, ध नव काथाय भारे मा न!दम छेखत कतित्व-ভাতকাশাপপ্রভাবাং।

खक्रशमांग कांगारशंत्र क्षष्टारव ।" তথনগোত্মী পুনরার बिकामा कतित्वम-किः भानभी मिकि।

তিনি কি ভাঁচার মানসিকশক্তিশারা अ नकन रुघन कतिशाहन १

কণু সানসিক্শক্তিৰায়া সে গকল माकामवानीत वर्ष कि ? देहा कि. एकन करवन नारे वरते; किन्न ग्रेश्न নহমে এ রকম প্রশ্ন হইতে পারে তাঁহার
মানসিকশক্তি যে একরকম অসীম
ভাষা সহফেই বৃথিতে পারা যার।
বাহাজগৎ তাঁহার অপরিসীম অনস্তপভীর আধাাত্মিকতার অস্তর্ত। তিনি
বাহাজগতে না থাকিরাও বাহাজগতের
অধিকারী। তিনি যেন অনস্তাকাশে
উঠিয়া ক্ষুদ্র পৃথিবীকে তাঁহার নথদর্পণয়
করিরা অসীম ব্রহ্মাণ্ডের অ:য়ায় নীন
হইয়া রহিয়াছেন। বাহাজগৎ তাঁহার
নথদর্পনম্ব বলিয়াই তাঁহার বাহার্মভাব
এত অমুভূত। পৃথিবী কেমন করিয়া
ভাহার ইয়ভা করিবে ?

কণু ধীর এবং গন্তীরস্বভাব। ইহা তাঁহার আধ্যাত্মিকতা এবং চিস্তাশীলভার ফল। অন্তর্দশী আত্মাপ্রধান ব্যক্তি-माटक है शडीत हरेया थाटक। শাৰ ব্যক্তি ধীর। অভিজ্ঞানশকুসুনের চতুর্থ অঙ্ক পাঠ করিতে করিতে কলের ধীর এবং গম্ভীর স্বস্ভাব দেখিয়া মোহিত •হইতে হয়—মন সম্ভনে পরিপূর্ণ হইয়া উঠে। বোধ হয় যেন কোন পুরাতম मश्यूकरवत मन्द्र्य माड़ाहेशा चाहि-क्रमात्र क्रायत मधात हरा ना,मान हरा त्यन তাঁহার কাছে আসিয়া উন্নতি . এবং পৰিঅভালাভ করিয়াছি, অথচ তাঁহার निक्छ याहेट खत्रमा इम्र ना, निक्छ याहेवात व्यव्यागा विलग्ना मृद्य माजाहेता তাঁহাকে দেখিয়া মন্তাহতের पंक्रिक इब, क्ष्म जागरम, मजरम, ভজিৰুসে, প্ৰীভিতে পরিপ্লভ হইয়া উঠে। শকুওলা আশ্রম ইইতে যাতা করিভেছেদ। এক সরোবরের ধারে আসিরা শার্করিব কণুকে বলিলেন বে, তাঁহার আর শকুত্বার সঙ্গে সঙ্গে আসা কর্ত্তব্য নয়। তথন কণু একটি বৃক্ষ মূলে বসিয়া মনে করিলেন যে, ছম্মন্তকে পাঠ ইবার উপযুক্ত সম্বাদ একটি স্থির করা আবশাক হইতেছে। এই মনে कतिया िष्ठा कतिए नागिरनन। (तम, দর্শন, পুরাণ প্রভৃতি শাস্ত্রসকল যিনি মহন করিয়াছেন এবং উন্নতজ্ঞান বাঁহার প্রাণবায়ু তিনি আবার চিন্তা করিতে-ছেন যে কি রকম কথা বলিয়া পাঠ।ইব। ধীর এবং গভীর চিস্তাশীলবাক্তি ভিন্ন (कहरे अ तकम करत मा। देश करन्द्र অসাধারণ চিস্তাশীলভার প্রমাণ এবং কবিকল্লিত ত্মস্ত-চরিত্রের মহিমার প্রতি-পোষক। চিন্তা করিয়া মহাঋষি ছল-ত্তকে এই কপা বলিতে শাঙ্গরৰ এবং भारव करक से शाम भिरम :-अजान् माधु विविद्या मःयग्धनाष्ट्रेकः

ৈ কুলংচাত্মন ভ্ৰমস্যাঃকথমপাবাদ্ধবক্কভাং ক্লেহপ্ৰবৃত্তিং চ তাম্।

সামান্যপ্রতিপত্তি পূর্ব্বকমিয়ং দারেরু দৃশ্যা **তরা**

ভাগ্যায়স্তমভঃপরং ন ধলু তথাচ্যং বধু-বন্ধুভিঃ া

আমরা তপোধন, আমাদিগকে চিন্তা করিয়া, ভোমার উচ্চবংশকে চিন্তা ক-রিয়া, আয় স্থায়ংখনেরী যাহা কোন- রূপে ঘটাইয়া দেয় নাই, শক্তবার সেই মেহপ্রবৃত্তি চিস্তা করিয়া ভূমি ভার্যাাগণের মধ্যে সমান আদরে ইইাকে দেখিবে। ভাগ্যে থাকে ইহা অপেকা অধিক হইবে, বধুবন্ধগণের ভাহা বলা উচিত হয় না।

ষেমন মহাপুরুষ, কথাও তেমনি मरुष्पृर्व। भक्षना करन्त्र धानवाशू — 'কণুসা কুলপতের চহুসিতমু।' কিন্ত কণু শকুৰলার নিমিত্ত কি রকম সংখের কামনা করিলেন ? তিনি এমন কামনা कतिरान ना (य इच्च ड डाहारक महिरी) শ্রেষ্ঠ করেন এবং অনাান্য ভার্যা অপেকা অধিক ভালবাদেন। এত লেহের বস্তর নিমিত্ত সেই কামনাই चाडाविक এवः चात्र (कह इहेरन (महे কামনাই করিত। কিন্তু ভিনি তাহা क्त्रिरान ना, रकन ना रंग कांगना অবিচার, পক্ষপাতমূলক। चनाव, भक्षना डाँशंत जागरतत्र वज्र । किन्न তাই বলিয়া তাঁহার মত মহাপুরুষ ্শকুত্তলার স্থাবে অভিলাষী হইয়া অপ-রের ক্ষতি এবং অনিষ্টকামনা কয়িছে পারেন না। শকুত্তলা তাঁহার যতই সেহের বস্ত হউন না, তাহার এইমাত্র কামনা যে ছুম্মন্ত ভার্যাগণের মধ্যে **मक्डमारक मगाम जागरत रार्थन।** শকুম্বলার ভাগ্যে তাহার অধিক থাকে, ভাগাওৰে হউক, তিনি সে কামনা করিতে পারেম লা। ধার্মিক মহাপুরু-व्यक्त विश्विभव्रवेभ इहेबा स्माहास हैन-

मा। धर्मात नारम छोहारमत स्माह-बान चन्ना इटेबा वात । छांदारात िष्टा नकननगरबर्धे नाविम्नक। नावाञ्-বর্তিতা উচ্চ, পরিশুদ্ধ চিম্বার আধান ध्यरः ध्यक्तं नक्ता (म नक्ता महर्वि करन्त्र विखाद विष्मबद्धार्थ बाब्धनामांन -- (कन ना भक्छना-क्रेश अकृष्टि विवय মোহোৎপাদক বস্ত তাঁহার ন্যায়ায়বর্তি-তার প্রতিবৃশ্বী আছে। তাঁহার চিন্তার উচ্চতা, উদাৰতা এবং ন্যায়ামুবর্তিতা ভাবিরা দেখিলে তাঁহাকে মানবগুরু বলিয়া পূজা করিতে ইচ্ছাহয়। কিছ কণের চিস্তার আর একটি রমণীয় উপ-করণ আছে—সেটি তাহার শকুরলার প্রতি উপদেশে প্রকাশ। সে উপদেশ थहे :--

সা ছমিত: পতিকুলং প্রাণ্য শুশ্রবস্থ গুরুন্ কুরু প্রিয়সধীর্ত্তিং সপদ্মী-ভরে ভর্কুর্বিপ্রকৃতাশি রোবণ্ডয়া মাত্ম প্রতীশং গমঃ।

ভূষিষ্ঠং ভব দক্ষিণা পরিজনে ভাগ্যে বস্ৎসেকিনী যান্তোবং গৃহিনীপদং যুবতলো বামাঃ

्रं क्लमाध्याः ॥

তুমি এছান হইতে ভর্তুলে গিরা গুরুলনদিগের শুটাবা করিও, সপত্নী-গণের প্রতি প্রিরস্থীবং বাবহার করিও, অপমানিত হইলেও পতির প্রতিকুল-চারিণী হইও না, পরিচারকদিগের উপর অধিক অযুক্ল হইও, এবং সৌভাগ্য কালে গর্কিত হটও না। যুবতীরা এইরূপেই গৃহিণীপদ পার। আর যা-হারা ইহার বিপরীভাচরণ করে, ভাহারা পতিকুলের যাতনাম্বরূপ ইইয়া থাকে।

ইহার্তে এই কয়ট গুণের প্রশংসা (मिशिट शांखेश गांहेरकटू महिम, केवात लेडिवार्ड (श्रम, महिक्डा, मग्रा এবং নম্রতা। সহতেই বুঝিতে পারা , यार्र (य এই श्वंब श्वन शाकित्न मः माव-রূপ রঙ্গভূমির সকল স্থানেই মাতুষ गाबूरवत नगाम जीवनयात। निर्देश क রিতে পারে। এই গুণগুলি থাকিলে ७४ कूनवर् दकन, प्रकल खंदणात्र त्ना-क्टे कीवनमूक्त कत्री इटेट शादा। क्नु এकि कूलनधूरक या छेशरमंभ **पिशांट्स ८म् উপদেশ সমস্ত মানব-**ঘাতির সংসারধর্মের মূলমন্ত্র। লেয়া-र्षिम् अपेष अपेष (शांत्रानिय्यत हे अर्प्या में व এত সারবত্তা এবং উপযোগিতা নাই। त्म डेशाल्य मकत्वत्र व्यक्तत्रतीय नय। किन्न करन्व जेशरमरंगत थर्ड डेश्कर्य किरम इहेन? এक ट्रे छाविया (प्रथित বুঝিতে পারা যায় যে ইহার উৎকর্ষের প্রধান কারণ ছাদয় অপবা হাদয়ের কাছে ষার্থপরতার অপলাপ। গুরুজনের প্রতি गञ्जम--- हेहात कार्य, व्याचागतिमात मण्णून অপচয়। পতিকর্ত্তক অপমানিত হই-ণেও তাঁহার প্রতিকুলাচরণ না করা---हेशंत्र भर्य, (अर्ड व्यवः व्यित्रयाक्तित असू ^{রোধে} **আত্মান্তি**মান পরিত্যাগ করা। পরিচারকদিগের উপর অধিক অমুকৃণ

र छंगो-रेहांत्र अर्थ, मतिलं छेनकांत्रदकत উপকার করা। সৌভাগ্যকালে গর্বিত না হওয়া—ইহার অর্থ, অপরের সহিত र्वनाय जाननारक वड़ मान ना कता। আর সপত্নীর প্রতি প্রিয়স্থীবং ব্যবহার केंद्रा—हेशव अर्थ (य कि চমৎकांत्र তাहा कि विलव ! हेहात अर्थ, Love thine enemies—যে কথা বলিয়া-ছিলেন বলিয়া কোটা কোটা হ্বসভা এবং উন্তমতি মহুষা এখনও যিশু-এীষ্টকে ঈশ্রের অবভার বলিয়া পূজা করিতেছেন! এর কাছে কি পোলো-नियदमत छेर्नातम माँ जाय ? दम छेर्नातम হৃদর কোথার ? সে উপদেশে জগতের আত্মা কোথায় ? আবার এই উপদেশ দিয়া মহাঋষি জিজাসা করিতেছেন :--कंथः वा शोजभी मनाद्य।

এই কথার গৌতমীই বা কি বলেন ?
রমণীর কর্ত্তবাতাসম্বন্ধে উপদেশ দিয়া
ছেন বলিয়া মহর্ষি রন্ধা এবং প্রবীণা
গৌতমীর মতসাপেক্ষ—গৌতমীকে আপ্রনার অপেক্ষা যোগাতর উপদেষ্টা বলিয়া
বিবেচনা করিতেছেন। ইহাও তাঁহার
নম্রতার এবং নাায়ার্য্বর্তিতার অক্রর
পরিচয় দিতেছে। উচ্চতা, নাায়ার্য্র্ন
বর্তিতা, নম্রতা, গভীরসহৃদয়তা, ধীরতা
এবং সতর্কতা কণ্বের চিস্তার প্রধান
লক্ষণ এবং উপকরণ।

ফলত: কর্ণের হাণর একটি আশ্চর্যা পদার্থ। সকল বস্তু, সকল জীব, সমস্ত জগৎ তাঁহার ভক্তি সেহ এবং আদরের জিনিস। শকুস্কলাকে বিদায় দিবার কালে
ভিনি আশ্রমের তর্গলতা প্রভৃতিকে
সম্বোধন করিয়া বলিতেছেন:
শাতুং ন প্রথমং ব্যবসাতি জলং যুদ্ধাস্বপীতেরু যা

নাদতে বিষয়গুনাপি ভবতাং লেহেন যা প্রব্যা

খাদ্যেব: কুম্বন প্রবিদ্যায়ে যস্যা ভ্রত্যংস্ব:

সেরং যাতি শকুয়লা পতিগৃহং মার্কেরের জনায়তাম্॥

তক্লতার প্রতি শকুস্তলার ক্ষেহ এবং ভশ্রমার উল্লেখ করিয়া মহর্ষি কণু আপ नात क्षाराव कि हमश्काविष्ठे प्रशाहे (लन! (म जनम यथार्थ रे मक्षलात হৃদ্যের নায়ে তকলতাকে ভালবাদে এবং তক্ষতাব, নিমিত্ত ভাবে। এবং সেইজনাই মহবি কণু আজি তকলভার কাছে শকুস্তলাকে বিদায় দিবার অন্ত मजि आर्थना कविष्ट्रहरू। - एक्ल्इार আতি মহর্ষি কলেব জদয় সেহ এবং ভক্তিরদে পরিপূর্ণ। তিনিই ত শকুত্ব-লাকে তর্গতার ভ্রম্বায় নিযুক্ত করি-য়াছিলেন। বেমন তর্লতার প্রতি ভেম্নি পশুপকীর প্রতিও তাঁহার মেছু ' এবং মমতা। তিনি আঞ্রের সমস্ত মুগ মুগী এবং মৃগশাবকের ইতিহাস कारनन। यथन भक्छनात পশ্চাছाগ. হইতে তাহার পুত্রসম মৃগটি তাহার বস্ত্র ুধরিয়া টানিল তথন তিনিই ত পকুত-नारक विन्तिन (य:-

যদ্য তথা ত্রণবিরোপণ্নিস্পীনাং তৈলং নাষিচ্যত মুখে কুশস্চিবিদ্ধে। শ্যামাকম্টি পরিবর্ধিতকো জহাতি সোহয়ং ন পুতারতকঃ পদবীং মুগতে ॥

বংসে! বাহার মুখ কুশাগ্রহারা বিদ্ধা হইলে ভূমি ক্ষতশোষক ইঙ্গুদীতৈলগেক করিছে, ভূমি যাহাকে শামাকধানামুটি দিয়া পোষণ করিমাছ, সেই ভোমার ক্ষতকপুত্র মুগ ভোমার অন্ত্রসরণ করিছিছে।

এত খবর যে রাথে এবং এমন করিয়া যে পশুপক্ষীর কথা বলে, পশুপক্ষী যণাথই ভাষার হৃদয়ের বস্ত—সে যথা-থই পশুপক্ষীর পিতামাতার স্থানীয়। শক্সলাও তাই বলেন। তিনি সেই অসুসরণকারী মুগটিকে এই বলিয়া ফিরা-ইযা দিলেন:—

় দাণিং বি মঞ বিশ্ল**চি অং তুমং তাতো** চিন্তাবেক্ষই।

এখন আমি আবার চলিলাম; এখন পিতাই তোমার ভাবনা ভাবিবেন[†]।

নহর্ষি কণু সমস্ত জগৎকে ভালবাসেন,
সমস্ত জগৎকে শ্রদা করেন। তাঁহার
ক্ষায় ক্লেহের উৎস। শকুস্তলাকে বিদায় দিবার সময় তাঁহার হুদ্দ ফাটিয়া
গিয়াছিল। শকুস্তলা যথন তাঁহাকে
সাস্থানাবাকো সম্বোধন ক্রিলেন তথন
তিনি বলহীনা রমনীর ন্যায় বলিয়া
ক্লেলেনঃ—

শমমেষ্যতি নগ শোকঃ কথং মুবত্দে ভ্রাবচিতপূর্বম্

छेछेल शांति विकारः नीवात्रविनः वित्ना-

क्यूट:

বৎবে ! ভূমি পর্নশালার স্বারদেশে বে পুঁজিধানোর পুজোপহার দিয়াছিলে ভাষাহইতে এখন অঙ্কর বাহির হইরাছে। আমি যথন তা দেখ্ব তথন কিরুপে আমার শোকসম্বরণ হইবে!

্ অটল, অনস্ত প্রদারিত, অভভেদী, তৃষ্ণারমণ্ডিভ হিমাচল রবিকিরণস্পর্ণে দরদর ধারায় গলিয়া ঘাইতেছে।

कण मःमात्रजाशी, विषयवागंगागुना, পার্থিবতাপরিমুক্ত, ত্রন্ধিষ্ঠ, ত্রন্ধব, উর্দ্ধা। কিন্তু পৃথিবীতে না থাকি-য়াও তিনি পৃথিবীময়। তিনি পৃথিবীর মায়া ত্যাগ করিয়াছেন, কিন্তু পৃথিবী তাঁহার পরমঙ্গেহ ও এদ্ধার বস্ত। তিনি পৃথিবীর কিছুই চাহেন না, কিন্তু পৃথি-বীর কীটাণুকীটও তাঁহার কাছে আদৃত এবং সন্মানিত। তাঁহার দৃষ্টি অগাভি-মৃথে, কিন্তু এই কুদ্র পৃথিবীও তাঁহার অর্গের অন্তর্ভ । তাহার চিঞা একানমন, কিন্তু জগতের সকলই তাঁহার ব্রেশ্ব অন্তর্গত। তাহার হৃদয় এগ্রেকে, किस बगरक या रायात्न आरह, नकनहें তিনি ঔহার ত্রন্ধলোকে দেখিতে পান। • চিন্তা, কিন্তু তঁ!হারই নাম হাদ্য় ৷ তিনি মোহবিলয়ী তপস্বী, কিন্ত তাঁহারই নাম মা্যা। অপূর্ক मनामी ! व्यान्त्या देवताती !

কণু বেমন ধীর এবং শাস্তপ্রকৃতি তেমনি ভেজস্মী। তাঁহার তেজের প্রা মাণ—শাঙ্করিব এবং শার্থত, কেন না
শাঙ্করিব এবং শার্থত ঠাহারই শিখা
এবং প্রতিনিধি। শাঙ্করিব এবং শার্থ
থতকে আমবা কণেবুব অংশ বলিয়া
বিবেচনা করি, কণ্ইইতে পৃথক্ বাজি
বিবেচনা করি না। এবং সেই কারণে
আমরা শাঙ্করিব এবং শাব্যতের্থারা
কণ্কে বৃষ্টেতেছি। শকুগুলাকে ভূলিয়া গিয়া তল্প যথন উহার সহিত
শকুস্থলাব পরিন্যসম্পুদ্ধ সংক্ষ্পান্থ
করিলেন, তথন শাঞ্করিব অকুডোড্রে

किः कृ इकार्याद्वयाक्षाः

প্রতি বিমুনতোচিত। রাজঃ।

গান্ধকবিবাহর প অনুষ্ঠিত কাথ্যের অপ-শাপ করিয়া ধশ্মের প্রতি এইরূপ বিমুখতাচরণ করা কি বালার উচিত ?

আসমুদ্র ভারতসামাজ্যের স্মাট্কে এ রক্ষ কথা যে বলে সে পৃথিবীর কাহাকেও ভয় কবে না, সে ধর্মবলে বলীয়ান, এহার ভেল এবং মধ্যাহ্রবির ওেল একই বস্তা ভগ্নস্ত যখন আবার ভাহাদের কুষ্ণাই প্রতি অঞ্জ্বাপ্রকাশ ক্রিলেন, তথ্যা এন বলিলেন:

মৃচ্ছ প্তামী বিকাবাঃ প্রায়েণেরবামতেরু।

ক্রম্ব্যিমদমত ব্যক্তি দগেরই এইপ্রকার

চিত্তবিকার হইয়া থাকে।

শার্ক বর ঋষিকুমার। তাঁহার ধনবল; বাহুবল, লোকবল, কোন বলই নাই। কিন্তু তাঁহার কথা শুনিলে নোধ হুয় যে তিনি কোন বলই গ্রাহা করেন না, পার্থিবল, পার্থিবশক্তি, পার্থিবসম্পদ, তাঁহার কাছে কিছুই নর। তাঁহার সাহস এবং তেজ দেখিলে বোধ হয় যে তিনি রাজার প্রজা নন, রাজার রাজা। তিনি রক্তমাংস নন, তিনি প্রক্তনিত ছতাশন। রাজরাজেশ্বর হ্যন্ত যথন তাঁহাকে জিজাসা করিলেন যে শকুন্তলাকে বঞ্চনা করিয়া আমার কি লাভ হইবে, তথন তিনি সজোধে বলিলেন:—

বিনিপাতঃ।

হস্তিনাপুরের রাজবাটীতে অসীমমহিমামণ্ডিত পুরুসভার দাঁড়াইয়া বলিলেন—'বিনিপাতঃ ।' মহর্ষি কণ্ব হিমাচলের ন্যায় দরদরধারায় গলিতেও
পারেন এবং বিস্থবিয়সের ন্যায় ধৃধু করিয়া জ্লাতেও পারেন ! ক্রনা তাঁহাকে
কেমন করিয়া আয়ত্ত করিবে !

যদিও মহর্ষি কণ্বের সম্পর্কে শাঙ্গরব এবং শার্ম্বত একই ব্যক্তি, কিন্তু কণ্ হইতে পৃথক ক্রিয়া দেখিলে তাঁহাদের মধ্যে অতি চমৎকার প্রভেদ লক্ষিত্ত হয়—ছইজনকে প্রকৃষ্টরূপে ছই ভিন্নব্যক্তি, বলিয়া বোধ হয়। অভিজ্ঞান শকুন্তলে তাঁহাদের কথা অতি অরই আছে এবং তাঁহাদিগকে একটির অধিক কার্যা ক্রিতে দেখিতে পাওয়া যায় না। কিন্তু যে স্ক্রপ্রিমিত, স্থান মহাক্রি তাঁহাদিগকে অর্পণ ক্রিয়াছেন, তাঁহারই মধ্যে তাঁহাদের প্রত্যেকের পূর্ব, পরি-

কার এবং ছদ্বোধক বিকাশ দেখিতে পাও্যা ঘাধ। তাঁহারা হুইজনে একই छक्त भिषा, छांशास्त्र पृष्टे स्टान्त सीवन-थानी अक्रे तकम; डाहात्मत हरे. ब्रान्त भिका अवदेशकातः, डाहारमत हरे-ब्दान वामा, जाकाक्का, मक्लरे वका কিন্তু তাঁহারা ত্ইজনে সম্পূর্ণরূপে ভিন্ন-প্রকৃতির লোক। শাঙ্গরিব কিছু বাহ্য-" मनी, भारवा किছू अद्यं नी। निक्त्म, निः मक्, भाष्टिमय आध्यम इटेट आनिया रुखिनाश्रुद्धत अनाकीर्य त्राज्यां प्रतिश्रा ভাগসবয় এক নৃতন ভাব অনুভব করি-লেন। কিন্তু দে ভাব শাক্ষ রবে এক-রকম, শার্ঘতে ভিন্নরকম। শাঙ্গরিব শার্ঘতকে বলিলেন:---তথাপীদং শখংপরিচিত বিবিক্তেন

মনসা
জনাকীর্ণং মন্যে হতবহপরীতং গৃহমিব॥
আমরা নিরবচ্ছিল নির্জ্জনেই থাকি।
এই জনাকীর্ণ গৃহ অগ্নিবেটিত বলিয়া
বোধ হইতেছে।

ভাঁহাদের কিন্ত শার্থত শাস্ত্র বকে বলিলেন:— লক্ষিত অভাক্তমিব: মাত: শুচিরশুচিমিব হুই ভিন্ন প্রবৃদ্ধ ইব স্থেম্। অভিজ্ঞান বৃদ্ধিৰ বৈধ্বগতির্জনমিহ স্থেস্সিন্ম

देविम ॥

ষাত্ব্যক্তি যেমন অস্বাভকে, শুচি যেরপ অশুচিকে, জাগরিত যেমন নিজিভকে এবং বিষক্ত যেমন বন্ধকে দেখে আমি এথানে সেইরপ বিষয়স্থাসক্ত লোককে ব্রিতেছি।

क्रेब्स्टन अक्रे मृभा प्रिथित्नत्, किन् त्म मृथा अक्षान्त मनत्क अक त्रक्रम विव्राचित्र कवित, व्यांत अक्षरत्व मनरक আর এক রকমে বিচলিত করিল। সে দৃখ্য দেখিয়া শার্করবের এক ভয়ানক অগ্নিকাণ্ড মনে হইল; শার্হতের শুচির তুলনায় অশুচি, পবিত্রতার তুলনায় অপবিত্রতা, জাগরণের তুলনায় নিদ্রা **্রিবং মুক্জভাবের তুলনায় দাসত্বশৃত্থল** मत्न इरेल। तम मृभा भौक त्रत्व मत्न বাছ্মগং প্রবল করিল, শারহতের মনে অন্তর্জগৎ প্রবল করিল। সে দৃশ্য শাঙ্গরেবে বাহ্যজগৎমূলক কল্লনাকে মাতা-ইয়া তুলিল; শারহতে অন্তর্জগৎনিহিত চিস্তাশক্তি প্রবল করিল। শাঙ্গরিব সে षु भा क एक शंख्य ना शासा वृत्रितन ; শার্ঘত সে দৃশ্য নৈতিক অথবা আধ্যা-আ্বিক জগতের সাহায্যে বুঝিলেন। শাঙ্গরিব বাহালগতের কবি; শ'রছত অন্তর্জগতের কবি। শাঙ্গরিব বাহাস্ফর্তি; শারম্বত অন্তর্গ ি অথবা আধ্যাত্মিকতা। শাঙ্করৰ এবং শারন্বতের মধ্যে আকাশ-পাতাল প্রভেদ। আমরা যতকণ তাঁহা-দিগকে দেখিতে পাই, ততক্ষণই সেই প্রভেদ লক্ষিত হয়। যখন রাজপুরে।হিত তাঁহাদিগকে হুম্মস্তের সমুখে লইয়া গেলেন তথন শাঙ্গরবই হ্মান্তের গুণ বর্ণনা করিয়া পুরোহিতের সহিত কথা কহি-যখন অভিবাদনাদি সমাপ্ত করিয়া কণুপ্রেরিত সম্বাদ জানাইতে ^{२२}न, ज्थन भात्र द्वारे जारा जानारे-

লেন। যথন ছ্ম্মন্ত শকুস্কলার সহিত পরিণয় অত্থীকার করিলেন, তথন শাঙ্গ-রবই ক্রোধপ্রাজ্ঞলিত বিষধরের ন্যায় জাঁহার উপর বাক্যবিষ্বর্ধণ করিতে আগিলেন। কিন্তু শাঙ্গ-রব যথন উন্মন্তের ন্যায় রাজ্যাজ্ঞেশ্বর ছ্মান্তকে নক্ড়া ছক্ড়া করিতেছেন,তথন শার্ঘতের মনের অবস্থা কিন্তুপ ? তাঁহার এই কথাতেই সে অবস্থার প্রকাশ ঃ—

#গার্গবিব বিরম ত্মিদানীম্।

শকুস্বলে বক্তব্যমুক্তমস্থাভিঃ। সোহয়মত্রভবানেবমাহ। দীয়ভামকৈ প্রভায়প্রতিবচনম্।।

শাঙ্গরিব, ত্মি এখন থাম। শক্সতেন, আমাদের যা বলিবার তা বলিবাম। এই মহামান্য রাজা এইরপ কহিতে-ছেন। এখন যাহাতে ইহাঁর মনে প্রাত্যর হয় এমন কথা তুমি কিছু বল।

শারদ্বত এ সময়েও স্থির, গছীর,
অবিচলিত। তিনি যেন কোন পক্ষেই
নাই। তিনি যেন উভয়পক্ষের মধ্যবর্তী বিচারক! শকুন্তলার যাহা বলিবার
ছিল, চাহা বলা হইল। তাঁহার কথা
শুনিয়াও ত্মন্তের প্রতায় হইল না।
তিনি শকুন্তলাকে চতুরা ছন্চারিণী
বলিয়া গালি দিলেন। শার্করব আবার
রাগিয়া উঠিয়া তাঁহার সহিত বাগ্যুদ্দে
প্রবৃত্ত হইলেন। কিন্তু শারদ্বত নিস্তন্ধ
—তিনি একটিও কথা কহিলেন না।
অবশেষে যথন শার্করব পুরুসভায়
দাঁড়াইয়া জ্ঞানশূন্য উন্মত্তের ন্যায় পুরু-

বংশের 'বিনিপাত' হইবে বলিয়া গ্রহ্জন করিয়া উঠিলেন, তথন শারহত এই-মাত্র বলিলেন ঃ—

শাঙ্গ রব কি মৃত্তরেণ। অমুষ্ঠিতো ওরোঃ সন্দেশঃ। প্রতিনিবর্ত্তামহে বয়স্। রোজা-নং প্রতি।)

ভূদেৰা ভবতঃ কান্তা ভ্যন্ন বৈনাং

গৃহাণ বা। উপপলাহি দাবেষু প্রভুতাস্কভোমুখী॥ গৌতমি গচ্ছাগ্রভঃ।

শাঙ্গরিব, কথা কাটাকাটির আরে দর কার কি ? গুরুদেবের আদেশ অনুষ্ঠান করিলাম। চল আসরা ফিরিয়া যাই। (রাহার প্রতি)

এই তোমার স্ত্রী, ইহাকে একণে ত্যাগই কর বা গ্রহণই কর। স্ত্রীব প্রতি সর্বতোমুখী প্রভূতা আছেই ত।

গৌতমি, চল, আগে আগে চল।

শার্থত আগেও যেমন, এখনও তেমনি—স্থির, গভীর, অবিচলিত। তিনি
দেখিলেন যে, ত্মস্ত ব্ঝিবেন না এবং
তিনি তাঁছাকে ব্ঝাইবার চেষ্টাও করিলেন না। তিনি তর্ক করিবার লোক
নন। তিনি কলহ করিবার লোক
নন। তিনি কলহ করিবার লোক
নন। তিনি শাঙ্গরিবের নাায় তর্কও
করিলেন না, কলহও করিলেন না।
তাঁছার বিখাদ দৃঢ়তম অপেকা দৃঢ়।
অল্ল কথার, সর্ল ভাষার, তিনি সেই
স্পৃঢ় বিখাদ আক্র্যা দৃঢ়তার সহিত্
বাক্র করিয়া চলিয়া গেলেন। বেন

উচ্চত্তম রাঞ্সিংহাসনাপেকা উচ্চত্তর বিচারাসন হইতে অপরাধীর অপরাধ ব্যক্ত করিয়া বিচারপতি উঠিয়া গেণেন! শার্করব মনে করিলে পেরিক্লিস হইতে পারেন, দিমস্থেনিস্ হইতে পারেন, দিমস্থেনিস্ হইতে পারেন মাররাবো—ব্রিটার পার্লিরামেণ্টের ন্যায় মহাসভার সর্বেণিকৃত্ত অলকার হইতে পারেন। শার্বত বিচারপতি,কিত্ত তাঁহার। যোগ্য বিচারাসন পৃথিবীতে নাই। তাঁহার হান আধ্যাত্মিক জগতে। কিন্তু শার্করহান আধ্যাত্মিক জগতে। কিন্তু শার্করহান করিব আরু শার্বতই বল, মহর্ষিকণ্ সকলেরই শ্রেক্টার, সকলেরই অধিনায়ক। মহর্ষি কণ্বের করিবে!

কিন্তু ৰুণু যেমন সেই সকল ঋষি এবং ঋষিকুমারদিগের অধিনায়ক গৌ-ত্মী তেমনি তাঁহাদের অধিনায়িকা। গোত্নীকে বুঝিতে পারা যায়, কিন্তু' বুঝাইতে পারা যায় না। এবং বোধ হয় যে বিদেশীয়েরা ভাঁহাকে ভাল বুঝিতৈ পারেন না। धर्म्बनिष्ठां, প্রাচীনা, গভীর-প্রকৃতি, মাতৃভাবযুক্তা গৌতমী-পরম পৰিত দৃশা! আশ্ৰমে গ্ৰগুলি ঋষি তপত্री আছেন তিনি সকলেরই ভদনী-বৃদ্ধণ—তিনি সকলকেই বাপু, বাছা, যাতু বলিয়া ডাকিয়া থাকেন এবং তাঁ हाता मकरनहे छाहारक समनीवर स्मर **এदः मुम्मान करत्रन। व्यावभाक इहेर**म डीहात काट्ड . आमित्रा खासाब अ कट्डन —যথা শকুস্থলা :--

हैयः अमःवक्षशाविशिः शिवःवनः

षञ्जाय शामभी अ निर्वत हेन्द्रः। भक्रम (यमन छ। शहर क । नवारम এবং দখান করে তিনিও তেমনি সক-লকে ভালবাদেন এবং সকলের ভাবনা শকুন্তলা পীড়িতা—প্রায় উত্থানশক্তিরহিত প্রিয়ম্বদা এবং অন স্যা তাঁহার উত্তপ্তবেহে সুশীতল প্রলেপ •সাথাইয়ং দিতেছেন এবং প্লাপত্রছারা वीक्रन कतिरहरहन। अनिरक शिल्मी তাঁহার মঙ্গলার্থ পবিত্র শান্তিলল আ-নিয়া তাঁহার মন্তকোণরি সিঞ্চন করিয়া স্যত্নভাবে তাঁহাকে আশ্রমকুটীরে লইয়া যাইতেছেন। আশ্রম হইতে যাতাকালে কণ্ড যেমন শক্তবার নিমিত্ত দেবতা-पिरशत यागीसाम आर्थना করিলেন, शोजमी अ एक मिन मकू खनादक वन दिन वी-দিগকে সমন্ত্রমে প্রণাম করিতে ব্লিয়া [°]দিশেন। কিন্তু তার পর আহা বেশী কথা কছিলেন না। একে ত তিনি বেশী কথা কন না, তাহাতে আবার তথন স্বন্ধ: কণু যা বলিবার তা বলিতে-ছেন। কণু বেমন তারার পদমর্যাদা व्राचन, जिनि । जिमनि कृ (वृत भन-মর্যাদ। বুঝেন। তিনি নিস্তরভাবে পিভাপ্তীর সেই ছানরবিদারক বিদায়-मृभा (मिश्टनन। कन् डाहाबरे इट्छ শক্তলাকে সমর্পন করিয়া আশ্রমকুটীরে था जावर्त्तन कतिराम। अधिकानमक्-अल शोडभी धक्षि अधान हत्रिक। भूक्षहित्वर्गाणत मास्य काल्त (य भागती,

জীচরিত্রগণের মধ্যে গৌতমীর সেই भगती। कन् द्यमंत क्षा ध अवः भक्र-স্তলার ভিত্তিস্বরূপ, গৌতমীও দেইরূপ। গোত্মী না থাকিলে নাটকের কার্য্য চলিতে পারে না। গৌতমীকে কণের অংশ বলিয়া বৃষিতে হইবে, কেন না গৌত্মীর সাহায্যব্যতিরেকে কণু তাঁহার নিজের সমস্ত কর্ত্তবা পালন করিতে ध कथात्र चारता धक्रि चर्च षाह्य। भक्छना त्रमगै। তিনি কণে त्र শাসনাধীন বটে। কিন্তু গৌত্মীই তাঁহার প্রক্তুত শিক্ষাত্রী এবং नामिका। शुक्रव दमगीरक निट्ड भारतन, किन्ह वमनी खिन्न तमनीटक রমণী করিতে পারে না। শকুস্তলার मश्रदक भोजभी कर्वृत्र अकृष्टि छे९कृष्टे

এখন অভিজ্ঞানশক্ষলের মেরুদণ্ড
পাওয়া গেল। মহর্ষি কণু সেই মেরুদণ্ড, এবং গৌতমী, শাঙ্করব এবং শারঘত সেই মেরুদণ্ডের অন্তর্গত। সে
মেরুদণ্ডের এক অর্থ মহর্ষি কণু আর
এক অর্থ ইহলোক এবং পরলোক, স্থল
এবং স্কুল, জ্ঞান এবং মোহ, স্ত্রী এবং
পুরুষ, শান্তি এবং তেজ, স্বর্গ এবং মর্ত্রা।
সেই মেরুদণ্ডের অর্থও তাই।
সেই মেরুদণ্ডের অর্থও তাই।
সেই চমংকার মেরুদণ্ডের উপর নির্ভ্র করিয়া ছ্মন্ত শকুন্তলার সহিত মিলিত
হইলেন। প্রিয়ম্বদা এবং অনুস্রা সেই
মিলনকার্গ্যে গ্রুমন্ত এবং শকুন্তলার চক্ষ

कर्मचक्रण । डीशास्त्रं माशास्त्रहे छ्ज्ञछ भक्षनारक हिनिद्यन धरः नेक्षना इञ्चलकं हिनित्ननं। व्यित्रवत्। ध्वर অন্তরা পক্তলার প্রিয় স্থী। এমন স্থী কিছ কেই কোথাও দেখে মাই। ছাতি-জ্ঞানশকুন্তন পড়িতে পড়িতে বোধ হয় य भक्छना, श्रित्रयमा, এবং অनस्त्रा এই ভিনটিভে একটি। ভিনটি একত্রে প্রতিপালিত ; তিনটির একত্রে শরন, ভোজন, উপবেশন; তিনটির একই কাল; তিনটির এক চিস্তা, এক হৃদয়। তিনটি পরস্পার যে কত ভালবাদে তা বলিতে পারা যায় না। অভিজ্ঞানশকুত্ত-লের প্রথম হইতে শকুন্তলার আশ্রম-ত্যাগ পর্যান্ত সে ভালবাসার যে কত প্রমাণ পাওয়া যার তাহা বলিয়া শেষ করা যায় না। সে ভালবাসার রকীন দেখিলে মোহে অভিভূত হইতে হয়— মনে হয় বুঝি অর্গে আসিয়া অর্গের স্থ্রকন্তাদিগের ভালবাসা দেখিতেছি। नक्डनां, श्रित्रमां अवः अनस्या अवः म्लाद्वत्र श्रीवराष्ट्र, शत्रम्लादत्र शत्रम्लादत्र নিষিত্ত প্রাণপর্যস্ত দিতে পারেন । এমন সরল পবিত্র এবং মিষ্ট স্বাভাব আমরা আর কোথাও দেখি নাই। কিন্তু সকল বিষয়ে এক হইয়াও তিনলনে তিনটি वाकि। भक्षनात्र वदः वित्रवनात वक्रे বয়স,কিন্তু বোধ হয় যেন অনস্যার বয়স काशामत अर्थका किंदू क्य। नकूखना এবঃ প্রিরম্বন। যৌবনের তরকে পড়িয়া-(इन ; किस त्वांश रम त्यन अनक्षांत्क

সে তরঙ্গ এখনও ভাল রক্ম লাগে নাই, এখনও যেন অনস্থা হইতে সে তর্গ य९किकिए पूरत्र चाहि। नेकुखना यथन তাঁহার প্রিয় বন-জ্যোৎসার শোভা এক-দৃষ্টিতে দেখিতেছেন, তখন প্রিয়খদা অনস্রাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, বল रिष्, व्यन्द्राय, भेक्खना दक्त व्यमन করিয়া সহকারের প্রতি একদৃষ্টে চাহিয়া রহিয়াছে। অনক্রা বলিল, আমি থানি না; তুমি আমাকে বলিয়া দেও। শকুন্তলা যথন একটি বুকের সমুখে একটু হেলিয়া দাঁড়াইলেন, তথন অন-र्या कान कथा वनित्न ना, किछ श्रित्रवता वितासन, नक्छंत्म, अक्ट्रे के-রক্ম ক্রিয়া দাঁড়াইয়া থাক। শকু-खना बिखामा कत्रितनम, (कन। थिय-হদ। উপ্তর করিলেন যে তুমি ঐরকম করিয়া দাঁড়াইয়া থাকাতে ঠিক্ বোধ इंटेडिट एन क्लिन्द्रक्रित अक्षि तम-ণীয় লতার সহিত পরিণয় হইয়াছে। কিন্তু এত রদের কথা শুনিয়াও অন-স্মার মুখে কথাটি নাই। স্থনস্মা কেবল তক্ষতা লইয়াই ব্যস্ত। শকু-ত্তলা অনুস্থাকে তাঁহার বুকের বহুল ,একটু আলা করিয়া দিতে বলিলেন। अन्यम (कान कथा ना विनम्न वकन काना कतिया मिटनन। किंख विवयमा विनाम (य, द्योबरमद टकारत एकामाद পরোধর বিভূত হইরাছে তা আমাকে खित्रधनां तन (मांच मिटन कि हरवा শকুতলা রঙ্গ क्त्रिएक छान वारमनः

वायाग, किंद्ध तक कतिएक शादिन गां; অন্তর্মারক করিতে শেখেন মাই। चन्रुश किছ वानिका वानिका तक्य। ধ্থন ছগ্নন্ত তাঁহাদের স্পুণে উপস্থিত হইলেন, তখন তাঁহারা তিন জনেই কিছু জ্বস্ত ছইলেন। কিন্তু অনস্মাই অগ্রে হুমন্তের সহিত কথা কছিলেন, তাঁহার অভার্থনার প্রস্তাব করিলেন, এবং প্রিরখদা ও শকুত্তলাকে তাঁহার কাছে বৃদ্ধিত আহ্বান করিলেন। সকলে বসিলে পর প্রিয়ম্বদার জানিশার ইচ্ছা হইল যে অভাগত বাক্তি কে ? কিন্ত তিনি নিজে ত্রতের প্রিচয় জিজাণ। ক্রিতে পারিলেন না; অন্ত্রাকে চুপি চুপি বলিলেন, এই মহাশয় বাজিক কে ? অমনি অন্স্যা বলিবেন, আমি জিজাসা করিতেছি, বলিয়াই অকুতোভয়ে এবং অবিচলিতভাবে হ্মজের পরিচয় জি জাগা করিলেন। আবার যথন গুমার শক্-স্তুলার পরিচয় জিজ্ঞাসা করিলেন, তথন शियवना कान कथा वनितन नां, किव অনস্য়া আগ্রহসহকারে শকুন্তলার ইতি-হাস বলিতে প্রবৃত্ত হইলেন। সে ইতিহাস বলিতে বলিতে তিনি একবার লক্ষাবোধ कतिशार्किता किस शतकरणहे आवात " বেমন বলিভেছিলেন তেমনি বলিভে नागितन। किस यथन छ। होत है छि-হাস শেষ হইল এবং হুমান্ত শকুন্তলার गरक करन्त्र अख्यात्र कानिए हाहि-लिन, उथन वानिका आंत्र कान कथा বলিল না, তখন প্রিয়ম্বদা ঠাকুরাণী

घठेकाली कतिए बावस कतिएलम खरः শকুরলাকে লইয়া রঙ্গ করিতে লাগি-लन। उथम इहेट अन्यूष्ट्रा निस्का। ভার পর যথন সকলে আশ্রমকুটীরে যান, তথন শকুন্তলা অনস্যাকে ডাকিয়া वितालन (व आमात्र भाग कृषि। कृषि য়াছে এবং বৰুল গাছের ডালে আটকা-ইয়া গিয়াছে। শকুস্থলার মনে কাঁটা ফুটিমাছে,ঠাটার ভরে প্রিরম্দাকে বলিতে তাঁহার সাহস হইল মা, তাই স্রলা वालिकारक छाकिया वलिरलम । পর যখন শকুন্তলা ছম্মস্তের নিমিত্ত মৃতপ্রায়, তথন অনস্য়া প্রিয়ম্দাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, কি উপায়ে হল্পস্থের সহিত শকুন্তলার সম্বর এবং গোপনীয় ভাবে মিলন হইতে পারে। প্রিয়খদা বলিলেন যে কি রকমে গোপনীয়ভাবে भिन्न इय हैशह विद्वा विषय, मुख्त मिनत्तव विषय कान जावन। नाहै। অনস্য়া যেন চমকিত হইয়া জিজ্ঞানা কবিলেন, সে কেমন কথা ? তথন প্রেয়ঘদা অনস্থাকে বুঝাইয়া দিলেন যে জ্লান্ডের সহিত শকুন্তলার যথন প্রথম সাকাৎ হয় তথন ত্রান্তের হাব ভাবে বুঝা পিয়াছিল তিনি শকুস্তলার প্রতি বিশেষ অনুরাগী। বালিকা অনুসুয়া এত বুঝে না। এখন সব বুঝিল, কিন্তু বুঝিয়াও মিশনের কোন উপায় স্থির করিতে পারিল না। প্রির্বদাঠাকুরাণী मननालाश अखाव कतितना अन्यता সরলা বালিকা, প্রিয়ম্দা পাকা ঘটকী।

তার পব যথন গুল্প উপস্থিত হই-লেন ভখন অন্স্য। তাঁহাকে বসিতে षाञ्चान कतिरलन, किन्न कारकत कथा श्चित्रधनाठाकूवानी कहिए नाशियन। अवरमार्य यथन इश्रष्ठ এवः मक्छनारक निर्कात वाथिया याउया आवनाक (वाध **५हेल उथन आयम्बर्गाठाक्तानीहै.. এक**हा ছল করিয়া অনস্মাকে লইয়া চলিয়া গেলেন। অনস্রাটি কুলের কুঁড়ি— धर्गा क्रिनारे, किंद्ध क्रिंगे क्रिंगे। শকুछना-क्नीं कृषियाटह—किछ বিক্ষিত্পদ্মের নাায় সে ফুলের প্রায় সমস্ত গৌরব পাপ্ড়ি ঢাকা। প্রের খদাঠাকুরাণী গোলাবক্ল-কুড়ি কৃটি शाष्ट्रगाख, किन्छ छ।देख्टे ठाविषित्क স্থান ছড়াইতেছেন! অনস্থার কিছু ভারি রকম প্রকৃতি—-কিন্তু তাঁহার তুলনা व्याद्या शिवयमा श्रामशी ह्राया-তাঁহারও, তুলনা আছে কিন্তু শকুন্তলার ভুলনা নাই - ভিনি নারী প্রকৃতির প্র-ভিমা अथह এकहि जूबनस्माहिनी त्रम्भी। পূর্বপ্রভাবে দেখিবাছি যে অভিজ্ঞান শক্ষলের অভিপ্রায-জড়লগং এবং অন্তর্জগতের সম্বর্গকাশ। অভিজ্ঞান শকুষ্তবে জড়লগতের শক্তি এবং অন্ত: * র্জগতের শক্তি এই ছই শক্তির ছক চিত্রিত হইয়াছে। সেই নিমিত্ত শভি कान मकुछ त्वत छे भना त्वत इहे छि छ। भ আছে। একভাগে জড়কগতের চিত্র व्यर्थाक व्याप्त धारा मक्षानात खेलियिक भिवासक कथा, - शिवद्या धवर व्यनस्या

এই ভাগের প্রধান চরিত্র, কেন না, তাহাদের সাহাযোই ঐ মিলন ঘটিল। আর একভাগে অন্তর্জগতের চিত্র অর্থাৎ মানসিক অথবা আধ্যাগ্রিক হুম্ম স্থের **म**क्तित कथा,--वृक्त कथ्नकी, **মাত**লি ৰতী, এবং অঙ্গীকভিত हे जारम व এই ভাগের প্রধান চরিত্র, কেন না তাঁহাদের দারাই ত্মস্তের মানসিকশাক্ত বিজ্ঞাপিত। কুম্বস্থ ফুগ্ন শকুন্তলার স্মৃতিলাভ করিয়া শকুন্তলার মোহে অচেতনপ্রায় তখন उांशाक (मवभक्रममनार्थ आञ्चान क-রিয়া তাঁহার মানসিকশক্তির काव शतिष्ठम (मञ्जाहेलन। किञ्च ইশ্রদেব অন্তরীক্ষতি। মহাকবি তাঁ-शास्त बन्न ज्यान वा करवन नारे। रेक्ट(५८वत्र माराचा हिन्सूमार्क्ट वृद्यन। মহাকবি তাঁহাকে অস্তরীকে রাখিয়া হুয়ত্তের বারত্বেব চিত্র বেশী জাজ্জ্বা-भःन जनः श्रमश्रधाशै कतिशाह्न। মাতলি ইজ্রের সার্থি। সার্থির কার্গো মাতলি অহিতীয়। স্প্রাক্ষে বণিত রথবাতা মাতলির সার্থিত্বের অপূর্ব পরিচয়। নেত্রবতী প্রভৃতি রাজভক্তি এবং রাজকার্য্যান্তরাপের চমৎকার দৃষ্টাস্ত। বৃদ্ধ কঞ্কী বড়ই মনোহর চরিতা। তিনি রাজদেবায় বুদ্ধ হইয়াছেন। তাঁছার কথা পড়িতে পড়িতে মনে হয় বেন একটি লশীভিবৰীয় অমায়িক এবং গণ্ডীর-প্রকৃতি বৃদ্ধবর যৃষ্টির উপর ভর দিয়া ৰাখাণে টাড়াইয়া বছিয়াছেন। ^{তাহাব}

মুখে তৃত্মস্তেব প্রশংসাধরে না, কেন না গুল্ল যেমন নামেও রাজরাজেখন, কাষেও তেমনি রাজরাজেখন।

অভিজ্ঞানশকুন্তলের উপনাদের আর ও একটি অংশ আছে। অভিজ্ঞানশক স্থালে অন্তর্জাগতের এবং জড়লগতের यूर्क अप्रकार क्यो इटेग्नाहिल। वीव-. প্রধান ছয়ন্তের রিপুর শাসনে পদখলন চ্টুরাছিল। ধর্মাবীর ত্মান্ত রিপুর শাসনে কণকালের জনা ধর্মারপ কণ্কে ভূলিয়া शिशाहित्वन। भकुछनातक-विवाह क-রিতে গিয়া হুল্লস্ত তাঁহার নিজের এবং শকুস্তলার মেকদও ছাড়িয়া দিয়াছিলেন। তাহাতেই ওঁাহার মহাপাপ হইল। নৈতিক নিয়ম অথবা Law ভাঁহার শক্র হইয়া দাঁড়াইল। নিয়ম অথবা Law অতি কঠোর পদার্থ। সেই কঠোরতা ছব্বাসায় প্রতিফলিত। পা ठेकै এইখানে মনে রাখিবেন যে ছক্রাসা छ्यू निष्कत नाम कतिया भाभ (पन गारे, "मामाधिकनिश्रद्यत नाम काविशा अ भाभ नियाकिटलन। नियम (यमन (म-থিতে পাওয়া যায় না, ত্র্বাদাও তেমনি আমাদের চক্ষের অগোচব-তিনি সক लात अमञ्जतात्म मां हा होशा भाग मिया . গেলেন। প্রিয়ম্বদা ছুটিয়া গিয়া শকুন্ত-লাকে শাপমুক্ত করাইবার জনা তাঁহাকে के ज्ञास कदिलान। किंद्र नियम यगन निर्मय जिनि । एक मनि निर्मय। जिनि कान कथा खनित्यन ना, डांशंत क्षार्य দ্যার সঞ্চার হটল না। তিনি কেবল

এই কথা বলিয়া গেলেন যে, অভিজ্ঞানা-ভরণ দর্শন করাইলে শাপের নিবৃত্তি **इटेरा। किन्छ मक्छना रम अ**ख्यान হারাইয়া ফেলিলেন। তিনি সে অভি-জ্ঞান দেখাইতে পারিলেন না। তথক অদৃষ্ট আদিয়া তাঁহাকে এবং চুলুকুকে ष्ट्रमञ्ज्ञ इते अङ्ग कविता अञ् रियाव अप इश्य अधू नियमधीन नगः অদৃষ্ট (chance) অথবা দৈবও তাহার এकটি अधान काद्रन। कि नाली कि পুণাবান, অদৃষ্ট সকলেবই সহায়তা করে, তাহাতে আবাব ত্মন্ত এবং শকুন্তলা মহাজ্মে পড়িয়াও পবিভ্রচিত। মহাক্রি রাজবোটক পাইলেন। অদৃষ্ঠ এবং শকুস্তলাব সহায় হটল। এবং অদৃষ্ট সহায হটয়া তাঁহাদের পতি-পত্নীসম্ম সমস্ত পৃথিবীকে প্রমাণ কবিষা দিল। অঙ্গুরীয় পুনঃপ্রাপ্তিব বিব-वंश अनिशा मकरलाई वृक्षिल (य भक्-স্তলা ওয়স্তের পবিণীতা ভার্যা। এখুন আবশাক হটালে সমস্ত সমান্ত তাঁহাদের প্রিণ্যের যাথার্থা সম্বন্ধে সাক্ষ্যপ্রদান করিতে *সক্ষ। अन्द्यं व জ্ঞান সামাজিক অভিজ্ঞান দাড়াইল। উপেকিত নিয়ম বি-জয়ী হইল। ত্মান্ত এবং শকুত্তলাও थूनिर्मानिक बहेत्सन। अपृष्ठ नियस्त्रत পোষকতা করিল। অভিজ্ঞানশকুম্বলে অদৃষ্টের অর্থ-ধীবর, রাজশালক, প্র-হরিদ্যু, ইত্যাদি। এই কয়জনেব চিজ चिक्ति हमश्कात। कि कथानानीत लागा- লীতে, কি অভাব-চরিত্রে, ধীবর ঘণার্থই ধীবর, প্রাহরিছয় যথার্থই প্রাহরিছয়, রাজ্পালক যথার্থই শালকরাজ—বেশ মজার মান্ত্রম। লোকে বলিয়া থাকে যে সেয়পীয়র কি উচ্চ কি নীচ, কি গন্তীয় কি হাজা, সকল রকম চরিত্রে আঁকিতে স্থানিপ্র। অভিজ্ঞানশক্তল পড়িলে, মহাকবি কালিদাসের সহজেও সেই কথা বলিতে পারা যায়। কণ্, শাক্রব, শারহত, কঞ্কী, ত্রস্ত, শক্তরলা, প্রিয়

ছদা, অনস্থা, রাজশালক, ধীবর, প্রাহরী—এই কর্মণানি চিত্র প্র্যালোচনা করিলে বৃঝিতে পারা যার যে মস্ব্য-চরিত্রের একসীমা হইতে অপর সীমা পর্যান্ত সমস্তই কালিদাদের আয়ন্তাধীন। আবার যথন শক্ষলার পূক্র সর্বাদমনকে দেখা যায় তথন ইহাও বৃঝিতে পারা যায় যে মহাকবি নবপ্রস্ত্রশিশুসন্তান হইতে মুমুবিং বৃদ্ধবর পর্যান্ত সকলের্যান্ত



भानारमा ।

বছকাল হট্ল আমি একবার পালামো প্রাদেশে গিয়াছিলান, প্রত্যাগমন করিলে পার সেই অঞ্চলের বুড়ান্ত লিখিবাব নিমিত্ত ছই একজন বন্ধুবান্ধব আমাকে প্রঃপ্রঃ অন্থরোধ করিতেন, আমি তথন তাঁহাদের উপহাস করিতাম। এক্ষণে আমার কেহ অন্থরোধ কবে না, অথচ আমি সেই বুড়ান্ত লিখিতে বসিয়াছি। তাৎপর্য্য বয়স। গর করা এ বন্ধসের রোগ, কেহ শুনুন বা নাঁ

অনেকদিনের কথা লিগিতে বিনি রাছি, দক্ত শুরুণ হয় না'। পুর্বেলি-বিলে যাহা লিখিতাম, এক্ষণে যে তা-হাই লিখিতেছি এমত নহে। পুর্বে সেই সকল নির্জ্জন পর্ব্বত, কুস্থাতি কানন প্রভৃতি যে চক্ষে দেখিয়াছিলাস, সে চক্ষু আর নাই। এখন পর্বত কেবল প্রস্তর্বয়, বন কেবল কণ্টকাকীর্ব, অধিবাদীরা কেবল কদাচারী ৰলিয়া অরণ হয়। অতএব বাহারা বয়োগুণে কেবল শোভা সৌন্দর্বা প্রভৃতি ভালবাদেন, বৃদ্ধের লেখায় উাহাদের কোন প্রবৃত্তি পরিতৃত্ত হুইবে না।

বখন পালামে আমার বাওর। একাত দ্বির হইল, তখন জানি না যে সেজান কোন্দিকে, কভদুরে। অতএব মাণ দেখিয়া পথ স্থির করিলাম। হাজারি-বাগ হইরা ্যাইতে হইবে এই বিশে চনার ইন্লাও টুাঞ্জিট কোল্গানীর (Inland Transit Company) ডাকগাড়ী ভাড়া কমিয়া রাত্রি দেড়প্রহরের
সময় রাণীগঞ্জ হইতে যাত্রা করিলাম।
প্রাতে বরাকর নদীর পূর্বপারে গাড়ী
থামিল। নদী অতি ক্ষুদ্র, তৎকালে
অলমাত্র কল ছিল, সকলেই হাঁটিয়া
পার হইতেছে,গাড়ি ঠেলিয়া পার করিতে
হইবে, অতএব গাড়ওয়ান কুলি ডাকিতে
থগল।

পূর্ব্বপার হইতে দেখিলাম যে, অপর পারে ঘাটের উপরেই একজন সাহেৰ , বাঙ্গালায় বসিয়া পাইপ. টানিভেছেন, সম্মুথে একজন চাপরাসী একরপ গৈরিক মৃত্তিকা হত্তে দাড়াইয়া আছে। যে বাক্তি পারার্থ সেই ঘাটে অসিতেছে চাপরাসি তাহার বাহুতে সেই মৃত্তিকাদ্বারা কি অক-পাত করিভেছে। পারাথীর মধ্যে বন্য লোকই অধিক, ভাহাদের যুবতীরা মৃত্তি-কারঞ্জিত আপন আপন বাহর প্রতি আড় নরনে চাহিতেছে আর হাসিতেছে,আবার অনোর অঙ্গে সেই অঙ্গাত কিরূপ দেখাইতেছে ভাছাও এক শেষে যুবতীরা হাসিতে দেখিতেছে। रानिष्ठ (नोड़िया ननीट्ठ नामिट्ड । णाशास्त्र इते इति एवं नमीत मन डेक्ट्रिक হইরা কুলের উপর উটিভেছে।

আমি অনামনত্ত্ব এই রক্স দেখিতেছি
এমত সময় কুলিদের কতকগুলি বালক
বালিকা আসিয়া আমার গাড়ী ছেরিল।
"সাহেব একটি প্রসা'' "সাহেব
একটি প্রসা।" এই বলিয়া চীৎ-

কার করিতে লাগিল। ধুতি চাদর
পরিরা আমি নিরীহ বালালি বসিয়া
আছি, আমার কেন সাহেব বলিতেছে
তাহা লানিবার নিমিত্ত বলিলাম, "আমি
সাহেব নহি।" একটি বালিকা আপন
কুদ্র নাসিকান্ত অসুরীবৎ অলকারের মধ্যে
নথ নিমজ্জন করিয়া বলিল, "হাঁ, তুমি
সাহেব।" আর একজন জিজ্ঞাসা করিল,
"তবে তুমি কি ?" আমি বলিলাম,
"আমি বালালি।" সে বিশ্বাস করিল না,
বলিল, "না, তুমি সাহেব।" তাহারা
মনে করিয়া থাকিবে, বে,বেগাড়ী চড়ে,
সে অবশা সাহেব।

এই সময় একটি ছইবংসরবয়স্ক শিশু
আসিরা আকাশের দিকে মুখ তুলিয়া হাত
পাতিরা দাঁড়াইল। কেন হাত পাতিল
তাহা সে জানে না, সকলে হাত পাতিল
য়াছে দেখিয়া সেও হাত পাতিল।
আমি তাহার হস্তে একটি পদ্দা দিলাম,
শিশু তাহা ফেলিয়া দিয়া আবার হাত
পাতিল, জন্য বালক সে প্রসা কুড়াইয়া
লইলে শিশুর ভগিনীর সহিত তাহার
তুমুল কঁন্হ বাঁধিল। এই সময় জামার
গাড়ী অপর পারে গিয়া উঠিল।

বরাকর হইতে ছই একটি কুদ্র পাহাড় দেখা যায়। বঙ্গবাসীদের কেবল
মাঠ দেখা অভ্যাস, মৃত্তিকার সামান্য
ন্তুণ দেখিলেই তাহাদের আনন্দ হর,
অতএব সেই কুদ্র পাহাড়গুলি দেখিয়া
যে তৎকালে আমার যথেট আনন্দ
হইবে ইহার আর আশ্চর্য কি ? বাল্য-

কালে পাহাড় পর্বতের পরিচয় অনেক শুনা ছিল, বিশেষতঃ একবার এক বৈরাগীর আধড়ায় চুণকাম করা এক গিরিগোবর্দ্ধন দেখিয়া পাহাড়ের আকার অমুভব করিয়া লইয়াছিলাম। ক্নারা শুক গোময় সংগ্রহ করিয়া যে স্তুপ করে, বৈরাগীর গোবর্দ্ধন তাহা অপেকা কিছু বড়। তাহার হানে হানে চারি পাঁচথানি ইষ্টুক গাঁথিয়া এক একটি **हुड़ा कता इरेग्राइड । आवात मर्स्वाइड** চুড়াৰ পাঁৰ্যে এক সৰ্পফণা নিৰ্দ্মাণ করিয়া ভাহা হরিত, পীত,নানাবর্ণে চিত্তিত করা হইয়াছে, পাছে সর্পের প্রতি লোকের मृष्टि ना भएड़ था बना क्यां कि कू বড় করিতে হইয়াছে। কাজেই পর্কতের हुड़ा चरलका क्नांटि उड़ इहेशा १६. রাছে, তাহা মিল্লির গুণ নহে, বৈরা-शीत आ पाय नरह। मर्प हो कालीयनमरनत কালীয়; কাজেই নে পর্বভের উপর কালীয় উঠিয়াছে, সে পর্কতের চূড়া অপেকা ভাহার ফণা যেকিছু বৃহৎ হইবে ইহার আর আশ্চর্য্য কি ? বৈরাগীর **७ है जिदिशावर्कन (मित्रा वालाकात्नहें** প্রক্তের অনুভব হুইয়াছিল। करतत निक्षेष्ठ পाहाङ्खनि एमिशा আমার দেই বাল্সংকারের किकि পরিবর্ত্তন হইতে আরম্ভ হইল।

অপরাক্তে দেখিলাম, একটি স্থন্দর পর্কতের নিকট দিয়া গাড়ী যাইতেছে। এত নিকট দিয়া যাইতেছে, যে পর্কাতত্ত কুদ্র কুদ্র প্রস্তারের ছায়া পর্যাস্ত দেখা যাইতেছে। গাড়ওয়ান্কে গাড়ী থাম:ইতে বলিয়া আমি নামিলাম। গাড়ওয়ান जिकाना कतिन, " कांशा याहे (वन १'' আমি বলিলাম, "একবার এই পর্বতে याहेव।" तम शामित्रा विलल, "পाहाफ এখান হইতে অধিক দূর, আপনি সন্ধার মধ্যে তথায় পোঁছিতে পারিবেন না।" আমি এ কথা কোনরূপে বিশ্বাস করি-नाम ना, जानि न्यहि (मिर्डिइनाम," পাহাড় অতি নিকট, তথা যাইতে আ মার পাঁচমিনিটও লাগিবে না, অতএব গাড়ওয়ানের নিষেধ না শুনিয়া আসি প্রতাভিমুখে চলিলাম। পাঁচ মিনি টের স্থলে ১৫ মিনিটকাল ক্রতপাদ-বিক্ষেপে গেলাম, তথাপি পর্বত পূর্বমত সেই পাঁচ মিনিটের পথ বলিয়া বোধ হইতে লাগিল। তথন আনার বুঝিতে পারিয়া গাড়ীতে ফিরিয়া আসি লাম। পর্বতস্থকে দূরতা ভির করা বাঙ্গালির পক্ষে বড় কঠিন ইহার প্রমাণ পালামৌ গিয়া আমি পুন:পুন: পাই-য়াছিলাম।

পরদিবস প্রায় ছই প্রছরের সময় হাজারিবাগ পৌছিলাম। তথায় গিয়া
গুনিলাম, কোন সম্ভান্ত ব্যক্তির বাটীতে
আমার আহারের আয়োজন হইতেছে।
প্রায় ছই দিবস আহার হয় নাই,
মতএব আহারসম্বন্ধীয় কথা শুনিবামাত্র
কুধা অধিকতর প্রদীপ্ত হইল। যিনি আমার
নিমিত্ত উদ্যোগ করিতেছেন, তিনি
মামার আগ্যনবার্তা কির্মণে জানি

লেন, তাহা অমুদন্ধনে করিবার আর সাবকাশ হইল না, আমি তৎক্ষণাৎ তাহার বাটীতে গাড়ী লইয়া যাইতে অমুমতি করিলাম। বাঁহার বাটীতে বাই-তেছি, তাঁহার সহিত আমার কথন হাকুষ इय नारे। छ। हात्र नाम अनियाहि, अथा-তিও যথেষ্ট গুনিয়াছি: সজ্জন বলিয়া তাঁহার প্রশংসা সকলেই করে। কিন্তু **ু**নে প্রশংসায় কর্ণণাত বড় করি नारे, (कन ना वक्रवाभी माखरे मञ्जन; বঙ্গে কেবল প্রতিবাদীরাই হুরাত্মা, याश निन्ता अना यात्र, जाश (क दल প্রতিবাসীরা পর্জ্ঞী-প্রতিবাদীর। काउत, माछिक, कंगरश्रिय, लांछी, কুপণ, বঞ্ক। তাহারা আপনাদের সম্ভানকে ভাল কাপড়, ভাল জুতা পরায়, কেবল আমাদের সম্ভানকে কাঁদা-हैवात कना। ত हाता जाशनारमत शूल-*বধুকে উত্তম বস্তালক্ষার দেয়, কেবল আমাদের পুত্রবধূর মুখভার করাইবার নিমিত্ত। পাপিষ্ঠ, প্রতিবামীরা ! যাহা-দের প্রতিবাসী নাই, তাহাদের ক্রোধ নাই। তাহাদেরই নাম ঋষি। ঋষি কেবল প্রতিবাসি-পরিত্যাগী গৃহী। ঋ ষিব॰ আশ্রমপার্শে প্রতিবাসী বসাও, তিন্দিনের মধ্যে ঋষির ঋষিত যা-रेट्य। अथग निन अভिवामीत छागटन পুষ্পার্ক নিষ্পুত্র করিবে, খিতীয় দিনে প্রতিবাসীর গোরু আসিয়া কমগুলু ভাঙ্গিবে, ভৃতীয় দিনে প্রতিবাদীর গৃহিণী र्थागिया अधिनद्वीदक व्यवकात त्रथा-

ইবে। তাহার পরই ঋষিকে ওকালতির পরীক্ষা দিতে হইবে, নতুবা ডেপুটি মালিষ্টেটীর দরথান্ত করিতে হইবে।

धकरा (म मकल क्या याक। या বঙ্গবাদীর গুহে আতিথা স্বীকার করিতে যাইতেছিলাম, তাঁহার উদ্যানে গাড়ী প্রবেশ করিলে তাহা কোন ধনবান ইংরেজের হইবে বলিয়া আমার প্রথমে जग रहेन। शतकार्वह (म जम र्वा বারাগুায় গুটিকত বাস্থালি বসিয়া আমার গাড়ী নিরীক্ষণ করিতেছিলেন, তাঁহাদের নিকটে গিয়া গাড়ী থামিলে আমি গাড়ী হইতে অবতরণ করিলাম। আমাকে मिथिया छाँ होता मकटल है मामद अध-সর হইলেন। না চিনিয়া ঘাঁহার অভি-বাদন আমি দর্কাতো গ্রহণ করিয়াছিলাম. ভিনিই বাটীর কর্ত্তা। তিনি শত লোক-সমভিব্যাহারে থাকিলেও আমার দৃষ্টি বোধ হয় প্রথমেই তাঁহার মুধের প্রতি সেরপ প্রসরতাব্যঞ্জক ওর্চ আমি অতি অল দেখিয়াছি। তখন তাঁহার বয়:ক্রম বোধ হয় পঞ্চাশ অতীত হইয়াছিল, বুদ্ধের তালিকার তাঁহার নাম উঠিয়াছিল তথাপি তাঁহাকে বড় ञ्चलत (मिथशाष्ट्रिनाम। (वाध इश रगहे প্রথম আমি বৃদ্ধকে স্থলর দেখি।

যে সময়ের কথা বলিতেছি, আমি
তথন নিজে যুবা, অতএব সে বরসে
বৃদ্ধকে স্থান্ধ বিশান্ধ কার্য্য
কিন্তু সে দিবস এরপ ধর্মবিকৃত্ধ কার্য্য
ঘটিয়াছিল। এক্ষণে আমি নিজে বৃদ্ধ,

কাজেই প্রায় বৃদ্ধকে স্থান্য দেখি।
একজন মহাস্থাত্ব বলিরাছিলেন বে,
মন্ত্রা বৃদ্ধ না হইলে স্থান্য হর না,
একলে আমি তাহার ভ্রসী প্রাণংসা
করি।

প্রথম সভাবণ সমাপন হইলে পর
নানানি করিতে হাওরা গেল। নান
গোছলখানার ইংরেজি মতেই হইল,
কিন্ত আহার ঠিক হিন্দুমতে হর নাই,
কেন না ভাহাতে পলাপুর আধিক্য
ছিল। পলাপু হিন্দুধর্মের বড় বিরোধী।
ভব্তির আহারের আর কোন দোব ছিল
না, সম্বত আতপার, আর দেবীত্র ভ
ছাপ্রাংস, এই ছইই নির্দোধী।

পাকসম্বন্ধে পলাভুর উলেধ করিয়াছি, किछ शित्रांक উল্লেখ করাই আমার हैका किल। शिंदाक यावनिक भन এই **खरत शमाञ्चत উল্লেখ করিয়া সাধুগণের** মুখ পবিতা রাধিরাছি; কিন্তু পিঁরাজ পলাও এক দ্ৰব্য কি না এ বিষয়ে আমার वहकानाविध जःभन्न आहि। পাঞ্জাব অঞ্লের একজন বুদ্ধরালা জগ-त्राथ पर्नन कतिए यादेवात नमग्रमिनी-পুরে ছুই একদিন অবস্থিতি করেন। নগরের ভদ্রলোকেরা তাঁছার সহিত সাক্ষাৎ করিবার প্রার্থনা করিলে, ভিনি কি প্রধান, কি সামান্য সকলের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া নানাপ্রকার আলাণ कतिराजिहरमन, अया गमन जाहारमत मर्था कुकबन योष्ट्रा दिनानन, " আমরা শুনিরাছিলাম খে, মহারাজ

হিন্দুচ্ডামণি, কিছ আসিবার সমর আপ-নার পাকশালার সম্ব্রে পলাগু দে-খিদা আসিরাছি।" বিশ্বরাপর রাজা "পলাভূ়া" এই শব্দ বারবার উচ্চারণ করিক্লা তৎক্ষণাৎ তদারকের নিমিত্ত খনং উঠিলেন, নগরস্থ ভদ্রলোকেরাও 🎺 छाहात भन्हावर्ती इहेरनन। शाक्षांनात्र मण्डा मांडाहेल, वक्षन বাঙ্গালি পিঁয়াজের স্তুপ দেখাইয়া मिल। बाका उथन शामिशा वनिरलन, "ইহা পলাভু নছে; ইহাকে পিরাজ বলে। পলাও, অতি বিষাক্ত সামগ্রী, তাহা কেবল ঔষধে ব্যবহার হয়। नकन (माम जाहा कत्म ना ; य । गार्क करमा ८म भाष्ठित वांग्रू पृथिक इहेता यात्र, এই ভরে সে মাঠ দিরা কেছ যাতারাত করে না। সে মাঠে আর কোন कमल इय ना।"

রাজার এই কথা যদি সত্য হর,
তাহা হইলে অনেকে নিশ্চিত্ত হইতে
পারেন। পলাপু আর পিঁরাল এক
সামগ্রী কি না তাহা পশ্চিমপ্রদেশে অন্থশব্ধনা হইতে পারে, বিশেষতঃ যে
সকল বঙ্গরাসীরা সিক্দেশঅঞ্চলে আভেন বোধ হর তাঁহারা অনার্যাসেই
এই কথার মীনাংসা করিয়া লইতে
পারেন।

আহারাত্তে বিশ্রামগৃহে বসিরা বালকদিগের সহিত গর করিতে করিতে
বালকদের শরনখর দেখিতে উঠিয়া
গেলাম। ঘরট বিলক্ষণ পরিসর,তাহাব

চারি কোনে চারিখানি থাট পাতা, মধ্যস্থলে আর একখানি থাট রহিয়াছে।
ভিজ্ঞানা করায় বালকেরা বলিল,
"চারি কোণে আমরা চারিজন শর্মন
ক্রি, আর মধ্যস্থলে মাইরমহাশক্র
থাকেন।" এই বন্দোবস্ত দেবিয়া
বড় পরিভ্গু হইলাম। দিবারাত্র
বালকদের কাছে শিক্ষক থাকার আবশ্যকন্তা অনেকে বুরেন না।

বালকদের শয়ন্থর হইতে বহিগত हरेश आत अकचात्र मिथ अक कै। मि স্থাক মর্ত্রমানরস্থা দোহ্বামান রহি-য়াছে, তাহাতে একথানি কাগন ঝুল-তেছে, পড়িয়া দেখিলাম,নিত্য যত কদলী কাদি হইতে বাৰ হয়, তাহাই তাহাতে লিখিত হইয়া থাকে। লোকে সচরা-प्रत देशांदक कुछ मृष्टि, दश्वेननवन-देशांवि বলে: কিন্ত আমি তাহা কোনরপে ভাবিতে পারিলাম না। যেরপ অন্যাত্ত विवत्यत बर्णावन्त (मथिलाम, डाहाटक "क्लाकै। मित्र क्लिनिय" (मिथिया यतः খারও চসংকৃত ছইলাম। দৃষ্টি কুদ্র তাহারা কেবল সামান্য বিষ-रत्रत श्रांक्टि ब्रांटिश, व्यना विषय দেখিতে পার না। তাহারা যথাওঁই নীচ। কিন্তু আমি বাঁহার কথা বলি-^{(उ}हि, तिथिनाम छाहात्र निक्छे वृह्द প্ৰ সকলই সমস্তাবে পরিলক্ষিত হইয়া পাকে। অনেকে আছেন, বড় বড় বিষয় মোটাম্টি দেখিতে পারেন, কিন্তু ^{পুরা} বিষয়ের প্রাক্তি তাঁহার দৃষ্টি একে-

বারে পড়ে না। ঠাছাদের প্রাশংসা করি দা। বাঁছারা বৃহৎ স্ক্র একত (पिथिया कार्या करवन, डांशामित्रहे ध्रान्तरम কিন্ত এরপ লোক অতি অল। "क्नाकैं। नित्र कर्फ" मध्यक वानकरमञ् সহিত কথা কছিতে কহিতে আনিলাম থো, একদিন একখন চাকর লোভ-সম্বৰণ করিতে না পারিয়া ছইটি স্থপক রস্থা উদরস্থ করিয়াছিল, গৃহস্থের সকল नियरबरे पृष्टि चाड़, जकन विषद्यबरे হিগাব থাকে, কাজেই চুরি ধরা পড়িল। তখন তিনি চাকরকে ডাকিয়া চুরির জন্য করিমানা করিলেন। পরে তাহার লোভ পরিছুপ্তি করিবার নিমিত্ত যত ইছা কাঁদি হইতে রম্বা থাইতে অনুসতি করিলেন। চাকর উদর ভরিরা রস্থা शाहेल।

অপরাক্তে আমি উদ্যানে পদচারণ
করিতেছি, এমত সময় গৃহস্থ "কাছারী'
হইতে প্রত্যাগত হইলেন। পরে
আমাকে সমভিব্যাহারে লইরা বাগান,
পুকরিনী, সমুদর দেখাইতে লাগিলেন।
যেহান হইতে যে বৃক্ষটি আনাইয়াছেন,
তাহারও পরিচয় দিতে লাগিলেন।
মধ্যাক্ষালে "কলাকাদি" সম্বন্ধে বাহা
দেখিয়াছি এবং শুনিয়াছি, তাহা তখনও
আমার মনে পুনঃপুনঃ আলোচিত হইতেছিল; কাজেই আমি কদলীর্ক্ষের
প্রাক্ষ না করিয়া থাকিতে পারিলাম
না। বলিলাম, "আমার্ধারণা ছিল এ
কঞ্লে রন্ধা ক্রো না; কির আপনার

বাগানে যখেষ্ট দেখিতেছি।" তিনি
উত্তর করিবেন, "এখানে ৰাজারে
কলা পাওরা যায় না। পূর্কে কাছার
বাটীতেও পাওয়া যাইত না, শলোকের
সংস্কার ছিল যে, এই প্রস্তেরময় মৃতিকায়
কলারগাছ রল পায় না, গুকাইয়া
বার। আমি কাহা বিখাল না করিয়া,
দেশ হইতে 'দেড' আনিয়া পরীকা
করিলাম। একণে কামার নিকট হইতে
'তেড়' লইরা সকল সাহেবই বাগানে
লাগাইরাছেন। এখন আর এখানে
কদলীর অভাব নাই।"

এইবাপ কথাবারী কছিতে কছিতে আমরাউদ্যানের এক প্রান্তভাগে আসিয়া উপস্থিত হইলাম, তথার ছুইটি সভত্র বর দেথিয়া, আমি জিজ্ঞাসা করার গৃহত্ত বলিলেন, "উহার একটিতে আমার নাপিত থাকে, অপরটিতে আমার ধোপা খাকে। উহার। সম্পূর্ণ আমার বেছন-ভোগী চাকর নহে, ভবে উভয়কে আ্বানার বাটীতে স্থান দিয়া একপ্রকারে व्यावद्य कतिवाहि, এখন यथुनहे व्याव-শ্যক হয়, তথনই ভাহাদের পাই। (थाशा, नाशिए इत कहे शृद्ध आत दकान ें छेशास निवात्रण कतिएक शांति नाहे ।''· * ় সন্ধ্যার পর দেখিলাম, শিক্ষকসন্মুণে बागरकता (य छिविरग विश्रष्टा अधायन क्तिरङ्ख् उथात व्कब वक्शान ठिनि (नव बनिष्डहि। बना नारक ় হাঁহারা কল্পীর হিসাব রাখেন না, छाहाता बालकामत्र निश्चिख अकृषि मान

দিরা নিশ্চিত্ত হন, আর ঘিনি কদলীব ছিলাব রাখেল, তিনি এই অতিরিক্ত ব্যর কেন শীকার করিতেছেন জানি-বার নিমিত্ত আমার কৌত্হল জলিল। শেব আমি জিজ্ঞানা করিলে তিনি বলিলেন, ''ইছা অপবার নহে, অর আলোকে অধারন করিলে বালকদের চক্ষু প্রকলি হইবার সস্তাবনা; যথেট আলোকে অধারন করিলে চলিলের বহু পরে 'চাল্না' ধরে।''

উচ্চণদত সাহেবের। সর্বাদাই ভাষার বাটীতে অধিচতন, এবং তাঁহার সহিত কথাবার্তার প্রমাপ্যারিত হইতেন। বাঙ্গালিরা ছোট বড় সকলেই ভাঁহার त्भोक्षरमा वाथा कित्नन, त्य कूठीत्उ তিনি বাস করিতেন, সেরূপ কুঠী সাহেবদেরও সচরাচর দেখিতে পাওয়া यात्र ना; क्ठीजे (यक्त श्रिक्ष छ । युगक्की जुड हिल, छाहा (मशिस्त वंशा र्थे इथ इस, मन 9 श्रीक इस। मरनः উপর বাসস্থানের আধিপতা বিলকণ আছে। যাহার। অপরিকৃত কুদ্র ঘরে वाम करत, आंत्र (मथा यात्र छाहारमः মন সেইরূপ অপরিকৃত ও কুদ্র। যি বিশ্বাস না করেন তিনি বলিতে পারেন (ययमि এकणा मछा इम, छाश इहेरन था। অধিকাংশ ৰাঙ্গালির মন কুদ্র ও অণ্রি কৃত হইত। আধরা একথা লইরা ^{কো} छर्क कतिव नां, आमना (यमन मि^{श्रिट} भारे (मरे मञ भिविद्याहि। वांशारक है? मफ कतिया अरे कथा निवाहि कैंडि

মন "কুঠীর" উপযোগী ছিল। সেরপ কুঠীর ভাড়ার যে বাক্তি বহু অর্থ বার করে সে ব্যক্তি যদি কদলীর হিসাব রাথে ভাহা হইলে কি বুঝা কর্ত্তব্য ? রাত্রি দেড়-প্রহরের সময় বাহকক্ষমে আমি ছোটনাগপুর ্যাত্রা করিলাম। তথা হইতে পালামে। ছুই চারি দিনের

মধ্যে পৌছিলাম। প্রের পরিচয় আনুর

দিব না, এই কয়েক ছজ লিথিয়া অনেক কে জালাভন করিয়াছি, আর বিরক্ত করিব না, এবার ইচ্ছা রহিল মূল বির-রণ ভিন্ন. অন্য কথা বলিব না, তবে মুদি ছই একটি অভিরিক্ত কথা বলিয়া ফেলি ভাছা হইলে বয়ুদের দো্ফ বৃথিতে হইবে

হা, না, ব!



বাঙ্গালির উৎপত্তি।

প্রথম পরিচেছদ।

আনেকে বাঙ্গালির উৎপত্তি কি ? এই প্রান্ধ শুনিয়া বিশ্বিত হইতে পারেন। আনেকের ধারণা আছে যে, ৰাঙ্গালায় চিরকাল বাঙ্গালি আছে, তাহাদিগের উৎপত্তি আৰার খুঁজিয়া কি হটবে? তাহাদিগের অপেকা শিক্ষায় বাঁহারা একটু উন্নত, তাহারা বিশেচনা করেন, বাঙ্গালির উৎপত্তি ত জানাই আছে; আমরা প্রাচীন হিন্দুগণ হইতে উৎপন্ন হইয়াছ। যে জাতি বেদপাঠ করিত, সংস্কৃতভাষায় কথা কহিত, বে জাতি মহাজারত ও রামারণ, পুরাণ ও দর্শন, পাণিনির ব্যাকরণ, কালিদাসের কাৰা, মহর শ্বতি, ও শাক্যসিংহের ধর্ম স্টি

য়াছিল আমরা সেই জাতির সন্থান:

এ কথা ত জানাই আছে। তবে আনবার বাঙ্গালির উৎপত্তি খুঁজিয়া কিছেইবে গ

এ কথা সতা, কিছু বড় পরিকার
নহে। লোকসংখা গণনায় ন্তির হইয়াছে যে, যাহাদিগকে বাঙ্গালি বলা
যায়, যাহারা বাঙ্গালাদেশে বাস করে,
বাঙ্গালাভাষায় কথা কর, ভাহাদিগের
মধ্যে অর্জেক মুসলমান। ইহারা বাঙ্গালি
বটে, কিছু ইহারাও কি সেই প্রাচীন
বৈদিকধর্মাবলফী জাতির সন্ততি? হাড়ি,
কাওরা, ডোম ও মুচি; কৈবর্ত্তি, জেলে,
কোঁচ, পদি ইহারাও কি তাঁহাদিগের
সন্ততি? ভাহা যদি নিশ্চিত না হয
তবে অনুসন্ধানের প্রায়াজন আছে।
কেবল, বাঙ্গাল কায়তে বাঙ্গালা পরিপূর্ণ

নহে, ব্রাহ্মণ কারত্ব বার্কাণির অতি অর-ভাগ। বার্কাণির মধ্যে যাহারা সংখ্যায় প্রবল, তাহাদিগেরই উৎপত্তিতত্ব অর-কারে সমাছের।

যে প্রাচীন হিলুফাতি হইতে উৎপন্ন बिन्दा आयदा मत्न मत्न न्याकी कति, छाँठां दारम जाननामिश्रक जार्ग व-ভিরা বর্ণনা করিয়াছেন। অনেক্দিনের পর ইউরোপ হইতে আর্যাশক আসিয়া আবার ব্যবহৃত হই-তেছে। প্রাচীন হিন্দুর। हित्न ; अथवा छांशांवरशंत्र मञ्जान। এজন্য আমরা আর্যাবংশ। কিন্তু এই আর্যাশক আর বেদের আর্যাশক ভিন ভিন্ন অর্থে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। टेविन श्रीवता वर्णन, खाळान, ऋ दिय, বৈশ্য, এই তিন্টী আর্যাবর্ণ। এখনকার পাশ্চাত্য পণ্ডিতেরা এবং তাঁহাদিগের षासूवर्की इहेबा छात्रशीत षाधुनिदकता छ वित्रा थारकन, हैश्तक, कतानी, बर्चान. ऋष; यवन, शात्रमिक, (त्रामक, हिन्दू, मक-শই আর্যা। আবার ভারতবর্ধের সকল अधिवाशी अ नात्मत अधिकाती इत्र ना ; हिन्त्रा आर्या वित्रा थाड, किन्द्र कान, क्रीन, माँछणन भाषा नहा छत् व्यार्थाभारमञ्जू वर्ष कि १

এই প্রভেদের কারণ কি ? ক্তক্ণগুলি দেশীয় লোক আর্যাবংশীয়, ক্তক্ণগুলি অনার্যাবংশীয় এরপ বিবেচনা ক্রিবার কারণ কি ? আর্য্য কাহারা,—কোপা হইতেই বা আসিব ? অনার্য কাহারা কোথা হইতেই বা আদিল ? একদেশে ছইপ্রকার সমুষ্যবংশ কেন ? আর্য্যের দেশে অনার্য্য আদিয়া বাস করিরাছে, না অনার্যোর দেশে আর্য্য আদিয়া বাস করিরাছে ? বাঙ্গালার ইতিহাসের এই প্রথম কথা।

ইহার মীমাংসাজনা ভাষাবিজ্ঞানের আশ্রয় গ্রহণ করিতে হয়। অভএব ভাষাবিজ্ঞানের মূলতবের ব্যাখ্যা এই-খানে আবশাক হইল।

ভাষা কিরূপে উৎপন্ন হইল, ওছিষয়ে गडाउम आहि। किह किह वानन, देश क्षेत्रकारक। मकनरे ७ नेपत-প্রাদত্ত। ঈশ্বর বুক্ষের সৃষ্টিকর্তা, কিন্ত গাছ গড়িয়া কাহারও বাগানে পুঁতিয়া দিয়া যান না। তেমনি তিনিই ভাষার সৃষ্টিকৰ্ত্তা, কিন্তু তিনি যে ভাষাগুলি তৈয়ারি করিয়া, বিভক্তি, লিঙ্গ, কার-कानिविभिष्ठे कतिया, त्मर्भ त्मर्भ मञ् यारक निशाहेबा विज्ञान नाहे, देश काना-য়ানেই অনুমিত হইতে পারে। দিতীয় मा अहे (य मकुषारान ममात्व इहेशा नहा-মর্শ করিরা ভাষাস্টি করিয়াছে। এ মত গ্রহণ করিতে হইলে অমুমান করিতে হয়, যে দশলন একত বসিয়া, যুক্তি করি-माहि, (य এ मा भागता मूलकनयूक शमार्थकितिक वृक्ष विनिष्ठ आत्रष्ठ कति, যাহারা উড়িয়া যার, ভাহাদের পাণী বলিতে **আ**রম্ভ করি। এরপ যুক্তির चना ভाষার প্রাঞ্জন, এমতে ভাষা না থাকিলে ভাষার সৃষ্টি হইতে পারে

ৰগ্ৰাহ্ন। তৃতীর মত এই যে, ভাষা অমুকৃতিমূলক। এই মতই এখন প্রচ-লিত। প্রাকৃতিক বস্তুসকল শব্দ করে। नमी कलकल करत, स्मय गत्र गत्र करत, সিংহ ভ্রার করে, সুর্প ফোঁস ফোঁস करता आमदांश य मक्न कांक कति তাহারও শব্দ আছে। বাঙ্গালি " সপ, সপ" করিয়া খার; " গপ গপ" করিয়া (शर्ण; " इन इन" क्रिशा ठलिशा यात्र, " ভুপ দাপ" করিয়া লাফায়। এইরূপ নৈসার্গিক শকামুক্কতিই ভাষার প্রথম প্র। গাছের ডাল প্রভৃতি ভাঙ্গার শব্দ ट्रेटि " भू"; मन्तर्गमत्मत्र ममरत्र चर्षन-জনিত শব্দ হইতে "অ"ু নিখাসের भक्ष इहेट्ड "अम्।" मटा वर्षे, অনেক সামগ্রী আছে, যে ভাহার কোন भक्त नाहे; किन्न (म नकत ऋता गरू-ষ্যের শব্দাহ্নর পঞ্রেতি বিমুণ হয় না। जात्नात भक्त नारे, किन्न आमता आदि 9 विन, " आदमा अक्यक् कतिरहर्छ।" পরিষার ঘরের শব্দ নাই, কিন্তু আমরা विन (य "चत्रों वात्रवात्र कतिराज्य ।"

''মৃ'' '' অ'' '' অস্'' প্রভৃতি বেন এইরপে পাওয়া গেল—কিন্ত তাহাতে ' বিবিধ ভাব ব্যক্ত হইল কৈ ? শুধু ''মৃ'' বলিলে কিপ্রকারে, '' মারিলাম'' '' মান রিল'' '' মারিব'' '' মারিছাছি'' '' মারা-মারি'' '' মরণ'' '' মার''—এত প্রকার কথা ব্যক্ত হয় ? অত এব প্রেরোজন মতে মুধাতুর সঙ্গে অন্যপ্রকার শক্ষের

না। স্থান্ত থাং এ মতও অবৈজ্ঞানিক ও বোগ আবশ্যক হইল। সেই সংযোল অগ্রাহ্ম। তৃতীর মত এই যে, ভাষা গের কাজকে ভাষার গঠন বলা যাইছে অমুক্তিমূলক। এই মতই এখন প্রতি পারে। সেই সংযোগের কাজ, সর্বজ্ঞ লিত। প্রাক্তিক বস্তাসকল শল করে। একরূপ হর নাই; এজন্য ভাষার গঠন নদী কলকল করে, মেঘ গরগর করে, ভিন্ন ভিন্ন প্রকার আছে। কিপ্রকারে সিংহ হুলার করে, সুর্প ফোঁস ফোঁস করে। আমরাও যে সকল কাজ করি পত হইল, তাহার আলোচনার জামা-ভাহারও শব্দ আছে। বাঙ্গালি "সপ, দিগের প্রয়োজন নাই। এখন পৃথিবীর সপ" করিয়া খার; "গপ গপ" করিয়া গোলে; "হন হুন" করিয়া চলিয়া যার, যার, তাহাই সংক্ষেণে বিস্তুত করা গ্রুপ দাপ" করিয়া লাফায়। এইরূপ

> একজাতীয় ভাষায়, ধাতুর সঙ্গে যোগ মাত্রের দ্বারা বাক্যের গঠন হয়; কোন ধাত্র কোনপ্রকার রূপান্তর হর না। এ সকল ভাষায় বিভক্তি নাই ইহা-দিগকে "সংযোগের অসাপেক" (Isolating) ভাষা वना यात्र। भागरमभीय, आनामरमभीय वा बक्क-দেশীয় ভাষা এইরূপ। বিভীয় শ্রেণীর ভাষাতেও বিভক্তি নাই, কিন্তু উপদৰ্গ, প্রত্যয়াদি, ধাতুষারা রূপান্তর হয়। ইহার ধাতৃতে ধাতৃতে বা ধাতৃ ও সর্বা-নামে একপ্রকার সংযোগ হয়। এই সকল ভাষাকে সংযোগসাপেক্ষ (compounding) ভাষা বলে। দক্ষিণের ভামিল প্রভৃতি ভাষা, তাতার ভাষা, আমেরিকার আদিমকাতীয় ভাষা এই জাতীয়। ভৃতীয় শ্ৰেণীয় ভাষাতেই প্ৰকৃষ্টকশে विङक्ति चाष्ट्र, मःयार्गकाल श्रांकृत छ जर्जनात्मव ज्ञाभाखव चटि । देशिमशत्क বিভজ্নিশাল ভাষা (inflecting) বৰে!

পৃথিবীর যত শ্রেষ্ঠ ভাষা, সকলই এই শ্রেণীর অন্তর্গত। আরবী,ইছদী, প্রীক, লাটিন, ইংরেজি,করালি, সংস্কৃত,বালালা, হিন্দি, ফারসী প্রভৃতি এই শ্রেণীর অন্তর্গত।

দেখা গিরাছে যে এই ভূতীর শ্রেণীর ভাষাওলি ধাতু, এবং বিভক্তিচিছ লৈইরা গঠিত। ধাতুর পর বিভক্তিও প্রত্যয়-: विश्मारवत व्याप्तरम मक ও किया निभन्न হয়। তাহা ছাড়া ভাষায় আর যাহা আছে, তাহাকে সাধারণতঃ সর্বনাম বলা याहेट भारत । मर्दनामश्रील रय व्यवकाः ভ্ৰষ্ট ধাতু ইহাও বিবেচনা করিবার কারণ আছে। কিছ ভাছা হৌক বা না হৌক; ধাড় বিভক্তিচিক্ত ও সর্বা-नाम गरेबा ভावा। यक्त कान घरेषि धारांत्र मिथा यात्र, य ভाষात मृतीजृड थांडु, विज्ञक्ति ७ मर्सनाम, धकरे, কেবল দেশকাল ভেদে কিছু রূপান্তর-প্রাপ্ত হইরাছে, তবে অবশা অনুমান कब्रिए इटेरव रंग के ब्रहेंगे छात्रा छेछ-स्टि पक्ती चानिम चावा इटेट छेद-ভাষাবিজ্ঞানের অভি,বিশ্বরত্ব

আবিদ্যার এই, তৃতীর শ্রেণীর ভাষা-ভালর মধ্যে জনেকগুলি প্রাচীন ও আধুনিক ভাষাতেই ভাষার মূলগত ধাতৃ, বিভক্তিচিক্ ও সর্ব্ধনাম এক। অতএক সেই সকল ভাষা গে একটি প্রাচীন মূল ভাষা হইতে উৎপন্ন ইয়া সিদ্ধ হইরাছে। সেই সকল ভাষাগুলি এক-পরিবারভুক্ত।

ভারতবর্ষের সংস্কৃত্য; এবং সংস্কৃতমূলকা পাঁলিপ্রভৃতি প্রাচীন ভাষা; বাঙ্গালা হিন্দী প্রভৃতি সংস্কৃতমূলক আধুনিক ভাষা; জেন্দ, অর্থাৎ প্রাচীন পারসোর অধিবাদীদিগের ভাষা; ও আধুনিক পারসী; প্রাচীন গ্রীক ও লাটিন; লাটিনসস্কৃত ফুরাশী, ইতালীয়, স্পেনীয় প্রভৃতি রোমান্সজাতীয় ভাষা, টিউটন-বংশীয়দিগের ভাষা, অর্থাৎ জন্মান, ওলন্দান্ধি ইংরেজি; বিটেনীয় আদিম-বাদীদিগের কেল্টিক ভাষা, কটলভের পার্কতাদেশের কেল্টিক ভাষা, কটলভের পার্কতাদেশের কেল্টিক ভাষা, রূপপ্রভৃতি সাবনিক ভাষা,—সকলই সেই এক প্রাচীনা ভাষা হইতে উৎপরা,—সক

শ এই শ্রেণীবিভাগ অগন্ত শ্লেচর নামক জন্মানলেখককুত। মার্ম্বর আতৃতি ভাষার যেরপ শ্রেণীভাগ করেন, তাহা আর এক প্রকার। তাঁহারা তৃতীয় শ্রেণীকে চৃতীট সভন্ত শ্রেণীতে পরিণত করেন—শেমীর ও আর্থা। কিছু শেমীর ও আর্থা যখন উভ্রেই তৃতীয় শ্রেণীর লক্ষণাক্রান্থ তখন তাহাদিগকে সভন্ত শ্রেণী বলিয়া দাঁড় করান, কিছু বৈজ্ঞানিক-নীতি বিরুদ্ধ। শ্লেচরের যে গ্রেছে ঐতত্ব জালোচিত হইরাছে তাহার নাম—Compendium der Veryleichenden Grammatik der Indo-German ischen স্কাননের আ্রানিক লানি না, হণ্টর সাহেবের গ্রন্থ হইতে এই বিজ্ঞানের সার স্কান করিলাম।

পেই সেই এক বৃদ্ধা মতির ছহিতা। গেই ব্ছভাৰার জননী আচীনা ভাষা थथन चात्र नाहै-किंड . धक्तिन हिला। (यमन कान शृहर, कडक बल माजूरीन ভাতা ও ভগিনী বাস করিতেছে দে-थित्रा अञ्चर्गान कति त्य देशातत अकन्म अभनी हिन, उत्रति धरे धकवः भीता বহুতর ভাষা দেখিয়া মনে করি যে এক •প্ৰাচীন মূল ভাষা ছিল। যে ভাতি ঐ ভাষা বাবহার করিতেন, তাঁহারা আর্য্য-कां कि विनिधा अधूना नाम शाश्च इहेग्रा-ছেন। সেই ভাষাসমুৎপল্ল ভাষা ভলি चार्याकांचा नांमशाक्ष इहेबाटक। त्य সকল অ।তির ভাষা আগ্যভাষা, তাহারা আর্যাবংশীয় বলিয়া অমুমিত এবং বর্ণিত হইরা থাকে। বাহারা আর্যাবংশসম্ভ নহে, তাহারা অনার্যাঞ্চি।

এখন কোল, সাঁওতাল, কোঁচ,কাছাড়ি
প্রভৃতি জাতিদিগের ভাষা বাঁহোরা অধ্যা

য়ন করিয়াছেন, তাঁহারা বলেন যে এই
সকল ভাষা, প্রথম বা বিতীয় শ্রেণীর
অন্তর্গত—এ সকল ভাষায় বিত্তি
নাই। অতএব এই সকল ভাষা অনার্য্য
ভাষা। যে সকল জাতির মাতৃভাষা
অনার্য্যভাষা, সে সকল জাতি অনার্য্য
জাতি। কোল, সাঁওতাল, মেছ কাছাড়ি অনার্য্যজাতি। আর্য্য ও অনার্য্য

अल्लंब छोश्मर्या अहै। अथन चार्या मिराव महस्क अकठा कथा विनव।

সে কথা এই বে, প্রাচীন আর্যাঞ্চাতি

ক্রাহার। পৃথিবীর সকল শ্রেষ্ঠ জাতির
এবং আমাদিগের পূর্বপুরুষ—তাহারা
কোধার বাল করিতেন ? ভারতবর্ষীরেরা বলিতে পারেন—ভারতই আর্যাভূমি—ভারতবর্ষর সংস্কৃতভাষা সকল
আর্যাভাষা হইতে প্রাচীনা দেখা বাইতেছে। তবে আর্যাবংশের আদিম বাস
ভারতবর্ষ; ভারতবর্ষ হইতে তাঁহারা
দলে দলে অন্যাদেশে গিরাছেন, এ কথা
না বলিব কেন ? অতিপ্রাচীনকালেও
মন্থ যব্নপ্রভৃতি জাতিকে ভ্রষ্ট ক্ষাত্রির
বলিরাছেন।

কর্জননামা একজন পাশ্চাত্য লেখকের সেই মত*—এবং বিখ্যাত ভারতেতিহাসবেতা এল্ফিনটোনও কতক সেইদিকে টানেন। কিন্তু পাশ্চাত্য পণ্ডিতদিগের মধ্যে যাঁহারা আর্যাভাষা সকলের
বিশেষ সমালোচন করিয়াছেন তাঁহাদিগের মত এই যে আর্যােরা ভারতবর্ষের আদিমবাসী নহেন— অন্যত্ত হুতে
আসিয়াছেন। তাঁহারা যথন আসেন,
তথন ভারতবর্ষে অনার্যাজাতি বাস
করিত। আর্যােরা অনার্যাদিগকে জয়
করিয়া বশীভূত অথবা বন্য এবং পা-

^{*} Journal Roy. Asiat. Soc, vol XV1, pp 172-200 ডাক্তার মূর কৰ্ত্ক উদ্ধৃত Sanscrit Texts part II P 299.

t History of India, Vol I, P

র্বভালেশে দ্রীক্বত করিরাছিলেন। এইছলে সেই সকল কথার প্রমাণের সবিভার বর্ণনা নিপ্রাঞ্জন। ুগোগোল, লাসেন, বেন্ফী, মাক্ষমূলর, স্পিজেল, রেনা, পিক্তা, মূর প্রভৃতির এই মন্ত। এই মতও এক্ষণে সকল পণ্ডিত কর্ত্তক আন্ত। *

অতএব আর্বোরা দেশান্তর হইতে ভারতবর্ধে আসিরাছিলেন। পাশ্চাত্য পণ্ডিতেরা বিবেচনা করেন, যে হিন্দুকুশ পর্কতমালার উত্তরে, আসিয়ার মধ্যভাগে, প্রাচীন আর্যাভূমি ছিল, সেইখান হইতে ভাঁহারা দলে দলে বাহির হইরা সিয়াছিলেন। ভাক্তার মূর বিবেচনা করেন, ঐ হিমালয়োভরপ্রদেশই ভারভীর আর্বাদিশের মধ্যে উত্তরকুক খ্যাত ছিল। একদল ইউরোপের এক প্রান্তে

উপনিবেশ সংস্থাপন করিয়া, হেলে-नामधात्रण कतिया, अगटक च-তুল্য সাহিত্য শিল্প দর্শনাদি প্রণয়ন করিয়াছিলেন। আর একদল ইতালীর নীলাকাশতলে সপ্রগিরিশিখরে নগরী নির্দ্রাণ করিয়া পৃথিবীর অধীশ্বর হইয়া-हित्न। आत्र अक्नन वहकान अर्था-नीत व्यवगताबिमत्था विश्वत कतिश এখনকার দিনে পৃথিবীর নেতা ও শিক্ষা-দাতা হইয়াছেন। আর একদল ভারত-वर्ष व्यादभ कतित्रा. अनस्यमहिमामव कीर्डि ञ्राभन कतिबाह्न । छै। हामिराव শোণিত বাঙ্গালির শরীরে আছে। যে রক্তের তেলে পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ লাতি-সকল শ্রেষ্ঠ হইয়াছেন, বাঙ্গালির শরী-রেও দেই রক্ত বহিতেছে।

nexest of Boom

বাল্মীকির জয়।

বর্বা শেষ হইরাছে। শরৎ উপস্থিত।
আকাশ পরিকার। নেবের লেশুনাত্রও
নাই। নীল—স্থনীল—গাঢ়নীল—বর্ণনার অতীব মনোমোহন নীলরঙের ছটার মাঝে বড় বড় ভারা জল জল করিয়া জলিভেছে। ভারকারাজিমধ্যে
ছারাপথ সমস্ত আকাশকে তুই ভাগে

বিভক্ত করিয়া শেষ নিজেও ভাগ হইরা পড়িরাছে। পৃথিবীর কাদা শুকাইয়া আসিরাছে, গাছ পালা সভেলে বাড়িরা টঠিতেছে, আর সব্দ রঙের ছটার পৃথি-বীর নবযৌবন প্রকাশ করিয়া দিতেছে। উপরে সব গাঢ় নীল, নীচে গাঢ় সব্দ; বেথানে এই ছইয়ে মিশিরাছে, সেখানে

^{*}ভাক্তার মূর সাহেবের Sanskrit Texts विভীন খতে ইহার সমালোচনা

বোৰ হইডেছে যেন এক ফুেনে ছই বহুৎ চিত্ৰ আঁটিয়া দৰ্শকের জন্য মাঝ-থানে একটু স্থান রাথিয়া দিয়াছে।

यथन चाकान निर्द्याच, यथन धूक्तात সম্পর্কমাত্র নাই,দেই সময়ে—দেই স্থাধের भातक नगरत-(कहं कि हिमानरतत वधु-, त्रिमां (पियांছ? এकपित्क ममछ हिन्द-স্থান শতযোজনবাাপী মাঠের ন্যায়, वंकिषिक भर्त ज्ञासनीत भन्न भर्त्रज्ञासनी. তাহার পর পর্বতশ্রেণী, তাহার পরে-কত পরে বরফের পাহাড দেখিয়াছ কি ? সেই খেত খচ্ছ বরফের উপর ত্যাকিরণ পড়িয়া ঝক্ ঝক্ করিয়া विणिक्टि, दोध इटेटिड (यन त्राक-পুত্রের আগমনে বিশাল নগরীসমূহ নানা দীপমালার মণ্ডিত হট্যা রহিয়াছে. मिश्रीह कि ? शृदर्स ও शन्तिम किवन দেখিবে চুড়ার পর চুড়া, তাহার পর চুড়া, ভাহার পর চুড়া; শেষ নাই, विताम मारे, अमस विलिश का। বর্ণা সম্প্রতি শেষ হইয়াছে, চারি-निटक अंत्रणा इटेटल सम् समत्रद इरक्षत ফেণার মত শাদা জল বেগে পড়ি তেছে, কোথাও তাহার উপর হ-र्शित जारनारक तामश्रम् (मथा यारे-তেছে, কোণাও বা কোন নিৰ্বারিণী চির-অন্ধকারমধা দিয়া চিরকাল অলকিত-ভাবে প্রবাহিত হইতেছে, কেহ দেখি-তেছে না অধচ গতিরও বিরাম নাই। বেখানে ঝরণা সেইখানেই গাছপালা ित्त, आंत्र राशांटन नार्डे, रत्रशांटन छीत्रशां-

কার প্রস্তর, কাছে গোলে বোধ হর এখনই ঘাড়ে আসিয়া পড়িবে। এখাহন এই ভয়নিক উচ্চতা আবার পরক্ষণেই গভীর থড়, ভাহার তলা কোথায় দেখা যার না, যদি দেখা যার, দেখিবে একটি কুল নদী চলিরা যাইতেছে, উপলে উপলে জল লাফাইতেছে, নাচিতেছে, আর চলিতেছে। স্থানে স্থানে নীরস্কৃতিন তর্কবর সহল্র বংসরেরও অধিককাল কালের সঙ্গে বুছ করিয়া আত্মনকা করিতেছে, আর সেউতিলতা তাহাকে জড়াইরা জড়াইরা জড়াইরা জড়াইরা লাড়াইরা পাঁচশত বংসর পর্যান্ত বাহিরা রহিরাছে।

এই হিমালর তুমি আজি বেমন দেখিতেছ ইহা অনস্তকাল এইরূপ, অনস্তকাল
ধরিয়া বরফের পাহাড় এইরূপই আছে,
ঝরণা এইরূপই বহিতেছে,আকাশও এইরূপ গাঢ় নীল, সবই এইরূপ। শরতেও
হিমালয়ের এমনই গভীর অথচ মনোহর, অভয়কর অগচ উন্মাদক সৌন্দর্যা।
কিন্তু আমরা যে শরৎকালের কথা উল্লেখ
করিতেছি, সেই শরৎকালের অমাবস্যারাত্রে হিমালয়ের এক অপূর্ক সৌন্দর্য্য
হইয়াছিল। সে শরৎ সভ্য ও ত্রেভামুগের সদ্ধিসমরে।

21

মাস্ব মরিয়া কি হর ? কে বলিবে ? কেহ বলে ভূত হয়, যাহাদের পিতা মাতা মরে ভাহারা বলে ভাঁহারা অর্গে গিয়াছেন; কিন্তু বাস্তবিক ভাঁহারা অর্গে যান না। যে সকল লোক পৃথিবীতে

সংকার্য্য করিয়া যান তাহারা ঋভু* হরেন, ইহারা কোথায় থাকেন ? কি करतन १ (क वनिष्ठ शांतें। देदांता ষ্ঠায়াপথের ওপারে কোন স্থময় ভবনে वाम करतन । উক্ত শবৎ অমাবগারাত্তে महना हात्रां १९ विशा विमीर्ग हरेया (शत, আর ভাহার মধ্যহইতে অগণিতসংখ্যক ঋভুগণ বহিৰ্গত হইলেন। সমস্ত ব্ৰহ্মাণ্ড ভারাদের শরীরপ্রভায় আলোকিত হ-हैन। नकरखंत्र कित्रग चन्नहिं इहेन, চিত্রার্পিতবং আকাশপটে বিরাজ করিতে লাগিলেন। ঋভুগণ মুহূর্ত্তিমধ্যে আকাশপথ অভিক্রম করি-লেন। পক্ষী ঝাঁক বাধিয়া বেডায় দেখিতে কতই স্থলর, কিছু যথন তীব্র জ্যোতিশার ঋতুগণ শরীরপ্রভার দিগস্ত আলোকিত করিয়া—আকাশপথ আচ্চর कतिया परल परेल यांगिरंड गांगिरलन, ख्यन पृथिवीय मानववृत्त हम्दक्क इ. ইয়া গেল। কেহ বলিল, ধুমকেতু উঠিয়াছে, কেহ বলিল, নক্ষত্ৰসমূহ খ-সিয়া পড়িভেচে, কিয়ৎকণ দেখিয়া যে থাহার ঘরে গেল। ঋভুগণ আজি জন্ম-স্থান দর্শন করিতে আসিয়াছেন, তাঁ-হারা যত নিকটবর্তী হইতে লাগিলেন, छांदारमत्र चानत्मत्र नीमा नारे, छांदात्रा -আসিয়া হিমালয়ে উপস্থিত হইলেন।

তথন টিব্যার টিব্যার ।, চ্ডার চ্ডার,
লিথরে শিথরে, ঋড়গণ দাড়াইরা মহানন্দভরে গান ধরিলেন। মানবের সাধ্য
কি সে গান বুরে! কিন্তু সে শ্রুতিমনোহরত্বরে জগৎ মুগ্ত হইল। জগৎ নিতন্ধ, আকাশ নিজন, নক্ষত্র অচল্যু বিকাল ছারাপথ নিশ্চল, নিশান্দ সমস্ত্র,
বন্ধাণ্ড ভড়িত ভিমিত মহামোহ নিজার
অভিত্তবং হইল। ঋড়গণ একতানত্বনে
গান ধরিলেন। গীতধ্বনি বন্ধাণ্ড-ভাডোাদর পরিপ্রিত করিরা উন্তুক্ত ছারাপথ
ভারপথে অনস্তে নিলীন হইল।

ভারপথে অনস্তে নিলীন হইল।

ভ্

মৃগ্ধ হইরা পৃথিবীত্ব, আকাশত্ব, ব্রস্থাপ্তত্ব, অনস্তত্ত জনগণ এই গান প্রবণ
করিলেন। উহা সকলেরই কর্নে স্থান
ধারাবিৎ বোধ হইতে লাগিল। বেমন
বড় স্থের সমরে স্থাসন্তানবৎ অপ্রবং
অর্কচেতন অর্দ্ধ অচেতনবং মোহমর
স্থামর, শান্তিমর, অমৃতমর, দ্রক্ত মধুর
সকীতধ্বনিবং কাণে কি জানি কি
নিলীন হয় সেইরপ সে গীতধ্বনি সকলের কর্নে লাগিল। কেহই ব্রিল না
কেন ভাহাদের প্রাণ প্রক্ল হইল, অণচ
সকলেই মৃগ্ধ হইরা রহিল; কেবল তিন
জন লোক গানের অর্ধগ্রহ করিয়াহি
লেন। তিনজনে গানে মৃত্ত হুরাহিলেন,
তিনজনে মন্ত্রপ্রবং স্থর লক্ষ্য করিয়

^{*}বে মাতুৰ সংকর্ম করিয়া মরবের পর দেবতা হয়েন বেদে তাঁহাকে ৠ^{ত্} কহে।

^{. †}পাহাড়ের উক্ষ অংশকে পাহাড়িরা টিব্যা বলে।

[‡] এছকার গান্টি হারাইরা ফেলিরাছেন।

হিমাবরচ্কার আসিরাছিলেন। ইইারা ভারতের চ্ডা, যতদিন ভারত থাকিবে, যতদিন হিলুধর্ম থাকিবে, যতদিন কগতে মাহাছ্যোর মান থাকিবে, ডভদিন ইইা-দের লাফ লোপ কটবে না।

91

ध्येथम महर्षि विश्वह विष्ठित विष्ठित ह्या निवा-প্রিবৃত হইয়া আপন আশ্রমে অবহিতি করিতেছিলেন। তাহাদিগকে জ্ঞানধর্মনীতি डेशरमण मिट्डिंगिन: कांशरक वाका. बाहा, वाक, काहारक अभाग, श्रायम, धारायम, मःभवनिर्वत्र, इनकाडिरइषा-ভাস প্রভৃতির গৃঢ়তম্ব, কাহাকে পঞ্ ভন্মাত্রের সহিত লিক্লারীরের ভেদা-(छम. काशांदक विवर्खनामी, काशांदक পরিণামবাদী বুঝাইয়া দিতেছেন ; কা-হাকে গোমেধ, অশ্বমেধ, রাজস্য, অগ্নি-ষ্টোম প্রভৃতি শিক্ষা দিতেছেন; শিব্য ৰিবৈচনায় কাহাকেও বা দশকৰ্মওশিকা দিতেছেন। এমন সময়ে সহসা তাঁহার শিষাসমূহ অনামনা, श्वित, निल्लान, भिष भन्नमृद्धवर वाक्**म**क्तिविशैन हरे. গীতধানিও বশিষ্ঠের কাণে গেল, তিনি যোগবলে জানিলেন ঋড়-গণ আসিয়াছেন। তিনি অমনি যোগবলে • श्मिनरम्म भिथत नका कतिया चाकाम-পথে গমন করিলেন। এবং মৃহুর্তমধ্যে তথার উপস্থিত হইরা, ঋতুদিগকে নম-কার করিয়া একভালমনে গান শুনিতে विशिष्ट्राम्य ।

दिञीय, विश्वामिख । देनि निधिन्तरत्र वहि-

र्गक इरेशा नमक जिन टेननाडांनमा कतिया ग्याति श्रीकात्म हिमान्द्यत श्रीह-(मृद्य गिविक्षणांभन कतिशक्तिना देमना-গণ পথশ্ৰান্তিনিবন্ধন যে যেখানে পা-ইল সে সেইখানেই ভাম্ব গাড়িতে আরম্ভ করিল। বিশ্বামিত করেকজন মন্ত্রী লইরা কালিকার সৈনাচালনার পরামর্শ করিবার জনা এক ক্ষুদ্র নির্ম্ব-রিণীতটে আসিয়া বসিলেন, এমন স-मरत्र व्याकाण व्यारनाकमत्र इटेबा छेठिन, ष्यात (गरे स्माधुत गी उध्यनि मकटलत कार्ष (श्रम्। देमनाश्रम (य हिन, रम रमरे छारवरे निम्हन, निम्मन **७ द्र्यरमाहर व्याष्ट्रत रहेगा (शन।** বে তামু গড়িয়াছে তাহার বিছানা করা इहेन ना, य शाष्ट्रिकह, जाहात चार्छ-(करें भिष इहेल, आंत्र (य शाकिवांत्र উদ্যোগ করিতেছে, ক্সাহার ঐ পর্যাপ্ত। বিশ্বামিত্র গীতধ্বনি বুঝিলেন, অমনি চকিতের নাায় তিনলক্ষে এক টিবাায় উঠিলেন, किन्न डांशांत्र आशंगतन त्य अञ्-দেব কৃষ্ণবৰ্ণ হইয়া গেলেন তাহা দেখি-शांख (प्रशिद्यन ना।

ভূতীয়, বাল্মীকি। ইনি নিজ দহাদল
সমভিব্যাহারে গিরিরাজের প্রাসাদে
ভাকাতি করিতে গিরাছিলেন। নিজে
প্রাসাদের ছাদে উঠিরা ছই পাঁচ জনকেও তথার আনিয়া সিড়িভাজিবার
উদ্যোগ করিতেছেন, চারিদিকে হৈ হৈ
বৈ বৈ দল পড়িরা গিরাছে, রাজরক্ষিগণ কে কোথায় যাইবে দ্বির ক্রিডে

পারিতেছে না, কোথাও ডাকাইতৈ মন্দী কাটতেছে, কোথাও ডাকাতে ডাকাইত কাটতেছে, কোথাও ডাকাতে ডাকাত কাটতেছে কোথাও সন্দী মন্দী কাট-ডেছে। বালীকি ক্রমাগত অসি আখালন করিতেছেন আর সংক্রেমন্ত শিলা বালাইতেছেন। এমন সময়ে আলোক ও গীতধানি হইল। অমনি যে যেভাবে ছিল চিত্রপুত্রিবং নিম্পাল হইয়া গেল। বাল্মীকি গান শুনিলেন ও ব্ঝিলেন। অমনি অন্তত্যাগ করিয়া লাফ দিরা ভূমিতে পড়িলেন এবং নিকটবর্ত্তা টিব্যার আরোহণ করিলেন।

8

शांति त्रुध (क नह ? यथन नामाना মহ্বাগায়ক তান ছাড়িয়া গায় তথন কে না মুগ্ধ হয় ? তাহা অপেকা যথন অন্তরের জালার কেহ প্রাণ খুলিয়া গার তথন আরও মধুর হয়, আবার যে পীত বুঝে সে গীতে অধিক মুগ্ধ যে গীতের ভাব বুঝে দে আরও মুগ্ত হর, গীতে যদি শুধু কাণ না ভরিয়া মনও ভরাইতে পারে তাহ, হইলে সৈ গীতে লোকে উন্নত হয়। আজি ঋভুগণ शांवक, अञ्चलिम्मित्न श्नादक श्निज् • रहेबा शाहेटल्ड्न, ज्यादात कामा ब चारह ! डांहांत्रा कि (प्रथित्रा शिक्षाहित्यन श्यान अथन कि वहेताटक ! विश्वं, विश्वा-ষিত্ৰ ও ৰাজীকি শ্ৰোডা,ভাহারা ওনিডে-ছেন বুঝিতেছেন ভাৰগ্ৰহ করিতেছেন। ী কাণ মন প্রাণ ভরিয়া উঠিতেছে বাহি-

(तत्र रेखित्र कारनः बार्ट्यम कितिशाह मन ७ व्यान कारन छेठिबाट स्थान टेड छन्न হত তাঁহারা গায়কে মোহিত গায়কের ভাবে মোহিত গানে মোহিত হুরে মো-হিত আর গানের ভাবে আরও মোহিত। গানে বলিতেছে সব ভাই ভাই এস ভাই ভাই বিশব্দ্ধাতে স্ব ভাই ভাই ; সব আপন, সব শ্রেম, व्यानीमात्वहे छाहे; धन कानाकृति कत्रि अम मत्व भिला अक हरे अकलान-মনপ্ৰাণ হই। এ তে কে না মুগ্ধ হইবে, ७५ मूथ ? मूथ इरेट मूथ, जारा रहेट उ मृक्ष यनि किছू थाटक छाष्टा छ इटेट इया। তিন জনইত মুগ্ধ কিন্তু মনের তলার ভলায় অতি গোপনে গোপনে আন্তে ष्मात्त्र भीत्र भीत्र এकि छारनात्यारः সকলেরই মনে বহিতে লাগিল। ভাঁছারা ইচ্ছ। করিয়া ভাবিতেছেন না কিছ ভাবনা থামাইতেও পারিতেছেন না। কেহ কেহ বলে ইচ্ছার মত শক্তি নাই किन्द्र यथन সমস্ত मन উद्दिश हम् नमस् मब ज्व इहेग्रा धक्षिरक ट्यांड: हलिए ণাকে, তথন তাহাকে ইচ্ছার সাধ্য কি निवात्रण करत्र।

বশিষ্ঠের মনে আত্মপ্রসাদ, আমি বাক্ষণ ক্ষরিয়ে বিবাদ নিটাইরা ত্রিরাছি।
আমি সব ভাই ভাই ক্ষরিবার যোগাড়
ক্ষরিয়াছি, নিলে ক্ষরিয়ের পুরোহিত
হটয়াছি। লাঘৰ স্বীকার ক্রিয়াছি এই
ভাবনালোতঃ যত বাড়িভেছে তড়ই
ডিনি আরও উন্মত হইডেছেন।

বিশামিক ভাবিতেছেন আমি সমস্ত পুৰিবী কয় করিয়া এক করিয়া আনি-য়াছি আমার শাসনে সৰ ভাই ভাই হইয়া যাইবে, যতবার তাঁহার এই ভাবনা হইতেছে ততই তাঁহার মুগ্ধভাব বৃদ্ধি পাইতেছে। আর বালীকির অন্তরের অন্তরে ভাবনা কি ? হায় আমি কি করিতেছি আমি কেবল আমার ভাই-धरमत मर्थनां कतिए हि !!! आंगात ध कनक किरन यात्र, ध मात्रन काला किंट्न निवारे : किंत्रार्थ क्रमग्र निध हम। গান যত ক্ষিয়া আদে উচ্চার আকুন-ভাব আরও বৃদ্ধি হয় ক্রমে চক্ষের কলে তাঁহার বুক ভাসিরা গেল তিনি কাঁদিয়া ঋञ्दारत्वत शादत अ कारेत्र। खेटेकः चटत রোদন করিতে লাগিলেন। भतीत ধুলায় লুঠিতে লাগিল, দেব রক্ষা কর, পাপের প্রায়শ্চিত্ত কহিয়া দেও, প্রাণ আর বাঁচে না।

দেবমাহাত্মা কে ব্ৰিতে পারে ! সহসা
বাল্মীকির মন প্রফুল হইল। কে যেন
অন্তরের অন্তরে বলিয়াদিল ভয় নাই ভয়
নাই, পাপত্যাগ কর, ভাই ভাই করিয়া
গান করিয়া বেড়াও,তোমার প্রায়ন্চিত্তও
ভক্তর কিন্তু ভয় নাই তুমি ভাই ভাই
গাইয়া বেড়াও ভোমার জীবনে তুমি
কিছু ক্রথ পাইয়া মরিবে, কিন্তু ভোমার
আত্মা এই পৃথিবীতেই থাকিবে, যেখানে
ঘোর অন্ত্যাচার সেইখানেই উহার
উপন্থিতি হইবে, যেদিন পৃথিবীময় ভাই
ভাই হইয়া উঠিবে সেইদিন তুমি আমা-

দের সঙ্গে ঋড় হইবে ঋড়রাজ হইবে ভোমার স্থাধের শেষ থাকিবে না।

অৱকণেই বশিষ্ঠের আত্মপ্রসাদ বৈন-রাশ্যরণে পরিণত ছইল। তাঁহার বোধ হইল যেন কিছু হর নাই তাঁহার দব চেষ্টা বিফল হইবে।

বিখামিত্রের বোধ হইল তাঁহার খোর বিপদ সমুধে, তিনি যেন কত পাপ করিয়াছেন কিন্তু তিনি দে কথায় কাণ দিলেন না বীরজনস্থলভ আত্মদে মন্ত হইরা আত্মগরিমায় পূর্ণ হইডে লাগিলেন।

ক্রমে গানে মুগ্রভাব অস্তরিত হইল।
শেব এই যে ভাবনাস্থাত তাহাতেই
তিনি জলমর হইলেন, ভ্বিরা রহিলেন,
পূর্বে সকল ইক্রির কাণে উঠিয়াছিল
এক্ষণে ফিরিয়া হাদরের তলে তলে লুকাইয়া হাদরের খেল দেখিতে লাগিল।
ঋতুগণ বে কোন্ দিক দিয়া চলিয়া
গোলেন তাহা টেরও পাইলেন না, তথন
যে রাত্রি নাই তাহা তাঁহাদের জ্ঞানও
নাই, আয়াচিস্কার বে মগ্ন তাহার আবার
দিন রাত্রি কি ?

@ 1

এদিকে ঋতুগণ হিমালয়লিখরসমূহত্যাগ করিয়া উপরে উঠিতে লাগিলেন।
বোধ হইতে লাগিল রাশিচক্র জন্যপথে
ফুরিতেছে।ক্রমে যতদ্রবর্তী হইতে লাগিলেন বোধ হয় লক লক নৃতন নক্ষত্রের
আবির্ভাব হইল, ক্রমে আর নক্ষত্রভাবত রহিল না বোধ হইল আকাশ

क्षामा क्षामा भाग भाग कर्या निवास देविन, क्राटम द्यम हात्रांभधनर्थ खार्यम कतिन। त्याथ बहेरक नाशिन बरिजानी मम्स विश्वकाश क्षांत्र कतिरव, वांगरवत (भवकारन वर्ष्कृत विवाद विवादिश्वि नावा-त्र(नव मूर्थ विश्वत्रशांत खिविडे इहेर्छ क्षित्राहित्वन धनमदत्रक त्मरे ध्वकात (वाथ इट्रेंड नाशिन। क्राय नमस (चंकरमचर्द्य इतिजामीशर्क निमीन হইল। হরিতানীর মধাগহরর পূর্ব হইল বিশ্বসংসার আবার ষেমন তেমনি হইল আবার নক্ত অনিল আবার আকাশ ভির হইল আবার আকাশের কোমল মীলিমা বিকাশ হইল। পৃথিবীতে প্রভাত र्हेन, काक, द्यांकिन छ।कित्रा छेठिन। বেমন বড় ভয়ানক ক্রিয়াকাও শেষ क्ट्रेटन সমস্ত बाजी थे। थे। क्ट्रिट थारक সমস্ত বিশ্বসংসার তেমনি খাঁ খাঁ করিতে

বিশামিত বলিষ্ঠ ও বাত্ৰীকি লাগিল। আপন আপন টিবাায় ভাবদায় ভূবিয়া-ছিলেন কভক্ৰ ছিলেন কে বলিভে शांदत ? जारम यथन कान इहेन खश्म (मिश्रियन ममछहे अनाक्रभ, भद्र--आ-कारण कानुत्र बहेबारक, नक्ष द्रांशिक नुकारेग्नारक, अञाजवायु श्राव श्रक्त করিতেছে নির্মাণ কাণ জুড়াইয়া मि**তে**ছে ভিনলনেরই রলনীর বৃত্তাক স্থাবং বোধ ছইতে লাগিল। বাল্মীকি यथन छेठिया (मधिर नन मिन भान व नाहे সে দেবও নাই তিনি খোকে আকুণ হইয়া বসিয়া পড়িলেন। বশিষ্ঠ প্রাতঃ कुछानित बना याश्वरम बाधरम यहिए ষাইতে দেখিলেন বিশ্বামিত নামিতেছেন: অমনি সসম্ভবে ভাঁহার নিকট আসিয়া ছন্ত্রনে পদব্রন্ধে পর্বত অবতরণ করিতে नाशित्न ।

ned FORTON

যার কাজ সেই করুক।

চির্কালই কথা আছে মার কাল সেই করে। বলি অনো অন্যের কাল করে, তবে সে কাল নিশ্চরই থারাণ হর। কিছু আমাদের এমনি অদৃষ্ট মন্দ, আমাদের সকল কালই পরে করে। আমারা কেবল আহার করি, ছই হাত নাড়িরা ছুইপাটী দাত কাক করিয়া ভাহার মধ্যে সংভপণে—হণ্টক ইইতে

পৃথক্কত সর্বপতৈলভজিত মৎসাদেহ

নমভিবাছত—বরিশালোৎপর লবুঁপাক
বালামাভিধের তশুলভাত অর্রাশি
গলাধঃকরণ করিয়া থাকি। তাহাও শুনিরাছি কাহার কাহার সৃহিণী মাছের কাটা
বাছিরা গরাসগুলি পাকাইরা রাথেন,
কর্ত্তার কার্যোর মধ্যে উল্ভোলন, প্রবেশন ও গলাধঃকরণ। আমাদের দে-

কাল ভ আটশত বংসর ধরিরা পরে কবিরা আসিতেছে। মার সঙ্গে আমার ভাইবের বাগড়া र्देश नार्यं जारा कि निवार मि बाधात (मर्टन वर्जी बाजित्न बानिवर्कि খাঁ ভাছাকে ভাডাইবে। আমাদের সীমা-श्राप्तान चलाहात कतिल क्रोमरखत পাহাড়ীরা ভাহাদের ভাড়াইবে, আমা-टेक्ब माध्यामध्यत दीथ चानिया श्रीतन है जिल्लाव ভাষা हिटव। आमारहत्र कांक छान इत्र नां. **छाग इत्मल भत्रक्रका दिली इत्र, किन्द्र** ভা হলে কি হয় আমরা আমীর, সব कांक भद्रक मित्रा कदाहेबा नहे। अथवा আমরা (genius) জিনিয়স। জিনিয়সের বোল এই Never do yourself what you can have another to do for you. आमारमत तक्षक्रमिए नवारे मतन করেন আমি জিনিয়স, আমার কাজ চুপ कतिया, कार्ण जुना मित्रा यित्रा थाका আর জনোর কাজ এই যে আমার আহার যোগার। পরে যতক্ষণ করে, ততকণ আমরা হাত পা নাড়ি না। भिव भरत मा कतिल आंगरा किहूरे ক্রিতে পারি না।

সে যাই হউক, এটা ঠিক্ বে, যার কাজ ভাহারই করা উচিত। আমার বাড়ীর সন্মুখে রাজার জল বাঁথে ভাহা পরে মেরামত করিরা দের, আমার বাড়ীর পাশের বন পরে কাটিরা দিরা যার, এটা একাক্ত ছঃখের বিষয়। ছঃখের विवत इहेटन बामना कृति ना, बाखान चन नेविशादक, नर्नात नमत ना क्य नाके वाहित इटेनाम ; यक्ति वाहित इटेनाम, ना रत्र अक्षात्र अक्ष्रे शास्त्र कण का-ণিল, ভাহাতে ক্ষতি কি 🕈 আহাদের मत्मत्र छाव ठिक् धरे। कि आमत्रा ৰাভীত অন্য বে কেছ এ ব্যাপার দেখে, मिरे पुना करत, धरे बना देशदब वाराञ्च करमक वरमज धतिया आभारमज আপনকর্ম জোর করিয়া করাইবার চেষ্টা করিতেছেন। ভাছাতে আমাদের ঘুণা হয় না, আমরা আপন কর্ম্ম করি ना। टिक्र ना मिटन परी, वारी काष्ट्रिया नरेया यात्र, धरेकना (हेन्स निरे, किन তাহার পর আবার পরের উপর নির্ভর করিয়া বিদিয়া থাকি; আর কিছুই দেখি

গবর্গমেণ্ট আমাদের মধ্যহইতে মিউনিসিপাল কমিলনর লন, তাঁহারা কর্তার
কথার আজ্ঞা হাঁ দিরাই নিশ্চিত্ত হন।
কর্তা সাহেব হইলে, না বলিবার কাহারই ত যো নাই, যদি বাঙ্গালি হইলেন, উবে বরং তুই একজন ঠোঁটকাটা
তুই একটি কথা বলিলেন। বেটুই চর্ম্মপাত্রকচরণে, উফীষমন্তকে, দিব্যক্তলবর্মাচ্চাদিতসর্ককলেবর, স্থাজিজবো
সর্কাঙ্গ বিলেপন করিরা যশোদার নন্দতুলাল মিউনিসিপাল সভার উপস্থিত
হইলেন, অমনি সব চুপ। কেবল
মধ্যে মধ্যে "আজ্ঞা হাঁ" নতুবা "হো
হকুম।" ভির আর কথা নাই।

এখন গ্ৰণ্মেন্ট আমাদের নিজের
কাল নিথে করাইতে চান, আসরা
ভাষা করিতে পারি না, গ্রন্থেন্ট
আমাদের কর্ম শিণাইতে চান,
গ্রন্থেন্টের প্রতিনিধিরা আমাদের
ভাষা শিথিতে দেন না, এই অকর্যারা যদি কেছ কর্ম করিতে চান,
মাজিট্রেট সাহেব ক্র ক্ষিত করেন।
ভাষার ইচ্ছা, ভিনি বাছা রলেন, আমরা ভাষাতে কেবল "হাঁ" দিরা
বাই। ভিনি কেবল হাঁ দিবার মত
কমিসনর নির্বাচন করিরা লন।
ইহার এক উপার আছে,—আম্মা
নিয়ে যদি মেম্রনির্বাচন করিতে

পাই, ভাষা হইলে চেরারমানের ধামাধরাগণ আর বড় কমিটীতে স্থান পার না, সেই এক ভরপা আছে; অভএব বেখানে খেখানে স্থানীর মিউনিসিগাল শাসন আছে, নিজে নেম্বরনির্কাচন করিবার জন্য চেটা করা আবশাক, নহিলে কমিটী ভোমাদের অর্থশোবণ করিবে, ভোমাদের কাছে বড় হইরা, কর্তার কাছে হাত্যোড় থাকিবে। আর ভোমাদের কাল হইবে না। ভাই বলি বার কাল সেই কর্কক। ভোমাদের ক্রিস্নর ভোমরাই নির্বাচন কর এ বিব্রের আইনও আছে।



বঙ্গদশন

সপ্তমবৎসর।

৮२ मःथा।

বাঙ্গালার পাঠক পড়ান ব্রত।

তাদাত অলহার-কণ্টকিত বালালা ভাষা আমার আমত নহে, তথাপি একটা কথা লিখিতে প্রবৃত্ত হইরাছি। আমার নিরলক্ষত ভাষার সে কথাটির চটক ইইবে না, স্কুডরাং লোকে ভাষা পড়িবে না, তথাপি পড়াইতে আমার ইচ্ছা। কথাটা স্পাই করিয়া, পরিছার করিয়া বলিতে পারিব কি না জানি না, কিছু আমি বলিতে পারিবাম না আর একজন পরে বলিবে এই ভর্নায় অপেক্ষাও করিছে পারি না।

প্রথমে বিজ্ঞানা করি, বলবাসীলের
মধ্যে ক্রতান্ত্র পড়িতে পারে ? তুনি
বলিবে বিজ্ঞা; প্রানে প্রানে, পাড়ার
পাড়ার, পাঠজানা ও কুল আছে, পাঠজ কের সংখ্যা বিজ্ঞার হওরাই সক্তর।
আনিও ভাছা শীকার করি। কিন্তু বিতর বলিলে সংখ্যা অহতেব হর না।

বালালার আয় ছইকোটা পুরুষ বান করে, তাহাদের মধ্যে কত লক্ষ পড়িতে नक्षम ? विश्मिक नक ? नां, आंद्र छ অল ? একণে হক হিসাব হইতে পারে না; একটা মোটামুটি অনুভব করিয়া नहेट इंटर। शारमत चार्किक वानक পাঠশালায় যায় না। যাহারা যায়, তাহাদের অর্দ্ধেক—বরং কিছু অধিক হ-ইবে—অকরপরিচয় অবধি অপেকা करत ना, भाठेणानात श्रीफुटन शनातन করে। যদি শতকরা চল্লিশঙ্গন ⁶বালক পাঠশালার ঘাইতে আরম্ভ করে, ভাহার यक्षा अकत्रशिक्षत शृद्ध कूड़ियन পাঠশালা ভ্যাগ করে, বাঁকি কুড়িজনের मर्था मणजन य९किकि९ णिका कतिया বয়:প্রাপ্তে রামায়ণ প্রভৃতি ছাপার পুঁথি , কটে একপ্রকার পড়িতে পারে, আর বাকি দশবন অপেকায়ত ভাগ-

রূপ শিক্ষা পার। কেবল এই শেবোক ব্যক্তিদের গণ্য করিলে বাঙ্গালায় কুড়ি-লক্ষ লোক পড়িতে সক্ষম। অর্থাৎ প্রতিশতে স্পল্লন হিসাবে পড়িতে পারে। যদি কেছ বলেন, বাঙ্গালার পাঠকসংখ্যা এত হইবে না, ভাছাতেও আপত্তি নাই; কুড়িলক্ষ পাঠক কাটিয়া দশলক্ষ করিতে প্রস্তুত আছি। প্রতিশতে পাঁচলন যে পড়িতে পারে ইহার আর সন্দেহ নাই।

একণে জিজাগা করি বে, এই
দশলকের মধ্যে কয়জন সংবাদপাত্র বা সাময়িকপাত্র পাঠ করেন ? কোন্
বাদালা পত্রিকার তাইহাজারের অধিক
গ্রাহক আছে? সকল পত্রিকার গ্রাহক
একুন করিলে উর্জাংখ্যা দশহাজার হইবে,
চুইকোটি প্রক্ষের মধ্যে দশ হাজার!

বে বাঙ্গালার সামান্য পর্বোণলক্ষে
নিমেরমধ্যে দশহাজার লোক এক স্থানে
এক মাঠে উপন্থিত হর সেই বাঙ্গালার
সংবাদপত্রের গ্রাহকণ্ড দশহাজার!
পর্বোপলক্ষে বাঙ্গালার বাধ হর
প্রতিবংসরে প্রার আটলক্ষ টাকার
মাটার প্রত্ল বিক্রের হর, কিন্তু সংবাদপর্বের নিমিন্ত তাহার চতুর্থাংশের একাংশপ্ত ব্যর হর না-। তুমি বলিবে সংবাদপত্রের এমন কি মাহাত্মা আছে যে,
তাহার নিমিন্ত অর্থবার করিতে হইবে?
সংবাদপত্রের মাহাত্ম্য স্মালস্থ্রে; তাহা
প্রের বলিতেছি। স্কল ক্রেরেই মুহত্ব
ভাছে; বে পুত্ল ক্রের করিলে প্রসা

करल (गल मरन कतिया थाक, त्मरे পুতৃবেরও মাহাজ্য আছে; সমালসমতে তাহার ক্রম অস্পষ্ট, কিন্ত গুরুতর। পুতৃৰ ৰাশকের নিমিত্ত; ক্রীড়ার নামগ্রী; কেহ ভাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করে না, পুতৃলের কোনরূপ আধিপত্য সমাজের উপর আছে কি না কে ভাহার তদন্ত ক-विट्याइटिया किन्द्र विट्यामा कतिता एमध् বলশিশু কি প্রকার পুতৃল লইরা বেলা করে? কেবল 'মাটীর ছরিণ,' 'মাটীর शक्ती,' 'माजित त्वी' 'माजित त्यांका।' পরে শিশু বর:প্রাপ্তে নিজেই সেই মাটীর খোকা দাঁড়াইরা যার। বে ফাতির ইছো, সেই ভাতির পুতৃৰ সংগ্ৰহ कतिया अशोका कत्र, वृत्तिरक शांतिरव (य কতকটা পুড়ুলের প্রকৃতি অনুসারে গেই কাতির প্রকৃতি। পুতৃলের ক্রম অস্পট-ভাবে প্রত্যেক জাতির অস্থিমজ্জার जारह।

সংবাদপ্রসহত্বে আরপ্ত অধিক বলা
বাইতে পারে। সংবাদপ্র সংগ্রহ করিয়া
দেখিলে জাতির প্রকৃতি সম্পূর্ণ বৃদ্ধা যার,
কিন্তু আমাদের সংবাদপ্র দেখিয়া
আমাদের প্রকৃতি বৃদ্ধা যার না।
বলিতে গেলে, আমাদের সংবাদপ্র
নাই; যাহা আছে, তাহা ইংরেজিপ্রের
অফুকরণ, তাহা কোনক্রমেই আমাদের
প্রকৃতিবাঞ্জক নহে। বাজালা সংবাদপ্র
প্রকৃতিবাঞ্জক নহে। বাজালা সংবাদপ্র
তাহা পড়িতে পারে না; সেইজ্ঞা
দশ্লক্ষ লোক্ষের সংধ্য কেব্লমার্
র

দশহাজার সোক সংবাদপত্তের গ্রাহক।
অন্তএব সাধারণোপথে।গী চুই একথানি
সংবাদপত্ত বঙ্গে আবশ্যক। কেবল
এই কথা কলিবার নিমিন্ত আমি
এত মাথামুপ্ত বকিতেছি।

লোকে যত একভাবে ভাষিকে, उठरे डार्रामत्र जाटिमक्क वृद्धि भारेरव। কিন্তু সংবাদপত্র, সাময়িকপত্র ভিন্ন चात्र (क এथन) वहालांकरक धकविषय **এक्पिक सांवांहेर्द, अक्रम भारता** हना कत्राहरत ? সংবাদপত্তেব উদ্দেশ। व्यक्षिकारण त्नारकत्र मेन এक्ष्रुख वक्क कता, এकिंदिक मरनत्र श्रांड निर्फिन कन्ना। जुमि विनाद शृर्द्ध मः-ৰাদপত্ৰ, সাময়িকপত্ৰ এ সকল কিছুই ছিল না তথন জাতিবন্ধনের স্ত্ काथ। इहेट अशिशाहिन ? मःवाप्रशब ছিল না সভা, কিন্তু তথন অন্য উপায় ছিল। রামায়ণ আর মহাভারত আমা-रमत्र. कां जिवकत्मत्र मृत हिल; हेश পড়িতেন অর লোকে, কিন্তু শুনি-তেন সকলেই। • শুনিতেন কণকের মূথে; কথকেরা ভাছা বিকৃতি করিয়া ব্যাখ্যা করিতেন। আমাদের পূর্ববামী বাঙ্গালিরা সেই বিক্রভব্যাখ্যার ফল। ভাঁছাদের ব্যবহার, বিচার, যুক্তি, চিন্তা, नामा किक छ। এই नमूनर इत मूल कथर कत कथकडा चात्र वड़ नाहे, क्षक्रा। धकरण मःवामभवः, मामविकभवः (मह কথকভার স্থান অধিকার করিতে বলি-গাছে। পুর্বের কৃথক; এক্ষণকার সম্পা-

দক। উভয়ের উদ্দেশ্য এ**ক, কিছ** উপায় স্বতন্ত্র।

ঞাচীন करमक्कन क्शंक्रवाता বাদাল৷ প্রস্তুত হইয়াছিল, প্রস্তুত ভাল হর নাই সভা, কিন্তু তাঁহারা করিয়া-ছিলেন। একণে নৃতন বালালা সম্পাদ-কগণ্দারা প্রান্তত হইবে। কথকের কার্যা সহল ছিল। ভাঁহারা বক্তৃত। করি-তেন, আবালবুদ্ধ সকলে ওনিভ, সকলে বুৰিত। নানকলে এককোটা লোক উ'হাদের কথা শুনিরাছিল, বুঝিরা-हिन। मन्नामरकत रम छेनात मारे; তাঁহাদের বক্তৃতা ভাল হউক, মন্থ হউক, এককোটীর স্থলে কেবল দশহালার না হয় পঞ্চাশহাজার লোক শুনিরা थः(क, शिष्का थारक।

কিন্তু সম্পাদকের কথা শুনিবার নিমিত্ত দশলক্ষ লোক প্রস্তুত হইরাছে,
সম্পাদকেরা সে সকল লোককে আকর্ষণ
করিতে পারিতেচেন না। হেতু প্রথমতঃ অনুভব হর সম্পাদকগণের অযোগাতা, বিত্তীরতঃ হয় ত তাঁহাদের নিম্দেইতা। অযোগ্যতা এইজনা বলি যে,
যে গুণে দশলক্ষ লোক আরুই হইবে,
'সে গুণ তাঁহাদের থাকিলে এই দশলক্ষ
লোক অবশ্য তাঁহাদের হন্তগত হইত;
সংবাদপত্তে, সামরিকপত্তে যাহা ভাঁহারা
লেখেন, হয় ত সে সকলের কোন উদ্দেশ্য
প্রাহার হইতেচে তাহা আমি লানি
না, বুঝিতেও পারি না; সম্পাদকেরা

ন্ধপ শিক্ষা পার। কেবল এই শেষোক্ত ব্যক্তিদের গণা করিলে বালালায় কুড়ি-লক্ষ লোক পড়িতে সক্ষম। অর্থাৎ প্রতিশতে দশলন হিসাবে পড়িতে পারে। যদি কেহ বলেন, বালা লাম পাঠকসংখ্যা এত হইবে না, ভাহাতেও আপত্তি নাই; কুড়লক্ষ পাঠক কাটিয়া দশলক্ষ করিতে প্রস্তুত আহি। প্রতিশতে পাঁচলন বে পড়িতে পারে ইহার আর সন্দেহ নাই।

একণে ফিজানা করি যে, এই
দললকের মধ্যে কয়লন সংবাদপাত্র বা সাময়িকপতা পাঠ করেন ? কোন্
বাঙ্গালা পত্রিকার ভ্ইহাজারের অধিক
প্রাহক আছে ? সকল পত্রিকার প্রাহক
প্রকৃন করিলে উর্জনংখ্যা দশহাজার হইবে,
ভূইকোটি প্রধাবর মধ্যে দশ হাজার !

যে বালালার সামান্য পর্কোপলক্ষে
নিষেষমধ্যে দশহাজার লোক এক সানে
এক মাঠে উপন্থিত হয় সেই বালালার
সংবাদপত্রের এাহকও দশহাজার!
পর্কোপলক্ষে বালালার বোধ হয়
প্রতিবৎসরে প্রার আটলক্ষ টাকার
মাচীর পুত্ল বিক্রের হয়, কিন্তু সংবাদপর্কের নিমিন্ত ভাহার চতুর্থাংশের একাংশপ্ত ব্যর হয় না। তুমি বলিবে সংবাদপত্রের এমন কি মাহাত্ম্য আছে যে,
ভাহার নিমিন্ত অর্থায় করিতে হইবে
সংবাদপত্রের মাহাত্ম্য সমাজসম্বন্ধে; ভাহা
প্রের বলিভেছি। স্কল দ্রেরেরই মহন্ত্র
ভাছে; বে পুত্ল ক্রম্ম করিলে প্রসা

काल (शन मान कतिया थाक, त्नहे পুতৃলেরও মাহাত্মা আছে; সমাজসহত্তে তাহার ক্রম অপষ্ট, কিন্ত ওরুতর। পুতুল বালকের নিমিত্ত; ক্রীড়ার সামগ্রী; (कर डाहात क्षांडि मृष्टिभाड करत ना, পৃত্লের কোনরূপ আধিপত্য সমাজের উপর আছে কি না কে ভাহার তদত ক-हिए गाहरत। किन्दु विरवहना कत्रिन्ना रम्भः বঙ্গশিশু কি প্রকার পুতৃল লইয়া খেলা करत? ८कवन. 'माजित इतिन,' 'माजित शक्ती,' 'माणित (वो' 'माणित (थाका।' भरत भिक्ष वमः शास्त्र निष्मेर राहे মাটীর খোকা দাড়াইরা যার। যে ফাতির ইচ্ছা, সেই জাতির পুতৃল সংগ্রহ कत्रिता भन्नोका कत्र, वृक्षिरक भातिरव (य কতকটা পুজুলের প্রকৃতি অনুসারে দেই জাতির প্রকৃতি। পুতুলের ক্রম অস্পষ্ট-ভাবে প্রভাক জাতির অন্থিমজায় जारह।

সংবাদপাত্রসম্বন্ধে আরও অধিক বুলা বাইতে পারে। সংবাদপাত্র সংগ্রহ করিরা দেখিলে জাতির প্রকৃতি সম্পূর্ণ বুঝা বার, কিন্তু আমাদের সংবাদপাত্র দেখিরা আমাদের প্রকৃতি বুঝা যার না। বিলতে গোলে, আমাদের সংবাদপাত্র নাই; যাহা আছে, তাহা ইংরেজিপত্রের অফুকরণ, তাহা কোনজনেই আমাদের প্রকৃতিবাঞ্জক নহে। বাজালা সংবাদপত্র কভকটা বিজ্ঞাতীর বলিরা বাজালিরা তাহা পাড়িতে পারে না; সেইল্লেস্ক্লিক্সক্ষ লোকের মধ্যে কেবলমাত্র

দশহাজার লোক সংবাদপত্তের গ্রাহক।
অন্তএব সাধারণোপয়ে।গী চুই একধানি
সংবাদপত্ত বঙ্গে আবশ্যক। কেবল
এই কথা বলবার নিমিদ্ধ আমি
এত মাথামুগু বকিতেচি।

লোকে যত একভাবে ভাবিকে, उठरे जारामत व। टिमयस वृद्धि भारे दि। কিছ সংবাদপত্র, সাময়িকপত্র ভিন্ন चात्र (क ध्वथन) वहर्ताकरक धकविष्य একদিকে ভাবাইবে, একরণ আলো हना कत्राहेट्व ? भःवानभट्यव উटक्रभा व्यक्षिकारण त्वारकत्र मन अक्ष्रस्क वश्व कता, এकिंगरक मरनत গভি নির্দেশ করা। তুমি বলিবে পুর্বের্ব সং-ৰাদপত্ৰ, সাময়িকপত্ৰ এ সকল কিছুই ছিল না তখন জাতিবন্ধনের সূত্র (काथ। इहेट अ! निशाहिन ? मःवानशब ছিল না সভা, কিন্ত তথন অনা উপায় ছিল। রামারণ আর মহাভারত আমা-দের, জাতিবকনের মূল ছিল; ইহা পড়িতেন অল লোকে, কিন্তু শুনি-তেন সকলেই। ও ভিনিতেন কথকের মূখে; কথকেরা তাহা বিকৃতি করিয়া ব্যাখ্যা করিতেন। আমাদের পূর্বগামী বাঙ্গালিরা সেই বিক্বভব্যাখ্যার ফল। তাঁছাদের বাবহার, বিচার, যুক্তি, চিন্তা, नामाबिक छ। এই नमूनरवद मूल कथरक व क्षक्डा। कर्षकडा चात्र वड़ नाहे, धकरन मःबाह्मकः, मामजिक्मक (मह কর্থকভার স্থান অধিকার করিতে বনি-शेष्ट्र। भूर्यत्र कृथकः; अव्यवकात्र गण्याः

দক। উভয়ের উদ্দেশ্য এ**ক, কিন্ত** উপার স্বতন্ত্র।

कर्थरकत्रवाता आहीन क (प्रकल्पन বালাল৷ প্রস্তুত হইয়াছিল, প্রস্তুত ভাল হয় নাই সভা, কিছ তাঁহারা করিয়া-ছিলেন। একণে নৃতন বালানা সম্পাদ-কগণদারা প্রস্তুত হইবে। कथरकब কার্যা সহল ছিল। ভাঁহারা বক্তৃতা করি-(डन, चारानर्क प्रकाम छनि छ, प्रकाम বুৰিত। নানকলে এককোটা লোক উ:হাদের কথা গুনিরাছিল, বুঝিরা-हित। मन्भामरकत तम छेशात्र मारे; তাহাদের বক্তৃতা ভাল হউক, মন্দ হউক, এককোটীর স্থলে কেবল দশহালার না হয় পঞ্চাশহাজার লোক শুনিরা থাকে, পড়িয়া থাকে।

কিন্তু সম্পাদকের কথা শুনিবার নিমিত্ত দশলক্ষ লোক প্রান্তত হইরাছে,
সম্পাদকেরা সে সকল লোককে আকর্ষণ
করিতে পারিছেছেন না। হেতু প্রথমতঃ অনুভব হর সম্পাদকগণের অযোগাতা, দ্বিতীয়তঃ হয় ত তাঁছাদের নিশ্চেইতা। অযোগ্যতা এইজনা বলি যে,
যে গুণে দশলক্ষ লোক আরুই হইবে,
'সে গুণ তাঁহাদের থাকিলে এই দশলক্ষ
লোক অয়পা তাঁহাদের হন্তগত হইত;
সংবাদপত্তে, সামরিকপত্তে যাহা ভাঁছারা
লোখন, হয় ত সে সকলের কোন উদ্দেশ্য
প্রাহার হইতেছে তাহা আমি লানি
না, বুঝিতেও পারি না; সম্পাদকেরা

নিজে হয় ত তাহা বুঝিলে বুঝিতে পারেন, কিন্তু মোটামুটি বাহা দেখিতে পাই,
তাহাতে নিজের অর্থাগম ভিন্ন আর
কোন উদ্দেশ্য অফুত্তব হয় না, অথচ
এদিকে তাহাদের অর্থাগমও দেখি না।
অর্থাগম হয় না তাহা তাহাদের
নিজের দোব, যে স্থলে দশলক্ষ পাঠক
প্রস্তুত আছে, সে স্থলে অর্থের ভাবনা
কি ৩

দশলক পাঠক প্রস্তুত করা কঠিন ব্যাপার। পুরুষামুক্রমে অনেককাল যত্ন না করিলে তাহা হয় না; আমাদের সৌজাগ্যক্রমে তাহা হইরা রহিয়াছে। তাহা সামাজিক নিয়মবিক্যারণে হউক; অথবা পূর্কপুরুবের প্রেয়ত্বে হউক, বালালার দশলক লোক পড়িবার জন্য প্রস্তুত্ত ইরা রহিয়াছে; কিন্তু বহুকালের এই উল্যোগ আমাদের দোষে বৃগা হইতেছে অথচ সম্পাদকেরা তাহা দেখিতে পাইতে-ছেন. না, তাহারা যদি এই দশলক লোককে পড়াইতে পারিতেন, বালালা নৃতন হইত, বালালির সামাজিকভা কতই বাড়িত।

হুই একজন মহাত্তব সম্পাদক খগ পীড়িতের নাার "একতা! একডা!" ব-লিরা শ্যায় শুইরা চীৎকার করেন। কেহ বা বাযুগ্রতের নাায় মাথা কাঁপাইয়া, মন্ত বিকট করিয়া, অনৈক্যের নিমিও বালালিকে গালি দেন। গালি দিয়া ফল বিং? পঞ্জিবা কয়জন পড়ে, ডোমার কথা কয়জন শুনে, একডা জন্ম এরণ কি উপকরণ ভোষার পাত্রকায় থাকে ? তুমি কি লিখিয়া থাক যে তাহা পড়িয়া সকল বাঙ্গালি সেই কথা আপনা আপনি একভাবে আলোচনা করিবে?

এক্ষণকার বাঙ্গালির সাধারণতঃ আলোচনা করিবার কিছুই নাই; তাহাদের যাহা দিবে, তাহারা তাহাই আলোচনার পথ দেখাইরা দাও, তাহারা সেই পথে চলিবে; কেছ কেছ অন্যপথে গেলেও যাইতে পারে; কিন্তু অধিকাংশ লোক প্রদর্শিত পথে যাইবে। একবিষয় পরক্ষার সকলে একই প্রণাশীতে ভাবিবে ফল ঐকমতা।

আমি নিজে ঐকমত্যের গোঁড়া নহি,
বরং অনেক সময় মতের অনৈক্যে
উরতি সম্ভব বিবেচনা করি। কিছু
আনাকে সে মতাবলম্বী করিতে চাহি
না। যদি এক্ষণে বালালার সামাজিক্ উ
রতি চাহ, তবে বালালার দশলক
লোককে পড়াইতে চেষ্টা কর, তাহার
পর বলসমাজ নিশ্চয় নুতন ছইবে।

কশলক লোক পড়াইবার চেটা করা কঠিন। বাঁহারা এই চেটা করিবেন এবং ক্রমে কৃতকার্ব্য হইবেন, তাঁহারা বল-মাতার সার্থক সন্তান, তাঁহারা ইংরেলি উপাধিধারী "টার অফ্ইণ্ডিয়া" "না-ইট কনাঞার" অথবা বালালা উপাধি-ধারী, রালাবাহাত্ব, মহারাজবাহাত্ব অপেকা শতগুণে পুলা ও মানা। वित्यव कांनि मां (य, (क अक्सर्ग वामा-नित्र मस्या नर्काश्रधान माना । जिनि विनिष्टे হউন, অনুসন্ধান করিলে হয় ত দেখা शहित्व त्य, धनांछा ताळवः मांह्रव विनत्रा তিনি মানা। তাঁহার মান্যের হেড় জন্ম। তিনি নিজের কার্যোর নিমিক মান্য कि शंग नरहन: यनि छिनि कथन कांम कार्या कतिया शादकन, खादा देव 🐷 (कवल असूरतार्थ। आवात इस छ त्म कार्या हांना दमक्त्रा खित्र चात्र किडूरे नटर। খাছারা টাদার জন্য মান্য, তাঁহারা অবশ্য गांना, डांशांकत हांमात्र एपटमत कानक মঙ্গলকর কার্য্য সম্পাদিত হয়, বাঁহারা টাদা দেওয়ান তাঁহারা আরও মানা। কিন্তু বাঁহারা চাঁদা করান ভাঁহারাই সংকার্যোর মূল। উ'হারা নিবে প্রায়ই নির্ধন, এ পৃথিবীর ভাল কার্যাই ুনিধ নের্বারা সম্পাদিত হইয়া থাকে; এক্তলে বিলাতের ইতিহাস নাড়া দিয়া এ কথা প্রমাণ করিবার প্রয়োদন নাই। ঘাঁহারা ধনসম্পন্ন, তাঁহারা প্রায় বিলাস-ভোগী হইয়া পড়েন, সমাজের মলন চিন্তা করিবার জাঁহাদের সাবকাশ थारक ना, প্রবৃত্তিও হয় ना। এ সং-गारत कार्याक्रम (कवल निर्धानता। घड এব यनि कथन बन्न मार्याय प्रमानक লোককে পড়াইবার উদ্যোগ হয়, তাহা निर्धानतम् बाता इटेटन ।

যাঁহারা নিঃস্বার্থ ছইয়া কেবল আপন চেটার বাস্থালার দশলক লোককে পড়াইতে পারিবের, তাঁহাদের বারা বলসমান্ত নৃতন হইবে, তাঁহারা মথাথই বাহাত্র, তাঁহানের ছিরবল্প হইলেও
তাঁহারা পূল্য, তাঁহাদের বাহাত্রী কেহ
দেখিবে না সভ্য, কিছ যে দেখিবে
সেই ব্রিবে।

এক্ষৰে কি উপায়ছারা তাঁহারা বন্ধ-সমাজকে পড়াইবেন। মনে কর, নগরে নগরে, প্রামে প্রামে, ছুই চারিজন বাঙ্গালার মঙ্গাকাজ্ফী এই ব্রভ গ্রহণ করিলেন। তাঁহারা মনে মনে একাস্ত প্রতিজ্ঞা করিলেন যে, ছুইটিকে পা-द्यन, मन्गीरक शादन, यङ लाक्टक পারেন, পড়িবার প্রবৃত্তি দিবেন, কিন্ত প্রবর্ত্তিত ব্যক্তিরা কি পড়িবে ? সক-লেই পড়িতে পারে এরূপ সংবাদপত্র কি সাময়িকপত্ৰ ভ কিছুই নাই। যে সকল সংবাদপত্র আছে, তাহাতে জর্মাণ-**(मर्भित त्रावनी**िक, व्यथेवा क्रमरमरभेत কাটিস্বফ নটিস্বফ প্রভৃতির মন্ত্রণা বা ঘটনা লিখিত থাকে, ভাছাতে বাঙ্গা-লির সহামুভৃতি কেন জন্মিবে। সকল সামন্ত্রিকপত্রিকা আছে, ভাহাতে হয় ত বিলাতি দর্শনের ক্রক্চি, না হয় অনা মাথামুও লিখিত থাকে, লোকের তাহা ভাল गार्ग ना, याहा जाहारमत ভाल नागित, जाहा क जाहात्मत्र मित्र ? याँदात्रा विटमय विद्वान् मर्कमाधात्रत्वत्र निः भिक (नथा डाँहारमंत्र मांधा नरह; বিদ্যাভারপ্রস্তেরা লিখিতে গেলে বিদ্যার टिकी नार्ग, डांहाता याहा, तनत्थन, লোকে তাহা বুৰো ના,

विवादनता शत्रणात वृत्यान । जाहार दाध रत्र रमकारमत्र मःकात्र हिम, " পণ্ডিতে পণ্ডিতে কথা সমস্যা পুরিয়া।" যে বিদানের লেখা বুঝা যায় না তিনি যেন নিঞ্জিত शिक्त ।

अक्टर विकाना (य, कटव वाना-লার দশলক্ষ লোকের নিমিত্ত কে निश्चित् १ जावज्ञा वनि त्य, त्य जवन বিহান ব্যক্তি অপর সাধারণ লোকের সহিত মন মিলাইতে পারেন: বাঁহারা बुरबन, लाहकता किन्नण हिंखा करत ; त्म हिस्तान खनानी कि; कान क्यांत्र **श्रं छोड़ारमंत्र (कान कथा मरन चार्टरत्र** ; --জাহারাই একণে সাধারণের লেখক ছইতে পারেন। কিছু এরপ ব্যক্তি অভি অর, অসুসন্ধান করিলেও পাওয়া क्रिन।

অভএব একৰে পরামর্শ আবশাক। वाहाता नःत्राती, वाहाता कृत्न अ-ভিত হইরা সাগর ভূলিরা গিরাছেন, ভাঁচারা এ পরামর্শের অন্ধিকারী। তাঁহারা জীর কঠ রত্নে ভূবিত কর্ন, তাঁ হারা নির্বিদ্ধে সংসার চালাইতে থা-

क्न, डाहाबा वालांगा ठामाहेवाब (कहहे নছেন। তাঁহারা আপন ছরের উর্তি ভাবুন, বালালার উন্নতি ভাবিবার ভার डीहारमन नरह १ त्य युवाना मः नारतन कृष चात्रकत्न अभर्गेख वश्र हात्रन नाहे. डाहाबाहे ध भन्नामार्भन विरामय अधि-काती । অভএব ভাঁছারা প্রাম্শ क्क्रन ।

भन्नामर्भन विषय **এ**हे (वं. कान नर्स्त्रजीन পজिकात धकरन अबूर्धान कदा উচিত कि ना ! यनि छाहा উচিত বোধ হয়, ভবৈ সাধারণবোগ্য গেখক कृष्टिम कार्या चात्रक इटेरव धक्रेश विरव-চনা করিয়া অপেকা করা উচিত কি না। কুলর সরল ভাষার লিখিত যে কয়েকথানি ক্ষুদ্র পত্রিকা একণে প্রচলিত चारक, चाहात मर्या छ्टे धकथानि নির্বাচন করিয়া কার্যা আরম্ভ করা যাইতে পারে কি না। তাহার পর भवामर्भ किकार ममनक लादकव হল্তে সেই পত্ৰিকা সমৰ্পিত হইতে भारत ।



রত্বরহস্য ৷

युका।

আমরা "রত্বরহস্য" মুকুটার্পণ করিরা যে করেকটি প্রস্তাব লিখিয়াছি,
ভাহাতে মুক্তার জাতি ও গুণাগুণ বিচা'রিত হইয়াছে। আলঃ সেই প্রস্তাব
স্কাপ্ত করিব, পরে রত্বাস্তবের অস্সন্ধানে
প্রবৃত্ত হইব।

মুক্তাসখনে প্রধান প্রধান বক্তব্য সকল বলা হইরাছে, কেবল ''বেধকার্য'' ও মূলাকলনাপ্রণালী বলিতে অবশিষ্ট আছে, স্থতরাং মূল্যকলনাতেই প্রস্তা-বের শেব হইবে।

विक कत्रिवात विधि।

মুক্তাকে একপ্রকার প্রস্তর বলিলেও বলা যার। মুক্তা অতি কঠিন পদার্থ; সুতরাং তাহার বেধকার্য্য সহজ নহে। ইচ্ছা করিলেই ইচ্ছামত ছিদ্র করা যার না। শুক্তিগর্ভ হইতে মুক্তাফল চরন করিয়া তাহাকে প্রক্রিয়াবিশেষধারা সংক্রত করিতে পারিলে তবে তাহা স্থধ্বেধা হয়। মুক্তাবাবসারীরা যে প্রাক্রি

রার্থারা মৃক্তা স্থ্যবেধ্য করিতে সমর্থ হইরা থাকেন, সে প্রক্রিরা রড্গান্তে অতি উত্তমরূপে উপদিষ্ট আছে। বথা— "কুড়া পচেং স্থপিহিতে শুভদারভাঞে, মৃক্রাফলং নিহিত্বনুতন শুক্তিকাশুন্। ক্রেটিস্তথা প্রশিদ্ধীত তত্ত ভাশুং, সংস্থাপ্য ধান্যনিচরে চ ভ্রেক্সাসম্॥ আদার তৎ সকল্যের ভত্তার ভাশুন্।" জ্বীরজাভ রস্বোজনয়া বিপক্ষ্॥ ঘুন্তং ততো মৃত্তন্কত পিশুম্লৈ: কুর্যাৎ যথেচ্ছ মিই মৌক্তিক মাশুবিভ্রম্॥

গুজিগর্জ হইতে মুক্তাফল আহরণ করিয়া, জন্য এক শ্না গর্জ গুক্তির মধ্যে রাথিয়া প্টিতকরতঃ 'দার†'' নামক দ্রব্যের্বারা ভাগুর্চনা করিয়া ভক্মধ্যে রাথিবেক। যে পরিমাণ পাকে কিঞ্ছিৎ ক্ষোটতা (উচ্চ্নভা) জল্মে, সেই পরি-মাণ পাক হইলে মুক্তাসকল ভাগু হইতে বাহির ক্রিবে। একমাসকাল ধান্য রাশিমধ্যে স্থাপন ক্রিবে। একমাস

- * " আরভাণ্ডং" পাঠের পরিবর্ত্তে কোন কোন পুস্তকে " অন্যভাণ্ডন" এইরূপ পাঠ দেখা যার। কোন পাঠ যথার্থ, তাহা আমরা নির্বর করিতে অসমর্থ। যাহারা মুক্তার শোধনাদি কার্য্য করিরা থাকে, তাহারাই এরূপ পাঠাপাঠের বিচার করিবার যথার্থ অধিকারী।
- † এই " দার" জবোর বাঙ্গালা নাম কি তাহা আমরা জানি না। অভি-ধানগ্রন্থে দেখা যায়, " ধার নামে একপ্রকার ওষধি আছে" কেহ কেহ "দাস্ক-ভাণ্ডে" এরূপও পাঠ করিয়া থাকেন। যাহাই হউক, কাষ্টনির্মিত কি বনজ ওষধিনির্মিত পাত্র যে কিরূপে পাক্তিয়ায় ব্যবহার করিতে পারা যার, ভাহা আমরা জ্ঞাত নহি।

পরে সেই সকল মুক্তা অরযুক্ত অন্য ভাতে জামির লেব্র রসসংখাগে পাক করিবে। পরে মদনবৃক্ষমূলের স্কুও মৃত্ কুটী প্রস্তিত করিয়া ঘর্ষণ করিবে। এইরূপ করিলে মুক্তাসকলে ইক্ছাসুরূপ ছিক্ত করা বাইবে।

(भाषन विवि।

শুকিগর্ভে থাকা অবস্থার মুক্তার ওঁ শুক্লা ও স্থকান্তি থাকে না। মণি-কারেরা প্রক্রিরাবিশেষবারা তাহার মা-লিন্য দ্র করিরা অতি উত্তম কান্তিযুক্ত করিরা থাকে। গরুড়পুরাণ ও যুক্তি-কর্তক প্রভৃতি গ্রন্থে মুক্তার ওঁজ্ঞবা-বৃদ্ধি ও নির্মালীকরণসম্বদ্ধে এইরূপ উক্তি আছে।

মৃলিপ্ত মৎসাপ্টমধ্যে গতন্ত ক্বন্ধা,
পশ্চাৎপচেত্তমু ততশ্চ বিতানপত্যা।
তৃগ্ধে ততঃ পদ্দিন তবিপচেৎ স্থায়াং
পক্ততোহিপি পদ্দা শুচি চিক্ননেন।
শুদ্ধং ততো বিমলবন্ত্ৰ নিষৰ্বণেন
স্যামৌক্তিকং বিমল সদ্প্ৰকান্তিকালম্।
অৰ্থ এই বে, মুক্তাসকল মৃত্তিকালিপ্ত
মংস্পৃট্যন্ত্ৰের মধ্যে রাখিরা উশীর মূলযুক্ত
তৃগ্ধে পাক, তৎপদ্ধে উফললে প্রক্ষেপ,
পদ্ধে স্থা অর্থাৎ চুর্ত্তবে পাক, তৎ প্রস্কাপ করি-

বে। আনত্তর নির্দাস, গুল ও স্ক্র বল্লেরছারা মার্জন করিবে। এইকপ প্রক্রিরছারাই মুক্রাসকল নির্দান ও প্রক্রাস্থায়ক হর, এবং সংগুণ ও স্কান্তি ধারণ করে।

ক্তবিমভা পরীকা।

মুক্তা অতি মূল্যবান্ ও হালর পদার্থ। ভারতবাসীরা ইহাকে সহারত্ন বলিয়া আদর করিয়া থাকেন। আদর ও মৃ-লোর আধিকা থাকিলেই তৎসঙ্গে তাহার কৃত্রিমতা ঘটিয়া থাকে। মুক্তাও মৃল্য-वान् ७ चानरत्रत्र वस विनित्रा पृष्टेरगारकता তাহাতে ক্বত্রিমতা করিয়া থাকে। যুক্তি-ভোজদেব লিখিরাছেন, করতক্কার (य, निःश्लामान कोमनी मञ्खाता অতি আশ্রহা কুত্রিম মুক্তা প্রস্তুত করিয়া ক্রেভাদিগের মনোহরণ করিয়া থাকে। তাহারা কাচের ন্যায় শুভ্র রজতে তৎ শতাংশ হেম (স্থ্বর্ণ) যোগ मिया शांत्रममस्या त्रकाकत्रजः এकश्रकात মুক্তা প্রস্তুত করিয়া থাকে। সে মুক্তা (मर्ज्यनमांज, ফनाফन किছू नारे।t पुक्तिकझछक वरनन, मुक्तांत्र यनि कृषि-মতা সন্দেহ হয়, তবে তাহার পরীকার্থ **धरेक्र** शक्तिकांक जानक नहां जात-

^{*} যুক্তিকরতকণ্ণত সংস্কৃত ৰাক্যটির সংস্কৃতাসুরূপ অর্থ এইরূপ; পরত্ত যুক্তাব্যবসারীরা যে কিরূপ করিরা থাকেন তাহা আমরা অসুসন্ধান করি নাই।

^{† &}quot;খেতকাচসমং ভারং হেমাংশশতবোজিতম্। রসমধ্যে প্রধার্থোত মৌক্তিকং দেহভূষণম্।। এবং হি সিংহলে দেশে কুর্বন্তি কুশলা কনাঃ"— ইতাদি।

কু জিমম।"

'ধান্দ্রন ক্লান্ত্রম সন্দেহ: কচিন্তবতি মৌক্তিকে :

উষ্ণে সলবণে স্নেহে নিশাং তদ্বাসয়ে-

ব্রীহিভির্মর্দনীয়ং বা শুক্ষ বস্ত্রোপবেষ্টিতম্। যত্তু নায়াতি বৈবর্গাং বিজ্ঞেয়ং তদ-

• যদি কোন মুক্তা কৃত্রিম বলিয়া সন্দেহ হয়, তবে তাহা জলে ও উষ্ণ সলবণ স্নেহে অর্থাৎ লবণাক্ত তৈল কিছা স্বত প্রভৃতির মধ্যে একরাত্র রাখিয়া দেখি-বেক অথবা শুদ্ধবন্দ্রের মধ্যে রাখিয়া ধানাধারা ঘর্ষণ করিবেক। এইরূপ করিলে যদি বিবর্ণ না হয়, তবেই সে মুক্তা অকৃত্রিম জানিবে।

সিংহলীয় শিরীয়া যেমন নানা উপাদানে ক্রতিম মুক্তা প্রস্তুত করিছে গারিত, তেমনি ব্যাড়ি প্রভৃতি মুনিরাও ভাহার নানাপ্রকার পরীক্ষা করিছে পারিতেন।

* কল্পজমধ্ত বুক্তিকলতক্সছে কৃত্রিম মুক্তাপরীক্ষাসম্বন্ধে অন্য করেকটি বচন আছে। তাহা এই—

"কিংপেং গোম্ত ভাতে তুলবণকার-

খেদয়ে ছহিল। বাপি ও কৰু তেওঁ বেই

হতে মৌক্তিক মাদার ব্রীছিভিশ্চোপ-

কৃতিয় ভঙ্গমাপ্রোতি সহস্কাতি

मीभाउ।।"

কৃত্রিস কি অক্বত্রিম, সন্দেহ হইলে তাহা লবণ ও ক্ষারসংযুক্ত গোম্ত্রভাণ্ডে ফেলিয়া রাথিবেক, অথবা বহ্নিরা স্থেদ লাগাইবেক। অনস্তর গুক্বত্রে বেষ্টিত করিয়া পশ্চাৎ তাহা হস্তত্তেল রাথিয়া ধানোর সহিত মর্দ্দন করিবেক। যদি কৃত্রিম হয়, তবে ভাঙ্গিয়া ঘাইবেক, আর সদি অকৃত্রিম হয়, তবে তাহা ভাঙ্গিবে না, প্রভ্যুত নির্দ্মণ দীপ্তিযুক্ত হর্বেক।

মূল্য ব্যবস্থা।

যুক্তিকলতক, গক্ষড়পুরাণ ও বৃহৎসংহিতা প্রভৃতি গ্রন্থে মুক্তার দোষ, গুণ,
ও শোধননিধি প্রভৃতি যেরূপ বিচারিত
হুইরাছে, তাহা বলা হুইল, মুলোর
নিয়মও উক্ত গ্রন্থে ক্থিত আছে,
এক্ষণে ভাহারও কিঞিং বলা গাইতেছে।

পূর্ব্বকালে ভার, তেজ, কান্তি এবং
বণক্ষার- অন্যান্য গুণনিচর (যাহা পূর্ব্বে নিণীত
সংযুতে। ' হইরাছে) অনুসারেই মুক্তার মূল্যাব-বেষ্ট- ধারণ করা হইত। এখন আর প্রায়
য়েব । সেকপ প্রথা দুই হয় না। পূর্বকালে

''ব্যাড়ির্জগদে জগতাংহি মহাপ্রভাব দিজোবিদগাহিত তৎপরয়াদয়ালুঃ' ইত্যাদি ৷৷ যেরপ আকাবের মূক্তা যে পরিমাণ মূল্যে বিক্রীত হইত, তাহা বৃহৎসংহি-তার বচননিচয় আলোচনা করিলেই জানা যায়। তাহাতে শিধিত আছে, "মাষক চতুইরধৃত সোকসা শতাহতারি পঞ্চাশং।

কাৰীপণা নিগলিত। মূলাং তেজে৷ অণ্যুৰসা ে'

৪ মাষক শ পরিমিত অর্থাং ২০ রতি ওজনের মূকা বলি তেজ ও স্থান স্থান বলি তেজ ও স্থান স্থান বলি তেজ ও স্থান স্থান শত গুলিভ বিপ্রাণাণ কার্মাণ এই—
একসা উক্তি প্রভবসা জন্ধ,
মূকামণেঃ শাণক সন্মিতিনা।
মূলাং সহস্থানি কপদ্দিকানি
বিজিঃ শতৈ রভাবিকানি প্রাণ

শুক্তিকাত বিশুদ্ধ মুক্তান্ন্যদিশণ অর্থাৎ ৪ নাষা প্রিনিত হয়, তবে ভাহার একটির মূল্য ৫ অধিক তিনশত সহস্র কপ্দিক। অপিচ— ্

'' हजू: नह्यः न ভ ठिश्माम्नाम्'

তাদৃশ গুণযুক্ত মুক্ত। যদি তদপেক। আইমাদ ন্নে ভাবি হয়, তবে তাহার মূল্য চারিদহত্র কপদিক হইবে। বৃহৎসংহিতায় জনা এক গ্রামাণের উল্লেখ দেখা যায়, যথা— ''মাষকদলহান্যাহতো দাব্যিংশৎ বিংশতি ক্সয়োদশ চ। অস্টো শতানি চ শতব্রং ব্রিপঞ্চাশতা সহিতম্।''

পূর্ব্বাক্ত ৪ মাষা পরিমাণ হইতে যদি
নাষকদল অর্থাৎ একনাষার এক চতু
থাংশ হীন হয়, তবে তাদৃশ অর্থাৎ
া নাষা পরিমিত মুক্তাব মূল্য ২২।২০১৯৮০০।২০০০ গো কার্যাপণ। উক্ত গ্রন্থে
মূল্যঘটিত বচন অনেক আছে।
ভাহার অপর একটি বচন এই—
'বন্মাষকাংস্ত্রীন্ বিভয়াং গুরুগ্রে
তে হসা মূল্যং পরমণ প্রদিষ্টম্।'' ইত্যা দি
ইত্যাদি।

অগ্রিই যে, যে মুক্তা গুরুছে ০ নাধা প্রিনাণ হয় তাহার মূলা ছুইসহজ্র কার্যাপণ।

পূর্বকালে এইরপ নিরমে কণ্ঠ ক অথাং কড়ির বিনিমরে মুক্তারত ক্রীত বিক্রীত হইত। স্বর্ণ, 'রোপ্য কি তা-আদি মুদ্রার বিনিমর সময়েও উলিখিত কার্যাপণের নিরম বাতিকান্ত হইত না। 'ক্তির ভিল্ল ওজনের মুক্তার ভিল্লভিন পরিমাণ কার্যারে রক্তান্তে বের্লপ

* ' সাব '' শব্দের অর্থ অনেক। মাষশব্দে তরামক কলায় ও পরিমাণবিশেষ ব্যাইরা থাকে। পরিমাণসম্বন্ধেও নানা মত দৃষ্ট হয়। এখানে মাষশব্দের অর্থ ৪ গুলা পরিমাণ গ্রহণ করিতে হইবেক। বেহেতু মণি, মুক্তাসম্বন্ধে ঐরপ পরিমাণ প্রহণ করিবার জন্য যুক্তিকরতরুগ্রন্থে বিস্পষ্ট উক্তি আছে। বণা—'পঞ্চির্মাঘ্কো জেয়ো গুলাভির্মাবকৈস্বর্থা। চতুর্জিঃ শাণমাখ্যাতং মাষ্ট্রক্মণি বেদিভিঃ'' ইত্যাদি। ম্লা অবধারিত আছে, সে সমস্ত সক্ষণন
করা একণে নিশ্পারোজন, যেহেতৃ
একণে নৃতন প্রণাই প্রবল। অপিচ,
নিরামক কতকগুলি পারিভাষিক শক্ষ
আছে, সেগুলি এতান বাক্র কবিলে
"মুক্রা কত বড ছইবার সন্তব ?"
এই এক কুতৃহল চবিতাথকপুফল পা
প্রাা বাইতে পারে। অত্থ্য, কুতৃহল
চরিতার্ভাব জনা অন্য ফল না থাকি
লেও এতানে সেগুলিব উরেণ কবঃ
গোল।

ধ্ঞা , ১ কুচ। চিক্ক:... , ১০ ধবন মাধক , ৫ ,.। দার্বিক , ১৬ .। শান.... ২০ ,,। স্থপুর্ণ... ২০ ,,। কৃষ্ণণ শিক্য , ... ৩০ ..। রপক দোম... ১০ ,।*

গ্রাহী মূল্য নির্দিষ্ট আছে, কোন এক সংধারণ নিয়স নাই। "শাণ" হইতেই ত'দৃশ সাধারণ নিয়ন আবদ্ধীকৃত হই-রাছে। যথা—

শাণংগরং মাধক ,মক নেকং
বাবছিবর্দ্ধিত গুলৈবপীলন :

নালান ভাবং বিগুণেন যোগা
মাপোতা নার্গীহতেহ্পি দেশো ।

'শাণ' পরিমাণের পার, ওজনে যভ
মাধ্য অধিক হইবে, অনার্গীহত দেশেও
ভাষার প্রতাক অধিক মাধার মূল্যের
হৈওলা ভির থাকিবেক। ভোলদেবকুত
মাজিকরতক একে আর্থার ৪ লিখিত আছে
ব্যু,

'হক্ষাতি হক্ষোত্ত মধ্যমানাং

যক্ষোতি কানামিছ মূল্য মুক্তম্।

তক্ষাতিমাতেণ ন জাতু কার্যাম্

গুলৈবছীনসা হি তৎপ্রানিষ্টম্।''

মছক রন্ধাক্ষে হক্ষ, অভিহেম, উত্তম

ও মধ্যমালি মূকার যেরপ মূল্যাবধারণ
কবা হইরাছে, তাহা, যে সেকল গুল বপিত হইরাছে, যদি সেই সকল গুল

থাকে, তবেই সে মূকা নির্দ্ধারিত মূল্যে
বিক্রীত হওরার যোগ্য।
'যেওঁ চক্তাংগুলংকাল মীৰ্দ্ধিকলাকৃতি,

অম্লাং স্পানংভাগ মন্ত্রারভেত

₹

শুরুৎসংহিতা ও যুক্তিকলতক্রছে পরিমাণবোধক ''নিকরশীর্ষ'' শিক্তপ্রা' ''চ্ব'' প্রস্তৃতি আরও কলেকটি শক্ত আছে, ভেল্বারা অনুমান হল, যে, প্রাচীনকালে কেহনা কেহ উল্লিখিত পরিমানের বৃহংমুক্তা দেপিয়াছিলেন।

य मूकांत मीखि हक्ताः अमृण वर्षाः মধুবত্তভ্র, কিন্তু আকৃতি ঈষৎ বিশ্বফলের ান্যায় অর্থাৎ স্থগোল নছে, সেমুক্তার ম্লা নির্দিষ্ট মুলোর সপ্তমভাগেব এক ভাগ হইবেক।

পূর্বেই বলা হইয়াছে, যে, মুক্তার व्याकाद्रशंक देवनक्रमा व्यत्नक्रिय रहेगा থাকে। মুক্তার গঠন যতই বিলক্ষণ হউক, স্বর্ত্ত অর্থাৎ স্থগোল মৃক্রারই মৃশ্য অধিক। গোলতার তারতমাানু-সারে বিষমগঠনের মুক্তার মূল্য নির্দিষ্ট হইয়া থাকে। স্থপিচ,

''পীতক্সা ভবেদৰ্শ মবৃত্ত্যা লিভা-

গতঃ ৷

বিষমব্যন্ত ভাতীনাং ষড্ভাগং মূল্য गानिरभं९।"

গুণ্যুক্ত ও অবৃত্ত মুক্তা অপেকা গী-তক জাতীয় মুক্তার অর্দ্ধ মূল্য হ্টয়া আর বিষম ও বাক্তজাতীয় মুক্তাদকলের মূলা প্রকৃতবিত্ মূকা অপেকা ছয়ভাগের একভাগ হয়। অৰ্দকপাণি সক্ষোটাৎ পদ্মচূৰ্ণাণি

. যানিচ।

ष्मगात्राणि ह यानि छः कदकांकार-

একদেশ প্রভাবন্তি সকলাশ্লেষিতানি চ। यानि চাতকবর্ণানি কাংসাবর্ণানি যানি চ। মীননেত্রবর্ণানি গ্রন্থিভিঃ সংবৃতানি চা मानावानि ह यानि द्याख्याः मृनाः

পদাংশিক্ম্॥ (म मुका त्कारियुक्त, कि अर्द्धत्रभ, जर रम मूका शकरून खुर्थाए हुनीवन्त्र. বিলিপ্তের ন্যায় দৃষ্ট হয়, যে মুক্তা সার-রহিত, শাহা করকার ন্যায় আকারযুক্ত, যাহার একদেশমাত প্রভাবুক্ত, যাহাতে সুসৃদ্দ শুক্তিখণ্ড সাল্লিষ্ট থাকে, যাছার বর্ণ চাতকবর্ণের সদৃশ, অথবা কাংসা-वर्तित मनुभ किया भीनरनरखत नाहि, বাহা গ্ৰন্থিক অথবা অনা কোন দোষে. দ্ষিত, সে মুক্তাব ম্ব্য প্রকৃত অপেকা তকচতুর্থাংশ।

রত্নশাল্ডে মুক্তার মৃল্যদম্বনীয় অনেক কথাবার্ত্তা থাকিলেও এই স্থানেই শেষ করা গেল। যেহেতু একপ প্রস্তাবের ক্তৃহল চরিতার্থতা ভিন্ন অন্য কোন বাবহারযোগা ফল নাই।

আর এক কথা—কর্ত্রজ্ম সভিধানে যুক্তিকলতক ও গকড়পুরাণের বচন ভিন্ন বৃহৎসংহিতাও মুক্তাবলী প্রভৃতি গ্রন্থের একটি কথাও লিখিত হয় নাই। একণে তাহা হইতে মুক্তাহারসক্ষীয় হই এক্টি প্রমাণ উদ্ধৃত করিয়া প্রস্তাব সমাপ্ত করা विरक्षत्र (वांध इट्टिड्ड। हादब्र (य ভাগকে আমরা ''নহর''বলি, ভাহার সংস্কৃত নাম '' লতা।'' কোন কোন বস্তিচ । • স্থানে " হার" বলিয়াও উলেখিত হয়। বৃহৎসংহিতা বলেন, ভৃষণবেত্তা পণ্ডি-তেরা পৃথক পৃথক নহরযুক্ত মুক্তাহারের পৃথক্ পৃথক্ নাম দিয়া থাকেন যগা---'' डेस ४६ न प' '' विषय ४६ न प' ''(प वष्ट्न'' '' অর্জহার '" ' হার '' 'রেশ্মিকলাপ '' ''ভজ্' 'অভিড্ '' 'মণিবক''

''অর্দ্ধনাগ্রক'' '' মক্লর'' ''হারফলক'' '' নক্ষত্রমালা'' '' মণিসোপান'' ''চাটু-কার'' '' একাবলী'' '' যष्टि।''

দীর্ঘে চতুর্হন্ত এবং লভায় (নহর) অষ্টাধিক সহস্র।" এরপ মৃক্তাহারের नाम ''ইक्टफ्टन्त'' ইহা দেবতাদের · ভূমণ। ইহার অর্দ্ধেক হইলে ' विस्तर-চছ্ল'' অষ্টাধিক শতসংগ্যক নহরের মুক্তাহার "দেবচ্ছন্" নামে কীর্ত্তিত হয়। একাশীতি লতাযুক্ত হইলে "হার" এবং চতুঃষ্টি হইলে '' অর্দ্ধার।'' ৫৪ কিম্বা ৬৯ নহর হইলে "রশ্মিক-লাপ'' ৩২ হটলে "ওচ্ছ" এবং ২০ इटेरन " यर्फ छक्। ১५ इटेरन "मान-বক" ১২ হইলে "অৰ্দ্যানবক" ৮ व्हेटल "मन्द्र" । नहत व्हेटल "हात-ফলক।" ২৭ হইলে "নক্ষত্রমালা" অথবা ''মুক্তাহত '' কিলা মধামণি এবং স্থবৰ্ণগুলিকা থাকিলে ভাছাকে "মবিদোপান" বলা যায়। একপ হার াদি ভরলক অর্থাৎ মধ্যমণিযুক্ত হয় তবে তাহাকে "চাটুকার" শংজ্ঞা দেওয়া इग्र ।

ইচ্ছামুরপদংখ্যক মুক্তাহারদারা যে মণিহীন ও হস্তপরিমিত মালা প্রস্তত হয় তাহার নাম " একাবলী" আর সেই একাবলী মালার মৃধ্যস্থলে যদি মণি খাকে, তবে তাহার নাম " যষ্টি।" এই

সংজ্ঞাসমূহের নির্ণায়ক বৃহৎসংহিতার বচনসমূহ এই—

স্বভূষণং লতানাং সহস্রমন্ত্রেরং চতুহ স্থ্। ইক্রফলোনায়া विषय्ष्ठन छम् रर्कन ॥ শতম্পুতং হারে। দেবছনো হাশীতিরেকযুতা। **অষ্টা**ষ্টকো২র্নহারা রশ্মিকলাপশ্চ নব্ষট্কঃ।। দ্বাত্রিংশতা তু গুচ্ছো विः भ छ। कीर्छिष्ठा १ ई खळा थाः। ষোড়শভিৰ্মাণবকো দ্বাদশভিশ্চার্ধ মাণবক:।। মন্দর সঙ্গোহন্টাভিঃ পঞ্চলতা হার ফলকমিত্যক্তম্। সন্তাবিংশ ভি মুক্তা হস্তো নক্ষত্রমালেতি॥ অন্তর মণিসংযুক্তা मिंगिनाभानः स्वर्ग छिनिटेकर्वा । তরলকমণিমধ্যং তদ্ বিজ্ঞেয়ং চাটুকার মিতি।। **कारनी नाम गरबंह मःशा** হন্তপ্রমাণা মণিবিপ্রযুক্তা। সংযোজিতা যা মণিনা তু মধ্যে যষ্ঠীতি সা ভূষণবিদ্ধিককা।। এই হানেই রত্বরহদ্যের 'মৃক্তা' প্রস্তাব সমাপ্ত'হইল। শাস্ত্রান্তরে এত-

^{*} কেছ কেছ এরপ ব্যাখ্যা করিয়া থাকেন.যে, অষ্টোত্তর সহস্র সংখ্যক "ন হর" নহে, অষ্টেশ্তর সহস্র "মুক্তা।"

দপেকা অধিক কথা থাকিলেও বাহল্য-ভয়ে প্রহণ করা হইল না। মুক্তাবলী নাসক প্রত্তে মুক্তার অনেকগুলি নাম একতে পর্যারবন্ধ হইরাছে। যথা—— ''অভঃসারং শৌক্তিকের মিদ্রত্ব চা মৌক্তিকম্' ইত্যাদি ক্রেমে দৃষ্ট করিবেন।। জীরামদাস সেন।

いいいいいいいいいいいい

মাধবীলতা।

25

মাধবীলভার মাতা, পালের মুপে আপনার কলক শুনিরা প্রথমে অপঘাত মৃত্যুকলনা করিয়াছিলেন, কিন্তু তিনি মরিলে পুঁটুর কি উপার হইবে, এই কথা অরণ হইলে আর মরিতে পারিলন না,রাজিলেবে নিজিত পুঁটুকে বক্ষেকরিলা গৃহত্যাগ করিবেন এই হিরকরিলেন।

সেই রাজে পুঁচুর মা বছলাণ অবধি
নিজিত গতির পদসেবা করিলেন, তাহার
পর অর্থানকার গুলি একে একে অলচুতি
করিরা আপনার "টেপারির" মধ্যে রাধিরা ভাহার চাবি রামসেবকের
যজ্ঞোপবীতে বাঁধিরা দিলেন। আপনার সলে কি লইবেন, একবার এই
কথা তাহার মনে আদিল, ভাহার পর
কৈবল পুঁচুর "চুলের দড়িশুলি" যদ্ধে
অঞ্চলাগ্রে বাঁধিলেন। আমীর খড়স

ছুইগানি পালকের নিকটে ছিল ভাহার
ধুলা ঝাড়িয়া হস্তমার্জ্জনা করিয়া যপাল্
স্থানে রাখিলেন, তাহার পর দীপনির্বাণ
করিয়া শরন করিলেন। নিজা হইল
না। ঝটকাপ্রশীড়িত তৃণের ন্যায়
পুঁটুর মার অন্তর থরপর কাঁপিতেছিল,
যে ঝটকার বেগে মহাতর উল্পূলিত ও নিপতিত হয়, সামান্য
তৃণের উপর সেই বেগ প্রধাবিত হইলে
তৃণ উন্মূলিত হয় না, মরেও না, কেবল
অনবরত ধুলায় লুক্তিত হইতে থাকে;
কত্তের সীমা থাকে না। পুঁটুর মার দশা
সেইরূপ হইয়াছিল।

রাত্তি শেষ হইরা আলিল। যাত্তার
সময় উপস্থিত দেখিয়া পুঁটুর মা শ্যা
হইতে উঠিলেন। স্থানীকে প্রণাম
করিবার নিমিত ধীরে ধীরে উহিরি
পালকের নিকটবর্তী হইলেন। ধীরে
ধীরে নিজিত রাম্বেবকের পাদ্ম্পে

मक्क ताथिटनन, अमंनि हटक अन আদিল, পুঁটুর মা নিঃশব্দে কাঁদিতে লাগিলেন, ভাছার পর স্বামীর পদপ্রান্তে नाष्ट्रिया ठएकत वन मुह्टि नागिरनन। অন্মের মত বাইবার সময় একবার স্থা-बीटक ना (पशिशाहे वा किज़रण यान; পুটুর মা স্তরাং প্রদীপ জালিলেন, ज्ञारलारक निजि जामीत (सहमय मून আরও কেঁহপূর্ দেখিরা পুঁটুর মার চক্ষে আবার জল আদিল। রামদেব-करक शें हेब मा निका निक्रिक (मर्थन), কিছ ভাহার মৃর্তি ভ আর কপন এরপ (দথেন নাই। চকু মৃছিরা পঁটুব না রামসেবকের মুগপ্রতি চাহিলা রহি त्ननः वालाकाल इटेट बागरमतक পুঁটুর মাকে যত আদর করিয়াভিলেন, যত যত্ন করিয়াছিলেন, সে আদর, সে যত্ন, সে ক্লেহ, সমুদর যেন জাহার मृश्य कामा अक्जिक इहेग्रारकः, मजन-नश्रात (कदल (मरे (ध्रामश मूग (खिंगिर छ-ছিলেন। আবার দেখিলেন নিব্রিক স্বামী যেন নিঃসহায় হইয়া পড়িয়া রহিয়া-ছেন। পুটুর মার আর যাওয়া হইল না, প্রদীপ নির্বাণ করিয়া স্বস্থানে शिया भयन कतिरलन । अमीशनिकार्धानत শঙ্গে সঙ্গে গৃহমায়। কতকটা অন্ধ-কারাবৃত হইল, তথন ক্রমে পদাকে षायात पात्रण इहेम, पात्रणमारखरे कलक-^{রটনা} বিছাতাগ্রির নায় পুঁটুর মার चवत्त्र व्यवित्रा छेडिन, चात्र भवन कत्रा रहेन ना। खाटक चामी मिटे कनक

चर्मा चनिद्दन, अहे मदन इहेवांमाळ আর থাকিতে পারিলেন না। পুঁটুর মা প টুকে বক্ষে ভূলিয়া ভৎক্ষণাৎ বহিৰ্গত হইলেন। ঠাকুরখরের মারে দাড়াইরা গৃহদেবতা শালগ্রামকে প্রণাম করি-য়া, মনে মনে বলিতে লাগিলেন, " (मथ, ঠাকুর! বৃদ্ধা খাগুড়ি রহিলেন, যেন তার কোন পীড়ানা হয়। জ্বার যিনি ভোমার নিত্য পূজা করেন, তাঁহার যেন কোন বিপদ্ না হয়।" পুঁটুর মা আবার প্রণাম করিলেন। ভাহার পর বৃদ্ধা খাওড়ির খারে গিয়া দাড়াই-लन, উদ্দেশে डांशांक श्रेथाम कतिया विनात, "मा! आभी सीम कत्र, পথে যেন আমার পুঁটুর কোন বিপদ্ इय ना।" **এই द**लिया **अकल निया** চকেব অল মুছিতে মুছিতে হুই এক शम याहेर्ड नाशिस्नन, याहेर्ड या-ইতে স্বামীর ঘারের দিকে একবার ফিরিয়া দেপিলেন, দেখিবামাত্র স্বামীর নিঃসহার মৃতি মনে পড়িল, আর একবার তাঁহাকে দেখিবার নিমিত্ত ফিরিলেন কিন্তু ঘারের নিক্ট আসিয়া দাঁড়াইয়া রহি-কিয়ৎক্ষণ পরে মন্তক নত করিয়া নিদ্রিত স্বামীর উদ্দেশে আবার প্রণাম করিয়া চক্ষের লল মুছিতে মুছিতে পুঁটুর মা খড়কীবার দিরা বহি-র্গত হইলেন। পথে আ্সিয়া পুঁটুকে অঞ্বছারা আবৃত করিলেন, জলাহরণ छेननक निका मीर्चकात्र वाकात्रांक की-হার অভ্যাস হিল, অতএব অভ্যাসবশতঃ

(महे मिरकहे छनि।न। नी ना कारण শত শভ নক্ষত্ৰ অলিভেছে, লিপ্ধবায়ু ধীরে ধীরে আসিতেছে, অথচ অঙ্গম্পর্শ করিতেছে না, কীণ চক্রালোকে বুক্ষ সমূ-**एम निन्धिक तरिमार्ड, गृहमार्ट्यत्र है** बात কল, পথে কেহ নাই, পুঁটুর মা मकन किছूरे प्रथिष्ठ পाইलেन ना, जिनि অভ্যাসবশতঃ একেবারে পুষরিণীর কূলে গিরা দাঁড়াইলেন। তপনও অল রাত্রি আছে। তথায় দাঁড়াইয়া পুঁটুর মা ক্রমে ক্রমে আপনার অবস্থা ব্ঝিতে পারিলেন, স্বামীর অজ্ঞাতে রাত্রি কালে বাটীর বাহির হইয়াছেন, রাম-সেবক হয় ত এতক্ষণ জাগরিত হইয়া তাহা জানিতে পারিয়াছেন, এতকণ হয় ও অনুসন্ধান করিতে বাহির হইয়া-ছেন, তাঁহার এতকণ দৃঢ়প্রতায় হই য়াছে যে, তাঁহার স্ত্রী পতিব্রতা নহে। এই কথা মলে হইবামাত্র পুঁটুর मा निहतिया छिठित्वन, लब्जाय मृज-वर इहेलन, व्यवनउपूर्य मुद्रावद-कृत्न माँ ज़ारेबा थाकितन।, जानक-करावत शत्र माथा जूनिया 'तमिरानन, মানশশী বেন তাঁহার প্রতি চাহিয়া রহিয়াছে। অমনি আপনার গৃহ মনে পড়িল, সঙ্গে সঙ্গে মনে হইল, জন্মের মত ভিনি গৃহস্থে বঞ্চিত হইয়াছেন। **এই সমর নিকটস্থ অর্থপ্রুক্ষ হইতে** পক্ষীরা কলরৰ করিয়া উঠিল। পুঁটুর मा (मधिलन, शूर्वमिक् शक्तिका इहे-রাছে, এখনই লোকে বাভারাত আরম্ভ

করিবে, অভ এব তৎকণাৎ সে স্থান ত্যাগ कतिया थाखत्रमाथा थाराम कतिरानन, কিন্দুর গেলে পর স্র্যোদয় হইল। পুঁটুর মা আবার কতকদূর গিয়াপশ্চাং ফিরিয়া দেখিলেন, শান্তিশতগ্রাম আর দেখা যায় না; কেবল রামদীভার মনিদ রের অগ্রভাগ দেখা যাইতেছে। তাহার वोशाह्का प्रयाकित्रण शैतकश्रुखत नाम्य ब्बनिएउ ह, भूँ देव या त्रहेशांत माणा-ইয়া রামদীতাকে প্রণাম করিলেন; মাশার হাত দিয়া পুটুকেও প্রণাম করাই-লেন। পুঁটু ক্রোড় হইতে কখন ক্সুড-भन (मानाहेरङहा, कथन हाठ **जू**-লিয়া পক্ষীদেব ডাকিভেছে, কখন মাতার মুখে হাত দিয়া মাতাকে টানি তেছে। কিন্তু পুঁটুর মা পুঁটুর সঙ্গে আর পূর্ব্বমত কথা কহিতেছেন না, অন্য মনক্ষে পথ অভিবাহিত করিতেছেন। **८काशा याहेरवन श्वित्र नाहे।** व्याशस्य **भिकालरा याहेर्यन ভাবিয়াছিলেন,** কিন্তু কলক মনে পড়ায়, আর সে मिरक यांकेटक ध्यवृज्ञिक्ट्रेन ना । **ऋ**क्दांः यव एक हिन्द नाशितन। काश्रांक ध পথের কঁণা জিজাসা করেনু নাঃ **काथाग्र** राहेरव याहात चित्र नाहे, श्रव्यत कथा तम कि किकामा कदित्व ? पूर्वेश मा निष्य काहारक क्लान कथा किछागः ना कक्रन, त्यारक छाँशरक जिल्लानी আরম্ভ করিল। প্রথমে একজন ছিন বস্তা বৃদ্ধা প্রশ্ন করিল, " বাছা, কোথা যাবে ?" পুঁটুর মা কিঞ্চিং ইতস্ততঃ

कतिया विलिटलन, " आमि वारभन्न वाफ़ी যাব।" এই উত্তরে বৃদ্ধা পরিভৃপ্ত হ-ইয়া গোময়সঞ্যুন করিছে করিছে बनिन, " जा, यांश्व वाहा; यादव वह कि; वारभन्न वाड़ी यारव ना !"तृका अब-यात्र कतिता कथा करह, आत এकवात कतियां र्गानयमसारन हातिभिक् रमरथ। হ্রন্ধার শ্রোভা আবশ্যক করে না, পুঁটুর মা চলিয়া গেলেন, বৃদ্ধা তথনও বলৈতে লাগিল, " চিরকাল কি খণ্ডরবাড়ীতেই থাকিতে হয় ?"—" যাও বাছা ! এলয় জন্ম বাপের বাড়ী যাও; বাপের কাছে (क ? चलत वग, चाल ही वन, वारशत कांट्ड (क ?"-" परे (य आगि धका পড়ে থাকি; বাতের কামড়ে চীৎকার করি, পাড়ার পোড়াকপালীরা কে এক-वांत्र अत्म जिल्लामा करत् ! त्मात्ना !--मकरनहे जाशनांत्र चरत चरत चरत्र थारक, (भय (পতে खरम थारक ।"-"अरना ! চির্কাল কিছু স্মান যার না! আমারও এককালে সকল ছিল। আমার माञ्च हिल, शांकु हिल, एउँ कि हिल।" —" নার এখন টে কি ঠেকাইতে পারি না, বুড়া হয়েছি,"—" এমন কপানও करत वरमहिनाम, ভानशांभीता कि वर्छ । ভাল কাল্প করেছিল যে, সকল স্থুখ তা-रमत बरना।"-" (ठावशागीता कनभी कैंदिक भर्ष हर्मनं, रयम हिर्देश कारन प्रभूटक भाग ना।" द्वा गार्ठ ঘুরিয়া বেড়াইতেছে, আর আগনা षान्ति धरेक्रन कथा कहित्त्रह् । खना

সমর হইলে পুঁট্র মা দাড়াইরা বৃদ্ধার কথা ভনিতেন।

আংকর অভিক্রেন করিয়া পুঁটুর মা যখন রামপুর নামে একখানি অপরিচিত व्यारमद निकरेवची इहेरनम, ज्यम द्वना প্রায় দ্বিতীয়প্রহর; গ্রানপ্রান্তে একটি দীর্ঘিকায় স্থানার্থ গ্রাম্যলোকেরা যাভায়াত করিতেছিল। পুঁটুর মাও লান করি-বেন মনে করিলেন, কতকদুর গিয়া দে-খেন, পণ প্রান্তে বুক ছায়ায় ছইজন জী-लाक माँ ड़ारेया छारात निटक ठारिया আছে। তুইজনেই যুবতী, পুঁটুর মার ভয় হইল, তিনি ভাবিলেন, ইহারা আমাকে দেখিয়া হয় ত উপহাস করিবে,হয় ত কি करूँ वितिर्व। निकाष्ठे चना शथ शकित्न, পুঁটুর মা দেই পথে যাইতেন, একণে অনন্যগতি হইয়া যুবতীদের দিকে সকো-**डिज भाष हिलाउ नाशितन, এक এक-**বার সভয়ে তাহাদের প্রতি চাহিতে লাগিলেন। এই সময় একজন ঈষং সুলাসী বৃদ্ধা পশ্চাৎ হইতে যুবতীদের वनिन, " এখনও দাঁড়ায়ে কেন ? বেলা যে গড়িয়ে গেল।" যুবতীরা সভয়ে ভূমি হইতে আপন আপন কল্মী তুলিয়া কক্ষে সংস্থাপন করিতে করিতে পশ্চাৎ कितिल। श्रेष्ट्रेत गारक मिथिया वृक्षा একটু প্রতীকা করিতে লাগিলেন, তিনি নিকট্বর্তী হইলে বৃদ্ধা জিজাগা कतिलान, " जूनि (क 'राष्ट्रा भू पूर्व মা মাথা অবনত করিয়া বুলচ্ছারার दे। इंटिलन, क्लाम डेखर क्रिलन मा। আবার বৃদ্ধা জিজ্ঞাসা করিলেন, "কন।টি কি ভোনার ?" পুঁটুর মা মাণা নাড়িরা স্বীকার করিলেন। এই সময় একজন যুবতী অন্তাসর হইয়া পুঁটুর গাল ধরিরা আদর করিল।

বৃদ্ধা। বাছা, তৃগি কি লোকের মেরে ?

পুঁটুর মা। আক্সনের।
বৃদ্ধা। কোথার যাবে ?
পুঁটুর মা কথা কহিল না।
বৃদ্ধা। তোমার সঙ্গে লোক কই ?
পুঁটুর মা কথা কহিল না।
বৃদ্ধা। তোমার খণ্ডরবাড়ী কোথা ?
তোমার বাণেব বাড়ী কোথা?

পুঁট্র মা তথাপি কথা কহিল না। বৃদ্ধা। তবে বৃশ্ধিছি।

এই বলিয়া বৃদ্ধা আপন কন্যা ও পুল্রবধু সমভিব্যাহারে পশ্চাং ফিরিলেন,
ভাঁহার কন্যা এক একবার পুঁটুর মার
প্রতি ফিরিয়া চাহিতেছিল, দেখিয়া বৃদ্ধা
বলিল, "চলিয়া চল! গৃহস্বের বউ
ঝির ওসকল লোককে ফিরে দেখা
কেন।"

কন্যা উত্তর করিল, মেরেট বড় স্থানর, বৃদ্ধা তাহাতে বিরক্তিসহকারে . বলিল, "অমন স্থানরের গলায় দড়ি! যে লোক গৃহচ্ছের মেরে নয়, সে, আবার স্থানর কি ?"

এই কথা ওগিবামাত্র পুঁটুর মার মুথ আরক্ত হুইর, উঠিল, তিনি আর অগ্রসর হুইডে পারিলেন না, কিরৎক্ষণ পণ্ডে দাড়।ইরা রহিলেন। ত্রীলোকেরা চলিরা গেলে, নিকটস্থ এক নির্জ্জন আফ্রকাননে প্রবেশ করিয়া একটি বৃক্ষতলে বসিলেন। মাধবী ধ্লায় ক্রীড়া করিতে লাগিল, তিনি বৃক্ষে মাথা চেলাইয়া কাঁদিতে লাগিলেন। আনেকক্ষণের পার চক্ষের কল মুছিতে মুছিতে অক্ষাইস্বরে আপনা আপনি বলিলেন,''বুঝেছি,সকলই আমারু দোষ। পোড়া লজ্জার ভয়ে আফিই আপনি আপনার সর্কানাশ করেছি।''

বান্তবিক কথা সভা, কেবল লজার ভবে মাধ্বীলভার মা গৃহত্যাগ করিয়াছি-লেন, কলফের কথা স্থামী প্রাতে छनिर्वन এই लब्बाय छिनि भनाहेबा-हिल्ला। এখন कल एक व कथा खना मृत्र থাকুক্, সন্দেহেরও স্থল রহিল না। এত-ক্ষণ রামদেবক জানিয়াছেন যে, তাঁহার ন্ত্ৰী নিশ্চয়ই কুলটা। ভাছাই মাধ্বীণভার মা বলিতেছিলেন, "সকলই আমার দোষ।" आत উপায় नाहे, आत গৃহে यहिवात পণ নাই। পথে পথে বাস, ভিকা ক-রিয়া দিন্যাপন, এই এখন মাধ্বীলভার মার অদৃষ্টের লিখন। তিনি দার্শনিক ন (इन (ग, , अपृष्टे नहिया छर्क कतिरवन। **জা**র্যাকুশলী নহেন যে, পুরুষকার ছারা व्यष्टे १७ व कति (वन। महाराज्या । न-হেন যে,অদৃষ্টের আরস্তাতীত থাকিবেন---অদৃষ্ট যতই পীড়ন করুক, .ভিনি ভাষা গ্রাহা না করিয়া, ভাহাতে কট অনুভব ना कतिया, शर्क्टकत नाम चारेन थाकि-বেন ।মাধবীলভার মাতা সামানা।; অपृ-

ষ্টের ভরে অভি ভীতা,কটের স্পর্নাতেই পরাজিতা,চক্ষের জল তাঁহার একমাত স-হার। পিতৃমাতৃ সন্মুধে চক্ষের অল সহার হইলে হইতে পারে, কিন্তু অদৃষ্টের সমূধে ভাছা কিছুই নহে, অঞ্বৰ্বণে কোন ফলই হর না; তথাপি অদৃষ্টের পী-फुटन नामाना त्नाटकता काँटक, माधवी-লুতার মাও সামান্য লোকের মত কাঁদি-(नन। माधात्रणड: (लारक हरकत क्व मृहिद्या, अनुष्टित अनुर्मिङ्गर्थ চলিতে থাকে, মাধবীলতার মাও চক্ষের क्न मृहित्रा अनुष्टेशनर्गिडशर्थ हिन्द्रिन অর্থাৎ ভিকা করিবেন স্থির করিলেন। ''আমার অদৃষ্টের লিখন কে খণ্ডাইবে ?'' **এই বলিয়া প্টুর সা দাড়াইলেন, প্টুর** ধলিখুদ্রিত অঙ্গ বছে বাড়িয়া ক্রোড়ে শইরা গ্রামাভিমুখে চলিয়া গেলেন। . লজাভয়ে অনর্থক আর ইতন্তত: না कतिया, এकि गृहत्यत थड़कीबादत शिया !' अब बार्थ' विनया माज्ञेहरनन।

করিয়া, একটি গৃহত্তের খড়কীবারে
গিয়া '' জয় রাধে'' বলিয়া দাড়াইলেন।
"জয়য়াধে''বলিবার সময় একবার তাঁহার
চক্ষে জল আসিল, কিন্তু তৎক্ষগাৎ তাহা সম্ববণ করিলেন, ঘর প্রাচীর
দেখিয়া, পূঁটু আহলাদে মাতৃত্রোড়ে ছ ,
লিয়া হাসিতে লাগিল, মাতা তাহার
আহলাদ ব্ঝিতে পারিয়া মুখচ্ছন
করিলেন। এই সময় একজন
গৃহস্তকন্যা ভিকা আনিল, পূঁটুর মা
অঞ্চলাপ্রে তাহাণ লইয়া পশ্চাৎ
ফিরিলেন। গৃহস্তকন্যা বলিল, 'ভিখাবিণী একবার ফের ত।'' পুঁটুর মা

কিঞ্চিৎ ইত্ততঃ করিয়া ফিরিলেন।
গৃহস্থকনা বলিল, "তুমি ন্তন ভিথারিণী! বৃঝিয়াছি, তোমার কপাল পুডেছে! কুলকল্ফিনী!"

ভিথারিনী ফদিনীর ন্যায় সাথা ফিরাইয়া একবার গৃহত্বন্যার প্রতি তীব্র
দৃষ্টিপাত করিল, আর কোন উত্তর
না করিয়া সদর্পে অঞ্চল হইতে ভিক্ষোশার্জিত চাউল ভূমে নিক্ষিপ্ত করিয়া
চলিয়া গেল। পুঁটুর মা স্বভাবতঃ ভীক ও
লজ্জাশীলা, কেন তাঁহাতে বিপরীত
লক্ষণ দৃষ্ট হইল, তাহা বুঝা যায় না।
গৃহত্বকন্যার রুড়বাক্যে পুঁটুর মার চক্ষে
কণামাত্র জল আসিল না, তংপরিবর্তে
ক্রোধায়ি উদীপ্ত হুইল।

22

যে রাত্রে পুঁটুর মা গৃহত্যাগ করিয়া
যান, সেই রাত্রের প্রথমভাগে সোছাগী চাকরাণী শয়ন করিয়া পান চর্বাণ
করিতে করিতে অপর আর এক চাকরাণীকে বলিতেছিল, ''ওলো! মেনকার মা, 'আমার আর এখানে চাকরী
কবা হলোনা।''

(मनकात्रमा। (कन ना १

বাহা। এখানে কোন স্থ নাই, ইার কাছে থাকি, তাঁর যা আছে দক, না আছে পছল, না আছে কিছু। আজ এত করে চুয়া চক্ষন মিলা-ইয়া একটু বুকে দিতে গিয়াছিলাম, তাঁর মনে ধরিশ না, তিনি বলেন ওতে বড় ছগ্রা এমন পছল ফার তার शाद्य नमकात, आमि कान नकादनह চলে যাব।

(भन। नकांत्र (कन, এथनहे श बा ।

সোহা। রাত্রি অন্ধকার, এখন আ-मात्र गटक एक यादव ?

• ८मन। यम यादा।

সোহা। যদের ভাব বুড়ার সঙ্গে? তোর মত বুড়া মাগী পেলে যম বড় थुनी इत, आगारमत काटक यम कहे जारम ।

श्राट्ड रमनकात मा डेत्रिया रमिन বে, সোহাগী সভাই চলিয়া গিয়াছে। কণবিলম্বে জানিল যে পুঁটুর মাও বাটা নাই, অতএব রামদেবকের বৃদ্ধা মা-ভাকে গিয়া জিজ্ঞানা করিল, "সেই পোড়ার মুণী সোহাগীর সঙ্গে ঠাকুরাণী কোথায় গিয়েছেন ?"

বুদ্ধা। কি জানি বাছা! সোহাগী সঙ্গে গেছে ? তবে আর ভাবনা কি ? धगनहे वाभित्य।

মেনকার মা। পোড়ার মৃথ সোহা-शीत !

গুঁটুর মা কুলত্যাগী হয়েছে, কণা মুহূর্ত্যধ্যে সর্পত্র রাষ্ট্র হটলো शुक्रमग्रहल गरारकानारन वैधिया रान। গরস্পর সকলেই বলিতে লাগিল, ''আ गिरे गर्वाटश वटलिखनाम (य, तामटमवटकव खी क्राणे।"

্ প্ৰথমকোলাহল ন্দীভূত ু হইয়া আসিলে সকলে রামার উদ্দেশে তির- क्षांत्र कांत्रक कतिन। गकरनत्र हिन প্রাতীতি ক্ষরিয়াছিল বে, সোহাগীকে রাজা কেবল এই কার্যোর নিমিত্ত शार्वेश हिर्दा । অতএব রাজার প্রতি লোকের ক্রোধ বিষম হইয়া উ ঠিল। কোপায় ভিনি রামদেবকের স্কীকে लुकारेबाएन अथगठः (करन धरे नः षान कता नकरलत शतामर्गित इहेल। • পুঁট্ৰ মার অনুসন্ধান করিতে যুবা রাই আপনা আপনি ত্রতী হইলেন; कें हिर्म द শই টোলের ছাত্র—শ্বতিশাস্ত্রের তক্তা হক্তে বাহির হইলেন, যেগানেই রুদ্ধদার रमर्थन, त्मरेथात्नरे छांदाता दात्रहम করেন। তাহার পর যথন তাহারা ভনিলেন যে,রাজভগিনীর অমুসরানচ্ছলে রাজা নগরত্যাগ করিয়া গিয়াছেন, তথ্য ভাঁহারা সিদ্ধান্ত করিলেন শেু, " আর নগরে অফুসন্ধান করা বুথা, बाजा (यथारन, बामरमवरकत क्वी अ रमहे-षादन।"

(माम ।

(भव अकिनि गक्लाई अक्ज इहेश ब्रागरमवकरक अञ्चरताथ कतिरलन य " ভূমি একবার নিজে রাজার নিকট যাও,মাধবীলভার সম্বাদ লইয়া আইস।" রামদেবক সে কথার কোন উত্ত করিবেন না, যজোপবীতের গ্রন্থিক করিডেছিলেন, নভশিরে তাহাই করিতে লাগিলেন। যে অবধি রাজাতুগ্রহে রাম সেৰক সৌভাগ্যসম্পন্ন চইরাছিলেন, সেই भर्गाख (कह छै।हात्र मुशावत्नाकन कविष না, কেই ভাঁহার বাটীতে আসিত না,
এক্সণে তিনি সমাজে খুণিত ও পতিত
ইইরাছেন, ভুভাত্মধ্যারী পন্নীবাসীদের স্থভ
রাং যাতায়াত আরস্ত হইল। রামসেবক
ভাঁহাদের কথার প্রায় উত্তর দিভেন না
অপচ অস্থানও করিতেন না। ভাঁহার
পত্নীর কথা কেই উপস্থিত করিলে তিনি
ইটিয়া স্বতন্ত্র স্থানে তামাক সাজিতে
বিস্তেন।

রামদেবকের স্ত্রী গৃহত্যাগী হইবার অধিকাংশ প্রতিবাসিনীরা হাস্য পরিহাস-ছারা পরস্পরকে পরিতৃপ্ত করি-ग्राहित। (करत भग्न व मदस वड़ अ धिक कथा कटह नारे। शता हिःशाशतवम হইয়া. পুর্বরাত্তে পুঁটুর মাকে তির-ছার করিরাছিল, তথন ভিরস্কারের ফল चारुखव करत्र नाहे, शरत शच्च यथन ভূনিল যে, মাধ্বীলভার মাতাকে গো পনে রাজা লইয়া গিয়াছেন, তথন পল্ল নিশ্চর বুঝিল যে, ভাছার ভির-স্বারই ইহার মূল। তিনি তিরস্বার না করিলে, মাধবীপ্রভার মা সোহাগীধারা রাজাকে কোন কথা জানাইত না, त्राकां ७ काहारक नहेत्रा याहेरजन ना ; শোহাণী সঙ্গে আছে,একণে হয়ত তাহার ° পরামর্শে মাধবীলভার মা রাজার নিকট ভিরস্কারের কথা বলিয়া দিবে, পদ্ম এই कावनात्र (योनावनची इटेग्नाकित्नन)

বধন পালের মনে এই সকল আলোচনা হইভেছিল তখন সোহাগী এক উচ্চ
বাদ্যপথ দিয়া নৰ গুপাঞ্জিমুখে যাইভেছিল,

नाम इरे हात्रिक्त देवकृत चात्र चात्रकः श्री देवश्रवी हिन,शनाम न्डन क्छी,इरख न्डन च्थनी, श्रिशारन श्कारक, मूर्य मधुव গৌর নাম। পুঁটুর মার গৃহত্যাগবার্তা সোহাগী किছुই जानिত ना। (कान मनीत अमुरतार्थ माराजी र्ठाए क्छी-ধারণ করিয়াছিল। সোহাগী কিঞিৎ স্বাধীনতাপ্রিয়, একটু গাইতেও ভাল-बारम, यथन देव्हा, त्यथारन देव्हा याहेट भातित्व जात किडूरे हाट ना, পাঁচজন রদিকা বৈষ্ণবীর সহিত নব্দীপে যাইতে তাহার বিশেষ সাধ হইয়াতিল. মতএব আর কাহাকে কোন কথা না বলিয়া চলিয়া গিয়াছিল, কেবল পূর্বদিন অপরাকে একবার রাজবাটীর इहे अक्षन माभी क विविद्या हिन, " आ-মরা কাল এক জারগার যাব।" দাসীরা জিজ্ঞাসা করিল, কোথা যাবি, সোহাগী श्मित्रा উত্তর করিল, "বলিব না।"

দানীদের মুখে রাণী যখন শুনিলেন বে সোহাগীর সঙ্গে পুঁটুর মা গৃহত্যাগী হুইয়াছেল, তখন তিনি নিশ্চরই বুঝিলেন যে, পুঁটুর মা কুলত্যাগী হুইয়াছে, ন-তুবা সোহাগী সঙ্গে কেন ? তুই এক-দিন পরে দানীদের কথার ভঙ্গীতে যখন তিনি বুঝিলেন যে লোকে এই সম্বন্ধে রাজ্যার কলম্ব রটাইয়াছে, তখন রাণী কিছু চমংকৃতা হুইলেন। কাহাকেও কোন কথা ভিজ্ঞাসা না করিয়া আপনি মনে মনে, এই রটনার হেতু বিবেচনা ক্রিতে লাগিলেন হেতু নিহান্ত অমু- লক বোধ হইল না, পূর্ককথা আলোচনা করিতে করিতে মনে হইল, রাজা মাধবীলভাকে এত ভালবাসেও কেন ? তাহার নিমিত্ত এত অর্থবার করেন কেন ? তাহার মাতাকেই বা এত অল্পার দিবার তাৎপর্যা কি ? মাধবীলতার অঙ্গ অতিলে মাধবীলতাকে রাজার কন্যা বলিয়া বোধ হয়, এইজন্য হয় ত এখন যমজন্সস্তানের জন্মকর্মনা করা হইয়াছে। রাণী দীর্ঘনিখাস ত্যাগ করিয়া বলিলেন, " ব্-বেছি।"

জ্যোৎসাবতীর উপলক্ষে রাজার প্রতি
রাণীর মন পূর্বেই কিঞ্চিৎ ভার হইয়াছিল, এক্ষণে তাহা আরও বিশেষ হইল,
তিনি মনে করিয়াছিলেন, জোৎসাবতীর
অফুসন্ধানে রাজা আপনি যাইবার কোন
প্রয়োজন ছিল না, লোক পাঠাইলেই ত
হইত; তবে রাজা নিজে যে গেলেন,
তাহা কেবল তাঁহাকে অপ্রতিত করিবার নিমিন্ত। তাহার পর এক্ষণে রাণী
ব্বিলেন যে,জোৎসাবতীর অফুসন্ধান কেবল ছলমাত্র, মাধবীলভার মার সহিত
সাক্ষাৎ করিতে যাওয়াই মূল উদ্দেশ্য।
রাণী সপীর ন্যার দীর্ঘনিশ্বাস ত্যাগ ক ।
রিয়া বলিলেন, "বুরেছি।"

রাণী নানা কথা ভাবিতে ভাবিতে একবার সদর্পে উঠিয়া কক্ষান্তরে গিয়া প্রিরতমা ছুই একজন পরিচারিকাকে ভাকিলেন। অতি ভীত্রদৃষ্টিতে ভাহা-দের বলিলেন যে, তোমাদের মধ্যে যে

মাধবীলভার অভুসন্ধান করিয়া দিবে त्मरे आमात जीशत्मत्र अर्द्धाः भी हरेटवः। मानीता व्यथरन छन्न शाहेबाहिन, किंद वांगीव ठाकना (कवन निक्र मखान माधवी-লতার নিমিত্ত, এই বুঝিয়া ভাছায়া নিরু-দ্বেগে বলিল, যে মাধ্বীলতার অনুসন্ধান বিধিমতই হইতেছে, তুই একদিনের মধ্যে त्म मचाम शां **डग्ना या है**द्व। जांगी विज्ञ कर् ইয়া উত্তর করিলেন যে,"সে সকল অসুস্ ক্ষান আমি চাই না, আমার ইচ্ছা যে আমার নিজের লোকে এই অনুসন্ধান করে।" এই কথা বলিতে বলিতে রাণীর দৃষ্টি আবার পূর্ববং প্রথর হইয়া উঠিল। দাসীরা मछ दा "(य चाछ।" विलया विलाय हरेन। প্রদিবস রাজা ইক্রভূপ প্রভাগমন করিলেন। তিনি রাজভগিনীর সমু-সন্ধানে বহিগত হইয়া প্রথমে পদত্রকে যাতা করিয়াছিলেন; কিন্ত কিয়দ্র গিয়াই শিবিকারোহণ করিতে বাধ্য হইলেন। শিবিকার বৈসিয়া অনুস্থান বড় হয় না, তথাপি ভিনি চারিদিক্ দেখিতে দেখিতে গেলেন, কিন্তু রাজ-ভগিনী পথে কোথাও বসিয়াছিলেন না, হতরাং রাঞা ইজ্রভূপ তাঁহার দেখাও পাই-লেন না। তিনি ষেখানে, অবস্থিতি করিছেন, সেইখানেই ব্রাহ্মণপণ্ডিভগণ অাসিয়া তাঁহাকে বেষ্টন করিয়া শান্তালাপ করিত, সুতরাং রাজভগিনীর অনুসন্ধান করিবার আর তাঁছার- সাবকাশ থাকিত না। শেষ তিনি হতাখাস হইয়া প্রত্যা नर्वन कविद्यान ।

রাজা, রাজভবনে সমুপস্থিত হইরা
অ্যাত্যবর্গের সহিত ছই একটা কথা
কহিয়াই অভঃপুরে গেলেন। রাণী তাঁহার আগমনবার্তা শুনিরা কিঞ্চিৎ
মল্পমনে নিকটে উপস্থিত ছইলেন। একজন দাসীকে তাস্থল আনিতে
বলিয়া, রাজার শারীরিক কুশলবার্তা
কিঞ্ছিৎ ঔদাস্যভাবে জিজ্ঞানা করিলেন,
উত্তরের প্রতীক্ষা না করিয়া আবার
জিজ্ঞানা করিলেন, '' যে জন্য মহারাজের
যাওয়া হইরাজিল, ভাহার মকল ?''

রাজা। মকল স্থার কৈমন করে
বলিব, জ্যোৎসাবজীর দ্রন্য গ্রামে গ্রামে
অনুসর্কান করিলাম, কোথাও সাক্ষাং
পাইলাম না। শেষ আর কি করি,
আমি পথে পথে বেড়াইলে ভ বিষয়কার্য্য
চলে না, স্কুতরা কিরে আসিতে হইল;
তবে বড় ছংখ রহিল যে রাজকন্যা এই
কিই পাইতে লাগিলেন।

রাণী। কে রাজকন্যা গুমাধবীলতা গ রাজা। না আমি জ্যোৎসাবতীয় কথা বলিতেছি, ত্তি—

রাণী। আপনার মাধবীলভাব মা যে এথান ছইভে চলিয়া গিয়াছে।

রাজা। তাহা জানি; আমি তাহা এখান হইতে যাইবার পূর্কেই শুনিয়া গিয়াছিলাম।

রাণী। সাক্ষাৎ ইইয়াছিল ? সেই শন্তি এত বিলম্

রাজা। সে নিমিত্ত আমি একণে বাস্তুন্হি; আমি এখন রাস্ত স্যোৎকা- ৰতীর নিমিত্ত; তাহার অস্থসন্ধান কি-রূপে পাইব!

রাণী। মাধবীলতার জন্য আপনি যে ব্যস্ত হইবেন না, ভাহা কতক ব্রিয়াছিলাম।

এই বলিয়া রাণী হঠাৎ কক্ষাস্তরে চলিরা গেলেন, যাইবার সময় দাসীকে বলিরা গেলেন, ভূমি বাজন কর, আন্দার আসিতে বিলয় হবে।

উভয়ে উভয়ের শেষ কথার অর্থ
বিপরীত ভাবিলেন। রাজা বৃঝিলেন যে,
মাধবীলভার জন্য আমি বড় বাস্ত নহি,
এ কথা বলায় বানীর অভিমান হইয়াছে। হওয়াই সম্ভব, কেন না রানী
ভাহার গর্ভধারিনী, স্নেহ কোথা
মাবে ? এদিকে রানীর নিশ্চয় ধারণা হইল
যে, মাধবীলভার মাতা কোন নিরুপদ্রব স্থানে রক্ষিত হইয়াছে, নতুবা রাজা
কেন বলিয়া ফেলিবেন যে, মাধবীলভার
নিমিত্ত বড় বাস্ত নহেন।

সে দিবস রাজার সহিত রাণীর জার
সাক্ষাৎ হইল না। পরদিবস সাক্ষাৎ
হইলে রাজাও বিশেষ যত্র করিয়া অধিক
কথা কহিলেন না, তাঁহারও কিঞ্চিৎ
মন ভার হইরাছিল। তিনিও স্থির
করিয়াছিলেন যে, নিরপরাধা জ্যোৎকা
বতীর গৃহত্যাগ কেবল রাণীহইতে;
রাণীর নিমিত্ত তিনি আপনার ভাগিনীকে বাটী হইতে প্রকারাভ্যেক ভাড়াইয়া ছিয়াছেন। এ জ্কার্যা তাঁহাকে

टक्यन सानीत छटाई कतिट्ड इहेबाहिन। बानीहे अ अनटर्थत मृन।

ক্রমে তাঁহাদের পরক্ষারের অস্তর্ভব বৃদ্ধি পাইতে লাগিল। রাজা ছই একবার বৃদ্ধসহকারে রাণীর সহিত আলাপ করি-তে অগ্রসর হইরাছিলেন, রাণী সে যত্ন গ্রহণ করেন না দেখিরা রাজা প্রথম প্রথম কিঞিৎ অপ্রতিভ হইলেন, শেব অপমানিত বোধ করিতে লাগিলেন। বেখানে জীপুরুষে অসন্তাব, সেখানে মঙ্গল নাই এ কথা রাণীকে একদিন বৃধাইবেন রাজা মনে মনে স্থির করি-লেন।

রাণীও মনে মনে হির করিলেন বে,
মাধবীলতাকে কদাচ রাজবাটীতে স্থান
দিবেন না, ভজ্জন্য রাজসংসার যদি ছারেখারে দিতে হয় তাহাও কর্ত্তব্য মনে
করিবেন। জারজকন্যাকে রাজকন্যা
পরিচয় দিয়া কখন রাজা রাজকুমারের
সম্বোগ্য করিতে পারিবেন না।

90

দেওরান্মহাশর মাধবীনতাকে অন্থ সন্ধান করিবার ভার লইয়াছিলেন, তিনি প্রার প্রতিগ্রামে পাইক, গো-মন্তা, বিশেষতঃ দরিজ, ভিকুক, ঠাকুর-বাড়ীর পুলারি, অতিথিশালার ভাণ্ডারী প্রভৃতিকে ডাকাইরা প্রশ্ন করিতেন। এইরণে গ্রামে গ্রামে, জিজ্ঞানা করার, একস্থানে একজন বৃদ্ধা ভিধারিণী বলিন শ্রাপ্রি বাহার অন্ত্রসন্ধান করিছে-

ছেন বোধ হর আমি তাহাকে দেখি-রাছি, ক্রোড়ে একটি একবংসরের কন্যা আছে।"

দেওয়ান। কোথায় দেখিয়াছিলে?

বৃদ্ধা। এই গ্রামের প্রাক্তভাগে বটবৃদ্ধের তলায় বসিয়া কাঁনিতে দেখিয়ায়াছিলাম। আমি তাঁহাকে কত কথা ।
জিজ্ঞাসা করিলাম, কিছু তিনি চক্ষের মধ্যে
অঞ্চল ভিজাইলেন তবু কোনি কথায়ই ।
উত্তর দিলেন না। আমি তাঁহার কনাায়
নিমিত্ত একটু হুধ আনিতে গেলাম,
কিন্তু আসিয়া আর তাঁহাকে দেখিতে
পাইলাম না। সে আল চারি পাঁচ
দিনের কথা।

দেওয়ান্মহাশয় সেই বৃক্ষতলে গিয়া
অমুভব করিলেন যে, মাধবীলতার মা
পূর্বাভিমুখে গিয়াছে, অতএব পাজী
আরোহণ করিয়া সেই দিকে গেলেন।
অপরাক্তে প্রান্তর হইতে দেখিলেন সমুখে এক বৃহৎ নগর, বহুতর দেবম্দিরে
স্থাভিত, তাহার ত্রিতল অট্টালিকাসমূহ খেতকপোঁতসমাকীর্গ, লোককোলাহল অভিদ্রব্যাপী। দেওয়ান্ ভাবিলেন,
এ নগকে মাধবীলতার উদ্দেশ পাওয়া
কঠিন ব্যাপার।

এই সময় একটি পুছরিণীর কুলে

দাড়াইরাপুঁটুর না দেওয়ানের পাছীখানি
দেখিতেছিলেন, আর ভাবিতেছিলেন বে,
এই পাড়ী যদি আমাদের রাজার হর,তবে
ভার পায়ে পুঁটুকে ফেলিয়া দিরা আমি
বির্দ্ধির প্রাবভাগে করি। বাবা অবস্থ

পুঁটুকে প্রতিপালন করিবেন, ভিনি शृह्रिक छानवारमन। शृह् आमात कड भाग भारत। এই य त्रीर प्र तोटा आमि जांक वृत्क करत शिति-,তেছি, পুঁটু ভবু ত কাঁদে না, যেন পুঁটুর তাতে আরও আহ্বাদ বেড়েছে, •পুঁটু হাসিতেছে, কাক ডাকিতেছে, হাত খুৰাইতেছে, আয় আয় করে চাঁদ ডাকি- তেছে। *** না। পুঁটুকে রাজার কাছে রেখে মরিছে পারিব না, রাজার বাটীতে পুঁটুকে কে দেশিবে। রাজাকি সভা ফেলে পूँ हेत काटक वटन थाकिटवर ? ना. मानि-गानिता भूँ हेटक किटत ८ हरत्र (मिथ्टव ? शूँ है कैं। मिरन (क डारक वृतक कतिरत ? ৰাপরে ! আমি পুঁটুকে ফেলে একদণ্ডের জনা মরিতে পাবিব না।'' নাধ্বীলতার মা একা দাঁডাইয়া এইরূপ ভাবিতে-ছিলেন, পুঁটু তথন তাঁচাব ক্রোড়ে किल ना।

এই, সময় তাঁহার ফাতি নিকট দিয়া
দেওয়ান্মহাশয়ের পালী চলিয়া গেল;
কিন্তু দেওয়ান্ কিন্তা পরিচারকগণের
মধ্যে কেহই তাঁহাকে লক্ষ্য করিল
না; ভিনিও জানিতেন না যে, তাঁহারই অফুসন্ধানের নিমিত্ত স্বয়ং রাজদেওয়ান্ যাইতেছেন। দেওয়ান্ নগরে
প্রবেশ করিয়া কোন এক প্রধান
ব্যক্তির বাটাতে অবস্থান করিলেন, সকশেই তাঁহার সহিত্ত সাক্ষাৎ করিতে
আলিল, সকলকেই তিনি মাধবীলতার
বার্ত্তা জিক্সানা করিলেন, কিন্তু কেইই

কিছু বলিতে পারিল না। ভিপারী,
প্লারী, কেছই তাঁহাকে দেখে নাই।
মাধবীলতার মা এই নগরে এক গৃহছের
বাটীতে কুটুম্বকন্যা বলিয়া রক্ষিতা হইয়াছিলেন। দেওয়ান্ কোন সমাদ না
পাইয়া অগত্যা বিবেচনা করিলেন যে,
যে গ্রামে বৃদ্ধার মুখে পুঁটুর মার প্রথম
সমাদ পাইয়াছিলেন, সেই গ্রামে
প্রত্যাবর্তন করাই উচিত; মতএব
প্রাতে তথায় ফিরিয়া গেলেন।

পথিমধ্যে পিত্য পাগলার সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হইল, পিত্য কোন সস্তাষণ করিল না দেখিয়া, দেওরান্ তাঁহাকে ভাকিলেন। পিত্য আসিয়া দাঁড়াইল, কিন্তু কোন কথা কহিল না।

দেওরান্ পিতমকে সঙ্গে লইরা এক
নিজ্জন স্থানে বসিলেন; পিতম তখনও
কোন কথা কহিতেছে না দেখিরা,
আপনিই জিজ্ঞাসা করিলেন, ''কোপা
যাইতেছিলে ?''

लिज्य। এই मिक्ता

দেওয়ান্। এই দিকে কোণা ?
পিত্য। তা এত জানি না। ভূমি কোথা গিয়াছিলে ?

ি দেওয়ান্। রাজকন্যা মাধ্বীলভার অনুস্কানে।

পিতম । সন্ধান হইল নাবোধ হই-তেছে।

দেওয়ান্। কোন অনুস্কানই পাই-লাম না.।

পিত্য। जाल हे इहेबाटक।

(म अत्रोन्। (कम १

পিতস। সে অনেহ কথা; ভূমি
বিদ রাজার নকণ ইচ্ছা কর, মাধবীলভার নাম করিও না; মাধবীলভার নাম করিও না; মাধবীলভার নাম করিও না; মাধবীলভার নাম করিও না; মাধবীলভার
কাল্পী, অথবা আর কিছু; যে ভাহার
পংশ্রবে আসিবে, সেই কট্ট গাইবে;
আতএব ভূমি পলাও। মাধবী-লভা নিজে
ভ্রদুই, মহুবারূপে জারিরাছে; অভএব ভূমি পলাও। আদৃট্ট মানিরা
থাক। আদৃট্ট—বাহা দেখা যার না,
বাহা বুঝা বার না । আদৃট্ট অজ্ঞানের
ওরারিস; অজ্ঞান আনেন না শে আদৃট্ট
ভীহার গর্ভজ, ভাহাই বড় গোলযোগ
বীধিবাছে।

দেওরান্। আসি আনিভাস নাবে, তুমি অদৃষ্টবাদী।

निज्य। अनृष्ठेतानी जकरनंते; अनृदेश मंड नाग बार्ड, এक এक छन এक
धक नार्य डांशंत अर्छना करतः कानरेडरन रममंख्यम आर्डर नाम अड्या।
अनृष्ठे ितकाल आर्ड, ितकान थाकिरव; अनृष्ठे मरत ना, अनृर्द्धेत रकवल
माम मरत; डांशंत এक । मञ्चा मर्यद्य
इहेरन अनृर्द्धेत कि इस वना यात्र
मा। किस रमवडाता छ मर्यद्धक, छरव
छांशाता रकन अनृर्द्धेत वभवर्षी । महारमव अनृर्द्धेत रमोत्रार्ख्या बाक्ना। धक
धक रमवडात धक धक धकात अनृष्ठे।
अनृष्ठे बह्नानी, ध्रार्डिंग सिक्षे अड्डर्ख
क्रभ; आसात निक्षे अनृर्द्धेत क्रभ

ছिशमछा, अर्थार जिनि धक्रिकारमधी। জগাহের প্রাকৃতি কি তাহা আন ! আফুতি হইতে প্রকৃতি বুঝিৰে ! প্রকৃতি-मिती चारानात माथा चार्शन कारिया चा-পনি আপনার ক্ষিব পান করিতেছেন, ছিল্লমন্তার রূপ কে কল্পনা করিয়াছিল चान ? (चात अनुष्ठेवानीत व कज्ञना কলনা নহে,ইছা সত্য সতাই অদৃষ্টের মুর্বি; অদৃষ্ট আর প্রকৃতি এক। আমার সহিত তক কবিওনা। আমি স্বচক্ষে এ মৃদ্ধি দেশিয়াছি, একদিন রাত্রি আড়াইপ্রহরের সময় একরূপ পৈশাচিক শব্দে আমার निजः छत्र वर्षे शां (शल। भगा। इरेड प्रि আমার গবাকের নিমে কোন এক ছান হইতে বছতর গৃধিনী, শকুনী, উঠিলা আকাশপথে উড়িয়া যাইতেছে, ভাহাদের भक्त मधानात्व भारक हात्व का हहे ए**ड ता**-গিল। সকল পকীই উদ্ধৃৰে আকাংশঃ একদিকেট বেগে যাইভেছে, দেখিয়া আমি গ্রাকের নিকটে গেলাম। বে निक् भक्तीया छूडिटल्ड, स्मर्टे निक् ধীরে ধীরে নেত্রপাত করিলাম, তথায় (मिथ, पूर्व मर्ख न्नार्थ कतिया এक क्छ-क्रिनी युवडी मांडाहेबा चाह्य; व्यापनाव মস্তক আপনি চ্ছেদ করিয়া, আপনিই আবার আপনার ক্ষির পান করিতেছে। বানকান্ত ছিল্লান্তক উল্লভমূপে রক্ত ধারার উল্লফ্ন, ও প্রপত্ন দেখিতেছে, হাসিতেছে, আর তাহা পান করিতেছে। উৎপ্ৰেকিত রস্তের আভায়, অন্ধ^{কারও} রক্তবর্ণ হইরাছে। আকাশ, তৃণ, সমূ

भवरे बङ्गांछ ! त्मरे विवयण्डक मूक-কেশ অগ্নিবৎ তরঙ্গ তুলিয়। অর্থ্রেক আকাশ- ব্যাপিয়া ক্রীডা করিতেচে। चर्ता, मर्ख, आकारम, हातिमिक् वाा-পিরা গম্ভীর, "ব্যোম্" শব্দ স্থির-ভাবে শব্দিত হইতেছে। তেত্তিশকোটী (मवजा कत्रायाएं ख्रव कतिर उत्कार, ভে জগন্মতঃ ! কেন মা, ভো· মার গুপ্তমূর্তি প্রকাশ করিতেছ ? क्रमच, क्रमच, आवात मृति (कन, चामता दर छन्न भार्चे छि ।" महारत्व क्वनमाळ शंनिया वनितनं, 'शक्कि দেবি ! তুমিই সতা, ভোমার এইরপট সভা, ভোমার এইরপে আমার মনো-त्माहिनी।" महारतरत कथात्र कञ्चक्रिशी ষ্টবৎ হাসিয়া ক্রমে ক্রমে আকাশে মিলাইয়া গোলেন। আর কোথাও কেই নাই, আমি দাড়াইয়া, ভাণিতে गानिमाम "शकुणिएनी कि छित्रमछ। ? এই ুকি প্রকৃতির যথার্থ মূর্তি ? ভবে ছে প্রকৃতি! আমাদের কেন ঠকাও ? তোমার এই ভয়ন্ধরমূর্তি ঢা-কিছা কেন নিয়ত মোহনীমূৰ্ত্তিতে আমা-

দের চোধে চোধে বেড়াও ?—কেন
ফুল ফুটাও, কেন বা কোনললভাবল্লী
দোণাও, কেন পাণী উড়াও, কেন
জোংখ্যা মাথ, কেন চক্সমন্তলবিরালিভ
মনস্তনক্রসনাপ কিরীটি মাথায় পর ?
এখন ব্যেটি! আমি আর ঠকিব না।''
দেওয়ান্। তুমি মাধ্বীলভার সন্ধান
করিতে পাব ?

পিতন ভিন্ন মন্তার মূর্ব্তি আলোচনা ক্রিতে করিতে এরূপ মাতিয়া উঠিয়াছিল, নে দেওয়ানের উপস্থিতি তাছার একেবারে স্মরণ ছিল না। দেওয়ান্ কথা কহিলে তাহার চৈতনা ছইল। তথন দেওয়ানের কথার কোন উত্তর না করিয়া পিতম ধীরে ধীরে সে স্থান হটতে প্রস্থান করিল।

ইহার পর দেওয়ান্মহাশর শান্তিশন্ত প্রামে গিয়া দেখেন, চুড়াধনবার্র প্রতি রাণীর শ্রন্ধা জন্মিরাছে; স্ত্রীকে মধাবর্তিনী কবিয়া, চুড়াধনবাব্ রাণীকে পরা-মর্শ দিতে আরম্ভ করিয়াছেন। দেও-য়ান্ ভাবিকোন, "আরম্ভ এই; শেষ কোথা ?"



বালীকির জয়।

দ্বিতীয় খণ্ড।

পর্বত হইতে নামিবার সিঁড়ি থা-कित्न वफ छान इहेज, वफ़ बफ़ धारी-ख्याला है। नणाल चारहेत्रे गठ ्यनि नि फि थाकिक, दिनाध इब, छाहा इहेटल मकटनहे তাহাতে উঠিত, কিন্তু তাহা নাই। বুরিয়া ফিরিয়া কথন গাছের ভাল ধরিয়া, কখন अज्ञात थात्र मित्रा, कथन উচ্চ इटेट्ड निम इहेबा, कथन आवात निम्न इहेट उ छिछ-মুণে, কখন পাছাড় বেড়িয়া কখন বরা-वद्र नामिया, चानिएक इया। कथन अमनि ভয় হয় যে পা একটুকু সরাইলেই ় পড়িয়া যাইতে হয় 🖫 🖔 কথন ভর হয় প্রকাত পাণর মাণায় আসিয়া পিড়িবে, ৰশিষ্ঠ ৰ বিশ্বামিত উভয়ে অবলীলাক্রমে গল্ল করিতে করিতে নামিতেছেন। বি-শাল ৰক্ষ, ভেড:পুঞ্জ, বলিষ্ঠ, প্ৰাকাণ্ড দেহ; মুখকাস্তিতে একলনের অসাধারণ শৌর্যা আর একজনের অদিতীয় বৃদ্ধি মত। প্রকাশ পাইতেছে। •উভরে গুর করিতে করিতে পথ অভিবাহন করিয়া याहेटल्डा शद्यत विषय महत्कहे. অমুভব করা যাইতে পারে। গভরাতের ঘটনাবলী---

ৰশিষ্ঠ বলিলেন "যাহাতে] ভাই ভাই হয় ভাহার ক্লিউপায় করিছেছেন ?''

বিখানিতা। তাহার আবার উপায় কি ? প্রায় সমস্ত লগৎ, জয় করিয়াচি, আর জর বাকী, এই টুকু হইলেই এক রাজার অংধীনে সব প্রোজাই ভাই ভাই হুইয়া_উঠিবে।

ৰশিষ্ঠ। আপনি কি মনে করেন, একশাসন আর ভাতৃভাব একই জিনিস।

বি। তাহার আরে সন্দেহ কি ? বশিষ্ঠ। রাজ্যসংখ্য বিজোহ বিঞ্ব চৌহাদাঙ্গা হাজাম হয় কেন ?

বিশ্বামিত্র দক্ষিণ হস্তপ্রসারণ ক রিয়া বলিলেন, "এই হস্তের বলে সে সমস্ত নিবারণ করিব।"

विभिष्ठे। विलिद्यान मन ?

্বি। মনে যাহাই থাকুক প্রাকাশ করিতে দিব নাৃং

বশিষ্ঠ। তবে আর ভাই ভাই হইণ কই, মনে বিদেষ থাকিলে লাভ্ভাব হয় কই ?

বিখামিতা। আপনাবা জনকতক আলগ আছেন তাঁহাদেরই মাতা মন অভান্ত কুর, মনোভাব লুকাইয়া কাজ করিতে পা-রেন, অন্যলোকে কাজে না করিতে পা-রিলে মনেও কিছু করিবে না।

বশিষ্ঠ দেখিলেন নির্বোধকে ব্ঝান
দার,তিনি কিছুকাল চুপ করিয়া রছিলেন।
ভাছার ক্রু বলিলেন 'ব্যাহ্মণের উপর
আপনার এত রাগ্য কেন ? ব্যাহ্মণ লাগনার কি করিয়াছে ?''

বি। আমার কিছু রাগ নাই, আমার কিছু করে নাই, কিন্তু আমার বোধ ^{এই} যে ব্যাহ্মণের সঙ্গে আমার প্রথম বি^{বাদ} ছইবে। কারণ, উহাদের বৃদ্ধি বড় পেঁচাও, আপনার কর্ত্ত্ব করিবার জন্য উহারা কব করিতে পারে।

বশিষ্ঠ। বলেন কি মহাশয়! ব্রাহ্মণ বরং
সকলের সহিত সন্থান করিয়া চলার জন্য
বিশেষ উদ্যোগী, ভাহার সাক্ষী দেখুন
আমি ক্ষজিয়ের পৌরোহিত্য স্বীকার
করিয়াছি, ইহাতে লাঘন পাকিলেও
স্বীকার করিয়াছি।

বিশা। রাজপৌরোহিত্যে লাঘব আছে
তাহা শীকারই করি না। বিশেষ আর
আপনি যে, বাধ্য হইরা শীকার করেন
নাই, তাহারই বা প্রামাণ কি
 তারা
আপনি কি মতলবেই বা শীকার করিয়াছেন, তাহাই কে জানে।

বশিষ্ঠ চুপ করিয়া রহিলেন। নিখামিত্র বলিতে লাগিলেন, আপনি যে মতলবেই আহ্বন, আর ব্রাহ্মণের যত কুমন্ত্রণাই থাকুক, বিখামিত্র এই ভূজবলে সমস্ত শাসিত করিবে, সমস্ত পৃথিবী একশাসন এবং একমন, একপ্রাণ, করিয়া দিয়া যাইবে।

বশিষ্ঠ দেখিলেন, তিনি বাহা ভাবিয়া ছিলেন, তাহা হইল না। 'চুপ করিয়া পথ অতিবাহন করিতে লাগিলেন।

বিখামিত্রও দেখিলেন, অকারণ ব্রাক্ষাপের মন:ক্ষুর করিয়া ভাল করেন নাই,
তিনিও থানিক চুপ করিয়া করিলেন,
"মহাশয়! কিছু মনে করিবেন না,আমি
আপনাকে অকারণে কুল্ল করিয়াছি ক্ষমাক্ষুন, আরে যদি কোন বাধা না থাকে,

আগার শিবির নিকট, আজি আতিথাপ্রহণ করুন।" বশিষ্ঠ সম্মত হইলেন।
মহা আদরে বশিষ্ঠের আতিথা করা হইলা,
এবং কিঞ্চিৎ ক্রাক্সহকারে তাঁহাকে
যে সকল অপার রত্মরাশি নানাদেশ হইতে
লুঠন করিয়া আনিরাছেন, তাহা দেখাইলেন, এবং উপটোকন দিলেন। বশিষ্ঠ
মহা সত্তই হইয়া বিদায় হইবার সময়
বিশ্বামিত্রকে আপান তপোবনে নিমন্ত্রণ
করিয়া গেলেন।

₹

বিশামিত্র যথাসময়ে তপোবনে উপ-স্থিত হইলেন। বশিষ্ঠ বহুদুর হইতে জাঁহাকে আগু বাড়াইয়া লইয়া আদি-त्न। উপश्विष्ठ इहेशा याशां (पिशित्नन, তাহাতে বিখামিত্র একেবারে চমৎকৃত হইয়া গেলেন। তিনি যখন উপস্থিত হন, তখন তপোবন, শাল, ুতাল, তমাল,পিয়াসাল, হিস্তাল প্রভৃতি প্রকাণ্ড-কায় বনবৃক্সমৃহে ব্যাপ্ত ছিল, তলায় লতাগুলাদির লেশমাত্র নাই,সব পরিছার, निन्त्र, शिक्षा ज्वारा विश्व योष । किन्द याहेवाक अकडू शदबरे म मुना शतिवर्तन इठेन; श्रेश वन डेम्राटन शतिगठ इहेन. প্রকাপ্ত তপোবন নানাপ্রকার শরতের কুলের কেয়ারিতে বোধ হইতে লাগিল (य, '(यन এकशानि गालिहा পाछित्रा দিরাছে। কোথাও শাদা, ভঙ্গিতে ভঙ্গিতে শাদা, কোথাও নীল ভঙ্গিতে ভঙ্গিতে নীল, কোণাও রাঙ্গা, ভঙ্গিতে ভঙ্গীতে রাস, কোথাও সবুদ, ভঙ্গীতে ভঙ্গীতে

নৰ্জ, কোথাও পীড, কেমন এক রঙ কমিয়া আর এক রঙ বাড়িয়া বাইতেছে বেহুলে কুলের রঙে বৈচিত্রা হইতেছে না, নেহুলে উপলে কে লোম পুরাইরা দিতেছে। গালিচার কারিপার্যে নানা-জাতীর গন্ধপুলা তাহার বাতানে চারি-দিক ভর ভর করিতেছে, প্রকাশু গালিচা ঠিক মধাহুলে প্রকাশু সরোবরে মার্কল পাথরের নি ডি তলাপর্যান্ত মার্কল পাথরের নি ডি তলাপর্যান্ত মার্কল পর্যান্ত দেখা বাইতেছে। এই গালিচার অবিদ্বে প্রকাশু আট্টালিকা দ্বার কষ্টি পাথরে নির্দ্বিত। হারে খুদিরা স্বর্ণাক্ষরে নেখা।

স্বাগতং গাধিকুল ভিলক্স্য বিশ্বামিত্রসা।

বিখামিত্র প্রাসাদমধ্যে প্রবেশ করিরাই দেখেন যে, সমস্ত পৃথিবী জয় করিরাও এরূপ অট্টালিকা কখন দেখেন
নাই। হীরা, মতি, পারা, মুক্তা ইত্যাদি
গৃহসক্ষার উপক্রণ। উৎক্রই প্রস্তরে
বাটীর আদাস্ত নির্মিত, আর তাহার
উপর পরগুরামের যুদ্ধকাহিনী চারিদিকে
ভোলা করিয়া অন্ধিত, কোথাও ক্রাত্তরভোলা করিয়া অন্ধিত, কির্মান্ত যুদ্ধ
হৈতেছে, আর ক্রাত্তরিদ্বাের সহিত যুদ্ধ
হইতেছে, আর ক্রাত্তর্গালী যুদ্ধ একুশটি
দেয়ালে লেখা বভিয়াছে।

্ বিখায়িত হতবৃদ্ধি হইরা সমস্ত ভাল ক্রিয়া দেশিলেন। দেখিয়া তীহার

বোধ হইল, বলিষ্ঠ তাঁহার আতিখাের कवाव निष्ठाह, এवः ठाहात्र महिछ (य, কথোপকথন হইরাছিল তাহারও অবাব मिटिए । मान मान छ। हात्र विषयकाव ক্রমে বাড়িতে লাগিল, হিংসা জ্বিতে লাগিল। আপাততঃ মনোভাব গোপন করিয়া আতিখাখীকার করিলেন। মহা-नत्म भान, (काबन, नृहाशीजामि मर्भन, मगापन इटेल, यादेवात मगत विवर्ध যথোচিত উপঢ়োকন আনিয়া উপস্থিত विश्वामिळं विलिलन, महा-कद्रित्नन । শর আগনি ঋৰি, বনবাসী, আপনার व अठ्न वेन्हर्ग द्रांश इटेंड आमिन। विश्व वितालन, महाभन्न आमात्र अक গাভী আছেন, তিনি কামধেমুর কন্যা, তাহার নাম নন্দিনী, তিনি আমার সমস্ত हैक्डामक निया थाकिन। वास्त्रिक रम (ध्यू आत कि हुई नहि, विभार्षित मर्ब-গ্রাহিণী বিদ্যামাত্র। বিশ্বামিত বলিলেন, তবে অল উপঢৌকনে আমার তৃপ্তি হইবে ना. आमात्र त्महे त्माकृषि मिटल बहैरव। বশিষ্ঠ বলিলেন, আমি যখন তাহার মার काइ रहेट जाहाटक नहेंग्रा चानि, जबन আমি প্রতিক্রা করিয়া আদি যে, উহাকে क्ष्मन काहारक श मित्र ना। विश्वामिज আর ভাব গোপন করিতে পারিলেন না, বলিলেন, আপনি দিবেন না, কিন্তু আমি অপ্ররণ করিব। বলিয়াই আপ্ন লোক খনকে গোরু চুরি করিতে ত্কুম দিলেন। व निरक का जिथ नर्का निरम :- अनिरम वल पूर्वक का भइत्र । विभाई महाविज्ञारि

পড়িরা গেলেন। বলিঠ নিকন্তর হইরা রহিলেন। লোকে ধেরু অপহরণ করিরা লইরা যাইতে লাগিল, ধেরু বাইবার সমর কাতরনরনে বার বার ঠাহার প্রতি দৃষ্টিনিক্ষেপ করিতে লাগিল। বলিঠ ক্রন্সন করিরা কহিলেন, "কি করি বাছা, অতিথি, রাজা, প্রবল-প্রতাপ হিথিপরী। তোমার অপহরণ করিরা লইরা যাইতিতেছে,তুমিই ইহার প্রমাণ।" বলিবামাক্র নন্দিনী হন্ধার ছাড়িলেন, হন্ধারণক্ষে আকাশ পাতাল ফাটিরা গেল। আর অগণিত-সংখ্যক পারদ, পারস, চীন, সান, মান প্রভৃতি নানাজাতীর সেনা রণসজ্জার সজ্জীভূত হইরা ভণার ঠাহার জ্ঞাণ্ডিউপঞ্চিত হইল।

9

ধেত্ব দ্বীয়া নহাবিবাদ বাধিয়া উঠিল,

এক দিকে ক্ষজিরসেনা আর একদিকে

যবনসেনা মধ্যত্বলে নন্দিনী। পূন:
পূর: ক্ষজিরদিগের হস্ত হইতে মুক্ত হইবার চেটা করিতেছেন, ভাহারা কোনমতেই ছাড়িতেছে না। যবনগণ গাভী
ছাড়াইরা লইবার চেটাকরার যুদ্ধ বাধিরা
উঠিল, যবন ও ক্ষজিরে যুদ্ধ বাজিলে

সন্যে যুদ্ধ—আদ্দে দর্শক। দীর্ঘ দীর্ঘ
ভরবারি দীর্ঘ দীর্ঘ বর্ধা, আর প্রেকাণ্ড
ধন্ত্বক উল্লারে উল্লের মেঘ গর্জন অন্তত্তব

হইতে লাগিল। বিশামিজ অনৈনার
অভিনেতা, আ্লাণপক্ষে অভিনেতা কেইই
নাই, বলিঠ অতিথির সহিত যুদ্ধ করিতে

সনিক্ষক, এবং পুত্র ও শিষাগণকে যুদ্ধে

यारेट पिरमन मा, किन यून हिनाड লাগিল, ক্রমে রক্তপাত আরম্ভ হইল, ক্রমে রক্তনদী বহিতে লাগিল, যুদ্ধকেত্রের ধুলি রক্তে কর্দম হইল। তখন বিশ্বামিত ত্কুম দিলেন, ''গোক মেরে ফেল।''গোক এখন क्षाबामिश्रीत कत्रकर्तिक हिन, উহার প্রাণসংহারে উদাম করিবামাত্ত গোরু দিবা জীমুর্তি ধারণ করিরা আকাশ পণে উপিত इहेत। जी मूर्ति चन्नः मन-সভী, খেতপ্রাসনা ্রৈতবন্তবিভ্ষিতা খেতবৰ্ণছটায় পূৰ্ণিমার জ্যোৎসা বাক্-माद्र, रुख (चंडवीना, नावत्ना) कशर অালো, ভাহার উপর আবার খেত পল্লের সমস্ত বিভূষণ ! বলিলেন, 'রে, মুর্থ, আমি বান্ধানর বিদ্যা, তোরসাধা কি, তুই আমায় অপহরণ করিস্। আমি কুল-ক্রমে আহ্মণগৃহে বাস করিয়া থাকি, করিয়াছি ও করিব, তুই কি গারের জোরে আমার হরণ করিতে পারিস. মনে করিরাভিস। বিশ্বমিত বিশ্বরাপর रहेलन, दमिरतन, সরস্বতী আবার ধেমুমুর্জিধারণ করত: বশিষ্ঠসলিধানে অবভীণ হইলেন, সমস্ত দৈনা বায়ুতে भिणारेका (शन । विणिष्टित नक्षत प्रत्येत षानमाक वहिट्ड गानिन, जिनि चहरछ ধেমুর গাত্রকণ্ডুয়নে প্রবৃত্ত হইলেন।

বিখামিজের এই সর্ক প্রথম পরাজর।
মনের কোন্ডে, ছংংপ, হিংসায়, বিখামিজ
আর গাভী বা বশিষ্ঠের দিকে চাহিতে
পারিলেন না। জোধে ধছুর্কাণত্যাগ
করিলেন, ইসন্য সামস্তকে আপন আপন

বাড়ী যাইতে বলিলেন, রাজ্যের ভার মন্ত্রীর উপর দিলেন। বলিলেন।

ধিক্ বলং ক্ষত্তিয় বলং ব্ৰহ্মতেকোবলং বলং

বলিয়া ব্রাহ্মণত্বাভের জন্য তপদ্যা ক্রিবার নিমিত্ত হিমালয় পর্ক্তমধ্যে প্রবেশ করিলেন।

বশিষ্ঠ দেখিলেন, তাঁহার মনের আশো বার্থ হিইল।

বিশ্বামিত্র যে কেবল বাছবলে সমস্ত ভূবন এক করিতে চাহিয়াছিলেন, ভাহার অসারতা ব্বিতে পারিলেন, আর বা-আীকি দস্যাদলত্যাগ করিয়া, অস্তরের আলায় বনে বনে রোদন করিয়া বেড়া-ইতে লাগিলেন।

তৃতীয় খণ্ড।

বিশামিত্র কোপায় গেলেন, কেহ
জানিল না। তিনি সৈন্যদের সঙ্গে
আনিলেন না। মন্ত্রী রাজ্য করিছে
লাগিল। উ:হার পরিবারেরা আজি
আসেন, কালি আসেন, ভাবিয়া ক্রমে
দিন, মাস, বৎসর, কাটাইয়া ছিল।
বিশিষ্ঠ আবার আপন মতলব অমুসারে
ত্রাহ্মণ ক্রিয় মিলাইয়া দিবার চেটা
ক্রিভে লাগিলেন, তাহার চেটা বিফল
হইল, বিশ্বামিত্র পক্রীরগণ তাহার ঘোর
বিশ্বেষী হইয়া উঠিল, বশিষ্ঠবংশের কি
ভয়ানক পরিণাম হইয়াছিল, ইভিবুত্তে
তাহার উল্লেখ আছে।

ু এদিকে বিশামিত একবারে খোরতর তপস্যার মগ্ন হইলেন, আক্ষণ হইবেন,

নিজহতে ত্রাহ্মণ, ক্রিয়, ছই বল এক করিবেন, এবং সদাগরাধরার অভিতীয় श्रेष्ठ इटेर्रिन, সকলকে এक्नांगरन त्राचित्रा এक छाट्य मिनाहेट्यन। এहे कांशामत गनम रहेल। जिलि हिमा-লরে এক অভিনিস্ত জললমর তুর্গম্য-ष्ठारन गमन कत्रज, धरकवारत (चात्रज्ज তপ আরম্ভ করিলেন। প্রথম দিনে, এক। গ্রাস আহার, তাহার পর অর্ক্তাস; ত হার পর এক দানা, তাহার পর অর্দ্ধ দানা; তৎপরে জলবিন্দু,তৎপরে আহার বন্দ করিয়া তপ' আরম্ভ করিতে লাগিলেন। শরীর ক্ষীণ হইতে লাগিল। শীত, এীম, বর্ষারসম্ভ সমস্ভ মাথার উপর দিরা याहेटंड नाजिन। पृक्षांठ नाहे, दक्रन धान। ठक्क (काठेत्रगंड हरेल, नागिकात मधा कहिमाळ न्यांडे त्रथा यांत्र, माती-বের সমস্ত হাড়, কেবল চর্মমাত্রে আছো-. দিত হ'ইল। কেশরাশি বৃদ্ধিত হইয়া ভূমিৰুঠিত হইতে লাগিল। পদের নথর বৃদ্ধিত হই গা শিকভের মত মাটির মধ্যে পুতিয়া গেল। উইপোকা গায়ের উপর বাসা করিল। বিশ্বামিতের ধ্যান (भव इत्र नां, व्याञ्ज, छत्नुकानि हिश्युक्तकः र्गंग (मर्ट्श व्यात्र शीतकाट्य मृत्र मित्रा. **চ**लिया यात्र।

এই ভয়ানক অবস্থার বিশাসিত্র
নানারপ শ্বপ্প দেখিতেন, কথন
বাধ হইত সমস্ত জগৎ-বিশ্বসংসার, পরমাণু হইরাগিয়াছে। মধ্যস্থলে একমাত্র
তিনি, তাঁহার শরীর দেখিতে দেখিতে

ব্রহ্মাণ্ড জুড়িয়া উঠিল, তাঁহার তেমে প্রমাণু দগ্ধ ছইতে লাগিল। শেষ নিজ শরীরও দথা হইতে লাগিল। দারুণ আন্তর আলার ঠাহার ধ্যানভক হইল। সন্মুখে দেখেন কতকগুলি গরমাস্থল বী-युवाछी,-- अश्रवा (काषाय लार्ग, उँ।शंव * সন্মুশে নৃত্য করিতেছে, ভাহাদের নিত্য-দোলন অতীব চমংকার, তাহারা কেছ * পুরিয়া পুরিয়া পুরিয়া নাচিতেছে। কেহ मननिञ्चललानगात्र (इनांदेश (तड़ाहे-তেছে, কেহ শরীরের অন্ধ্রিংশে বসন-ত্যাগ করিয়া,কোমরে হাত দিয়: দ:ড ইয়। আছে। কেছ কটাক্বর্ণ করিছেছে, कडें। क कथन (कामल, कथन हक्षत, কখন ঠারে ঠারে হাদরের অভিলাষ ছড়। हेब्रा पिट : इ. । कथन व्यनम, कथन বিত্রাৎবৎ, কখন চকের পাত। কাপি-তেছে, তাহার উপর কটাক্ষ বাণবং ঘন কাহারও বেণী বদ্ধ ঘন পড়িতেছে। কাহারও এলো, কাহারও অলক শিত, কাহারও বায়ুভরে (मानायगान আর সকলেই নানা হাব ভাব বিকাশ করিয়া, কেবল বিশামিত্র প্রতি আপনা-**(मंत्र आनम, ममनखाव ध्यकांण क**ति-তেছে। বিশ্বামিত্র দেপিলেন, তাঁ-शंत्र ष्ठास्त्र-माह किथिए भगित इहेत्य, তিনি পুনরায় খানস্ত্ইলেন।

আবার স্বপ্ন দেখিতে লাগিলেন।
কোটী স্থ্য প্রকাশ হইয়াকে, তেজে
নয়ন ঝল্সিয়া যাইতেছে, গা পুড়িয়া
বাইতেছে, বিশামিত্র পদায়ন করিয়া

স্থা সমূহ হইতে দুরে যাইতে লাগি-লেন। যাইতে যাইতে যাইতে যাইতে प्रांगात एउछ मन इहेग, किंद्र (यथारन গেলেন, সেপানে ভর্ত্তর শত্মহত্র স্প उँ।इ। तक पर्शन कतिन। विस्वव ज्ञानाम তাঁহার ধ্যানভঙ্গ হইল। দেখেন ভয়ানককাণ্ড, নানাপ্রকার ভী-ষণাকর জন্তুগণ তাঁহাকে ভয় দেখাই-তেতে। কাহার মুখ শৃকরের সিংহের নাায় কেশর, যোজনবিস্ত্ত লাফ্ল কেহ ভীষণ পিশাচ,মাথার উপর চোখ, অদ্ধেকশরীৰ হাতে ভরা, তুই হাত আর ছই পাদিয়া, চারিদিকে আহার-সাম্থী হাতড়াইতেছে, আর যাহা পাইতেছে অননি উদরসাং **ट्रि** । काशत प्रस्तित नाम কাহার হতীর ন্যায়, কাহারও মাণা পর্বতের চুড়ার ন্যায়, কাহার কেবল मछक, शमदश आहि कि ना मत्न्ह। कान जी भिगाठीव cकवन खनव्य--- तु-হৎ পর্বভচ্ডার ন্যায়,আবার কাল। কেহ কাল, কেছ নীল, কেছ পীত, কেছ হরিলা, নানারঙে শোভিত। যথন এই ভ্যানক বৈনা, সেনাপতির আদেশে ত হাকে আফ্রেনণ করিল, তাঁহার **আ্রা**-পুরুষ শুক হইরা গেল। কিন্তু তাঁহার কটাকে পিশাচসেনা দূর হইয়া গেল। কাহার পদভগ্ন হইল, কাহার প্রাণনাশ হইল, কাহার মন্তক কত হইল। স্তন-বভীর জনভার থসিয়া গিয়া তাহার শরীর হালকা হইল। এর মৃত ওর ছাড়ে গেল ওর পা তাহার মাপায় গেল।

এই ভাবে পিশাচসেনার ধ্বংস দেখিয়া, পিশাচসেনাপতি হাসি হাসি মুগে ভাব कत्रिवात जना विश्वामित्वत निकृष्टे छेश-স্থিত হইয়া বলিলেন, বিশ্বামিতা, তুমি অতি বড় পরাক্রমশানী—তুমি ভুলবলে সমস্ত জয় করিয়াছ। তুনি তপোবলে কটাকে আমার পিশাচমেনা বিহত বিধবস্ত করিয়া দিলে। অতএব তুমি আমার পুত্র হও; এই যে, বিশ্বব্রুগাণ্ড প্রকাও দেখিতেছ, ইহার সমস্ত অস্তর शिशाह, देवा , नागन, जामात व्यधीन, তুমিই আমার একমাত্র উত্তরাধিকাবী হইবে। আমি সচিরাৎ তোমার রাজা করিয়া দিয়া স্বয়ং বিলাসস্থভোগে নিরভ হইব। অত এব তুমি আমার পুল হও। এই হিমালয়চুড়াৰ উপরে উঠিলে দেখিতে পাইবে অসংখ্য সমৃদ্ধরাজ্য চারিদিকে রহিয়াছে, সমস্ত তোমার इहेरव। हीन, खाशान, शिमत, शांत्रगा, সন ভোগার হইবে। এই যে সুন্দরীগণ ভোষার প্রলোভনের জনা আসিয়াছিল. উহারা আমার ভোগা; উহারা ভোমার इहे(व। यड गणि, मूळा, कांक्शानत अनि " দেখিতে পাইবে, সমস্ত আমার। আমার প্রজার সংখ্যা নাই; তুমি আমার পুত্র হও, এই সমস্ত অতুলরাজত্বের একমাত্র : অধীখর হও, তোমার কোন ভাবনা নাই চিন্তা নাই। যতদিন তুমি রাজ্যে ন্থির ছইতে না পার, আমি তোমার

নিকটে থাকিয়া ভোমার রাজ্যের সমস্ত রক্ষা করিয়া দিব।

বিশ্বামিত্র বলিলেন, "তুমি আযায় ব্রাক্ষণত্ব দিতে পার, নন্দিনী দিতে পার,
বিদ্যা দিতে পার, সরস্বতী দিতে পার?"
না, "পারি না। কিন্তু ব্রাক্ষণের সহিত
বিবাদ করিবার ক্ষমতা দিতে পারি।
নন্দিনীব প্রাণনাশ করিয়া দিতে পারি।
বিদ্যার ম্লোচ্ছেদ করিতে পারি, কিন্তু
সরস্বতীর কিছুই করিতে পারি না।"
"তবে তোমায় দিয়া আমার কাল হইবে
না।" বলিয়া,বিশ্বামিত্র স্মাবার ধ্যানে মগ্র

এবার ভাঁহার চকু মুক্তিত হয় না জ্যাগত নিখাস বন্ধ করায়, ক্রমাগত এক বিষয়ক চিন্তা করার, ক্রমা-গত অনাহারে তাঁহার চক্ষুদ্রিত হইল না। কিন্ত ডিনি বাহাজ্ঞানশূন্য হই-লেন, তাঁহার কর্ত্র হইতে জাঁভার गात्र मक वाहित इहेर्ड मानिन, নাসিকা দিয়া অগ্নিজ্বাস্থিক নিৰ্মত হইতে লাগিল। সেই শব্দের পুর তাঁছার মস্তকে প্রদক্ষিণ করিয়া রাশিচক্র দক্ষিণ হইতে বামদিকে ভ্রমণ করিতে লাগিল। ছায়া-পথ বুরিয়া দাঁড়াইল, দেখিতে দেখিতে তাহার মাণার খুলি অভ্যস্তরন্থ অগ্যন্তাপে छ र्क छ ९ किश इहेल, विश्व मः मारत व्म कतिया भक्ष इहेल, भक्ष आकारभ गए।-ইয়া বুরিয়া বেড়।ইতে "লাগিল। শেষে ব্ৰহ্মাণ্ডের কপাল কপালিকা পৃথক হইয়া গিরা সেই পথে শক্ষ বাছির হইয়া গেল।

ভাছার বাহির হইতে দ্বস্থিত শতসহস্র অন্যবরত সেম্পর্জ্জনের নাায় শুনা গেল।

ওঁ ভূভূবিংস তৎপবিতৃক্ষরেণাং ভর্গো-দেবসাধীমহি ধিয়োয়োনং প্রচোদয়াং। বিশামিত ধ্বনি প্রবণ করিলেন, তাঁহার উদ্ধোৎক্ষিপ্ত মন্তকান্তি নীচে নামিয়া প্রজিল। মৃত্ত্রিমধ্যে তাঁহাব শবীর সবল সতেজ ও ক স্তিপ্তি হইল। বিশামিত্র ভাবিলেন, ত্রাজনত্ব না পাই, বেদমস্ত দর্শন ত্রাক্ষণের স্ত্ত্তিল, তাহা ত ভিল করিয়াভি, ইহাই মথেই। বলিয়া ভাবার ধ্যানে মগ্র ইউলেন।

ą

বিশামিত্রের ধানে ত্রিলাভে যে হল-সুল ব্যাপাব পড়িয়া গিয়াছে, আর কাহারও অবিদিত রহিল না। তথন ব্রন্ধা বিশ্বাসিতকে ব্রান্ধণ করিয়া দিবার জনা ব্রন্ধর্ষি দিগকে সিণ্ডিকেটে আহ্বান করিলেন। কণ্, বশিষ্ঠ প্রভৃতি ব্রন্ধর্যি नात्रमानि (ननिर्धि मन जामिता कृष्टित्यन। আকাশপথে সভা হটল, সভায় একজন শূদুরাজাকে ব্রাসাণ করিয়া লভয়া ইইল। বিশ্বাসুৱদ্ত মন্ত্ৰ গায়ত্ৰীনামে আহ্মণ-মাত্রেরই আরোধা জপনীয় মন্ত্র বলিয়া, ষীকার করা হইল। কিন্তু ব্রহ্মা বেই বিখামিতকে ব্রাহ্মণ করিবার জনা প্রস্তাব कतिरलन, कान बक्किये वा रमवर्षि चकु-भामन क्तिर्मन छ।। (कर विलिन, নিমাসিত্র এখনই বিমের প্রায় কর্ত্তা व्हें या के कियारक। वाक्रानक पर निमा

পাইলে এখনই স্ষ্টিলোপ করিবে। কেহ বলিলেন, উহার দ্রাকাজকা বড় প্রাবা, আজি ব্রাহ্মণহ পাইলে, কালি ব্ৰহ্মত চাহিয়া বসিবে। অতএব উহাকে সাহস দেওয়া অভাস্ত অনাায়। অনন্তর সমবেত ব্রজার্যিণ ব্রহ্মাকে প্রতিনিধি-স্বরূপ পাঠাইলেন। ব্রহ্মার প্রতি ভার রহিল, তুমি ব্রাহ্মণত্ব ভিল আব যাহাই চায় দিও। ব্ৰহ্মা বিশ্বাসিতোৰ ধানিভঙ্গ ক্ৰিয়া বলিলেন, ''আমি ব্ৰহ্মা, ভোমার ধাানে কৃপ্ত হুইয়া বর দিতে আসিয়াছি। कि नत हार. धिन याम श न' रूप, उत् দিব।'' ''আমি ব্রাহ্মণছ চাহি, দিতে পার?" "না।" " আমি ভোমার মত প্রসাব বর চাহিনা।" ব্রসা কিঞিৎ ফুৰাংইয়া আবার যাইয়া প্রকার্ষিসভায় উপস্থিত হইলেন। এবং উহাকে আহাণ জন্য তানুবোধ করিলেন। কেইই দমত ইইল না। তথন প্রামশ্ হইল সকলে গিয়া বিশ্বামিত্রকে বুঝাইয়া পড़ाहेश घरा (कार नदमारन छुट्टे कहा যাউক। • বশিষ্ঠ একবার ঘাইতে জা-পত্তি কবিলেন, কিন্তু ব্ৰহ্মাও অন্যান্য मङोगकारणत अञ्चलार्थ (अरलन। उन्ना অবোর তাঁহার ধ্যানভক্ষ করাইলেন। বিশ্বামিত স্মাগত বর্দাভাগণের মধ্যে বশিষ্ঠকে দেখিয়াই চটিয়া গেলেন। এবং অনেককণ মৌন হ্ইয়া त्र हित्सन। সভাসদাণ বুঝাইতে লাগিলেন। আক্ষ-ণয় জুতি সামান্য পদার্থ, তুর্মি যেরূপ টুলসুকু, দেৰূপ ৰপাৰী মহাপ্ৰক্ষ, ভুমি ক

ব্রাহ্মণের চূড়া। যথন ব্রাহ্মণমাত্রেই ভোমার মন্ত্র পাঠ করিবে, অপ করিবে, নিরম করা গেল, তথন ভোমার ব্রাহ্মণড়ের বাকী কি রহিল। ব্রাহ্মণড়ে অনেক কপ্ত; অনেক ব্রুচ, নিরম করিতে হয়। তুমি রাল্লা ভোমার ভাষা কষ্টকর হইবে।

বি। মহাশয় আনি যথন এত কঠোর ভপ করিয়াছি, তখন কি তোমার আহ্ম-ণের ত্রত পালন করিতে পারিব না ?

"তুমি পারিবে নাভাকি বলিতেছি, এত কষ্টে তোমার কাজ কি ? তুসি ইক্সত্ব लहेवात खना (ठडी कतना (कन ? टाराहे ভোমার যোগাগদ। আর আমরা ভো মার তথে সম্ভষ্ট ২ইয়া, আজি তেঃমায় রাভর্ষি উপাধি দিলাম। তুমি জান একষি দেবর্ষির নীচেই রাজর্ষি, ভোমার ভূতীয়-শ্রেণীর ঋষি করিয়া দিলাম। তোসার ব্ৰাহ্মণতে কাজ কি ? এই লহ রাজর্ধি-সম্ভ্রমস্চক পদকগ্রহণ কর।" বিশ্বানিত এই সমস্ত কথার চাতৃরী বেশ বুঝিতে পারিলেন। ত্রন্ধর্যিণ যে ঠাইর তথে ভীত হইয়াছেন, তাহা বুঝিতে তাঁহার ৰাফী রহিল না। তিনি পদক সুরে निक्ति कवित्रा किलान। विलालन, 'त-ক্ষরিগণ, তোমাদের চাহুরী বুঝিয়াছি। ভোমরা আমায় স্তোকবাকো প্রবোধ দিয়া আমায় ত্রাকাণতে ব্ঞিত করিলে। কিন্তু আমি আরে এক্ষেণ্যপ্রভাশী নহি। আমি ব্রশ্বত চাহি, তোমাদের খোদামেণ ্ ,ও তপ্রাতার করিব না। আমি নূত্ন

পৃথিবী নির্দ্ধাণ করিব, তাহার জ্রন্ধা হইব। আমার পৃথিরী হইতে ছঃখ দূর করিয়া দিব। গ্রাহ্মণ দূর করিয়া দিব। রাথ দেখি ভোমরা পার 🕍 বশিষ্ঠ ব্রহ্মাকে ইঞ্চিত করিয়া বলিলেন, ১ চম্ন বলিয়াছিলাম তু বান্ধবত্ত থায় পাই, ভাহাতেই এই। ঋষিরা আবার নানা উপায়ে নিখা নিজকে বুঝাইতে চেটা করিতে লা গিলেন। ''তুমি মনে করিলে ব্রহ্মাণ্ড সৃষ্টি कतित आंभारता कि, याशत उपावल বন্ধাও বিধাণভিত ইইয়াছে, সে ব্ৰন্ধাও शृष्टि कदिर बान्ध्या कि ? कि इ बागदा তে:মার বন্ধু, তোমায় এক উপদেশ দিই, क्ति पठ कहे शहित। यह बंकाए তুমি ত অদিতীয়। তুমি ব্রাহ্মণের উপর ব্দারও উপর; তবে কেন ভূমি স্টিশ্রম স্বীকার করিতে চাও।"

বিশ্বামিত্র। রাহ্মণকুল নির্দ্ধুল কর, আনি তোমার স্ষ্টীতে থাকিতে পুরি। বাহ্মণ আমার চকুঃশূল হইরাছে।

ব্রহ্মানি সকলে কোণে কম্পান্থিত কলেবর হইয়া উচৈচ: ম্বরে কহিলেন, 'ভোর যভ শক্তি আছে কর। আমাদের সঙ্গে ভোর কোন সম্পর্ক আর কোন সম্পন্ন নাই।" বলিয়া ক্রোধভরে বেগে প্রান করিলেন। বিশ্বামিত্রও নৃতন পৃথবী স্থি করিবার জনা ব্রহ্মাণ্ড প্রাবেক্ষণার্থ ধ্বশাগিরির সর্কোলত শিধরদেশে আরোহণ করিশেন।

বাঙ্গালির উৎপত্তি।

দ্বিতীয় অধ্যায়। অনুষ্ঠা

আর্গোরা উত্তর-পশ্চিম হইতে ভারত
বর্ষে সাসিয়াতেন। তাহা হইলে, তাহা
দিগকে প্রথমে সপ্তসিক্ষুশোভিত পঞ্জাব
প্রদেশে প্রবেশ করিতে হইয়াছিল।
বস্তবং গাঁহাদিগের প্রথম বাস যে সেই
সপ্তসিক্ষুবিদৌত পুণাভূমি তাহার প্রমাণ
আর্যাদিগের বেদাদি প্রাচীন গ্রন্থাদিতে
আছে। আচার্যা রপ বলেন ঋর্মেদসংহিতায় সিন্ধুনদের ভূরি ভূরি উল্লেপ
আচে—কিন্ত গঙ্গার নাম একবার মাত্র
গৃহীত হইয়াতে। পঞ্জাবের নদী সকল
ও পঞ্জাবেব নিকটন্ত গান্ধারাদি দেশই
বেদপ্রণেত্গণের নিকট স্থপরিচিত।
ইত্যাদি বহতর প্রমাণ আছে।

चानिया ध्रथरम शक्षारव वाम कतिया थारकन, जरव हेश अवभा निश्व. रव তাঁহারা পঞ্জাবে আসিবার পরে বাঙ্গালায় আসিয়াছিলেন। প্রথমে ত্রন্ধাবর্ত্ত, তার পর ত্রন্ধবিদেশ, তার পর মধ্যদেশ, সর্ব্ব-শেবে তাঁহারা সমগ্র ভার্যাবর্ত্তবাপী हरेग्राहित्वत । चात्रांना बन्नावर्छ, वा ব্রহ্মবিদেশ, বা মধাদেশের মধাগত नट्ट, वाञ्चाला आर्यावर्खित (भवकात। প্রথম কোন্ সমরে, আর্হোরা বাঙ্গালার আগিয়াছিলেন, তাহা নিরূপণ করিবার **८** हो स्थाउट कतिन, अथना ८ होत्र নিক্ষলতা প্রতিপন্ন করিব-এক্ষণে আমা-দিগের আলোচা এই যে যখন অর্য্যেরা বাঙ্গালায় আসেন নাই তথন বাঙ্গালায় কে বাস করিত ?

যদি তাঁহারা উত্তর পশ্চিম হইতে

এ প্রাশ্নের সচরাচর উত্তর এই যে অর্য্যের

† সবস্থ নী দ্যদ্বতো দেবনদোর্যদন্তরং
তং দেবনির্দ্মিতং দেশং এন্ধাবর্ত্তং প্রচক্ষতে।
তিমিন্ দেশে য আচারঃ পারস্পর্যক্রমাগতঃ
বর্ণানাং সান্তরালানাং স সদাচার উচ্যতে।
কুরুক্ষেত্রশ্চ মৎসাশ্চ পঞ্চালাঃ শূরসেনকাঃ
এয় এন্দ্রমির দেশো বৈ এন্ধাবর্তাদনন্তরং।
এতদেশপ্রস্কুল্চ সকাশাদ্ অপ্রক্রমানঃ
স্বং স্থং চরিত্রং শিক্ষেরন্ পৃথিবাং সর্ব্র্যানবাঃ।
হিমবদ্বিদ্ধারের মধ্যং যংপ্রাগ্ বিনশনাদ্পি
প্রত্যোগের প্রাগাচ্চ মধ্যদেশঃ প্রকীর্তিতঃ।
আ সমুদ্রান্ত বৈ প্র্যানার্যাবর্ত্তং বিত্র বৃধাঃ

मङ २ । ३१--- २२

^{*} Vide Muir's Sanskrit texts Part II. Chapter 1I, Sect. XI. & Chapter III, Sect. III.

পূৰ্বে অনাৰ্য্যেরা বাঙ্গালার বাস করিত। এ উত্তর সভ্য কি না ভাহার কিছু বিচার আবশ্যক। একৰে বালাবায় আৰ্য্য ও व्यनार्श फेडरब बान कतिएडरड। यनि व्यार्था এशानकात व्यानिमवानी ना इहेन. यि हेरारे अञिभन्न रहेन य छाहाता কোন ঐতিহাসিককালে বান্ধালার আসি-ग्रांट्स, তবে অবশ্য অনার্যোরা তৎপুর্বে এখানে বাস করিত--কেবল এইরূপ বি চার অনেকে করিয়া থাকেন। কিন্ত এ বিচার অসম্পূর্ণ। এমন কি ছইতে পারে मा (ग, यथन चार्गाता अंश्रम वाजावात আদেন তখন অনাৰ্যোৱা বা কোন জাতীয় মতুবা বাঙ্গালার বাস করিত না 🕈 এমন কি হইতে পারে না যে, আর্য্যেরা বাঙ্গালাকে শুনা ভূমি প।ইয়া ভাষাতে বাদ করিতে লাগিলেন, তাহার পর অনার্যোরা আ সিয়া বনা ও পার্কত্য প্রভৃতি প্রদেশ-থালি পাইরা ডাহাতে বাস করিতে লা-গিল ? আর্যোরা ঐতিহাসিক কালে বাঙ্গালায় আসিয়াছিল বলিয়া অনার্যোরা যে তাহার পরে আদে নাই, এমত দিদ্ধ इरेल ना। एम शाकिताई (य लाक थाकित्व अमञ कथा नरह। मञा वर्षे এখনকার দিনে, বাঙ্গালার ন্যায়, বিস্তৃত, छेर्सत अवः शीवननिर्माट्य नानाविध ञ्भकत উপाদानिविभिष्ठे (मन 'कृतण्ना शास्त्र ना। किंद्ध ंचिं छा छी नकारल, यथन शृथिवीत (लाकमःथा। এত বাড়ে ্নাই, যধন ফাভিতে জাভিতে বড়ুঠেগা-্ঠিলি হয় নাই, তখন ৰাঙ্গালাও বসতি

হীন থাকা বিচিত্র নহে। অভএব এ প্রান্ন মীমাংসার আর কি প্রমাণ আছে, দেখা যাউক।

যদি ভারতীর অনার্যদিগের এপনকার বাসভান, ভারতবর্ষের উত্তরপশ্চিম বা উত্তৰপূৰ্ব প্ৰদেশ হইত, ভাহা হইলে অবশা বলিভাম যে ভাহারা বাহির হইতে আসিয়া ঐসকল স্থান থালি পাইয়া বাস বরিয়াছে। বস্তুতঃ ভারতবর্ষের প্রান্ত ভাগে বিশেষ উত্তরপুর্বভাগে কতক-গুলি অনার্যাঞ্চাতির বাদ আছে এবং ভাগারাও যে আর্যাদিগের আসার পরে আসিয়াছিল, তাহাও ঐতিহাসিক কথা। त्म मकल कथा शाद विभाव। अधिकाः भ অনার্যাজাতি এরপ সংস্থানবিশিষ্ট নহে। তাহারা কোণাও মধাভারতে, কোণাও যেখানে मिक्टिन. সেখানে করিতেছে। তাহাদের চারিপাশে আর্য্যঃ নিবাদ। ভারতে প্রবেশের পথ, আর তাহা-দিগের বর্ত্তমান বস্তিস্থলের মধ্যে আর্য্য-এ অবস্থা দেশিয়া যিনি বলিবেন যে আর্যোর পরে এই অনা র্যোরা আদিয়াছিল, তাঁহাকে বলিভে हरेटन रव अनार्याता आर्यामिशटक अप क्तिया, व्यार्थानियांग (छम क्तिया, छाइ। (मत এशबकांत नारम व्यानियां एक। यमि তাহা হইত, ভাষা হইলে, যে সকল ञ्चान উত্তম, মহুষাবাদের যোগা সেই সকল ভাবে, ভাহারা বাস করিত[া] কণ্যাস্থান সকলে প্রাক্তিরা যাইত। কিন্তু প্রকৃত অবস্থা সেরূপ নহে।

গাল প্রভৃতি উৎকৃষ্ট বাসভূমিতেই আর্যানি-वान कमर्याष्ट्रारमहे क्रमार्यामवान । विद्यान ত্তর ভারতে যে সকল স্থাপর স্থান, সেখানে **डाहारमंत्र वाम नाहै। हेट्हा कतिया स्थ** ্সকল স্থানে বাস করিতে হয়, লে সকল श्रांत जाशामित्र वाग नाहै। (यथात्न ভূমি উর্বা, পৃথী সমতলা, নদী নৌবা-हिनी, এবং धनधाना आहुत, সেখানে তাহারা নাই। যেখানে ভূমি অমুর্বরা, भर्का अथ वसूत, शृथिकी अत्रवामश्री, মহুষ্যভাগুরি ধনশূন্য, সেই সকল স্থানে তাহাদের বাস। যাহার। বিজয়ী তাহারা कन्याञ्चान मकन वाष्ट्रिया नहेरव, यादात्रा বিজিত, তাহাদিগকে ভাল স্থান ছাড়িয়া मिर्द हे**डा अप**हेनीय। अङ्य आर्गात পর অনার্য্য অসিয়াছে, এপক সমর্থন করা যায় না। কাছেই স্বীকার করিতে হ্ইবে যে আগে অনার্যা ছিল তার পর আর্যা আসিয়াছে।

तिशा यां छ क, এই পূর্ববর্তী অনার্য্য काशता। तिमी वित्तमी मकत्वार श्रीकांत करतन, तिम व्याहीन। तिमीरात्रा वरनन, तिम অপोकंटम । अर्थोक्य व्याहीन हा हिंद्रा निया, वित्तमीय वित्र न्यांत्र वना यां छ क, य वित्र न्यांत्र वना यां छ क, य वित्र न्यांत्र विद्र हों

नारे। (तरमंत्र गर्धा आरथमगःहिकारे প্রাচীন। সেই ঝংখদসংহিতায় ''বিজা-नीहि आधान (य ह नमावः" " अप्र-মেতি বিচাকশল্ বিচিত্বন দাস আর্থায় "* ইত্যাদি বাক্যে আগা ছইতে একটি পৃথক্ জাতি পাওয়া যায়। তাহার माम वा मच्छा नारम त्वल वर्निछ। দম্যশদের এখন প্রচলিত অর্থ—ডাকাত, मारमत शाठनिक वर्ष हाकत्र। किस ध অর্থেদস্য বা দাসশব্দ ঋথেদে ব্যবস্ত নহে। দাদ্দিপের স্বতন্ত্র নগর, স্বতরাং স্বতন্ত্র রাজ্য ছিল।† তাহারা আর্যাদিগের সহিত যুদ্ধ করিত—তাহাদিগের হস্ত হইতে রক্ষা পাইবার জন্য আর্য্যেরাও ইন্ত্রাদির পূজা করিতেন। দাস বা দস্যুরা ক্লফবর্ণ— আর্যোর। গৌর। তা-হারা "বর্হিখান্"—যজ্ঞ করে না-আর্য্যেরা ধলমান—যজ্ঞ করে—তাহারা ''অবত ''— সাধ্যেরা সব্রত—স্তরাং (इ हेस, (इ अधि—जाहाएन मात्र, আর্ঘাদের বশীভূত কর ! আর্ঘাদের এই কথা। আহারা অদেব—স্তরাং "বয়ং তান্ বহুয়াম সহমে"—তাহাদিগকে মারিয়া ফেলিতে চাই। ভাহারা "অন্য-ব্ৰত ''--''অমাত্ৰ ''--'' অযজান "--" অদেব।" তাহারা " মুধবাচ "—

^{*} আচ ১। ১১। ৮-- ৯। মুরধৃত। মরাম্পরগৃত। Sanskrit texts Part II. Chap. III. sect 1.

[†] अह्। ১०। ৮७। ১৯। मृत्रश्रु Ib.

কথা কৃষিতেও জানেনা। ইত্যাদি।* ইত্যাদি।

এইরপ বর্ণায়, নিশ্চত বুঝা যার
যে যাহাদিগের কথা হইতেছে, ভাহার।
আর্ঘ্য হইতে ভিন্নভাতীর, ভিন্নধর্মী,
ভিন্নদেশী এবং ভিন্নভাবী—এবং
আর্ঘ্যদিগের পরমশক্ত। আর্ঘ্যেরা,
ভারতবর্ষে প্রথম আদিয়া, ইহাদিগের
সম্মুণীন হইয়াছিলেন। ইহার। অবশ্য
অনার্ঘা।

বেদের অনেক পরে ময়াদি স্বৃতি।
মন্তে প্রানাণ পাওয়া যায় যে মন্ত্রণ:
হিতা সঙ্কলনকালে আর্যাদিগের চারিপার্শ্বে আনর্গোরা ছিল। মন্ত্রত তাহারা
ছাইক্রির বলিয়া বর্ণিত আছে। আচারহুংশ হেতু বৃদ্লব্ব প্রাপ্ত বলিয়া কথিত
আছে। যথা—

भनदेकञ्च कियाताशार हेमाः कविष-

ক্ষাভয়:
ব্যবহং গতা গোকে ব্ৰাহ্মণাদৰ্শনেন চ।
পৌপ্ত কাম্চৌড জাবিড়া: কাম্বোকা যবনা:

•শকা:—

পারদা ণ হলবা শিচনাঃ কিরাভা দরদাঃ

· থস

ইহাদিগের মধ্যে যবন পঞ্লব আর্যা

অৰণিষ্ট কনাৰ্যা। ইহা ভাষাতত্ত্ব প্ৰদন্ত প্ৰামাণ্যায়া স্থাপিত হইয়াছে।

মফু ও মহাভারত হইতে এইরপ অনেক অনার্যালাতির তালিকা বাছির করা নাইতে পারে। তাহাতে অনু প্লিন্দ সবর মৃতিব ইত্যাদি অনার্যালা-তির নাম পাওরা যায়। এবং মহা-ভারতের সভাপর্বে উহারাই দম্যানারে বিভি হইয়াছে। যথা—

मरानाः निवद्यादेगः निद्यां जिन्न-

मूर्कटेजः

मीर्थ क्टेक मंशे कीर्ग विदेवह तथ

टेजविव

ইহারা যে পরিশেষে আর্য্যের নিকট
পরাজিত হইয়াছিল, তাছাও নিশ্চিত।
পরাজিত হইয়াছিল, তাছাও নিশ্চিত।
পরাজিত হইয়াই, উহায়া, যে যেখানে
বন্য ও পার্ব্যতাপ্রদেশ পাইয়াছিল সে
সেইথানেই আশ্রম গ্রহণ করিয়া আত্মরকা
করিয়াছিল। সেই সকল প্রদেশ অধিকারে
তাদৃশ ইচ্ছুক হওয়ার সন্তাবনা ছিল না;
স্বতরাং সেখানে আত্মরকা সাধ্য হইল।
কোন কোন স্থান—যথা জাবিড় আর্য্যের
অধিকৃত হইলেও জনার্য্যেরা তথায়
বাস করিতে লাগিল, আর্থায়া কেবল

^{*} সজাত ধর্মা প্রদাধান ওজা বিজিয় বিদ্বি দাসী:। বিদ্নি ব জান্দণাবে হেতিমস্য আহিং সহোবর্ষা ছ্রমিল। ঋচ্। ১,১০৩,৩। ম্রধৃত। St. ইত্যাদি বছতর মন্ত্য

প্রভু হইরা রহিলেন। পার্থাবর্তের
সাধারণ লোক আর্যা—দাক্ষিণাতো সাধারণ লোক অনার্যা। আর্যাবর্ত্ত ও দাক্ষিপাতা তুলারূপে আর্যাধিকত দেশ, তবে
আর্যাবর্তের ও দাক্ষিণাতোর ভির
অবস্থা কেন ঘটল, এ প্রস্তাবে সে
কথার আলোচনা নিপ্রব্রোজনীয়।
ভীরতবর্ষে আর্যাও অনার্যার সামঞ্জ্যা
এক রক্ম ঘটে না। আমরা তিন প্রকার
অবস্থা দেখিতে পাই।

প্রথম। ভারতবর্ষে কোন কোন অংশ আর্থানিত নহে—অনার্যোরা সেথা-নে প্রধান—কতকগুলি আর্থাও সেথানে বাস করে, কিন্তু তাহাবা অপ্রধান। ইহার উদাহরণ সিংহভূস।

বিতীয়। অবশিষ্ট আর্য্যঞ্জিত প্রদে-শের মধ্যে কোন কোন প্রদেশ এরূপ আধাঁ ভূভ, যে সে দেশে কেবল আব্যিবংশ প্রাধান্যবিশিষ্ট এমত নহে—লো-কের মাতৃভাষাও আর্যাভাষা। উত্তর পশ্চিম, মধাদেশ ইহার উদাহরণ।

তৃতীয়। কোন কোন আর্যাঞ্চিত দেশ এরপ অর পরিমাণে আর্যাভিত, যে সে সকল ছানে লোকের মাতৃভাষা আঞ্জিও অনার্যা। জাবিড় কর্ণাট প্রভৃতিভে আর্যাধর্মের বিশেষ গৌরব, ও সংস্কৃতের বিশেষ চর্চা থাকিলেও, সে সকল দেশ এই শ্রেণীর অন্তর্গত।

বাঙ্গালা বিভীয়শ্রেণীর **অন্তর্গত।**কিন্ত তাহা হইলেও, বাঙ্গালারমধ্যে
বিশুর অনার্যা। অনা কোন আর্যাদেশে
অনার্যাণোণিতের এত প্রবলস্রোতঃ
বহে না। সেই কথা এক্সণে আমরা
স্পৃষ্টীকৃত করিব।

"Though by this superior civilization and energy they placed themselves at the head of the Dravidian communities, they must have been so inferior in numbers to the Dravidian inhabitants as to render it impracticable to dislodge the primitive speech of the country, and to replace it by their own language. They would therefore be compelled to acquire the Dravidian dialects. Muir's Sanskrit Texts, Part II.

† ম্রের বিতীরধতে ভৃতীয়পরিছেলে ধৃত মল্ল সকল দেধ— ইহার ভূরি ভ্রি প্রমাণ পাইবে। এখানে সে সকল উদ্ধৃত করা নিচ্ছায়ায়ন মনে করি।



जल।

(य (य डिनामान मञ्चारमह निर्मित, তাহার মধ্যে জলের ভাগই অধিক; ১৫৪ ভাগের মধ্যে প্রায় ১১৬ ভাগ জল ; অর্থাৎ চারিভাগের তিনভাগ জল। অন্থি, याःम, त्रक, (मन, आयु, दक् देगानि मक्मश्रमिए इस्म आहि। পাশ্চাত্য পণ্ডিত পরীক্ষা করিয়া দেখি-शांद्रिन, त्य त्य मञ्जूद्यात त्मर अज्ञान ११ সের, ভাহার শরীরে জল ৫৮ সেব শরীরে জলের ভাগ সকা-পেকা অধিক, স্তরাং , অন্যান্য পাদ্য অপেকা জলের অধিক প্রয়োজন। কিন্তু ভাহা বলিয়া শেঘটি ঘটি জলপান ক-तिरल (मर निलक्षण कहेश्रेष्ट स्टेश डे-ঠিবে, তাহা নহে। শরীর এমনি চমং-কার কৌশলে নির্শ্বিত, যে ইহাতে কোন छें शांनात्वत व्यक्षिका वा बह्न डा इहेत हिनाद ना, मव छिक छिक हाई; दाभी क्य इहेटनहें कल विशिष्ट्रा यहित।

ভূষণ পাইলেই আমরা জলপান করিয়া থাকি এবং জলপান করিলেই পিপাসা নিবৃত্তি হয়। কিন্তু কেন ভূষণ পায় এবং কি কারণেই বা জলপানে ভরি-বৃত্তি হয় তাহা কয় জন জানে বা জা-নিতে ইচ্ছা করে ? ভূষণ পাইলেই জল খাইতে ইচ্ছা করে, এবং জল খাইলেই পিপাসার শাস্তি হয় এই মাজ জানি, ভাহার জাবার কারণ কি ?

गञ्यारमञ् व्यव्त्रं: क्षत्रथाश्च हरे-ভেছে। আমরাচলি, নড়ি, চিস্তাকরি, বা চুপ্ করিয়া বসিয়া থাকি, অথবা নিদ্র। বাই, কিছুতেই নিস্তার নাই; শরী-রের কিছু না কিছু বান্তি হইবেই इरेटि । यथन भन्न এত अधिक, उथन রোজগারও ভেমনি চাই, নচেৎ দেনায় गमछ निवास इहेशा याहित, महाजनतक चित्रार (मर्डेलिया इहेटक हहेटव । भारी-রের এই থরচ বক্তের হ্রাস, এবং ইছার রোজগার খাদা ও পানীয়। অন্যান্য वावभाष (यमन (ताकफ मुट्डे भत्र जाना যায়, শরীরের পক্ষে সেইকপ ক্ষুণা ভৃষ্ণা দারা শোণিভত্রাস অসুমিত হইয়া থাকে; ञ्चताः क्रमा ज्ञाहे हेहात ताकफ वहि । गथनहे तरक करणत छाश कम शरफ, ख्यन्त्रे व्यामारमञ्ज्या (वाध क्या। যদিও আপাততঃ এরপ বোধ হয় যে টাক্রা শুকাইয়া যাওয়াতে পায়, ত্থাপি প্রক্তপকে শেণণিতে জলের অংশ হ্রাস হওয়াই ইহার মূল কারণ। যেমন শরীরাভাস্তরে থাদোর ভাভাব কুধার প্রাকৃত কারণ হইলেও व्यामता शांकक्लीटङ क्रूधात करूड्य कति, ज्यात भरका (महेक्स अधारी कांब्रग्रक ध्रांभान कांब्रग विनेषा निर्फ्रम করিয়া থাকি। কারণ, তৃষ্ণাতুর ব্যক্তি^র টাক্রা ভিদাইরা রাখিলে বে তৃ^{ফা}

নিবৃত্ত হয় ভাহা অলকণমাত্র স্থায়ী, किस्थिर পরে আবার যে ভৃষ্ণা সেই ভৃষ্ণা; গাকস্থলীর পরিপাক্তিয়াবারাই হউক, দেহে কত করিয়া শিবাসধ্যে প্রবেশিত ১করিয়াই হউক, অথবা ডকের শোষণী-শক্তিবারাই হউক, যতক্ষণ পর্যান্ত জল ^{*}রজের সহিত মিশ্রিত নাহইতেছে, ভত-ক্ষ্মীণ একবারে তৃষ্ণা নিবৃত্তি চইতেছে ীনা। একংণে ভিজ্ঞাসা হইতে পাবে যে যদিবকে জলেব ভাগকন পড়াই ত मध्य कावन इडेल, इत्य अक्ष है किया अकार्डे. লেট কেন ভুকা অভুতৰ হয় গুটহাৰ কারণ বোধ হয়, যে জনানি স্বায় অপেকা মুখের ও টকেবাৰ সংঘু জলেৰ অভাৰ অধিক অফুভৰ করে। যে সমস্ত জঃন বাস্তবিক সমস্ত শবীরের অবস্থাব উপর নির্ভর করে, তংসমুদায়ও কোন একটি থিশেষ ইঞ্ৰি হইতে যে অনুভূত হইতে পারে, তাহা ডাৎ ভক্মানের (Volk mann) গরীকাদ্বরা একরূপ সিদ্ধান্ত क्ट्रेशाट्ड ।

রক্তে ভূলেব ভাগ কম হওয়া যে
পিপাদার কারণ তাহার একটি চমংকার প্রমাণ আছে। ক্রড বারনার্ড
দেখিয়াতেন, কোন কুকুবের পাকতলীতে একটি ভিড্র ভিল, কুকুব জলপান
করিবামাত্র সেই ভিড্র দিয়া সমুদায়
এল বাতির হইয়া পড়িত। স্কুতরাং
মণ রক্তের সহিত মিশ্রিত হইতে
না পারায় ভাহার পিপাদা নির্ভ
হইত, না, আবার সে জলপানে প্রত

হইত, ঘণও আবার নির্গত হইয়া যাইত।
কুকুর এইরপে পুন: পুন: জলপানে
কাম হটরা কিরংকাণ বিশ্রাম করিয়া
পানবার জলপান কবিতে আরম্ভ করিত।
কিন্ত পুর্বেকি জি জিটি বন্ধ করিবামাত্র
পীত জল পাকস্থলীতে শোষিত হইয়া
রক্তের সহিত মিশ্রিত হটত, এবং তজ্জনা
তুক্ষা এককালে নিবুত হটত।

মকেব শোষণী শক্তিদাবা জল দেহসুধ্য নীত হয়। এই বিষয় লইয়া পঞ্জিরগুরের মধ্যে কিছুকাল অনেক বাদানুবাদ চলে, অবশেষ ইছা সভা বলিয়া প্রতিপল হইয়া থিয়াছে: ডাকাৰ এডওয়ার্ডদ প্রী**কা** কবিয়া দেপিয়াছেন, যে টিক্টিকীর লা**সূল** জলে দুবাইয়া রাখিলে জল শোষিত হুট্যা ভাষার স্প্রন্থারীবে স্থারিত হয়। ডাকার মাডেন আধ ঘণ্টাকাল জলে সমত শ্বীৰ মগ্ন রাখিয়া দেখিয়াছেন তাঁহার দেহের ভার প্রায় ৪ ড়াম ১ ইস-কুপল ০ গেণ পৰিমাণ দক্ষিত হঠয়াছে। জনেৰ অ-শ দেহমধো শোষিত না হইলে দেহভাব • কিলপে বিদ্ধান হটল গ ডাং বাৰণণ্ড প্রীক্ষা করিয়া দেখিয়াছেন, আেণ ঘণ্টার মধ্যে তাঁহার আবিত কিৰিং বৰ্দ্ধিত হটগাছিল।

যতটুকু জলপান করা উচিত,তদপেক্ষা অৱ ফুলপান করিলে কি কি অনিষ্ট ঘটতে পাকে, তাহা অ্দ্যাপি সমাক্ নির্ণিত্থ নাই। বোধ হয় ইহার প্র-ধান কৃষ্ণে এই, যে যে হৃষ্ণাশাস্তির ইচ্ছা এত প্রল পোকে সেই ইচ্ছাকে কোন

মতে নিবৃত্ত ও অর্কুপূর্ণ করিয়া রাখিতে পারে না। ক্ষেক্টীমাত্র পরীক্ষাদারা এতৎসম্বন্ধে যাহা কিছু জানা গিয়াছে, ভাহাতে বোধ হয় যে, প্রয়োজন অপেকা खन्न अहित Pulmonary Carbonic Acid অলমাত্রায় নি:স্ত হয়, মল ও মৃত্রভাগে কমিয়া আদে, এবং বছদিন এই ভাবে থাকিলে শারীরিক ও মান-সিকশক্তি কমিয়া যাইতে পারে। স্থামা-रमत रमनीय वाशांशकीवि रमाकमिरात्र मर्था এই একটি कूमः द्वाव जाए ए। ব্যায়ামকারী যত অল জল খাটবে ভতই ভাল। কিন্তু এটি বিষম ভূল। সাধারণতঃ শরীর হউতে যে জলীয় অংশ নিঃস্ত হর, বাারামকালে তদপেকা প্রায় ১২১০৪১ ভাগ অধিক জল নির্গত সেই অংশ পূর্ণ করিয়া লইবার জন্য বরং অধিক প্রিমাণে জল পাওয়া কর্ত্তবা। তবে একবাবে অধিক পরি মাণে জল না থাইয়া সল্ল অল করিয়া বছবার জলপান করা মদদ নতে। শীত-श्रीमामाम श्राहाक (लारहत প্রতিদিন ২০ গালেন জলের প্রয়োজন হয়; তন্মধো শুদ্ধ পানার্থ যুবকের পক্ষে ৭০ হইতে ১০০ ঔষ্পথ্যাস্থ এবং বাল কের পকে ২০ হইতে ১০ ঐকা পর্যান্ত छन पदकात इस। स्टाउक्ते कि कान देहें ১৮৬৮ সালে এই আদেশ করিয়াছেন, গে প্রত্যেক দৈনা প্রতিদিন ১৫ গালনের অতিরিক্ত কল পাইবে না। শীতৃপ্রধান (मम कारशका श्रीत्र श्रांग (मरम करनत

কিছু অধিক আবশ্যক, এবং আমরা
বভাবত: অন্যানা জাতি অপেক্ষা অধিক
পরিমাণে অল বাবহার করিয়া পাকি।
কিন্তু কলিকাভায় এখন কলের জল বাবহার হইতেছে, যত ইচ্ছা এখন ডত জন,
পাওয়া যায় না, প্রভ্যেক অধিনাসী গড়ে
যে পরিমাণ জল পাইয়া পাকেন, তাহাতে
কলিকাভায় জলকন্ত হইয়াছে অনেক্টে
বলিয়া পাকেন। এই কারণেই আজ
কাল জলের পরিমান বাড়াইবার জন্য
আন্দোলন হইতেছে।

প্রিশ্রমের ভারতমা অমুসাবে আবার ভলের আবশাকতাও কমবেশী ত্তরা পা-কে। যে ঘোড়া প্রতিদিন ৪ ক্রোশ গাড়ি টানে,তাহার৮ গালেন অলের দরকার হয়; কিন্তু সেই ঘোড়াই যথন আড়গড়ায় বাধা থাকে কোন কর্ম না কবে, তখন ৭ গাা-লন জলেই ভাহার পর্যাপ্ত হয়। আবি-দিনিয়ায় যুদ্ধগাত্রাকালে জাহাজে যে যে পশুর প্রাভাতিক পানার্থ যে যে পরি-মাণ জল লগুয়া ত্তরাছিল, নিয়ে ভাহার হালিকা প্রান্ত হ্টল।

অনেকে বলেন, "অবিশুদ্ধ জল পান করিলে কোন অপকার হয় না, কারণ এরূপ দেখা গিয়াছে, যেযে সকল,বাগ্দী

প্রভৃতি জাতি বাদায় বাস করে, ভাহায়া श्रावरे वामात चारभव अल भाग कतिवा থাকে, অথচ ভাহাদের স্বাস্থ্য কেমন ञ्चलत ! भंतीत (कगन विश्वं !" इंडेजे ্কারণে এ কণাটা আমাদের সম্পূর্ণ সভা बिनिया (नांध इय नां। श्राथम, नामात लाटक (य चारशंत्र वानांत जन निडा পান করে ভাহা নহে, ভাহারা যে দীপা-কার স্থানে বাস করে,তথাকার পুদ্ধবিণীর নিশ্মণ জলই প্রায় পান করে,তত্ত্ব কার্যা-গতিকে কদাচ কথন বাদার জলও যে না খায় তাহা নহে 'কিন্তু তজনা যে সামানা অপকাব জ্বে তাহা তাদৃশ विनिष्ठ (मरह रकान निरमय अनिष्ठ क-রিতে পাবে না। দিতীয়, সকল বাগ-দীই যে বলবান ও স্কুমনীর তাহার কোন প্রমাণ নাই; হইতে পাবে যে • যাহারা আনাদেব নজরে পড়ে তাহারাই (कवल ऋषकाय: वृक्तिण ও क्यारिक्ट লেঃকদিগের সহিত সাক্ষাৎ হইবাব चामारमञ्ज कांत्र घटि ना। चामारमञ এরপ বোধ করিবার অনাত্য কারণ **धरे (य, लाटक एय मिन अविश्वक जन** পান করে, সেই দিনেই কিছু পীড়িত, • হয় না, ইহার ফল অনেক পরে ফলে. কালেই আমরা পীড়ার সহিত সাকাৎ শহরে অপেয় জলুপানের কোন সম্পর্ক नारे (मिश्रा देशांत अना कात्र निर्फ्न कति। किन्न चान्नविक जलात माध्य অনেক পীড়া ক্ষরে, তন্মধা উদ্রাময়, उन्डिका । अ अत्र नर्वधान। क नि-

কাতা অপেক্ষা আজকাল পলীপ্রামে যে জর অধিক, তাহার প্রধান কারণ এই যে, কলিকাতার জল অতি পরিষ্কার, কিছু পলীপ্রামের জল আবার তেমনি অপরিভার। হিপোক্রেটিস বলিয়া গিয়াছেন, যে বাদার জলে প্লীহা বৃদ্ধি হয়।

জলের সহিত প্রধানত: এই সম্প্র পদার্থ মিশ্রিত পাকে, যথা—জাস্তব, উদ্ভিদ বা ধাত্তব পদার্থ, বান্নবীয় পদার্থ, नाहेर्টाङन, अक्रिस्नन, कांत्रविक আসিড, কঠিন পদার্থচয় (Solid matters) চুণ, মাাগনিসিয়া, সোডা প্রভৃতি। কখন কখন ধাতুও জলের সহিত মিশ্রিত शांदक, घंशा आंद्रामिक, मांशांनिम, সীমা, তাম্র, দন্তা ইত্যাদি। ইহার মধ্যে কোন কোন ধাতৰ ও জান্তব পদার্থ অতিশয় অপকারী; কিছু আর-**দেনিক প্রভৃতি ধাতু যে জলে মিশ্রিভ** আছে তাহা বিষত্ল্য। সাধারণত: গ্রানাইট, বালী ও খড়িমর স্থানের জল বিশুদ্ধ হইয়া থাকে। কৰ্দমময় স্থান ও ব'দার • জল প্রায়ই দ্বিত ও অপেয়। কীটাণুপূর্ব জল শরীরের পক্ষে অপকারী কি না'ত বিষয়ে মত ভেদ আছে। ইন-कि छेटमातिया नामक की छानुवाता टकान, অনিষ্ট হয় না, কিন্তু কতকগুলি কীটাণু দেহ্মধো নীত হইলে অপকারও করিতে পারে। দূষিত অংলপানে যে রক্তামাশয় রোগ জন্মে, তদিষয়ে একটি আশ্চর্যা গল West Indies নামক দেখের অন্তৰ্গত Tertola গ্ৰামে আগমনমাত্ৰ ভ

ত্ত্তা দৃষিত অলপানে নাবিকগণের উক্ত নিমন্ত্রণ করিলে, সে ব্যক্তি একখটা রোগ ছইত ; কিন্তু তথাকার অধিবাদিগণ থাবার জল সঙ্গে করিয়া আনিত, প্রাণা-বুটির জলপান করিরা দিবা হ'ছ থা- স্তেও জাহাজের ফল পান করিত না। কিত। নাবিকেরা কোন অধিবাসীকে

পঞ্জিমাঞ্চলের ফলে বে যে পদার্থ মিশ্রিক আচেছ তাহার তালিকা।

স্থানের নাম			প্রতি গ্যালনে কঠিন পদার্থের পরিমাণ		: প্রতি গালেনে সাধা- রণলবণের পরি- : মাণ	
আগরা নগরের কৃপ	•••	•••	24	গ্ৰেণ	૭૨.৪	গ্ৰেণ
গোয়ালিয়রের কৃপ	•••	***	>00.2	,,	88.3	"
গোয়ালিয়রের স্থাপতি	কাস্থ		1			•
কৃপ Happy valley	···	c.,	4.60	**	9.15 :	"
ঝানিত্ব কুপ 🔐	•••	· .···	\$8.8	• *,	۶.۹	19
क्षमावानक क्ष	•••	•••	52.	,,	۶.8	• ,,
ব্হরমপুরস্থ কৃপ	•••	•••	6.64	,,	৩২.৩	,,
অমালাম্ভ কৃপ		·•	99.0	,,	\$0.0	ij
রাউলপিণ্ডীয় কৃপ-	'	•••	३७.8	, ,,	.98	37
সাগরস্ক্থ	•••	•••	\$ \$49.5	,,	97.9 ·	.,
সীতাপুরত্ব কৃপ	• (•	•	36	,,	.৬	, , ,

ভাগলপুর জেলার অন্তর্গত ভিন্ন ভিন্ন স্থানে কলে কি পরিমাণে কি কি জবা মিশ্রিত আছে নিমে তাহার এক তালিকা

দেওয়া যাইতেছে।

· স্থানের দাম	প্রতি গ্যালনে গোডিয়মের পরিমাণ		প্রতি গাালনে সাধারণ লব- ণের পরিমাণ	
ভাগলপুরের নিকটবর্ত্তী		!		Speciments of a paper operation of the speciments of the speciment
গলার জল	. M	86.8		.৬৭২
বাজারস্কৃপ		· >>•.8		२ १.०२
কুন্দীপুর বাদ্ধারের কুপ টি, সান্ডিস্ সাহেবের		৬৯৩.	. 1	১৭৩.৮
বাটীস্থিত কুপ '		٥8. ٠ .		১. ৬৩৭
ক্লিডন্যাও মন্দির সন্নিহিত				
কুপ		₹৮.5€		5.59

কি কি বস্ত কলের সহিত মিঞিত 🗂 আছে, ভাহা নির্ণয় করা বড় কঠিন। माधात्रण इः (य (य नक्षण थाकित्न जन পানযোগা হইয়া থাকে,—তাহা এই পেয়জন प्रष्ट् ও निर्मान क्षेत्र, তাহাতে याम वा र्शक्ष किंद्वरे शाकित्व ना, त्कान প্রকার পদার্থ ইহার সহিত মিশ্রিত না থাকে, এবং ইহা বায়ুমিশ্রর, কঠিন 🤊 দারা শোধিত করিয়া। • পদার্থ প্রতি গালনে ৮ গ্রেণের অধিক ना थादक, नाहरिए वा वारमानिया चामि ना थाकिश्नरे छान इस, उत्त অতি শ্বর পরিমাণে থাকিলে হানি নাই। बालत त्य देय त्माय त्यत्रत्थ विनर्छ হইতে পারে, তাহা পশ্চাৎ প্রদর্শিত । बार्काइक

काञ्चत शनार्थ-कृष्ठीरेमा नखमा जन-বরত লাড়া, বায়ুসম্পর্ক এবং কয়লা ও ফটকিরি প্রভৃতি দারা বিদ্রিত হইতে भारत ।

Carbonate of Lime—ফুটাইয়া ও Caustic Lime মিশাইয়া।

Sodium Chloride-কর্লা ও বালি

লোহ-ফুটাইয়া এবং কিছুপরে চূলের জল মিশাইয়া এবং কিয়ংপরিমাণে ক-য়লা-দিয়া। লৌহ, তাম প্রভৃতির সংশ গুদ্ধ কয়লাবারা অনেক কম করা যাইতে भारत ।

Calcium, Magnisium, Sulphate এবং Chloride প্রভৃতি পদার্থ একবারে কথন দ্র করা যার না বটে, কিন্তু কর্মাঘারা শোধন করিয়া লইলে ইহা-দের পরিমাণ অনেক কম হইতে পারে।

আৰু কাল আমরা যে কলের জল খাইয়া থাকি ভাছা প্রায়ই সীসার নল-বারা আনীত হয়। কিন্তু এই অল অতিশন্ন অপকারী। বছদিন সীসাব নল দিয়াজল আসিলে সীসাক্রমশঃ কয়িত হইরা ললের সহিত মিশিরা যায়, এবং भीमांत्रिल बन्धान कतित्व श्रीप्रहे. পকাঘাতরোগ হইয়া থাকে। ১ গাালন জলে 🗦 . গ্রেনমাত্র সীসা মিশ্রিত থা কিলেই উক্ত পীড়া হইবার সম্ভাবনা। **७**हे त्रांष श्रीत्रशत्रमानत्म व्यानत्क অনেক প্রস্তাব করেন, তন্মধ্যে তার (Tar) निया वार्निम् कतिया न अयारे मर्का-(शंका महक, अलायामनांधा ও कार्या-কারক। সীসার নলের পরিবর্ত্তে পেটা cetel वा कलाहेकता **डिटन**त्र नल वाव-

হার করা ভাল। কেছ কেছ কুতিম প্রস্তর ব্যবহার করিবার উপদেশ দেন। আমরা এতৎসম্বন্ধে আর একটি কথা विद्या शिखांव भाष कत्रिय। व्यानात्कत्र বিশাস আছে, যে জলে মদ মিশাইরা थाहेटल ट्यांट कटलत मगछ द्यांच नहे হয়। ইহা সম্পূর্ণ ভ্রম। মাতালেরা নিজের দলপুষ্ট করিবার জনা এরূপ विनर्क शास्त्र, किंद्ध विकारणारक स्य কেন এমন কথা বলেন, তাহা আমরা বৃঝিতে পারি না। বোধ করি লোকের চকে धृलिमृष्टि निक्लि कतिया मन थाई-বার বাসনায় তাঁহার৷ এরপ বলিয়া থাকেন। মদ মিশাইয়া অবিশুদ্ধ জল थाहेत्न এहे लांख इग्न, य पृषिठ छत्नत्र অপকারের উপর মদের অপকারটুকুও আসিয়া জুটে। দান করিবার জন্য চুরি করায় যেরূপ পুণ্য, ইহাতেও -সেইরুপ লাভ।



৩ সংখ্যা।

বাঙ্গালির উৎপত্তি।

তৃতীয় পরিচ্ছেদ। ध्यनार्यात कृष्टे वश्म जाविष्ठी ও काल। - আমরা বুঝাইয়াছি বে, ভারতবর্ষে আগে অনাৰ্যোর বাস ছিল-তার পর আর্থেরা আসিরা তাহাদিগকে করিয়া তাড়াইরা দিয়াছে। অনার্যোরা বন্য ও পার্ব্বভাপ্রদেশে গিরা বাস করি-তেছে। ভারতবর্ষে অন্যত্র যাহা ঘটি-बाह्य-वानागाटिख छारे, रेश महत्व षश्रमय। किन्द्र वाजानात मान मधा-(म्मामित अक्टो शक्ड अटडन चाट्ड। मधारमणीतित्र नाात्र, वामानात अनार्याशन नकरणहे विकत्री कादानिरंशत छत्त शना-वस करत नाहे। देकह दकह नमाहेबारह —हक्द (कह बदबरे बादह।

অতি ভাতান্তরকে বিজিত করিয়া ভাহা-দিগের দেশ অধিকৃত করিয়া আদিমবাসী-দিগকে দেশ হইতে দুরীকুত করে। व्यामियवामीया जकरण इय टक्क्जरवद হত্তে প্রাণ হারার, নর দেশ ছাড়িয়া (मणाखदा भनाहेशा वाम करता हेनगंवकर्तुं,क विरहेन सरम्ब कन वहेन्नभ হইয়াছিল। সাক্সনেয়া ব্রিটন জন্ন ক-्बिया श्र्वाधिवांशीनिशक निः भाष श्वश्म कॅत्रिश्राहित्नन। ८करन याहात्रा अरम् नुन् कर्वत्राल् वा विधानीत्यामणा शिवा भना-देवा वान कविवा बहिन, डांशबारे बका পাইল। ইংলতে আর ত্রিটন্রহিল না। देश्मक दक्षा छिडेछेदनत दम्भ दहेन। विकीत थकारत रमम्बद्य श्र्कावियामीता स्व कि कि क्या क्या दिलाम व्यवन विमान वा छाड़िक रह ना । विस्की मिर्लाई

সজে মিশিয়া বার। নর্পাণ্যণকর্ত্ত ইংলগু-अस देशात समाहतन। आर्यात्रन वाकालाकत कतिशाहित्सन। छाहाता हि देवेन निरंगत मछ धानार्यामिशाक निःट्रणार ध्वः न ता বিদ্রিত ক্রিয়াছিলেন, বা নর্মাণ্বিজিত माखरनत मंड जनार्याता रक्तरकडा जाया-দিগের স্কিত মিলিয়া মিশিয়া গিয়াছিল छाहा आंगानिशतक (निशत्त इहेरव। यनि দেখি, বৈ বাঙ্গালার বর্ত্তমান অধিবাধী-मिर्गित मर्थः कार्गारानः म এगन क चार्छ, ভবে ব্ঝিছে হটবে, যে অনাগ্যে আর্য্যদিগের সঙ্গে মিশিয়া গিরাভিল।

872

क्षांचा (प्रथा गाउँक, नामालाव का-থায় কোন্ কোন্ অনার্গাভাতি আছে। সে গণনার পূর্বের প্রথমে ব্রিতে ইটবে বালালা কাহাকে বলিতেভি। কেন না বাঙ্গালা নাম অনেক অর্থে বাবহাত হটয়া থাকে। এক অর্থে,পেশোর পর্যাস্ত বালা-লার অন্তর্গত-ন্যথ। "বেঙ্গল প্রেসিডেন্সি" "বেঙ্গল আর্দ্মি।" আর এক অর্থে বাঙ্গালা ততদূর বিস্তৃত না হউক, মগধ, बिथिना, উড़िया, शानारमो डेंगात चन्छ-র্গত-এই সকল প্রদেশ বাঙ্গালার লেফ-टिटन छे गवर्गदात अधीन । धरे इंडे अर्थि कान अर्थ हे वाजागांग व कार कि वाव-হার করিতেছি না। যে দেশের লো-কের মাতৃভাষা বাঙ্গলা, সেই বাঙ্গালি; আমরা সেই, বাঙ্গালির উৎপত্তির বাহিরে অনুসন্ধানে পাবৃত। তাহার ট*ডি*ছাস যাহারা আহে **काशामिक** निचित्र ना-जीवज्ञान वा नांगा व

व्यवस्कृत * टक्ष्ट् भट्ट । ''छट्ट जनाहम वाकालावं वाहित्व मृष्टिभाञ ना कतिरल, আমর। কুভকার্যা হউতে পারিব না। যে সকল অনাৰ্যাজাতি বালালার আৰ্থা-দ্রীভূত হইয়াছে ভাহার। वाहरत चारह। বাঙ্গালার বান্ধালার ভিতরে ও বান্ধার পার্থে কোন্কোন্ অনাগ্জাতি বাস ক্রি-**८७८७—** वृहेहे स्मिश्ट इहेरव ।

উত্তরগীমার ব্রহ্মদেশের সমুখে দেখিতে পাই, গামটি, সিংকো, মিশ্মি, চুলকাটা মি-শ্মি। ভারপর জপরভাতি,ভাহাও অনেক-क्षकातः। यथा-भानम् मित्री मक्ना, हेजानि। जात्र भव चामामध्यान्यभव नागाः কুকি, মণিপুরী, কৌপন্নী, ভাছার বাহিত মিকির, জয়য়্ঠীয়া,, খানিয়াও গারো কাতি। আসুমের মধ্যে ত্রহাপুত্রতীরে দেখিতে পাই, কাছাড়ি বা বৈাড়ো, মেচ্ ও ধিমালভাতি এবং বাঙ্গালার মধ্যে ভাহাদিগের নিকটকুটুম্ব কোচলাভি। তৎপরে উত্তরে, হিমালরপর্কাচের ডি-তরে বাস করে, ভেটি, লেপ্ছা, লিছু, কিরাত্তী বা কিরাতী (প্রাচীন কিয়াত।) তার পর বাঙ্গালার পূর্বদক্ষিণ শীমার্থ মগ, লুদাই, কুকি, কারেণ, ভালাইন প্র ভৃতি জাতি। ত্রিপুরার ভিতরেই রাজ বংশী, নওয়াডিয়া, প্রভৃতি ভাতি ভাছে; वाजालाव পশ্চিমদিকে, কোল, সাঁওভাল, খাড়িরা, মুণ্ড, কোঁড়োরা ও রাও বা ধা-দড় প্রভৃতি অনার্যালাভি বাস করে। धरे (नरवाक कर्त्रकि बाल्त्र मद्दर्भरे

আমাদের অনেকঞ্জী কথা বলিতে

হইবে। উত্তর ও পুর্বের অনার্যাদিগের

সক্ষে আমাদিগের ওত্তী। সম্বন্ধ নাই,
ভাহারা অনেকেই হালের আমদানী।
আমরা কেবল করটি প্রধান জাতিব
নাম করিলাম—আতের ভিতর উপলাতি
আচে এবং অন্যান্য জাতি আতে।
গিলক্রমে ভাহাদের কথাও বলিতে

হইবে।

এখন প্রথম কিজাঁদা এই যে, ইহারা কলে কি একবংশম্ভূত্র 🖰 আর্যোর। नकटनहे এक व्॰मभङ्ग इ- आर्गः भव्यव अ র্থ ট্ডাই। কিন্তু "অনার্যা" বলিলে কবল ইহাই বৃঝায় যে, ইহার আর্থা াছে—য:হাবা আর্যা নহে, ভাহারা সক-লেই যে একজাতীয় এমত বুঝায়না। যদি এমত প্রমাণ থাকে যে, ইহারা একবংশোদ্ভত ভবে সহজে **ভা**কুমান कविट्ड भाग यात्र, त्य हेशाहा मकत्नहे বাঙ্গালার প্রথম অধিবাদী—আর্যাগ্ণ-কর্ণ তাড়িত হুইয়া নানাস্থানে ছড়াইয়া 'পড়িয়া নানাদেশে নানা নাম ধারণ করি-बाह्य ; किन्द्र यपि तम व्यमान ना शाहक--वतः छाँबक्टक ध्यमान शास्क, (य छाहाता ै নানাবংশীয় তবে আবার বিচার করিতে रहेद्र, धरे छिनत मस्या काहात। काहात। বাঙ্গালার প্রথম অধিবাসী।

প্রামাণা ইতিহাসের অভাবে ভাষাবিজানের আবিদ্ধিরা এসকল বিবরে গুরুতর
প্রামাণ। ক্সামরা প্রথম পরিচ্ছেদে যে
তিন্ত্রেলীতে ভাষার কথা বলিয়াছি,

তাহার মধ্যে তৃতীয়শ্রেণীর ভাষার অংক্ত-ৰ্গত আৰ্যাভাষা ও দেমীরভাষা (আরবী, হিক্র প্রভৃতি) প্রথমশ্রেণীর ভাষা গুলি— याहा সংযোগ निवति के व्यथवा विक्रिक विभिष्टे नहरू-(महे मकल छावारक हेक-রোপীয়েরা ভাবত-হৈনিক বলিয়া কেন। লামটি আমাদিগেব বাবহারের অযোগ্য-আমরা ঐ ভাষাগুলি চৈনি-কীয়ভাষা বলিব। দিভীয়শ্রেণীর ভাষার সাধারণ নাম ভুরাণী। বাঙ্গালার মধ্য বা প্রান্তব্যিত অনার্যালাতি সকলের ভাষা এই বিবিধ—কতকণ্ডলি ভাতির ভাষা रिव्यक्तिकीय----डेंडानिश्यंत्र वाम श्राप्त आर्-সামে—বা বাঙ্গালার পূর্বসীমার। তা-হারা অনেকেই আর্যাদিগের পরে আদি-য়াছে এমত ঐতিহাদিক প্রমাণ আছে। ভার পর অবশিষ্ট যে সকল অনার্যাক্তাভি — শহাদিগেব সকলেবই ভাষা তুরাণী-

কিন্তু সেই সকল অনাধান্তায়ার মধ্যেও আভিগত পার্থকা দেখা যার। পূর্বেই কপিত ইইয়:ছে, জাবিড্ভাষা ত্রাণী-শ্রেণীও। বাক্ষাগার অনাধাভাষার মধ্যে কতকগুল জাতির ভাষার শব্দ সমাস ও বাকিবল সমালোচন করিয়া পাওতেরা দেখিয়াছেন সে, ঐ সকল ভাষা জাবিড়ী ভাষার সঙ্গে সুস্কর্মবিশিষ্ট। আর কভকভাল অনাধ্যভাষাতে জাবিড়ীভাষার সঙ্গে কোন প্রকার সাদৃশ্য নাই। ইহাতে সিদ্ধ ইইয়াছে যে, বাক্ষালার কভকভালি অনাধ্যভাষাত প্রাবিড়ীদ্বিসের জ্ঞাতি—

কতকগুলি তাহাদিগের হইতে ভিন-ভাতি।

याबाता, काखाविकी, काशमिरगत मध्या ভাষাগত ঐক্য আহিছ। * কোল বা হো, সাঁওভাল, মুগু প্রভৃতি এখন ভিন্ন ভিন স্থানবাসী ভুির,ভির লাভি বটে, কিন্ত বেমন সকল আর্যাভাষাই পরস্পাবের সহিত সাদৃশা ও সম্মবিশিষ্ট কোল, মুগু, সাঁওতাল প্রভৃতির ভাষাও সেইরপ সাদৃশাও সম্বাবিশিষ্ট। অভএব ইহারা সকলেই একজাতীয় বলিয়া বোধ হয়। এই কণা আরও প্রাঞ্জ করিবার জনা ৰাঙ্গালার ষ্টাটিষ্টিকল্ আকোণ্ট হইতে বেঙ্গল সিবিল্ সার্কিসের রিজলি সাহেবের লিখিত করেক পংক্তির মন্মাতুবাদ করি-তেছি ৷ তিনি চুটীয়া নাগপুর বিভাগের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখিয়া লিখিতেছেন, किस कथा श्रीन সমস্ত ভারতবর্ষ সহয়ে थारहे ।

"চ্টারা নাগপুর প্রদেশের আদিনবাসীদিগের যতগুল ভাষা আছে, সকল
গুলিরই এক বিষ্ট্রে সাদৃশা আছে।
ভাষার বে গঠনকে, প্রত্যারকিশিষ্ট বলে
(সংযোগ সাপেক্ষ) ঐ সকল ভাষাগুলিই
সেইরূপ,এই জনা এই ভাষাগুলি ত্রাণী
গোষ্ঠীর দক্ষিণ শাখার মধ্যে গণিত হয়।
ভন্মধ্যে উদয়পুর ও সরগুলার গোদভাতির ভাষা, আসল চ্টারা নাগপুরের
ভরাওে (খাঁজড়) জাতির ভাষা, রাজসহলের পাহাড়ের পাহাড়িয়া দিগের
ভাষা প্রস্তুত ক্রেক্টা ভাষার ভারত-

বর্ষের দাক্ষিণাত্যের স্থসন্ত্য 'ভাষা সক-त्मत्र मटक विराधस मानृभा दनका यात्र। वह बाना काहाया मास्त्रमान् वह छाता-গুলিকে ভাষ্ণী ভাষা বলিয়া বৰ্ণনা করিয়াছেন। পকান্তরৈ সান্তারি ও সিংহভূমের হো বা লড়কা কোলদি. গের ভাষার সঙ্গে তামুলিক ভাষা স্কe त प्रक्र काम भारत के का नाई la এজনা মাক্সমুগার সে গুলিকে ভিন্ন খে-ণীতে বসাইরা মুগু নাম দিয়াছেন। ১৮৬৬ দালে ভারতীয়লাতিগণসম্বন্ধে দার্জজ ক্রেন্ধে গ্রুষ্প্রার ক্রেন, তাহাতে वाकाला दिशात ७ वानात्रम् धारम्भात দকিণ ও পশ্চিম সীম্। হইতে হারদরা-বাদ ও মাজাজ প্রদেশের সমুখ পর্যাত আর পুর্বঘাট পর্বত হইতে মধ্য ভারত-বর্ষত্ব নাগ্রপুর রাজ্যের স্থসভা অংশ পর্যাস্ত যে পার্বতাঞাদেশ, ততা বাসী অনাৰ্যাজাতিগণকে তিনি ছই ভাগে বিভক্ত করিয়াছেন। এক স্থাবিড়ী অ-নাৰ্য্য, অৰ্থাৎ যাহারা দাকিণাতোর জাবিড় ভাষা সকলের সদৃশ ভাষায় কথা কয়, বিতীয় কোলারীয় বা উত্তরবাসী অ-नार्या, याहाता भाकामृनादतत वर्षित मुख আতীয় ভাষা বাবহার করে। এই শে-रयाख्य ভाষानिहरवत मृतिक्षिक काबाना ভাষার आर्फ (य मध्य ध्वर (य मक्त আতিমধ্যে যে সক্ল ভাষা প্রচলিত, **खाशामंत्र आपि कि. এ मकल उच ७**९-কালে অনিশ্চিত রহিল। ভুরাণী ভাষা मधरक मासम्मात त्य शक् आहात करवन

ভাহাতে ৰণিয়াছিলেন এই সকল ভাষার সঙ্গে অন্য কোন ভাষার সহর নাই। আর হজ্পন সাহেব তাঁহার প্রণীত কোচ বোড়ো'ও ধিমাল জাতি সম্বনীয় প্রবন্ধে বলিয়াছিলেন, যে এই সকল ভাষাও তাম্লিক। তবে যে দ্রাবিড়ী লাতি হইতে কোল বংশীয় ভাষা সকল ভিন্ন প্রকৃতি-এক ভণ্যা হইরা পড়িয়াছে, তাহার কারণ এই যে মধাভারতবর্ষে নিবিজ জঙ্গলে পড়িয়া এই সকল ভাতি ছিল ভিন হইয়া পড়িয়াছে ৷ হজ্সন সাহেব বে দাকিণাভাবাদীদিগের সংক পূর্ব্ব-वाजानामिवामी चालिनिरगत मदक मः-স্থাপিত করণে ইচ্ছুক; আর তিনি যে তামুলিক শক অতি বিস্ত ১ অর্থে ব্যব-হার করিয়াছেন ইহা বুঝাইরা দিয়া मत्कर्क कार्यन् त्रभारेशाह्न, त्य সিংহভূমনিবাসী হো আতিদিদের ভা-ষার সঙ্গে জাবিড়ী ভাষ। সকলের কয়ে-की विश्निव नकरनत केका चाहि। यथा কোলীয় জাবিড়ী ভাষাসকলে প্রকৃত खाडारवं निकासि नाहे, कारठजनभगार्थ मांब हे क्रीविनित्र । अर्याधन मट्ड भटन त चाँ की भूक्ष मक वावश्र हरेंगा थाटक। विरमवंग मर्स विज्ञिक गारे। व्यथवा छात्रक्रमाताहक शक्त नाहे। गर्स-नारमञ्ज्यम श्रुक्रस्य वह्स्क्ट्न वारः তাহার সম্বন্ধ পদের ছুইটি ক্রপ আছে, একটিতে মধামপুরুষ বাদ, আর এক-वित्र कि उदा मधाम श्रूक्यं धारक। यत देवाणि वर्ग नाठक नर्सनारमञ्ज्ञ नित

বর্ত্তে প্রত্যয়ান্ত ক্রিয়া পদের ব্যবহার হইয়া थारक। "(य माञ्चित्रवारक्" ना विनिद्रो তাহারা "গত মুষ্যা" বলে। পক্ষান্তরে (कालवः भी ग्र ভাষাসকল বংশীয় ভাষানিচয় ইইতে অধিক পরি-মাণে বিভক্তিসম্পন্ন। ুকোলে রীতি-মত বিবচন আছে দ্রাবিড়ীতে নাই। অধিকস্ত কোলীয় ভাষার শক্কোষ অধিকতর সম্পূর্ণ। অতি সামান্য শব্দ বাতীত নিকটবৰ্ত্তী ভাষা হইতে যে অধিক শন্ধগ্রহণ করিয়াছে এমত কোম **हिङ्क (कान तः भी य जायाय नारे। यथा** সংখ্যা निर्काठनकत्रत्व त्शात्मत्रा जाविष्टी ভাষায় দশের বেশী গণিতে পারে না: **'अतां'अराता हात्रित (वशी नम्र । तांक्रमश्टलत** পাহাড়িয়া হুইয়ের বেশী নয়। অবশিষ্ট সংখ্যা ভাহারা হিন্দি হইতে গ্রহণ করে। কোল সাঁওভাল জাতি আপন আপন্ ভাষায় অনেক উচ্চ সংখ্যা পর্যান্ত গণিতে

"অতু এব এ পর্যাস্ত কোল বংশীয়দিগের আদিনির্বয়সম্বন্ধে কেবল ইহাই
শ্বির শ্বীয় ভিল ব্রু, জাবি টাদিগের সঙ্গে
ভাষার গঠনে বে সম্বন্ধের চিহু আছে
ভাল্টন ্ সাহেব বাঙ্গালার জাতিনির্বন্ধ
সম্মীয় নিজ গ্রন্থে বিবেচনা করেন যে,
কোলবংশীয়েরা বে দ্র উত্তরপূর্ক হইতে
আদিয়াছে তরিষয়ে কোন সংশ্র নাই।
হল্পানু সাহেব বলিয়াছেন যে কিরা

ভীর প্রভৃত্তি নেপালপ্রদেশের বিচ্ছির ৰাতির মধ্যে কোন কোন ভাতির ভাষায় नर्सनामक्ष्मिटक काम वा मूखकावात मानृभा (तथा यात्र। छा। छेन् माट्य নিৰ মতের পোষকতীয় উহার উপর নির্ভর করিরাছেন। আর পেগুপ্রদেশে তালা-हेक वा सामनास्य এककाछि चाह्य. তাহারা পার্ঘবর্তী ভাতিসকলের চৈনা-দিক্ষাতীয় ভাষা হইতে ভিন্নপ্রকৃতিক धकि छावा वावहात करता (महे छावा চুটারা নাগপুর ও সিংহত্যের হো বা মুও-मिरात छावात मरक विरमय माम्मा-বিশিষ্ট। ডাাণ্টন্সাহেব তাহাও দে-খান। আর ব্রহ্মদেশীয় জাতিদিগের ইতিবৃত্তে কর্ণেল ফেযার, জে, আর-लागान गाट्टरवत्र এकिं कथा छेक् छ লোগান সাহেব ৰলেন করিয়াছেন। (य, कालिमरशंत्र छ।वा ও यान् जानाम् গোষ্ঠীয় ভাষায় কিং যদ্তদাদি সর্কনাম, / অন্তঃ ইহারা निर्द्मनवाहक मंदीनाम । मः भावाहक সর্বানের ধাতৃগত একতা প্রমাণ হই-উভয়জাতীয় ভাষাই শান্দিক মূলে এক কাণ্ডের ছুই শাখা। জাবিড়ী অপেকা তিকাত ব্লভাষাদির সকে বিভাড়িত হটয়াচিল ভাষা নিরূপণ করা ভাহাদিগের অভিশয় সাদৃশা আছে।'' এখন লোগান সাছেব আরও দেখাইয়া-(इन, ध्य व्यानात्मत्र चानित्रा ७ क्लान-मिर्गत मर्था काथागंड मानृभा कारह; ু আর সিংহুভূমের হো ও খাদিরাদিগের

মধ্যে মৃতব্যক্তির প্রান্ধ ও সমাধিচিত্ প্রভৃতিতে বিশেষ সাদৃশ্য আছে।

हेश्द्रब्रह्मश्दकता धहे वश्यात "(काना-श्वात' नाम निवारक्रन। जामका वाकाना ভाষায় ইহাদিগকে (कंगिवः भ विनिव।

অতএব বাঙ্গালার তুরাণীয় অনার্যা-ভাতির মধ্যে তুইটা বংশ পাওয়া বাই-**टिंह—जाविङ्वः**म ७ (कानवःमः। ইश-(मत गर्धा कान बाडि वानानात जानिम-वामी?

(म भीगाःमा वृতि कठिन। ভারতসম্বন্ধে ডাং মুরের যে মত নিমে তাহার মর্মামুবাদ করিতেছি।

'ভিত্তরের অনার্যাগণ এবং দক্ষিণের অনাৰ্য্যগণ এক বংশসন্তুত কি না এই প্রশ্নবন্ধে ডাক্তার কল্ডওয়েলেব মত এই, যে দ্রাবিড়ীদিগকে ভারতবর্ষের व्याप्तिमतिवामी भटन कहा याहेटल भाटत, উত্তর হটতে প্রথমে ছড়াইয়া আটদে। কিঁৱ चार्याता चानिया देशामतह तमीधि-काती मिथियाছित्वन कि उदेशूर्तिह জন্য কোন, শক ভাতিকর্তৃক ইহার। তত সহল নহে। এবিষয়ের স্থানিভিত মীমাংসা না করিয়া, দ্রাবিড়ী ও উত্তর ভারতে প্রচলিত ভাষাদকলের অনার্যা-মুলক ভাগের সহিত আপাতপ্রতীত প্রভেদ দেশিয়া ডাং কল্ডওয়েল স্থির

^{* &}quot;Statistical Accounts of Bengal Vol. XVI P. 255

করিয়াছেন যে, জাবিড়ী ভাষা শকভাষার প্রাচীনতর অবভা। যদি এই নীমাংসা ন্যায়সক্ত হয়, তাহা হইলে ভির করিতে ছইবে, যে উত্তর ভারতব্যীয় • অनार्यागरणत शृक्षभूकरवता छाविकी मिरगत शृद्ध ভाরতবর্ষে আসিয়াছিল, আর্যাগণকর্ত্তক উত্তরপশ্চিম थामि হৈইতে বি্তাজিত হইবার পূর্বে তাহারাই স্রাবিড়ীদিগকে উত্তর ভারতের অনেক অংশ হইতে বিচ্যুক্ত করে। ফলতঃ ডাং কল্ড ওরেলের মতে জাবিড়ীরা উত্তর ভারতবর্গ হইতে আ্যাগণকর্ত্ক দ্বী-ভুত হয়েন নাই i . সংস্কৃত বা ঞাবিড়ী ভাষায় এই ছই জাতির মধ্যে কোন যুদ্ধ বিগ্রহের কাথাবার্তা নাই। श्चार श्वामी देशमिश्व श्वालात সখ্যেতরভাব অসম্ভব। যে সকল আর্যা-🕶 পূর্ব্ব শক আতীয়েরা উত্তরবিভাগ হইতে ক্রাবিডুীদিগকে বিতাড়িত করে আর কোল সাওতাল ভীল ডোম প্রভৃতি উত্তরাঞ্চলের আদিমবাসী, ইহাদিগকে এক মনে করা অহুচিত।কোল ভীল সাঙ-তাল প্রভৃতি অনার্যাজাতিরা জাবিড়ীদের **डाड्माय बर्गा बाल्य नहेया थाकित्** • বা ভুটানজাতির ন্যায় উত্তরপূর্ব প্রদেশ হইতে ভারতে প্রবেশ করিয়া থাকিবে। **ष्टाकात कट्छ अरतम गरन करतन এइ** সকল আরণাছাতির ভাষার সহিত উত্তর ভারতে প্রচলিত ভাষা সকলের অনার্যা ভাগের কোন নৈকটা নাই।"

অতএব পূর্বে যে মতের সংক্ষেপ বিস্তার করা গেল দেই মত অমুধারী আমরা ভারতবর্ষবাসীদিগের মধ্যে চারিটি ভিন্ন স্তবকে পাইতেছি।

প্রথম—সর্বপ্রাচীন—কোল, সাঁও তাল, ভীল প্রভৃতি বন্যমাতি, ইহারা উত্তরপূর্বপ্রদেশ হইতে ভারতবর্ষে আ-দিয়া থাকিবে।

ধিতীয়—দ্রাবিড়ী, ইছারা উত্তবপশ্চিম হইতে ভারতবর্ষে প্রবেশ করে, এবং স্বেচ্ছাক্রমেই হউক, অথবা অন্যান্য পশ্চাদগামী অনার্যাদলকর্ভুক উৎপীড়িত হটয়াই হউক, ভারতবর্ষের দক্ষিণাংশে আসিরা বাস করিয়াছে।

তৃতীয়। শেষকণিত শক বা অনার্য্যদল, যাহারা উত্তরপশ্চিমপথে আসিরাছিল, ইহাদিগেরই ভাষার সংযোগে
সংস্কৃত হইতে উত্তরভারতের প্রাকৃত ভাষা সকল উৎপন্ন হইয়ছিল।

চতুৰ্থ। আহাগণ।*

তৃতীয়শ্রেণীয় শকজাতির কোন চিহ্ন বাঙ্গালায় পাওয়া যায় না। অতএব কোলবংশ ভিন্ন অনা কোন অনার্যাজাতি)যে জাবিড়ীদিগের পূর্বে বাঙ্গালার আসি-য়াছিল, ইহা আমরা স্বীকার করিতে ইচ্ছুক নহি। বাঙ্গালাভাষায় যে সকল অনার্যামূলক শক্ষ, আছে, ডাহা কোল-বংশীয়দিগের ভাষা হইতে প্রাপ্ত হয় নাই, এমন কোন প্রমাণ আমরা দেখি নাই ব ডাক্তার হণ্টর কতক গুলি-উদ্ধান

Muir's Sanskrit Texts Vol. II P. 485 to 487.

হয়ৰে নিয়নিখিত তখ্পাল সমর্থনের চেই। পাইরাছেন।

" षां व्यानीनकारन मः इत् ७ সাঁওতালীভাষায়, অথবা সাঁওতালীয় পূর্বাগা ভাষার সঙ্গে সংঘর্ষিত হইয়া-ছিল। এমন সম্ভব, যে সংস্কৃত সাঁও-जाती इंटेट कंडकश्रीत स्रवाद्यात छ-क्तार्या वर्ग खरून कतित्रा छाएंकानिक चीत्र অসম্পূর্ণ বর্ণমালার মিবিষ্ট করিয়াছিল। ইহা নিশ্চর যে সংস্কৃত কথিত ভাষা হ-ইতে কতকগুলি কথা লইয়াছিল, আর প্রাচীন প্রাকৃতে এবং আধুনিক সাঁও-ভালীতে দেই সকল শন্ধগুলি আজি বিকৃতিশুনা দেখিতে পাওয়া যায়। সং-শ্বতের পক্ষে বেমন প্রাক্বত, প্রাকৃতের পকে তেমনি বাসালা, মোটামুটি ইহা वना गाहेटल भारत, मिहे बान्नानां हे मां छ-তালী হইতে অনেক শৰ্ম লইরাছে। हेजामि।"*

हर्णेत माहित्रक मृश्युष्ठक वा वात्रा नात स्पर्शिष्ठ विनया श्रीकात कता गाव ना। উপরে যে সকল কথা উদ্ভূত হইল,

তাহার সকলগুলির সমর্থনও করা বার ना। एटव छिनि याहा निश्चित्राह्म, তাহাতে এতটুকু অবশ্য স্বীকার করা যায়, যে বাঙ্গালাভাষায় অসংস্কৃতমূলক কতকত্তলি শক্ষ সাঁওিচালি হইতে প্রাপ্ত। অফুসন্ধান হইলে আরও কতকগুলির মূল সেইক্লপ সাঁওভালি বা অন্য কোল-বংশীর ভাষাতেই পাওয়া যাইতে পারে। তবে সকলগুলিই কোলবংশীয়দিগের নিকট পাঙ্যা গিয়াছে, এ কথাই বা না মানিব কেন ? অথবা এ কথা না মানিয়া অনর্থক আর একটা ভূতীর व्यनार्यायः भ श्रीकातं कतिव (कन ? कान-वः भ ७ जाविष्वः ग वाजी ७ जना कार्न व्यनागातः न त्य व्यावानित्यत शूर्व्य वाजा-লায় আসিয়াছিল, ইছা স্বীকার করিবার (कान कात्रण (मधा यात्र ना।

তবে বাঙ্গালাসম্বন্ধে কল্ড এরেন সাহেবের মতের মধ্যে এই টুকু গ্রহণ্ধ করা যার, যে কোলবংশীরের। জাবিজ্বংশীর-দিগের পূর্ব্বগামী। "অতএব প্রথমে কোলবংশীরদিগের কথা বলিতৈছি।

Annals of Rural Bengal P. 180.

বাঞ্চালা সাহিত্য।*

বর্ত্তমান শতান্দীর।

ठेमानीः वेश्रतकामरगत भागनाशीरन [®] ভারতবর্ষে নি:শব্দে যে ঘোরতর পরি • বর্ত্তন হইতেছে, তাহা কাহারও অবিদিত बाहे। नृजन भर्या श्रावनाहे, वनश्रकाम नारे अथए आमार्रात्त मन क्रमणः कि রির। আর একরপ হইরা যাইতেছে। এই পরিবর্ত্তন ও বিপ্লব ভাবতবর্ষে সর্বত্ত চলিভেছে; কিন্তু বাঙ্গালায় সেই পরিবর্তন ও বিপ্লব যতদ্র অপ্রসর হই-बाष्ट्र. এতদুৰ আর কোণাও হয় নাই। এই বিপ্লবের প্রধান কারণ ইংরেজিশিকা, ইহার ফল-সমাল-উন্নতি ও সাহিত্য-উৎপত্তি। ভারতবর্ষেব মধ্যেও বাঙ্গালার সমাজে-উন্নতি অধিক ওু সাহিত্য প্রধান হইয়া উঠিয়াছে। আজি সেই উনবিংশ শতানীর বঙ্গীরগাহিত্য আমাদের উপপাদ্য বঙ্গীয়সাহিত্যের বিষয় ব-লিভে গেলে, আর ও অনেক কথা বলিভে रत, किकार्ण এই विंशन घरियारक, किकार्ण লোকের মন পূর্বপথ হইতে ঘুরিয়া ন্তন পথে দাড়াইয়াছে তাহা লিখিতে হয়। প্রত্যেক চিস্তাশীল নেতার মনো-मर्था खारवण कतिया, छांशात मानिक পরিবর্ত্ত ও ভাহার কার্যাপ্রণালীর ইতি-

राम निश्चिष्ठ इत्र, कृदः छाहारमत कार्या-

প্রবির্ক হইতে আরম্ভ হয়, তাহার ইতিহাস আলোচনা করিতে হয়। কিই
তাহার সমর নাই। তবে যতদ্র পারা
যায় চেটা করিব।

১৭৯৯ সালের শেষ দিন অভীত 3600 সালের দিন উপস্থিত। ভাবতবর্ষের এমন আদিন, বোধ হয় আর কখন হয় ভাৰতের কোথাও সুধ নাই. কোথাও শান্তি নাই, সর্বতি লুঠভরাজ, মাবামারি, লাঠালাঠি, কাহাকেও বিশ্বাস নাই, বাহার গায়ে জোর সেই অন্যের উপর অবিবাদে অভ্যাচার করিয়া সমস্ত দেশে রাজা নাই। যাঁহারা রাজা বলিয়া পরিচয় দেন, তাঁহারা লুঠে-ড়ার সদ্ধার। পরধন অপহরণ, পর-পীড়ন, পরের প্রাণনাশ, তাঁহাদের নিত্য-কর্ম। এই সময়ে ভারতবর্ষের একপ্রাস্ত হুইতে অপর প্রাস্ত পর্যাস্তের কিরূপ অ-বঁদা ভাহারদিকে একবার দৃষ্টিপাভ कतिराहे ध कथा ज्ञानतक्रम इहेर्ड भा-त्रिद्य । ·

কাব্লের . তুরাণীবংশ পতনোলুখ; সেথানে তুরাণী ও বেক্কজীদিগের পর-

্বী সাৰিত্ৰী লাইত্ৰেনীর বাৎসরিক উপলক্ষে শ্রীধরপ্রসাদ শান্ত্রী এই প্রস্তাবটি শাঠ কব্রিছাছিলেন।

🎮র বিধেষভাব জরিতেছে, ছর।শীদিপের অধিক্লত ভারতবর্বের অংশসকলে স্ত্ত রাং গোলযোগ চলিতেছে, ভূলোকস্বর্গ কাশীর, পেশৌর প্রভৃতি প্রদেশে অরাজ-কভার স্রপাত হইয়াছে। মুসল্মানশাসন ধ্বংস ্হইয়াছে, কিন্তু তথার বহুসংখাক কুদ্র কুদ্র স্বাধীন শীণ-রাজা স্থাপিত হইয়াছে; এই রাজগণ পরস্পারের উপর আপনপ্রাধানা স্থাপন कदिवात सना भक्तना युक्तविश्वर, मातानाति কাটাকাটিতে বাহিবাস্ত। সিস্কু:ত আমীবদিগের রাজা এখনও দৃচ্বদ্ধ হয় नाहे, रम्थात्म भातामाति, काठाकारि, যুদ্ধবিগ্রহ। সর্হিলপ্রদেশে একজন हैश्टरक एडे (चारलंद अङ्गाहाद्वर मगग्न আপনার জন্য এক রাজা করিয়া লই-शास्त्र. এवः भूमनभारमत नाम वरु-সংখাক মুদলমান্টপণ্ডীতে পরিবৃত হ্ইয়া নানাপ্রকাব অভ্যাচার করিছে-ৈছেন। রাজপুডগণেব আর সে প্রভাপ नाहे; य छारात्य डीहारा अकनिन সমবেত ন্সলমানদিগের সহিত যুদ্ধ ক-রিয়া জয়ী হটরাভিলেন, এপন তাহাদের त्म खाळाभ नाहे ; हिश्मा (च्य जांशादेश · गरनामस्या व्याद्यम कित्राह्यः , निश्चित्रा, (हालकात, यथन हेव्हा छाहारमत रमभ লুঠ করিতেছে ও যণন ইচ্ছা তাহাদের निकि इहेटड खनाथ हाका लहेटहर ; দিলীর বাদশাহের নামের মোহিনী আছে, আজিও সম্ভ্ৰম আছে! কিছ वामभार निर्द्ध वनी, भव्यता छ।हात

हकू উ≪ाउँन कतिबारइ। ईःशत দিস্তার অন কে যোগার—ভাহারও ঠিক নাই। ুপেরেঁ। নামক সিকিয়ার একলন ফরাসিস সেনাপতি হিশ্বানের সর্কাগর করে।। তাহারও শনকর মত. किছू निक উष्टिम्भ चाइ कि ना क विभारत भारत ? व्यायाधा ७ त्राहिन गछ একজন নবাবের কবতলগভ কিছ জী-হার নিজের কোন ক্ষতা ন.ই, ভিনি নিজপ্রাণাদে উপগ্রীপরিবৃত হটরা বাস কবেন্; সময়ে সময়ে তাঁছার थानाममञ्ज्य नान वात्रामात्रीनप्रक अविद्यक्षान्छ विद्याशीमरभत्र क्रक्त-লিভ পাকে, ঠাহার রাজ্য অপেকা অর্থিকতা শতগুণে শ্রের:৷ ভাঁহার রাজ্যে ওমরগেণ করদরাজাগণ, জার-পীরদার ও ভালুকদারপণ যাহার যাহা हेका (ग जाहेक्द्र। विनायुक्त (कर्हे थाकाना (मध्र ना, अडिवाब्रहे कत आहा-**(यब मगय चामित्न, हेश्त्रक्रमिश्मत मा-**হাযা প্রার্থনা করিতে হয়। অনেক টাকা না দিলে সে সাহাযাও প্রার পাওরা ্যায় না। ইংরেছেরা আরও व्यथिक किছू व्यामात्र कतिवात स्ना छै। राक बाक्डेभावि निवाब উत्पात करि-তেছেন। মধ্যভারতবর্ষে বুলেলখণ্ডে কুদ্র রাভাগিণ যাহরি যাহা ইচ্ছা তাহাই করে। ভা**হারও দ্**কিলে গোন্দরানার वक् वक् जाकाहर जब मन टेजबाबि हरे. ইহারা একসময়ে कात्रकवर्ष केलेवे लालके कत्रिक्य मिर्व।

শিক্ষিয়া ও হোলকার বড় শান্তিপ্রিয় नरक्त। छीक्रारम्य गर्था भवन्भव मः ं च्योिक नार्ट, कत्रम्लात यूक्तरकदूव याहाता कती अ ग्रांता कि उन्न, উভत्रभाक्तर , স্ক্রাশ হট্যা গিয়াছে। নিজাম ছা-तिया व्यवस्य क्षत्रमार्था देश्टतम अ महा-রাট্রাদিগের প্রতি ঘোরতর বিছেষকে লালন পালন করিতেছেন। মহারাট্রারা [©] করদলা **হুটতে** সেই যে আপন আপন ভবনে গিরাছে, তার পর আর একত্ত इत्र नारे, উदात्रा त्य यादात जालन আপন রাজাবৃদ্ধি ও শত্রুনিপাতে ক্লত-जक्र इटेबाट । यहांत्राह्रीनिरगत मरशा বড় রাজা আছেন সতা, কিন্তু জীজিবার গেঝানকার ওমরাহগণের অগ্রগণ্য भर्तमयुक्छा: উन्राद्ध यट्यावस्त्रवात्र (य-थानकात भागनकर्छी, निर्मन्न निर्श्न , শকুসংস্কারাপর অবিমুষ্যকারী বাজীরাও (यथानकात (शामात्रा, तम त्राह्मा कि সুথ গম্ভব ? সেখানে কি শান্তি থাকিতে পারে ? দেখানে কি লোকের সাহিত্যাত্ राग पाकिएं भीट्य। महाताहुवाटकात म कर्त है: दबन बाज च नर्त माज चात छ হুইরাচছ। ব্রিটীসরাজত্বের প্রাণম অংশে. বেরপ সর্বনাশ হয়, তাহা কাহারও অবিদিত নাই; তাহাতে আবার বখন টীপু ভৃতীয়বার হারিয়া মরিয়া **হ**ইয়া-হিলেন, তখন তিনি যেরপ ঘোরতর মত্যাচার করিয়াছিলৈন, তাহার ইয়তা कडा यात्र ना। जिनिहे नर्वश्रथम মহীক্ষে প্রামকে আম প্রবনান করিয়া

দেন, বিনাপরাধে সহজ সহজ লোকের न विकृतन व्यानगाम करत्रम। काटन देश्द्रकामिरशत आजूच हिल प्रजा, किन मालाध्य (य मकन हेश्द्राध्य कर्ना हिल्ल, छांशाहत जाशका (मनीत षयना त्राबाउ जानकारण उरकृष्टे हि-লেন। ভাঁহারা কর্ণাটের নবাবের দেনা লইয়া যে জখনা কাও করিয়া তুলিয়া-ছিলেন, তাহার আলোচনা रे:(इक्रनाम कलकि क करा आगात छाछा-(वन উक्तिमा नाइ। (य हिमानन आदिक्ता, त्य उँ€तायर७, कशन यूनलमान याहेरछ পারে নাই, গোর্থাদিগের ত্রাকাজ্যার, রাজাবৃদ্ধির ইচ্ছার সেথানেও যুদ্ধবিগ্রহ উপস্থিত হইয়াছে, পাহাড়মধ্যেও অরা-ত্বক। গ্রামবাদীর। লুঠের ভয়ে কপ্পান্থিত-क (न व व ।

এরপ অরাজকসময়ে যথন কালি কি
ছইবে, কেইই বলিতে পারে না,
যথন পরের উপর অত্যাচারই রীতি;
গথন কাছার প্রাণ, মান, ধন রক্ষা হয়
না, ছাইর দমন ও শিষ্টের পালন করিছে
পাবে এরপ ক্ষমতাশালী একজনও লোক
সমস্ত ভারতবর্ষে প্রিয়া মিলে না। তখন
কি সাহিত্যের উরতি ইইতে পারে;
তথন কি লোকের চিন্তা করিবার ক্ষমতা
থাকেশ যথন ভয়েই লোকে অভিভ্ত,
তখন কে লেখাপড়া , শিধিবে, কে
লিখিতে ক্সিবে হ বাস্তবিক তৎকালে
ভারতবর্ষে সাহিত্যলোপ হইয়াছিল
বলিগে মহাজি হয় না।

चार्तिक मान कतिएक शारतम वाकामा-সাহিত্যের কথায় ভারতবর্ষের কথা কেন তুলিলেন ? বালালায় ত তথন স্থাসন প্রতিষ্টিত হইয়াছিল, বাঙ্গালা ত তথন ভারতবর্ষের মধ্যে সর্বাপেক। শান্তিভোগ করিতেছিল। এটা লোকের মহাভ্রম, ভারতবর্ষে এরপ দারুণ গোল-याग थाकिटल बान्नालिव मत्न आखि अस्विटि शार्य ना : विष्य वाकाला म-মাজে তখনও শান্তি হয় নাই। প্রথম ইংরেজ রাজত্ব যে স্থায়ী হটবে তাহাতে কাহারও বিখাস হয় নাই, তাঞ্চাব পব আমরা বাহাকে এখন বাঙ্গাণা বলি তখন ৰাঙ্গালা খলিলে ইহা বুঝাইত না। বাঙ্গালার গবর্ণরের কর্তৃত্ব উড়িষাায ছিল না। উডিয়া মহারাষ্ট্র-কবকব-লিত ছিল। উডিষ্যায় করণ ও মিত্র बाक्शन निवयुव (यनियी पूर्व अक्टल नुर्ठ পাঠ ক রত। বীরভূম, বরাহভূম, সবে-भाव देश्टबल्दात अधिकृत इटेग्राटः। ष्यामाम, बाहात, ७ थन ३ हेरद्र कित्राव নয়। অতি অল পরেই মান্দের। ত্রেন-(मनीय्रान) खदाखक खानाम नयन कर्वशा ৰালালায় আসিয়া পড়িয়াছিল। ভূটা। ।ছল কবৰ্ওয়ালিশপ্ৰৰতিভ শত শত বৎসর ধরিয়া নিরস্তর অরাজ ৫-ভার ভুগিতেছিল। ভূটানে স্থবেদারের। ज्रामा (भन्ता, (भारता (भन्ता, अ ভৃতি সকলে আপন আপন ধর্মরাজ। ও (मवत्राका थाएं। कतित्र) जानना जानिन काछावाछि कवित्रा मनिष्ठ। नगरत्र नगरत ভাৰাদের সুদ্ধ গড়াইয়া রংপুর পথাও

আসিরা পড়িত। যদিও মুসলমানেরা ভিন্ন আর কেহ বাদালা আক্রমণ করিছেই चारम नाहे छथानि वामानात भीमा व्यापाटम भाषि स्थ वाक्वात हिन ना। व्याव वात्रालात मध्या मर्वा थकात व्यवाध-কতা নৃতা করিত। ১৭৫৬ খঃ অফ হটতে বাধালা খাশানকালীর রক্ষভূমি * হইরাছিল। Double Government এব সময়ে রণজ্মাল ইংবেকগণ কাহা-কেও মানিত না, তাহারা না কবিয়াছে वभन काराष्ट्रं नाडे, निष्ठा, वृष्ति, ज्राभ, खन, कमना, किङ्कार निशासित मन বিচলিত ক্রিতে পারিত না। Double Government এব সময় বেমন ছিল ২৭৯০ খ্রীষ্ট'ল প্রাপ্ত ঠিক তেমনই ছিল। ইংরাজেরা তিন চাবিবংসব থাকিয়া অ-त्नक धनमक्षम कविद्या चात्रात्म किरिया যাইতেন। আব ঠাহাদেব বাঙ্গালি প্রিৰ্ক্ত পাত্রগণও সেই সাজ সজে খদেশীয় খলাতীয়গণেৰ মুগুপাত করিয়া বঙ লোক হটয়। উঠিতেন। ৫৬ ছটতে ৯০ পর্যাপ্ত যাখা ছিল, ' ৯৬ সাল তাহার চুড়াস্ত হটয়া গেল। দেলের যা কিছু বলীতে ভাষাও গেল। वाकालाम मुमदा-মান রাজত্বে তিন শক্তি ছিল, এই ভিন শক্তির মূল তিনী; মুসলমান গ্রণ্মেণ্ট, দেশীর অমীদার, ও ব্রাহ্মণপণ্ডিত। এট ०१ वरमृद्ध युम्रणभागं गवर्गस्य छित्र । भव इटेशाहित। नवाय बहुतक है।क। (भाषान शाहेमा उत्रभाषीत्रात्वति । १ हेम् । विन-

প্রাসাদে বাদ ক্রিভেন ও যতদ্র তাঁহার সম্পর্কের গন্ধ থাকিত ততদূর দৃষিত ্বায়ু চরিত্রদােষরপ সংক্রামক বাাধির উৎপত্তি, করিয়া দিত। । এড় বড় क्यीमाद्रश्व जात्हरतत् त्यावत् व्यव-সর হইরা আসিরাভিলেন। মীরকাসিম व्यत्नक श्रु नित्र भूरनार्ट्यम कविशा शिशा-• **ছिলেন। है बाता व**र्त्नावस्थ अरनकः গুলির উচ্ছেদ হয়। দেশের লোক यांशामिशक आश्रमारम्ब कर्छ। विलग्ना বছকাল আদর ও ভক্তি, মানা ও ভয় করিয়া আসিতেছিল, যাহারা প্রাথম খা-ধীন, পরে মিত্র, তাহার পর কবদ, শেষ অধীন রাজা ছিল, তাহাদিগের এইরূপ পরিলাম হঠতে লাগিল। ভার পর চিরস্তায়ী বন্দোবন্ত হইল: ইহার সঙ্গত নাম চির-স্থায়ী বন্দোবস্ত নহে। ইহার আসল নাম 😷 চির অস্থায়ী বন্দোবস্ত, কারণ ইচাতে কেহই वितरक शाद्रम ना त्य आयात्रं क्यीमाती श्राशी बहेरत। हिनदाशी नत्नावत्स জনীদারগোষ্ঠার শেষ হইল। বভ বড় রাদপরিকার' ঠিক সময়ে টাকা না দিতে পারায় জমীদারীচাত হইতে লাগিলেন। क्षानात, नन्छात्रा, नारहेति, हाहछ। •প্রভৃতি প্রদেশের জমীদারদিগের সম্পত্তি रहचर्त नीमाम इटेट नाशिन। किनिन কে গ মাজিট্রেটের প্রিয়মূহরী—জাতিতে নাপিন্ত, Foreign Department এর नारत्रय-काङिएकं मामान, मिलिहाती ডিপাট**মেণ্টের কেরাণী** গোনস্তা ইত্যাদি। কিন্ত প্র,সকলের মধ্যেও ফ্রেভার সংখ্যা

व्यक्षिक नटर। अभीमाद्रित कर्म्यातीतारे ध विषय विश्व विक, छाहाता आका-দের সর্কাশ করিয়া ধনসঞ্য করিতেন। দ্রস্ত জনীদার তাহা দেখিতে পাইতেন না। তাহার পর জনীদারী থাজনার দায়ে নীলামে উঠাইয়া দিয়া আপনি ক্রম করিয়া লই-(लन। এकङान अमन इहेम्राह्ह (य सगीनादात थायांना नहेता याहेटल गाहेटल र्रठा९ बीका पूर्व बढ़ारेया निया टमरे होकाय शामका वाशनि समीमाती कि निया नहेरलन। विक्थार्ग विक्रम ডাকাইতের সর্দার গ্রব্মেটের খালনা नूर्ठ क्रिया नगन ठाकात्र (कारत समीमात **इहेलन। जानक छाल नाठित स्माद्र** অমীদার হইতে লাগিল। একজনের লাঠির জোর থাকিলে দশ পনর ক্রোশের मर्सा काहात्र त्रका थाकि । ना। যাহারা নাহিতাসংসারের উন্নতি করিত, ষাহাবা পণ্ডিত প্রতিপালন করিত. यशिष्टित कलाएन आमन्ना अरनक छेखम উखन अञ्च পाইसाहि, ভाशामित्र এই मना रहेना विदेशिया भारापत जान शास हहे. (लाग डाँशाहा जात वकमच्छानारम्य ুলোক। তাঁহারা ছোর ১ব কুদংস্কারাপর, তাহারা গুরু পুরোহিতের একান্ত ভক্ত इरेट नाशित्नम। श्राप्त कठकि छै। शाम अर्थ हे क्यू : शृना ।

মুসলমান গবর্ণনেন্ট এ জনীদার ভিন্ন শীলালার আর এক শক্তি হিল, আক্ষণ পণ্ডিত। এই অরাজকের সমর, খোর-ভির অত্যাচাধের সময়, ভয়ানক বিশৃদ্ধা- 188

लाब अभव यनि (कह (मरभव बना यथार्थ ভাবিত তবে সে ব্রাহ্মণপণ্ডিতগণ। এই সময়ে তাঁহাদের দারা যে কত উপকার হটমাছে, তাহা বর্ণনাতীত, অভাচারী ইংরাজগণও ধার্ম্মিক ইটুনিষ্ট ভট্টাচার্যাকে चानत कतिङ, लाटक छाश्रानिगटकं शिनु-ধর্মের হিন্দুসমাজের আর্যাজাতির চূড়া বলিয়া জানিত। তাঁহারাও আজিকার ভট্টাচার্যাদিগের নাার লোভী ক্ষমতা-প্রত্যাশী ও স্বার্থপর ছিলেন না। ধর্ম-वर्ल जाहाता वलीयान् हित्तन, जाहारमत সাহস ও অকুতোভর ছিল। তাঁহাদের এই সাহসের কৃষ্ম হেডুও ছিল। তাঁচা-**(** जब मर्जनां हे ७०। १० जन हात থাকিত। ছাত্রেরা বয়:প্রাপ্ত বলিষ্ঠ ও গুরুকার্যো আত্মসমর্পণেও ক্রতসংকর। **এই সময়ের অগরাথ** তর্কপঞ্চানন গোঁসাই ভট্টাচার্য্য বলরামণ্ড শক্ষ মাণিক তৰ্কভূষণ প্ৰভৃতি নাম কাহার অবিদিত আচে ? তাহাবা **এই গোলবোগের সময় ব্যবস্থাক**, বিচারপতি, অধাপেক ও সম্থে সময়ে সর্বায়কর্তা হটয়[ছিলেন। কত কত পরিবারকে দে তাঁহানা কত উপায়ে রকা করিয়াছেন, ভাহার ইয়ন্তা नाइ। धा मकल डेश्टबंक गथार्थ विठात করিতে চাহিতেন, এই ভট্টাচার্ঘাগণ যে তাঁখাদের কও বিষয়ে সাহাণ্য কৰিয়া-ছেন, ছাহার ঠিকানা নাট। কিন্তু, সাহিত্যের উন্নতি তাঁখাদের বাবসায়, न द्धाः । चांशाक्षाक्षानानगायौ, मार्थिकाः

বাবসায়ী ছিলেন না। বিশেষ তাঁহা-দের উপর এত কার্যাভার পড়িয়াছিল যে তাঁহারা সাহিত্যের উর্তির ইচ্ছা থাকি বেও করিতে পারিতেন না। কিন্ত ভাঁহা-म्बर्ट कि शतिगाम इहेग। ১৭৯৩ माल . इक्न इहेन, जाहेन इहेन, य उत्कालत वाद्याश कदिए इकेटन । व्यावात ১৮२৮ ও ১৮৩৩ আবে বাজেরাপ্ত আইন পুনরার বিধিবদ্ধ হইল। তাঁহাদের সম্পত্তি হস্তচাত इटेन। य बाक्रनकून निर्दिक्त पा श्रीन উপস্থ ভোগ করিয়া আসিতেছিলেন, বাঁহাদের তেজে নাহসে ও নিভীকতার चाजाहाती मिद्राबंडेकोनाड कांशिटन. তাঁহারা এই অবাধ বড়মামুষের আশ্রিত হটতে আরম্ভ করিতে লাগিলেন। তাঁহার। বড়মানুষের সভাশোভাবিধান লাগিলেন, ক্রমে একণে ভোষামোদ ভট্টাচার্যাদিগের বাবসায়ের মধো হইলা ••• भाषाविद्याद्य । व्यामादमंत्र (मत्म दय ক্ষেক্থানি উৎকৃষ্ট প্রাচীন বাঙ্গালা গ্রাত আছে, ভাষাও এইরূপ ব্যক্ষাওর-ভোগীদিলার লিপিড, স্থতরাং আর ন্তন ব্ৰংক্ষান্তর হইবে না এবং অনেক পুরাতন একোতের বাজেরাপ্ত ইউবে, আটন করায় বঞ্চীয় বিদ্যা ও বঙ্গীয় সাহিত্যের মূলে কুঠারাঘাত হটল। উন-বিংশ শতাকীতে বছদিন প্র্যাস্ত ভট্টা-**हार्वामिश्यव जादाना हिल म**ें। किंद हिछानीनबाकियाजहे बाबिटड शाबिय-हिट्निन (ग, रम आधाना श्रमिक निन शाकित्व ना । अगश्राच उर्कभक्तनीनानिव

পর যে সকল পত্তিত হটয়াছিলেন
সকলেই জানে যে, তাহারা উক্ত মহাত্মাদিগের অপেকার অনেক অংশে নিরুপ্ত;
তাহার পর আরপ্ত নিরুপ্ত, তাহার পর
আরপ্ত নিরুপ্ত শেষ এমনি হইয়াদাডাটল
যে, সর্কদর্শনসংগ্রহের ভূমিকার খাতেনামা ৬ জয়নারায়ন তর্কপঞ্চাননমহাশয়
বৈলিলেন, যে, ভট্টাচার্যাগণ চারি পাঁচখানি যাতীত পুস্তক পড়েন না, এবং
তারানাথ তর্কবাচন্পতিমহাশয় বলেন যে,
আধুনক নৈরায়িকেরা ন্যায়শাল্রের ৬৪
ভাগের একভাগমাত্র পড়িয়া পাঠসমাপ্ত
করেন। ১৯ শতাকীর প্রথম হইতেই
ভট্টাচার্যাদিগেরও সেই সঙ্গে সঙ্গে সংস্কৃত
চচ্চার উচ্ছেদ হইতে লাগিল।

যে তিনশক্তিতে বঙ্গসমাজ চলিত, ভিনেরই জামে ধ্বংস হইতে न।গিল, • অথট নৃতন সমাজ গঠিত হইল না। সাহিত্য একেবারে রহিল না; ভারতচন্ত্র ১१७ औद्वीरिक প্রাণত্যাগ করেন। রাম-অসাদ সেন এই সময়ে পরলোক গমন করেন, গঙ্গভিক্তি-তর্ফিণী-প্রণেত। ছগা-व्यनाम् अ डाहारम् अ अन्छ। महाभी हन। Double Governmember সন্মেই ৬৫ °ছইতে ৭২রের মধোট প্রাচীন কবিগণ গভ হন। ভাছাদের স্থান অধিকার करत्र धमन स्माक धिकचारत इहेन ना. (य इहे এकजन तिहत्तन, डाहारमत्र প্রতিভা সম্পূর্ণ বিকাশ হইল না। তাঁ। হারা অভি নীচলেণীর কবিতা শইয়া করভোপ করিতে লাগিলেন মাতা।

আপনারা কি নিধুবাবু, রামবন্ধ প্রভৃ-তিকে ভারতচন্ত্র, রামপ্রসাদের স্থান পাইবার যোগ্য মনে করেন ? ইহাদের মধ্যে একজন লোক ছিলেন, ভাঁহার অনেক উপাসক আজিও আছেন, তাঁ-হার নাম হরুঠাকুর, ইনি ক্বির দল.সৃষ্টি] कटरन ; कवित्र मल शाबी कार्या किছूहे করিতে পারেন নাই, তাঁহারা তুঁৎ-কালীন হঠাৎ অবতার জমীদার ও বাবু-দিগকে প্রীত করিবার জনা উপ ছে ১ মত গান বাধিতেন, তাঁহাদের ক্ষ্যতা ছিল गत्नर नारे, किंद्ध (मरे (चात्र ष्यजा-চার অরাজক ও বিশৃত্থনার সময় তাঁহা-দের প্রতিভা বিকাশ না হইয়া ঐক-পেই বাহিত হইয়াছিল। কীর্ত্তন বাঙ্গা-नाग्र रुष्टि, नाम्नानित शोतरवत्र [धन, কিন্ত কীর্ত্তনরচয়িতা উনবিংশশতাকীর প্রথমে কেহই জীবিড ছিলেন না।

আমি অনেকক্ষণ আপনাদিগকে ভূমিকা
লইয়া কট্ট দিয়াভি; বোধ হয় আপনারা
আমার সে অপরাধ মার্জ্জনা করিবেন।
এতক্ষণ যাহা বলিলাম, তাহাতে বোধ
হইবে যে, প্রাচীন বঙ্গসমাজ ভাঙ্গরা
গৈল, প্রাচীন সাহিত্য, প্রাচীন বিদ্যা
লোপ হইল। উনবিংশ শতান্ধীর প্রান
রস্ত হইল, এই সঙ্গে সঙ্গে বাঙ্গালায়
ন্তন সমাজের ও নৃতন সাহিত্যের স্ত্রু
পাত ছইল। কিন্তু গে সাহিত্য কে
করিল? সে স্ত্রুপাত কে করিল? বঙ্গু
বাসী এইবার ভোমার বড়ই লিজ্জার
কথা। বিদেশীয়দিগের উৎসাহে বিদে

भीवनिरशंव छेशकातार्थ विरम्भीवनिरशंत যত্তে বিষেশীয় পণ্ডিতকর্ত্তক তোদাদের সাহিত্য আরম্ভ হইল। সিবিলিয়ান मिरशत भिकात सना निविश्वानिमध्य উপকারার্থ লর্ড ওরেল্স্লিবারা বল-লাহিত্য আরম্ভ হইল, তোমাদের প্রথম श्रमार्ट्यक मार्ट्यं करवहेव छ करी. আঁর একজন তিনি ভাতিতে উড়িয়া, ষ্টাছার নাম মৃত্যুঞ্জয়। উডে ও সাহেবে বাঙ্গালার সাহিত্য আবস্ত করিল। আবও লক্ষাৰ কথা এই যে, যে এই একজন ব্ৰাল এই সময় পুস্তক লিপিয়াছিলেন. তাহাদের পুত্তক কদর্যা ও জঘনা বলিয়া কুষ্ণচক্ত রারচরিত্র গণা হইয়াচিল। ও প্রতাপাদিভাচরিত বাঙ্গালির লেখা। ছইথানিই অপাঠা।

এইরূপে বাঙ্গালার উনবিংশ শতাকীতে
সাহিত্যের স্ক্রপাত হইল, সাহেবেরা
নিজ্ঞাতিম্বভাবস্থলভ অধ্যবসায়সহকাবে
বাঙ্গালার প্রীর্দ্ধ করিবার জন্য চেটা
করিতে লাগিলেন, কিন্তু বাঙ্গালায় সাহিতোর উরতি হইতে এখনও অনেক
বিশ্ব রহিল। ১৮০১ অক্ হইতে
১৮১৫ পর্যান্ত বাঙ্গালা ভাষার কোনও
গ্রন্থ লিখিত হয় নাই বলিলে অভ্যান্তি
হর না। বাঙ্গালা ঘোরান্ধকারে আছের
হয়া উঠিল, যেরূপ শান্তিম্থাপন ইইলে
সাহিত্য উৎপত্তি হইতে পারে, কলিকাতা ভির আর কোগাও সেক্লপ শান্তি
রহিল না। যেরূপ অবস্থা হইলে লোকে
কড্কটা সাহিভ্যের চর্চা করিতে পারে,

কলিকাভা ভিন্ন আর এমন স্থান রহিল ना। वाजानात अरगक त्रावधानी हिन. विष्णानिकात जातक शान हिन : कत्म সমস্ত আদিয়া কলিকাতার মিশিতে লাগিল। বগাঁর হাজামার সমর ছইতে সমস্ত বঙ্গদেশের লোক উঠিয়া গঙ্গাভীরে বাদ করিতে আরম্ভ করিরাছিল, গদার इरेशात कारम मछारलाटक भून इरेट्डी नाशिन ; वर्षमान, यामार्त, कतिमभूत, নদীয়া প্রভৃতি জেলাব,কত কত পরিবার বে কলিকাত। ও ভল্লিকটবন্ত্ৰী গঞ্চাভীরত্ব স্থানে বাদ করিতে লাগিল তাহার সংখ্যা নাই। ক্ৰমে এই কলিকাতা ও তল্লিকট-বন্ত্ৰী পদাতীবৃদ্ধ স্থানেই সাহিত্যের স্ত্রপাত আরম্ভ হইতে नाजिन। **क्र जात्न (गारक नर्सना दे:दब्बिम्दिशन** गःगर्ल **व्यामि**ड, ग्र**र्वमा नानारम्भी**त লোকের সংসর্গে আসিড, তাহাদের ভাক সকল হালাত করিত, ক্রমে এই সকল দেশে সভাতার আবির্ভাব হইতে লা-গিল: ক্রমে ব্রিটিসদিগের প্রভাগর ভারতবর্ষের সর্বাত্ত বাংগ্র হইতে লাগিল, আমরা এই সময়ের নাম transition period 41 পরিবর্তনসমন্ত বলিব। त्यामन महाचा ताला तामरमाहम ताक কলিকাতার বাস করিতে সেইদিন হইতে পরিবর্ত্তন আরম্ভ হইল, সেইদিন হইছে নুতন স্ট্র স্ত্রপাত रहेन, धरे नेबियर्ड खंधन ह निष्ड हि। किन शतिवर्जनमध्यत्र त्य (य त्राय খণ ভাষা আৰু বৃত্ত একটা প্ৰেণিতে

পাওয়া যার না; এখন আর ঠিক পরি-वर्द्धममम नत्व, ज्यम जक्री माजाहेगा तिशाह्य, हेरदिस्त्रा अहे सना व्यक्ताइन न्यस्टक छैत्रः (वन्रत्वत नगर गत्वन, षामद्राञ्ज भः क्लिप्स 'हेयः त्वत्रल' विष् পরিবর্ত্তসময়ে বছদংখ্য ক ক্ষ্যভাশালী লোক অম্বাহণ করিয়া-ছিলেন, কিন্তু ঠাছাবা সাহিত্যের বিশেষ 'উরতি করিতে পারেন নাই। তাহার। **(मर्भ यादारक कानस्कृतिः.४**क्तिकारिः প্রকাশ হয়, যাহাতে দেশের কুসংস্কার দ্রীভূত হয়, যাহাতে সম্জেন্দন পথে निर्द्धिनारम हिनाट शारत, ভाश्डे कितिया গিয়াছেন। এই সকল গুরুতর কার্যো काशास्त्र जीवन व्यक्ति। इन ध्रेशार्छ; পরিবর্ত্রসময়ে সাহিত্যের बीतु का कहेटल अ (लशालकात कर्का ু বছল পরিমাণে বু'দ্ধ হয়। हेश्द्रक्षि धहे डेडग्र डायाय (लगानडा আরম্ভ হয়, যে সকল মহাত্ম। এই সময় आमार्मित (मर्मित मृथ উज्ज्ञन कतिहा যান, তাঁহাদের জনকারেকের নাম না कतिया, काश्रामत निक्षे वामारमत कुछ-জতা, প্রকাশ না করিয়া থাকিতে পারি-ুঙেছি না। তাঁহাদের নাম করিতে गक्त वाश्राभित्रहे यस कुढळा हात्राम यार्ज रक्षा উচিত। তাহারা আমাদের মাতীয় কুতক্ষতারূপ করলাভের বিলক্ষণ छे नव्य । हे हार्तित मह्या नर्सि श्राम ७ नर्स् अथम गहाचा तांका तागरमाहन ताग्र, ইনি ইংরেজি ও বাজালার শত শত গ্রহ

মুক্তিত ও প্রচারিত করেন। প্রথমস্থাপনকর্ত্তা, ব্রাহ্মসমারের नर्स थ्रथम नना कनः कात्रंक, हेनि नर्स्स थ्रथम ইয়ং নেকল, ইহার ক্ষমতা অপার, ইহার विमा। वाशाध, देशात मा (ममहिदारी ख्राल चात (क् हिल ना। हैनि, দ্যাজ যে ভাঙ্গিয়াছে, তাহা ব্ঝিয়া-हित्तन, गमास (यं পথে याहेदन, जाहाड ব্ঝিয়াভিলেন, এবং প্রাণপণে দর্মপ্রয়ত্বে সমাজকে সেই পথে চালাইবার জন্য চেটা করিয়াছিলেন, ইনি সর্বপ্রথম উৎকৃষ্ট বাঙ্গালিলেখক, ইহা হইতে বাঙ্গালা গদা, বাঙ্গালির অভ্যন্ত হইতে আরম্ভ হয়। পুদা ভিন্ন সাহিত্য হইতে शारत, हेनिहे मर्स अथम लाकरक वृकाहित्र।

বিতীয়, গৌরীশহ্বর—বাঙ্গালার রামমোহন রায়ের একমাত্র প্রতিক্ষী।
বাঙ্গালা গদাের একজন শিক্ষাগুরু,
রামমােহন রায়ের—তাঁহার মতের এবং
তাঁহার প্রাক্ষধর্মের—ঘােরতর বিদ্বেষী,
এবং হিছুসমাজের মহামান্য অগ্রনী।
প্রথম নাই ইউক, তখনকার একখানি
প্রধান বাঙ্গালা সন্ধাদপত্রের সম্পাদক।

ক্ষরচন্দ্র শুপ্ত গদ্য ও পদ্য সাহিত্যের
স্রষ্টা, লেখনীচালনে অবিপ্রাস্ত, তৎকালীন সর্বপ্রধান সম্বাদপত্রের সম্পাদক,
নানা রসপরিপূর্ণ কবিতালেখার চ্মৎকারশক্তিবিশিষ্ট, কিন্তু ইহাঁর আর এক
শুণ ছিল, লেখকবর্গের সে শুণ প্রায়ে
থাকে না; এ জন্য লেখকদিগের সঙ্গে

সংক্ল জাইবেছৰ কাঁবিঙ প্ৰান্ধ লোপ হয়।

ইনি অইবেছক, বিহান, বৃদ্ধিমান, সচ্চবিত্ৰ
ভক্তসন্ধানগণকৈ লেখা লিখাইছে হত যন্ন কবিভেল, এত বোধ হয়, কখন কোন দেশে কোন কালে কোন লেখক করিয়াছেন কি না সন্দেহ। অধিক কি বৃদ্ধিন, দীলবন্ধ, দাবকানাথ ইভার মন্ত্র শিষা বলিলে অসক্ষত হয় না।

ভাছার পাব বেববৈও স্কৃষ্মমোচন चाग। मिरशत (मरभात আজিকার সমাক্ষের নেটর। পরিবর্তন সময়ের মৃত্তিমান ইতিহাস। এই প্রাচীন ৰন্ধান ইহার যেরূপ ক্ষমত;, আব কর-ক্ষাের ভালা আছে? ইনি যাহাতে हेश्द्रक्रिकाच क्रमीत्रातातक महम खारवण करब्र. छाहाब बना (य क्छ (5 है। है कति बाटकन प्रकार केंग्रज नाके। हैकार সঙ্কলিত, ব'চত ও অনুবালিত প্রস্ঞা-বলী একতা করিলে একটি পুস্তকালম इब, डेहात निमानकाल्य Cyclopedia; ৰাখালা সাহিত্য ও ইং-(ब्रिकिनिकात केत्रिक डेगार कीवरनत इति गाविकाबाबमाशीमिटगुव छेरमाइमाडा, अञाकाक्की छ সভায়. स्क्रम ।

ভাহার পর বাদেজলাণ নিজ; ইব্রে বিবিধার্থসংগ্রহ বাজাখাদেশের সর্বা-প্রধান সর্বাপ্রথম সাম্বিকপত্তিকা। বা-লালা ও ইংরেজিতে ইনি,নিজে দক্ষাঞ্ গণা, বাঙ্গালার মঙ্গালে জনা ইহার ভেটার্ভ বিভ্রমান জাট নাই। ইনি বরণেকুলার লিটারেটর লোগাইটি ও কুল বুক সোণাইটার জনাতম লভা হটর। কভ গ্রহকারকৈ বে উৎপাহ লিয়াছেন, ভাহা কে বলিছে পারে। কিন্তু ইনি বাসানা ভাড়িরা একণে ইংরেজি লটরা অধিক বাস্ত হটরাছেন, এত বড় লোক বাসালার লেখক চটলে বাজালার বে উপাকার কটত ভাগা হটল, না, এ জীনা আমরা ছঃগিছ, সলেছ নাই। কিন্তু ইনি ভাবতের প্রাচীনতম্ব আবিদ্যার করিয়া বাজালার বেরুপ্ গৌরবর্ত্ত করিয়াছেন, ভাহা আর কোন একজন লোক বা একটি সোগাইটিয়ারা হর নাই।

পরিবর্জনসময়ের আর একজন প্রধান লেশক নীলমনি বসাক; ইবার প্রকা-বলী অলালি লোকে পাঠ করিয়া থাকে, টনি সবল গদের এক্সলাভা: বখন লোকে বড়রড সংস্কৃত কথা ভিন্ন বাবছার করি-ভেন না সেট সমন্ত নীলমনি বসাক সহজ গদা লিখিয়া পাটি বাজানার ক্রুদ্ব ভাষ-প্রকাশক্ষমভা আংচে, ভাছা লোককে দেখাইয়া দিয়াছেন। তাহার নবনারী আক্রিও বাঙ্গালি স্ত্রীলোকের উৎকট

एक केंग्स शेक्त । केंनि दक आणि कार्नि ना, आनियाद तृति छेणात्र आहे ; किंद देशा बिक्क पूर्णकावनी आमता वाना-कारन गाठ किंद्रश (य. केंक्क छेणकावनाक किंद्रशाहि, छोकी विनय्क गाहि मां। शिंद्र-वर्तिन मेमरबाह हैनिक केंक्केंस ध्यान रम्भक के मेरवाहक है हिहास मेक्ट्रिक महा- had many imitators and certainly stands very high as a novelist; his story might fairly claim to be ranked with some of the best comic novels in our own language for wit spirit and clever touches of nature."

তভোষপেটাও এই পরিবর্ত্তন সময়ের
একটি মহার্ঘ রক্ত; 'ইহাতে তৎকালীন
সমাজের অতি স্থান্ধর চিত্র আছে,
চলোম হতোমীর ভাষার প্রবর্ত্তক এবং
বচসংখ্যক হতোমী পুতকের আদিপুরুষ। বোধ হয় মৌশিকভার তৎক

वेशास्त्र अत्र मःकृष्कात्वरकत मन। भगनत्याह्त छक्तानकात, छात्राभकत, वह-অ'গার উত্তম নাটকের প্রবেতা, অত্ ৰাদক শীৰামনাবাৰণ ভৰ্কবত্ব প্ৰভৃতি वहमार्थीक (मधक एवं नगर नाक्र करतक इहेटँड वहिर्गत इस । हैहाबा हेर्दिक छात्र बीकालाब वाक कविटलन না। সংস্কৃত হটতে ভাবমালা সংগ্ৰহ कतिया देशां वाला नित्क छेलकात्र नि-(क्या हेशामित कड (मारकत नाम विवित १ अकरणहे शृक्षाशाम, अकरमब्रे निक्र वालाला बाबाकोत्रत्न वासा । देश-वार्वे काशी अमझ मिश्ह मह्वातरबन महा-णात्र असूबाक दविता आभगोविशदक थ निश्क् मद्भाषपदक क्रियम्बद्गीत कतिया-(६न। मामामि भावकरक मगाव तब-

ब्रामितः व्यक्षिकाती कतिका निकाटकना वैद्या-क्षत्र महत्त्व मर्साशनी अवन कि পরিবর্তন मभरवृत श्रधानरम् । পश्चिष्ठ केचन्रहत्त विकामिश्यात्वय नाम GUAR AT TE नाहै। देनि ध्वा ध्वमह, हेनि व ৰাঙ্গলিকে লেখাপড়া শিখাইৰাৰ জন্য কত চেইা করিয়াছেন, বাঙ্গালায় শিক্ষা-বিভাগ ভাগন করিবার সময় যে গবর্ণ-্রেণ্টকে কভ বিষয়ে সাহায্য করিয়াছেন, ভাগা সমস্ত খুলিয়া লিখিতে গেলে এক-খানি বৃহৎ গ্রন্থ হয়। ইনি সকা প্রথম বাঙ্গালিকে বিশুদ্ধ বাঙ্গালা শিখাইয়াছেন, ইহার কথামালা ও চিরিতাবলীর ভাষা यनि वजीव गरा श्रधान त्नवक छ भएछन. আনেক উপকার লাভ করেন। ভাঙার পর ইহ'ব নিঃস্বার্থ দেশছৈতৈবিতা, ইছার च थार्वम श्री ♦ का, चाशी महाव. तिभी व मध्य युवकवृत्सन चानवंशक्य इत्रा डेिड १

পবিবর্ত্তন সম্বেষ লোকে যে, শুদ্ধ
নিজে নিজে সঞ্চল কার্যা কবিভেন
অমত নকে, উন্থানের সম্বেত কার্যাও
ছিল। এই সম্বেত কার্যার মধ্যে তব্ত্তিকী সভা প্রধান। তব্বেবাধিনী সভা
করতে ভব্বোধের জনা ভব্বোধিনী নান্মক পত্রিকা প্রচার কর। প্রীযুক্ত বাব্
অক্ষয়কুমার করু এই ভব্বোধিনী পত্রিকার সক্ষাক্তা করিয়া জাপনাকে
চিরম্মরণীয় কবিয়াছেন, ও কেন্দের
কর্তিব্যারণীয় কবিয়াছেন। ভব্ত্তিবাধিনী পত্রিকা ত্র্তাব্

একটামাত্র সভার কাগজ হয় ন।ই, উহা তথ্ন সমস্ত বাজালায় ইয়ুরোপীয়ভাব প্রচারের মিসনরি ছিল, উহা ভারত-ৰধীয় ধৰ্মসমূহ সম্বন্ধে কত যে নৃতন আবিজিয়া করিয়াছে, ভাহা বাঁহারা তত্ত-বোধনীর আদ্যোপান্ত পড়িয়াছেন,তাঁহা-नारे विलाखें शास्त्र । यात्रालिस १ इतन रेषत्र मध्य हेरदाकी छाव ध्यरवण कदान স্ব্রিথম অক্ষরকুমার দত্তবারা সাধিত হয়। তিনিই। বাঙ্গালির সর্ব্ব প্রথম নীতিশিক্ষক; তাঁহার চারুপাঠ, ধর্মানীতি বাহাবস্ত প্রভৃতি গ্রন্থ বিজ্ঞালোকেও পাঠ করিয়া নীত্যাদিসমকে জ্ঞানলাভ করিতে नानरकवा धडेगकन পাঠে কতদূর উপক্বত চয়, তাহা বলা যার না।

এই সময় কবিওয়ালারা,যাত্রাওয়ালারা বিশেষ পাঁচালীওয়ালা দাশরগী রায়, বালালাভাষার পৃষ্টির পক্ষে বিশেষ সহায়তা করিয়াছিলেন।

আমরা ক্রমে ক্রমে প্রিক্রিন সময়ের প্রধান প্রধান প্রধান নেতৃপণের নামকীর্জন করিলাম, ইগালের সকলেরই উদ্দেশ্য এক ও মহৎ, ইংরাজীভাব বাঙ্গালির অন্থিমজ্ঞার প্রবেশ করান। একালের শিক্ষিতস্প্রাদার এই কার্য্যে এত খেপিয়াছিলেন যে, একজন অভিস্থানিক ব্রক—তাহার নাম আমার স্থান নাই, তিনি ইস্কুলের মাইকে ছিলেন, এবং ইংরেজি বিদ্যার বৃহক্ষতি ছিলেন—

त्राच्छात्र छिनवात अनव गूटि, व भक्तुत, मूनी, इन्डलाक, याहारक मिलिएकन, তাহাকেই বলিতেন, ''গোরু খাবি, " "গোরু খাবি ই'ভাহারা গালগোলি দিত। লোকে বিজ্ঞাসা করিলে তিনি বলিতেন, "ওরাতে পাবেনা জানিই, ভূবে রোজ রোল ভনিতে ভনিতে শেষ idea টা shocking इडेटर ना " क्रकेतरम भूत्वाक महाद्वागन के हेरताभीय ভাব সকল (দশমধ্যা প্রচার করিয়া ्षित्रच । ्थतिवर्धभन्नसाम्बद्ध খাজিও অনেকে জীবিত আছেন, তাঁহারা यमि (मकारलत लाटकत मरनत कथा বুলিয়া দেন, তাহা হুটলে আমা অংগেকা ভাঁহার৷ অনেক অধিক ৰলিভে পারি (वन।

ভবে স্থাতঃ পরিবর্তন সময়ের কাল এই গুলি:—ভাষার সৃষ্টি,গাদ্যের সৃষ্টি,হিন্দুশ কালেজের ছাত্রগণক পূঁক ইংবাজী ভাবেব প্রচার, ও সংস্থাত কালেজের ছাত্রগণকর্তৃক সংস্থাত কালেজের ছাত্রগণকর্তৃক সংস্থাত কালেজের ছাত্রগণকর্তৃক সংস্থাত কালালকার উৎসাহ ও উন্নতি, বাঙ্গালা সাহিত্যের কোরকের উৎপতি। এখন দেখা যাইক এই স্কর্যার শুকার কিইলা পুর্বেই বলিয়াছি পরিবর্ত্তন এখনও চলিভেচে; পরিবর্ত্তন সময়, অমুবাদেব সময়,শিক্ষার সময়, বড় বড় চিন্তাশীলগণের সময়, আমরা যাহা হইয়াছি ও ইইতেছি গাহাদেরই কুপার, উহিদেকই অধানসামের অবে উছেদেকই

পরিবর্ত্তিশাধন করিয়া তুলিয়াছেন, এমন পরিবর্তন কি আর কখন হইরাছিল, তাঁহারা যে, সমাল, যে সাহিত্য সৃষ্টি করিয়া দিয়াছেন, এমন কি কথন হইবে ?' যত ভাব ·সমবেত পরিশ্রে বাঙ্গালার ছড়াইরা পড়িয়াছে, এত কি আর কপন কোন • বেশে কোন কালে ছডাইয়া পড়িয়াছিল ? অনাকার বুবকগণ এই পরিবর্তন সনম্বের দক্ষণ মত উপকার পাইরাছেন, এত কি কোন দেশে কোন কালে কোন যুবকদল পাইয়াছেন ? এরপ আশ্চর্যা शतिवर्छ देडेदबार्थ अकवात इटेबाकिन; কিন্তু ইহার সহিত তুলনা করিলে সে অতি সামানা। যখন ১৪৫৪ রণতৃত্বদ ওসমান্থালি মহত্মদ त्वाम पथन कतिया काल्यात्व उठताधिः ঁকারিগণকে সাম্রালাচ্যুত করিল, সেণ্ট স্ফির গির্জাকে মৃদ্ধীদ করিল দেই সমর্গে ব্ধন ন্তন রোমের পণ্ডিতবুল বিনিদ-সাগরপারত অধ্যাবদমীদিগের निक्र निरंबत विना गर्देश शनाइन করিয়াছিলেন, তখন একবার এইরূপ পরিবঁর্তন ইউরোপে ঘটিরাছিল, এইরপ °নুত্ৰভাবে লোকে উন্মন্ত হটয়াছিল, लारकत महन बहेज्रभ धकरे। छीयन গোলমাল इडेग्राहिलं, এडेक्स उरमाइत महिन त्वादक मुडम विमा। निविद्ध धवः नृष्ठम माहिका शृष्टि कतिरंक कुछत्ना-भी रहेबाहिन। किंद्र आशास्त्र व शक्-ব্রনের সহিত তাহার তুলনা হয় না।

তখন শুদ্ধ গ্রীকদিগের সাহিত্য পুনঃপ্রচার হইরাছিল মাত। কিন্তু এখন বাঙ্গালায় কি रहेबाह्य धकवात (एथ (एथि ? आहा পাশ্চাত্তী সমস্ত বিদা৷ বাঙ্গালির সন্মুখে অপিনাদের ওপ্তভাতার প্রকাশ করি-ভেছে। এখনকার ইউবোপীয় সাতি-ভোর সহিত ভুগনা করিলে তথনকার ঞীক সাহিত্য ভূচ্ছ পদার্থ, তাহার উপর আবার সংস্কৃত সাহিতোর পুনঃপ্রচার আছে, বৌদ্ধ সাহিত্যের আছে। দেখ দেখি একবার কত অগাধ ভাঙারের আমরা একেবারে অধিকারী হইরাছি। এত সম্পদ কাহার ভাগ্যে ঘটে ? একদেশে আর একদেশের সা-हिछा आठारत महाविश्व घरहे। हे:ल-তের সাহিত্য ফুান্সে গিয়া গতশ্তা-নীতে এতকাণ্ড করাইয়াছে, আর আজি व्यागात्मत्र (मार्थ हेश्या खत्र, कुर्यमत्, कर्यः नित्र, हेजानित, आठीन हिन्मूरमत ও शा-চীন বৌদ্ধানিকের সাহিত্য উপস্থিত। আ-মরা এক এক সমরে এই অ্গাধ সাহিত্য-कार्नि डिहा कतिएक कतिएक विक्तन इरेबा পড়ি। এইস্কল সাহিত্যের সকল পুস্তক •ভাল করিয়া পড়া অসম্ভব। **অভ**এব প্রত্যেক দেশের সাহিত্যের যদি চারি পাঁচ খানি ক্রিয়া উৎকুষ্ট গ্রন্থ বা 'মাষ্টার পি ১'' পড়ি ভাষা হটলে দশবৎসর কাটিয়া যায়। বাস্তবিক এত সাহিতাও একেবারে এক অস্ত্রসাচ্ছর দেখে উপপ্তিত হয় नाहे, व्यात এই সাহিতা-नहेबा चावत कतिएड शास्त्र, हेब्रस्टबन्न

क्ति अपन काछि कात कथन इव नाहै। चात अंडे जकल नानारमणीय जार अक कतिया मुक्त रुष्टि कतियात विवाद हैतः বেক্লের ফত স্থবিধা,বোধ হর আর কোন (मरमंत्र लारकत कथन এछ इत्र नांहे। গ্রধান স্থবিধা, সমস্ত দেশে শান্তিস্থাপিত चाट, (काथा (कान शानदाश नांडे, প্রাণ ও ধন সম্পূর্ণরূপে সুরক্ষিত হটরাছে। মুদ্ধের লেশমাত্রও নাই,অমীদারের অত্যা া চার লাই কুসংস্থাবাপর গুরু পুবেভিতের व्याशना नाहे, याशीन हिस्तात वााधा ह (मत अमन किडूरे नारे। पाधीन काटन, क्न শাসন,শান্তিরকা, বিচার কার্যা প্রভৃতিতে নিৰুক্ত হেতৃ কত কত মহাপ্ৰতিভাশাণী লোকের প্রতিভাবিকাশ হইতে পারে না। ৰাঙ্গালির অনুষ্টে এ সকল কার্ষোব জনা ইংরাজ আছেন। বালালি ইচ্ছা করিলে नित्रांभरत (मर्भव श्रमा निर्विदारम জের ও সাহিত্যের উর্ভিত্তে সমত্ত भागितमकि वात्र कविष्ठ शास्त्रम। वाकालाद मर्खा है:वाकी विकालाद करे দ্বাছে। ২০।৪০ বংসব পূর্বের কুলকাতা ্ভ ভরিকটবর্তী গঙ্গাড়ীরত, প্রাচ্পনাৰ সভাছিল। এই আলেশ্যাত ন্তন সমা-Cकत स्थि इतेत्राहित अवेषात्म शास সাহিত্যের অভ্র কার্যাছিল, একাবে সে সভাতা, সে ন্তন সমূভ কেঁসা-हिंडा मर्सक विश्वादित इंडेग्राइ, अति - নিভূত অকলমধোন্তন সমাল ভাপিড ज्ञान (मनिश्क इट्टेंदि, क्षेत्राष्ट्र । बाक्षाणि देशश्यक्षण असम व्यविधाः कि

কাৰ্যা করিছেছেন। জুঁছোরা নৃত্ন সাহিত্যগঠনে কতন্ব ক্তকাৰ্য ৰই-রাছেন, নৃতন চিত্বাজোতঃ কুজন্ব চলি-রাছে, তার যাহা ছইরাছে ভাছা হইছে কুজনুর আশা করা যাইতে পারে।

আমরা মাটকেলের তিলোভনাসভব প্রকাশ হউতে ন্তন সাহিত্যের উৎপত্তি ধৰিয়া লটৰ। যদি টছার পূর্বে এরপ নুঙন সাৰিভোর কিছু থাকে, কেছ আ্যাদিগের গেই স্থান্ধকার দুর করিয়া দিলে একাস্ত বাধিত হটব। ভিলোক্তমা ১৮৬॰ সালে প্রাচার হর, ভাচার পর বিশবৎসরমাত্র অভীত হই-রাছে। এই কুড়িবৎসরে যে সকল আই রচিত হটরাছে, ভাহাকে সাহিত্য'বলিছে ভাষৰা কিছুমাত্ৰ কুট্টিত নহি। সাহিত্যের যেরূপ বুঁদি, বেরূপ ক্রত উন্নতি ভাষাতে ইহার পরিবামসম্বন্ধে অধীম উন্নতি আমাদিগের ক্সিরনিশ্চর। আমাদিপের এই বাল সাহিতাকে সাহিত্য निहा गर्क कविवात ଓ हेहाते छावी পরিগাসসহকে নানারপ আশা করিবার नित्मव कारनं अवाह्न, व्यक्ति अव লার নিজের কথা নছে, অন্ধবিধান नरह, दुशा काम नरह, यथन चाहेवश्तर পূৰ্বে এই বাঙ্গালাভাষায় ইতিহাস লিখিত হ্টয়াছিল, তপন বলগাহিছোর ইভিহাস লিখিবার সময় হটয়াছে ৷ ভাতার আটি-वरगत शास्त्र कड़ने अप निविष्ठ १रे ब्राह्म, दक्रांव आमंत्री त्महे माहित्ताव आहत्। गर्क कहित् , जान्हरी किन् विश

ভীর আর্থাভায়। সমূহের ঔপমিতবাা-कत्रवकात मेशमिछ वीमम माट्य मण-বংগর পুর্বে বঙ্গীর সাহিত্য সমালো-हनाटक विवादकन। "That the Bengalis possess the power, as well as, the will to establish a national literature of a very sound and * good character cannot be denied." चात्रक भूष्णाञ्चांनद्यात्वा, विश्वाणीन, এীবুক বাবু ভূদেবচক্র মুখোপাধ্যার মহা-मंत्र विकार्कन, ''ফ্ল কথ। সভাষুগে সরস্বভীসন্তান ব্রহ্মর্থিগুণ যে কার্য্য সম্পর করিয়াছিলেন এই যুগে ভাগীরণীসম্ভান-দিগের প্রতিও সেই কার্য্যের ভার সম-र्भिक बहिसारक। देहाँ मिराबहे (मर् পূর্বাশিতুগণের পুনরুদার সাধিত ছ-हेंदव ।"

এই করবংগর মধ্যে কত নৃতন-পৃষ্ণক হইরাছে, কত নৃতন পরিবর্ত হইরাছে, এবং এট সকল পৃষ্ণক ক্রমেই উৎকুট্টতর হইতেছে, পরিবর্তে ক্রমেই দেশের অধিক মঙ্গল হইতেছে।

আখার বাধ হয় সকলে অধীর
হইরাছেন, কিন্তু আমি তাঁহাদিগের নিকট
বীরতা জিক্ষা করি, আমি নিয়ে অনেক
কথা ছাড়িয়া দিব ছির করিয়াছি,
বাহারা এই দশবংসর মধ্যে নানা সংহত ও ইংরেলি পুস্তক অনুবাদ করিয়াছেন, তাঁহাদের কোন কথা বলিতে
পারিব না। বাঁহায়া নানাবিধ সুসর্ক
নিথিয়াঁ ভির্লাইভি বালকর্কের মনে

मानाविश ভাবের উদ্ভেক করিভেছেন, ভাঁছাদের কথা কিছু বলিতে পারিব म। याहात्रा हेश्टब कि विकास अञ्चलक করিয়া দেশের মহতী শ্রীবৃদ্ধি করিছে-ছেন, তাঁহাদের কণাও বলিতে পারিষ না। বাহার। চিকিৎসাশালের নুত্ন মত আবিকার করিয়া, অভুবাদ करिया ও अठाव कतिया (मनीय मिनाक नानाश्चकात्र विककत এवः श्वाद्यासनीत विषय शतनित्राभक कतिराज्य के, छाइा-मित कथा विनष्ड शांतिय ना, बात्रकानाथ বিদ্যাভূষণ প্রভৃতি যেসকল মহোদরগুর বঙ্গীয়দখাদপত্রের সম্পাদকতা করিয়া দেশের সুখোজ্ঞ্য করিতেছেন ভাঁহা-নামও করিতে পারিব না। বিষ্ণু ও হুৰ্গা শিব লক্ষী প্রভৃতি পূজার পূর্বে 'আদিত্যাদি नन्धार्क्छाः" "हेक्सानिक्षनिक्शारण्डाः" ফুলচলন দেওয়া হয়, সেইরপ তাহা-(मत्र निक्रे आमारमत्र क्रब्छा । श्रकाम कतिया युक्तवा विषया व्यवजीर्व इटेव। এরপ সংক্ষেপ করিবার আরও একটি কারণ আছে; আমি কুদ্র মামব, আমি ভাঁচাদের ও ভাঁচাদের কার্য্যের সহিত পরিচিতও নহি; আর আমি তাঁহাদের পূলাণ্ডতিও বিশেষরূপে অবগত নহি। অভএব ভাছাদের নিকট কৃতাঞ্চলিপুটে ক্ষমা প্রার্থনা করিয়া আমার নিজ वक्कवाभाष गमन कति।

আমাদিগের প্রথম লেখক মহাকবি মাইকেল মধুহদন দত্ত, ইহার জীবনে

18 देहात भाषा कात्मक त्रीमाष्ट्रमा। बीवरन উष्ट्र्यन्डा, याथीन हा, न्यारबन প্রতি সমূহ অবজ্ঞা, প্রস্তেও তেমনি সমস্ত क्वनाव दक्षमाक्ता कवि यामानिशक छोडात क्षथम प्रदेशनि शास्त्र माधा चर्न, नत्रक, जृत्नाक, ज्रातीक, श्रतीक, प्रव (प्रशाहेकार्ट्स ; जेबाडकहाना डेकाम छारत ममख बन्नाए प्रिन्ना त्र फाठेशार । हेनि श्रकत कांगांत्र वारणत्राकनती हित्तन, ইহার মনোমধো নানাজাতীয় ভাববাশি চারিদিকে ঘুরিয়া বেড়াইত, ইনি ভাহা-রই মধ্যে কতকগুলি ধরিয়া কতকগুলি उँ कुट्टे शह निभिन्ना निमा निमाटन. ভাঁহার প্রস্থ বহুকাল কেহ অভিক্রম করিয়া উঠিতে পারিবে না। তাঁহার जिलाखमा कि काता ना महाकाता, ना খণ্ডকাৰা ? আমি বলি উহা স্বৰ্গীয় কাৰা, ना इत्र विन উश উन्धारमत कावा ? তাঁছার পলাবতী ও ক্লফকুমারী অত্যং কুটু নাটক, তাঁহার বীরাসণা গীতি-कार्या संयुक्तरपदत नमकानीत, छाहात बीबाक्रमा बीबाक्रमाशालब मम्पूर्न यात्रा-भाव। शुर्कारे विवाहि, तम (मनाय-বাহাত ভাবরাশি তাঁহার অন্তরাকাথে খুরিয়া বেড়াইত, তিনি তাহাদিণের করেকটিকে একতা করিয়াছিলেন মাতা। সেট সত্য, কারণ তিনি সমর্ত কাব্য मत्व पृष्टेवश्मदत्रत्र मध्या निशिश्चाहित्नन, ুজার কুত কত ভাবমালা সে তাঁহার মনে ছিল, কড ভাব যে তাঁহার নাং-नादिक चनचात्र कता मटनके मिलाहेंता

গিয়াছে, কভই যে ভাঁছার অকাণমৃত্যু- , চেতৃ বিকাশ পায় নাই ভাহা কে ব-লিতে পারে ? ভাছার জীবন শোকান্ত-গ্রন্থলিও সেই-মহাকাষা, তাঁহার মহাকাবা: তাঁহার শোকান্ত এক একখানি গ্রন্থ এক একখানি রত্ব বা এক একটি রত্বর্থনি। কন্ত কবিই যে উহা ভটতে রক্সাশি লঞ্ম ক্রিয়াছেন, ক্রি-: ভেছেন ও করিবেন তাছার সীমা নাই। छै। हात शहमन इंडेशानि आजि अह-সনের অগ্রগণা, তাহার ন্যার স্কভো-মুখী প্রতিভাশালী বাক্তি অতি বিরল; যগন যে ছেশে এ প্রকার প্রতিভা বিকাশ হয়, তথন সেই দেশ ধনা ও পৃথিবীত আভিসমূহমধ্যে মহামানা इस् ।

নাটকেলের সঞ্জ সঙ্গে আর তুই জন কৰি मूरशाब्दल. বলদেশের করিতেছেন।মাইকেল কালগ্রাসে পতিত হইয়াছেন, তাঁহারা আজিও জীবিত আছেন। হেমচক্র গীতিমালার দেশীর লোকের মধ্যে প্রথম উচ্চতর ভাব প্রবেশ कदारेबा निमाह्म, छाशाद कविजावनी অতুলা পদার্থ; উহাতে সতা •সতাই মন গ্লাইয়া কবির অভিন্যিতপথে চালাইরা দের। ভালার বুত্রসংহার यरमभहिरेख्याय भविभून । जिनि मारे-क्टलब भिवा, वुखगःशाद माहेकन ठीहात स्वानर्णञ्चा । वाहरकरनत (वच-नाम जाराका कीदाव वृद्धमःश्राप द्वान (कान जरान निकृष्टे इट्राय क्रेडा वर्ग-

बानीत अधिक छत्ते आवरतते विनिय, উशास्त्र गोदेरकरतत रेकामकत्रमा गा वादिशत केंद्रात चामाछ जक्छारन স্থাররণে এছিত। হেনচজের বুত্ত ও क्तिष्ठानती दङ्कात वात्रालात छाधान भूककमत्भा भगा भाकित्व। यङिमग ৰাঙ্গালা ভাষা থাকিবে, ততদিন উহা-"দের নারু নাই। ছেন্তক্ত ইংরেজি উৎকৃষ্ট গীতিকাবাগুলির অনুকরণ বা-লালায় করিতে এতদুর কুতকার্যা হইয়া-(इम:स,त्नाभ इत व्यत्नक इत्त छिनि काता-श्वरंग छै। हात्र चामर्गरक चाटिक्रम केति-शास्त्र। छीडाव शत्राव छेटल व छेकान অপচ হুগঠিত প্রতিভাব হুন্দর বিকাশ।

ম:ইকেলের সম্পাম্থিক বিতীর কবি कक्ताल, देहात भूषानी छेश्कृष्टे एक चारत्रत छ।वनानात्र भेतिशुर्व; উदारक শ সার্বাপন হিন্দ্রহিলার সভীত ও দেশানু-রাপ প্রিরাঞ্রাগ প্রকাশ করির। দিয়া-ছেন"। সাধীনভার মোহিনীশক্তির ভটা (मभावेता मित्रारक्त। देनि वक्ताला-वित नन्। विं काःत लिट्यन मा ; कि छ रैंडात कविष्यांकित ଓ कारानिश्रममन एात कि स्थाज न न रा देश गारे। ois' बरमञ्च इहेन, वत्रमंप्रत होत गीडि-কুত্ব: লালিনামে কতক ওলি কবিতা ণিখিয়াছিলেন, ভাষার মত পরিকার रे: दिवा वाहादक smart, बदन दक्षमा किनिया आतं कथन दम्भि नाहै। छात्रात ক্ৰিছার ব্যায় ঠিক পোপের মৃত। गतिकास व्हिक्स आवड गराक् जन्मूर्व।

বাব্ নবীসচন্ত্র সেন বহুসংগ্রহ কবিতা লিধিরাছেন, ইইরে প্লাশীর বুদ্ধ
বীররসপূর্ব কবিতামালার পরিপূর্ব। তাঁ
হার নরাণী ভবানীর চরিত্র আমাদিগের
হালর প্রথবে চিরুম্বিত গাকিবে।

हेर्दे: एवत शत भीनवक्त, हेनि जियब-শ্রংপ্রক চাতা। ঈশ্বরগ্রের হাতের তৈ নারি; ইহার উপর ঈশবচন্দ্র গুপ্ত যত ক্ষমতা প্রকাশ করিয়াছিলেন, এত আর काहाद छेनत नार्दित नाहै। मगाविधि काकरन देनि कविजीय, दे श्वात नश्नात ध्वकामनी ७ सागाहेवातिक मगाद्वत **७**९क है किया। नमाटक काय क्या देश तिहै तिविक वान कतित्व इहेति वृष्ठ দুর সন্তব, ইনি ভর্দুর অতির'ঞ্জ করিতে পারেন। ইহার লীবাবতী অপূর্ব भगार्थ। हेश्टर कि निश्वा हैश्टरकृत উৎकृष्ट नियमानि वासूकद्राण जाकम इरेशा অপত প্রাচীন সমাজের সমস্ত বন্ধন ভিন করিয়া তৎকালের যুবকগণ কি-क्तरण व्यथः गाटक बाहेरकम, मीनदच्च দে সকল বৰ্ণনায় অবিভীয়। তাহার ्नात्वत है। प ७ • (इनहैं। प, छै। हात्र व्यवेश ७ नियान व कजनात छे ९ क हे ए छ । छाहाब गीनमर्गान ममाद्यात कल खेलकात कति-য়াছে, কিয়পে অভ্যাচারী পাণাশয় नी न क बंगान इ थिकि लाटक व विषय छ। य ব্দ্ধিত করিয়াছে ভাহা কাহারও অবি-विक गारे। छाहात्र विषत्र आत्मक विन-वात रें छ। हिल, किन्ह छ। इरेश पूरि " अञ्च वाष्ट्रिया यात्र।

देशात शंत दक्षिमवातू, देहात इटर्गण-मिलिमी, क्लानक्छना, मुनानिमी, विव दुक्क, हक्क्षरमंत्रक, दक्षकी, कुकाकारखंड **छेहेल ७ कम्लाकारमञ्ज पश्चेत्र, धक** कंक्यानि এक अक अकुष्ट श्राप्त । हेहैं। व अध् अनित উत्मना दय, वशीयशाठकवित्रव मचुर्च এक अंकिंग डेश्वृह भूक्य छ द्धेरके नाशिष्ठ वेळ (मनान करा आहत अर्भश्यके इहेटल ए। इति ए वार्या আছভিচত ভাহারও চিত্র দেখান, তা-হার প্রভাপ পুরুষশিহোমণি, যেমন विक्. (स्थम विकात), (यमन कर्याक्रमत), তেমনি উচ্চতর প্রেমাকাজনার পূর্ব, আ-ৰায় ভেমনি ধর্মাপণে মতিমান্। পুরের রামায়ণ ও মহাভারত বলীরযুগককে বে সকল শিকা দিও, আলি এই পরাধীন দেশে বন্ধিনবাবুর পুত্তকগুলি প্রীক সেট শিক্ষা দেব : উল্লেখ্য কমলা-ৰাম্ভ আৰু কেই নতে, একজন স্থানিকিত চিত্রাপজিসক্ষর বল্পনীর সময়ত অন্ত (माक्ताशदात शहीत त्रमुत्त्रीतवनात : "किमि क्षम क्षम देशु क्षम," करे शीरहत या। भाष्ट्रं क्यता कार्यं व्यूत्रं त्यं गामा, মুসপুর্ব অপুর্ব্ব কারাকলাপের সৃষ্টি করি য়াছেন, ভাছাতে বাঁচার অদেশাসুরাগের প্রভুত প্রমাণ পাওরা যার। . তাঁছার कृषामुबी, आद्यमा, समडा, लुलिक-लदक-লভা, এমন কি ভাহার ক্রণনী, থীর, (बाहिनी इहेटल बामता छेदल्हे मीजि-शिका शाहेब: थाकि। नीकिशिका केंद्रवा

ह २९कात, विश्ववायुत्र श्राष्ट्र प्रकृतिविश्वयु रवंता काछ दिइन, माडे दिनारमण इत्र। **बिद्ध ध**रे कब्रमानि वरे सहेबा विक्रम বাবুর সমালোচনা করিলে, ভারুরে উপর শুদ্ধ অবিচার করা হর মাতা। তিমি । (यक्त निज्ञात पात पात पात पात निक्, मन, लान উংদর্গ করিয়াছেন, এত বোধ হয় ভারে (कहरे करत नारे। छीशत वन्नमर्भन বছদেশের ও বঙ্গাহিত্যের বৃত্ত উর্তি-সাধন করিয়াছে, এক বোধ হয় আর (कड कथन करवन नाटे, टेड्राट्ड यहिय शातूर्व प्रव बना इहेन गा। हैनिड जेचत्रकाश्वत चार्कत्रकत्रकः स्निकिष युवक्युनारक यत्र छ।यात्र विश्वास्थात्र समा ৰিহিত যত্ন করেন। এখনকার লেখক-বুল বৃদ্ধিবাবুর নিকট যত ঋণী এত (वाध इस व्याद काइन्द्रेश निक्षे मध्य। क शाहीनवहाम नानातान माहीविक মনেসিক, সাংসারিক যন্ত্রণার মধ্যে ডে-পুটি মাজিট্রেটের শুরুত্র পরিপ্রামের উপরও বঙ্গনাহিতোর অন্য ইহার চিত্তা ७ शक्तिसाम विश्वति नाहै। 'वस्त्रमान दाकालि (न देशदिकिनिकाम कि इहेबारण, **"**डाहा अम्पूर्गद्वरण रमभाहेबा रमेखा बरेबारक, कालानि त्य हिन्दाभीनवार्ष মুক্তিশীবভার কাব্যপ্রসঙ্গে খনা জাতি चालका होन गर्ह, छाड़ा विसमन व्यक्तिश्र कृतिया (प्रवयं। इटेबारक। किन विश्वीवावृत्र कथा गरेता आत अधिक वाध्यान्त क्या व्यामात्र नाटक निवास অতি অন্ন প্রশংসা, উহার কৈছি অতি । অন্যায়। অভিনধার হৈত্যক উপুভারার্থ

যে সকল কার্য্য কবিরাছেন, করিতে-ছেন ও ঈখর তাঁছাকে দীর্ঘায়ু দিলে বাহা করিবেন, তাঙা অনো বলিলে বত সালিবে, নানা কারণে আমার বলিলে তত সালিবে না।

रक्रमर्गटनत (संगामित वानाएमत (मर्म আর চারি পাঁচখানি উংকৃষ্ট সাময়িক शक्किका इनेबाट्ड । देशात ग्रामा व्यार्था मर्गन क्षिष्ट्रमिन पुरिया वात्रालि मरणत वड़हे ब्रिक्नाब करेवा डिजिया छिन । चार्न मर्नदन (मध्मत मध्म भवनिवाशक छात्र हिसी-श्टमत क्या नामाधकांत्र यञ्ज कते। इह-वाडिन । देशव ध्ययांन ताथक मण्यान क व्यारमञ्ज्ञनाथ विकास्त्रमन निक्क उत्रः পুর্বচক্ত বস্তু। সম্পাদক মিল ও মাটে निनित्र कीयनहित्र निभिन्न यश्रवागीत है है देश देशक के देश में अधान (में होते मर्गत मरभा कारवनाधिकात निवादकन। भून-চল্ল বল্ল বল্লিমবাৰুৰ জীচরিত ভলির . इ.स.च्या परिकास करिया (मनावेशा रक्षर्थ উচ্চতর শ্সমালোচনার স্তুলাভ করি মুচ্চেন ৷ বৈলেলিয়ে বিভীয় সাময়িক-প্রিকা বাদ্ধন, ইহার প্রাভাব আনা-(मृत o अक्षारण छ छ अधिक न हे, कि हु চাৰা প্ৰাভৃতি অঞ্লে টহাৰ প্ৰাভাুৰ শক্তার অধিক। ইহার সম্পাদক মনীযা-় मन्त्रकाली शम्ब (धार विलक्षण मर्केडा गहकारत প্রিकाशका क्रमकार्या मन्नाकन कतिया आंतिएक्टंबन । वेश्ट्राबिएक या-स्थल benned man बत्य, जामात्तव थ अक्श आर्थका शुक्रक्ति । धरेक्र

ल्लाटकत जरभा कश्विक, चात्र कानीक्षणत बाबू बड़े अकम learned त्मारकत्र अधानी, ভাঁহার লেখার জীবস্থভাব জ্ঞান্ত রচনা। তাহার স্ক্যেজিগণ্ডে আহা বিশেষ জানি না, যাহা জানি, ভাছাতে জাহা-मित्र गर्भन्ने छत्रमा चार्ट य काली প্রসর্গাবুর সহযোগিগণের মধা ভটাতে व्यान के देवहार ज्ञानक छिरलत कहें (वस । আর একখানি সামপ্রিকপত্র ভারতী, এগানি যে:ড়াসাঁকত ঠাকুরপরিবারকর্ত্তক প্রকাশিত, ইছার ফুট মার্জিচ, ভাষা ল-निष्ठ। देशव कार्या श्रामी सुन्छ ह बेहा कथन वाकी लएए ना, गकत का-পঞ্চ এক বংসর ভূইবংসর বাকী পঞ্জি-शाहि, किन्न छ।वडीव नाकी नात्रे। **এ**डे পরের সম্পাদক বিচ্ছে सगाथ ঠাকুর, हेहैं(व शिर्ष व श्रष्टान जी व्यक्ति स्माम) ख्यश्वार्थ हैश्व क्य्रनामक्तित व्यानक मृव भोड़ (मशिट भावता यात्र। हेई।-রও ⇒হক;বী কেকে আমহা আনি না, किस खनियाहि, विश्वक्षतात्त्र जाजूशन ऊँ हाटक वटल हे माइ.या कतिया **वाटक**न । (यथान इडेंट ० र्गः) इत्र वर्गाददत्र नदशा • স্বোজিনী, পুকবিক্রম, বাল্মীকি প্রতিভা প্রভৃতি দশ বংবে গামি ফুরুচিসদত স্থা-लिक लाठा ও उभारतम शक वाहित इहै-হাঙে, ভাষ্টিগকে অল্পনভাশালী विनिदा (बार्य श्व ना : .

বল্পদশনে গিগারা কলিমবাবুর সভা-য়তা, করিয়াছিলেন, উংহারা এক্ষকে স্ফুলেই উৎরস্ত লুগকাঞ্চীর মধ্যে প্র

स्टेब:एका। वाकु बाकक्क मूर्गिणाशाव वोज्ञानाहम् । महर्कारक्र देखिहान নিশিষাছেন। ঠাহার কবিডাভলিও मशीकान् हिर्वागमृद्द शतिशूर्व, हैः तिब, সংস্কৃতসাহিতো যাহা কিছু মহান্সনতঃ ঙীছার কবিতার আছে: তাঁগার কবিত। विक्रमः, महानावंशी विश्वा नात् सक्ताः চল্ল সরকার তীক্ষবৃত্প লিনী সাধা-इबीत गम्भामक, यत्रमर्गत उँ:शंत कंडक छनि डेरक छे थानम आहि। मभ महानिमा, आंदू अञ्जि य अनम हिन বজদর্শনের প্রথম অবস্থার বন্ধীর পাঠক-वर्गाकं च्यारमान । शिकामान कविछ, ভাহার অনেকগুলি ভাঁহার লেখনী প্রস্ত। इक्ष्मचत्र मृत्भाशीशात्र मगरत समात्र বলিমবংবুকে সহায়তা করিতেন, একবে ভিনি বাঙ্গালার একটি মোহিনীসর রচনা-গুণালীর অসমাতা, তাঁহার লিপিত উष्टाष्ट्रध्यम बह्कालान्धि वजीसपूरकः দিগকে উদ্ভাক্ত করিয়া দিবে। भर्मरात्र चाधुनिक (संधकतिरांत्र मर्गा त्रभावक त्रक्षीवहत्त्व हाष्ट्रीलाधीय ध्वर-. থানি উৎকৃষ্ট গদ্যকাবা লি, শিরাছেন, বঙ্গ-দৰ্শন সম্বাহ্ম এফণে তাঁহার প্রাথান সহাঞ্চ ভাছার প্রভা বৃদ্ধিবাবু, আর চন্দ্রনাপ-্ৰাৰু ।* চন্দ্ৰনাথবাৰ চিঞাশীন,ভিনি ত্-. কাল কলিকভো রিণিউম্বের সমালোচক किरणन, धकरण देश्दाक छात्रा कतिया - রাঙ্গালা বিধিতে আরম্ভ করিরাতেন। তিনি বলদর্শনে অভিজ্ঞানশকুত্বংশর বে

সনালোচনা করিবাছেন, তারা ইউরোগীর সমালোচনা হইছে কোন অংশেই
ন্ন নহে। আনুহা আগ্যদর্শনের আর
একজন লেগকের কথা বলিছে ভূলিয়া
গিয়াছিলান, ইহার নান ইস্কনাহারণ
বন্দোপাধ্যার, ইনি একণে সমাজে
শক্ত প্রতিষ্ঠ, ইহার করাত্র ও ভারতউদ্ধার না পড়িরাতে বলীরপাঠকের মধ্যে:
এরূপ লোক অতি বি ল। ইহার ভারত
উদ্ধার নামক mock heroic কাবা অত্যা
পদার্থ। ইনি একণে পঞ্চানক মানক
রহমাপুর্থ সামন্থিক বি নার সম্পাদক।

আনাব প্রাব্দ অতান্ত দীর্ঘ হুইরা পড়িতেছে, কিন্তু আমি নিকট আশার একটু দীরতা ভিকা করি। **८**वे गगात भागत। भात कात्रकी লোকের কথা না বলিয়া থাকিছে পারি-ভেডি না। বাৰু উপেন্দ্ৰনাথ সাল ছুই. थानि छे दहें ना हेक निविद्या निवाद्यम, छै। हात बाठिक छुडेशानिएड डेब्रास्टकारण त দোব ও গুণের অতি স্থভাক টিজ দেওয়া অংছে। বাবু রহনীকৃতি ছপ্ত সিপারী युष्कत देखिहाम निशिष्ट्रहर्म, यहमृत শানরা পাইয়াছি, তাহাতে বেশ অসুদ্ব ক্রুরিতে পারি, বইণানি সম্পূর্ হুইলে,• বাঙ্গাণার একগানি অপুর্ব পাঠাগ্রছ रहेरैंव। एडिश शत यः बुताशक्का तात नागविष शक् विविशा, निरंकत काम:बारव कमजात श्रीकक्षण , श्रीकृष विद्याद्वन अ निक छात्रारक यरशहेलविकारन मन्त

the street of the street of the street of the state of the state of the street of the

[ै] अजारामध्यक वार्ते । श्रीकारी

করিরাছেল, ভাঁছার প্রস্থের সংখ্যা নাই।
সাহিত্যবিষয়ে তাঁছার অসীম নতলবের
শোল নাই, ভাঁছার বন্ধস অল্ল সোণ
হল, তিনি অনেক লিগিরা নাইতে
পারিবেন। আর সম্প্রতি করেওটি
মুক্ত কল্লনামক একপানি মানিকপত্র
প্রকাশ করিতেতেন, উহাদের নেরপ কুঁচুরাও অধাবসায় দেখিতেতি, ভাঁছারা বে ক্যুত্রায়া হইবেন, ভাহার আর বিশেষ সন্দেহ দেখিতেতি না।

বাবু ঈশানচন্দ্র বন্দোপাধার, ইনি তিন চারিপানি উংক্ত পদা এত লিখি-মাছেন, সম্প্রতি বোগেশ নামক অপুর্বা কানাস্টি করিরা নামালির কৃতক্ষতালাভের সম্পূর্ণ উপযুক্ত পাত্র হইরাছেন। তাঁছার নন্দা ও নর্মাণা জীচরিত্রের চরনোৎকর্ম।

- ি শিবনাথ শান্তীর নির্বানিতের বিলাপ একখনি স্থপাঠা বালালা কাবা। তীহার পুশনীবার বত্নংখাক উংক্ট কবিতা আছে, যেকিবিতার তিনি অ্যাংশর জন্য আয়ুজীবন উংস্বর্গ কবিরাছেন, তাঁহার নাার উচ্চতর ভাবপূর্ণ কবিতা আর দেখিনাই।
 - নিইরে আর, নি, দত্ত চারি পাঁচথানি অন্সর ঐতিহাসিক উপনাস
 বিশিয়াছেন। তিনি নানা আতীয়
 উৎকৃতি চিত্র বিশিয়া বন্ধবাসীকে
 আনোল ও শিকালান করিয়াতেন।
 উাহার প্রস্থে, আন্ময় প্রাচীন বান্ধালার
 উৎকৃতিক্যুয়াক্ষতিক ক্ষেবিতে পাই, ভাহার

णाया ज्लानिङ ध्यस छीहात अष्ट्रायली अस्त्रिनमहानात्रमा

আর ভুইশানি গ্রন্থের কথা এ ছবে বলা আবশাক। ভুইগানিতে গ্রন্থকার নান দেন নাই, একখানি বঙ্গানিপপরা-জয় আর একখানি অর্গান্তা। বিশাধিপ-পরালরের গ্রন্থকার হাল ও দীর্ঘ বর্ণনার যথেই ক্ষমতা প্রদর্শন করিয়াছেন, উই,র নরনারীচরিক্রগুলিও উত্তর। অর্গতা ইংরেরিতে যাহাকে মবেল বলে, বালা-লার সেইরূপ সর্কাপ্রথম নবেল। বাল লার সেইরূপ সর্কাপ্রথম করেল। বাল লার সেইরূপ সর্কাপ্রথম করেল। বাল

হরলাল রাজের হেমণতা বজীর প্তকাবের জান পাইবার সম্পূর্ণ উপ-যুক্ত। যে সকল গুল থাকিলে নাটক • হর, তাহ। উহাতে ভূরিপরিমাণে পাওরা যুদ্ধ।

অনেরা এই বলীয়লেখক সমালোচনার
সর্প্রেশাব পূপ্ত প্রনির সমালোচনা করিয়া মধুবিশ সমাপরেং করিব। পূপ্তাক্রিনি বলীভারায় একপানি উৎক্রই
মহাগ্রন্থ। ইহার ভাষা সংস্কৃতামুক্রণ
ভাষার সংক্রংহেই। বিল্যাসাগরমহাশ্রের
ভাষা উংহার নিজের। রাম্পতি নারেছেমহাশ্রের্ও ভাষা উংহার নিজের। কিছ
ভ্রেশ্বনির্র্বারা প্রাচীন ভট্টাচার্যা
ব্রেল্য পণ্ডিভও ক্রাক্রসমালে বে ভাষা
ক্রিত হইত, ভল্মধ্যে বাহা কিছু মহীন
য়ান্তিশ, সে সম্বন্ধের সারসংগ্রহ, আকুক্রপাতীতা ইহার ভাষাবলী বল-

बाजीन व्यक्तिकांत्र अधित थाका उठिछ। भूषाश्चीत अक्षाति कंड्ड भनार्थ। ज्रान्य ষাৰুর ঐতিহাসিক উপন্যাস বালালায় इःदिश्व बद्दानात निभिष्ठ अभग देशगाम। আমরা আরু অধিক লোকের গ্রন্থস্যা-**लाइमा क**दिया मकर्तनत खरीत्रङा বৃদ্ধি করিতে চাহি না। আমরা যাহা লিখিয়াভি, ভাচাতে দেশা যাইবে চিহ্নিত দিবিল সর্বাণ্ট চটতে সামানা স্ন্নাষ্টার পর্যাস্ত বাক্সালা বিধিতে আ ब्रह्म कविवारकन । चार्ग त्लारक डेश्रविक लिখिक, किंद आधुनिक धूनकरान है रहिन পড়িয়া বালালা লিখিতে আরস্ত করিতে-चारतक है । दिन (नशा तका व्यक्तिक इंडेग्रां वालामा आरश्च कतिएक. কেয়াল). ত্রাং ম কাড়াইভেচে যে নানা ভ.ষ। শিথিব, • মাসা দেশ দেখিব, কিন্তু লিখিব নিজ ভাষার। উত্তার প্রসাণ ভারতীতে প্রকা-निष्ठ निर्मिकाञ्च हटछ।भाषाद्वत शकः থানি। তাঁহার পতাদি বাসাবার বি **चिड**, डाइाइ मन वाजानार्व सना यां-क्त। डिनि (मण्डे शृहेर्मनर्ग इडेटड হখন বালালাভাষার বালালির অনা. कैक्टियाकन, छथन आह वा कथाह विरमय श्रीमान निवःत श्रीदाक्रम गाहै। যুগ্ধ সকল অবস্থাপর সকল বাবসায়ী লোকের মধোই সাহিত্যালুৱাগ প্রকাশ ু ভরিত্তেছে, ভখন সাহিত্যের বে মংতী श्रीवृद्धि कठितार माधिक रहेरत कांदाव

क्षमा अकि कथा वाकि आदय । (व क्रिक्ट यात्रामा माहिका निनिटक्टक्न, छै।इ।-क्रेड बाना वावमान बाह्य, त्रव ठाकूती करतम, दकह सभीमात, दकह डिकील,दकह वावमात करवन अवह शृक्षक विरमन। चाउ १व त्रकाला amateur किंद्र माहिः ट्यांत धाकुछ डेव्रांड कडिट्य व्हेटल, • সাহিত্য একটা ব্ৰসায় হন্দা চাই, चावित छाहा में। जाय नाहें; अथनत শুদ্ধ সাহিত্য বাবসায় করিয়া কেই धीवनित्रशह कहिए शास्त्रन ना। शः হাতে সাহিত্য বাবদায় হয়, ভাহার विस्था (उहा कहा धकान्न व्यवसाय। জামার বোধ হয় রপনীকাস্ত ওপ্ত ও वायु बालकुक बाब छित्र चात्र (कहरे कुकं गाहित्यात खेशत कीतिकात समा गिर्जत करते गा। किंद्ध धक्रण यः कृ व्यक्ति निन शाका वाङ्गीय नार्डा० আজিও গাবৰ্মেণ্টেৰ চাকুনীতে লাভ আছে, আন্তিও একমন ভাল গ্রীজুয়েট গবর্ণমেণ্ট, চাকুরীতে যাইব্যাত্ত অস্তবঃ १६ कि ১०० है।का शांडेटर भारतम । यड मिन शहि**डा वाव**माग्न **आश्रम इहे** डिवे है। अर्भका अधिक लाख ना (मैश्राहेटड পারে, তত্ত্বিন উৎকৃষ্ট শিক্ষিত লোক मादिकावावभाषा मर्स्य गराष्ट्र भविश्वम कतिएक हास्टिव मी। ७३ मुडन प्रमाटन সমস্ত ইউরেপীয় জাচা পাত্রভা সা-हिटाइसि डेक्यांटिक इंडेशे व त्व विशेष সাহিত্যের আলিও আশাসুরূপ উর্ভি इब्र, नारे, डाहार, साइन सामिन शाहिता

वावमात्र मा श्रीकाः चार्मातमत (मर् উৎक्रेड शांडांश्रह त्य त्कन व्यनवत्रक य। हिस इत्र ना. याहा । वाहित हत्र, फाशां का त्मिति एक दिल्ल कर्म, डेशा •लाधान कावन धारे (य. भूषकवहना चादमाञ्चाखत्रावनशे अञ्चातनिरगत चूनी ও অবসরের উপর সম্পূর্ণ নির্ভর করে। शिहिडा सिवाराह, सिवारडाह व सिवार, কিছ যুত্তিন সাহিতা ব্যবসায় না হইবে Profession না হইবে, তভদিন সাহি-ভোর বন্ধুন্তা হরবা অসম্ভব। हिडा वादमात्र कतित्व इहेत्स, आगा-দিপের কি করিতে হইবেণ কোন ভাল न्डम পुष्डक वाहित इहेरल हे यमि (मर्खन **ভত্ত কতক বিক্রেয় হইবার নিশ্চয়** मंद्रावन। शास्क, वावः माहिस्जाव खना-খাণ পরীক্ষা করিছে পারে, এরূপ "बैह्न ने बाक वाक वाक या विकास वार्य ব্লুল গ্ৰন্থ কাৰ-वाहारतव वना गगरक वालमा मरमज्ञामा शाह ममादनाठः কের লেখনীর উপর নির্ভর নাং করিতে हत, आत वहूं मर्थाक गारे (बती थारक, याहाटक मक्तशकात शहरे क्लीक हत्र, তাহা ইইলে শীঘ্ৰ শীঘ্ৰই সনাক্ উন্নতি ' **इ**हेनात्र अखावला। ज विषदा चामत्रा धक्यतिबाद्यत खानत कथा ना विनित्रा পাৰিতে পারি না; সে কলিকাতার राष्ट्रवनाड़ी। (भाकानाबादबब बाबनाड़ी रवमन खड्डाडावालिश्व खेरनाइकाडा, ठेक्प्रशिवांत्र एउमनि वह मवास्त्रिक गाहित्छीत् छेदमाइषाका इवेदाद्वन। मृष्टम

माहिका व्यक्तरिक्ष ममन क्रमाना निक शतिवात्रभग यमि छेरमाङ मिट्ड जा-तथ करतन, छाहा हहेरल पानीन मा-हिटा वावमात्र कार्टितार धावर्तित हहेर छ সাবিত্রী লাইত্রেরীয় নায়ে সংখ্যা বাজিয়া গেলে. লাইত্রেরীর त्नथकशन श्वाधीन वावनाद्य वावर्षिक ३-টলে, বঙ্গীর সাহিত্যের যে অস্কুড উत्रिक्त इहेर्द, छाहा ৰলা ৰাহলা। আনাদের সাহিত্যের প্রকাণ্ড ভাণ্ডার অভিরাৎ প্রান্তত করিবার যেমন আশ্রের্যা অবিদা হ্ইরাছে এমন অর ভাতির **डार्ला घर**ों, आमारमद (मर्म (य दकान নবোৎগাহ অসাক, শুসকলেট গৈছিভোর উয়তি হইতেছে: বাক্ষদিগের নবোৎ-সাহে সাহিতাসংখ্যা যে কত বৃদ্ধি করি-তেছে তাহা বলা গার না। বাজসমা-জের বাহিরে সে সাহিত্যের বিষয় বৈছ (कर अवशंड नहिन। छाहात भन्न है:-टब्जी जागारमत्र bread winning language आगारमत देश्दास निएएड इहे. বে। স্তর্থ ইংরেজি পড়ার দক্র স্থামাদের সাহিত্যের যে উন্নতির সম্ভাবনা তীহা এক প্রকার চিরভারী বলিতে হয়। **एड्डिंग भन्न आयारमन ५७ विमालूनारभन्** . সময় সংস্কৃত এখনও সেনেকে পড়িবে, व्याठीन व्यायाकाया दकान वालालि व्यवका করিতে পারিবেন না স্থতরাং সংস্কৃত পাঠ **८ इक्टू** नाहिटखान (य क्रेन्नफ क्रेवान সম্বাৰনা সেও চিরত্বারী। এখন কেবল विषयो मारिकामाख्यायमात्री अक्षन

रमनक हार्डे, छाहा इहेरम आंगरा जह बिश्म पृथियीत आत ममख माहिडाटक कार्श कतिया विष्ठ भावित, जनताक झाताहेता विट्ड भातिष, याहा धरे विश चर्त्रतत मत्भा करेत्राटक, जना त्मरण छाहा छुहै मंड नदमदा हम ना। आत निर्मः चःगदः देश अर्भका चात्रश्र अधिक इंडेटन. बिक्ठम ; कात्रग्, त्मभक्षिरगत मरशा स्थि-काः भरे अज्ञतत्रक, देहाँ (मत व्याप्त क्राप्त कारत रलभात छन्ड कविक स्टेर्स, कात मःशाद कविक इत्रेत। मागविक. পঞ্জিকাগণ প্রতিবৎসরই ছুই একটি कतिवा त्मभक टेडवाति कंतिवा छाड़िया बिट्डिक ; और मक्त त्मक वाहाद धनर्वामध्ये वा अना मर्नितम माधिका (कदल महिंछा नहेंबा कान काछे।हेटड भारत, छाइत स्थाभाष कतिता निरनहे ৰালালাসাহিত্যের অর্থ্যনি পূথ্নীর এক গ্রাপ্ত হইতে অপর প্রাপ্ত প্রতি-ধ্বনিত হইবে, আর সেই সঙ্গে সঙ্গে বালালি পুপিৰীমধ্যে এক মহাজাতি ব लिया পরিগণিত হইবে। औरनटक व-(लन वज्रष्ठावाद अवदा वज्र शेन; किन् धरे वशीध रमयकमखनीनत्था माज्ञ छै:इ:८१व क्श्व गाय मिट्ड शांत्रि मा।

ৰাশালা সাহিত্যের অবতা শৈ চনীর মহে। বধন প্রতি ভিন্নাংস পাঁচ ছয়

मक मुक्ता भूखरकत दिक्षिति एत, यथन এক কলিকাভার পাঁচপত থোল অনব্রভ हिन्द बर्फ, यथन देखा, भीठ, वज, दर्फ, थनी, निर्यान मक्टल हे बाजाला लिलिनाइ ख পড़िनात बना डेश्यूक, छभन बाजाना माहित्यात अवश (भाष्ट्रमीत नहरू। আমরা বিবাচকে দেশিতেতি বলীর সাহিত্যের পরিশাম অতি গুড়কর, বঙ্গীর गाहित्यात छत्रिक अगम ७ डेतरिकाल সমাগত। আমি কিবাচকে দেখিতেছি শত শত ভাবী লেণক ভাবী প্রতিভা-भाशी (लाक छेनत्र इटेट्ड इन, आनि मिवाहत्क (मिनिटिक, भड भए गहा-काता तक्रवाभीतक चानांत्र छशहेश ভাষান্ত রিত হইয়া দেশ দেশান্তরত্ব পণ্ডিত-वुक्ततक जानत्क मध कहिरहरह । जा-मात्र कर्ल कड अनिवादनानीत अनीनात বাহিষ্যত লাগিংহছে ভাষা বলিতেঁ भारति ना। এই मकत्मन भागाति वामि बिकाहरक (पिरिड्डि, এक्টि भोत्रतीविड महामक्तिमान महाबाडि देशिविड निश्रहत नात स्थित इंदेश क्टका गर्कात वर्षमान भूतर्यत महामरहाभाषा । स ्रात्वत अन्याम कतिरहरण: आर्त्र महा (प्रविविद्यास वर्खनार च:नगड(इ निःयार्थः (मण्डिरेडवी मध्यामक्षिगरक श्रमा कविष्ठ हा '

भागारमो ।

विठीत्र ज्यान ।

লেকালের ছরকরা নামক ইংরেজ ।
প্রিকার দেখিতাম, কোম একজন মিলিটারি সাহেব "পেরেড" বৃত্যস্ত, "ব্যাপ্রের" বাদাচর্চা প্রভৃতি নানা কথা
পালামৌ হুইতে লিখিতেন। আমি তখন ভাবিতাম পালামৌ প্রবল সহর,
সাহেবসমাকীর্ণ স্থেখর স্থান। তখন
ভামিতাম না বে, পালামৌ সহর নহে,
একটি প্রকাণ্ড পারগণানাত্র। সহর পো
অঞ্চলেই নাই, নগর দ্রে-থাকুক, তথার
একপানি গণ্ডগ্রামন্ত নাই, কেবল পাহাড়
ভ জঙ্গলে পরিপূর্ণ।

পাছাড় আর জকল বলিলে কে কি
আক্সৰ করেন বলিতে পারি না।
বীহারা "ক্লডক কর্মকার ক্রড" পাহাড়
দেখিরাছেন, আর বাহাদের গৃহপার্থে
শৃগালশ্রান্তিসংবাছক ভাঁটডেরাখার জকল
আছে, গুর্হার। বে এ কপা সমগ্র অফ্সব করিয়া লইবেন, গুর্হার আর সন্দেহ নাই।
কিন্তু আনা পাঠকের জনা সেই পাহাড় অললের কথা কিঞ্ছিং উখাপন করা।
আবিশাক হইরাছে। শৃক্লের অফ্সবশক্তি

রাচি হইতে পালামৌ বাইতে বাইতে
বিশন বাহকগণের নির্দেশসত দূর হইতে
পালামৌদেশিতে পাইলাম,তখন আ্লার
বাহ হইল বেন মর্তে মের করিয়াতে।
আমি অনেককণ দাড়াইয়া সেই মনোহর

দৃশ্য দেখিতে লাগিলাম। ঐ অক্কার
কাষ্ট্র এই মনে করিরা
আমার কতই আহলাদ হইতে লাগিল।
কতকণে পৌছিব মনে করিরা আবার
কতই বাস্ত হইলাম।

পরে চারি পাঁচ ক্রোশ অগ্রসর হইরা श्रावात शालारमो स्विवात निमिष्ठ शाकी হইতে অবতরণ করিলাম। তখন আর भिष्य हरेन गां, शाहाफ्खनि न्नाहे रहना यादेरङ नाशिन: कि**छ अजन** ভাল চেনা গেল না। তাহার পর আরও ছই একক্রোশ অগ্রসর হইলে, ভাষাভ অরণা চারিদিকে দেখা বাইতে লাগিল; কি পাহাড়, কি তলত স্থান नभूगत (यन भियदिग्दित नात कुक्किड লোমবাভিধারা সর্বতে সমাচ্ছাদিত বোধ হইতে ল।গিল। শেষ আরও কতকদুর रशल वन न्नाडे लिथा रशन। शाहा-शाद्य, निष्म, नर्वाय कवन, কোপাও আর ছৈদ নাই। কোৰাও कृर्विष्ठ (क्रांच मारे, श्रांम मारे, नही नारे, १४ नारे, ८क्रन रन-इन निविज्वन।

পরে পাণানৌ তাবেশ করিয়া দেখিলাম, নদী, গ্রাম, সকলই আছে, দুর
হইতে তাহা কিছুই দেখা বার নাই।
পাণানৌ পরণগার পাহাড় অসংখ্য,
পাহাড়ের পর পাহাড়, তাহার পর পাহাড়, আবার পাহাড়; বেম বিচমিত

নদীর সংখ্যাতীত তরক। ভাষার (वाथ इत्र (चन चननीत् चढताधि अक-मिरमरे रमरे छत्रक जुनिवादिन। এथन আমার ঠিক স্থরণ হয় না, কিন্তু বোষণ . इब्र (यन (इश्वित्राहिनाम नकन जत्रम छन भूकतिक इडेटड উठियादिन, कान (कानों शृक्षिक् इवेटल छेडिया शन्त्र-किएक नारम नाहे; धार्केश व्यक्त-পাছাড় নাতেহারগ্রামপার্যে একটি আছে, আমি আমে নিডা তথ্য গিরা বসিয়া থাকিতাম। এই পাছাড়ের পশ্চিমভাগে মৃত্তিকা নাই স্তরাং ভাষার অস্তরত সকল স্তর দেখা যার, এক স্তরে नृष्कि, आत এक खरत कामनाथत, ह-ত্যাদি। কিন্তু কোন শুরই সমস্ত্র নছে, প্রভাকটি কোথাও উঠিয়াছে, কো-থাও নামিরাছে। আমি ভাচা পুর্বে नका कति नाहे, नका कतिरांत कात्रण পরে ছটিরাছিল। একদিন অপরাকে **बहे**, भावारकंत मृत्त मांकारेता चाकि, এমত সময় আমার একটা নেমকহারাম ফরাসিস কুরুর (poodle)আপন ইচ্ছামত ভাৰতে চলিয়া গেল, আমি রাগত बहेबा ही कांत्र कविया जाहारक **छाकि**. লাম। আমার পশ্চাতে সেই চীৎকার चडाक्यांत्ररथ धडिसनिङ, स्टेन। পশ্চাৎ ক্ষিরিরা পাহাড়ের অভি চাহিরা चाँदात्र हीएकात्र कतिनाम, अधिश्रमि व्याचाद भूर्तमञ्ज्य कीर्य क्रेटिंड क्रेटिंड शहारकत चनत थार्थ क्रिका तने। স্থাবার চীৎকার করিলান, শক্ত পূর্ব-

বং পাছাড়ের গারে লাগিরা উচ্চ
নীচ হইছে লাগিল। এইবার ব্রিলাম
পক্ষ কোন একটি বিশেষ তার অবলম্বন
করিয়া বার; সেই তার বেখানে উঠিরাছে বা নামিরাছে শক্ষ সেইখানে
উঠিতে নামিতে খাকে। কিছু শক্ষ
নীর্ষকান কেন হারী হয়, যতল্র পর্যান্ত
সেই তারটি আছে, তভল্র,পর্যান্ত কেন
বার, তাহা কিছুই ব্রিতে পারিলাম না;
ঠিক বেন সেই তারটি শক্ষ কন্ডক্টার
(conductor) যে পর্যান্ত ননকন্ডক্টারের
সাক্ষে সংস্পর্যান্ত হার সে পর্যান্ত শক্ষ
ছুটিতে থাকে।

- আরু একটি পাহাড় দেখিরা চমংকৃত इरेबाहिलामः (मिष्ठ अकिना, ममूनरव STEICE ACTAICE একথানি গ্রন্তর। (काथां कनामाल मृखिका नारे, ममूनव পরিছার ঝর্ঝর্ করিতেছে। ভাহার এক ञ्चान चरनकतृत भेरीख काछिता निवादक, त्महे काछात्र छेलत तुहर अक अर्थेश्वनाह অন্মিয়াছে। তথন ৰনে হইরাছিল, অথথবৃক वड़ त्रतिक, अहे नीत्रत्र नावान हरेटड त्रमश्रद्भ कतिरक्षहः। किङ्काम भारत चात्र अक्तिन अहे चथ्रशाष्ट् ^{*}चानात्र यत्न পভিরাছিল, তথন ভাবিরাছিলার, वुक्कि विक (भावक, देशम निक्षे नीवन পাখাপেরও নিজার নাই। এখন বোধ হয় অখবসাহটি আপন অব্যাস্ত্রপ কার্যা कतिएछरं : नक्श तुम्परे एव वाना-লার রসপূর্ব কোমল ভূমিতে বন্ধ^{র্ব} . कतिया विमाक्षेत्र कामवानम् " कतिर्व

এমত সন্তব নছে। ধাহার ভাগো কটিন পাষাণ, পাষাণই তাহার অবলম্বন, এখন আমি অখ্যটির শ্রেশংসা করি।

अकरा . (म मकन क्था या हेक. , अथम मिरनत कर्गाः इहे धक्ति वनि। बागबाटक भानारभोदा श्रादन করিয়া **উভয়পার্যন্** পৰ্বতভোগী দেখিতে শেখিতে বন্মধ্য দিয়া ৰাইতে লাগি-লাম। বাধা পথ নাট, কেবল এক সংশীর্ণ গো-পথ দিয়া আমার পাকী চলিতে লাগিল, অনেক কলে উভয়-পার্যন্ত লতা পরব পান্ধী স্পর্শ করিতে লাগিল। বনবৰ্নায় যেরপ্র' শাল তাল ভমাল, হিস্তাল " শুনিয়াছিলাম, ুুসেরপ্ল কিছুই দেখিতে পাইলাম না। তাল, हिन्नाम এटकबाटबडे नाडे, (कवन भान-বন, আনো বনা গাছও আছে। শালের-মধ্যে প্ৰকাণ্ড গাছ একটিও নাই, সুকল श्वनिष्टे आभारमत (मणी कमधनुरक्त মভ, লা হয় কিছু বড়, কিছু ভাহা হইলেও ধক্ষল অতি তুর্গম, কোণায়ও णाशात (इस नाडें, এहे कना मत्था मत्था (य. (इन चाटक, **षाद्या अंडि मामाना**। এইরূপ বন याहेटल याहरङ धक शारन स्ठार कांक्रयाचे।त्र विवश्नकतः अस शाहत बहेन, कार्डवरिं। शूटर्स समिनी-प्र कक्षाल (क्षित्रक्तिमाम। গৃহপাণিত ग७ वान शंध हाताहेत्व, भंकाकूमदन করিয়া ভাহাদের অনুস্কান করিতে रतः भ्रेमना गनश्कात উৎপত্তि। কাঠবণ্টার শক্ত গুনিলে প্রাণের ভিতর কেন্দ্রন করে। পাহাড় জললের মধ্যে সে শক্তে আরও যেন অবসর করে; কিছু, সকলকে করে কি না ভাহা, বলিডে পারি না।

পরে দেখিলাম, একটা মহিব সভয়ে ৰুণ তুলিয়া আমাৰ পাকীৰ প্ৰতি একদৃষ্টিতে চারিরা আছে, ভাহরে প্রায় कार्वचन्छ। जूनिएक हम। आमि छ।विलाम, পালিত সহিষ যখন নিকটে, তখন গ্ৰাম चात मृत्त नत्ह। चात्रविणायहे चार्वकः ভৃণ্বিত একটা ক্ষুদ্র প্রান্তর দেখা গেল, विशास (मृशास इहे वकि मधु ৰা মৌয়াবুক্ষ ভিন্ন সে প্ৰান্তৰে গুলা কি লতা কিছুই নাই,সক্তে অতি পরিষ্ণার। পর্বভিচ্নার সে প্রান্তর আরও রমা হুট্রাছে; তথার কতকণ্ডলি কোল-বাশক একত गहिष চরাইতেছিল; সেরূপ কৃষ্ণবর্ণকান্তি আর কথন দেখি নাট, সকলেব গলায় পুতির সাতনরী, ধুক্ধুকীর পরিবর্তে এক একথানি গোল আবসী; শুরিধানে ধড়া; কর্ণে বল-कूल, (क्ष्ट पृश्विशृष्टि भवन कवित्रा. • আপচে: কেহ বা মহিষপুঠে বসিয়া আছে: (कह (कह नृष्टा कविष्टाहा गक्न छ निष्टे (यन कृष्णे)। कृद विनिद्या (वाध-ুহুইছে ল।গিল। 'যেরপ ভান তাহাতে এই পাতৃরে ছেলেগুলি উপযোগী বলিয়া विटमय अन्तर (मधारेटक हिन, हाति पिटक কাঁল পাথর, পণ্ডও পাতৃরে, ভাহাদের-त्राधानक रमहेन्य। यहेन्द्रान बना आहे

ন্যাৰ অ অঞ্চলে মহিব ভিন্ন গোক নাই। আন বালকগুলি কোলের সম্ভান।

এই অঞ্চল প্রধানতঃ কোলের বাস।
কোলেরা বুনাজাতি; ধর্মাকৃতি, ক্লঞ্বর্ণ:
কোপতে কুৎসিত কি ক্লপবান্ তাহা আমি
নীমাংসা করিতে পারি না। বে সকল
কোল কলিকাতা আইসে বা চা-বাগানে
বার, তাহালের মধ্যে আমি কাহাকেও
ক্লপবান্ দেখি নাই; বরং অতি কুংসিত বলিরা বোধ করিরাছি। কিন্তু
বিদেশে কোলমাত্রেই রূপবান্, অন্তভঃ আমার চক্ষেণ্ড বন্যরা বনে স্থন্দর; শিশুরা মাত্রেকাড়ে!

শ্র্মান্তরের পর এক ক্ষুত্র আম, তা-ৰার নাম শুর্বণ নাই; তথার তিশ ৰত্ৰিশট গুৰুত্ব বাস করে। সকলে-दरे भर्ग्कृष्ठीत । आमाद भाकी त्विरङ যাবতীয় জীলোক ছুটরা আদিল। नकररतहे व्यावनूरमत मछ कान, मकरनहे य्व ी, नरुत्वत किएमा धकथानि 🏂 बिद्रा कृष काशफ बड़ान; সকলেরই कक, वक आवत्रणमृता। • (महे निहा-বুত বক্ষে পৃতির সাতনরী, ভাহাতে কুল कृष जात्रभी स्निष्ट्रां कर्न कृषे वनकून, याथाय वड़ वड़ वनकून। यूव-ভীরা পরস্পর কাঁধ ধরাধরি করিয়া (पंचिट्ड नाशिन, किन्दु (पंचित - दक्वन পাকী আর বেহারা। পাকীর ভিতরে^ক क वा कि छाहा क्हें दिल्ला ना। ं आमारंत्र वाकालायु (तेशियाकि शबी-ৰামে বালক বালিকারা প্রার পাকী আর

বেহারা দেখিবা কান্ত হয়। তথে বৰি
সলে বাদ্য থাকে, তাহা হইলে "বরকনে" দেখিবার নিসিত্ত পান্ধীর ভিতর
দৃষ্টিপাত করে। যিনি পান্ধী চড়েন,
স্থতরাং তিনি তুর্ভাগ্য, কিন্তু প্রামাবাদক
বাণিকারাও অভি নিষ্ঠুর, অভি
বিশ্ব।

তাহার পর আবার কতকদুর গিয়া দেকি লাম পর্ণভাষা যুবতীরা মর্গের ভাটিতে বসিয়া মদাপান কুরিতেছে। গ্রাম-मत्था त्य यून शेरमत (मित्रा चानित्राहि, ইহারাও আকারে অলভারে অবিকল বেইরপ, বেন ভাহ:রাই আসিয়া বসি-রাছে। যুগতীরা উভর জাতুরারা ভূমি-স্পূৰ্ম ক্ষ্তি হা হুই হন্তে শালপত্ত্বের পাত্ত ध्रिया महाभाग क्रिटिह, जात क्रियर হাসাবদনে সঙ্গীদের দেখিতেছে। আছু-তित्रं जी लाक मिरशत बी छि; ताथ इत (यन मां अडान मिराइ छ. अहे बीकि (म-थियाहि। वरनत मस्या (यश्वासन (मथारन भरमत्र छ। हि (मिनाम; किन् वामानाइ फाँडिशानाम (यज्ञाश माञान (मशा यात्र) পালামৌপরগণার কোন ভাটিখানার **खाश (मिनाम ना। आमि शास खाहा-**(पत्र काशाद वा।वशास गकल हे (प्रशिष्ठाम, কিছুই তাহারা **আ**মার নিকট গোপন कतिक ना, किन्न कथन खीरनाकरनत्र মাতাল হুইতে দেখি'নাই, অপচ ভাহারা गानकृष्ठे नटह । ভाश्चारमञ्ज माम-কতা নাই এ কৰাও বলিতে পারি না।

সেই মদ পূক্তেরা গহিরা সর্বকা ৰাতাল ভ্টয়া থাকে।

পুর্বে কয়েকবার কেবল খুণভীর कथाहै विलिशाकि, हेक्हाशूर्यक विलश्कि ध्यमन गरह। वाकालात शर्थ, च!रहे, वृक्षारे व्यक्षिक रमभा यात्र, किन्द्र भागात्मी व्यक्त यूरठोहे अधिक (प्रभा यात्र। 'কোলের মধোে বৃদ্ধা অভিলয়, ভাহায়া व्यधिकवयः इटेटल व यूवजीरे भारक, অশীতিপরারণা না হইলে ভাহারা লোল-চর্মা হয় না। অভিশয় পরিশ্রমী बनिया गृहकारी, क्विकारी मकन कार्याहे कारात्रा करत, भूजरवना खीरनारकत नाात्र (क दल विभिन्ना मुख: न द्र ऋ। करत, क च न क्रश्य : हाउँ। दे वृत्य । वौत्रशास्त्रा পুরুবেরা বঙ্গনহিলাদের নাগর শীঘ বৃদ্ধ इटेबा यात्र, छीटलाटकता শ্ৰহ - व्हित्रयोगना शास्त्र ।

लाटक वटन পশুপকীর মধ্যে পুরুষ-काडिहे बनिष्ठं ७ ऋनत, मञ्चामरधा ७ (मरे जिन्न। किंद्ध कामापत (प्रशिव ভাছা বোৰ হয় না, ভাছাদের জীতাতি-बारे विश्विष्ठ। अ व्यान्त्री। विभिष्टे। किंद्र एक्शाम्त वक्षः शार्थं খ ড় हे दिए एक, भू संचटन त शास्त्र চল্ফে ম.ছি উড়িতেছে, মুখে হাসি ভীবনীশক্তি मांडे, रगन मक (न द हे किनिया व्यानिशादक। व्यानात द्यान इस (कान कान्तित क्षेत्र धतिशाह्य। वास्ति-वित्मत्त्रत्र कीवनीमिक्त त्वक्रभ क्षित्रा यात्र, ं चाकि विष्यत्वत्र अवसीमांक महित्रम

ক্ষরপার হয়, ক্রনে ক্রনে লোপ পায়। মহযোর মৃত্যু আছে, ক্রাভিরও লোপ আছে।

এই পরগণার পর্ব্ধতে স্থানে স্থানে অহুরেরা বাস কবে, 'আমি ভাগাদের प्रिश्ति गाहे, छाहाता कानामत गहिल वा ष्यना (कान दनाष। जित्र महिल वाम कर्त्र না। ও নিয়াভি, অন্যজাতীয় সমুধ্য দেখিলে ভাষারা পলায় ; পর্বভের অভি নিভ্ত ভানে থাকে বলিয়া ভাছাদের অসুসন্ধান করা কঠিন। ভাহাদের সংখ্যা নিতান্ত অৱ হটরা পভিয়াছে। श्रृक्षकात्न यथम आर्थाता धागरम जातक-বর্ষে আসেন তখনু অস্কুরগণ অতি 🚚 ল ও ভারাদের সংখ্যা অসীম ছিল। অস্ত্-(देश व्यक्तिमा व्यक्तिभाष्ट्रका व्यक्तिमा লইয়া যাইভ, সুত খাইয়া পলাইভ, আ-र्याक्षा निज्ञाभाष इत्या (कवल हेक्सरक ভ।কিতেন, কখন কখন দলবল জুটিয়া লাঠালাঠিও করিতেন। শেবে বছকাল পরে যখন আর্য্যাণ উন্নত ও শক্তিসম্পন্ন इहेलन, जगन अञ्चर्तशन क लाज़ाहेशाहि-লেন। পরাজিত অমুরগণ ভাল ভাল তান আর্যাদের ছাঁড়িয়া দিয়া আপনারা তুর্গম পাহাড় পর্বতে গিয়া বাসস্থাপন কংলে। অদাব্ধি সেই পাহাড় পর্বতে ভাহার। जार्ड, किन्द्र जाव छाइ। एन व नवीमा नाहे, আর দে ক্ষদীম সংখ্যাও তাহাদের নাই। একণে যেরপ কবলা তাহাতে অসুর্কুল श्वर्भ इडेबाल विवासक अनाव इब ना ; दर मण नीत कन ज्यादन दन्धादन

ৰাস করে, আন্ধ কিছু দিনের পর ভাহা-রাও থাজিবে না।

कां जिल्लां निर्मा निर्मा करेगा थारक. অনেক আর্মি ভাতির লোপ হইয়াগিরাছে चनानि इटेप्डर । चाजिरवार्गत (२० मर्नेनविम्नार्थेत याथा (कह कि वासने, যে পরাজিত ভাতিরা বিজয়ীকর্ত্তক বিতা-ডিত হুট্যা অতি অধোগ্য ভানে গিয়া বাস कतित्व, शृक्षकात्म (यत्रकव कृषिश हिन ভাৰার অভাবে ক্রমে ভাৰারা অবনত ও অবসর হইরা পড়ে। এ কথা অনেক স্থান সভা সন্দেহ নাই, অসুরগণের পকে खाहारे थाविशाहिस त्वाध रय। किस मां क्रीटिन ता अ ध्वन ममत्रे आर्था शनक र्कक বিভাতিত হুইয়া দামিনীকোতে পলায়ন कविद्याद्यित। (गरे चरिष चरिक काल তথাৰ বাস করে. অদ্যাপিও তথার খাব সাঁওভালেরা বাস করিভেছে,পূর্মাণেকা ভাহাদের যে কুলক্ষ হইয়াছে এমভ ভনা যার না।

মার্কিন ও অন্যান্য দেশে বৈথানে সাহেবেরা গিরা রাজাম্বাপন করিয়াছেন, (त्रश्रामकात चानिमवामीता क्राम क्राम লোপ পাইতেছে, তাহার কারণ কিছুই অকুভব হয় না। বেড ইপ্রিয়ান,ন।টক देखियान, निष्ठे बिनाश्वत, निष्ठे दनांश्वात, ভাষাননির প্রভৃতি কত ফাতি লোগ शहरत्रह। (योतिनामक आदिम साछि चैतिष्ठं, वृश्विमान्, कर्षार्ठं, विनया श्रीतिह्छ, ভাহারাও সাহেবদের अधिकात्र क्रांत

লোপ পাইভেছে। ১৮৪৮ সালে তাহা-(मत्र मःशा धकनक हिन, विषय । मत পরে ৩৮ হাজার হইরা গিরাছিল, একণে সে বাতির অবস্থা কি তাহা জানি না। বোধ হয় এডদিনে লোপ পাইয়া থাকিবে: অথবা যদি এতদিন থাকে, ভবে অভি সামান্য অবস্থায় আছে। মৌরি চর্কল नट्ट, फर्मक्रक अक्बन मार्ट्स किश्वा-(E7 " He is the noblest of savages, not equalled by the best of the Red Indians." তথাপি একাডি লোপ পায় কেন ? ভূমি বলিবে সাহেব-(मंत्र चाडाहिरत ? छाडा कपाठ नरह. ক্যানেডার অধিবাসীসম্বন্ধে সাহেবেরা क उरे यंत्र कतियाहित्तन, किहु एउरे ভাহাদের কুর্ণকর রক্ষা করিছে পারেন नारे। जाकात शिकि निधियाद्वन (य. " In Canada for the last fifty years the Indians have been treated with paternal kindness but the wasting never stops * * * * The Government has built them houses, furnished them with ploughs, sup-. plied them constantly with rifles, anumunition, and clothes, paid their medical attendants * but the result is merely this that their extinction goes on more slowly than it otherwise would." मबाब्बानदर्शकी खान जान छ।। व कतिहा. বিশরীত স্থানে ত এই জাতিকের আ

(平|福河ト

ইতে হর নাই, তবে তাহাদের কুল-লোপ হইল কেন ?

কেছ কেছ বলেন যে, সাহেবলৈর সংস্পর্শে লোব আছে। প্রধান জাতির সংস্পর্শে আসিলে সামান্য জাতিরা অবসর কর্তকটা উদান্তক ও অবসর হুট্যা পড়ে। একথার প্রত্যুত্তরে এক-জন সাহেব লিখিরাছেন যে, ভারতবর্ষে কতই সামান্য জাতি বাস করে, কিছু খেতকার জাতির সংস্পর্শে ভাছাদের ভ কুলবৃদ্ধির ব্যাঘাত হয় না।

শাসরা একথা সম্বন্ধে এইমাত্র বলিতে
পারি যে, ভারতবর্ষের আদিম জাতিদের
কুলক্ষর অনেক দিন আরম্ভ হইরাছে
কিন্তু ইংরেজদের সমাগ্যের পর কোন
জাতির ক্ষর ধরিরাছে এমতনিশ্চয় বলিতে
পারি না। তবে কোলদের সম্বন্ধে কিছু
সন্দেহ করা বাইতে পারে, তাহার
কারণ আর একসময় সমালোচনা করা
বাইবে। একণে এ সকল কথা বাইক.

অনেকের নিকট ইছা শিৰের গীত (वाथ इटेट्स. किंद्ध व नव्यान यथन যাহা মলে হয় তখনই তাহা বলিজে ইচ্ছা যায়: লৈকের ভাল লাগিবে না এ কথা মনে তথন থাকে না। খাছাই ছটক আগামী বারে সতর্ক হইব। কিছ ষে কথার আলোচনা আরম্ভ গিথাছিল ভাষা শেষ হয় নাই। ইচ্ছা हिन এই উপলক্ষে বাঙ্গালির কথা किছ বলি। কিন্তু চারিপিকে বাঙ্গালির উন্নতি লইয়া বাহবা পড়িয়া গিয়াছে, বাঞালি ইংরেজি শিখিতেছে, উপা'ধ পাইতেছে, বিশাত যাইতেছে, বাঙ্গালি সভাতার সোপানে উঠিতেছে, বাঙ্গালির স্থার ভাবনা কি? এ সকল ভ বাহ্যিক ব্যাপার। বঙ্গসমাজের অভাস্তরিক ব্যা-পার কি একবার অনুসন্ধান করিলে ভাল रत्र ना ? अनिटिक भगनात्र वनवामीत्वत সংখ্যা বাড়িতেছে। বড়ই ভাল ।

कां, नां, न।



भाषवीनजा।

(e

भेद्रवियम खाट्ड धक्षेत्र देखः ন্নৰী এক বিস্তীৰ্ণ প্ৰাপ্তর দিয়া বাইতে-हिल, शांखरंब ध्यात (मर्गात (क्वल भाव छह, दकान भागहे कर्षित नरह, मर्ख्य वानुकामय, स्वताः भग, अथह दक्ष तम भग निया याछा-द्यांड. करह नां, शाखरत्त्र (यशान मां डोडेबा (मय, ठाविनिटक भव शटका পরিধা, অধাচ বন নিবিড় নছে, শরওছ मृत्त मृत्त वियुक्तकारव .. त्रश्तिहारकं, किव দেখিতে সংযুক্ত বোধ হয়। স্থানই পরিষ্ঠার এবং পরিসর। বেদিকে वजपूत या ७,८नहे भिरकहे भूक्षभाव भात छछ আর বালুকামর ভূমি, ভাষা অভিক্রম क्तिल आवात (महेन्न्य मत्रक्क् ध्वरः ৰালুকামর ভূমি। চতুর্দিক দেখিরা ব্রা যারনা যে আমি পথ অতিক্রম করি-ভেছি। বাহা ছাড়াইলাম আবার অবিকল ভাহাই সন্মুখে।

লোকে বলে তথার দহাতর আছে, . ভৌতিক (कहराम ভর WICE ! ' এক বাস **ঘ**নপ্ৰতি €4, Q. পীড়িতবাক্তি युवछी ভাৰ্যা সমভিব্যাহারে এই আন্তর 'বিরা বা-যাইতে পিশাসাণীড়িত হুইয়া জলাহরণের নিষিত্ত পাঠাইরা **अक्डा**रन ৰসিয়া থাকে,

খণরাহ পর্যাত স্ত্রী প্রভ্যা-किस করিল না দেখিরা পীড়িত্ত-বর্ত্তন ৰ্যক্তি कत्रिम যে আসি **শিশ্বাস্ত** বিশাস্থাতিনী আসাম বলিয়া পরিতাাগ করিয়া গিয়াছে। এব আর জীর অপেক। না করিয়া আপনি একা আছেয় অভিক্র করিছে পর্দিবস প্রাত্তে আকাশ इटेट नक्नी, श्विनी व्यक्ति त्रवक्क् পক্ষীরা বায়ুবেগে প্রাক্তরের ছুইস্থানে নামিতে লাগিল। একভানে ক্লগ্ন স্থা-মীর মৃতদেহ আর একস্বানে যুবতীর শব পড়িরাছিল। উভরেই কিরূপে মরিয়াছিল বা কে ভাহাদের মারিয়াছিল, ভাছা কিছুই প্ৰকাশ নাই স্থভরাং ভৌতিক ভবের ক'ণা রাষ্ট্র হয়; সেই অবধি প্রাঞ্জ (वन्न नाम "यूर्गनमावि" स्टेबालिन ।

এই ভয়ানক প্রান্তরে কেছ বে একা যাইতে সাহস করে না ভাষা ভৈরবী জানিতেন। প্রান্তে প্রবেশ করিলে স্ক্রার পূর্ব্বে প্রান্তর যে অতিক্রম করা বার না, ইহাও তিনি বিলক্ষণ জানিতেন; অথচ কোন বিপদ আশভা মা করিয়া সেই ভয়ানক প্রান্তর বিয়া বাইতেছিলেন।

অনেককর পরে তৈরবী ওটকত অথখরুকের নিকট উপ্রিত হইকেন; বুক্তলে এক ভয়ন্দির, ভারের সৃত্তে এক প্রাতন প্রবিনী। প্রাপ্তবমধ্যে
এই বৃক্ষ ও মন্দির অথচ প্রাপ্তর হইতে তাহা কিছুই দেখা যায় না। যেখা
নেই দাঁড়াইরা দেখ শরগুচ্ছসমূহ পরিধা
স্বরূপ দৃষ্টি অবরেধ করে।

মন্দিরের পশ্চাতে ইটুকনির্দ্মিত কতকগুলি প্রাজন ক্টার আছে, পূর্বের তাহা
আঁতিণিব নিমিন্ত প্রস্তুত স্টরাছিল;
অক্ষণে তথার এই ভৈরবী অন্য তুইজন
অনাথা বিধ্বার সহিত্ একত বাস
করেন। বিধ্বাদের গৃহীর ন্যার বেশভূবা, গৃহীর ন্যার আঁহার বাবহার।
যে সময়েব কণা বলা হুইতেছে এই
সময় তাঁহারা উভারে বিসিয়া গল্প করিতেভিলেন।

প্রথমা। আমার অনেকদিন অবধি ইচ্ছা কাশীতে গিয়া বাস করি।

•িৰিতীয়া। তবে ষাওয়া হর নাই কেন্

প্রথমা। যাহা ইচ্ছা করা যায়, ভালাই কি-হায় প

্রিতীয়া। ভাগাঁব গুনা আছে যে, ভাষা নিশ্চরই হয়,—অর্থাৎ যদি একাস্ত মনন্ধাংকে।

• প্রথমা। তবে ভাহা সকলের ক-পালে হয় না কেন ? ভাল, ভোমার অপিনার মানস সিদ্ধ হয় না কেন ?

দিতীয়া। আমার কোন্ সাধ আছে ?

थिथेशा। रमिक कथा। माथ ना कि भावात नारकत थारक ना १ দিতীয়া। আমাব এখন সাধ মরণের। তাহাও আন্তরিক নহে, এখনও বাঁচিতে সাধ আছে।

প্রথমা। আমাদের মত লোকের বাঁচ্তে সাধ কেন ? এই ভূমিই বলেই বলি, তোমার বাঁচা কেন, ভূমি রাজার ভগিনী,এখন পথের ভিণারিণী; তোমার আবার বাঁচা কি স্বধ্ ?

দিতীয়া। দিদি ! আপনি ডুলে গে-ছেন, আনার পরিচয়গম্বন্ধে কণা মুখে আনিতে আপনাকে তৈরবী বিশেষ নিষেধ করিয়া গিয়াছেন।

প্রথম:। আমি আব কাছার কাছে পরিচয় দিতে গিয়াছি, ভোমার কথা ভোমারই কাছে বলিতেছি।

এই সময় ভৈববী আংসিয়া দাবে দিডোইলেন। যাহারা কথাবার্ত্তা কহিতেছিলেন, তাঁহাদের মধ্যে দ্বিতীয়া সসম্ভ্রমে উঠিয়া ভৈরবীর হস্ত হইতে ত্রিশূল ও কমগুলু লইলেন; অপরা মৃগচর্ম্ম বিছাইয়া দিলেন। বিসিবার সময় ভৈরবী হাসিয়া বলিলেন, এ আমাদের বেশ আস্ল; গৃত কলা এক ভারগায় আমায় বাঘছাল বসিতে দিয়াছিল, অমান আমার মনে হঠাৎ কেমন একটা ভয় হইয়াছিল।

প্রথমা। কেন? আপনার হাতে ড অিশুল ছিল ? •

ভৈরবী নিঃশব্দে হাসিয়া বলিলেন, বুবেছি,, আমি ব্ঝিতে পারিয়াছি, অভি স্থশর রহস্য করিয়াছ। বাঙ্গা- লির মেয়ে না হলে এ মিই কণা • প্রথমাণ আমি থাকিছে আপনি সে भाव (कर्हे विलाफ भारत ना।

প্রথমা। কেন ? আপনাদের হিন্দু-श्राम कि धक्रेश तहता (कर करत ना ?

छित्रवी। आगि छ हिन्तृशानी नहि, আমার জন্ম হিমালয় পর্কতে।

প্রথমা। তবে আপনি পাহাডে সেরে

ভৈরবী। (ঈষং নিবক্ত চইয়া) পর্কাছে জন্ম বলিয়াকেহ কেহ আমায় পার্কতী বলেন।

প্রথমা। কোপায় লোকে তপদাবে निश्चित हिमालस्य यात्र । आश्नी हिमालब्र হইতে বাঙ্গালায় ভণ্যা করিতে আগি-वाटिन ।

टिन्नवी किथिश चश्रात्रिक इन्टेलन **(मिशिय़ा, व्याश्वा विधना माद्या**हिङ्छ।द्व বলিলেন, বাঙ্গালিকে পৰিত্ৰ করিবার নিসিত্ত আর একবাব চিমালয় হইলত আরে একজন স্ত্রীলোক আসিয়াছিলেন।

প্রথমা। কে?

দ্বিতীয়া। ভাগীরণী গঙ্গা।

टिख्रती। এ कश्मात मन नरहः धरकरे उत्भाषात्माम वरन १

দেৰতার সহিত মহুষোর তুলনা।

विजीता। आभि यादे शास्त्रत डेल्गान कतिया मिटे ।

टेक्टबरी। बाक, बाक बहेटक बहेटव काद्र कंशान भूकृत्ना ? ना, आमि आश्रनिश डेरगाभ क्रिया गहेव।

कहे (कन शाहेरवन ? अक्षरण कार्यामिक्ष কভদূর করিয়া আধিয়াছেল আপনি পরিচয় শিন, আমি গিয়া भारकत छेत्राश कति।

এই বলিয়া চিলি উঠিয়া গেলে ভৈরবী অপরা বিধবার সভিত কছিতে লাগিলেন।

ভৈরবী। আমি শান্তিশতগ্রামে গিয়া-ছিলাম। রাজা ভাল আছেন, রাজ-কুমাৰ ভাল আছেন, দেওবান্ও রাজ-धानीएक व्यक्तिग्राह्म ।

थाणमा। . बांबबानी (कमन व्याह्मन १ ় ভৈরবী। ভালই আছেন, ভবে রা-জার স্থিত তাঁহার মনাজ্ঞর বোধ হয়। আমি প্রাপমে মনে করিয়াছিলান তোমারই নিমিত্ত মনাস্তর হইয়াছে, পবে দেখিলাম ভাগা নছে।

टिंडवरी गांशाव मत्म कथा कहिएत-ছিলেন ভিনি আনাদের পূর্বপরিচিতা (क्याश्यविधी।

জোৎসাবতী। তবে কাহার নিমিত্র मनाख्य ?

 ৈ তৈরবী (হাসিয়া) সপন্তীর°নিমিত। व्यथमा। ७ (पावारमान जान नरह। तानी मरन कतियारक्रम, उंहात এक সপদ্মী আছে, এতদিন ভাষা জানি-(उन ना।

(ब्गारमावडी। धरे वा!

देश्वभी। एक अकृषि बाञ्चनकना। जा চেন লোকে ভাকে মাধবীশভারুমা বুলে ! লোৎসাবতী। পোড়াকপাল। বাল্লমতিরী তবে থেপেছেন। বাল্ল-কনাা
বড় সাধনী, বড ভাল মানুষ। মাধবীলতা
ভাহার কন্যা নহে, রানীর কন্যা।
• ভৈরবী। সেই ভ কাল হয়েছে।
রাণীর বিশ্বাস যে রালার কলল্ক ঢাকিবার
নিমিত্ত ডুমিই যমকসন্তানের গল্প রটনা
করিয়াছ। ভাতএব কেমন করিয়া তিনি
সেই সপত্নীসন্তানকে মারিবেন এই
এখন ভাহার চেটা।

ভোৎলাবতী। স্বানাশ!

ভৈত্ৰবী। ছই এক দিনের সধাে এই কার্যাসমাধা হটবে, সকল প্রস্তত ।

ভোৎসাৰতী। তবে এখন উপার ? ভৈরবী। মহাদেব লানেন।

জোৎকাৰতী। আমার যে মন বৃদ্ধে না। আমি একবার বাট।

ৈ ডেরবী। যাইতে বাবণ করি না, কিছু তুমি বাটী পৌছিবাব পুংকাই একাৰ্য্য সম্পন্ন হটয়। যাইবে।

জ্ঞোৎস্থাৰ্তী। ভাপনি কোন্ উ-পাছে এ সকল ভানিবেল ?

ভৈরবী। রাজভগিনী পথে পথে বেজাইতেছেন যে উপারে জানিরা' কাঁহাকে আমিছে গিরাভিলাম সেই-উপায়ে এ সকল জানিয়াছি।

জ্যাৎস্থাবন্তী। আপনি কি তবে আমার জানিতে গিরুছিলেন ? আমি যনে করিয়ছিলাম যে কঠাও জাপনাব সহিত জামার সাক্ষাং স্থায় লাপনি আমার স্থা করিয়ছিলেন। ভৈরণী। জামি এইখানে পঁচিশবৎ-সর পড়িয়া আছি, কখন বাহ্নির হই না, জামি কেমন করিয়া জানিব যে, রাজভগিনী কোথা পথে পথে বেড়াই-ভেচেন।

জ্ঞোংসাবতী। তবে কে আপনাকে পাঠাইয়াছিলেন ?

रेख्यवी। सामात ब्रेटरम्य।

জ্যোৎ। আপনার ইষ্টদেব কোন-কপে মাধবীলভাকে রক্ষা করিছে পা-রেন না ?

তৈরবী। বোধ হয় পারেন না।
তিনি ত স্কলই জানেন, রক্ষার উপার
থাকিলে আমার বলিতেন। আমিও তাঁর
কাচে এ কথা উথাপন করিয়াছিলাম
তিনি আমার কথার বড় চঞ্চল হইয়া
বলিলেন, "স্পী আপনাব সন্থান ধার,
কে সে সন্তানকে রক্ষা কবে ? প্রকৃতিব
ক্রিয়ম এই। প্রকৃতি নিজে কি ? নিজেল
চিল্লমন্তা।" আমি আর কিছু বলিতে
পারিলাম না।

(जारा जामनात हेह्रामव (क. १.

, হৈ তববী। কি বলিয়া তাঁখার পরিচয়দিব ? বাজপুবীতে চোমাব বাস, ত্মি
কাছাকে দেবিয়াছ যে:চিনিবে? আমার
ইউদেব নামজাদা নহেন, যে নাম
করিলে বৃঝিবে ? পাগলাপ্রভ্ বলিলে:
চিনিতে পার ?

জ্যোৎসাবতী। বুঝি পারি।

৩২

সেই রাজে জ্যোৎসাবতী বড় অন্থির

হইলেন; মাধ্বীলভার নিমিত্ত মন কাতর হইয়াছিল কি বাণী এই মহাপাপ कतिरवन वित्रा जिनि अधिक नाछ इडेगा-हित्सन देश निक्तय वना यात्र ना ; उँ छत्र করণেই তাঁহার অন্তর চঞ্চল হৈইয়াছিল। কিছ তিনি অনেকবার মনে মনে আলোচনা **ू**क्तित्वन (य, ताङा थाकिएक वा (म उग्नान् ্থাকিতে রাণী কখনই ক্রকার্যা হইতে পারিবেন না। বিশেষতঃ রাণী স্ত্রীলোক, শিশুর প্রতি তাঁহার দরা কোথা যাইবে। মাধ্বীলভাব কোন नारे। এই कथाय मनदक अदनकनात वुकारेलन, मनुडी अत्मक्वरत वृक्षिल ष्यथं हिन्द्रहांकना देशन ना ; वतः क्रा त्रिक्ष भाष्टेरा नाशिन, यम जात अकरे। কি ৰিপদ আছে, মন সেই অস্পষ্ট **खरात मिरक आक्रि इन्टेंग्डिंग, राग** কাঁদিয়া উঠিতেছে; শেষ যুগ্ন তাঁহার চিত্ত ক্ষেত্ত্দন হটয়। উঠিল তপ্র ভৈরবীর নিদ্রাভঙ্গ না করিয়া থাকিতে পারিলেন না। তৈরবী প্রথমে নানা व्यत्वाववाकावादा डाँहातक मास्रमा कति-बाद (हड़े। लावे लग. डाधाद नद मीर्फ নিখাসভাগি করিয়া বলিলেন, ''ফ্যোংক্ষা-বৃত্তি! তোমাল কি বুঝাইব, আমি নিজে অবুঝ হইয়াছি, সামি এইমাত वड़ क्यक्ष (मियाहि।" ,

ক্যোৎ। কি স্বপ্ন দেখিয়াছেন ?
ভৈরবী। তাহা স্পার এখন ুব-লিব না; আমি কলা প্রাতেই একবার শুকুদর্শনে নাইব। জ্যোৎ। জ্ঞামি তবে আপনার সঙ্গে যাব, একবার শাস্তিশতগ্রামে গিয়া দাদার পায়ে ধরিয়া কাঁদিতে পারিলেই জ্যামার অনেক যন্ত্রণা যাবে।

ভৈরবী। জুমি কিরুপে এক। যা ইবেণ আমি ত দেপথে যাইব না।

জ্যোৎ। আপেনি কোথা যাবেন গু যতদ্র পারি আপিনার সংজ ফাইব,,, ভাহার পর যাহা হয় করিব।

এইরপে কথাবার্ত্তার র।তি প্রভাত চললে, উভয়েবাত্তা করিলেন স্পা উঠিরাছে, আত্রে আগ্রে হৈরবী চলিভেছেন, যুগলনারীর পরিকার বালুকাক্ষেত্রে তাঁহার পদচ্চিত্র অক্ষত হইতেছে, তংপশ্চাতে স্থােও যাবতী যাইতেছেন, তাঁহার পদভাব বালুকা অক্ভব করিতেছেনা। জ্যােৎসাবতীর পদন্য শরপত্রেব হিমকবার নাায় জলিতছেন। জ্যােৎসাবতী আগনার সেইন্থলিতছেন। জ্যােৎসাবতী আগনার সেইন্থলিতছেন। ক্রেক্স্ আসিয়া ইভর্নীকে জ্জােসা করিলেন, 'ুআস্নি রাত্রে কি ক্রপ্র দেখিয়াছিলেন।''

জৈরবী কতকদ্র সনামনকে গিয়া বলিলেন, ''আমার গুরু ভিন্ন এ জগতে আর কেহু নাই।''

জোং। বোধ হয় গুরুসম্বন্ধে কোন কুম্মপ্র দেখিয়াছেন ?

ভৈরবী দীর্ঘনিখাসভাগে করিলেন, আর কোন উত্তর দিলেন না। জ্যোৎ সাবতী কোন কথা উল্লেখ না করিয়া। ভৈরবীর সঙ্গে সঙ্গে চলিলেন। তেরবী কতকদূর গিয়া ভিজাসা করিলেন, "তুমি আমার শুরুদেবকে দেখেছ। তিনি বছকালাবধি শুস্তিশতগ্রামেই আডেন।"

জোৎ। রাজবাটীতে যাঁহারা আই-সেন, ভাঁহাদের কপন্কধন অন্তঃপুর-বাসীনীবা দেশিতে পায়।

তৈরবী। সামার গুরুদেব কথন রাজবাটীতে গিয়াছেন বলিয়া বোধ হয় না।

(स्राद्धा (कन्?

ভৈরবী। তাঁব ব্ঝি কি এত আছে, সেই জনা তিনি কখন কোন গৃহপ্রবেশ করেন না।

ভোগে। উঁহোর নাম কি পাগলা আছে?

হৈরবী। তাঁহাব নাম জানিনা,
জানিলেও আমি জীলোক তাহা মুপে
আনিতে পারিতামনা, কিন্তু হিল্পুলনীবা কেহু তাঁহাকে পাগলাপ্রভূবলে, কেহ পাগলাবাহাত্র বলে।

ক্ষোৎ। বাঙ্গালিরা তাথকে কি বলিয়া ডাকে ? তাহারাও কি পাগুলা প্রাভ বলে ?

ভৈরবী। বালালিরা তাঁহাকে পিতম পাগলা বলে। কিন্তু তাঁহার আসল নাম আয়ার কি হইবে।

জ্যোৎ। তবে তিনিই কি আমার আশ্রের দিবার নিমিত্ত আপনাকে পাঠ।ই-য়াছিলেন।

• ভৈরবী। তিনিই পাঠাইয়াছিলেন।

জ্যোৎসাবতী আর কোন কথা জিজ্ঞানা করিলেন না। নিঃশব্দে পথ
অভিবাহিত করিতে লাগিলেন। ভৈরবী
মধ্যে মধ্যে জুই একটি কথা কহিতে
লাগিলেন, জ্যোৎসাবতী ভাষা শুনিতে
পাইলেন না। অনামনক্ষেপথ চলিতে
ছিলেন,যুগলমারীর মাঠ অভিক্রম কবিয়া
জিজ্ঞাস। করিলেন, '' আপনি কোথায়
নাবেন গ্'

ভৈর্ণী। আসি ও বলিয়াছি গুরু-দর্শনে।

জোং। আপনি তবে শান্তিশন্ত-গ্রানে যাবেন। তিনি ত শান্তিশত-গ্রানেই থাকেন।

ভৈরবী। এক্ষণে বৃঝি আর সেখানে থাকেন না।

(জार। তবে কোথায় পাকেন ?

ভৈববী। ঠিক্ জানি না, ছুইদিন হটল এট অঞ্চলে একস্থানে তাঁহার দর্শন পাটয়াছিলাম, এক্ষণে পথে পথে তাঁহার সন্ধান করিব, কোথায় তাঁহার দর্শন পাইব কিছুই বলিতে পারি না.।

এই সময় সমূপে অখণনেষ্টিত এক দীর্থিকা দেখিয়। উভয়ে তথায় গিয়া। বিশ্রাম করিবার নিমিত্ত বদিলেন। তৈভ-রবী নিখাসত্যাগ করিয়া বলিলেন, স্থানটী অভি পবিত্ত ।

জোং। শীতলও কম নহে। তাই থদেশের পাধী এই অশ্বথরক্ষে এগেছে। এরাত গ্রীম বৃশ্বিতে পারে ? ভৈরবী। কিন্তু পর্নের ভাবনাও ভাবে না, ছঃখগ্নও দেখে না।

ক্যোৎ। স্থাসম্বন্ধে আবার আমার ক্রিজ্ঞানা করিতে ইচ্ছা হইতেছে। প্রকাশ করিলে হংমপ্র কলে না, এই জনা লোকে হংমপ্র গোপন করে না, বিশেষতঃ সাতিলাগোত্তের নিকট বলিলে কুম্বপ্র একেবারে নিক্ষণ হইয়া যায়। আমি নাতিলাগোত্তা।

ভৈরবী। তবে একবার কাণে স্থান দেও। কাল স্বপ্নে দেখেছি যে, আমি যেন আবার সেই হিমালরে আছি, আবার যেন আমার বালিকাকাল উপস্থিত। আবার যেন সেই দেবমূর্ত্তি আমার পিতার হারে পড়ে অজ্ঞান অভি-ভৃতঃ—

ভোগে। কোন্ দেবমূর্তির কথা ৰলিতেচেন ?

ভৈরবী। আমার গুরুদেবের কথা বলিভেছি। বছকাল হুইল, গুরুদেব একদিন মরণাপর হয়ে আমার শিতার হারে পড়েছিলেন, তথন আমার বরস দশবৎসর; আমি আনি না যে জাহার কি পীড়া, কিন্তু পীড়া তাহা ব্রিরাছিলাম। সেই একদিন গেছে। কলা স্বপ্নে দেখিলাম, যেন জিনি আবার শিতার হারে পড়িরা আছেম এবার চক্ষু চাহিরা আমার বলিছেন, "পার্বভি! আর উল্পান্ধ নাই, মন্তেইয়াও আমার বাঁচাইরা- চিব না; একবার আমার বাঁচাইরা-

ছিলে, এবার জার পারিবে না। এই দেখ জামার সর্বাঙ্গ পুড়ে প্রেচ।'' 'আমি বেন দেখিলাম, ভারার পারে স্থানে স্থানে' ভাল উঠিয়া গিয়াছে।

জোৎসাৰতী কাঠপুতুলিকার ন্যায় নী-तक दहेवा बहित्सन। अहे नमब जूहे-জন পথশ্ৰান্ত ব্ৰহ্মচারী তথার উপ-ত্বিত হইলেন। জ্যোৎসাবতী, বুক্ অखनात्न शिन्ना वित्रत्ननः, वृद्धकाती व्यथ्राय टेंड बवीटक मुखायन कविया कथा आत्रस कतिरमन, देखत्री छाहात সৈহিত কথাবার্ডার পরমাপ্যারিত চইরা শেষ বেদান্তের বিচার উপস্থিত করি-লেন: জীলোকের অসাধারণ বিচারশক্তি-দেখিয়া বৃদ্ধ একেবারে চরিভার্থ इटेलन, अज्ञवद्यम इटेल इय छ त्याहिड হইভেন। বাঙ্গালার ভারতচন্দ্র মালা-করের বিদ্যা লইরা প্রেম গড়িতে গিয়া-किलन। ध अवदात्र (वनाखन विमात्र य किছू इस ना अक्रम कान् हिन्ह वित्य ।

যথন দৈরবীর সহিত বৃদ্ধপ্রদানী
শাল্রালাপে মন্যমনক ছিলেন, তথন
মপর ব্রদ্ধারী—বয়স আয়, একট্ট
চঞ্চল—জ্যোৎয়াবতীর প্রতি কটাক
করিতেছিল। হঠাৎ ভৈরবী ভাষা দেখিতে
পাইলেন, একট্ট বিরক্ত ইইলেন, কিন্তু
কিছু না বলিয়া আবার ব্রদ্ধারীর সংক্ষ
আলাপ করিতে লাগিলেন। কিন্তুক্লণ
পরে দেখিলেন, যুবা তথনও ঈশিতলোচনে জ্যোৎলাবতীর দিকে চাহিনী

আছেন, ভৈরণীর দৃষ্টি অফুসরণ করিয়া বৃদ্ধ ব্রহ্মচারী যুবার এই আশ্রমবিগহিত कार्या मिथिया छीष्टांटक चालनात निक्छि नमाहेश दिनाटस्त्र खनवाचा कतिएक লাগিলেন। যুবা ভারাতে কর্ণাভও করি-লেন না, আবার মুগ ফিবাইয়া এক এক-বার জ্যোৎসাবভীর শ্রভি চাহিতে শাগি-লেন। , একবার ধুবার প্রতি ক্লোৎসা-বভীর দৃষ্টি পড়িল, যুবা হঠাৎ প্রাকুল-वम्या हक्षण इहेशा छेठिन, क्यांश्यावडी অনিমিক্লোচনে যুবার প্রতি চাহিয়া বহি-লেন। ভৈরবীর ভাছা অসহা হইল, বৃদ্ধ ত্রন্ধচারী শ্লসিতে লাগিলেন। তৈর্বীর আরও অসহা হটল, তিনি তিরস্কার আরম্ভ করেন এমত সময় যুবা বিতাৎ-**(वर्ग क्यांश्यावछीत शार्य गिया छेल**-স্থিত হটল। ভাহার পর তাহার পাদ-भृत्त भूत नुकाठेश काँ पिश्र डिठिन। ভ্যোৎসাবতী সন্নেহলোচনে তাহার মুণ मुहाँदेवा वनिरमन, ''आमात माडकिनी ?'' ् टेडबैंबी विश्वशानतालाहरन এकनाव জ্যেৎসাৰভীর প্রতি, একবার বৃদ্ধ ব্রহ্ম-**চারীর প্রতি চাহিতে লাগিলেন। বৃদ্ধ**, उर्यागती । विश्वताशत रहेबाहित्मन'; মাতজিনী বাঁহার পাল্পুণে গিয়া পড়িল তিনি রাজভাগনী (ব্যাৎসাবতী, हेश वृष अक्षांत्री व्यर्थस बार्डव करतन नारे।

জ্যোৎ। মাতৃদিনি ! তোমার এবেশ কেন ?

मी 🔊 । जी त्वरण भथ हला तक विभन्न ।

জ্যোৎ। কোথা গিয়াটিলৈ ?

মাত। একটা মকোদ্দমা করিতে গিয়াচিলাম।

্রেলাং। ভোষার আবার কি মকো-ক্ষমা।

गाउ। हिन এक्টा।

জোৎ। আমার বলিরা যাও নাই কেন।

যাত। বলিলে হয় ত আপনি আমার ছাডিয়া দিতেন না।

(कार्। मरकाममाय कि इडेल ?

মাত। কিছু হলো না। অদৃষ্ট ভিন্ন সকলেই আমার স্থাপক্ষ ছিল, এখনগু আশা বার নাই। একজন প্রতিবাদী ফেবার হইয়াছেন ভাঁহাকে ধরিতে যাই-কেচি।

জোংং। তবে কি এগন**ও তোমার** পাবনাং

মাত। দিন কতকেব জনা পাবেন না।
জোৎ। ডোমার আসামী কোথা ?
মাত। তাত জানি না, পথে পথে
থুঁজিব। তাঁহার দেখা না পাই আর
আপনার সঙ্গে দেখা হবে না।

ब्बार। " कार्था यादव ?

মাত। যেখানে সকলে যার। মকো-দ্দমা হারিলে আরে আমি বাঁচিব না। কি সুখে বাঁচিব ?

জ্যোৎ। কে জানে বাছা, এতদিনের পর তোমার এমন কি মকোদমা পড়িল যে তৃমি তাহার নিমিত্ত প্রাণ বাহির করিবে। কই এত দিন ত তোমার মকোদমার কথা কিছুই শুনি নাই। ্ব। ভাৰিয়াও কাজ নাই। আগ্ৰহ আগানি বাড়ি চলুন, আগ্ৰনাকে আরু লাগিয়া আমি বাবে পথে কেডাই।

জ্যাহ। আমার, বাজ্বি কোষাই আয়ি কোষাই প্রাথি কার্যাই আর আমার ভর্ম নাই। ত্মিও সধী পাইবাছ, আমিও সধী পাইবাছ, আমিও সধী অধন আপনার নিজের কর্মে বাই-ভেছেন, আমার ইচ্ছা যে দিন কতক তোমানের সংক্ষ থাকি।

মাত। তবে ভাহাই ভাল।

এই সময় তৈরবীর সহিত ব্রশ্বচারী
মূল্পরে জোৎমাবতীর কণা কহিতে-ছিলেন। মাভঙ্গিনী তাহাদের কি বলি-কোন, তাহার পর চারিজনে একত্র প্রামাভিষ্পে চলিলেন।

সমন্ব অক্ষচারী, জ্যোৎসাৰ্তী - প্রভৃতি প্রাসমধ্যে প্রবেশ করিলেন, গেই সময় অপর পথ দিয়া একজন স্র্যাসী সেই প্র:মে প্রবেশ বিশেষ মনোবোগ করিয়া खाँहारक इन्नरंभी विनवा रवाश हत : একজন, ভড়ের সহিত কহিতে क (नवमिश्वत मधीभवखी इहेटलन। তথার পিক্তম পাগলা মন্দিরপ্রান্তরে অন্ধিত একটি প্লোক পাঠ করিছে চেটা পাইতেছিল। পিতম धक्यात काशास्त्र व्यक्ति करे।क कतिन : नदव मह्यामी निक्रवर्की हरेला, निख्य त्र कारमे ना कित्रा विशेष, ''समार्पने ভাষা, मधानी कर्द अवदि।" मुद्यानी धक्र हक्त रहेबारे उरक्नार जानवान इटेरनन, रानिमूटन कि बनिद्यन खेनकम क्रिएकिएनन, अवैक समय निष्म विन বেন, 'বাছালা অঞ্চরকলি ভারিক, मुगरमागनिर्गत कक्ष मामविक, किवि-की पिरंगत स्वक्त गुरी, रमहेत न नवहाती व की जारिक नागीक चार्ड अस्ति क्षेत्र काकित्रवासी १ वृद्धितासीक व् नेपानी जादि छात्रव क्षेत्र वृद्धि नेपानी

लिंडन । वृद्धित ना ! कारनि चक्रत-क्षि दक्ष्यम अवगति, दक्षा अवगति, दक्ष उत्रमाति क्षेत्र अवस्ति। विस्थिक क्षेत्र-वाबि, छाहे बनिएडिकाम काइनि अकड शामविका आवे अकटम्हणत अकत ভীবের মত ছিল, বাঁকা ভীর,, সোজা তীর, ভীর্বাক্তীর; ভাহাও সামরিক। कितिकीत अकत, भृष्ठातात अञ्जल, काठ, क्यांत्रा, वामनकामन देखांति। डाइ।इ (न काकंत्र गृही। जात्र भागा-मि(शर चक्त श्रृकालित चक्रुत्रेश; रह, মুদ্রা, নরকপাল ইত্যাদি, তাই ভান্তিক। অক্ষরসৃষ্টির সময় যে আভিয়া যে দিকে দৃষ্টি অধিক থাকে সে জাতির সেই ध्यक्रत हन्। यनि टैवसःटवता সৃষ্টি করিতেন, ভাহা হইলে তল্মীর আকারে উছাদিগের অকর হইত। আর ভূষি বদি এবন অকর প্রস্তুত করিতে, তাহা হইবে কাহার আফুতি লইয়া অক্ষর করিতে। 🛮 মাধ্বী-লভার ! কিন্তু শাল্কে লিবিয়াছে যে ভোমার হাতে আমার মৃতা। ক্ষত্রের তুরি **७थन मान जामात्र मणा कि इत्र ।** আমি তবে কার হাতে মরিব 🕈 আমি ट्डांग्रह हिन्दि जनना कृतिशाहि, बीर-क्षात नरम नरम दक्षात्रात मुख्य

नहा। जार कृषिरे बाँद्रभ महित्य, ट्याबार नाजनाम इनहास, ट्याबा नमनक्ष्यन मा नाडिस्टिन बांब बायान ट्याम स्थानाहै।

এই ব্যিষ্কা ক্ষমান্ত্ৰ লাগ্ৰাক কি বঁবা গেল, আৰু ব্যক্তিৰ ইাড়াইল না। গিডম প্ৰসন্তব্যক ক্ষিত্ৰত কোইট আঠ ক বিতে নাৰিল।

বঙ্গদশন

म अभवरमत्।



৮৪ সংখ্যা।

়বাঙ্গালির উৎপত্তি।

চতুর্থ পরিচেছদ। · আন্যীকরণ।

(১) সাঁওতাল (০) হো (০ ভূমিজ (৪) মুও (৫) বীরছোড় (৬) কডুয়া (৭) কুঁব্ বা কুকু বা মুমার্সি (৮) থাড়িয়া ১ (জুয়াং) এই কয়টি কোলবংশীয় বাজাশার লেঃ প্রণ্রের শাসন-অধীনে পাওয়া যয়ি।

জ্মালোরা উড়িমার টেকানান ও
ক্রেওঝড়প্রদেশে বাস করে। কুর্ বা
মুমার্সির সঙ্গে এ ইতিহাসের কোন সম্বদ্ধ
নাই। থাড়িমারা সিংহজ্মের অভিশয়
বনাকীর্ণপ্রদেশে বাস করে; মানভ্মের
পাহাড়েও ভাহাদের পাওয়া যায়।
বীরহোড়েরা হাজারিবাগের জঙ্গলে
থাকে। কড়ুয়ারা সরগুলা, যশপুর ও
পালামৌ অঞ্চলে থাকে। উহাদিগের
সঙ্গে মিশ্রিত "অস্বর" নামে আর একটি

কোলবংশীয় জাতি পাওয়া যাধ। কুবকু ভাতি আরও পশ্চিমে।

সাঁওতালেবা গঙ্গাতীর হইতে উড়ি-ব্যায় বৈতরণীতীর পর্যান্ত ৩৫০ মাইল বাপ্তি করিয়া বাদ করে—কোণাও কম কোথাও বেশী। যে প্রদেশ এখন "সাঁওতাল পরগণা" বলিয়া খ্যাভ, ভাহা ভিন্ন, ভাগলপুর, বীরভূম, হাজারিবাগ, মানভূম, মেদিনীপুর, সিংহ-ভূম, বালেশ্বর; এই কয় জেলায় ও ময়ুরভঞ্জে সাঁওতালদিগের বাদ আছে। হো, ভূমিজ এবং মুণ্ডের সাধারণ নাম কোল। হোজাতিকে লড়্কা বা লড়াইয়া কোল বলে। ভূমিজেরা কাঁ-मारे ७ ऋवर्गद्रिशा निष्ठा विद्यात महिन ভূম জেলা প্রভৃতি প্রদেশে বাস করে। মৃত্ত বা মৃত্তারীরা চুটিয়া নাগপুর অঞ্চলে বাস করে।

হরিবংশে আছে যে, য্যাতির কনিষ্ঠ পুত্র তুর্বস্থর বংশে কোল নামে রাজা ছিলেন। উত্তর ভারতে তাঁহার রাজ্য ছিল: তাঁহারই বংশে কোলদিগের উৎপত্তি। * মহুতে "কোলি সর্প " मिर्गत **भूनःभूनः** अनक (प्रश ভ'রতবর্ষে কোলেরা এককালে প্রধান हिल, এমত বিবেচনা করিবার অনেক কাবণ আছে। হণ্টর সাহেব প্রমাণ করি-বার চেষ্টা করিয়'ছেন, ভারতবর্ষের সর্বা खरे, दश नामक (कान चानिमकां डित वा সের চিহ্ন পাওয়া যায়।† তিনি যে সকল প্রমাণ সংগ্রহ করিয়াছেন, তাহার व्यक्षिकाश्या व्यक्षिक अक्षा करा यात्र ना : কিন্তু হো বা কোলছাতি যে একদিন বহুদুরবিস্ত দেশের অধিবাসী ছিল, তাহাও সম্ভব বোধ হয়। হো শক্ষেই কোলিভাষায় মহুষা বুঝায়। একসময়ে ইহাবা স্বজ্ঞাতি ভিন্ন অনা কোন জাতির অস্তিত্ব জ্ঞাত ছিল না।

কর্ণেল ড্যাণ্টন প্রতিপর করিবার চেষ্টা করিয়াছেন যে, কোলেরাই পূর্ণের মগধাদি অমুগান্ধ প্রদেশের অধিবাসী ছিল—যাহাদ এখন বাঙ্গালা ও বেহার সে প্রদেশে তথন কোলভাষা ভিন্ন অনা কোন ভাষ। প্রচলিত ছিল না। মগপপ্রদেশে বিশেষতঃ শাহাবাদ জেলার অনেক ভগ্নদির অট্যালিকা আহিছ। প্রবাদ আছে দে, সে সকল চেরো এবং কোলজাতীয়দিগের নির্শ্বিত। কিম্বদ্ধী এইরূপ যে ঐ প্র দেশে সাধারণ লোক কোল ছিল, রা জাবা চেরো ছিল।

ঋথেদসংহিতায় কীকত নামে এক-ভাতির প্রায়ত্র আছে। ঝথেদের টীকাকার मात्रनाहार्या वर्णन त्य, देककटळता অনার্যাজাতি ছিল, এবং ভাগ্ধবতপুরাণ হইতে কয়েক পংক্তি উদ্ধৃত করিয়া লিখিয়াছেন যে: গ্যাপ্রিদেশকে কীক তরাজা বলিত। অতএব কীকত মগধান্তর্গত ছিল এমত বিবেচনা कता यादेए भारत । कर्नन निन-(क'र्ड वर्लन (य, खत्रामरक्रत शृत्र्व মগধদেশকেই কীকতরাজ্য कतामक अर्थम मर्गपनाम अष्ठात करतन। কৈকতেরা গো-পালন করিত, গোকর হুগ্ন বাবহার করিত না। লেরা অদ্যাপিও গোকর হুগ্ধ ব্যবহার কবে না৷ এই সকল কারণে অনুমিত হইয়'ছে যে, অতি প্রাচ্নীন্কালে সগণে कानिपात्रहे नाग हिल। यह मकन. কথার মৌলিকতা আমি নিশ্চয় করিতে পারিলাম না। আর সেই প্রাচীন কোল রাজ্যের অনা কোন চিহ্নও পাওয়াঁ याश ना ।

কণিত আছে যে কোলেরা স্বর নামক জাবিতী অনা্গালাত্কর্ক ম্গ্র

^{*} Asiatic Researches Vol. IX P. 91 & 92

[†] Non-Aryan Dictionary, Linguistic Dissertation P. 25 et &c.

হইতে বহিদ্ধৃত ইইয়াছিল, সব রেবা মরু ও মহাভারতে অনার্যাজাতি বলিয়া বর্ণিত হইয়াচে । সবর অদ্যাপি উড়িষাার নিকটবর্তী প্রদেশে বর্তুমান আছে ।

দ্রাবিভীয়পুণ বাঙ্গালার উপাস্ত ভাগ मकरल दकालवः भौत्र किर्शव व्यरशका वि হাজারিবাগের ওঁরাও (ধাসত) ও রাজমহলের পাহাডীরা ভিন্ন আর কেহ निकरहे नारे। शास्त्रता जाविकी नरहे, কিন্ত ভারারা আমাদিগের নিকটবাসী নহে। কিন্ত বাঙ্গালাব ভিতবেই এগন व्यत्निक कांछि नाम कंद्रि, यে छाहाता দ্রাবিভবংশীয় ১ইলে হইতে পাবে। কর্বেল ভাল্টন বলেন যে কোচেরা জন্ম-গান্ধ বিজয়ী দাবিডীগণ হইতে উৎপয়। বছতর কোচ বান্ধালাব ভিতরেই বাস कति (७ (ছ) मिना ल पून, गांच मह, राज শাহী, রঙ্গপুর, বগুড়া, ঢাকা, ময়মন দিংছ - প্রস্তৃতি জেলায় কোচদিগকে পা ওণা যাৰ। বাহ্বালাব ভিতৰ প্ৰায় पक्लक caitb दे नाम चारहा धरे लक বোককে বাঙ্গালি বলা যাইবে কি না १৬ (कह रकह बत्तन, इंडानिशत व नामा -লির সামিল ধরিতে হইবে। पि विभएत भिक्कशास । काट्ड वाका शि

ইউক বা না ইউক, বাঙ্গালার ভিতরে অনার্গা আছে কি নাত্র কথার আমা-দিগের একবার আলোচনা করিয়া দেখা প্রয়োজন।

কে আৰ্ণা, কে অনাগ্য ইহা নিরা-পণ করিবাব জনা ভাষাত্ত্ত প্রধান উপায় ই**হা দেখান** গিয়াছে। বাহার ভাষা আর্যাজাতীয়ভাষা, সেই আর্যাবংশীর। य! हार जाया अनार्या छाया, (महे अनार्याः জাতীয়, ইহা দির করা গিয়াছে; পবে দেখান গিয়াছে যে, যে অনার্য্যের ভাষা দাবিড়গাতীয় ভাষা সেই দাবিডবংশীয় অনাৰ্যা; যাহাব ভাষা কোলজাতীয়ভাষা সেই কোলবংশীয় অনার্যা। কিন্ত এমন কি হুটতে পারে না যে,ভাষা একজাতীয় বংশ जनाका शैव धकाशास्त्र मनाविष्ठे हहै. याद्य ? अगन कि इहेट गाद ना. य প্রাজিত জাতি জেতুগণের ধর্মা, জেত গণেব ভাষা গ্ৰহণ কৰিষা জেতুদিগের অভিভক্ত হইয়াছে ?

এমন উদাহরণ ইতিহাসে অনেক পাওয়া যাঁষ। ফুনেরে বর্তমান ভাষা লাটনমূলক,কিছুফবাসিভাতির হাজিমজ্ল কেল্টীয় শোনিতে নির্দ্ধিত। প্রাচীন-গলেবা রোমকগণকর্তৃক প্রাজিত ও বোমকবাদ্ধাভুক্ত হইলে পর বোমীয়

^{*} The proud Brahman who traces his lineage back to the palmy days of 'Kanauj and the half civilized (? Koch or Palya of Dinagepore may both be fitly spoken as Bengali, Bengali Cons is Report 1871.

সভ্যতা গ্রহণ করে। এবং সেই সঙ্গে সঙ্গেল রোমীয়ভাষা অর্থাৎ লাটনভাষা গ্রহণ করে। যথন পশ্চিম রোমক্সাম্রাজ্য ধ্বৎসপ্রাপ্ত হয়, তখন গলদিগের মধ্যে লাটিনভাষাই প্রচলিত ছিল, পরে তাহারই অপত্রংশে বর্ত্তমান করাসি ভাষা দাঁড়াইয়াছে। আইবিরিয়াতেও (শেপন ও পর্টু গল) ঐরপ ঘটিয়াছিল। আমেরিকার কাফরিদাসদিগের বংশ প্রভূদিগের ভাষা অবলম্বন করিয়াছে, জাতীয়ভাষাব পরিবর্ত্তে ইংরেজি বা ফরাসি ব্যবহার করিয়া থাকে। ত্ব অত্তর্বে ভাষা আর্থাক পরিবর্তে ইংরেজি বা ফরাসি ব্যবহার করিয়া থাকে। ত্ব অত্তর্বে ভাষা আর্থাক প্রবিধ্যা হইলেই আর্থাবংশীয় বলা যাইতে পারে না অন্য প্রমান আ্রখাক।

সকলেই জানে যে আর্যোরা ককেশীয় বংশীয় : ককেশীয় বংশের মধ্যে আর্যা

ভিন্ন অনা বংশও আছে, কিন্তু ককেশীয় বংশের অন্তর্গত নহে এমন আগ্রিজাতি नारे। करकणीयमिश्रय सम्मन-शीववर्ग দীর্ঘশরীর মস্তক স্থগঠন হন্দর অসুনত। মোগল বংশ ককেশীয়দিদের হইতে পুথক। মোপলীয়েরা থকাকার মস্তকের গঠন চতুকোণ হন্দম অতায়ত। যদি কোন জাতিকে এমন পাওয়া যায় যে তাহা-দিগের শারীরিক গঠন মোক্ষণীয়, তবে • সে ভাতিকে কথন আৰ্যা বলা ঘাইবে না। বদি দেখিতে পাই সে জাতীয়ের ভাষা আর্যান্ডাষা তাহা হইলে এইরূপ বিবেচনা করিতে হইবে যে তাহারা ফাদৌ অনার্যাভাতি, আর্যাদিগের সহিত কোন প্রকার সম্বর্গিষ্ট হইয়া আগ্র দিগেব ভাষা গ্রহণ কবিয়াছে। আবাব

* ভারতবর্ষেও এই আর্যা অনার্যাজাতিদিনের মধ্যে আজিকার দিনেই আস্-দিগের প্রভাক্ষগোচ্বে এইরূপ ভাষাপরিবর্ত্তন ঘটতেছে। प्रिंग प्रिंग আপন মাতৃভাষা স্থানে অনার্গোরা পরিত্যাগ করিয়া ুজার্যাভাষা গ্রহণ ;ুরিভেছে। কর্ণেল ডালেটন বলেন যে ভিনি ১৮৬৮ সালে কোডবা জাতীয়গণের ভাষা সম্বন্ধে কতকগুলি তত্ত্বের অনুসন্ধান করিবার অভিপ্রামে কোড়বাদিবৈর বাসভূমি যশপুর রাজ্যে গমন করিয়াছিলেন, ভাঁছার তলবমতে বছসংথাক অসভা কোড়বা আসিয়া তাঁছাকে ছেরিয়া পাড়া ইল কিন্তু তাহাদিগের মধে। ^{কেহ}ই কোডবা ভাষার এক পারিল না। তাহারা বলিল তাহারা ডিহি কোডবা—অর্থাৎ পার্বত্য প্রদেশ পরিত্যাগ পূর্বক সমতল প্রদেশে বাস করিয়া চাষ আবাদ করিতেছে। সমাজ পরিত্যাগের সঙ্গে ভাষাও ত্যাগ করিয়াছে। উদাহরণের স্বরূপ ভালেটন আরও বলেন যে চুটীয়া নাগপুর প্রাদেশে ওঁরাওুদিগের শ্বকল গ্রাম আছে ভাষার মধ্যে অনেক আনেক গ্রামের ও রাওয়েয়া লাভীয় গ্রা বলিতে পাবে না, হিন্দি বা • মুগুদিগের ভাষায় কথা কছে। Ethnology of Bengal P. 115.

ষদি দেখি যে সেই অনার্যাঞ্চাতি কেবল আর্যাভাষা নহে আর্যাধর্ম পর্যান্ত গ্রহণ করিয়া আর্যাসমাঞ্চলুক হইরাছে—তথন বুবিতে হইবে যে একজাতি অপর জাতিকে বিজিত করিয়া একজ বাস করায় একের সঙ্গে অন্য মিশিয়া গিয়াছে। যদি আবার দেখি যে এই বিমিশ্রজাতিদ্বরের মধ্যে আর্যা উরত অনার্যা অবনত, তবে বিবেচনা করিতে হইবে যে আর্যারা জয়কারী, অনার্যােরাই বিজিত হইয়া আর্যাস্সাজের নিয় স্তরে প্রবেশ করিয়াতে।

ইহাতে এই এক আপত্তি হইতে পারে যে, হিন্দ্ধর্ম অহিন্দুর পক্ষে গ্রহ গীয় নহে। যে কেহ ইচ্ছা করিলে এছিয় কি ইস্লাম ধর্ম গ্রহণ করিয়া গ্রাষ্টিয়ান বা মুদলমান হইতে পারেন। কিন্তু যে হিন্দুক্লে জন্মগ্রহণ করে নাই— সে হিন্দুধর্ম গ্রহণ করিয়া হিন্দু হইয়া হিন্দুসমাজে মিশিতে পারে না। ক্ষত্ত এব য়ে ক্রাম্মা ক্ষাদি হিন্দুক্লজাত নহে সে কথক হিন্দু হইয়া হিন্দুসনাজে মিশিয়াছে, এ কথা কেহ বিশাস করিবে না।

তই আপত্তি বাজিবিশেষের পক্ষেবলবৎ বটে। কিন্তু এক একটি বৃহৎভাতির পক্ষেইহা পাটতে পারে না।
বিশেষতঃ বনা অনাগ্য ভাতিদিগের
পক্ষে থাটিতে পারে না। মুসলমান বা
খ্যাটিয়ান কখন হিন্দু হইতে পারে না,
কেন না যে সক্ষ সাচার হিন্দু জ্পবংস-

কারক তাহারা পুরুষামূক্রমে সেই সকল আচার করিয়া পুরুষামুক্রমে পতিত। কিন্তু এ প্রদেশের বনা অনার্যা জাতি-**मिरशंत यर्धा हिन्दुद्विनाभक** কোন আচার ব্যবহার নাই যে তাহা হিন্দুদিগের অতি নিকৃষ্ট জাতিদিগের মধো—হাড়ি ডোম মুচি কাওরা প্রভৃতির মধ্যে, পাওয়া যায় না। মনে কর হিন্দু-প্রবল কোন প্রদেশের সন্নিকটে অথবা হিন্দুদিগের অধীনে কোন অসভ্য অনার্য্য জাতি বাস করে। এমন স্থলে ইছা অবশাই ঘটিবে যে আর্য্যেরঃ সমাজের বড় অনার্য্যেরা সমাজের ছোট থাকিবে। মনুষোর স্বভাব এই যে যে বড়, ছোট তাহার অনুকরণ করে। কাজে কাজেই এমত স্থল অনার্যোরা ছিলুদিগের সর্বা-সীণ অনুকরণে প্রাবৃত্ত হইবে। আমরা এখন ইংরেজদিগের অমুকরণ করিতেছি পুর্বে মুদলমানদিগের অমুকরণ করি-তাম। আমাদিগের একটি প্রাচীন ধর্ম আছে, চারি হাজার বৎসর হইতে সেই ধর্মা নাল্যবিধ কাবা দর্শন ও উচ্চ নৈতিক ए द्वित्रवाता अलक्ष्ठ इहेश्रा (लाक्याता-' মোহন ইইয়াছে, তাহার কাছে নিরাভরণ ইসলাম বা এছিয় ধর্ম অনুরাগভাজন হয় না। এই জন্য আমরা এখন সর্ক্থা ইংব্লেদিগের অনুকরণ করিয়াও ধর্ম-সম্বন্ধে ভাষ্ণাদের ভত্টা অমুগ্যন করি না। কতকটা না করিতেছি এমনও নহে। কিছু অনার্যাদিগের মধ্যে তেমন ইজ্জ^ল বা শোভাবিশিষ্ট কোন জাতীয়

क्या नारे। अत्नक द्राल এक्कार्त কোন প্রকার জাতীয় ধর্ম নাই। অবস্থায় অধীন অনাধ্যদ্যাজ প্রভু भार्याक्रितंत अना विषय रयमन अञ्-করণ করিবে ধর্মসম্বন্ধেও সেইরপ অমুকরণ করিবে। হিন্দুরা যে ঠাকুরের পুলা করে ভাষারাও সেই ঠাকুরের পুলা করিতে আরম্ভ করিবে। হিন্দুরা যে সকল উৎসব করে তাহারাও সেই সকল উৎসব করিতে আরম্ভ করিবে। জীবন-নির্বাহের নিতা নৈমিত্তিক কর্মা সকলে হিন্দুদিগের নাায় আচার বাবহার করিতে থাকিবে। সমগ্রহাতি এইরূপ ব্যবহার করিতে থাকিলে কালক্রমে তাহারাও হিন্দু नागशांद्रवं कदित्व। अना हिन्तू (कह कथन তাহাদিগের অর খাইবে না। তাহা-দিগের সহিত কন্যা আদান कतिरव नां, अथवा अना कांन क्षेकारत ভাহাদিগের সহিত মিশিবে না-হয় ত তাহাদিগের স্পৃষ্ট অল পর্যান্তও গ্রহণ করিবে না। অতএব তাহারাও একটি পুণক্ হিন্দুজাতি বলিয়া গণা হইশে। তা-হারা আগে যেমন পৃথক্ দ্বাতি ছিল এখনও ভেমনি পৃথক্ জাতি রহিল, কেবল হিন্দু, দিগের আচার বাবহারের অফুকরণ গ্রহণ করিয়া হিন্দুজাতি বলিয়া থাাত হইল। পাশ্চাতাদিগের মধ্যে একটি বিবাদের क्या वाह्। (क्ट्रक्ट्रव्यन दग हिन्नू धर्म "proselytizing নহে অর্থাৎ যে জন্মা-বধি হিন্দু নয় হিন্দুবা ভাহাতক ছিন্দু কুরে না। ছার এক সম্প্রদায नरनान (ग

হিন্দু ধর্ম proselytizing অর্থাৎ অহিন্দু এ হিন্দু হয়। এ বিবাদের স্থূল মণ্ম উপরে বৃঝান গেল। 'গ্রীষ্টান, বা মুসল-মানদিগের proselytism এইরূপ যে তাহারা অন্যকে ভলায়, ''তুমি এীষ্টান হও, তুমি মুসলমান হও।'' আছত বাক্তি খ্রীষ্টান বা মুসলমান হইলে তাহার সঙ্গে আহার ব্যবহার কন্যা আদান প্র- ' দান প্রভৃতি সামাজিক কার্য্য সকলেই করিয়া থাকে, বা ক্রিভে পারে। হিন্দুদিগের proselytization সেরপ নহে। হিন্দুরা কাহাকেও ডাকে না বে, "তুমি স্বধর্ম তাগি করিয়া আসিয়া हिन्तु इष्ठ।" यनि (कह श्रिष्ठाक्राकरम হিন্দ্শর্গ্রহণ করে তাহার সঙ্গে আহার ব্যবহার বা কোন প্রকার সামাজিক কার্গ্য করে না, কিন্তু যে হিন্দুধর্ম গ্রহণ করিয়াছে তাহার বংশে হিন্দুধর্ম বজায় • থাকিলে ভাহার হিন্দামও করিতে পারে না। একটা সম্পূর্ণ জাতি এইরূপে হিলুধর্ম গ্রহণ করিয়া পুরুষাত্র-क्रांग विक्रू धर्म शानन कहिलाः मुकलारे তাহাকে হিলুজাভি বলিয়া স্বীকার করে। হিন্দুদিগেব proselytism এই व्यकात। विभक्त प्रतमान वा श्रीहान সম্বন্ধে যে অর্থে ব্যবস্ত হইয়া থাকে हिन्दू निरंगत मश्रास तम व्यर्थ वावक छ হয় না। প্রকৃত প্রস্তাবে হিন্দুদিণেব मत्पा proselytism नाई अनः उपर्थ বাচক ভারতীয় কোন সার্যা ভাষায় (कान भवाव नाहै।

বে অর্থে অহিন্দু ইন্ত পারে বলা গিয়াছে দে অর্থে এখনও অনেক অনার্যা জাতি হিন্দু হইতেছে। কি প্রকার হইতেছে তাহা বেঙ্গাল সিবিল্যার্স্কিসে রিললি সাহেব মানভূমেয় বুতাস্তে নিয় লিখিতমত বর্ণনা করেম। তিনি বলেন '' ' এই ঘটনা कियमः । हिम्मु ও অहिन्सु পরস্পারে, বিবাহ অথবা উপপত্নী পালন कतांत श्रेथा वत्न, कियमश्रम अनार्याता হিন্দু আচার ব্যবহার গ্রহণ করিয়া **ट्यिष्टाक्टरम हिल्लाम धारण कराय, धार** কিয়দংশে হিন্দু রাজপুরুষদিগের ইচ্ছা-প্রচারিত আজ্ঞাক্রমে ঘটিয়াছে। কখন কখন হিন্দুরাদগণ অনার্য্য প্রজাবর্গকে অমূলক জাতিবাচক উপাধি দিয়া হিন্দু সমাজ মধ্যে গ্রহণ করিয়াছেন। স্থানীয় কিম্বদম্ভীতে এরপ জাতিসৃষ্টির ঁঅনেক পাওয়া যায়। উত্তর হালারিবাগ थारमा ज्याधिकां श्रीमिरशत शतिहातक কাহার জাতি যে অনার্য্যবংশীয় তাহা তাহাদেঁর ৰাহ্যু প্রকৃতিতে বুঝা যায়।"* थनायां बाजि (१ यांभनानिश्वत थनाया ভাষা পরিত্যাগ করিয়া আর্ঘা ভাষা ও . আর্থাধর্ম গ্রহণ পূর্বক হিন্দু হইয়াছে

প্রথম। হাজারিবাগ প্রদেশে বিদ্যা
নামে একটি জাতি বাস করে। বেদিয়া
হইতে তাহারা পৃথক্। বিদ্যা নাহাত্ম
নাম তাহারা কথন কগন ধারণ করিয়া
থাকে। ইহারা হিন্দিভাষা কয় এবং হিন্দ

তাহার কয়েকটি উদাহরণ দিতেচি।

मधा भना किन्छ এই विमानिन मुख्यां जीत কোল তাহাতে কোন সংশয় নাই। চুটীয়া নাগপুরের মুগুদিগের আকৃতি ইহাদিগেরও দেইরূপ মুগুদিগের মধ্যে পহন নামে এক একজন পুরে।হিত বা গ্রাম্য কর্ম-हाती मर्क्क (मथा याय, विनागरणत मरधा अ ঐরণ গ্রামে গ্রামে পছন মুণ্ডেরা লোহা প্রস্তুত করিতে স্থাক— এবং সেই ব্যবসায় অবলম্বন করিয়া থাকে। বিদ্যাগণও সেই কাজে স্থদক ও স্থবাবসায়ী। সার মুগুদিগের মধ্যে কিলী অর্থাং জাতিবিভাগ আছে, ইহাদিগেরও সেইরপ আছে। মুগুদিগের কিলীর যে य नाम विमानिरशत किलीत अ रमहे रमहे নাম। অভএব ইহা একপ্রকার নিশ্চয় করা যাইতে পারে যে বিদ্যাগণ মুগু কোল। কিন্তু এখন তাহারা হিন্দীভাষা वरल ७ हिन्तू धर्मा व्यवलघन कतिशा हरल। দিতীয়। আসামে চুটীয়া নামে একটি

বিতীয়। আসামে চুটীয়া নামে একটি জাতি আছে। তাহাদের মুখাবয়ব অনার্যোর ন্যায়। কোন আসামীবৃক্ষপ্রীতে কর্ণেল ড্যাণ্টন দেখিয়াছেন যে,
'উত্তরপ্রদেশস্থ পর্বত হইতে তাহারা
উপর আসামে প্রবেশ করিয়া স্থবলেশ্বরী পার হইয়া সদীয়াপ্রদেশে বাস
করে। লক্ষিনপুরপ্রদেশে দিক্রনদীর
উপরে এবং উপর আসামের অন্যত্র
দেউরী চুটীয়া নামে এক চুটীয়াজাতি
পাওয়া গিয়াছে। তাহাদিগের ভাষা

^{• *} Statistical Account of Bengal Vol. VII P. 213

সমালোচন করিয়া স্থির হইয়াছে যে, ঐ চুটীয়া ভাষা গারো ও বোড়োদিগের ভাষার সঙ্গে একজাতীয়। • অত এব চুটীয়ারা যে অনার্যাজাতি তর্ষিষ্যে সংশার নাই। কিন্তু একংণে আগামের অধিকাংশ চুটীয়া হিন্দু বলিরা গণা। এবং তাহারা আপনারাও হিন্দু চুটীয়া বলিরা আপনাদিগের পরিচয় দেয়। হিন্দু চুটীয়া বলিলেই বুঝাইবে যে ফ্লেড্ডিটীয়া ছিল বা আছে।*

তৃতীয়। কাছাড়িরা অনার্গাবংশ। তাহা-দের অবয়ব মোক্ষণীয়। কিন্তু আসাম-প্রদেশীয় কাছাড়িরা হিন্দু হট্যাছে। এবং এক্ষণেও অনেকে হিন্দু হট-তেছে।

চতুর্থ। কোচেরা আর একটি সনার্যাভাতি। আসল কোচভাষা মেছ কাছাড়িভাষা সদৃশ, কিন্তু ঐতিহাসিক সমবেই কোচবেহারের রাদ্ধাদিগের আদিপুরুষ হজুর পৌত্র বিস্থাসিং হিন্দুধর্ম গ্রহণ
করিয়াছিলেন এবং জাঁহার সঙ্গে সঙ্গে
কোচ বেহাবের যত ভতলোক হিন্দুধর্ম
গ্রহণ করিয়াছিলেন। ইহারা রাজবংশী
নাম গ্রহণ করিলেন। ইত্র কোচেরাণ
মুদলমান হইল।

পঞ্ম। ত্রিপুরার পাহাড়িলোক অ-

নাৰ্য।জাতি। কিন্তু তাহারাও হিন্দ্ধর্ম অবলম্বন করিয়াছে।∦

ষষ্ঠ। খাড়োরার নামক অনাগ্রন্থাতি কালীপুলা করিয়া থাকে। গ্র

সপ্তম। পছেয়া নামে পালামৌতে এক জাতি আছে, তাহারা হিন্দীভাবা কর এবং কতকগুলি আচার বাবহার তাহাদের হিন্দুদিগের ন্যায়। ভাহাদের অনার্যাত্ত নিঃসন্দেহ।

অষ্ট্রন। সপ্ত জার কিসাম বলিরা এক জাতি আছে, তাহারাও অনার্য এবং তাহাদিশের আচার ব্যবহার সব কো-লের ম্যার, তাহাদেরও ভাষা হিন্দী এবং তাহারা কতক কতক হিন্দু আচাব ব্যবহার গ্রহণ করিয়াছে।§

নবম। "বুনো" কুলি সকলেই
দেখিয়াছেন। তাহারা জাতিতে সাঁওতাল, কোল বা ধালড় (উবাঁঙ)। কিন্ত
এ দেশে যত "বুনো" দেখা যায়,
সকলই হিন্দু।

এরপ আরও অনেক উদাহরণ দেওয়া
যাইতে পারে। যাহা দৈওয়া গেল
তাহাতেই যথেষ্ট হইবে। এই কয়েকটি
উদাহরণদারাই উত্তমরূপে প্রমাণ হুইতেছে যে বাঙ্গালির বাছিরে এমন
অনেক অনার্যবংশ পাওয়া যায় যে

^{*} Statistical Account of Bengal Vol. XVI P. 82-3

⁺ Dalton's Ethnology P. 78.

^{||} Buchanan Hamilton-Rungpur Vol. III P. 419 Hodgson

I. A. S. B. XXXI. July 1849.

[¶] Dalton's Ethnology P. 130.

[§] Dalton's Ethnology P. 132.

তাহার। আর্যাভাষা গ্রহণ করিয়াও হিন্দুধর্ম গ্রহণ করিয়া হিন্দুজাতি বলিয়া গণ্য হইয়াছে। যদি বাঙ্গালার বাহিরে অনার্যা হিন্দু পাওরা যাইতেছে তবে বাঙ্গালার ভিতরে বাঙ্গালির মধ্যে এরপ অনার্য্য হিন্দু থাকাও সম্ভব। বাস্তবিক আছে কি না তাহার বিচার করার প্রয়োজন।

এইখানে বলা উচিত যে পাশ্চাত্য-দিগের সাধারণ মত এই যে প্রাচীন চতু-র্ববের মধ্যে শূদ্রদিণের উৎপত্তি এই রূপই ঘটিয়াছিল। জাতিভেদ সম্বন্ধে অনেকে অনেক মত প্রচার করিয়াছেন। আমাদিগের মতে, জাতিভেদ তিন প্র-কারে উৎপন্ন হইয়াছে। প্রথম আর্যা-গণের মধ্যে ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশ্য ভেদ। वि वावनाग्रास्टात्रे छेरभन इरेग्राहिल। এখন আমরা ইউরোপে, দেখিতে পাই, य दकान दकान कूलीनवः भ शूक्रवाञ्चरम রাজকার্যো লিপ্ত। কোন সম্প্রদায় পুরু-যামুক্মে বাণিজা করিতেছে। मञ्जामां भूकषाञ्क्राम कृषिकांचा वा মজুরী করিতেছে। কিন্ত ইউরোপে, . धक मञ्जापादात (लाक जना मञ्जापादात ব্যবসায় গ্রহণ করার বিল্ল নাই। এবং সচরাচর এরূপ ব্যব-সায়াশ্বর গ্রহণ করিয়া থাকে। ভারতবর্ধের প্রাচীন আর্য্যেরা চনা করিতেন যে যাহার পিতৃ পিতামহ ব্যবসায় করিয়াছে সে সেই वावमार्रे अप्रकार हा। जाहारक स-

বিধা আছে বলিয়া লোকে প্রথমতঃ ইচ্ছা করিয়া পৈভূপিতামহিক ব্যবসার অব-লম্বন করিত। শেষ উচ্চব্যবসায়ীদিগের নিকট নীচবাবসায়ীরা ঘুণা হওয়াতেই হউক অথবা ব্রাঙ্গণদিগের প্রণীত দৃঢ়বন্ধ मभाषनी जित्र वर्णाष्ट्र इडेक, विमानावाव-সায়ী যুদ্ধবাৰসায়ীর সঙ্গে মিশিল না। যুদ্ধব্যবসায়ী বণিকের সঙ্গে মিশিল না। এইরূপে তিনটী আর্যাবর্ণের সৃষ্টি। জাভি-ভেদ উৎপত্তির দ্বিতীয় রূপ শূদ্রদিগের বিবরণে দেখা যায়। তাহা উপরে বুঝাই-য়াছি। শ্রেষ্ঠব্যবসায় সকল আর্হ্যেরা আপনার হাতে রাখিল নীচব্যবসায় এবং কৃষিকার্য্য শৃদ্রের উপর পড়িল। বোধ হয় প্রথম, কেবল আর্যো ও শুদ্রে ভেদ জন্মে। কেন না এ ভেদ স্বাভাবিক, শৃজেরা যেমন নৃতন নৃতন আর্য্যসমাজ-ভুক্ত হইতে লাগিল, তেমনি পৃথক্বর্ণ বলিয়া, আর্ধ্য হইতে তফাত রহিল। বৰ্ণ শক্ষ ইহার প্রমাণ। বৰ্ণ অর্থে तड । शृर्त्वरे (पशरेया व्यानियाहि (य व्यार्थाता शोत, व्यनार्थाता "कृष्ट-ঘচ।'' তকে গৌর ক্বঞ্চ হুইটি বর্ণ পাওয়া গেল। সেই প্রভেদে প্রথম, আর্য্য ও শুদ্র এই হুইটী বর্ণ ভিন্ন হুইল। একবার मगांख्य गांधा थाक आंत्र इंटेल. আর্থাদিগের হতে, ক্রমেই থাক বা-थाकिरव। তথন আর্যাদিগের ব্যবসায়ভেদে, ত্রাহ্মণ বৈশা তিনটী শ্ৰেণী পৃথক্ হইয়া পড়িল, সেই ভেদ বুঝাইবার জন্য পুর্বাপরিচিত

''বর্ণ'' নামই গৃহীত হইল। তার পর আর্থা আর্ব্যে আর্ব্যে অনার্যো বৈধ বা অবৈধ সংসর্গে শঙ্করজাতি সকল উৎপন্ন হইতে লাগিল। শঙ্করে শঙ্করে মিলিয়া আরও জাতিভেদ বাড়িল। জাতিভেদের তৃতীয় উৎপত্তি এইরূপ।

পূর্ব পীঠিকাম্বরূপ এই কয়টি কণা বলিয়া আমরা বাঙ্গালি শূদ্রদিগের মধ্যে অনাগ্যমের অমুসন্ধান করিব।



वानम गर्छ।

विविक्रमहत्त हरिष्ठां था था श

अगी छ।

উপক্রমণিকা।

অভি বিস্তুত অবণা। অবণামধাে অধিকাংশ বৃক্ষই শাল, কিন্তু ভদ্তির আরও অনেকজাতীয় গাছ আছে। গাছের মাথায় মাণায় পাতায় পাতার মিশামিশি হইয়া অনস্ত শ্রেণী চলিয়াছে। विष्ट्रमभूना, हिज्रभूना, जात्नीकथात-(भव शथमाळ मृना; এইরূপ পরবের অনস্তসমুদ্র, ক্রোশের পর ক্রোশ, ক্রো-, (भात भात (काम, भावत्म खत्रक्र अभावत् তরঙ্গ বিকিপ্ত করিছে করিতে চলিয়াছে। नीटि चनास्तकात् । मशाद्वि ७ जा-লোক অক্ট, ভয়ানক! ডাহার ভি তরে কণন সম্ধা যায় না। পাতার অনন্ত মর্মার এবং বন্য পশুপক্ষীর রব ভিন অন্য শব্দ ভাহার ভিতর শুনা যায় না।

একে এই বিস্তৃত অতি নিবিড় জন্ধত্মসময় অরণ্য। তাহাতে রাত্রিকাল।°
রাত্রি দিতীয় প্রাহর। রাত্রি অতিশয়
অন্ধকার। কাননের বাহিরেও অন্ধকার;
কিছুদেখা যায় না। কাননের ইভতরে
তমোরাশি ভূগর্ভন্থ অন্ধকারের ন্যায়।

পশুপক্ষী একবাবে নিস্তর্ধ। কত লক্ষ লক্ষ কোটা কোটা পশু পক্ষী কাট পত্ত পক্ষী কাট পত্ত সংক্ষ কোটা কোটা পশু করিছেছে না। বরং সে কর্মকার অনুভব করা যায়—শক্ষমী পৃথিবীয় সে নিস্তর্কভাব অনুভব করা যাইতে পারে না।

সেই অন্তঃশূন্য অরণামধ্যে, সেই স্চ্নি ভেদ্য অন্ধকারময় নিশীণে, দেই স্থনন্থ- ভবনীয় নিস্তক্ষ মধ্যে শক হইল,''আমার মনস্কাম কি সিদ্ধ হইবে না ?''

শক্ষ হইয়া আবার সে অরব্যানী নিতথক ডুবিয়া গেল। তথন কে বলিবে যে

এ অর্বাসপো মুম্যাশক শুনা গিয়াছিল।
কিছুকাল পরে আবার শক্ষ হইল, আবার
সেই নিস্তক্ষ মণিত করিয়া মুম্যাকণ্ঠ
ধ্বনিত হুইল, ''আমার মনস্বাম কি সিদ্ধ
হুইবে না গু'

এইরপ তিনবার সেই অন্ধকার সমুদ্র আলোড়িত হইল। তখন উত্তর হইল, "তোমার পণ কি।"

প্রত্যন্তরে বলিল, "পণ আমার জীবন সর্বস্থা"

প্রতিশক্ষ হইল, "এ পণে হইবে না।"
" আর কি আছে ? আর কি দিব।"
তথন উত্তব হইল, "তোমার প্রিয়ন্তনের
প্রাণস্থায়।"

প্রথম খণ্ড।

প্রথম পরিচ্ছেদ। ১১৭৬ সালে গ্রীমকালে একদিন পদচিক গ্রামে রৌদের উত্তাপ বড় প্র-বল। গ্রামথানি গৃহনায়, কিন্তু লোক (पश्चिना। वाकारत माति माति पानिन, शार्षे माति माति हाना, भहीरा भहीरा শত শত সুক্ষয় গৃহ, মধ্যে মধ্যে উচ্চ নীচ অট্রলিকা। আবে সব নীরব। वाङादि (माकान वस, (माकानमात का-থায় পলাইয়াছে ঠিকানা নাই। আজ शंदेवात, शादे शादे नार्श नारे । जिक्कात দিন, ভিক্ষুকেরা বাহির হয় নাই। তত্ত্ব-বায় ঠাত বন্ধ করিয়া গৃহপ্রাস্তে পড়িয়া ক।দিতেছে, ব্যব্সায়ী ব্যব্সা ভূলিয়। শিশু ক্রোড়ে করিয়া কাঁদিতেছে, দাতারা

मान वस्त्र कतियादक, व्यथाभिदक दोन

বন্ধ কবিরাছে; শিশুও বুঝি আব সাহস করিয়া কাঁদে না। লোক দেখি না, সবোববে স্নাতক দেখি ना, गृश्वादत मञ्चा (निश ना, तूरक शकी प्तिथ ना, ल्लाहावरन ल्लाक प्तिथ ना, टक-वन माभारन मुंशान, कुक्व। এक वृह्र অট্টালিকা,--তাহার বড় বড় ছড়ওয়ালা थांग पृत : इटेट ए पथा यात्र — एनहे ° গৃহারণামধ্যে° শৈলশিখরবং পাইতেছিল। শোভাই বাকি, দার রুদ্ধ, মন্থাসমাগমশুনা, শক্থীন, বায়ু প্রবেশের পক্তে বিল্লময়। ভাহার মধ্যাহ্নে ক্রিতর অন্ধকার. অন্ধকারে নিশীথফুলুকুস্মযুগলবৎ দম্পতি বসিয়া ভাবিতেছে। তাহাদের সমুখেও মন্থর।

১১৭8 मार्ट कमन छान इस नाहे, স্থতরাং ১১৭৫ সালে চাল কিছু মহার্ঘ্য ट्रेन--(नारकत (क्रम इरेन, किन्छ ताजा রাজস্ব কড়ায় গণ্ডায় বৃঝিয়া লইল। রাজস্ব कड़ांत्र शंखांत्र वृकाहेत्रा निया निविध्वता একসন্ধ্যা আহার क्रिल। সালে वर्षाकाल (यभ वृष्टि इहेन। लारक ভাবিল, দেবতা বুঝি কৃপা করিলেন। व्यानत्म जावात त्राशां गार्क गांन গাইল, কৃষকপত্নী আবার রূপার পৈঁচার জন্য স্বামীর কাছে দৌরাত্মা আরম্ভ ক্রিল। অক্সাৎ আখিনমাসে দেবতা विश्व इरेटनन। आधित, कार्तिक विन्त्रभाख वृष्टि शिक्त ना, भार्क धाना जकल खकारेया এकেবারে अफ़ श्रेया গেল। যাহার ছুই এককাহন ফলিয়া-ছিল, রাজপুরুষেরা তাহা সিপাহীর জন্য কিনিয়া রাখিলেন। লোকে আর খা-हेटल शाहेन ना। প্রথমে একসন্ধ্যা উপবাদ করিল, তার পর একদন্ধ্যা আধপেটা করিয়া খাইতে লাগিল, তার পরে তুইসক্ষা উপবাস আরম্ভ করিল। य किছू हिळ कमन इहेन, काशाव भूरथ ভাহা কুলাইল না। কিন্তু মহম্মদ রেজা থাঁ রাজস্ব আদায়ের কর্ত্তা, একে বাঙ্গালি ভাহাতে মুদলমান, মনে করিল, चामि এই সময়ে সরকরার ইইব। একেবারে শক্তকরা দশটাকা রাজস্ব ৰাড়াইয়া দিল। বাঙ্গালায় বড় কারার কোলাহল পড়িয়া গেল।

লোকে প্রথমে ভিকা করিতে আরম্ভ

করিল, তার পরে, কে ভিকা দেয় !--উপবাস করিতে আরম্ভ করিল। তার পরে রোগাক্রাম্ভ হইতে লাগিল। পোর্রু (विष्ति, नामन (बाग्रान (विष्ति, वीक-थान थाहेब। रक्तिल, चत्रंवाड़ी त्विति । জোভদ্রমা বেচিল। ভার পর মেয়ে বেচিতে আরম্ভ করিল। তার পর ছেলে বেচিতে আরম্ভ করিল। তার পর স্ত্রী বেচিতে আরম্ভ করিল। তার পর মেয়ে, ছেলে, স্ত্রী কে কেনে 🎙 थतिममात नारे, मकलारे (विहाल हात्र। থাদ্যাভাবে গাছের পাতা খাইতে লা-গিল, ঘাস খাইতে আরম্ভ করিল, আ-গাছা খাইতে লাগিল। ইতর ও বন্যেরা क्कूब, हेन्द्र, विफाल शहरक लाशिन। व्यत्तर्क भनारेन, यारात्रा भनारेन, छा-হারা বিদেশে গিয়া অনাহারে মরিল। याशांत्रा भनारेन ना, उाशांत्रा अथामा খাইয়া, ना चाইয়া,৻রাগে পড়িয়া, প্রাণ-ত্যাগ করিতে লাগিল।

রোগ সময় পাইল, জর, ওলাউঠা কর, বসন্ত । বিশেষতঃ বসন্তের বড় প্রাত্তাব হইল। গৃহে গৃহে বসন্তে মরিতে লাগিল। কে কাহাকে জল দের, কে কাহাকে স্পর্শ করে। কেহ কাহাকে দেখে না; মরিলে কেহ ফেলে না। জতি রমণীয় বপু জট্টালিকামধ্যে আপনা আপনি পচে। যে গৃহে একবার বসত্ত প্রবেশ করে, তার সকল গৃহবাসীরা রোগী ফেলিয়া ভয়ে পলায়।

মহেন্দ্র সিংহ পদচিক্ত প্রান্থে বড় ধনবান্—কিন্ত আজ ধনী নির্ধনের এক
দর। এই ছঃধপূর্ণকালে ব্যাধিপ্রস্ত হইয়া তাঁহার আত্মীয়স্থজন, দাসদাসী
সকলেই গিয়াছে। কেহ মরিয়াছে,
কেহ পলাইয়াছে। সেই বছ পরিবার
মধ্যে এখন তাঁহার ভার্যা ও তিনি
স্বয়ং আর.এক শিশুকনাা। তাহাদেরই
কণা বলিতেছিলাম। নিকটে এমন
একটি প্রতিবেশী নাই, যে একটু জল
দিয়া যায়।

তাঁহার ভার্য্যা কল্যাণী চিন্তা ত্যাগ করিয়া গো-খালে গিয়া স্বয়ং গো-দোহন করিলেন। পরে হুগ্ধ তপ্ত করিয়া,কন্যাকে খাওয়াইয়া, গোরুকে ঘাস জল তিতি গোলেন। ফিরিয়া আসিলে মহেল্র বলিল, "এরপে কদিন চলিবে ?"

কল্যাণী বলিল, "বড় অধিক দিন
নয়। যতদিন চলে; আমি যতদিন
পারি চালাই, তার পর তুমি মেয়েটী
লইয়া, নগরে যুয়াইও।" নগরে মহেক্রের
পিতৃষ্পা বাস করেন।

মহেক্র। নগরে যদি যাইতে হয় ভবে, তৈানায় বা কেন এত ছঃখ দিই। চল না এখনই যাই।

পরে ছইজনে অনেক তর্ক বিতর্ক হইল।

ক। নগরে গেলে কি কিছু বিশেষ উপকার হইবে? ম। সেস্থান হয় ত এমনি জনশ্না, প্রাণরকার উপায়শ্ন্য, হইরাছে।

ক। যদি তাহাই হইরা থাকে, তবে
মুরশিদাঝাদ, কাশিমবাজার বা কলিকাতায় গোলে প্রাণরক্ষা হইতে পারিবে।
এস্থান ত্যাগ করা সর্বতোভাবে কর্ত্ব্য।

মহেক্র বলিল, ''এই বাড়ী বছকাল হ-ইতে প্রুষাকুক্রমে সঞ্চিত ধনে পরিপূর্ন; ইহা যে সব চোরে লুঠিয়া লইবে।''

ক। লুঠিতে আসিলে আমরা কি
ছুইজনে রাখিতে পারিব। প্রাণে না
বাঁচিলে ধন ভোগ করিবে কে? চল,
এখনও বন্ধ সন্দ করিয়া যাই। যদি প্রাণে
বাঁচি ফিরিয়া আসিয়া ভোগ করিব।

মহেক্র জিজাসা করিলেন, "তুমি পথ হাঁটতে পারিবে কি ? বেহারা ত সব মরিয়া গিয়াছে, গোক্র আছে ত গাড়ো-য়ান নাই, গাড়োয়ান আছে ত গোক্র নাই।"

ক। আমি পথ হাটব, ভূমি চিস্তা ক্রিওনা।

কলাণী মনে মনে স্থির করিলেন থে, না হয় পূথে মুরিয়া পড়িয়া থাকিব,তবু ভ ইহারা ছইজন বাঁচিবে।

পরদিন প্রভাতে ছইজনে কিছু জর্থ সঙ্গে লইয়া, ঘরদারের চাবি বন্ধ করিয়া, গোরুগুলি ছাড়িয়া দিয়া, কনাাটীকে কোলে লইয়া, রাজধানীর উদ্দেশে যাত্রা করিলেন। যাত্রাকালে সহেক্ত

^{়ু&}quot; নগুর বা রাজনগর--- দাবেক বীরভূম রাজ্যের রাজধানী

বলিলেন, ''পথ অতি ছুর্গম। পায়ে পারে ডাকাত, সুঠেড়া ফিরিতেছে। শুধু হাতে বাওরা উচিত নয়।" এই বলিয়া মহেক্স গৃহে ফিরিয়া আসিয়া বন্ধুক,গুলি, বারুদ সইয়া গেলেন।

দেখিয়া কল্যানী বলিলেন, "যদি আরের কথা মনে করিলে, তবে তুমি একবার স্থক্মারীকে ধর। আমিও হাতিয়ার নইয়া আসিব।" এই বলিয়া কল্যানী কন্যাকে মহেক্রের কোলে দিয়া গৃহমধ্যে প্রবেশ করিলেন।

মহেক্স বলিল, "ভূমি আবার কি হাতিয়ার লইবে?" এই বলিয়া মহেক্স তাহার পাছু পাছু গৃহপ্রবেশ করিলেন। আসিরা দেখিলেন, কল্যানী একথানা রূপাবাধা ছোরা কোথা হইছে বাহির করিয়া আবার তাহা রাখিল। বলিল, "এ অক্স জীজাতির নয়।" এই বলিয়া আর কি খুঁজিতে লাগিল।

মহেल विनन-" आवात कि ?"

কল্যাণী বলিল, "কিছু না।" এই বলিয়া কল্যাণী একটি বিষের কুঁল কৌটা বল্পমধ্যে লুকাইল। ছঃখের দিনে কবে কপালে কি হয় বলিয়া কল্যাণী পুর্নেই বিষ সংগ্রহ করিয়া রাখিয়াছিলেন।

জৈছিমাস, দারুণ রৌজ, পৃথিবী দারিমর, বায়তে আগুন ছড়াইটেছ, আকাশ তপ্ত জামার টাদোর্মার মত, পাখের ধূলিসকল অগ্রিফুলিস্বং। কল্যাণী ঘামিতে লাগিল, কখনও বাবলা গাছের ছায়ায়, কখনও ধেকুরগাছের ছায়ায়

বসিয়া বসিয়া, শুদ্ধ পুক্রিণীর কর্দমান মর জলপান করিয়া কত কন্টে পথ চলিতে লাগিল। মেরেটা মহেন্দ্রের কোলে—এক একবার মহেন্দ্র মেরেকে বাতাস দেয়। একবার এক নিবিড় শ্যামলপত্ররপ্পত স্থায় বসিয়া ছুইজনে বিশ্রাম করিল। মহেন্দ্র কল্যাণীর শ্রমসহিষ্ণুতা দেখিয়া বিশ্বিত ছুইলেন। বস্ত্র ভিজাইয়া গৃহেন্দ্র, নিকটত্ব পালল ছুইতে জল আনিয়া আপনার ও কল্যাণীর মুখে, হুলে, পদে, কপালে, জলদেক করিলেন।

कनानी किकिः विश्व इहेरनन वरहे, <u> क्रिक्</u> इरेक्स क्र्याय ४७ व्याक्त रहेत्नन। তাওঁ সহা হয়—মেয়েটীর কুধা ভৃষণা সহা হয় না। অতএব আবার তাহারা পথ বা-হিয়া চলিলেন। সেই অগ্নিতরঙ্গ সম্ভরণ ক -রিয়া দক্ষারপূর্বে এক চটীতে পৌছিলেন। মহেন্দ্রের মনে মনে বড় আশাছিল,চটীতে গিয়া স্ত্রী কন্যার মুখে শীতল জুল দিতে পারিবেন, প্রাণরকার হৃদ্য মুখে আহার দিতে পারিবেন। কিন্তু কই? চটীতে ত মহ্যা নাই ! বড় বড় ঘর পড়িয়া স্থাছে, মাফুষদকল পলাইয়াছে। মহেক্র ইতি **उड: नित्रीक्रव कतिया क्वी कना**रिक একটি ঘরের ভিতর শোয়াইলেন। বাহির হইয়া উচৈচ: বরে ডাক হাঁক করিতে ला शिलन्। कार्य ७ छे छ । शाहितन ना।, उथन महस्य कनाशीरक विल्लन, একটু ভুমি সাহদ করিয়া একা থাক,

দেশে যদিগাই থাকে, জীকৃষ্ণ দয়া কক্ষন,
আমি হ্ধ আনিব। এই বলিয়া একটা
মাটার কলদী হাতে করিয়া মহেজ্র নিজ্ঞাত্ত
হইলেন ফলদী অনেক পড়িয়া ছিল।

দ্বিতীয় পরিচেছদ ।

মহেক চলিয়া গেল। কল্যাণী একা · বালিকা ল্ইয়া সেই জনশ্ন্যস্থানে প্রায়-' अक्षकात कृषीत्रमत्था हातिनिक् नितीक्षण করিতেছিলেন। । তাঁহার মনে মনে বড় ভয় হইতেছিল। কেহ কোথাও নাই, মহুষামাত্রের কোন শব্দ পাওয়া যায় না,কেবল শৃগাল কুরুদ্মের রব। ভাবিতে-हिलान (कन डाँशांक यारेंड मिलांम, না হয় আর কিছুক্ষণ কুধা ভূফা 💓 ক্রিতাম। মনে করিলেন চারিদিকের দারকৃদ্ধ করিয়া বদি। কিন্তু একটি দারেও কপাট বা অর্গল নাই। এইরূপ চারিদিক্ চাহিয়া দেখিতে দেখিতে সমুপস্থ হারে একটা কি ছায়ার মত দেখিলেন। মহ-যাাক্তি বোধ হয়, কিন্তু মহুবাও বোধ হয় না৷ অতিশয় শুক, শীর্ণ, অতিশয় কৃষ্ণবর্ণ, উলঙ্গ, বিকটাকার মহযোর মত কি আদিয়া হাবে দাঁড়াইল। কিছুকণ পরে সেই ছায়া যেন একটা হাত তুলিল, অভিমাংসাবশিষ্ট, অতি দীর্ঘ, শুষ হস্তের नीर्च **एक अञ्चलियां काहारक** रवन সঙ্কেত করিয়া ডাকিল। কল্যাণীর প্রাণ 'শুকাইল। ওঁখন সৈইরূপ আরি একটা हात्र।- ७६, कृष्णवर्ग, मीर्घाकात्र, छेनत्र,-প্রথম ছা্রার পাশে আসিরা দাঁড়াইল।

তার পর আর একটা আসিল। তার পর আরও একটা আসিল। কত আসিল। ধীরে ধীরে নিঃশব্দে তাহারা গৃহমধো প্রবেশ করিতে লাগিল। সেই প্রোয় অন্ধকার গৃহ নিশীথ শ্মশানের মত ভয়কর হইরা উঠিল। তগন সেই প্রেত-বং মৃর্তিসকল কল্যাণী এবং তাহার কন্যাকে খেরিয়া দাড়েইল। কল্যাণী প্রায় মৃচ্ছিতা হইলেন। একজন তাহাকে ধরিল। কল্যাণী মৃচ্ছিতা। ক্লম্বরণ শীর্ণ পুক্ষেরা তখন কল্যাণী এবং তাহার কন্যাকে ধরিয়া ত্লিয়া, গৃহের বাহির করিয়া, মাঠ পার হইয়া এক জঙ্গলমধ্যে প্রবেশ করিল।

কিছুক্ষণ পরে মহেক্র কলসী করিয়া
ছগ্ধ লইয়া সেইখানে উপস্থিত হইল।
দেখিল কেঃ কোথাও নাই, ইতন্ততঃ
অক্সন্ধান করিল, কন্যার নাম ধরিয়া
শেষ জীর নাম ধরিয়া অনেক ডাকিল,
কোন উত্তর, কোন সন্ধান পাইল না।

ভূতীয় পরিচ্ছেদ।

ু যে বন্মধাে, দহারা কল্যানীকে নামাইল সে বন অতি মনােহর। আলাে
নাই, শােভা দেখে এমন চক্ষুও নাই,
দরিজের হৃদয়ায়র্গত সৌল্রের নাায়
সে বনের সৌল্র্যা অদৃষ্ট রহিল। দেশে
আহার থাকুক বা না থাকুক—বনে ফ্ল আছে, ফ্লের গদ্ধে সে অদ্ধারেও আলাে।
বােধ ইইতেছিল। মধ্যে পরিস্কৃত স্থকোমলাশাব্ত ভূমিধতে দস্যারা ক

नानी ७ डाहात कनारक नागहेन। তাহারা ভাহাদিগকে ঘেরিয়া বিদল। তথন তাহার৷ বাদামুবাদ করিতে লা-शिन (य ইहामिशक नहेत्रा कि कत्रा यात्र—त्य किंह अनकात कनानीत मरक ছিল, তাহা পূর্বেই তাহারা হস্তগত করিয়াছিল। একদল তাহার বিভাগে বাতিবাস্ত। অলমারগুলি বিভক্ত হইলে. একজন দহ্য বলিল, ''আমরা সোণারপা লইয়া কি করিব, একখানা গহনা লইয়া (कह जागारक धक्रमें। ठाल माउ, কুধার প্রাণ যায়— আজ কেবল গাছের পাতা খাইয়া আছি।" একৰন এই কথা বলিলে সকলেই সেইরূপ বলিয়া গোল क्रिड्लांशिन।"। जान मा अ,""। हान मा अ," "क्षांत्र थान यात्र, तानां क्राना हाहि ना।" দলপতি তাহাদিগকে থামাইতে লাগিল, किय तक्र थारम ना, क्रांस डेक डेक कथा इहेट गागिन, गानागानि इहेट লাগিল, মারামারির উপক্রম। যে, যে অলকার ভাগে পাইয়াছিল, সে, সে, অল-ক্ষার রাগে তাহার দলপতির গাবে ছুড়িয়া मनপতি छुरे क्कबनरक. মারিল, তখন সকলে দলপতিকে আর্ক্ত-মণ করিয়া তাহাকে আঘাত করিতে नागिन। मनपि अनाशांत भीर्न जवः ক্লিষ্ট ছিল, ঘুই এক আঘাতেই ভূপতিত হইয়া প্রাণভাগি করিল। তথন কুধিত, क्टे, উত্তেজিত, खानम्ना मञ्जामरणत गर्धा এकजन रिनन, भुगान कुक्दबन गाःम शहेबाहि, कुशांत्र आण यात्र, अम

छारे, जाब धरे दिग्रीं क भारे। जभन मकरल खार कालि विलग्ना छेक्रानां कतिया উঠিল। বম কালি! আজ মরমাংস थाहेव, এই विनया (महे विनीर्नाह कुकः কায় প্রেতবং মৃর্ত্তিসকল অন্ধকারে খল थन हांना कतिया, कत्रजांनि निया ना-চিতে আরম্ভ করিল। দলপতির দেহ পোড়াইবার জন্য একজন অগ্নি জালিতে थातृत रहेन। ७क नडा, कार्घ, जुन আহরণ করিয়া, চকম্কি সোলায় আগুন कतिया, त्मरे जुनकार्छ ज्यानिया मिल। তথন অল অল কৃষি জলিতে জলিতে পার্শবর্ত্তী আম্র, জনীর,পনস,তাল, তিস্তিড়ী, খর্জ্ব প্রভৃতির শ্যামল পরবরান্ধি, অর অ প্রভাসিত হইতে লাগিন। কোথাও আলোতে জ্বলিতে লাগিল. কোথাও ঘাদ উজ্জল হইল। কো-পাও প্রস্কুকার আরও গাঢ় হইল। ष्यि श्रेष्ठ इहेटल, এक्ष्मन मृज्याद्यत পা ধরিয়া টানিয়া আগুনে ফেলিতে গেল। তথন আর এক্লন বলিল, 'বাথ ভাই রাথ, রও, রও, যদি মহামাংস. থাইয়াই আৰু প্ৰাণ রাখিতে হইবে, তবে এই বুড়ার ওক্ন মাংস কেন ঋই। আৰু যাহা লুঠিয়া আনিয়াছি তাহাই° थाहेद; এम अ किटिमद्यिष्टीटक পোড़ाहेशी थारे।" आत अकलन वनिन, "याहा रव পোড়া বাপু, আর কুধা সয় না।" उथन नकरन्दे त्नानूश इहेबा विश्वात कनानी कना नहेश छहेशाहिन, (महे मिटक ठाहिल। दिश्त दी, दिमहान

শ্ন্য, কন্যান্ত নাই, মাতাও নাই।
দক্ষাদিগের বিবাদের সময়ে ক্ষ্যোগ
দেখিয়া, কল্যানী কন্যা কেনালে করিয়া
কন্যার মুখে স্তনটি দিয়া, বনমধ্যে পলাইয়াছে। শিকার পলাইয়াছে দেখিয়া,
মার্ মার্ শক্ষ করিয়া, সেই প্রেতমৃত্তি
দক্ষ্যদল চারিদিকে ছুটল। অবস্থাবিশেষে
-মস্ব্য হিংক্ষ জন্তমাত্র।

চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

বন অতাত অন্ধকার, কল্যাণী ভাহার ভিতর পথ পায় না। বুকলতাকণ্টকের ঘনবিন্যাদে একে পথ নাই, ভাহাতে আবার ঘনাক্ষকার। বুক্ষণতাক্টিক **एक कतियां कनानी वनमध्या आरत्न** করিতে লাগিল। মেরেটীর গায়ে কাটা क्षिट नाशिन, त्यरशेष या या या का নিতে লাগিল, শুনিয়া দহারা আরও চীৎকার করিতে লাগিল। কল্যাণী এইরূপে রুধিরাক্তকলেবর হইয়া অনেক-**मृत वनगः शा थाः तभा कति । कित्र**ः কণ পরে চক্রীদ্য় হইল। কল্যাণীর মনে কিছু ভরসা ছিল যে, অন্ধকারে ভাঁহাকে দস্থারা দেখিতে . शांडेटव ना, किय़ १ कना शुँकिया निवल्छ रहेरव ; किंद्ध अक्रांग हत्सामग्र र अग्रांग. সে ভরসা গেল। চাঁদ আকাশে উঠিয়া বনের মাথার উপর আলো ঢালিয়া দিল—ভিত্তরে বনের অন্ধকার আলোতে ভिভিয়া উঠিन। अक्कात উজ्জ्ञन ह-^{ইল।} ন্মাঝে নাঝে ছিজের ভিতর দিয়া,

चाला वरनत छिठत धीरवण कतित्रा, উঁকি ঝুঁকি মারিতে লাগিল। চাঁদ ষত উঁচুতে উঠিতে লাগিল, তত আরও আলো বনে চুকিতে লাগিল, অন্ধকার **সকল আরও বনের ভিতর লুকাইতে** লাগিল। কলাণী কন্যা লইয়া আরও বনের কোণের ভিতর লুকাইতে লাগিল। তখন দস্যুৱা আরও চীৎকার করিয়া চারিদিক্ হইতে ছুটিয়া আসিতে লাগিল —কন্যাটি ভয় পাইয়া আরও চীৎকার করিয়া কাঁদিতে লাগিল। কল্যাণী তখন নিরস্ত হইয়া আর পলায়নের চেষ্টা করিলেম না। এক বৃহৎ বৃক্ষতলে কণ্টকশূন্য ভূণময়স্থানে বসিয়া কন্যাকে ক্রোড়ে করিয়া কেবল ডাকিতে লাগি-লেন, "কোথায় ভূমি, বাঁহাকে আমি নিতা পূজা করি, নিতা নমস্বার করি, বাঁহার ভরদায় এই বনমধ্যেও প্রবেশ করিতে পারিয়াছিলাম, কোণায় ভূমি হে মধুস্দন !'' দেই সময়ে ভয়ে ভক্তির প্রগাঢ়তার কুধা ভ্ষার অবসাদে কল্যাণী ক্রে বাহ্জানশ্ন্য,আভান্তরিক চৈত্ন্য-ময় হইয়া ভনিতে লাগিলেন, অস্তু-तोरक चर्गीयचरत गीठ इटेर**ाइ**—

" হবে মুরারে মধুকৈটভারে
গোপাল গোবিন্দ মুকুন্দ সৌরে
হরে মুরারে মধুকৈটভাবে।"
কল্যাণী বাল্যকালাবধি পুরাণ গুনিয়া-

কল্যাণা বাল্যকালাবাধ পুরাণ শুনরা-ছিলেন, যে দেবর্ষি গগনপথে বীণা-যত্ত্বে হরিনাম করিতে করিতে ভ্রন ভ্রমণ করিয়া থাকেন; তাঁহার মনে সেই করনা স্থাগরিত ছইতে লাগিল। মনে মনে দেখিতে লাগিলেন, শুভ্রণরীর, শুভ্রকেশ, শুদ্রশ্রশ্র, শুভ্রবসন, মহা শ্রীর, মহামুনি বীণাহন্তে চন্ত্রালোক-প্রদীপ্ত নীলাকাশপণে গাইতেছেন,

" হরে মুরারে মধুকৈটভারে।"
ক্রমে গীজ নিকটবর্তী হইজে লাগিল,
আরও স্পষ্ট শুনিতে লাগিলেন, "হরে
মুরারে মধুকৈটভারে" ক্রমে আরও
নিকট—আরও স্পষ্ট—

" হরে মুরারে মধুকৈটভারে।"
শেষে কল্যাণীর মাথার উপর বনস্থাী প্রতিধ্বনিত করিয়া গীত বাজিল,

"হরে মুরারে মধুকৈটভারে।"
কল্যানী তথন নরনোত্মীলন করি
লেন। সেই অর্কজুট বনার্কারবিমিশ্র
চক্তরশ্বিতে দেখিলেন, সন্মুখে সেই গুল
শরীর, গুলকেশ, গুল্পশ্র, গুল্বসন,
ঋষিমূর্তি। জনামনে তথাভূতচেতনে কবাণী সনে ক্রিলেন প্রণাম করিব, কিন্তু
প্রণাম করিতে পারিলেন না, মাপা
নোহাইতে একেবারে চেত্তনাপূন্য হ্রয়া
ভূতলশারিনী হইলেন।

পঞ্চম পরিক্ষেদ।

সেই বনমধ্যে এক প্রকাশ্ব কৃমিথণ্ডে ভর্মালাগণ্ড সকলে পরিবেটিজ হইর।
একটি বৃহৎ মঠ আছে। প্রাণত্ত্ববিদেরা দেখিলে বলিতে পারিতেন,
ইহা পৃক্ষিণলে বৌশ্বদিগের বিহার
ছিল—তার পরে ছিলুর মঠ হইরাছে।

चहानिकाटम्नी विक्रम-गरशा वह्रविश (मवयन्तित थवः त्रश्रूष् माहेबन्तित। সকলই প্রায় প্রাচীরে বেষ্টিত বনাবুক্সশ্ৰেণীৰারা বহি: স্থিত चाष्ट्र त्य मिनगारन चन छिन्त हहेरछ उ কেছ বুঝিতে পারে না যে এখানে (कार्ठ। चाट्ट। चहु। निका मकन चरनक शादनरे खर्ग किन्न मिनमादन **নায় যে সকল স্থান সম্প্রতি মেরাম**র্জ **इहेब्राट्ड। टम्बिटल्डे काना** यात्र त्य, এই গভীর ছর্ভেদা অর্ণামধ্যে মহুষা বাস করে। এই মঠের একটি কুঠারী मस्या এक है। वड़ कूँ दिना व्यक्ति हिन, ভাহার ভিতর কলাাণীর প্রথম চৈতন্য इटेटन दिस्तिन, त्रश्रूष स्मरे अल्लानीय ভ্ৰবসন মহাপুৰুষ। কলাণী বিশ্বিত लाहरन आवात हाहिएड गानिस्नन, এখনও স্বৃত্তি পুনরাগমন করিতেছিল না। उथनं महाशुक्रय विशासन, "मा ध (मन-তার ঠাই, শহা করিও না। একটু ছুধ আছে তুমি থাও তার পর ভোমার महिङ कथा कहिव।" " :

কল্যাণী প্রথমে কিছুই ব্বিতে পারিলেন না; ভার পর ক্রমে ক্রন্সে ননের
কিছু হৈর্যা হইলে, গলায় আঁচল দিয়া
তাহাকে একটি প্রধাম করিলেন। তিনি
স্থমলক আশীর্কাদ করিয়া গৃহান্তর
হইতে একটি স্থাক মৃৎপাত্র বাহিব
করিয়া সেই জ্লন্ত অগ্নিক্তে ত্র্য উত্তপ্ত,
ক্রিলেন। ত্র্য তথ্য হইলে কল্যাণীকে
ভাহা দিয়া ব্রিলেন,

"মা কন্যাকে কিছু খাওয়াও, আপনি কিছু খাও, তাহার পর কথা কহিব।" ক্লাণী হাইচিত্তে ক্ন্যাকে ছ্গ্মপান করাইতে আরও করিলেন। তথন সেই •পুরুষ ''আমি যতকণ না আসি কোন চিন্তা কল্পিও না'' বলিয়া ম নিদ র इटेट वाहिटन (शतनग। वाहित इटेटफ किश्र कान 'भटत कितिया आित्रा (मधि-त्मन (य, कनाानी कनारक वृथ शांख्यान সমাপদ করিয়াছেন' বটে; কিন্তু আপনি किছू थान नाहे; इश्व (यमन हिन शांश एक मन है आरह, अठि अतहे वास इंहे-ग्राष्ट्र। (प्रष्टे भूक्ष उभन वनिस्मन, "মা, তুমি হুধ খাও নাই, আমি আবার वाहित्त याहेटछिह, जुनि छ्र ना शाहेटन कित्रिव ना।"

সেই ঋষিতৃলা পুক্ষ এই বলিয়া বাহিবে ঘাইতেভিলেন, কল্যাণী কাবার ভাঁহাকে প্রণাম করিয়া মোড়ফাত করি-লেন—

বনবাদী বৃদ্ধিলন, ''কি বলিবে গু'' তথন কলাণী বলিলেন, ''আমাকে ত্ধ খাইতে আজ্ঞা করিবেন না—কোন বাধা আঁছে, আমি খাইৰ না।''

'তথৰ বনবাসী অতি ক্লণখনে বিলিলেন, ''কি বাধা আছে, আমাকে বল—আমি বনবাসী ব্ৰহ্মচানী, তুমি আমার কনাা, ভোমার এমন কি কথা আছে যে, আমাকে বলিকে না । আমি ব্যাল বন ছইতে ভোমাকে অজ্ঞানি অবহায় কুলিয়া আনি, তৎকালে তো

মাকে অভাস্ত কুংপিপাসাপীড়িভা ধোধ হইরাছিল, ভূমি না থাইলে বাঁচিবে কি প্রকারে ?"

কলাণী তথন গলদঞ্লোচনে বলি-লেন, "আপনি দেবতা, আপনাকে বলিব —-আসার স্বামী এপর্যান্ত অভুক্ত আছেন, তাঁহাব সাক্ষাৎ না পাইলে, কিম্বা তাঁহার ভোজনসম্বাদ না শুনিলে, আমি কি প্রকারে পাইব ?"

ব্দ্রচারী ভিজ্ঞাসা করিলেন, ''ভোমার স্থানী কোণায় ?''

কল্যাণী বলিলেন, 'ভাহা আমি জানি না—তিনি তুধের সন্ধানে বাহির হ-ইলে পর দহারা আমাকে চুরি করিয়া লইয়া আদিয়াছে।" তখন ব্ৰন্নচারী এ-कि धकि कि विद्या श्रेश किया कलानी এবং তাঁহার স্বামীব বুক্তান্ত গমুদ্য অব-গত হইলেন। কল্যাণী স্বামীর নাম বলিলেন না, বলিতে পারেন না, কিছ আর আর পরিচয়েব পরে ব্রহ্মচারী বুঝি-লেন। জিজ্ঞাসা করিলেন, "তুমিই মহে-ক্রের পত্নী ?" কলাণী নিরুত্তর হইয়া द्भारति । उभन उक्रांती वितितन, ''জুমি আমার বাকা পালন কর, তৃগ্ধ পান কর, আমি তোমার স্বামীর সংব:দ जागिट इ कि क्ष ना शहेरन जामि याहेर माँ।" कनाानी वनितन, "अकडू জল এখানে আছে কি ?" ব্ৰহ্মতারী জল-कत्र (पशहेशा पितानः कक्षनि , পাভিলেন, उक्षात्री कक्षनि श्-রিয়া জল ঢালিয়া দিলেন।

সেই জলাঞ্জলি ব্রহ্মচারীর পদমূলে লইরা গিরা বলিলেন, "আপনি ইহাতে পদরেণু দিন।" ব্রহ্মচারী অস্তুষ্ঠের হারা জল স্পর্শ করিলে কলাাণী সেই জলাঞ্জলি পান করিলেন এবং বলিলেন "আরি জ্মৃতপান করিরাছি—আর কিছু খাইতে বলিবেন না—স্বামীর সম্বাদ না পাইলে আর কিছু খাইব না।" ব্রহ্মচাবী তথন বলিলেন, "তৃমি নির্ভয়ে এই দেউলমধ্যে অবস্থিতি কর, আমি ভোনার স্বামীর সম্বানে চলিলাম।"

यर्छ পরিচেছদ।

রাত্রি অনেক। চাদ মাগার উপর, পূর্ণচন্দ্র নহে, আলো তত প্রথব নহে। এক অতি বিস্তীর্পাস্থবের উপর সেই অস্কৃত্যের ছায়াবিশিষ্ট অস্পষ্ট আলো পডিরাছে। সে আলোকে মাঠেব এপ'ব अभात (मथा याहेर करक ना, मार्फ कि चाडि, (क चाडि मिथा यावेटकड ना। মাঠ যেন অনন্ত, জনশূনা, ভারের আবাদ-कान विवा (वांध इटेएक्टइ। प्रेटे गर्क দিয়া মুরশিদাবাদ যাইবার রাস্তা। গ্রা-স্তার ধারে একটি কুদ্র পাহাড়। পাহা-एउन डेभन घरनक आञामित्रका गा (इत माथा नकल, हारमत चारनारक উজ্জল হইরা সর্পর্করিয়া কাঁপিতেছে, ভাহার ছায়া কালপাণবের উপর কাল ছটয়া পড়িয়া ভৰ্তর্ করিয়া । কাঁণি-(करका तक्षाती मह शाहारकर जेनह

উठिया भिषदत माजारेता छक रहेगा শুনিতে লাগিলেন—কি শুনিতে লাগি-লেন বলিতে পারি না। সেই অন্ত-जुना श्रास्टराय कान मक नाई-(करन ৰুক্ষাদির মর্মারশক। একস্থানে পাছা-ড়ের মূলের নিকটে বড় অঙ্গল। উ-পরে পাহাড়, নীচে রাজপথ, মধ্যে (मरे बन्ना। (मशात कि भक्त हरेन विनिष्ठ भारि ना-जन्नहाती स्मेरे पिरक रशरनन। निविष् अञ्चलमस्या ध्वरवन कतिरनन, (मधिरनन, रमरे वनमर्था বৃক্ষরাজির অন্ধকারতলদেশে সারি সারি সারি গাছের নীচে মানুষ বদিয়া আছে। माञ्चनकल मीर्घाकात, क्रुक्कात, म শন্ধ, বিটপনিচ্ছেদে নিপতিত জাোংলাৰ তাহাদের মার্জিত আয়ুধ সকল জলি-তেছে। এমন ছুইশত লোক বসিয়া আছে-একটি কথাও কহিতেছে ন। ব্ৰহ্মচাৰী ধীরে ধীরে ভাছাদিগের মধ্যে शिया कि अकि। इंकिंड क्रिटिन-(क्र উঠিল না, কেছ कथा कंदिल ना, किश কোন শব্দ করিল না। তিনি সকলেবু मञ्जूष निम्ना मकनारक मिथिएक मिथिएक रगटनन, अक्रकाटन मुचलाटन छाहिया निती-ক্ষৰ করিতে করিতে গেলেন,যেন কাহাকে भूँ बिट्ड हम शाहेर छ हम ना। भूँ छिया चुँ विश्वा धककरांक हिनिया छारात अञ न्भर्भ कतिया है कि कति लिन। है विक कतिएक दें तम केठिल। अभागती जाशाक লইয়া দূরে আসিরা দাড়াইলেন ৷ এই नाकि गुनाशकन—धनक्ता/अपूरणाणाउ

তাহার চক্রবদন আবৃত — সে বলিইকায়, অতি অ্নার প্রথম। সে গৈরিকবসন পরিধান করিয়াছে — সর্কালে চন্দন-শোভা। ব্রহ্মচারী তাহাকে বলিলেন, "ভবানন্দ, মহেক্সসিংহের কোন সহাদ রাথ ?"

ভবানক তথন বলিল, "মহেন্দ্র সিংহ
আৰু প্রাতে স্ত্রী কন্যা লইরা গৃহত্যাগ
করিরা মুরশিদাবাদের পথে যাইতেছিল,
চটীতে—"

এই পর্যাস্ত বলাতে ব্রহ্মচারী বলিলেন "চটাতে যাহা ছটিয়াছে ভাহা, জানি। সন্তানের একাজ নহৈ। কে করিল?"

ভবা। গেঁরো চাবালোক বোধ
হয়। এখন সকল গ্রামের চাবাভূষো
পোটের জালায় ডাকাত হইয়াছে। আজ
কাল কে ডাকাত নয় ? আমরাই আজ
লুটিয়া খাইয়াছি—কোভোয়াল সাহেবের তুই মণ চাউল ঘাইডেছিল—ভাহা
গ্রহণ করিয়া বৈঞ্বের ভোগে লাগাইয়াছি।

ব্ৰদ্যারী হাসিয়া বলিলেন, "চোরের হাত হতে আমি তাহার ব্রী কন্যাকে উদ্ধার করিয়াছি। এখন তাহাদিগকে বৈঠে রাখিয়া আসিয়াছি। এখন তোমার উপর ভার যে মহেক্সকে খুঁজিয়া তাহার ব্রী কন্যা তাহাব জিম্মা করিয়া দেও। এখানে জীবানন্দ থা-কিলে কুার্য্যোজার হইবে।"

ভবানৰ স্বীকৃত হইল। ব্ৰহ্মচারী তথন স্থানাস্তবে গেলেন।

সপ্তম পরিচ্ছেদ।

চটীতে বিশিষা ভাবিষা, কোন ফলোদর
ছইবে না বিবেচনা করিয়া মহেজ্র
পাত্রোখান করিলেন। রাজনগরে গিয়া
রাজপুরুষদিগের সহায়তায় ত্রী কন্যার
অফুসন্ধান করিবেন এই বিবেচনায় সেই
দিকেই চলিলেন। কিছু দ্র গিয়া
পথিমধ্যে দেখিলেন, কতকগুলি গোরুর
গাড়ী ছেরিয়া অনেকগুলি দিপাহী চলিয়াছে। "রাজনগর, বা নগর" কি
তাহা বুঝাইতে হইতেছে।

১১৭৬ দালে বীরভূম প্রভৃতি প্রদেশ
ইংরেজের শাসনাধীন হইয়াও হয় নাই।
ইংরেজ তথন বাঙ্গালার দেওয়ান্।
তাঁহারা থাজনার টাকা আদার করিয়ালন, কিন্তু তথনও প্রাণ সম্পত্তি প্রভৃতি
রক্ষণাবেক্ষণের কোন ভার লয়েন নাই।
তথন টাকা লইবার ভার ইংরেজের আর
প্রাণ সম্পত্তি রক্ষণাবেক্ষণের ভার
পাণিঠী নরাধম বিখাসহস্তা মন্থ্যাকুলকলঙ্ক মীরজাক্ষরের উপর। মীরজাক্ষর
আাত্মরক্ষায় অক্ষম, বাঙ্গালা রক্ষা করিবে
কি প্রকারে। মীরজাক্ষর গুলিথার ও
ঘুমায়। ইংরেজ টাকা আদার করে ও
তেস্পাচ্লেথে। বাঙ্গালি কাঁদে আর
উৎসর গাঁয়।

বাঙ্গালার পক্ষে সাধারণ নিয়ম এই। কৃত্ব বীরভূম প্রভৃতি প্রদেশ সহজে একটু স্বতন্ত্র বন্দোবস্ত ছিল। বীরভূম

अरम्भ वीत्रकृत्मत्र त्रामात्र अधीत्न । त्राम-নগর বা নগর--- ভাঁহাদেরই রাজধানী। वीत्रकृत्मत ताबाता शृद्ध याधीन हिलन, गच्छि युविमावारमव अधीन इरेग्रा-ছিলেন। পূর্বের বীরভূমে হিন্দুরাই স্বাধীন রাজা ছিলেন। কিন্তু আধুনিক রাজবংশ ষে সময়ের কথা লিখি-তেছি, ভাহার পূর্বের রাজা আলিনকি খাঁ বাহাত্র দিরাজ উদৌলার সহায়তায় किছ नवारे टोजारे कतिया कलिकांजा পুটিরা আদিয়াছিলেন। তার পর ক্লাই-বের পাত্কাম্পর্শে মুসলমান্তর সার্থক कतिया, বেহেস্ডে যাত্রা করিবার উন্মুপ হইরাছিলেন। বাঙ্গালার অন্যান্য অং-भ्यत नाम वीतकृत्मत कत है स्तरकत কিছ শাসনের ভার বীবভূমের ब्रोकांव डेशव। যেখানে है: दिख्दा जाशमामिश्व लाशा कर আপনারা আদায় করিতেন, সেখানে ভাঁহারা এক এক কালেক্টার নিযুক্ত कत्रिशंकित्वन । किन्द्र वीतल्य आहरण এ পর্যান্তও কালেক্টার নিযুক্ত' হয় नारे। बाजारे देश्टबट्मब कत आभाव করিরা কলিকাভার পাঠ।ইয়া দিতেন। অত এব বীরভূমের খালনা কলিকা-छात्र यात्र। त्लाक ना शहेबा मक्रक. খাদনা আদায় বন্ধ হয় না। তবে ভভ व्यानांव दरेवा छेटी नारे-- (कन ना माठा वस्य की धन धानव ना कतित्व धन (कह গড়িতে পারে না। याहा इडेक, य:हा किছू आनात्र इहेबाट्ट, छाश गाड़ी त्वा-

बार्टे इरेग्रा निभाशीत भाराताम कनिकाः ভায় কোম্পানির ধনাগারে ঘাইভেডিল । আজিকার দিনে দস্মতীতি অতিশয় প্র: वल, अजना भकाम जन ममञ्ज मिलाही গাড়ীর অগ্রপশ্চাৎ খেনীবদ্ধ হইয়া সঙ্গীন থাড়া করিয়া যাইতেছিল। তাহা-দিগের অধাক্ষ একজন গোরা। সে কোম্পানীর চাকর নছে। দেখীর রাজ-গণের সৈনাগণমধ্যে তখন ক্সনেক গোরা অধ্যক্ষতা করিত। গোবা দর্ম্বপশ্চাৎ খো-**फांग हिंगा हिन शिल है। (त्रो** क्रिया मित्र मिथाशीया भथ हत्न ना, बाद्य চলে। চলিতে চলিতে সেই থাজনার গাড়ী ও দৈন্য সামস্তে মহেন্তেৰ গতি রোধ হইল। মহেজ দিপাহী ও গোরুর গাড়ী কর্ত্ব পথরুদ্ধ দেখিয়া, পাশ দিয়া দাড়াইলেন। তথাপি সিপাহীরা তাহার গা खिँमिया यात्र-एमिया, এবং এ विवादमत मनत्र नत्र वित्वहना कतिया. তিনি পথপার্ছ জঙ্গলের ধারে গিয়া দাড়াইলেন।

তথৰ একজন দিপাহী বলিল, 'এহি একঠে। ডাকু ভাগতা হাায়।'' মহেক্রের হাতে বন্দুক দেপিয়া এ বিশ্বাস তাহার, দৃঢ় হইল। সে তাড়াইরা গিয়া মহে-ক্রের গলা ধরিল। এবং শালা—চোর—বলিয়াই এক খুসা সহসা মারিল ও বন্দুক কাড়িয়া লইল। মহেক্র রিক্ত হস্তে কেবল খুবাটি ফিরাইয়া মারিল। মহেক্রের একটুরাগ যেবেশী হইরাছিল তাহা বলা বাল্লা। ঘুসাটি থাইরা সিপাহীমহাশ্য় খুরিয়া অফ্র-

তন হইরা রাস্তার পড়িলেন। তথন তিন চারিজন সিপাহী আসিরা সহেক্সকে ধরিরা জোরে টানিয়া সেনাপত্তি সাহেবের निक्छे नहेंग्रा त्रिन् धवः मार्ट्यत्क বলিল যে, এই ব্যক্তি একজন দিপাহীকে খুন করিয়াছে। সাহেব পাইপ খাইতে-हिलान, मालत (बाँटक धकरूथानि निस्तल हिरनन, विलागन, " भागारका शाक छ-**क्टिक मामि करता।"** मिशाशीता तू-बिट्ड शांतिल् ना (य, वल्कधाती ডাকাতকে ভাহারা কিপ্রকারে বিবাহ कत्रितः। किञ्च त्रभा ছूটित्त সূহেবের মত ফিরিবে বিবেচনায় ভিন চারিজন সিপাহী গাড়ীর গোরুর দড়ি দিয়া মহেক্সকে হাতে পারে বাধিয়া গোরুর গাড়ীতে তুলিল। মহেক্স দেখিলেন, এত লোকের দঙ্গে জোর করা বুথা, জোর করিয়া মুক্তিলাভ করিয়াই বা কি হইবে। জী কন্যার শোকে मह्हक काछत्र, वै। विवाद कांग है छा ছিল,না। নিপাহীরা মহেক্রকে উত্তম क्तिया शांकीत हाकात मदत्र दाधित। পরে সিপাহীরা থাজানা লইয়া বেমন **हिन्दिन,** (उगनि মৃত্গস্তীরপদে **है लिस** ।

অন্টম পরিচেছদ।

বন্ধতারীর আজা পাইরা ভবানন্দ মৃহু মৃহু হরিনান করিতে করিতে, যে চটীতে মহেন্দ্র বসিয়াছিল, সেই চটীর দিকে চলিলেন। সেইখানেই মছেক্সের সন্ধান পাওয়া সম্ভৰ বিবেচনা করিলেন। পাঠক এইস্থানে দিঙ্ক্রিপণ কর্মন। সে সময়ে ইংরেজের ক্ত আধুনিক রাস্তা সকল ছিল না। রাজনগর হইতে কলিকাভায় আসিতে হইলে, যাহাকে এক্ষণে সাবেক বেণারস রোড় বলে সেই রান্তায় পড়িয়া আসিতে হইবে। প্রধানত: বাজনগর হইতে দকিণাভিমুপ হইয়া আসিতে হইবে। गर्हता उ পদ্চিত হইতে রাজনগর যাইতে দক্ষিণ रहेर उ उद्ध निष्क याहेर इहिरान । এইজন্য পথে সিপাহীদিগের সঙ্গে তাঁ-হার সাক্ষাৎ হইয়াছিল। ভবানন তাল-পাহাড় হইতে যে চটীর দিকে চলিলেন, সেও দক্ষিণ হইতে উত্তর। যাইতে याहेट काटक काटकरे व्यक्तितार धन-রক্ষাকারী দিপাহীদিগের সভিত সাক্ষাৎ হইল। তিনিও মহেক্রের নাায় সিপাহী-मिशक भाग मिलन। একে मिभारी निरात महस्कर विश्वाम हिल, य वह চালান - লুঠ করিবার জন্য ডাকাই-তেরা অবশ্য চেষ্টা করিবে ভাতে আবার পথমধ্যে একজন ডাকাইতকে গ্রেপ্তার कत्रिवादछ। काटक काटकरे खरानकटक আবার রাত্রিকালে পথে পাশ দিতে (मथियां है जाशांनिरगत विश्वांत इहेन, যে এও আর একজন ডাকাত। অভএব সিণাহীরা তৎক্ষণাৎ ভাছাকেও ধৃত केतिन।

ं छ्यांनक मृष् इांतियां विल्लान, " ८कम बाशू।"

দিপাহী বলিল, "তোম শালা ডাকু হো।" ভবা। "দেখিতে পাইতেছ, গেরুয়া-বলন পরা অক্ষচারী আমি। ডাকাড কি এই রকম।"

সিপাহী। অনেক শালা ব্রন্ধচারী সন্ন্যাসী ভাকাতী করে। এই বলিরা সিপাহী ভ্রামন্দের গলাধাকা দিয়া, টানিয়া আনিল। ভ্রামন্দের চক্ষু সে অক্ককারে অলিয়া উঠিল। কিন্তু আর কিছু না বলিয়া অভি বিনীতভাবে বলিনা, 'প্রভু কি করিতে হইবে আজ্ঞাক্ষন।'

সিপাহী ভবানন্দের বিনয়ে সম্বষ্ট रहेशा विनन, "लिख भाना, गार्थ भत এক্ঠো মোট লেও।" এই বলিয়া সি-পাছী ভবানন্দের মাথার উপর একটা তল্পী চাপাইরা দিল। তথন আর এক कम निभाशी जांशारक वनिन, "मा, भ-लार्य, बात्र जक भानारक रयशास दर्गस রেখেছ, এ শালাকেও গাড়ীর উপর সেই-খানে বেঁধে রাধ।" ভবানদের তথন কৌভূহল হইল; যে কাহাকে বাধিয়া वाश्विद्यारह (मश्वित। जश्रन खरानम मा-थात उन्नी फिलिया पिया, य निर्णाही তরী মাথার তুলিরা দিরাছিল, ভাহার গালে এক চড় মারিল। স্থভরাং দিপা--होता ख्वानमरके व वंशिषा शाकीत উপর তুলিরা মহেজের নিকট ফেলিল। ख्यानम हिनिल (य महिल निःह।

দিপাহীরা প্রায় অনামনকে কোলাহল করিতে করিতে চলিল, আর গোরুর
পাড়ীর চাকার কচ্কচ্শল হইতে লাগিল,
তথম তবানল ধীরে ধীরে কেবল মহেন্দ্র
মাত্র ভনিতে পার এইরূপ খরে বলিলেন,
''মহেন্দ্র সিংহ, আমি তোমার চিনি,
তোমার সাহাধ্যের জনাই আমি এথামে
আদিয়াছি। কে আমি তাহা এখন
তোমার ভনিবার প্রয়োজন নাই। আমি
বাহা বলি সাবধানে তাহা কর। তোমার হাতের বাধনটা গাড়ীর চাকার
উপরেরাধ।''

মহেক্স বিশ্বিত হইলেন। কিন্তু বিনা
বাকাবায়ে ভবানন্দের কথাসত কাজ
করিলেন। অন্ধকারে গাড়ীর চাকার
নিকট একটুখানি সরিয়া গিয়া, হত্তবন্ধনরক্জ্ চাকায় স্পর্শ করাইয়া রাখিলেন।
চাকার ঘর্ষণে ক্রমে দড়িট কাটিয়া
গেল। তার পর পায়ের দড়ি ঐরপ
করিয়া কাটিলেন। এইরূপে বন্ধুন
ইতে মুক্ত হইয়া ভবানন্দের পরামর্শে
নিশ্চেট হইয়া গাড়ির উপরে পড়িয়া
রহিলেন। ভবানন্দও সেইরূপ করিয়া
বন্ধন ছিল্ল করিলেন। উভয়ে নিস্তক্ক।

বেখানে সেই জঙ্গলে, যে রাজপথে দাঁড়াইরা, ব্রহ্মচারী চারিদিক্ নিরীক্ষণ করিরাছিলেন সেই পথে ইহাদিগের যাইবার পথ। সেই পাহাড়ের নিকট দিপাহীরা পৌছিলে দেখিল যে, পাহাড়ের নীচে একটা চিবির উপর একটি মানুব দাঁড়াইরা আছে। চুক্লদীপ্ত

নীল আকাশে তাহার কালো শরীর চি-ত্রিত হইয়াছে দেখিয়া, হাওলদার বলিল, " উ हाटक, धतियां आन । त्यां हे वहित्व।" . তখন একজন সিপাহী তাহাকে ধরিতে গেল। সিপাহী ধরিতে যাইতেছে, সে ব্যক্তি স্থির দাড়াইয়া বাছে—নড়ে না। সিপাহী তাহাকে ধরিল, িকিছু বলিল না। ধরিয়া তাহাকে श्वनहादतत निक्षे नहेशा वानिन, उथ-নও কিছু বলিল না। 'হাওলদার বলি-লেন,"উহার মাথায় মোট দাও।" সিপাহী তাহার মাথায় মোট দিল, সে মাথায় মোট লইল। তথন হাওলদার পিছন ফিরিয়া, গাড়ীর সঙ্গে চলিল। এই সময়ে হঠাৎ একটি পিস্তলের শব্দ হইল. हाउनपात मछ एक विक इंग्रेश ज्ञान পড়িয়া প্রাণত্যাগ করিল। "এহি শালা "হাওলদারকো মারা" বলিয়া একুজন সি-পাহী মুটিয়ার হাত ধরিল। মুটিয়ার হাছে তথনও পিন্তল। মুটিয়া মাথার মোট ফেলিয়া দিয়া পিন্তল উল্টাইয়া ধরিয়া সেই দিপাঁহীর মাথায় মারিল, দিপা-হীর মাথা ভাঙ্গিয়া গেল, দে নিরস্ত হইল। সেই সময়ে "হরি! হরি! হরি!" শর্ব করিয়া ছইশত শন্ত্রধারী লোক আসিয়া সিপাহীদিগকে ঘেরিল। সিপা-হীরা তখন সাহেবের আগমন প্রতীকা করিতেছিল। সাহেবও ডাকাত পড়িয়াছে বিবেচনা • করিয়া সম্বর গাড়ীর কাছে আসিরা লাইন ফর্ম করিবার সাজা नित्नु । उथनहे निशाहीया हातिनित्क

সম্থ কিরিয়া চতুঙ্কোণ করিয়া দাঁড়াইল।
অধ্যক্ষের পুনর্কার আজ্ঞা পাইয়া তাহারা
বন্দ্ক তুলিয়া ধরিল। এই সময়ে হঠাৎ
সাহেবের কোমর হইতে তাঁহার অদি
কে কাড়িয়া লইল। লইয়াই একাঘাতে
তাঁহার মন্তকচ্ছেদন করিল। সাহেব
ছিয়শির হইয়া অখ হইতে পড়িয়া গেলে
আর তাহার ফায়ারের হকুম দেওয়া
হইল না। সকলে দেখিল যে, এক ব্যক্তি
গাড়ীর উপরে দাঁড়াইয়া তরবার হস্তে
হরি হরি শক্ষ করিতেছে এবং 'দিপাহী
মার, দিপাহী মার,'' বলিতেছে। দেভবা
নন্দ।

সহসা অধ্যক্ষকে ছিন্নলির দেখিরা এবং রক্ষার জন্য কাহারও নিকটে আজ্ঞা না পাইয়া সিপাহীরা কিয়ৎক্ষণ ভীত ও নিশ্চেষ্ট হইল। এই অবসরে তেজম্বী দম্মরা তাহাদিগের অনেককে হত ও আহত করিয়া গাড়ীর নিকটে আসিয়াটাকার বাক্সকল হস্তগত করিল। সিপাহীরা ভয়োৎসাহ ও পরাভৃত হইয়া পলায়নশ্র হইল।

তথন যে ব্যক্তি চিপির উপর দাঁড়াইরা, ছিল, এবং শেষে যুদ্ধের প্রধান নেতৃত্বগ্রহণ
করিরাছিল সে ভবানন্দের নিকট আসিল। উভয়ে তথন আলিঙ্গন করিলে ভবানন্দ বলিলেন, 'ভোই জীবানন্দ সার্থিক ব্রত-গ্রহণ করিয়াছিলে।"

জীবানন্দ বলিল, ''ভবানন্দ! ভোমার নাম সার্থক হউক!'' অপহাত ধন ম্থা-স্থানে লইয়া যাইবার ব্যবস্থা করণে জীবানন্দ নিযুক্ত হইলেন, তাঁহার অমু-চরবর্গ সহিত শীঘ্রই তিনি স্থানাস্তরে গোলেন। ভবানন্দ একা দাঁড়াইয়া রহি-লেন।

নবম পরিচেছদ।

মহেন্দ্র শক্ট হইতে নামিয়া একজন निशाहीत खहरन कांड़िया लहेगा गुरक त्याश निवाव छेत्नाशी इडेग्ना हत्ना। কি ব্ৰ এমন সময়ে তাঁচার স্পতিই বোধ হইল যে ইহাবাই দক্ষা: ধনাপহরণ জনাই দিপাহীদিগকে আক্রমণ কবি-बाटा। এই कथ विटवहना कविया जिनि যুদ্ধান হইতে সরিয়া গিরা দাড়াই-লেন। কেন না দস্থাদের সহায়তা করিলে ভাহাদিগের ত্রাচারের ভাগী হইতে হইবে। তথন তিনি তরবারি ফে-लिया निया शीरत शीरत रम जान जाग कतिया याहेट इकिटनन, अमन ममरम जवा-নন্দ আসিয়া তাঁহার নিকটে দাঁড়াইল। মহেজ बिकामा कतिल. " महाभग्न चा-পনি কে ?"

ভবানক বলিল, '' ভোমার তাতে প্রয়োজন কি ?''

মছে। আমার কিছু প্রয়োজন আনছে। আকু আমি আপনার্বারা বিশেষ উপ-কুত হইরাছি।

ভবা: সে বোধ যে ভোমার আছে এমন ত বুঝিলাম না—ক্ষন্ত করিয়া তফাত রহিলে—ভূমি কি কাপুক্ষ যে যুদ্ধে ভয় পাও ?

ভবানদের কথা ফুবাইতে না ফুরা-ইতে, মহেক্স স্থার সহিত বলিলেন "যুদ্ধ কই—এ যে ডাকাতি।" ভবানদ বলিল, "হউক ডাকাতি, আমরা তোমার কিছু উপকার করিয়াছি আরও কিছু উপকার করিবাব ইচ্ছা রাখি।"

মহেক্স। তোমরা আমাব কিছু উপ-কার করিয়াছ বটে, কিন্ধু আর কি উপ-কার করিবে ! আব ডাকাতের কাছে এত উপক্বত হওয়ার চেয়ে আমাব অফু-পক্বত থাকাই ভাল।

জবা। উপকার গ্রাহণ কর না কর, ভোমার ইচ্ছা। যদি ইচ্ছা হয় আমার সঙ্গে আইস। ভোমার স্থীকনার সঙ্গে সাক্ষাৎ কর।ইব।

भरहक्क कि विद्या में । ज्ञानि । विनन, "(म कि ?"

छनानम (म कथात छेउत ना कतियां हिल्ला। व्यन्ता मह्ह्या, नहक्र महक्र हिल्ला—महन महन छानिहाँ लानिल खता मञ्जाना (मन्छा १

मगम পরিচেছদ।

त्यरे स्वाध्यामधी तकनीर छ्रेजत नीतर्व शास्त्र भात हरेग्रा हिल्ल। मरहल नीत्रव, भौककालत, गर्सिल, किंडू कोल् हरीर

ভবানক সহসা ভিরম্রি ধ্রিণ করি

'বিদে মাতর'
স্কলাং স্ফলাং, মলয়জশীতলাং,
নশানামলাং, মাতরং।*''
মহেল গীত শুনিয়া কিছু বিশ্বিত
২ইল, কিছু ব্বিতে পারিল না — স্কলা
স্ফলা মূল্যজশীতলা শাস:শ্যানলা মাতা

উত্তর না করিয়া ভবানন গাইতে

কে, তাভ বুঁঝিতে পারিণ না—লিজাসা

করিল ' মাতা কে গু'

" শুল্র-জ্যোৎরা-পুলকিত-যামিনীং—
ফুল-কুস্থমিত-ক্রমদূর-শোভিনীং
স্থাসিনীং স্থমধুরভাষিণীং
স্থাদাং বরদাং মাতরং।

মহেক্ত বলিল, ''এত দেখা, এ ত মানয়—''

ভবানক বলিল, "আমবা অন্য মা
মানি না—"জননী জন্ম ভূমিশ্চ স্বর্গাদণি
গবীয়দী।" আমবা বলি, জন্মভূমিই
জননী; আমাদের মা নাই, বাণ নাই,
ভাই নাই, বন্ধু নাই,—স্ত্রী নাই, পুত্র নাই, ঘর নাই, বাড়ী নাই, আমাদের
আছে কেবল সেই স্ক্রলা স্ক্রলা
মলয়জশীতলা, শদ্যশামলা,—"

তথন বুঝিয়া মহেক্ত বলিন, তবে আবারগাও।

ভবানন আবার গাইল:---''বলে মাতরং স্থলাং স্কলাং, মলয়জশীতলাং, শ্সাশামলাং, মাত্রং। গুল-জ্যোৎসা-পুলকিত-যামিনীং ফুলকু স্থাত-জনদল-শোভিনীং সুহাসিনীং সুমধুবভাষিণীং ञ्चनः वदनाः गाउतः। मथ्रकारी को-कलकलिनाम-कत्राल বিসপ্তকোটীভূজৈধৃতিগুরকরবালে ক্রেলে মাতৃমি অবলে বছবলধারিণীং নমাসি তারিণীং রিপুদলবারিণীং মাতরং।" তুমি বিদা তুমি ধর্ম তুমি হাদি তুমি-মর্মা ष्ट्रशिशाः भवीत् ।

ण • > ×> "भंनात्र—क खत्राली जान यथा—वत्त्व माठ तर हेउँगावि। বাহুতে তুমি মা শব্জি হৃদয়ে তুমি মা ভব্জি তোমারই প্রক্রিমা গড়ি

মন্দিরে মন্দিরে।
ত্বংহি তুর্গা দশপ্রাহরণ-ধারিনী
কমলা কমলদলবিহারিণী
বাণী বিদ্যাদায়িনী

নমামি ডাং।

নমামি কমলাং অমলাং অতুলাং স্কুলাং সুফলাং মাতরং

বদে মাতরং

শ্যামলাং সরলাং সুক্ষিতাং ভূষিতাং ধ্রণীং ভরণীং মাতরং।

মহেক্স দেখিল, দস্থা গান্ধিতে গানিতে কান্দিতে লাগিল।

মহেন্দ্র তখন সবিবাগে জিফাদা ক রিল ''তোমরা কারা ?''

ভবানন বলিল, ''আমরা সন্তান।'' মহেক্স। সন্তান কি ? কার সন্তান ? ভবা। মায়ের সন্তান ?

মহেন্দ্র। ভাল—সম্ভাবে কি চুরি ডাকাতি করিয়া মায়ের পূজাকেরে? সে কেমন মাতৃভক্তি?

ভবা। আমরা চুরি ডাকাতি করি না। মহে। এই ত গাড়ি লুঠিলে।

ভবা। সেকি চুরিডাকাতি? কার টাকা লুঠিলাম ?

মছে। কেন ? রাজার-।

ভবা। রাজা বেটাকে? এই যে টাকাগুলি মে লইবে এ টাকায় তার কি অধিকার? মহে। রাজার রাজভাগ।

ভবা। হিন্দুর রাজ্যে আবার মুসল-মান রাজা কি ?

মহে। ভোমরা সিপাহীর তোপের মুখে কোন দিন উড়িয়া যাইবে দেখি-ভেছি।

ভবা। অনেক শালা দিপাহী দেখি-য়াছি—আজও দেখিলাম।

মহে। ভাল করে দেখনি, একদিন ● দেখিবে।

ভবা। নাহয় দেখ্লাম, একবার বই ত ত্ৰার মর্ব না।

মহে। তাইভ্যকরিয়ামরিয়াকাজ কি?

ভবা। মহেক্র সিংহ, তোমাকে মারু· ষের মত মাত্র বলিয়া আমার কিছু বোধ ছিল, কিন্তু এখন দেখিলাম, স্বাই যাতৃমিও তা। দেখ সাপ মাটীতে ব্ক निया हाँटि, जाहात अल्ला गीठ कीत আমি ত আর দেখিনা; সাপেরুখাড়ে পা দিলে দেও ফণা পরিয়া, উঠে। **ट्यामात कि किছूटिट देश्या नहे र**य ना। (मथ यङ (मम जारह, -- मगद, ° भिथिना, **काशी, काकी,** • किही, काशीत, कान (मरभत अमन इर्फेगा, কোন দেশে মাত্র খেতে না পেয়ে ঘান খায় ? কাটা খায় ? উইমাটি খায়? बरनत लंडा श्रीय ? (कान एमएम मोछ्य শিয়াল কুকুর থায়, মড়া ঝায় ? কো-দেশের মাহুষের সিফুকে টাকা রাখিণ শোয়ান্তি নাই, সিংহাসদে শু^{লিগান}

রাথিয়া শোরান্তি নাই, ঘরে ঝি বউ
রাথিয়া শোরান্তি নাই, ঝি বউয়ের
দুপটে ছেলে রেথে শোরান্তি নাই?
পেট 'চিরে ছেলে বার করে। সকল
দেশে রাজার সক্তে রক্ষণাবেক্ষণের
সক্ষর। আমাদের রাজা রক্ষা করে
কই? ধর্ম গেল, জ্বাতি গেল, মান
গেল, কুল পেল, এখন ত প্রাণপর্যান্তও
যায়। এ নেড়েদের না তাড়াইলে আর
কি হিন্দুর হিন্দুরানী থাকে?

মহে। ভাড়াবে কেম্ন করে? ভবা। মেরে।

মহে। তুমি কি একা তাড়াবে ? এক চড়েনাকি ?

मञ्रागांशिन:—

''দপ্তকোটীকণ্ঠ-কলকলনিনাদ-করালে দ্বিসপ্তকোটীভূজৈধ্ তথরকরবালে কে বলে মা তুমি অবলে—" °

্মহে। কিন্ত দেখিতেছি তুমি একাু?়

ভবা ¹ কৈন এখনি ত ছশ লোক দেখিয়াছ।

ঘহে। তাহারাকি সকলে সম্ভান?

ঁ ভবা। সকলেই সস্তান ?

মহে। আর কত আছে?

ভবা। এমন হাজার হাজার, ক্রমে আয়েও হবে ?

মহে ৷ না হয় দশ বিশ হাজার হল, তাতে কি মুসলমানকে রাজ্যচ্যত ক্রিভেশুপারিবে ? ভাগ। প্রশাশীতে ইংরেজের ক্জন ফৌলছিল ?

মহে। ইংরেজে আর বাঙ্গালীতে ?
ভবা। নয় কি সে ? গায়ের জোরে
কত হয়—গায়ে জিয়াদা জোর থাকিলে
গোলা কি জিয়াদা ছোটে ?

মহে। তবে ইংরেজে মুসলমানে এত ফারাক কেন?

ভবা। ধর, এক ইংরেজ পলায় না, মুদলমান গা ঘামিলে পলায়—শরবত খুঁজিয়া বেড়ায়—ধর তার পর, ইংরেজের জিদ আছে—যা ধরে তা করে, মুদলমানের এলাকাড়ি। টাকার জন্য প্রাণ দেওয়া;তাও দিপাহীরা মাহিয়ানা পায় না। তার পর শেষ কথা সাহস,—কামানের গোলা এক জায়গায় বই দশ জায়গায় পড়বে না— স্কতরাং একটা গোলা দেখে ছশ জন পলাইবার দরকার নাই। কিন্তু একটা গোলা দেখিলে মুদলমানের গোলীগুদ্ধ পলায়—আর গোলীগুদ্ধ পোলা দেখিলে ত একটা ইংরেজ পলায় না।

মক্ষে। ভোমাদের কি এসব গুণ আছে ?

ভবা। ^{*}না। কিন্তু গুণ গাছ থেকে পড়েনা। অভাস করিতে হয়।

মহে। তোমরা কি অভ্যাদ কর ?

,ভবা। দেখিতেছ না আমরা সন্নাদী ?
আমাদের সন্নাদ এই অভ্যাদের জন্য।
কার্য্য উদ্ধার হইলে—অভ্যাদ সম্পূর্ণ
হইলে—আমরা আবার গৃহী হইব।
আমাদেরও স্ত্রী কন্যা আছে।

মহে। তোমরাসে সকল ত্যাগ করি-রাছ—মায়া কাটাইতে পারিয়াছ ?

ভবা। সস্তানকে মিথাা কথা কহিতে
নাই—তোমার কাছে মিথাা বড়াই করিব
না। মায়া কাটাইতে পারে কে ? যে
বলে আমি মায়া কাটাইয়াছি, হয় তার
মায়া কথন ছিল না, বা সে মিছা বড়াই
করে। আমরা মায়া কাটাই না—আমরা ব্রত রক্ষা করি। তুমি সস্তান
হইবে ?

মহে। আমার স্ত্রীকন্যার সম্বাদ না পাইলে আমি কিছু বলিতে পারি না। ভবা। চল, তবে তোমার স্ত্রীকন্যাকে দেখিবে চল।

এই বলিয়া ছুইজনে চলিল। ভবানদ আবার ''বন্দেমাতরং'' গাইতে লাগিল। মহেক্রের গলা ভাল ছিল, নঙ্গীতে একটু বিদ্যা ও অমুরাগ ছিল—স্কুতরাং দঙ্গে গাইল—দেখিল যে গায়িতে গায়িতে চক্ষে জল আইসে।

মহে। যদি স্ত্রীকন্যা ত্যাগনাক-রিতে হয় তবে এ ব্রত স্থামাকে গ্রহণ করাও ?

ভবা। এ বত যে গ্রহণ করে সে স্ত্রী
কন্যা পরিত্যাগ কবে না। তুমি যদি এ
বত গ্রহণ কর, তবে স্ত্রী কন্যার সঙ্গে
সাক্ষাৎ করা হটবে না। তাহাদিগের
রক্ষা হেতু উপযুক্ত বন্দোবস্ত করা যাইবে
কিন্তু এতের সফলত! পর্যান্ত তাহাদিগের
মুখদর্শন নিষেধ।

মহেন্দ্র। আমি এ বছ গ্রহণ করিব না।

122

शृश्मना∤म।

যে স্বাধীন, নিশ্চয়ই সে সম্ভাসী।
ভারতবর্ষে স্বাধীনতা ছিল সেই জন্য
সন্ন্যাসীও ছিল। সন্ন্যাসীরা অনেকৈই
গৃহী, স্বাধীন গৃহী। জনকরাজা ভারতের
প্রথম সন্ন্যাসী।

স্বাধীনতা ভারতবর্ষের ধন। জর্মনীরা ইলানীং স্বাধীনতার অর্থ কতকাংশে
ব্রিরাছে, এইজনা জর্মানীতে সর্যাসী
সম্ভব হইরাছে। ইউরোপীর আর
আর জাতিরা অসার, অনেকে আন

বার বাচাল; তাহাদের স্বাধীনতা অতি দ্রে। ইংরেজদের কেবল দান্তি-কতা, ফরাসিসদের কেবল বাগাড়-স্ব। অন্যাপি তাঁহারা অধীনতা স্বাধীনতা কেবল রাজসম্বন্ধে উল্লেখ করেন; যে বধির সে কেবল নৃত্যকেই সঙ্গীত বলে; গীত, বাদা, তাল, লয় কথন তাহার কর্ণক্হরে যায়নাই । যথন ভারতাকুশশ হইতে স্বাধীনতা থসিয়া পড়ে, পতনে তাহা শতধা হইয়াছিল,য়েত্রো তাঁ-

হারই ছই একখণ্ড কুড়াইয়া লয়; সেই
ভগ্নথণ্ড তাহাদের এখন পূর্ণথণ্ড। আমরা
ভাই হাসি। ভগ্নথণ্ডের ছই চারিটী
আদ্যাপি ভারতবর্ষে পড়িয়া আছে;
সেগুলি একলে মহাপীঠ। এই জন্য
ভারতবর্ষ আদ্যাপি স্বাধীন; সকল
দেশ অপেক্ষা স্বাধীন। ক্ষুদ্রেরা এ কথায়
হাসিবে, রাজা দেশী কি বিদেশী এই
লইয়া ভাহারা স্বাধীনভার মীমাংসা করে।
মনুষ্য প্রথম হইতেই পরাধীন—জড়ের
অধীন, জীবের অধীন, প্রকৃতির অধীন,

নিজ প্রবৃত্তির অধীন। এ অধীনতার

मीमा नाहे।

মনুষ্যের প্রথম বেগ—উদ্ধারের চেষ্টা। জড়ের শাসন, জঙ্গমের শাসন, আপনার শাসন। জড়ের শাসন প্রথমতঃ ইউরোপ অঞ্চলে আরম্ভ হয়। আপনার শাসন প্রথমতঃ ভারতবর্ষে আরম্ভ হয়। এই শেষ শাসন বড় কঠিন, ভারতবর্ষ বলিয়া তাহা সম্ভব হইয়াছিল । ত্রেক্তর্মের ইইয়াছিল । ত্রেক্তর্মের ইইয়াছিল । ত্রেক্তর্মের ক্রেক্তর্মের ক্রেক্তর্মের ক্রেক্তর্মের ক্রেক্তর প্রাক্রির তপস্যাশ্রম। প্রত্যেকের প্রাক্রির তপস্যাশ্রম। প্রত্যেকের প্রাক্রির ক্রেক্তরি ।

বৌদ্ধদিগের সময়ে আত্মশাসনের বিশেষ বাঁধাবাঁধি হইয়াছিল। কিন্তু তাঁহাদৈর শাক্যসিংহ ভীক ছিলেন, সংসারকে
ভয় করিয়া, সংসারকে ফেলিয়া তিনি
পলাইয়াছিলৈন। স্বাধীনতা সাহসিকের

ধন; ভীক কথন স্বাধীনতা পাল না, সল্লাসীও হয় নাঃ

তান্ত্রিকেরাও স্বাধীনতার চেষ্টা করিয়াছিলেন, কিন্ধ তাঁহাদের চেষ্টা কেবল
মায়াসম্বন্ধে। তাঁহারা বুঝিয়াছিলেন যে
মহুস্যেরা কেবল মায়ার নিমিত্ত পরাধীন। কিন্তু মায়া পরাধীনতার আংশিক কারণ মাত্র।

কেহ বা যোগশিক্ষা দিয়া, দৈহিকশাসন আরম্ভ করাইয়া, স্বাধীনতার
ইত্রপাত করিয়া গিয়াছেন। তাঁহারা
ভাবিয়াছিলেন যে, মহুষ্যের পরাধীনতা
সম্বন্ধ কুংপিপাসাই বিশেষ কারণ।

সম্প্রদারবিশেষের এইরূপ আংশিক চেষ্টার পূর্ণ স্বাধীনতার উৎপত্তি হই-য়াছিল। কেহ কেহ সেই স্বাধীনতা ভোগ করিয়াছিলেন।

ভারতবর্ষের স্বাধীনতা অতি ভ্রানক, ও অভ্ত হইয়াছিল। "জড়জলমের অধীন হইব না; জরার অধীন
হইব না; কুধার অধীন হইব না;
মায়ার অধীন হইব না; দেবতার অধীন
হইব না; করং ঈশ্বরের সমান হইয়া
ভাহার শ্রীরে মিলিয়া ঘাইব।" এই
আকাজ্ঞা ভারতীয় স্বাধীনতার বীজ।

ভারতীয় স্বাধীনতা অতি কর্কণ, অতি ভারতক; কিন্তু সম্পূর্ণ। ভারতবাসীরা মৃত্রুরও অধীন হইতে চাহিত না। স্বাধীনতার এরপ মূর্ত্তি আর কোথাও অনুমিত হয় নাই ! মৃত্যু আইসে, পার্শ্বে দাঁড়ায়, যোড়হাত করে, অমু-

মতি চার, অনুমতি কখন পার কখন পার না। এই চিত্র কেবল স্বাধীনতার সংস্করণ। অদ্যাপি অনেক পরমহংস গোপনে আহার করে, পাছে কুং-পিপাসার বশবর্তী দেখিয়া লোকে পরাধীন মনে করে। অনেকে উলাপ বেড়ায়, পাছে সমাজপ্রথার অধীন ভাবিয়া লোকে অশ্রদ্ধা করে। অনেকে দারাপুত্রত্যাগ করে, পাছে লোকে মারার অধীন মনে করে। এই সকল ব্যবহার অনর্থক নহে। প্রতিধ্বনি পূর্ব্ব-ধ্বনির পরিচয়।

ভারতীয় স্বাধীনতা একেবারে লোপ পায় নাই, এখনও ভারতবর্ধে সন্ত্যাসী আছে, আমি ভস্মাথা ভিক্কদের কথা বলিতেছি না; মহাপুরুষদের কথা বলিতেছি।

খাধীনতার আর এক মূর্ত্তি জর্মাণদেশে করিত হইয়াছে। তথাকার পণ্ডিতেরা বলেন যে নিজে উরত হইয়া জড়জঙ্গম প্রভৃতি সকলের অধিকার অতিক্রম করাই খাধীনতা। কিন্তু কার্যীত সম্পূর্ণ অতিক্রম করা মহুষ্যের সাধ্যাতীত; যাহা সাধ্যাতীত তাহা কেবল মনের ছারা অভিক্রম করিতে হইবে। যাহা অবশাস্ভাবী, যাহা অলঙ্গনীয়, যাহার উপায় নাই, তাহার নিমিত্ত কাতর কেন হইয় পড়িব ? যাহা অবশাস্ভাবী তাহা স্কতরাং হইতে দিব; হইতে দেওয়াই জিত, প্রভৃত্বের কার্যা।

এইরপ জর্মাণ স্বাধীনতা নীতিসন্তুত। এত কাল নীতিকে কেছ
স্বাধীনতার প্রস্তি বলিয়া চিনিত না,
এক্ষণে চিনা যাইতেছে। এই পথ অবলম্বন করিলে অনিবার্য্য অত্যাচারকে আর
অত্যাচার বলিয়া বোধ থাকে না,
মৃত্যুরও ভয়ানকতা কমিয়া যায়।

মনকে অধীন করিয়া আপনি স্বাধীন

হইব ইহা ভারতীয় মন্ত্র। মনকে উন্নত করিয়া আপনি স্বাধীন হইব ইহা জর্মাণীর মন্ত্র। পরস্পর প্রভেদ বিস্তর। ভারতীয় স্বাধীনতায় মনকে দমন ক্রিতে হয়, শাসন ক্রিতে হয়, পীড়ন করিতে হয়, অনেক স্থপ্রবৃত্তির ফুর্তি-রোধ করিতে হয়; মনকে একেবারে শুক করিয়া ফেলিতে হয়; কিন্তু "when you regulate a man, you narrow him." এই স্বাধীনতার আর এক বিশেষ দোষ• যে এডদ্বারা সমাজের সর্কনাশ হয়; ट्य नकम भरनावृद्धित श्रीवरमा नगांद्भत উন্নতি, সে সকল মনোত্তি একেবারে থাকে না। এই জন্য এইরূপ বাক্তিগত স্বাধীনতার সঙ্গে সঙ্গে ভারতস্মাজের উন্নতি লোপ হইয়া গিয়াছিল। ব্যক্তি-গত গুণে সমাজ গুণবস্ত হয়, কিঁতু, এই ऋल तम नित्रम शांटि नारे। সমাজের পরাধীনতা ব্যক্তিগত পরা-ধীনতা নহে, বাঁহারা স্বাধীন তাঁ-হারা সমাজ হইতে স্বতন্ত্র হইয়া পড়িয়া--ছিলেন। তাহাই লোকে তাঁহাদের স্বতন্ত্র নাম দিয়াছিল—সন্ন্যাসী। 🍌

সন্ন্যাসীর বাক্যার্থ বিচার করিবার আবশ্যকতা নাই। সন্ন্যাসধর্ম সমা-জেম অনিষ্টকর, বিশেষতঃ প্রথমতঃ অবস্থার। পরাধীনতা সমাজের মজ্জা। পরাধীনতা ভিন্ন সমাজ গঠে না, সমাজ থাকে না। পরাধীনতা পরতন্ত্রতা নহে।

সমুদ্র মনোবৃত্তির সামঞ্জন্য থাকিলে আর একপ্রকার স্বাধীনতার উৎপত্তি হয়। বাঙ্গালায় সে সামঞ্জন্য একেবারে নাই। এখানে মায়া মমতার প্রাধান্য অতিশর, এইজন্য আমরা পরাণীন।



বালীকির জয়।

চতুর্থ খণ্ড।

শরৎকালের পরিষ্কার দিকে দৃষ্টি করিলে, অগণ্য তারকাপুঞ্জের মধ্যে সময়ে সময়ে সাদা মেঘের মত किছू किছू (नथा यात्र। मृत्रवीन निशा (न-থিলে, ঐ সকল আরও পরিদার দেখিতে পাওয়া যায়। সে সব আর কিছু নয়, মালস্সলা সংগ্রহ রহিয়াছে, এখনও পৃথিবী পেনুর জাগং বা অক্ষাও গড়া হয় नाइ। छेशामित हैश्दा कि नाम त्नवूला। যে দিন বিশ্বামিত ত্রুলা ও ত্রুল্বিগণের সহিত বিবাদ করিয়া ধবলগিরির উচ্চ-्रभुष्ट्र উঠেন, সে मिन थे मक्न न्तर्नाय তাঁহার চোথ পড়ে; তিনি তৎক্ষণাৎ শূন্য-পথে তদভিম্থে ধাবিত হন। বাষ্পীয় শক-টের ন্যায়,তীরের ন্যায়,তাড়িতগতির ন্যায়, ীরাজর্ধি বিশ্বামিত্রগমন করিতে লাগিলেন। বায়ু ক্রমে পাতলা হইতে লাগিল, ক্রমে শীতল হুইতে লাগিল,ক্ৰমে নিখাস বহে না

এইরপ হইয়া উঠিল। অমনি বিশ্বামিত शृथिवीवायु यात्रन कतित्वन, यात्रन कतिया मक्ष वहेलन, निश्वाम ফেलिবার কিছুই क्रिम हरेन ना। वारेम क्लाम भरतरे चित्र বায়ু, সেই বায়ুতে ক্রমাগত উল্লা খুরি-তেছে, ব্ৰহ্মার আদেশে সমস্ত উল্লা আজি বিশ্বামিত্রের গাত্রে পড়িতে লা-গিল, বিশ্বামিত্র আরও বেগে শূন্যপথ পার হইতে আরম্ভ করিলেন, ধুমকেতুগণ তাঁহার পীগরোধ করিল। তিনি তাহা-् मिशदक ्ठेलिया मिया शिरानन, ममस मृत्ना দ্বথর নামে যে পদার্থ আছে, তর্মধান্থ ভাবদকল তাঁহার শরীর করিতে লাগিল; তাহারা এত স্ক্র যে, দূরবীশহারাও দেখা যায় না, কিন্ত ক্রমে শরীর গুরুতর হইয়া উঠিল, তাহাতেও বিখামিত্রের দৃক্পাত নাই। মিত্ত মাহয়বলে উঠিতেছেন না, যোগবলে উঠিতেছেন। তিনি ক্রমে

অসংখ্য সৌরলগৎ অতিক্রম করিয়া -নেবুলার নিকট উপস্থিত হইয়া, অনস্ত গগনস্থ সমস্ত নেবুলা আকর্ষণ করিতে गाशिलम। ठाविनिक इटेट (नवृशा-সমূহ সংগ্ৰহ হটয়া তাঁহাৰ পদতলে পড়িতে লাগিল। কত অগণা গ্ৰহ নক लांकि य एमरे अशक्ति शक्तार्थवानियामा আকৃষ্ট হইতে লাগিল, কে বলিতে পাবে? ক্রমে আকাশের এক কোণ নেবুলায় পুরিয়া গেল। বিশ্বামিত্র ভাহার উপর मां हा है सा निज अञ्चल युवा है एक ना निर्तान, আৰ সেই অনন্ত, অগঠিত পদাৰ্থনাশি যু বিতে লাগিল, যুরিতে ঘুরিতে ঘুরিতে একত্র इहेट नाजिन; ज्राम প्रम्भव निक्रे হইতে লাগিল, ক্রমে পরস্পব গায়ে গায়ে লাগিল, ক্রমে আবার ঘুরিতে ঘুরিতে ঘু-রিতে আটিয়া বসিয়া গেল। আরও--ঘু-রিতে ঘুরিতে অগ্নি সে সকল উলাম হইল, প্রকাণ্ড পরমাণুবাশির চারিদিকে অগ্নিয় Atmosphere হুইল,পানিক জ্লিতে থা কিলে বিশ্বামিত বলিলেন, "বুধ হউক," অমনি দেই জুলম্বপদার্থ হইতে একখণ্ড বাহির হইয়: গিয়া দূরে নি:কিংপ্ড হইয়৷ উহারই চারিদিকে ঘুরিতে লাগিল, वार कारम ठाए। इहेशा त्मशहकारण भन्नि ণত হইল। বিখামিত দেখিলেন, উত্তম इरेग्नारह। अनस्त्र कहिलन, "उँक इ-উक" अमनि दमहे खन्छ पूर्वामान भाषार्थः রাশি হইতে আর এক থণ্ড ছটিয়া গিয়া উহারই চারিদিকে ঘুরিতে লাগিল। विचामिक (पर्णितन, अक छेत्र इरेशाइ।

আবার বলিলেন, ''পৃথিবী হউক'' অমনি আবার সেই জ্বস্ত ঘ্র্যমান পদার্থবাশি হইতে আর একখণ্ড ছটিয়া গিয়া পাথাড পর্বত-নদ-নদী-দীপ-- দাগরবতী-পৃথিবী-কপে পবিণত হটল। বিশ্বামিত দেখি লেন, এ পৃথিবীৰ সহিত পুৰাতন পৃথি বীর ভুলনা হয় না। এইরূপে দেই অগাদ প্ৰমাণুৱাশি ছইতে এক এক ক্রিয়া চক্র, হুর্যা প্রান্ত আমাদের সৌরজগতে যাহা যাহা আছে, বিশামিত তংগমুদ্ধই पृष्टि कतित्वम_् ठाँशांव পुशिवी आगारमर পৃথিনী হইতে কে:টী গুণে বড় হইল,স্ৰ্য্ কোটী গুণে বড়, পৃথিবী হইতে বিশ্বা মিতোৰ সৃষ্টি প্ৰকাণ্ড দেখাইতে লাগিল कुन, नायु , इन , भर्तिक , नहीं , तन, तुक्क , तन क. যেমন যেমন এ পৃথিবীতে আছে, সং ঠিক তেমনি তেমনি হইল; অপিকের মধ্যে নাবিকেলগাছ তখন এখানে ছিল ন। তাহা হইল। তাঁহার জগতে হিংত জন্তু রহিল না: বিচিত্র পাকী পক্ষজ্টায় नग्रन मन रक्षन करत, ें देहें अधिक বিচিত্র পশু, দেখিতে অতি মনোহর সমস্ত ই প্রাধিপুপের বৃক্ষ-রুকের পত স্বানি, কাষ্ঠ স্বান্ধি, তুল স্বানি, আ স্বাদ স্থগন্ধি—যে তৃণদারা পৃথিবীৰ উপরি ভাগ আছাদিত ভাহাও মাতর অপেক হ্রণিরি। আকাশ হঁইতে যে বৃষ্টি হইত তাহা গোলাব। বায়ু, ধূপ-ধূনা-গন্ধা त्मामिक । आशातीय श्रेमार्थे **छे**९शामः করিতে হয় না—বন,জল, বায়ু আহারী धीमान करत, धावः हेशात शत्र महः

সহস্র বংসর দিতে পারিবে, ভাহারও ক্ষিকশ্মের শ্রমস্বীকার করিতে হুট্বে না-; লোকসংখা যদি অগ্না বর্দ্ধিত হয়, তবেই যাহা হউক। বাডী ঘবৰাৰ বিছানা রহিবে না, স্কুগন্ধি স্বস্পূর্ণ অভি কোমল তৃণ্ট শ্যা, সমস্ত পূথ্বীময় বিশ্বামিক পর্বত কাটিয়া বৃষ্টির স্থয় থাকি वात अन्य क्रम्भत साग निर्माण करिया प्रिया-ছেন। রাস্তাব উপব দাক্ণ হুর্যা-উত্তাপ এ জনা সমস্ত বাস্থার উপাব শেড দেওবা, ভাছাৰ উপৰ ছুট প্ৰহৰেৰ সময় বর্ফ দেওয়া হয়, মাঠে যখন দাকণ গ্রীম রাস্তাব উপর গেলে শরীর একে-বারে জুড়াইযা যায়। বিখানিত নিজে স্বভাব সৌন্দর্য্যের জন্য বড়ই পাগল, এইজনা পাহাতে উঠিবাব উপায় করিয়া मिटल हा। ट्लाटक याशांक मर्खना भर्व-তৈর ডগা হইতে সমদয় তলা পর্যান্ত সব তল তল কবিয়া দেখিতে পাৰে, ভাছার নানা উপায় কবিয়াছিলেন।

আব মহাধা— নৃত্ন তগতে নৃত্ন মহাধা, হইল। স্টি আপনাৰ মনোমত, বিখা মিত্রের স্টিতে মহাধা প্রথম, ছংগডোগের প্রাকৃত্তি সকল আদৌ রহিল না। অতি উচ্চ অঙ্গের বৃদ্ধিবৃত্তিব ও উন্নতি হইবার উপায় রহিল বিখামিত্রের সংগ্রের ছিল, আহ্বান অন্ধার মুখ হইতে উৎপদ্ধ হয় নাই; কেবলমাত্র মনের উচ্চত্র বৃত্তিসকল চালনা করিবীই চাহারা বাইলেওপ্রাপ্ত হ্ইয়াছে, কিন্তু

তাহার পর স্বার্থসাধন-প্রবৃত্তি প্রবল হইয়া ব্রাহ্মণদিগকে একেবারে চক্ষ্ণজ্ঞাশূন্য করিয়া ফেলিয়াছে। অত-এব যাহাতে সকল লোকেরই বৃদ্ধি বৃত্তি সমানরূপে পৃষ্ট হয়, বিখামিত্র তাহার জন্য চাবিদিকে বিদ্যালয়, কালেজ নির্মাণ করিয়া দিলেন। উচ্চনীতি-শিক্ষা, উচ্চশাসন, প্রভৃতিব জনা স্বত্তম্ব লোক রহিল না; সকল লোক একজ হইয়া এ সকল কাষ্যানির্মাহ করিবে। যুক্তি একমাতে উপাস্যদেবতা, তদ্ভির আর উপাসা দেবতা একেবারে রহিল না। সকলে নিতা নিত্য যুক্তিদেবীর মাত্র উপাসনা করিত।

আর প্রেমণ সকলই প্রেমময়, মাফুষ সৰ সমান - যদি কাহারও কোন বিষয়ে উলতি হয়, তবে সে তাহালারা অন্য লোকের উপকার করিবে, সব স্মান করিয়া লইবে। বিশ্বামিত্রের জগতে **শব মান্ত্র স্থানর, কাল কুংসিত তু**ই একটা কদাচ কথন মিলিত কি না गत्नह। मैंकलवरे मूर्य अमनि स्माहिनी মুয় ভাব যে, মুগ দেখিলেই পরক্পর মোহিত হট্যা ঘাইতে হয়। সেখানে পরস্পাব দেখা সাক্ষাৎ হইলে, সেকহাাও বা নড বা নমস্কার কবিত না, একে-वादा रैकालाकृति ও গাঢ় আলিश्वन। সকলেই বাস্ত every thing onward & forward. नृडन জগতে, নু তন ड्रे॰शारह, लारक अपिक अपिक করিয়া বেড়াইতেছে, কখন, পর্বতে উঠিয়া বৈজ্ঞানিক তত্ত্ব আবিক্ষার করি-তেছে, কথন নদীগর্ভে গিয়া তথাকার গৃঢ়তত্ত্ব নির্ণয় করিন্তেছে, কথন আকাশপথে উত্তীন হইয়া নানা কার্য্যে ব্যাপ্ত হইতেছে। এইরূপে সকলেই ঘ্রিয়া ঘ্রিয়া আত্মোনতি সমজ্যোনতি সাধনার্থ ব্যস্ত হইয়া বেড়াই-তেছে।

বিশ্বামিত্রের সংসারে বিবাহ নাই; কিন্ত প্রণয় এমনি পদার্থ, বিবাহ না थाकिला अकवात मतामिलन इहेल প্রায় আরে বিচ্ছেদ হইত না। বিচ্ছেদ হইলেও তিনবংসরকাল ভগ্ন প্রণয়ের জন্য শোক না করিয়া কেছ বিবাহ করিত না। এরপ করিলেও কেহ দোষ বলিত না;লোকে জিতেক্রিয় ছিল; ব্যক্তিচারাদি ভ্রানক দোষ কিছুমাত্র ছিল না। গীতবাদ্যাদি কলায় সমস্ত लाकरे १ पूँ इल, मकरल मिलिया मकल স্থানে হয় গান, নয় বাজনা, নয় অভি-নয়, না হয় নৃত্য প্ৰতাহই হইত। প্রত্যহ পৃণিবীময় নৃতন উৎদব ছইত, কোনপ্রকার রাজা, সেনাপতি, বা কিছুর ভয় ছিল না। সকলে মিলিয়া যাহা করে, তাহাই হয়। পদার্থের গূঢ়তত্তাকু সন্ধান, আর প্রতিবেশীদিগের মনোরঞ্জন, এই বিশ্বামিত্রপৃথিবীতে লোকের নিত্য-কৰ্ম হইল।

উলাস—উলাস—উলাস,মনের উলাসে পৃথিবীস্থ লোক নৃত্য করে। আহা! এমন পৃথিবী বুদি আমাদেব হইত. তবে না জানি কতাস্থই হইত। যে স-কল কারণ থাকায় পৃথিবীর মামুষে মামুষে গ্রমিল, বিশ্বামিত্র মাকুষের মন হইতে সেগুলি অতি যত্নে তুলিয়া দিয়†ছিলেন। যশের আশা, টাকার ভৃষণ ও আধি-পত্যের আশা কাহারও ছিল না। কেবল আমোদ; আজি আমার আমোদে তুমি যোগ দিলে, কালি তোমার আ-মোদে আমি যোগ দিলাম। বিখা: মিত্রের দেশে মাত্র মরিত না, উহাবা এক পৃথিবী হইতে অন্য পৃথিবীতে চলিয়া যাইত; এইরূপে সাত আটবার ঘুরিয়া আবার দেইখানে আদিয়া উপ-স্থিত হইত। বিশামিত্রপৃথিবীতে জন্ম তুইপ্রকার; পুনরাবর্ত্তন জন্ম আর ন্তন জনা ; ন্তন জনা সংখায় সংখ্যিত ছিল, রোজ সেই কয়টি করিয়া নৃতন জন্ম হইত ; বাকি পুনরাবর্ত্তন জন্ম। বিশামিত্রের পৃথিবী অল্লকাল ছিল, অধিক নৃতন জন্ম হইলে কি হইত বলা যায় ना ।

ওদিকে বাল্মীকি হিমালয়জঙ্গলমধে কেবল রোদন করিয়া বেড়ান, রোদ নের বিরাম নাই, অন্ত দাহেরও বিরাফ নাই, কি পাপই করিয়াছি, কেমন করিয় এ পাপের প্রায়শ্চিত হইবে, যত ভাবেক ততই হাদয় উদ্বেল হয়, ততই একস্থাকে স্থিকিতে পারেন না। দস্কাদলে সহিত্ব আর দেখা করেন না। তাহার পুঁজিয়া বেডায়, দেখা পায় লা। মানু

८निथित्न इनेरायत खाना आतं व वाजिया উঠে, জঙ্গলে পশু পক্ষীর সহিত বাস হুইতে লাগিল, পশু পক্ষীও তাঁহার কাতর' ভাবে কাতর। তিনি কোন পশুকে আহার দেন, কাহার গলা চুকা-ইয়া দেন, কাহাকেও স্নান করাইয়া (मन, এই ভাবে मिन कांग्रिंक नांशिन। हेशवह मरशा अकतिन अक टक्कीकः মিথুন বড় আদর করিয়া পরস্পর বদিয়া খেলা করিতেছে,এ ওর গায় পড়িতেছে, এ ওকে ঠোকরাইতেছে, এ একবার সরিয়া দূরে যাইতেছে, ও আবার সরিয়া সরিয়া ঘেসিয়া যাইতেছে। এ একবার উলটিয়া উহার ঘাড়ে পড়িতেছে, ও আবার উলটিয়া তাহার ঘাড়ে পড়ি-তেছে। আবার উড়িয়া উড়িয়া পাথা নাড়িয়া ঘুরিয়া ঘুরিয়া শব্দ করিয়। আর এক ডালে বসিতেছে, বান্মীক্ একতান মনে উহাদের জীড়া দেখিতেছেন, আর ভাবিতেছেন, ''ইহারা আমা অপেকা কত স্থী, আমি কেন অমনি করিয়া ष्यारमारमं मञ्ज दहेन। (वज़ाहे আমারও ত কত দঙ্গী আছে।" আরভা-বিতে পারিলেন না। পূর্ব্ব কথা আবার নৃতন হইয়া হাদয় আকুল করিয়া তুলিল। তিনি এইরপ ভাবিতেছেন, হঠাৎ একটা তীর আসিয়া একটি পক্ষীর প্রাণ সংহার করিল। পক্ষী পড়িয়া ভূমে লুটাইয়া ছটফট করিতে, লাগিল। বাাধ দৌড়িয়া পাখী লইতে আসিল। वान्तीक वलि `লেন, রে পাপাত্মা'—

মা নিষাদ প্রতিষ্ঠাত্মগ্যঃ শাখতী সমা যৎ ক্রৌঞ্চমিথুনা দেকসবধীঃ কামমোহিতং। বলিবামাত্র বাল্মীকি দেখিলেন,নিঝ রমধ্য হইতে একটি কন্যা কানন-পথ আলো করিয়া আসিতেছে, তাহার কাস্তি অপ্সবা-বিনিন্দিত জোৎমা অপেকাও মিগ্ধ মন্দ ও হাদয় মুগ্ধকর। কামিনীর কমনীয় কান্তি पर्नात मकाल **यां का**र्या इहेगा (शल। ব্যাধ ক্রোঞ্চ সংগ্রহ করিতে হস্ত প্রসারণ করিতে ছিল, সে স্তব্ধ হইয়া রহিল। পশু, পক্ষীগণ নীরব হইল। কন্যা বালীকির সন্মুখে আসিয়া দাঁড়াইলেন। বাল্মীকির কথা সরিল না, কন্যাও বাল্মী-किरक कथा कहिवाद अवकाम पिरनन না। বলিলেন, "বাল্মীকি, বিশ্বিত হইও না, আমি সরস্বতী, ব্রাহ্মণদিগের কুলদেবতা। কিন্তু ত্রাহ্মণদিগের মধ্যে কাহাকেওভোমার মত কোমল হৃদয় দেখি নাই একুনা তো-মায় এই বীণা দিতে আসিয়াছি। এই বীণা তোমার ও তোমার মত লোকের হাতে চিরদিন থাকিবে, তোমরা পরহিতত্ততে দীক্ষিত হইয়াকেবল পরের জান্য ইহার वावशंत कतित्व।" वानीकि লুঠিত হইয়া বীণাগ্রহণ করিলেন, কিন্তু বীণা তাঁহার হাতেই রহিল; সরস্বতী অন্তর্জান হইলেন।

পঞ্ম খণ্ড।

বিখামিত্র পৃথিবী হইতে নৃতন স্ষ্টির জন্য প্রস্থান করিলে পুরাতন স্ষ্টির কি ইইল, তাহা অনারাদেই বুঝা যায়।

शृथिवीमग्र त्शांनमान, अत्राक्षक, न्रेशांह, স্কলা শোণিতভোত-প্রবাহ। আমরা ইভিছাসে অনেক অরাজক সময়ের বিষয় পাঠ করিয়া থাকি। যবন-সাম্রাজ্য বিনাশ ছইলে ইংরেজ সাম্রাক্তা স্থাপন পর্যান্ত ভারতে যেকপ ভরন্ধর কাণ্ড ঘটিয়াছিল, ' এমন বোধ হয় পৃথিবীর কোথাও ঘটবাছে কি না সন্দেহ। কিন্ত বিশ্বামিতের স্বর্গার্থগমনের পর যাহা ঘটেটেউহা তাহার শতাংশের একাংশও নছে। মোটামটি বলিতে গেলে পৃথি বীতে ব্রাহ্মণ, ক্ষতিয়, রাক্ষ্য ও বানর এই চারিটা প্রধান রাজত্ব ছিল। মেচ্ছ, চীন, ত্নাদির রাজ্য, বিখামিত ছিল ভিল করিয়া দিয়াছিলেন। তাহা-रात त्रांकाता घरनरकरे युक्तरकरख निधन প্রাপ্ত হইরাছিলেন। অনেকে পলাইয়া বশিষ্ঠের আ্রাশ্রর পাইয়াছিলেন, অনেকে যে, কে কোথায় গিয়াছিলেন, ভাহার ठिक नाहे, डांशामत त्राद्या छ खानक विभुद्धना। लूटिया पन वाँधिया पित नुर्व करत, नशत मात्र करत, नः'त्रक লগর কটিয়া ওয়ার করিয়া দের। এই সময় वान्त्रीकि मर्कश्रधान नूर्छंता-मरनत আধিপত্য ত্যাগ করিয়াছেন। তাহারা কিন্তু ছত্তভঙ্গ হয় নাই, তাহারা গুহক নামক চণ্ডালকে কর্ত্ত। করিয়া সমস্ক হিন্দু স্থান লুঠ আরম্ভ করিয়াছে। আজি यमूरनाळी, कालि প্রয়াগ, অদ্য শতজ সংগম, পিরখ: সরযুতীরে লুঠ করিতে नाशियारह । वह मनरम नुर्कत भनी

দেখিলে কলির একাকার বোধ হইত, वफ़ वफ़ मटल ट्रम्ब्स्, यवन, ब्राक्तम, बानब, বাহ্মণ, ক্ষতিয় সব একত আহার, একত শয়ন, এক ব্যবসায় এক আমোদে মন্ত হইয়া মহাধুমধামে বাস, এক নরহভ্যা ও দেশ লুগনকার্যো সব ব্রতী, ভাহারা একেবারে দেবেরও ছর্দম হইয়া উঠিল। এই থোর বিশৃভালার সময় যদি একটি রাজত্ব প্রবল থাকিত, তাহা হইলে হইত, যদি এক জাতির প্রাধান্য পাকিত. তাহা হইলেও হইত, তাহা ছিল না। সকল রাজোই তুইটি করিয়া দল ছিল। সকল জাতির মধোই অনৈকা ছিল, যে দলের হতে রাজক্ষমতা ছিল, তাহাবা ঘোর অভ্যাচারী, ভাহাদেব দারুণ অভ্যা চার অপেক। লুঠেরাদিগের অত্যাচার সহত্র অংশে শ্রেষ্ঠ। লুঠেরারা খুন করিত,উহারা দগ্ধাইয়া দগ্ধ:ইয়া মারিত। এই সময়ে রাবণ প্রবল পরাক্রম নর-পতি। পরস্থীহবণ, পরধন অব্পহরল. পরদেশ লুঠন, পর পীড়ন,ক্রীড়ার্থ পরের यञ्जनाथानान, डाँशांत अधान जात्माम । তাঁহার দেশে তাঁহার বিক্রদ্ধ পক্ষে তাহার ভ্রাতা বিভীষণ। রাবণ বিভীষণকে কারাগারে নিক্ষেপ করিয়াছেন। বিভী-ষণের স্বপক্ষ হইয়া কণা কহিয়াছিল বলিয়া, একজন প্রধান মন্ত্রীর নাসাকর্ণ করিয়াছিলেন। ৰানৱর[জাস্থ স্থাীবের পালের সহিত বিভীষণের মিত্রতা হইবার সম্ভাবনা, এই জন্য থর দূৰণ নামক নিৰ্দিয় নিষ্ঠ্র ও অনিষ্ধ্